श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

द्वितीयो विभागः

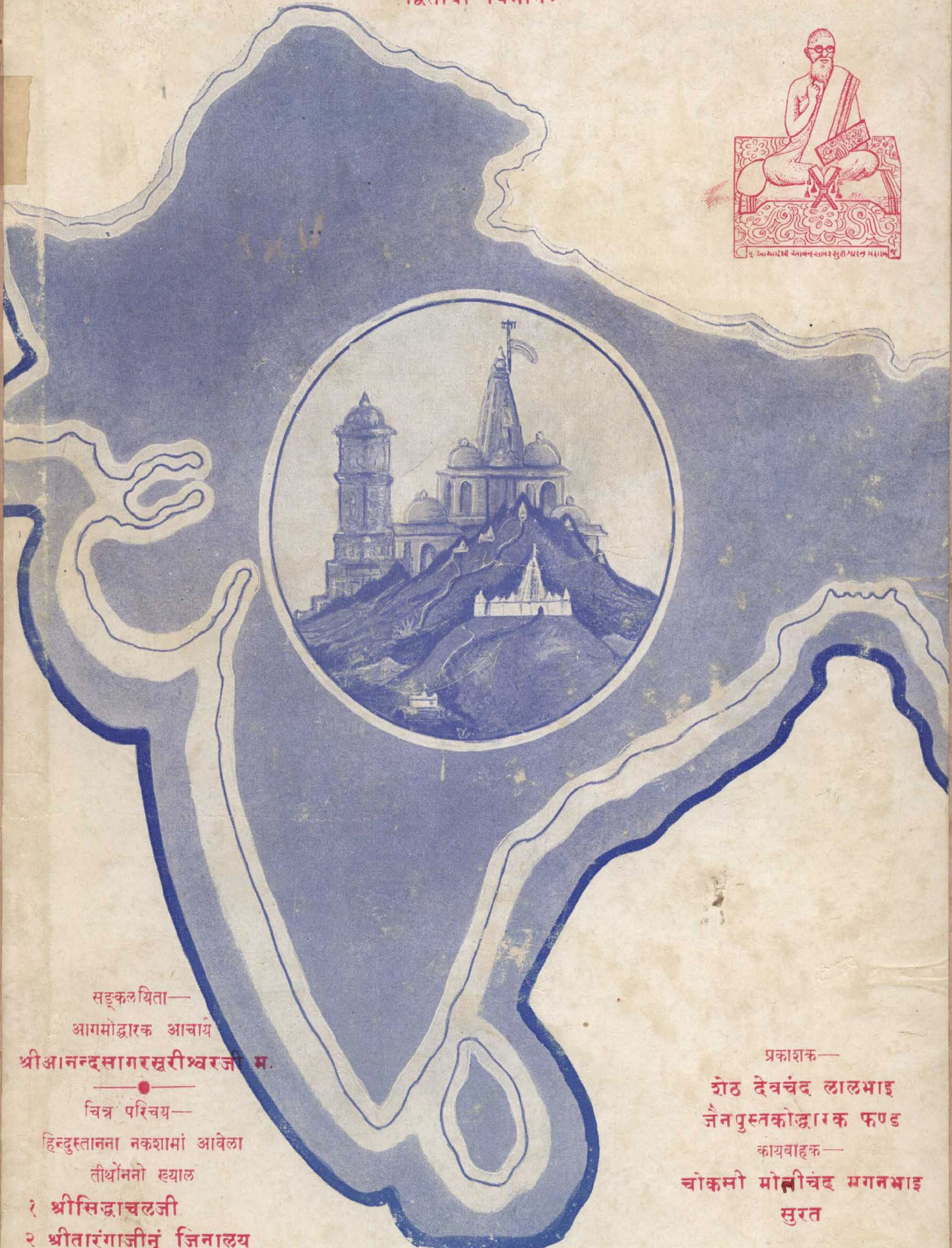

सङ्कलयिता—
आगमोद्धारक आचार्य
श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी म.

चित्र परिचय—
हिन्दुस्तानना नकशामां आवेला
तीर्थोनो ख्याल

१ श्रीसिद्धाचलजी
२ श्रीतारंगाजीनुं जिनालय
३ श्रीचीतोडगडनो कीर्तिस्तंभ

प्रकाशक—
शेठ देवचंद लालभाइ
जैनपुस्तकोद्धारक फण्ड
कार्यवाहक—
चोकसी मोतीचंद मगनभाइ
सुरत

Jain Education International 2010_05
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

॥ णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः ११५ ॥

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः—

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः ।

(कतो झपर्यन्तो द्वितीयो विभागः)

सम्पादकौ—आगमोद्धारक—आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरान्तेवासिनौ
कञ्चनविजय-प्रमोदसागरौ ।

संग्राहकः—आगमोद्धारकान्तेवासी गुणसागरः ।

प्रकाशकः-सुरतवास्तव्य-श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारकोष ।

कार्यवाहकः—चोकसी मोतीचन्द मगनभाई ।

आ.श्री. कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

वीराब्दः २४९० । विक्रमाब्दः २०२० । शाकाब्दः १८८६ । खिस्ताब्दः १९६४

05SB-00

प्रथमं संस्करणम्] निष्क्रयः[redacted] । [प्रतयः ५००

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इदं पुस्तकं ललितपुरे श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई जैनपुस्तकोद्धारसंस्थाया कार्यवाहक-
मोतीचंद मगनभाई चोकसी इत्यनेन
जैनेन्द्र मुद्रणालये पंडित परमेष्ठीदास जैन द्वारा मुद्रापितम् ।

अस्य पुनर्मुद्रणायाः सर्वेऽधिकारा एतद्भाण्डागारकार्यवाहकैरायत्तीकृताः ।

All Rights Reserved By The Trustees of the Fund.

Printed by :—
Pt. Parmeshthidas Jain. at the Jainendra Press, LALITPUR, U. P.

Published By Sheth :—Devchand Lalbhai Jain Pustakoddhar Fund Surat. By the Hon: Managing Trustee, Motichand Maganbhai Choksi.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sheth Devchand Lalbhai Pustkoddhar Fund Series No. 115

Shree Alpaparichit Saidhantik Shabda-Kosh

SECOND PART

[A To Z]

—: Author :—

Agmoddharak Acharya Shree Anandsagarsurishwarji

—: Editor :—

Agmoddharak Shree Anandsagarsurishwarji 's Sishyo
Muni Kanchanvijay and Muni Kshemankarsagar

Collected:—
SHREE GUNSAGARJI
SHREE ANANDSAGARSURISHWARJI'S ANTEWASI

—: Publisher :—
Motichand Maganbhai Choksi

Managing Trustee For :—
Sheth DEVCHAND LALBHAI JAIN PUSTAKODDHAR FUND
SURAT.

First Edition
Copies 500

Price Rs 35-00
RS 5-00

Vikram Samvat 2020
Christation Era 1964

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The Board of Trustees:

Shri Nemchand Gulabchand Devchand Zaveri
" Talakchand Motichand "
" Babubhai Premchand "
" Amichand Zaverchand "
" Keshrichand Hirachand "
" Motichand Maganbhai Choksi
Hon. Managing Trustee.

संस्थानुं ट्रस्टी मंडलः—

श्री नेमचंद गुलाबचंद देवचन्द झवेरी
" तलकचंद मोतीचंद "
" बाबुभाई प्रेमचंद "
" अमीचंद झवेरचंद "
" केशरीचंद हीराचंद "
" मोतीचंद मगनभाई चोकसी
मेनेजिंग ट्रस्टी

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THE LATE
SHETH DEVCHAND LALBHAI JAVERI

Born 1853 A. D. Surat **Died 13th January 1906 A. D., Bombay**

श्रेष्ठि देवचन्द–लालभाई जहवेरी

जन्म १९०९ वैक्रमाब्दे
कार्त्तिकशुक्लैकादश्यां (देवदीपावलीदिने)
सूर्यपूरे

स्वर्गवास: १९६२ वैक्रमाब्दे
पौषकृष्णतृतीयाम् (मकरसंक्रान्तितिथौ)
मोहमयीनगर्याम्

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: प्रकाशकीय :—

आ अवसर्पिणी कालना दुःषम आरामां चरमशासनपति श्रमण भगवान् महावीर स्वामीना शासनमां शासनना पुण्यप्रतापे ते ते समये आचार्य भगवंतोओ 'आगम' वगेरे साहित्यनो उद्धार, पुनरुद्धार करीने आ कलिकालमां वीसमी सदीमां जे विद्यमान राख्युं छे ते आपणुं अहोभाग्य छे. तेथी तेवा साहित्यने प्रकाशन करवा माटे अमारी आ संस्था सं० १९६४ मां प. पू. आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीना उपदेशथी स्थपाई हती. आ संस्था मारफत अमे आज सुधी घणा ग्रन्थो प्रकाशित करी चूक्या छीओ. तेमज बीजा पण ग्रन्थोनुं प्रकाशन चालु छे तेमां अमे ११५मा ग्रन्थाङ्क तरीके श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष भाग २ ने सहर्ष प्रगट करीओ छीओ.

तारक ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आ कलिकालना विषम वातावरणमां आगमोनो बोध दुर्बोध न थई जाय ते हेतुओ आगमोदयसमितिनी स्थापना करावी अने आगम-वाचना आपवानुं कर्युं. तेथी ते समितिओ आगमो छपाववानुं कार्य शरू कर्युं. तेमज आ संस्थाए पण अनुयोगद्वार वगेरे आगमो छपाव्यां अने अत्यारे पण ते कार्य चालु ज राख्युं छे. ते वखते अने पछीथी आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आगमोना जुदा जुदा विषयो तारवतां 'आगमकोष'नो पण एक विषय तारव्यो हतो. तेने छपाववो हतो. आ विचारोत्पत्ति आजथी ४५ वर्ष पहेलां थई हती.

ते हेतुए प. ता. गुरुदेवश्रीना सदुपदेशथी नीचेना सद्गृहस्थो तरफथी नीचेनी रकमो कोषना कार्य माटे ते काले अमारी संस्थाने मली हती. ते आ प्रमाणे—

१. अमदावादनिवासी शा. डाह्याभाई पीतांबरदास रु० १५०१)
२. सुरतनिवासी झवेरी सोभागचन्द सूरचंद रु० १००१)
३. सुरतनिवासी झवेरी सांकलचंद सूरचंद रु० ५०१)

आचार्य देवनो विहार मालवा, बंगाल तरफ लंबायो होवाथी ते कार्य घणी लांबी मुदत सुधी पडी रह्युं हतुं. ते छपाववाना कार्यनो निर्णय सं० २००४ मां थयो अने अमे आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीनी संमतिथी आ कार्य शरू कर्युं.

आथी प. ता. गुरुदेवश्रीनी आज्ञा अनुसार पू० मुनिमहाराज श्रीगुणसागरजी पासेथी श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनुं प्रेस मेटर अमे मेलव्युं. ते श्रीसरस्वती मुद्रणालय, सुरतमां छपाववा माटे आप्युं अने तेनुं संपादन करवा माटे मुनिमहाराज श्रीकंचनविजयजी तथा श्रीक्षेमंकरसागरजी म०ने विनंति करी. तेओश्रीओ आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीना अनन्य पटधर, विद्याव्यासंगी, श्रुतस्थविर, आचार्य महाराज श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराजनो संयोग मल्यो, त्यांसुधी प्रूफ वंचाववा पूर्वक अने ते पछीथी स्वतन्त्रपणे (ते मुनिवर्योओ) आ कोषना प्रथम भागनुं संपादन कार्य कर्युं. तेथी अमो आ अद्वितीय आगमतलस्पर्शीज्ञाता, आगमतत्त्वपारदृश्वा, आगमज्योतिर्धर, शासनसंरक्षण-बद्धकक्ष, तत्त्वशिरोमणि, आगमाव्युछित्तिकर, शिलाताम्रपत्रोत्कीर्णागमकारापक, गंभीरानेकग्रन्थप्रणेता, अन्त्यसमये पक्षावधिअर्धपद्मासनस्थायी, ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक आचार्यवर्य श्रीआनन्दसागर-सूरीश्वरजी महाराजे 'संकलित' करेलो श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनो 'संपूर्णस्वर' सुधीनो पहेलो भाग सहर्ष प्रकाशित करी शक्या हता.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ संस्थाना प्रथम पुस्तकना संपादक तरीके पण आचार्यदेव [1]श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी म० हता अने बीजा सेंकडानी शरुआतना प्रथम पुस्तक तरीके पण तेओश्रीनो संकलित अमूल्य कोषनो भाग १ सं० २०१२ मां प्रसिद्ध थयो.

कोषनी विशिष्टता अंगे संपादकश्रीओ पहेला भागनां निवेदनमां लख्युं छे. अमारी संस्थाए आना प्रकाशनमां वधारे रस लीधो तेनुं मुख्य कारण ए छे, के आज सुधी छपायेला प्राकृत कोषोमां अभिधानराजेन्द्रकोष, पाइयसद्दमहण्णवो आदि केटलाक कोषो छे पण तेमां न्यूनाधिकरूपे विचार करतां उपयोगितामां बाध आवे छे—जेमके अभिधानराजेन्द्रकोष प्रमाणमां एटलो बधो मोटो छे के तेमांथी कोई शब्द शोधवा माटे वधारे परिश्रम पडे अने छपाईमां के सम्पादनमां त्रुटी रहेवाने लीधे सूत्रो अने ते ते प्रकरणो घणा परिश्रम पछी पण जडतां नथी. पाइयसद्दमहण्णवोमां जैन-सैद्धान्तिक शब्दो उपर वधारे भार मूक्यो होय तेम जणातुं नथी. पण प्रस्तुत ग्रन्थमां कोई पण जैन के जैनेतर विद्वान् प्रचलित जैन पारिभाषिक शब्दोनो यथार्थ परिचय टूंकमां ते शब्दना स्थल सहित सहेलाईथी प्राप्त करी शके एवी तक छे, तथा मुनिराजो पण ग्रन्थ सम्पादनना कार्योमां सहायता लई शके तेम पण छे.

अमे इच्छीए छीए के आ प्रकाशननो विद्वज्जनो योग्य आदर करशे ज.

आ कोषने अंगे संज्ञाओनी समजणो तथा ते ते ग्रन्थोनां पानाओनी सूची पण संपादक पू. महाराजोए आपी छे.

प्रस्तावना संजोगवशात् अत्यारे आपी शक्यो नथी पण त्रीजा के चोथा भागमां आपशुं. महाराज श्रीअभयसागरजी महाराजने लखवा माटे आमन्त्रण आप्युं छे.

अमारा प्रकाशन कार्यमां जे जे महाशयोए अमने मदद करी छे ते ते महाशयोना अमे ऋणी छीए.

वि० सं० २०२०
द्वि० कार्तिक (क्षयमागसर) सुद १
ता. १७–११–१९६३

लि० भवदीय
मोतीचंद मगनभाई चोकसी
वगेरे ट्रस्टीओ

---

१ तेओश्रीनो सुरत उपर तो अनहद उपकार छे. तेओश्रीने संवत १९७४ना वैशाख सुद १०ना सुरतमां ज 'आचार्य' पदवी अपाई हती. श्रीजैनानन्दपुस्तकालय, श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रागममंदिर वगेरे सुरतमां ज छे. अने सं० २००६ ना वैशाख वद ५ मे 'स्वर्गवास' पण सुरतमां ज थयो छे. तेओश्रीनो अग्निसंस्कार पण सुरत शहेरनी मध्यवर्त्ती गोपीपुरामां आगममंदिरना सामे जूनी अदालतथी ओळखाती जमीनमां थयो हतो. वळी ते ज जग्या उपर गुरुदेवश्रीना स्मरण तरीके संपूर्ण इतिहासने जणावनारु 'श्रीआगमोद्धारकगुरुमंदिर' बंधाववामां आव्युं छे.
तेओश्रीनुं मुख्य कार्यक्षेत्र सुरत ज रह्युं हतुं. तेनी प्रतिक तरीके अनेक ज्ञान पिपासानी संस्थाओ स्थपाई हती.

(१) शेठदेवचंद्र–लालभाई–जैनपुस्तकोद्धारफंड,
(२) शेठनगीनभाई मंछुभाई जैन साहित्योद्धार फंड.
(३) श्री रत्नसागरजीजैनमिडलस्कूल (विद्याशाला) कायमी फंड.
(४) श्रीजैनतत्त्वबोधपाठशाला वगेरे अनेक संस्थाओ तेओना उपदेशनुं ज परिणाम छे.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शेठ–देवचंद–लालभाई–जैनविद्यार्थीभुवन

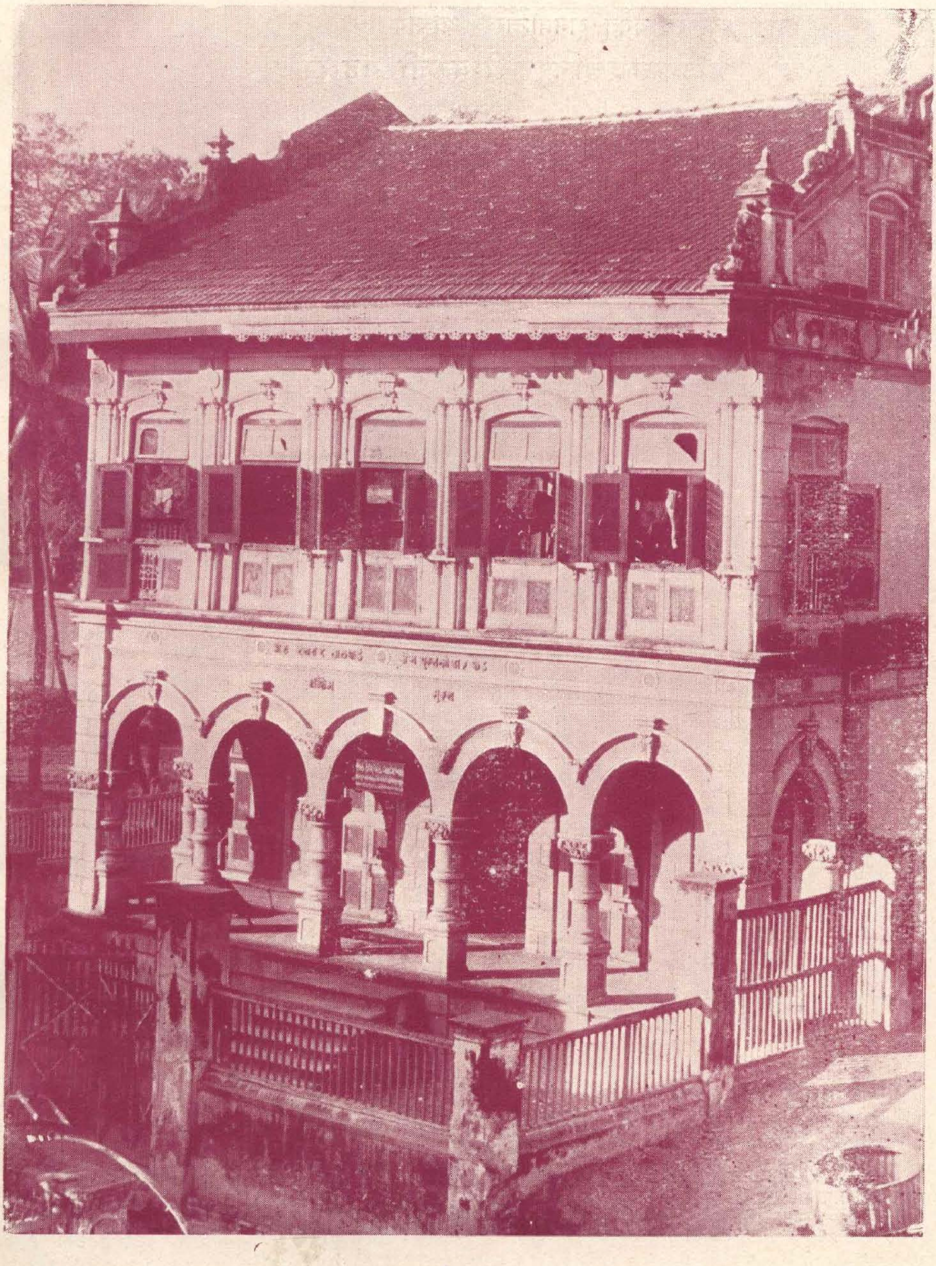

जेमां
शेठ–देवचंद–लालभाई–जैनपुस्तकोद्धार फंड तरफथी
पुस्तकालय छे अने
प्रसिद्ध थतां पुस्तकोनो संग्रह अने वेचाण थाय छे.

गोपीपुरा, बडेखांनो चकलो, सुरत

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ: संस्थाना निर्माता
ध्यानस्थस्वर्गत अगमोद्धारक आचार्य
श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज

गुरु-शिष्य बेलडी

आ. श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराज

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वल्पम्

॥ णमो चोवीसाए तित्थयराणं उसभाइमहावीरपज्जवसाणाणं ॥

अमोने जणावता हर्ष थाय छे के आगमोद्धारकश्रीए संकलित अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्द-कोषना प्रथम भागनुं संपादन कार्य अमोने (मने तथा स्व० मुनिश्रीक्षेमंकरसागरजीने) मल्युं हतुं अने ते प्रथम भागनुं कार्य अमे पूर्ण कर्युं हतुं. तेना बाकी रहेला बीजा भागोनुं संपादन करवानुं कार्य मने सं० २०१५ मां मल्युं. ते कार्य में यथाशक्य शरू कर्युं, एना परिणामे आजे तेनो बीजो भाग 'क थी झ' सुधीनो पूर्ण कर्यो छे. अने तेनी आगलनुं सम्पादन कार्य पण चालु ज राख्युं छे.

अमोए यत्किंचित् आ कोषना अंगेनुं मार्गदर्शन प्रथम भागमां सम्पादकना वक्तव्यमां आप्युं छे, तेथी अत्यारे ते अंगे कांई विशेष कहेवुं नथी, पण त्रीजा के चोथा भागमां ज्यारे प्रस्तावना आपीशुं ते वखते लखवानी इच्छा छे.

प्रसंगवशात् एटलुं जणाववुं जोइए के–अमारी सम्पादक बेलडीए 'क थी झ' सुधीनुं मैटर लगभग तैयार कर्युं हतुं पण नवी प्रेस कोपी बनाववानी हती अने कांईक सुधारो करवानो हतो. एटला पुरतुं ज ते अधूरुं हतुं. एटले आ बीजा भागनी अंदर तो रंधायेलुं खावानुं हतुं. पण ट थी मांडीने मेलवेला, अधूरा मेलवेला, नहि मेलवेला, बधाय अक्षरोनुं कार्य मारे करवानुं हतुं. कारणके मारा जोडीदार स्व० मुनिश्री क्षेमंकरसागरजी सं० २०११ ना चैत्र वदी०)) नी रात्रे पोणा अगीआर वागे झेरी जानवरना करडवाथी कालधर्म पाम्या अेटले वैशाख महीनाथी जवाबदारी मारा एकलाने शिरे आवी. परंतु गुरुदेवश्रीना पुण्य प्रतापे ते जवाबदारी हुँ उठावी शक्यो अने आ बीजा भागनुं सम्पादन करी शक्यो. अेटले हवे ट थी पचास टका तैयार करेला मैटरने तैयार करवुं अने सम्पादन करवुं ए बधीए जवाबदारी मारे शिर रही.

आ भागनी अंदर 'क थी झ' सुधीना अक्षरो आपेला छे. पण त्रीजा अने चोथा भागमां 'ट थी ह' सुधीना अक्षरो अने ज्ञाताजी विगेरेना तेमज बीजा मेलवतां भिन्न भिन्न नीकलेला शब्दो तेम ज व्याकरणना 'उणादिशब्दो' अने देशी नाममालाना शब्दो परिशिष्टमां आपवानुं विचार्युं छे.

संज्ञापत्र, पत्रांकसूची अने शुद्धिपत्र आमां आपवामां आव्यां छे. वली शेठ देवचंद लालभाई० (आ फंडना) नो देवानंदाङ्कमांनुं मैटर पाना १ थी ४४ आपवामां आव्या छे. तेमां पाना १ थी १० भेट प्रचार योजना. पाना १ थी ३९ प्रसिद्ध थएला ग्रंथोनी यादी अने ४० थी ४४ ग्रंथ प्रकाशन नवी योजना एटलुं आपवामां आव्युं छे.

संकलनकार परमगुरुदेवना चरणे तो आ सरज मस्तक सदाए नमेलु ज छे.

मने आ संपादननी अंदर मदद करनार मुनिश्रीप्रबोधसागरजी तथा मुनिश्रीप्रमोदसागर-जी ने (गुरुशिष्य बेलडीने) याद करुं छुं. तेम ज बीजाओए मने सहाय करी होय ते बधानो हुँ ऋणी छुं. एक वात जरूर याद देवी घटे छे के मने उत्साह आपवामां भाई श्रीकेशरीचंद झवेरी तो छे ज.

सं० २०२०
पोष वद १ मंगलवार
ठि. नवरंगपुरा, पोस्ट पासे,
जैन उपाश्रय
अमदावाद नं० ९

लि०
आगमोद्धारक उपसंपदाप्राप्त
चरणरेणु
कंचन.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञा पत्रकम् ।

क्र०	संज्ञा	सूत्रनाम	सम्पादकः	प्रकाशकः
१	अनु.	मलधारगच्छीयश्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितवृत्तियुक्तं श्रीअनुयोगद्वारसूत्रम् ।	आगमोद्धारकः	दे. ला. जै.[1]
२	अनुत्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीअनुत्तरोपपातिकदशाङ्गम् ।	”	आ. स.[2]
३	अन्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीअन्तकृद्दशाङ्गम् ।	”	आ. स.
४	आउ.	श्रीआतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णम् (गाथा) ।	”	आ. स.
५	आचा.	निर्युक्तिकलितशीलाङ्काचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीआचाराङ्ग-सूत्रम् ।	”	आ. स.
६	आव.	निर्युक्तियुतभाष्यकलितश्रीभवविरहहरिभद्रसूरिविहित-वृत्तियुतं श्रीआवश्यकसूत्रम् ।	”	आ. स.
७	उत्त.	निर्युक्तियुतानि श्वादिवेतालश्रीशान्तिसूरिसूत्रितवृत्ति-युतानि श्रीउत्तराध्ययनानि ।	”	दे. ला. जै.
८	उप.मा. गा.	श्रीधर्मदासगणिदृब्धा श्रीउपदेशमाला (गाथा) ।	”	
९	उपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीउपासकदशाङ्गम् ।	”	आ. स.
१०	ओघ.	भाष्ययुता श्रीद्रोणाचार्यसूत्रितवृत्तिविभूषिता श्रीओघनिर्युक्तिः ।	”	आ. स.
११	औप.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीऔपपातिकोपाङ्गम् ।	”	आ. स.
१२	ग.	श्रीगच्छाचारप्रकीर्णम् (गाथा) ।	”	आ. स.
१३	गणि.	श्रीगणिविद्याप्रकीर्णम् (गाथा) ।	”	आ. स.
१४	चउ.	श्रीचतुःशरणप्रकीर्णम् (गाथा) ।	”	आ. स.
१५	जं.प्र.	उपाध्यायश्रीशान्तिचन्द्रविहितवृत्तियुतं श्रीजम्बूद्वीप-प्रज्ञप्त्युपाङ्गम् ।	”	दे. ला. जै.
१६	जीवा.	श्रीमलगिर्याचार्यसूत्रितविवरणयुतं श्रीजीवाजीवा-भिगमोपाङ्गम् ।	”	दे. ला. जै.
१७	ज्ञाता.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् ।	”	आ. स.
१८	ठाणा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीस्थानाङ्गसूत्रम् ।	”	आ. स.
१९	तं.	श्रीतन्दुलवैचारिकप्रकीर्णम् (गाथा) ।	”	आ. स.

१ दे. ला. जै.=शेठ देवचन्द लालभाई जैनपुस्तकोद्धार फण्ड ।

२ आ. स.=श्रीआगमोदयसमिति ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०	तत्त्वा.	भाष्योपेतं श्रीतत्त्वार्थसूत्रम् (अध्यायः सूत्रम्) ।	आगमोद्धारकः	ऋ[1] के.
२१	दश.	निर्युक्तिभाष्योपेतं श्रीभवविरहहरिभद्रसूरिविरचित-विवरणयुतं श्रीदशवैकालिकसूत्रम् ।	”	दे. ला. जै.
२२	दशचू.	श्रीदशवैकालिकचूर्णिः *	हस्तपोथी	जै.[2] पु. नं. १६७३
२३	दशाश्रु.	श्रीदशाश्रुतस्कन्धः ।		
२४	देव.	श्रीदेवेन्द्रस्तवप्रकीर्णम् ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
२५	नंदी.	श्रीमलगिर्याचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीनन्दीसूत्रम् ।	”	आ. स.
२६	निरय.	श्रीचन्द्रसूरिविरचितवृत्तियुतं श्रीनिरयावलिकापंचकम् ।	श्री दा.वि.गणी	वीर.[3]
२७	नि. चू. प्र.	*भाष्यचूर्ण्युपेतस्य श्रीनिशीथसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जै.पु.नं.४८३
२८	नि. चू. द्वि.	” ” द्वितीयो ”	”	जै.पु.नं ४८४
२९	नि. चू. तृ.	” ” तृतीयो ”	”	जै.पु.नं ४८५
३०	पउ.	श्रीविमलाचार्यविरचितं 'पउमचरियं' (उल्लासः)	प्रो.हर्मनजेकोबी	[4]जै. ध.
३१	पिंड } पिण्ड. }	भाष्यश्रीमलयगिर्याचार्यविहितवृत्तियुता पिण्डनिर्युक्तिः	आगमोद्धारकः	दे. ला. जै.
३२	प्रज्ञा.	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतं श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गम् ।	”	आ. स.
३३	प्रश्न.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गम् ।	”	आ. स.
३४	बृ. प्र.	निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीबृहत्कल्पसूत्रस्य प्रथमोविभागः	हस्तपोथी	जै.पु.नं ३०३
३५	बृ. द्वि.	” ” द्वितीयो ”	”	जै.पु.नं ३०४
३६	बृ. तृ.	” ” तृतीयो ”	”	जै.पु.नं ३०५
३७	भक्त.	श्रीभक्तपरिज्ञाप्रकीर्णम् (गाथा) ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
३८	भग.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीभगवतीसूत्रम् (श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिः) ।	”	आ. स.
३९	मर. } मरण. }	श्रीमरणसमाधिप्रकीर्णम् (गाथा) ।	”	आ. स.
४०	महा. } महाप्र }	श्रीमहाप्रत्याख्यानप्रकीर्णम् (गाथा) ।	”	आ. स.

१ ऋ. के.=शेठऋषभदेवजीकेशरीमलजी, रतलाम

२ जै. पु. नं.=श्रीजैनआनन्दपुस्तकालय, सूरत. हस्तपोथी नम्बर

३ वीर.=श्रीवीरसमाज, अमदावाद.

* सूत्र, निर्युक्ति अने भाष्यगाथाना तो मात्र प्रतीक छे.

४ जै. ध.=श्रीजैनधर्मप्रसारकसभा. भावनगर.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१	राज.	श्रीमलयगिर्याचार्यसूत्रितविवरणयुतं श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गम्	आगमोद्धारकः	आ. स.
४२	विपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीविपाकश्रुताङ्गम् ।	”	आ. स.
४३	विशे.	मलधारिश्रीहेमचन्द्रसूरिविरचितबृहद्वृत्तियुतं श्रीविशेषावश्यकभाष्यम् ।	पंहरगोवनदास	य[१] जे.
४४	व्य. प्र.	*निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीव्यवहारसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जै.पु.नं. ४८७
४५	व्य. द्वि.	” ” ” द्वितीयो ”	”	जै.पु.नं. २६६
४६	सं.	श्रीसंस्तारकप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
४७	सम.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीसमवायाङ्गम् ।	”	आ. स.
४८	सूत्र.	निर्युक्तिभाष्यशीलाङ्काचार्यविरचितविवरणयुतं श्रीसूत्रकृताङ्गम् ।	”	आ. स.
४९	सूर्य.	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतंश्रीसूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्गम् ।	”	आ. स.

१ य. ज.=श्रीयशोविजयजी जैनग्रन्थमाला.
सूत्रादिना तो मात्र प्रतीक ज छे.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्राङ्कसूची

श्रीआचाराङ्गम्

प्रथमः श्रुतस्कंधः

अध्ययनानि	आपत्रं
१	८१
२	१४८
३	१७४
४	१९५
५	२३१
६	२५८
८	२९६
९	३१७

द्वितीयः श्रुतस्कंधः

चूला-१

१	३५८
२	३७४
३	३८४
४	३९१
५	३९८
६	४०१
७	४०६
चूला-२	४२७
" ३	४२९
" ४	४३२

श्रीसूत्रकृताङ्गम्

प्रथमः श्रुतस्कंधः

अध्ययनानि	आपत्रं
१	५२
२	७७
३	१०१
४	१२१
५	१४१
६	१५३
७	१६५
८	१७५
९	१८६
१०	१९५
११	२०७
१२	२२९
१३	२४०
१४	२५२
१५	२६०
१६	२६६

द्वितीयः श्रुतस्कंधः

१	३०३
२	३४२
३	३६०
४	३७०
५	३८५
६	४०५
७	४२७

श्रीस्थानाङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्रं
१	३८
२	१०१
३	१७९
४	२८९
५	३५२
६	३८०
७	४१५
८	४४३
९	४६९
१०	५२८

श्रीसमवायाङ्गम्

आविषयं	आपत्रं
सागरोवम-कोटाकोटी	१०५
गणिपिटकं	१३३
अवसरपिणि	१५२
निगमनम्	१६०

श्रीभगवतीजी

शतकानि	आपत्रं
१	१०८
२	१५२
३	२०२
४	२०६
५	२४९
६	२८६
७	३२७
८	४२४
९	४९२
१०	५०८
११	५५२
१२	५९२
१३	६२९
१४	६५८
१५	६९६
१६	७१९
१७	७३१
१८	७६०
१९	७७३
२०	८००
२१	८०२
२२	८०४
२३	८०५
२४	८५१
२५	९२८
२६	९३७
२७	९३८
२८	९३९
२९	९४१
३०	९४८
३१	९५०
३२	९५३
३३	९६४
३४	९७०
३५	९७१
३६	९७१
३७	९७१
३८	९७१
३९	९७१
४०	९७५
४१	९८१

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्

प्रथमः श्रुतस्कंधः

अध्ययनानि	आपत्रं
१	७७
२	९०
३	९६
४	९९
५	११३
६	११४
७	१२०
८	१५५
९	१६९
१०	१७०
११	१७३
१२	१७७
१३	१८२
१४	१९२
१५	१९५
१६	२२६
१७	२३४
१८	२४२
१९	२४५

द्वितीयः श्रुतस्कंधः

१-१०	२५४

श्रीउपासकदशाङ्गम्

१-१०	५४

श्रीअन्तकृद्दशाङ्गम्

वर्गाः	आपत्रं
१-८	३२

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गम्

वर्गा:	आपत्रं
१–३	८

श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्रं
१	२५
२	४१
३	६४
४	९०
५	९८
६	११३
७	१२१
८	१२९
९	१४१
१०	१६५

श्रीविपाकश्रुताङ्गम्

प्रथम: श्रुतस्कंध:	
१	३३ त: ४४
२–१०	८८
द्वितीय श्रुतस्कंध:	
१–१०	९६

श्रीऔपपातिकसूत्रम्

आविषय:	आपत्रं
राजधान्यादि	२४
साधुगुणा	४८
पर्षन्निर्गमं	७७
सिद्धवर्णनं	११९

श्रीराजप्रश्नीयं

आविषय:	आपत्रं
सूर्याभ:	१७
यानविमानादि	४४
कुटाकारदृष्टान्त:	५९
स्नानपूजादि	११३
मोक्षवर्णनं	१५०

❋

श्रीजीवाजीवाभिगमं

प्रतिपत्तय:	आपत्रं
१	५१
२	८८
३	४०७
४	४०९
५	४२६
६	४२८
७	४३१
८	४३२
९	४६७

श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गम्

पदानि	आपत्रं
१	७०
२	११२
३	१६७
४	१७८
५	२०३
६	२१८
७	२२०
८	२२३
९	२२७
१०	२४५
११	२६८
१२	२८३
१३	२८८
१४	२९२
१५	३१६
१६	३२९
१७	३७३
१८	३९४
१९	३९५
२०	४०७
२१	४३४
२२	४५२
२३	४९१
२४	४९३
२५	४९४
२६	४९६
२७	४९७
२८	५२४
२९	५२७
३०	५३१
३१	५३४
३२	५३५
३३	५४२
३४	५५२
३५	५५८
३६	६११

श्रीसूर्यप्रज्ञप्तिः

प्राभृतकानि	आपत्रं
१	४४
२	६२
३	६६
४	७५
५	७८
६	८२
७	८३
८	९१
९	९९
१०	१९६
११	२०१
१२	२३३
१३	२४३
१४	२४४
१५	२५५
१६	२५६
१७	२५७
१८	२६७
१९	२८४
२०	२९७

श्रीजंबुद्वीपप्रज्ञप्तिः

वक्षस्कारा:	आपत्रं
१	८८
२	१७८
३	३८०
४	३८२
५	४२४
६	४३२
७	५४६

श्रीनिरयावलिका

वर्गा:	आपत्रं
१	१८
२	२०
३	३६
४	३८
५	४२

❋

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सचूर्णिकं श्रीनिशीथसूत्रम्							श्रीबृहत्कल्पसूत्रम्				श्रीव्यवहारसूत्रम्					
हस्तपोथी			लीथोप्रिन्ट		मुद्रितम्		हस्तपोथी				हस्तपोथी			मुद्रितः		
भागः	उद्देशकः	आपत्रं	भागः	आपत्रं	भागः	आपत्रं	भागः	उद्देशकः	आपत्रं	आगाथाः	भागः	उद्देशकः	आपत्रं	उद्देशकः	आपत्रं	
१	१	१२९	१	२०२	१	१६६	१	१	७७	५००	१	१ {	१७४	१	१-६१	
					२	६६			१६६	१०००			०		१-९९	
	२	१८२	२	३०८		१९७			२३५	१५००			०		१-३७०	
	३	१९४		३३४		२२६			३१७	२१३०		२	२१९	२	१-८७	
	४	२२२		४०४		३०५	२		१११	३०००		३	२५८	३	१-७३	
	५	२४७		४४५		३७०			१५५	३२९२	२	४	११०	४	१-१०४	
	६	२५३	३	४६३		३९४		२	२०३	४६४		५	१३५	५	१-२९	
	७	२५७		४७८		४१३		३	२९३	७२८		६	१९९	६	१-७१	
	८	२७०		५०५		४४७	३		६४	११९२		७	२८३	७	१-९५	
	९	२७७		५३३		४७०		४	१९८	८०५		८	३३६	८	१-६०	
	१०	३६१		६६५	३	१७०		५	२१२	३७५		९	३५५	९	१-२३	
२	११	५८	४	७७३		३१३		६	२६७	४३०		१०	४५८	१०	१-११४	
	१२	८२		८३२		३७४										
	१३	१०३		८७५		४२६	— मुद्रितं —									
	१४	१२३		९१६		४७७	१	१	२५४	८०५						
	१५	२७३	५	१००८		५९४	२		६१०	२१२४						
३	१६	५६		११४१	४	१६३	३		९२१	३२८९						
	१७	६२		११६०		२०३	४	२	१०२२	३६७२						
	१८	६५	६	११६७		२१८		३	१३०६	४८७६						
	१९	८४		१२१२		२९९	५	४	१५०२	५६८१						
	२०	१७२		१३३८		४११		५	१५९९	६०५९						
				+२			६	६	१७१२	६४९०						
				+३५		४४३										

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीआवश्यकसूत्रम्

आविषयः	आपत्रं
पिठिका	५०
प्रथमवरवरिका	१३६
द्वितीयवरवरिका	१८८
गणधरवादः	२५६
निह्नववादः	३२५
नमस्कारनिर्युक्तिः	४५२
१ सामायिकनिर्युक्तिः	४९२
२ अध्ययनम्	५१०
३ ,,	५५०
४ ,,	७६३
५ ,,	८०१
६ ,,	८६६

श्रीदशवैकालिकम्

टीका मुद्रितः अध्ययनानि	आपत्रं	चूर्णिः हस्तपोथी आपत्र	मुद्रितः आपृष्ठं
१	८१	३२	७०
२	९९	४१	९२
३	११९	५२	११७
४	१६०	७२	१५८
५	१९०	८९	२०६
६	२०६	१०१	२३४
७	२२३	११५	२६५
८	२३८	१२८	२९४
९	२५८	१४३	३२९
१०	२६८	१५२	३४८
चू. १	२७७	१६०	३६६
चू. २	२८६	१६६	३८०

श्रीउत्तराध्ययनानि

अध्ययनानि	आपत्रं	अध्ययनानि	आपत्रं
१	७०	१९	४६५
२	१४०	२०	४८१
३	१८९	२१	४८७
४	२२८	२२	४९६
५	२५४	२३	५१२
६	२७०	२४	५१९
७	२८५	२५	५३१
८	२९७	२६	५४७
९	३१९	२७	५५३
१०	३४१	२८	५६९
११	३५३	२९	५९७
१२	३७३	३०	६०९
१३	३९२	३१	६१८
१४	४११	३२	६३९
१५	४१९	३३	६४८
१६	४३०	३४	६६२
१७	४३६	३५	६६८
१८	४४९	३६	७१४

श्रीविशेषावश्यकम्

आविषयः	आपत्रं
आभिनिबोधिकज्ञानं	२४९
केवलज्ञानं	२९९
उद्देशादिद्वारव्याख्या	६६२
गणधरवादः	८३६
निह्नववादः	१०४४
अर्हन्नमस्कारः	११८०
सिद्धनमस्कारः	१२२७
प्रशस्तिः	१३६०

श्रीपिण्डनिर्युक्तिः

आविषयः	आपत्रं
पिण्डनिरुपणम्	२८
उद्गमादिदोषाः	११९
उत्पादनादिदोषाः	१४६
ग्रासैषणाः	१७८

श्रीअनुयोगद्वाराणि

आविषयः	आपत्रं
आवश्यकश्रुतस्कंध-निक्षेपा	४३
आनुपूर्वी	१०४
दशनामाधिकारः	१५०
प्रमाणद्वाराधिकारः	२४१
निक्षेपाधिकारः	२५७
अनुगमाधिकारः	२६२
नयाधिकारः	२६७

श्रीओघनिर्युक्तिः

आविषयः	आपत्रं
प्रतिलेखनादि	१२७
पिण्डद्वारम्	२०७
विशुद्धिद्वारम्	२३७

श्रीनंदीसूत्रम्

आविषयः	आपत्रं
पर्षद्	६४
अवधिज्ञानम्	९८
मनःपर्यवज्ञानम्	१२१
केवलज्ञानम्	१२९
मतिज्ञानम्	१८४
श्रुतज्ञानम्	२४७

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: शुद्धिपत्रकम् :—

पृष्ठ	विभाग:	पंक्ति:	अशुद्धं	शुद्धं
२४१	१	२७	ककों	कंको
	२	१६	अन्यान्य०	अन्योन्य०
	२	२४	काङ्क्षप्र०	काङ्क्षाप्र०
२४४	१	५	कंडूसंडिओ	कंडूसंठिओ
२४५	१	३	घड्णो	घड्णो
२५१	१	१६	०प्रभृवि०	०प्रभृति०
	१	२४	चतुष्यर्य०	चतुष्पर्य०
२५२	२	१३	अडुअ	कडुअ
२५५	१	६	०वालसमुद्रे	०वलिसमुद्रे
२५६	१	२१	वर्णवाली	कर्णवाली
२६४	१	८	प्रज्ञायनायां	प्रज्ञापनायां
	२	१०	अनुष्ठाम्	अनुष्ठानम्
	२	१८	सप्रमावा	सप्रभावा
२६६	२	१	अहारा०	आहारा०
२७२	२	२२	०मारण०	०भरण०
२७३	२	६	शैत्य०	रौत्य०
२७४	२	६	नीरीगता०	नीरोगता०
२७५	२	३३	०दत्री	०दात्री
२७८	१	२१	ज्ञावे	जवे
	२	१६	ध्याय०	ध्माय०
२८६	२	३४	०रजन्यो:	०रजन्यां
२८६	२	३	०ष्वष्टम०	०ष्वष्टमम०
२९१	२	२४	०वृत्त्वम्	वृत्त्यम्०
२९४	१	१३	किर्त्ति:	कीर्त्ति:
		२१	किर्त्ति०	कीर्त्ति०
२९५	१	१२	०पाद०	०वाद०
	१	२४	सम्यग०	सम्यग्
२९७	२	२७	क्रीडतं	क्रीडितं
	२	२७	१६६	१६
२९८	२	१७	तीर्यक०	तिर्यक्
२९९	१	२	पूर्वाद्ध०	पूर्वार्द्धा०
	२	२४	द्रष्टा	दृष्ट्वा
३०१	१	११	०नमिव	०नामिव
	२	३४	०द्विहस्ति०	०द्विहस्त०
३०९	१	१२	०णबंधि	०णुबंधि
३१०	१	२७	परेष	परेषां
३१२	२	१०	व्यवित्तंका	व्यावर्त्तक
३१७	१	३३	शिल्पेर०	शिल्पेना०
	२	३०	गत्री०	गन्त्री०
३१९	२	१९	गलका:	लगका:
३२०	१	३०	निष्नन्न०	निष्पन्न०
३२१	२	३०	सनस्ख०	सनख०
३२३	१	३३	कसलग	कोसलग
३२६	२	२	क्षोमः	क्षोभ:
	२	६	स्नेह०	स्नेहा०
३३३	१	३०	कर्मकारी	कर्मकरी
३३६	१	३५	खिसात	खिसति
	१	३५	नन्दति	निन्दति
	२	१४	०प्रष्ठितं	०प्रतिष्ठितं
३३९	२	१४	सोपक्रममम्	सोपक्रमम्
३४०	२	५	प्रकारो०	प्राकारो०
३४६	१	१६	युण्य०	युग्य०
३५०	१	३५	०त्तरोस्यां	०त्तरस्यां
३५१	१	४	ज्योतिषका	ज्योतिषिका
३५३	२	४	पतिप्प०	गतिप्प०
३५४	१	२३	०वाशाद्	०वासाद्
३५६	२	३२	कल्पाञ्चल०	कल्पाञ्चला०
३५७	२	२७	महिषं	माहिषं
३५९	२	३४	प्रहरणनाय	प्रहरणाय
३६०	२	४	करणा०	कराणा०
३६१	१	१७	स्वभवा	स्वभावा
३६३	१	२६	ष्यन्ती०	न्ती०
३६५	१	१९	गहस्थ:	गृहस्थ:
	१	२६	धनाभिप:	धनाधिप:
३६८	२	१४	०स्यामिन:	स्वामिन:
	२	२१	कालन्तर-	कालान्तर-
३६९	२	२२	गदं	गुंद
३७०	१	१४	गुणति	गुणन्ति

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठं	विभागः	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
३७०	१	२	०कलो०	फलो०
३७९	१	१४	०स्पा०	०स्या०
३८२	२	५	कच्छायः	कटच्छायः
३८४	२	२८	निर्घणः	निर्घृणः
३८५	१	९	वस्तु	वस्तुं
	२	९	उदासा०	उदात्ता०
३८८	१	८	०जामानः	०जायमानः
	२	४	ज्योत्स्नना	ज्योत्स्ना
३८९	१	१४	देवाता०	देवता
३९०	१	२६	आपस्तु	आपत्सु
	२	९	०हाररे०	०हारे०
	२	१०	०चनादि०	०वचनादि०
३९२	१	१८	०हन्या०	०हान्या०
	१	३०	०प्रहृण०	प्रहरण०
	२	६	०चारण०	पारण०
	२	२३	ययोस्तौ	येषां ते
४०१	२	१५	चाउज्झाभा	चाउज्झामा
४०२	१	३२	चातुर्वर्णा०	चातुर्वर्ण०
४०४	१	३५	०गत्त्वा	०गत्या
४०७	१	९	०पद्र०	०पद०
	२	५	०पद०	०पदा०
	२	२६	०विद्युत०	०विद्युत्०
४०९	२	३	०श्च०	०च०
४११	१	२७	०ध्यमनम्	०ध्ययनम्
	१	३१	चुलसोश	चुलसोइ
	१	३१	चतुरक्षी०	चतुरशी
	२	१५	ध्ययम्	ध्ययनम्
४११	१	१०	अम्रः	आम्रः
	२	२	०रशिति०	०रशीति०
४१३	२	१	व्यूतं	च्यूतं
४१६	१	१६	खंदिअ	छंदिअ
	१	३५	०रात्मकम्	०रायात्मकम्
४१७	१	२०	वाताहि०	वातादि०
४१८	२	१८	सम्मूच्छंति	सम्मूर्च्छन्ति
४२०	१	१०	कमला०	कलमा०

पृष्ठं	विभागः	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
४२०	१	१४	छदित्वा	छादित्वा
४२३	१	१८	क्षुधार्न्तयोः	क्षुधार्त्तयोः
४२६	२	३३	०विशेष०	०विशेषा०
४२८	१	१५	०विशेषः	विशेषाः
	१	३१	०निरिसरा	०निस्सिरा
४३१	२	३०	०पर्यं०	०पर्वं०
४३४	१	३३	गत्रा०	०गात्रा
४३५	१	२६	ऊर्द्धः	ऊर्द्ध्वः
		२८	ऊर्द्धः	ऊर्द्ध्वः
४३७	२	११	देवराजायाणां	देवराणां जाया
४३९	१	९	निर्बिजा	निर्बीजा
	२	२१	०मात्रक०	०मातृक०
	१	२३	०विशेः	०विशेषः
४४१	१	२४	संग्राहा०	संग्राह्य०
४४२	१	३२	जेतव्ययम्	जेतव्यम्
४४४	१	८	०पती	०पतिः
	१	२७	०षेवा०	०सेवा०
	१	३४	प्रावट्०	प्रावृट्०
	२	२	सवानु०	सर्वानु०
४४७	२	६	शुषमा०	सुषमा०
	२	१०	भूदेश०	०देश०
	२	२२	०रङ्गलानि	०रङ्गुलानि
४४८	१	९	०णत्वा	णतत्वा
४४९	२	३०	सेवाना०	सेवना०
४५१	१	७	युजयन्त	युज्यन्त
	२	१	०ध्यन०	०ध्ययन०
	२	१८	०र्वद्धिः	०र्वृद्धिः
४५२	१	१२	सम्यग०	सम्यग्०
	२	१०	०परि०	०पत्ति०
४५३	१	२८	ध्यानमितं	ध्यामितं
४५४	२	२१	मासानुपरियान्	मासानामुपरि यानु
	२	२२	अनोरोपणं	अनारोपणं

आ मकान

शेठ-देवचंद-लालभाइ-जैनपुस्तकोद्धार फंडनी कायमी रकमथी खरीदवामां आवेलु छे

रु. १,१०,००० एक लाख दश हजार

कालबादेवी नं. १९९ आ मकान छे. तेमां भोयतळीए शयाजीविजय बोर्डिंग कु., पहेले माळे काशीनाथ बेंकर, बीजे माळे जादवजी प्रेमजी गांधीना बोर्डो छे.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

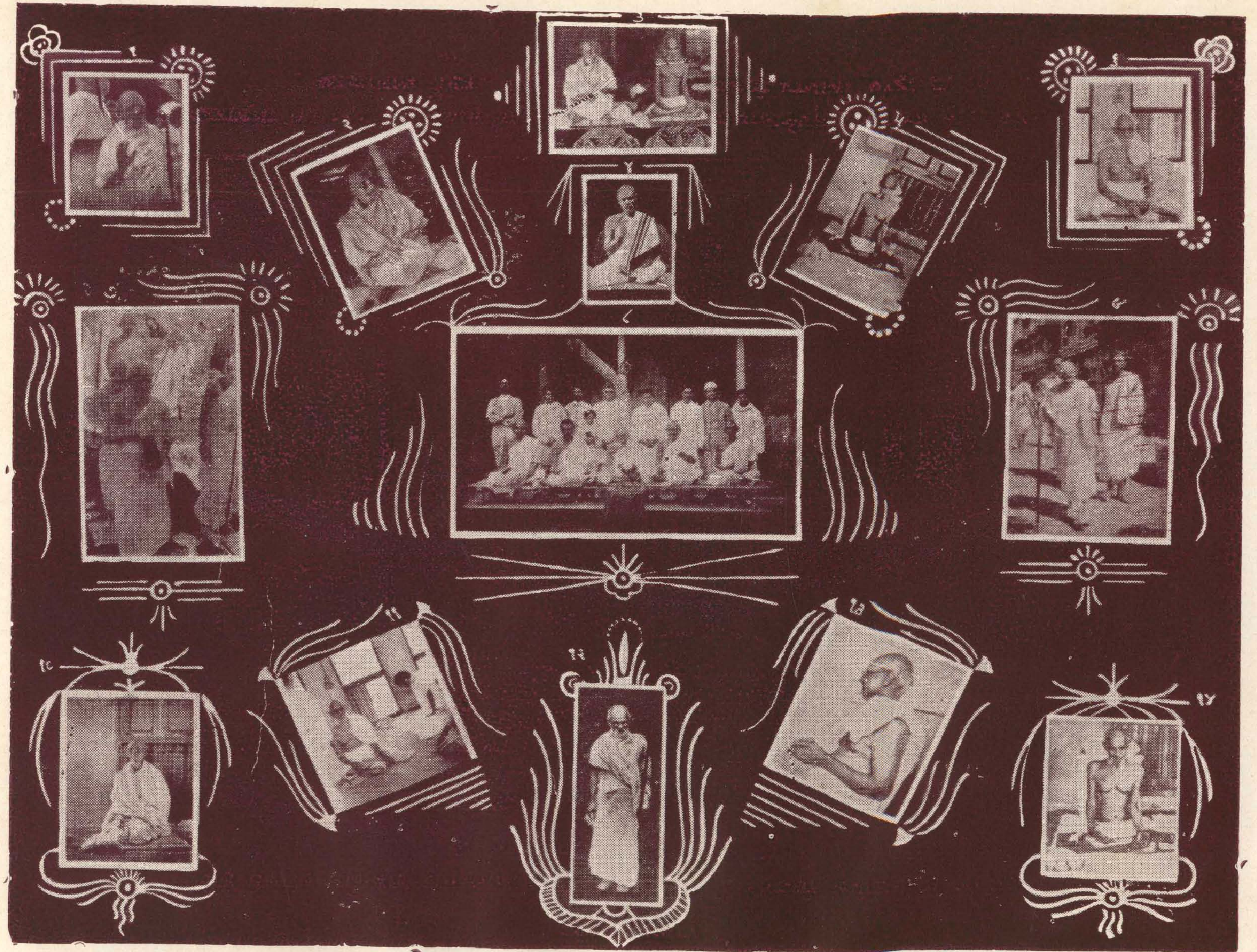

દેવસૂરતપાગચ્છસામાચારીસંરક્ષક, આગમમંદિરોના સંસ્થાપક, બહુશ્રુત, ધ્યાનસ્થસ્વર્ગત,

શ્રીઆનંદસાગરસૂરીશ્વરજી મહારાજ

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ગ્રુપ ફોટાની માહિતિ

૧ ૨૦૦૪ આગમમંદિર સુરતની પ્રતિષ્ઠા પછી આશીર્વાદ

૨ ૨૦૦૪ નવલચંદ ખીમચંદ ઝવેરીની ધર્મશાળામાં કંઈક જોતાં

૩ अ સુરત નેમુભાઈની વાડીમાં તેવે વખતે બેઠેલો. आ ૨૦૦૬ સ્વર્ગવાસ પૂર્વેનો ધ્યાનસ્થ મુદ્રાનો

૪ ૧૯૭૭ રતલામમાં ગૃહસ્થની દાક્ષિણ્યતાનો

૫ ૨૦૦૬ વૈ. વ. ૫ ના સ્વર્ગગમન પૂર્વે કાયાની માયા મૂકી અર્ધપદ્માસને ધ્યાનસ્થ મુદ્રા સ્વીકારી તેનો

૬ આ. શ્રીવિજયપ્રીતિચંદ્રસૂરિ મ૦ના આગ્રહથી રાંદેર પધાર્યા ત્યારે

૭ સુરતના આગમમંદિરની શીલા સ્થાપના મુહુર્તે વાસક્ષેપ નાખવાની તૈયારી

૮ ૧૯૯૨ માં સિદ્ધક્ષેત્ર ચાર આચાર્ય પદ્વીની યાદગીરીનો પાંચ આચાર્યનો

૯ ૨૦૦૪ મહા. વ. ૪ ના પ્રભાતે આગમમંદિર સુરતના પ્રથમ દ્વારોદ્દ્ઘાટન બાદ દર્શન કરી પાછા ફરતી ગુરુશિષ્યની બેલડી

૧૦ ૨૦૦૪ સુરતમાં કોઈ પદાર્થ જોતાં

૧૧ ૨૦૦૩ રાંદેરમાં કાંઈક જોતાં

૧૨ ૧૯૯૯ ની ચૈત્ર ઓળીમાં કપડવંજ પધારતાં ગ્રુપમાંથી એક

૧૩ ૧૯૯૮ માં પાલીતાણામાં છીંકણીની ડબીવાળો

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प. पू. ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक आचार्य
श्रीआनंदसागर सूरीश्वरजी म. ना अनन्य पट्टधर
शान्तमूर्ति गच्छाधिपति विद्याभ्यासंगी स्थवीर
मूलीनरेश प्रतिबोधक
आचार्यश्रीमणिक्यसागरसूरीश्वरजी
महाराज

અર્પણ

પ્રથમ ભાગના સંશોધનમાં
ગુરુદેવની હાજરીમાં આપે
આપેલા માર્ગદર્શને
સ્મરણ
કરીને
તેનો
દ્વિતીય ભાગ
આગમોદ્ધારકના અનન્ય પટ્ટધર
શતાંમૂર્તિના
કરકમલમાં
સાદર સમર્પણ

આપના સેવકો
પ્રકાશકો

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीआगमोद्धारकाष्टकम् ॥

पुरे कपडवञ्जाख्ये, श्राद्धमगनलालसूः ।
शासनरक्षणार्थं तु, यमुनाकुक्षिदीपकः ॥ १ ॥
हेमचन्द्रः समुत्पन्नः, शशीवाभासयद्भुवम् ।
पित्रोः पवित्रसंस्काराद् बालोऽयं संस्कृतः सदा ॥ २ ॥ युग्मम्

અર્થ—કપડવંજ નામના નગરમાં શ્રેષ્ઠી મગનલાલ અને શ્રીયમુનાદેવીના પુત્ર તરીકે શ્રીહેમચંદભાઈ શાસનની રક્ષા માટે ઉત્પન્ન થયા. જેમણે ચંદ્રમાની જેમ પૃથ્વીને પ્રકાશિત કરી. જેઓ માતાપિતાના પવિત્ર સંસ્કારથી સંસ્કારી હતા. (૧-૨)

प्रौढबुद्धिर्वशी ज्ञानी, विवेकी निर्भयः सदा ।
झवेरसागरस्यास–न्ने गुरोर्वाग्मिनो मुदा ॥ ३ ॥
प्रपेदे संयमं श्रेष्ठं, हेमचन्द्रो जितेन्द्रियः ।
आनन्दसागरो नाम्ना विख्यातो वीरशासने ॥ ४ ॥ युग्मम्

અર્થ—પ્રૌઢ બુદ્ધિવાળા, ઇન્દ્રિયોને વશ કરનાર, જ્ઞાનવાળા, વિવેકશીલ, હમેશાં નિર્ભય, જિતેન્દ્રિય એવા હેમચંદભાઈએ, વિદ્વાન શ્રીઝવેરસાગરજી મહારાજની પાસે ઉત્તમ સંયમને ગ્રહણ કર્યું અને શ્રી વીરશાસનમાં 'આનન્દસાગર'ના નામથી પ્રસિદ્ધ થયા. (૩-૪)

गीतार्थसार्वभौमश्च, शैलानाधिपबोधकः ।
स्रष्टाऽऽगममन्दिरयोः, श्रीतपागच्छभूषणः ॥ ५ ॥
विपक्षपक्षकक्षस्य, नाशहेतुहुताशनः ।
अजैषीत्पुरूषार्थः स्वै–र्नैकशासनदूषकान् ॥ ६ ॥ युग्मम्

અર્થ—ગીતાર્થશિરોમણિ, શૈલાનાનરેશને પ્રતિબોધ કરનાર, ('સુર્યપુર' તથા પાલીતાણામાં) આગમમંદિરનું નિર્માણ કરાવનાર, તપાગચ્છમાં ભૂષણસમાન, વિપક્ષરૂપી કાષ્ઠને નાશ કરવામાં અગ્નિસમાન એવા જેમણે પોતાના પુરુષાર્થથી અનેક શાસનના દૂષકોને જીત્યા. (૫-૬)

माणिक्यचन्द्रहेमादि–शिष्यमण्डलमण्डितः ।
केशरियान्तरीक्षादौ श्रीजिनशासनस्य च ॥ ७ ॥
सम्मेतशिखरे तीर्थे योऽचम्पद्यशोध्वजम् ।
आगमोद्धारको जीयात् सूरिरान्दसागरः ॥ ८ ॥ युग्मम्

અર્થ—આ. શ્રી મણિક્યસાગરજી, આ. શ્રી ચન્દ્રસાગરજી, આ. શ્રી હેમસાગરજી વગેરે શિષ્યમંડળથી શોભતા જેમણે કેશરિયાજી, અન્તરીક્ષજી તથા સમેતશિખરજી વ. તીર્થોમાં શ્રી જિનશાસનની કીર્તિપતાકાને ફરકાવી તે આગમોદ્ધારક આચાર્યશ્રી આન્દસાગરસૂરિજી વિજય પામો. (૭-૮)

अमरकीर्तिना क्लृप्त–मष्टकं पुण्यदायकम् ।
श्रोतॄणां पठतां चैव, भूयात् मङ्गलकारकम् ॥ ९ ॥

અર્થ—આ પ્રમાણે અમરકીર્તિએ બનાવેલું, પુણ્યને આપનારું અષ્ટક, સાંભળનાર તેમજ ભણનારને મંગલ કરનારું થાવ. (૯)

☆

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

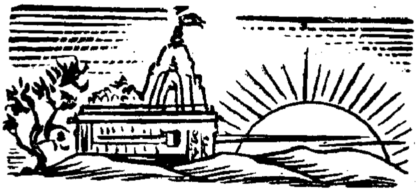

આગમ વટવૃક્ષ

(ટૂંક પરિચય)

卐

જૈન શાસનમાં આરાધક આત્માઓને વર્તમાનકાળે પરમ આધારભૂત બે વસ્તુ છે. ૧ જિન પ્રતિમા ૨ જિનાગમ.

વિષય-કષાયના વિષમ સંસ્કારો અને પરસ્પર વિરૂદ્ધ નાનાવિધ સંપ્રદાયોની વિસંવાદી માન્યતાઓના ગજગ્રાહમાંથી છુટી નિષ્કપટભાવે શુદ્ધ આરાધના માટે ગીતાર્થોની નિશ્રાએ આ બે સાધનોનો યથાયોગ્ય શરણાગતભાવે આશરો લેવો પરમ હિતાવહ છે.

આથી પૂર્વાચાર્ય ભગવંતોએ આ બે સાધનોને આબાલગોપાલ દરેક આરાધક સર્વસાધારણ રીતે પરમોત્કૃષ્ટ સાધનરૂપે સમજી શકે તેવી સૂર્ય-ચંદ્ર-સરોવર-સમુદ્ર-પુરૂષ-કલ્પવૃક્ષ આદિની ઉપમાઓ જણાવી છે.

આવી એક અનુપમ ઉપમાના રહસ્યને સમજવા **આગમ વટવૃક્ષ** નામે પ્રસ્તુત ચિત્રનો પરિચય ભવ્યાત્માઓના હિતાર્થે અપાય છે.

આ ચિત્રમાં નિષ્કારણ ઉપકારી વિશ્વવત્સલ શ્રીતીર્થંકર ભગવંતોએ ભાવકરૂણાથી પ્રરૂપેલ જગહિતકર માર્ગનું પ્રતિપાદન કરનારા **આગમોની** મહત્તા **વટવૃક્ષની** રૂપક ઉપમાદ્વારા સમજાવવા પ્રયાસ કર્યો છે.

વટવૃક્ષ—બીજા બધા વૃક્ષો કરતાં વડની મહત્તા, તેનો વિસ્તાર, વડવાઈઓથી ઉત્તરોત્તર થતો વિકાસ અને ત્રણે ઋતુમાં એક સરખી રીતે દરેક પ્રાણીઓને આશ્રય મેળવવાની અનુકૂળતા આદિ કારણોથી જગજાહેર છે.

તે રીતે નિષ્કારણ ભાવકરૂણાના ભંડાર શ્રીતીર્થંકર ભગવંતોએ પ્રરૂપેલ આગમો એકાંત-હિતકરતા અને અત્યંત ઉપયોગિતા વટવૃક્ષની ઉપમા દ્વારા સમજાય તેમ છે.

ચબૂતરો—સામાન્ય રીતે વૃક્ષોનો વ્યવસ્થિત વિકાસ અને તેની ઉત્તરોત્તર સુરક્ષા તેમજ લોકો તેનો વધુ લાભ લે તે હેતુથી ઝાડના થડને ફરતો ગોળ કે ચોરસ ઓટલા જેવો ચબૂતરો જરૂરી છે.

આ રીતે તત્ત્વજ્ઞાનના અખૂટ વારસા સમા જૈનાગમોના વ્યવસ્થિત અભ્યાસ દ્વારા જન્મતી વિવેકબુદ્ધિના પ્રતાપે મોહના અશુભ સંસ્કારોને ઘટાડવા-રોકવાની પ્રબળ તમન્નાને પોષક સચ્ચારિત્રની ભાવનાનું મૂળ આબાલગોપાલ સુલભ રીતે જેના પઠન-પાઠનથી બાલ-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

જીવોના હૈયામાં રોપાય છે તે ચાર મૂળ સૂત્રરૂપ ચોરસ-ઓટલો ચબુતરારૂપે આગમ-વટવૃક્ષને ફરતો બતાવવામાં આવ્યો છે.

તેમાં પણ આગળના ભાગે ઓટલા ઉપર ચઢવા માટે પગથીયાં તરીકે **નંદીસૂત્ર અને અનુયોગ દ્વાર** બતાવેલ છે, તે એટલા માટે કે કોઈ પણ આગમના વ્યવસ્થિત જ્ઞાન માટે મંગલાચરણ તરીકે શ્રી નંદીસૂત્રનું અધ્યયન અને વ્યાખ્યાની પદ્ધતિઓની વિશિષ્ટ શૈલીને સમજવા શ્રી અનુયોગ-દ્વાર સૂત્રનું પ્રાથમિક અધ્યયન અત્યંત જરૂરી છે.

વળી ચબુતરામાં ઈંટો તરીકે ચાર મૂલસૂત્રો તેમ જ તેના પેટા ભેદરૂપ અવાન્તર સૂત્રો દર્શાવ્યાં છે.

તથા ચબુતરાની વચલી પટ્ટીમાં મૂલસૂત્રોની લાક્ષણિક વ્યાખ્યા દર્શાવી છે, કે "શ્રીતીર્થંકર પરમાત્માઓએ સ્થાપેલ શાસનની આદિ અને અંત જે સૂત્રોની હયાતી સાથે સંકળાયેલ છે તે **મૂલસૂત્ર** "

ચબૂતરા પર મધ્ય ભાગે વર્તમાન આગમોને અર્થથી પ્રરૂપતા શ્રી ચરમતીર્થંકર શાસન-નાયક **શ્રીમહાવીર પરમાત્મા** અષ્ટપ્રાતિહાર્યસમેત ભાવતીર્થંકરની મુદ્રાએ દર્શાવ્યા છે, તેઓશ્રીની જમણી બાજુ અગ્યાર ગણધરોમાં મુખ્ય અનંતલબ્ધિનિધાન આદ્યગણધર **શ્રીગૌતમસ્વામીજી** અભયમુદ્રાએ તથા ડાબી બાજુ વર્ત્તમાન શ્રમણસમુદાયના નાયક પંચમ ગણધર **શ્રીસુધર્માસ્વામીજી** પ્રવચન મુદ્રાએ દર્શાવ્યા છે.

આ સિવાય ચબૂતરાની બંને બાજુ સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક, શ્રાવિકારૂપ ચતુર્વિધ શ્રીસંઘ પ્રભુની જગહિતકારિણી ભાવવાત્સલ્યપૂર્ણ દેશના અને વાણીના લાભની જિજ્ઞાસાવાળી મુદ્રાએ દર્શાવેલ છે.

તેમાં પણ ડાબી બાજુ સાધુઓની પ્રથમ હરોળમાં બાકીના નવ ગણધરો વિશિષ્ટ તેજો-વલયથી જુદા તરી આવતા દર્શાવ્યા છે, તેમની પાછળ સાધુઓ અને શ્રાવકોનો વિપુલ સમૂહ દર્શાવ્યો છે

આ રીતે જમણી બાજુ વિશિષ્ટ તેજોવલયથી જુદા તરી આવતા શ્રીચંદનબાલાજી આદિ સાધ્વીઓ અને તેમની પાછળ વિપુલ શ્રાવિકાઓ બતાવી છે.

વળી ચબૂતરાની પાછળના ભાગે ઉગતા સૂર્યના પ્રકાશરૂપે શ્રીકેવલજ્ઞાનની પ્રભા બતાવેલ છે, તે એમ સૂચવે છે કે-કેવલજ્ઞાનની નિર્મળતાના પાયા ઉપર જ વીતરાગની વાણીની જગહિતકરતા નિર્ભર છે.

આટલી વાત આગમવટવૃક્ષની સર્વહિતકરતાને સાબીત કરનારી પ્રાથમિક રૂપે જાણવી.

હવે વટવૃક્ષના થડ તરીકે શ્રીતીર્થંકર દેવો પાસેથી ત્રણ નિષદ્યાપૂર્વક પૂ. ગણધર ભગવંતોએ મેળવેલ **ત્રિપદી** દર્શાવી છે.

તેની ઉપરના ભાગે ડાબે મોટી શાખામાં શ્રીઆચારાંગ, શ્રીસૂત્રકૃતાંગ શ્રીસ્થાનાંગ, શ્રીસમવાયાંગ અને શ્રીજ્ઞાતાધર્મકથા એમ પાંચ સૂત્રો ઉપર-નીચે વારાફરતી મોટા પાંદડાં-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

રૂપે બતાવ્યાં છે, અને પાંદડાંના મૂળમાં વડના લાલ ટેટારૂપે તે તે ઉપાંગો બતાવ્યાં છે. અને આ શાખાના છેડાના ભાગે વર્ત્તમાન આગમોમાં અત્યંત મહિમાશાળી શ્રીવ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિ–શ્રીભગવતીસૂત્ર દર્શાવ્યું છે અને તેમાંથી ૯ પાંદડાં નીકળેલાં દર્શાવ્યાં છે, જેમાં શ્રીભગવતીસૂત્રમાંથી ઉદ્ધૃત નીચેનાં પ્રકરણો દર્શાવ્યાં છે.

૧ પરમાણુ છત્રીશી	૫ કાયસ્થિતિ પ્રકરણ
૨ નિગોદ ,,	૬ લોકનાલિકા ,,
૩ પુદ્ગલ ,,	૭ સમવસરણ ,,
૪ બંધ ,,	૮ પંચનિર્ગ્રંથી ,,

૯ પ્રજ્ઞાપના તૃતીયપદ સંગ્રહણી

આ જ પ્રમાણે જમણે મોટી શાખામાં શ્રીઉપાસકદશા, શ્રીઅંતગડદશા, શ્રીઅનુત્તરોપપાતિકદશા, શ્રીપ્રશ્નવ્યાકરણ અને શ્રીવિપાકસૂત્ર મોટા પાંદડારૂપે બતાવ્યાં છે, તેઓના તે તે ઉપાંગ સૂત્રો તેના મૂળમાં વડના લાલ ટેટારૂપે બતાવ્યાં છે.

આ બંને શાખાઓ વચ્ચે શ્રીનંદીસૂત્ર ચૂર્ણિમાં પુરૂષાકારે દ્વાદશાંગીના મહિમાને વ્યક્ત કરનાર આગમપુરૂષનું ચિત્ર જણાવી વટવૃક્ષદ્વારા જણાવાતી આગમોની હિતકારિતાનો વધુ પરિચય આપવાનો પ્રયત્ન સેવ્યો છે.

આ આગમપુરૂષના મથાળે આખી દ્વાદશાંગીમાં સૌથી મહત્ત્વનું સંખ્યાની દૃષ્ટિએ બારમું પણ જેના ચોથા પેટા વિભાગની રચના ચૌદ પૂર્વો તરીકે શ્રીગણધર ભગવંતો સર્વ પ્રથમ કરીને મુમુક્ષુ ભવ્યાત્માઓ માટે અત્યંત જરૂરનું શ્રીદૃષ્ટિવાદ નામનું અંગ થડના ઉપરના ભાગે દર્શાવેલ છે. તેની નીચે નાની–નાની શાખાઓરૂપે બે બાજુ પાંચ–પાંચની સંખ્યામાં દશ પ્રકીર્ણકસૂત્રો (પયન્નાઓ) દર્શાવ્યા છે.

દૃષ્ટિવાદના મુખ્ય થડમાંથી મહત્ત્વની પાંચ મોટી શાખાઓ નીકળતી બતાવી છે, તે છે દૃષ્ટિવાદના પાંચ ભેદો.

પરિકર્મ, સૂત્ર, અનુયોગ, પૂર્વગત, ચૂલિકા જેમાંના પહેલા બે ભેદ અને છેલ્લા ભેદ સંબંધી આજે ઉપલબ્ધ આગમોમાં કંઇ પરિચય મળતો નથી. બાકી અનુયોગમાંથી તીર્થંકરો, ગણધરો, ચક્રવર્તીઓ આદિ મહાપુરૂષોના જીવન ચરિત્રોને જણાવનાર કથાનુયોગ જેનું બીજું નામ પઢમાણુયોગ છે જે શાખામાંથી વસુદેવહીંડી–બ્રહ્મદત્તચરિત્ર નામના બે ગ્રંથો પાંદડાંરૂપે દર્શાવ્યા છે, અને ગંડિકાણુયોગની શાખામાંથી ગણધરગંડિકા, યુગપ્રધાન ગંડિકા બે ગ્રંથો પાંદડાંરૂપે દર્શાવ્યા છે.

આ રીતે પૂર્વગતની શાખામાંથી ડાબે છ છેદસૂત્રોની મોટી શાખા તેમ જ ૧૬ પ્રાભૃતોની લઘુશાખા અને જમણે ચૌદ પૂર્વોની બે મોટી શાખાઓ નીકળી છે.

ચૌદ પૂર્વોમાં તે તે પૂર્વોરૂપી લઘુશાખામાંથી છ કર્મગ્રંથો, દશવૈકાલિક સૂત્રના તે તે અધ્યયનો, ઉવસગ્ગહરં–સ્તોત્ર, પંચસંગ્રહ, જીવસમાસ, સંસ્કૃત નિર્યુક્તિ, પૂજા ચતુર્વંશતિકા,

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

નયચક્ર, કર્મપ્રકૃતિ, ઓઘનિર્યુક્તિ, કલ્પસૂત્ર, પ્રતિષ્ઠાકલ્પ, મહાકલ્પ, સ્થાપનાકલ્પ વગેરે તે તે મહત્ત્વના ગ્રંથો જે જે પૂર્વમાંથી ઉદ્ધૃત થયા છે તે પાંદડાંમાં નિર્દિષ્ટ કર્યા છે.

વૃક્ષના મથાળે અરિહંત પરમાત્માનું તેજસ્વી બિંબ દર્શાવી વીતરાગપ્રણીત હોવાના કારણે આ આગમો એકાંત કલ્યાણકર છે એવો ભાવ સૂચવ્યો છે.

આ સિવાય આ વૃક્ષમાં ગોળાકારે લખેલ નામો ૮૪ આગમોની સંકલના સૂચવે છે.

મૂળ પટમાં તો ઉઘડતા રંગમાં ૪૫ આગમો અને હયાતી ધરાવતા આગમોનો નિર્દેશ કર્યો છે, અને ઘેરા રંગમાં ૮૪ આગમો અને વિચ્છેદ પામેલ નામશેષ આગમો દર્શાવ્યા છે.

વળી વડના ઝાડને હોય છે તેવી વડવાઈઓરૂપે આગમરૂપી વૃક્ષના સ્વરૂપને ટકાવનાર-વિકસાવનાર પંચાંગીમાંથી નિર્યુક્તિ, ચૂર્ણિ, ભાષ્ય અને વૃત્તિઓને દર્શાવી મુમુક્ષુઓના હિતાર્થે આગમોનો વારસો ગીતાર્થોએ કેટલો સરસ વિવિધ રીતે આપ્યો છે તે સમજાય છે.

તથા આ વડવાઈઓના પાછળના ભાગે નીચે જમીન પર જુનાં ખરી પડેલ પાંદડાંઓનો ઢગલો આજ સુધીમાં ઘણા ઘણા વિચ્છેદ પામેલા આગમો સૂચવે છે.

આ પ્રમાણે આત્માને કલ્યાણના પંથે આગળ ધપવા માટે જરૂરી માર્ગદર્શન આપનાર વીતરાગ પરમાત્માની વાણીના વારસારૂપે હાલમાં ઉપલબ્ધ ૪૫ આગમોના માર્મિક સ્વરૂપને ધ્યાનમાં રાખી જીવનને આધ્યાત્મિક પંથે વધારવા પ્રયત્ન કરવો જરૂરી છે.

વીર નિ. સં. ૨૪૮૭
વિ. સં. ૨૦૧૭
માહ શુદ ૯
જૈન ઉપાશ્રય
મુ. ઉંઝા

લિ.
પૂજ્ય ગુરૂદેવ શ્રી ધર્મસાગરજી મ૦ ગણિવર ચરણોપાસક
મુનિ અભયસાગર

સાધના મુદ્રણાલય : દાણાપીઠ-ભાવનગર.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ॐ अर्हम् ॥

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

श्रेष्ठि देवचन्द्रलालभाई-जैन-पुस्तकोद्धारे-ग्रन्थाङ्कः-

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः-

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

द्वितीय-विभागः

ककारः

कंकटुकदेश्यः-काङ्कटुकतुल्यः । आचा० २२२ ।

कंकडइयो-कण्टकितः । कृतकवचः । प्रश्न ४७ ।

कंकडुओ-यस्य व्यवहारः काङ्कटुकमाष इव न सिद्धिमुपयाति स काङ्कटुकव्यवहारयोगात् काङ्कटुकः । व्य० प्र० २५५ आ ।

कंकडुगो-काङ्कटुकः । आव० ८५५ ।

कंकडो-कङ्कटः । कवचः । भग० ३२२, ४८१ । जीवा० १६३ । जं० प्र० ३७ । राज० ७७ ।

कंकणो-संज्ञाविशेषः । नि० चू० द्वि० ५५ आ ।

कंकतकी-फणिहः । 'कांसकी'ति लोके । अनु० २४ । फणिहम् । सूत्र० ११७ ।

कंकतिका-'कांसकी' इति लोके । नंदी० १५२ ।

कंकदोवियो-वनजीवः । मर० ।

कंकलोहकत्तिया-कङ्कलोहकर्तरिका । शस्त्रविशेषः । आव० ६६० ।

कंका-लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ । कङ्काः-दीर्घपादाः । जं० प्र० १७२ ।

कंकायः-शस्त्रविशेषः । ठाणा ४५६ ।

कंकावंसे-पर्वगविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

कंको-लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ । कङ्कः-पक्षिविशेषः । जीवा० २७७ । प्रश्न० २१ । एतदभिधानाऽसिः । आव० ३७४ । पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८२ । ठाणा० २६४ । जं० प्र० ११७ । प्रश्न० ८२ ।

कंखंति-काङ्क्षन्ते प्राप्तं सद् विमोक्तु नेच्छन्ति । औप० २२ । भग० ।

कंखणं-काङ्क्षणं-अपेक्षा । भग० ९३ ।

कंखपओसे-काङ्क्षाप्रदोषः । भगवत्याः प्रथमशतके तृतीयोद्देशकः । काङ्क्षा-मिथ्यात्वमोहनीयोदयसमुत्थोऽन्यान्यदर्शनग्रहरूपो जीवपरिणामः । स एव प्रकृष्टो दोषो-जीवदूषणं काङ्क्षाप्रदोषः । भग० ६ । इदमित्थं इत्थं च ममाध्येतुमुचितमित्यादिका वाञ्छा । उत्त० ५८४ ।

कंखा-काङ्क्षणं-अपेक्षा । भग० ९४ । कंखणं कंखा अभिलासो अन्नोन्नदंसणगहो । नि० चू० प्र० ११ आ० । काङ्क्षा-परद्रव्येच्छा, तृतीयाऽधर्मद्वारस्य चतुर्विंशतितमं नाम । प्रश्न० ४३ । अन्यान्यदर्शनग्रहः । भाग० ५२ । गृद्धिः-आसक्तिः । भग० ८९ । दर्शनान्तरग्रहो गृद्धिर्वा । भग० ९७ । अप्राप्तार्थाशंसा । भग० ५७३ । सुगतादिप्रणीतदर्शनेष्वभिलाषः । आव० ८११ ।

कंखापदोस-दर्शनान्तरग्रहरूपो गृद्धिरूपो वा प्रकृष्टो दोषः कङ्क्षाप्रदोषः, काङ्क्षप्रद्वेषं वा रागद्वेषौ । भग० ९७ ।

कंखामोहणिज्ज-काङ्क्षामोहनीयम् । काङ्क्षाया मोहनीयं मिथ्यात्वमोहनीयमित्यर्थः । भग० ५२ । काङ्क्षा-इदमित्थमित्थं च ममाध्येतुमुचितमित्यादिका वाञ्छा, सैव मोहयतीति काङ्क्षामोहनीयं कर्म अनभिग्रहिकमिथ्यात्वरूपम् । उत्त० ५८४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंखिए-काङ्क्षितः, उत्तरलाभाकाङ्क्षावान् । भग० ११२ ।

कंखिते-काङ्क्षितः । मतान्तरमपि साध्विति बुद्धिः । ठाणा० २४७ । तत्फलाकाङ्क्षावान् । ज्ञाता० ६५ । मतान्तरस्यापि साधुत्वेन मन्ता । ठाणा० १७६ ।

कंगु-धान्यविशेषः । भग० ८०२ । कङ्गवः-पीततण्डुलाः । जं० प्र० १२४ ।

कंगुपलालं-रालओ । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

कंगू-औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । धान्यविशेषः । सूत्र० ३०६ । कङ्गुः-उदकङ्गुः । दश० १६३ । कङ्गूः-कोद्रवौदनः । पिण्ड० १६८ । बृहच्छिरा कंगू । नि० चू० प्र० १४४ आ ।

कंगूया-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कंचणं-काञ्चनकूटं-सौमनसवक्षस्कारकूटनाम । जं० प्र० ३५३ ।

कंचणकूडं-सम० १३ ।

कंचणकोसी-काञ्चनकोशी—सुवर्णखोला । जं० प्र० २६५ ।

कंचणपव्वए-उत्तरकुरुषु शीतानदीसम्बन्धिनां पञ्चानां नीलवदादिह्रदानां क्रमव्यवस्थितानां प्रत्येकं पूर्वापरतटयोर्दश दश काञ्चनाभिधाना गिरयः । भग० ६५५ ।

कंचणपुर-काञ्चनपुरं कलिङ्गदेशे नगरम् । व्य० द्वि० ४१३ आ । काञ्चनपुरं कलिङ्गजनपदे नगरम् । ओघ० २१ । कलिङ्गेषु आर्यक्षेत्रम् प्रज्ञा० ५५ । द्रव्योत्सर्गे नगरम् । आव० ७१८ । करकण्डुराजधानी । उत्त० ३०२ ।

कंचणपुरी-नगरविशेषः । नि० चू० द्वि० ५५ अ ।

कंचणमाला-कञ्चनमाला शिक्षायोग्यदृष्टान्ते प्रद्योतराजपुत्र्या वासवदत्ताया दासी अम्बधात्री च । आव० ६७४ ।

कंचणा-काञ्चनाः काञ्चनमयपर्वताः । प्रश्न० ९६ ।

कंचणियं-रुद्राक्षकृता काञ्चनिका । भग० ११३ ।

कंचणिया-काञ्चनिकाः, रुद्राक्षमयमालिकाः । औप० ९५ ।

कंचिक्को-कञ्चित्कः, नपुंसकम् । बृ० तृ० १०२ आ ।

कंचिपुरी-नगरविशेषः । नि० चू० प्र० १३६ आ ।

कंची-काञ्ची कट्याभरणविशेषः । प्रश्न० १५६ । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।

कंचुइओ-कञ्चुकिनामान्तःपुरप्रयोजननिवेदकः प्रतिहारो वा । ज्ञाता० ४१ ।

कंचुइज्जो-कञ्चुकी । आव० २२५ ।

कंचुओ-कञ्चुकः । विषधरनिर्मोकः । विशे० १००७ । कञ्चुकः-संघात्यम् । दश० ८७ । कञ्चुकः-छिन्नसन्धानो वस्त्रविशेषः । आचा० ८६ ।

कंचुग-कञ्चुकं—अधःपरिधानं, पुरुषस्याऽधस्तनं स्यूतं वस्त्रम् । आव० ४३४ । ओघ २०६ ।

कंचुय-कञ्चुकी--वारबाणः । अन्त० ७ । कञ्चुको वारबाणः । भग० ४६० ।

कंजिक-काञ्जिकं—सौवीरम् । पिण्ड० १६८ ।

कंजिगं-अवश्रावणम् । नि० चू० प्र० २०३ आ ।

कंजिया-अवश्रावणम् । बृ० द्वि० १२६ आ । नि० चू० प्र० ३२६ अ । (देशी०) आरनालं । नि० चू० प्र० ४७ । अ बृ० प्र० २५३ अ ।

कंट—कण्टकः । नि० चू० प्र० ३२ अ ।

कंटइल्ल—कण्टकितो बदरीबब्बूलप्रभृतयः । व्य० प्र० ६१ आ । कण्टकवान् । प्रश्न० २० ।

कंटए-कण्टकः, गोत्रजवैरी । जं० प्र० २७७ ।

कंटकादिप्रभवः—आगन्तुको व्रणः । आव० ७६५ ।

कंटगापह-कण्टकपथः कण्टकाश्च द्रव्यतो बब्बूलकण्टकादयः, भावतस्तु चरकादिकुश्रुतयः तैराकुलः पन्थाः । उत्त० ३४० ।

कंटय-कण्टकः—बाधकः-शत्रुः । भग० १०१ । कण्टकाः दायादाः । ठाणा० ४६३ । देशोपद्रवकारिणश्चरटाः कण्टकाः । राज० ११ । कण्टकः-प्रतिस्पर्द्धिगोत्रजः । औप० १२ । कण्टकः । जीवा० २८२ ।

कंटिया-कण्टिका-कण्टकशाखा । बृ० द्वि० २५ अ । कण्टकः । आव० १६५, ३५२ ।

कंठ-कण्ठः—गलः । उत्त० ३५६ ।

कंठतो-सूत्रपदैः साक्षात् । बृ० तृ० २२६ अ ।

कंठमुरविं-कण्ठमुरवी, कण्ठासन्नं मृदङ्गाकारमाभरणम् । जं० प्र० २७५ ।

कंठलं-ग्रैवेयकम् । औप० ५५ ।

कंठविशुद्धं—कण्ठे यदि स्वरो वर्तितोऽस्फुटितश्च, ततः कण्ठ

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशुद्धम् । ठाणा० ३९६ । जं० प्र० ४० । अनु० १३२ ।

कंठसद्द–कण्ठैकपार्श्वः कण्ठशब्द इति, कण्ठे परिवृत्त्येति । उत्त० ३५६ ।

कंठसमुद्दिठा–कण्ठसिद्धाः निगदसिद्धाः । आव० ७२७ ।

कंठसुत्तं–कण्ठसूत्रं—गलावलम्बि सङ्कलकविशेषः । औप० । ५५ । भग० ४५६ ।

कंठसुत्तग–कण्ठसूत्रम् । जं० प्र० १०५ ।

कंठा—कण्ठात् । विशे० १९८ ।

कंठाकंठियं—कण्ठे च कण्ठे च गृहीत्वा कृतं युद्धं कण्ठाकण्ठि । ज्ञाता० ८९ ।

कंठाणुवादिणीछाया–छायाविशेषः । सूर्य० ९५ ।

कंठिया-कण्ठिकाः, कण्ठः । ग० ।

कंठुग्गए-कण्ठश्वासावुग्रकश्च—उत्कटः कण्ठोग्रकः, कण्ठस्य वोग्रत्वं कण्ठोग्रत्वम्, कण्ठाद्वा यद् उद्गतम्—उद्गतिः स्वरोद्गमलक्षणा क्रिया कण्ठोद्गतः । ठाणा० ३९५ ।

कंठोट्ठविप्पमुक्कं-बालमूकभाषितवद् यद् अव्यक्तं भवतीत्यर्थः । अनु० १९ ।

कंड–काण्डम्—धनुष्काण्डम् । आव० ६१३ । मण्डलाद् बृहत्तरं देशखण्डम् । आव० ६३६ । काण्डम्–शरम् । आव० ९३ । रत्नकाण्डादि । अनु० १७१ । मण्डलाद् बृहत्तरं देशखण्डम् । बृ० तृ० १४९ आ । काण्डः–बाणः शरः । भग० १९४ । काण्डं–धनुः । दश० १०४ । भग० २९० । काण्डं–विशिष्टो भूभागः । जीवा० ८९ । काण्डंविभागः द्वितीयं काण्डं–विभागोऽष्टात्रिंशद् योजनसहस्राण्युच्चत्वेन भवतीति । सम० ६५ ।

कंडए–कण्डकं–कालखण्डम् । भग० १७८ । अवयवः । भग० ६१६ । कण्डकः । आव० ४२७ । राक्षसानां चैत्यवृक्षाः । ठाणा० ४४२ ।

कंडक–तन्तुः । नंदी० १६५ । आचा० १७२ । प्रज्ञा० ५६१ । ओघ० १३१ ।

कंडग–क्षतम् । नि० चू० द्वि० ११८ आ । कण्डकंसमयपरिभाषयाऽङ्गुलमात्रक्षेत्राऽसङ्ख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणा सङ्ख्या । पिण्ड० ३९ । सङ्ख्यातीतसंयमस्थानसमुदायरूपः । पिण्ड० ३८ ।

कंडच्छारिउ–ग्रामो ग्रामाधिपतिर्देशो देशाधिपतिर्वा लूम्पका वा । व्य० द्वि० २२३ आ ।

कंडपुंख–बाणपृष्ठः । आव० ६९७ ।

कंडपोंखो–शरपुङ्खः । आव० ४२५ ।

कंडफल–शस्त्रविशेषः । व्य० प्र० १७ आ ।

कंडयं–अङ्गुलाऽसंख्येयभागप्रदेशमानानि स्थानानि । बृ० तृ० १५ आ ।

कंडरिए–कण्डरीकः–अलोभोदाहरणे साकेतनगरे युवराजः । आव० ७०१ ।

कंडरिओ–कण्डरीकः—औत्पात्तिकीबुद्धयां दृष्टान्तः ।आव० ४२० । अहोरात्रेणाऽधोगामी । मर० ।

कंडरिय–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ ।

कंडरीए—कण्करीकः–महापद्मराजस्य लघुसुतः । ज्ञाता० २४३ । उत्त० ३२६ । पुण्डरिकिण्यां युवराजः । आव० २८८ ।

कंडरीक–असदनुष्ठानपरायणतयाऽशोभनत्वे उपमा । सदसदनुष्ठानपरायणतया शोभनाऽशोभनत्वमवगम्य तदुपमयाऽन्यदपि यच्छोभनं तत् । महाराजपुत्रः । सूत्र० २९८ । नाम विशेषः । आचा० २४१ । सूत्र० १९४ । देशीयः । आचा० ११२ ।

कंडा—पर्वगविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । काण्डं नाम विशिष्टपरिणामानुगतो विच्छेदः पर्वतक्षेत्रविभागः । जं० प्र० ३७४ ।

कंडितिया–अनुकम्पिता कण्डयन्तीति—तन्दुलादीन् उदूखलादौ क्षोदयन्तीति कण्डयन्तिका । ज्ञाता० ११७ ।

कंडिया–इह ये तण्डुलाः प्रथमतः साध्वर्थमुप्ताः, ततः क्रमेण करटयो जाताः, ततः कण्डिताः, । पिण्ड० ६५ ।

कंडिल्ला–गोत्रविशेषः । ठाणा० ३९० ।

कंडुइया–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कंडुइस्सामि–कण्डूयिष्ये । ज्ञाता० ६५ ।

कंडुयं–कन्दुकं–नारकपचनार्थं भाजनविशेषः । सूत्र० १२५ । कण्डूः–कण्डूतिः । ज्ञाता० ११३ । कन्दुः–मण्डकादिपचनभाजनम् । विपा० ४९ ।

कंडुलोहकुंभी–कन्दूलोहकुम्भी–नारकाणां हननस्थानम् । आव० ६५१ ।

कंडुसोल्लियं–कन्दूपक्वम् । औप० ९१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंडू–कण्डूः–कण्डूतिः । उत्त० ७८ । खर्जुः । ज्ञाता० १८१ । कन्दूः–नारकाणां पचनस्थानम् । आव० ६५१ । कण्डुः–पाकस्थानम् । जीवा० १०५ ।

कंडूइअ–कण्डूयितं–खर्जुकरणम् । जं० प्र० १७० ।

कंडूसंडिओ–कण्डूसंस्थितः–पाकस्थानसंस्थितः । आवलिकाबाह्यस्य तृतीयं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

कंडूसगपट्टओ–कंडूसगबंधो णाम जाहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेणं वेढियं भवति ताहे उण्णिदोरेण तिपासियं करेति, तं चीरं कंडूसगपट्टओ भण्णति । नि० चू० प्र० २४६ अ ।

कंडूसगबंधो–जाहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेणं वेढियं भवतिण ताहे उण्णिदोरेण तिपासियं करेति, तं चीरं कंडूसगबंधो । नि० चू० प्र० २४६ अ ।

कंडे–कण्डयन्ती । ओघ० १६५ ।

कंत–कान्तं कमनीयम् । ज्ञाता० १६७ ।

कंता–कान्ताः कमनीयशब्दाः । जं० प्र० १४३ ।

कंतारं–अध्वानं जत्थ भत्त–पाणं ण लब्भति । नि० चू० प्र० १०२ अ ।

कंतारभत्त–कान्तारभक्तं कान्तारं–अरण्यं तत्र भिक्षुकाणां निर्वाहणार्थं यत् संस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम् । औप० १०१ । कान्तारं–अरण्यं, तत्र भिक्षुकाणां निर्वाहार्थं यद् विहितं भक्तं तत् कान्तारभक्तम् । भग० २३१ । कान्तारं–अरण्यं, तत्र यद् भिक्षुकार्थं संस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम् । भग० ४६७ । कान्तारं–अटवी, तत्र भक्तं–भोजनं यत् साध्वाद्यर्थम् । ठाणा० ४६० ।

कंतारवित्ति–कान्तारवृत्तिः शणपल्लचादिवृत्तिः । आव० ८४४ ।

कंतारो–निर्जलः सभयस्त्राणरहितोऽरण्यप्रदेशः कान्तारः । सूत्र० ३४१ ।

कंति–कान्तिः–प्रभा । ज्ञाता० २२० ।

कंतिमइ–कान्तिमतिः, मायोदाहरणे कोशलपुरे नन्दनेभ्यस्य द्वितीया पुत्री । आव० ३६४ ।

कंते–कान्तियोगात् कान्तः । ठाणा० ४२० । कान्तिमान् । सूर्य० २६२ । घृतोदसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३५५ । कमनीयः–सामान्यतोऽभिलषणीयः । प्रज्ञा० ४६३ ।

कंथए–कन्थकः प्रधानोऽश्वः । उत्त० ३४८ ।

कंथका–कन्थकाः अश्वविशेषाः । ठाणा० २४८ ।

कंथग–कन्थकः–जात्याश्वः । उत्त० ५०७ ।

कंथरं–सकण्टकम् । आव० ६७० ।

कंद–कन्दं–मूलस्कन्धान्तरालवर्ति स्वावयवम् । उत्त० २४ । कन्दः–मूलनालमध्यवर्ती ग्रन्थिः । जं० प्र० २८४ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ । कन्दविशेषः । उत्त० ६६१ । वज्रकन्दादिः । दश० १६८ । मूलानामुपरि वृक्षावयवविशेषः । औप० ७ । मूलोपरिवर्ती । जीवा० १८७ । स्कन्धाधोभागरूपः । प्रश्न० १५२ । गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । कन्दः-सूरणादिलक्षणः । दश० १७६ । मूलानामुपरिवर्तिनः कन्दाः । जं० प्र० २६ । सूरणकन्दादिः । आचा० ३० ।

कंदणता–क्रन्दनता–महता शब्देन विरवणम् । ठाणा० १८६ ।

कंदणया–महता शब्देन विरवणम् । भग० ६२६–१ ।

कंदणा–नष्टमृतादिषु कंदणा–मोहनोद्भवकारिका । नि० चू० द्वि० ७१ आ ।

कंदप्प–कन्दर्पः–परिहासः । भग० ५० । अतिकेलिः । भग० १६८ । ये कन्दर्पभावनाभावितत्वेन कान्दर्पिकदेवेषूत्पन्नाः कन्दर्पशीला देवाः । भग० १६८ । कन्दर्पः-परिहासः । बृ० प्र० २१३ अ । कन्दर्पः–कामः, तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगश्च; रागोद्रेकात् प्रहासमिश्रो मोहोद्दीपको नर्मेत्यर्थः । आव० ८३० । कामोद्दीपनं वचनं चेष्टा च । प्रज्ञा० ६६ । जीवा० १७३ । कान्दर्पिका देवविशेषाः, हास्यकारिणो भाण्डप्रायाः । प्रश्न० १२१ । कन्दर्पकथावान् । ठाणा० २७५ । अट्टट्टहासहसनम् अनिभृतालापाश्च, गुर्वादिनाऽपि सह निष्ठुरवक्रोक्त्यादिरूपाः कामकथोपदेशप्रशंसाश्च । उत्त० ७० । कामः, तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगोऽपि कन्दर्पः । उपा० १० । कन्दर्प्पः–कामः, तत्प्रधानाः षिड्गप्राया देवविशेषाः कन्दर्प्पा उच्यन्ते; तेषामियं कान्दर्प्पी । बृ० प्र० २१२ आ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंदप्पभावणा–कन्दर्पभावना। उत्त० ७०७।

कंदप्परई–कन्दर्परतिः–केलिप्रियः। ज्ञाता० ६७।

कंदप्पा–अनेकक्रीडासु अंदोलकादिप्पललिया घइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करेंता कंदप्पा। नि० चू० तृ० ६ अ।

कंदप्पिआ–कान्दर्प्पिकाः–कामप्रधानकेलिकारिणः। जं० प्र० २६४। कान्दर्पिकः। आव० २०५।

कंदप्पिया–कन्दर्पः परिहासः, स येषामस्ति तेन वा ये चरन्ति ते कन्दर्पिकाः कान्दर्पिका वा; व्यवहारतश्चरणवन्त एव कन्दर्प्प–कौकुच्यादिकारकाः। भग० ५०।

कंदभोवणं–कन्दः सूरणादिः, तस्य भोजनं कन्दभोजनम्। ठाणा० ४६०। भग० ४६७।

कंदमाण–शोकाद् महाध्वनिं मुञ्चन्। ज्ञाता० १५६।

कंदमूले–कन्दमूलम्। प्रज्ञा० ३४।

कंदरं–गिरिगुहा। आचा० ३६६। गिरिगुहा। नि० चू० द्वि० ७० अ। कुहरम्। विपा० ५५।

कंदरगिह–कन्दरगृहम्। गुहा। भग० २००। गिरिगुहा गिरिकन्दरं वा। ठाणा० २६४।

कंदरा–कन्दरा। दरी। प्रश्न० १२७। गुहा। ज्ञाता० ३३।

कंदराणि–भूमिविवराणि। भग० ४८३।

कंदर्पः–रागसंयुक्तोऽसभ्यो वाक्प्रयोगो हास्यं च। त०७।

कंदल–कन्दलानि–प्ररोहाः। ज्ञाता० २६। प्रत्यग्रलताः। ज्ञाता० १६१।

कंदलगा–एकखुरविशेषः। प्रज्ञा० ४५। कन्दलकः–एकखुरश्चतुष्पदः। जीवा० ३८।

कंदली–कन्दली–कन्दविशेषः। उत्त० ६९१। तक्कली। आचा० ३४६।

कंदलीऊसुयं–कन्दलीमध्यम्। आचा० ३४६।

कंदलीकंदए–कन्दलीकन्दकः – वनस्पतिविशेषः। प्रज्ञा० ३७।

कंदलीसीस–कन्दलीशीर्षम्–कन्दलीस्तबकः। आचा० ३४६।

कंदा–कन्दाः। प्रज्ञा० ३१।

कंदाहारा–कन्दभोजिनस्तापसाः। निरय० २५।

कंदिय–क्रन्दितम्–आक्रन्दः। प्रश्न० १६०। वाणमन्तरविशेषः। प्रज्ञा० ६५।

कंदियसद्दं–क्रन्दितशब्दं प्रोषितभर्तृकादिकृताऽऽक्रन्दरूपम्। उत्त० ४२५।

कंदिया–क्रन्दिताः–व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्तिनो व्यन्तरजातिविशेषाः। प्रश्न० ६९।

कंदु–कन्दुः–लोही–(लोहमयी) प्रश्न० १४।

कंदुकुम्भी–पाकभाजनविशेषरूपा लोहादिमयी। उत्त० ४५६।

कंदुक्क–कन्दुकः–साधारणवनस्पतिविशेषः। प्रज्ञा० ४०। कन्दुक्कः–वनस्पतिविशेषः। प्रज्ञा० ३७।

कंदुसोल्लियं–कन्दुपक्वम्। भग० ५१६।

कंपणवाइओ–कम्पनवातिकः–कम्पनवायुरोगवान्। अनुत्त० ६।

कंपिलपुरे–अम्बडपरिव्राजकस्थानम्। भग० ६५३।

कंपिल्ल–काम्पिल्यम् – विमलनाथजन्मभूमिः। आव० १६०। जितशत्रुराज्ञो राजधानी। ज्ञाता० १४४। चित्रसम्भूतिभ्रमणस्थानम्। उत्त० ३७९। पाञ्चालेषु आर्यक्षेत्रम्। प्रज्ञा० ५५। नगरविशेषः। उत्त० ३२३। कंपिल्लः–अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य सप्तममध्ययनम्। अन्त० १। काम्पिल्यः–ब्रह्मदत्तराज्ञ्या मलयवत्याः पिता। उत्त० ३७९। काम्पिल्यम्–ब्रह्मदत्तराजधानी। आव० १६१। हरिषेणराजधानी। आव० १६१। पञ्चालदेशे नगरम्। ब्रह्मराजधानी। उत्त० ३७७।

कंपिल्लपुरं–काम्पिल्यपुरम्। पञ्चालेषु दुर्मुखराजधानी। उत्त० ३०३। खण्डरक्षाणां श्रमणोपासकानां स्थानम्। आव० ३१७। ब्रह्मदत्तराजधानी। नि० चू० प्र० ११३ आ। काम्पिल्यपुरं–अम्बडपरिव्राजकस्थानम्। भग० ६५३। द्रुपदराज्ञो राजधानी। ज्ञाता० २०७। नगरविशेषः। ज्ञाता० २५३।

कंप्पडिया–नि० चू० प्र० १२ अ।

कंबलं–कम्बलः–उपकरणविशेषः। आव० ७९३। वासोविशेषः। प्रश्न० १३५। कम्बलमित्यनेन आविकः पात्रनिर्योगः कल्पश्च गृह्यते। आचा० १३४। और्णिकं कल्पं पात्रनिर्योगं वा। आचा० २४०। वर्षाकल्पादि।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दश० १६६ ।
कंबल–कम्बलः–मथुरायां जिनदासस्य वृषभजीवः । बृ० तृ० १६० आ । नौरक्षकः । आव० १६७, १६६ ।
कंबलकडे–कम्बलमेव । ठाणा० २७३ । कम्बलकटः । आव० २८६ ।
कंबलकिड्डुं–ऊर्णमयं कम्बलं जीनादि । भग० ६२८ ।
कंबलगाणि–वस्त्रविशेषाः । आचा० ३६३ ।
कबलरयणं–कम्बलरत्नम् । उत्त० १०५ । कम्बलरत्नं वस्त्रविशेषः । व्य० प्र० १६४ अ । पञ्चेन्द्रियनिष्पन्नं चक्रवर्तिरत्नम् । आचा० ३६२ ।
कंबलसाडए–कम्बलरूपः शाटकः कम्बलशाटकः । प्रज्ञा० ३०६ ।
कंबला–वस्त्रविशेषः । अनु० २५३ । सास्ना । विपा० ४६ ।
कंबिया–कम्बिका । आव० । ४१७ । कंबिका–पृष्ठका । जीवा० २३७ ।
कंबिसंरतारकः–शय्यासंस्तारके द्वितीयो भेदः । व्य० द्वि० २८४ अ ।
कंबुं–विमानविशेषः । सम० २२ ।
कंबुग्गीयं–विमानविशेषः । सम० २२ ।
कंबुवरसरिसा–कम्बुवरसदृशी – उन्नततया वलियोगेन च प्रधानशङ्खसन्निभा । जीवा० २७२ ।
कंबुयं–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।
कंबोय–काम्बोजः–कम्बोजदेशोद्भवोऽश्वः । उत्त० ३४८ ।
कंमं–आहाकम्मं । नि० चू० प्र० ६३ अ ।
कंमंतसाला–छुहादिया जत्थ कम्म विज्जंति सा कम्मंतसाला गिहं वा । नि० चू० प्र० २६५ अ ।
कंमादि–कर्मादिना । ठाणा० ३३१ ।
कंमिया–कर्मणो जाता कर्मजा–बुद्धेः तृतीयभेदः । आव० ४१४ ।
कंमोवधी–पहाणा तीव्रकर्मोदये वर्तमाना इत्यर्थः । नि० चू० प्र० २८६ आ ।
कंस–कांस्यम्–कांस्यभाजनम् । उत्त० ३१६ । अष्टाशीतिमहाग्रहेषु द्वाविंशतितमः । जं० प्र० ५३५ । ठाणा० ७६ । कंसम्–करोटकादि । दश० २०३ । कंसः–कृष्णवैरी । प्रश्न० ७५ । मथुरायां राजा । दश० ३६ । कांस्यः–द्रव्यमानविशेषः । उपा० ४८ । कांस्यभाजनजातिः । जीवा० २८० । ज्ञाता० ४६ । त्रपुक-ताम्रसंयोगजम् । प्रश्न० १५२ । देवकीसुतघातको मथुराधिपतिः । सूत्र० ३०८ ।
कंसकारे–अष्टादशश्रेणिषु चतुर्दशः । जं० प्र० १६४ ।
कंसणाभे–कंसनाभः । अष्टाशीतौ महाग्रहेषु त्रयोविंशतितमः । जं० प्र० ५३५ ।
कंसताला–कंस्यतालाः–कंसालियाः । जीवा० २६६ ।
कंसपाए–कंसपात्रम्–तिलकादि । दश० २०३ ।
कंसवण्णाभे–कंसवर्णाभः । अष्टाशीतौ महाग्रहेषु चतुर्विंशतितमः । जं० प्र० ५३५ ।
कंसवण्णे–अष्टाशीतिमहाग्रहेषु त्रयोविंशतितमः ठाणा ७६।
कंसवन्नाभे–अष्टाशीतिमहाग्रहेषु चतुर्विंशतितमः । ठाणा० ७६ ।
कंसालिया–कांस्यतालाः । जीवा० २६६ ।
कंसिकाः–लत्तिया–वाद्यविशेषः । ठाणा० ६३ ।
क–कः–आत्मा । भग० २६६ ।
कइ–कति–कतिविधम् । भग० १४२ । कियन्तः । अनु० २५६ । क्वचित्–संयमस्थानावसरे धर्मोपधिप्रत्युपेक्षणादौ । दश० २८३ ।
कइए–क्रयिकः–ग्राहकः । भग० २२६ ।
कइखुत्तो–कतिकृत्वः–कियतो वारान् । उत्त० २३० ।
कइतवियं–कृत्रिमम् । आचा० १७८ ।
कइत्थो–कतिथः । आव० ५५६ ।
कइभाग–कतिभागः–कतिथो भागः । प्रज्ञा० ५०३ ।
कइया–क्रयिकाः । दश० ६१ ।
कइयवं–कैतवम् । आव० ६३२ ।
कइरसारए–करीरसारः । प्रज्ञा० ३६० ।
कइल्लए–कृते । बृ० तृ० ६२ अ ।
कइल्लिया–कृता । उत्त० ८६ ।
कइवयं–कतिपयम् । आव० २६२ ।
कइसिरं–कतिशिरः–कति शिरांसि तत्र भवन्ति । आव० ५११ ।
कउ–क्रतुशब्देनेह प्रतिमा–अभिग्रहविशेषाः । उपा० २६ ।
कउओ–कायाको वेषपरावर्तकारी नटः । बृ० तृ० १२७

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ। ककुदम्-स्कन्धदेशविशेषः। ज्ञाता० १६१।
कउह–ककुदम्–स्कन्धासन्नोन्नतदेहावयवलक्षणम। अनु० १४३ प्रधानः। ज्ञाता० २३३।
कउही–ककुदम्–स्कन्धासन्नोन्नतदेहावयवलक्षणमस्यास्तीति ककुदी-वृषभः। अनु० १४३।
कए–कृतानि-भावितानि। बृ०प्र० १३३अ। कृते–अर्थाय। दश० ६५।
कएण–कृते हेतोः। प्रश्न० १२०।
कएणुय–वनस्पतिविशेषः। भग० ८०४।
कएल्लओ–कृतः। आव० ३५६, ६६६।
कओ–कृतः। विहितः। ज्ञाता० ७०, १६२।
कओगो–छत्तो। नि० चू० प्र० २८४ अ।
ककाणओ–मर्माणि। सूत्र० १३६।
ककार–खकार–गकार–घकार–ङकार–प्रविभक्ति–नामा–पञ्चदशो नाट्यविधिः। जीवा० २४७।
ककुयं–ककुदम्–अंसकूटम्। जं० प्र० ५२६।
ककुष्ठा–तृतीयं क्षुद्रकुष्ठम्। प्रश्न० १६१। आचा० २३५।
ककुहं–ककुदम्–स्कंधशिखरम्। विपा० ४६।
ककुहा–ककुदानि–चिह्नानि। ठाणा० ३०४।
कक्कं–कलकम्–पापं माया वा। प्रश्न० २७। लोध्रादिद्रव्यसमुदायेन शरीरोद्वर्तनकम्। सूत्र० १८१। उव्वलणयं द्रव्यसंयोगेन वा कक्कं। नि० चू० प्र० ११६ आ। कल्कः–प्रसूत्यादिषु रोगेषु क्षारपातनम्, अथवा आत्मनः शरीरस्य देशतः सर्वतो वा लोध्रादिभिरुद्वर्तनम्। व्य० प्र० १६३ अ। कल्कः–चन्दनकल्कादिः। दश० २०६। कल्कम्–माया–कपटम्। सम० ७१। हिंसादिरूपं पापम्। भग० ५७३। कर्कः—ब्रह्मदत्तस्य तृतीयः प्रासादः। उत्त० ३८५।
कक्कगुरुगं–कल्कगुरुकम्–माया। प्रश्न० ३०।
कक्कणा–कल्कं–पापं माया वा तत्करणं कल्कना। प्रश्न० २६।
कक्करणता–कर्करणता-शय्योपध्यादिदोषोद्भावनगर्भं प्रलपनम्। ठाणा० १४६।
कक्करणया–जो घडीजंतगं व वाहिज्जमाणं करगरेइ सा कक्करणया। दश० चू० १५।
कक्कराइयं–कर्करायितम्–'विषमा धर्मवती' इत्यादिशय्यादोषोच्चारणम्। आव० ५७४।
कक्करि–कर्करी–कलशो महाघटः, करकः प्रतीतः, कर्करी–स एव विशेषः। जं० प्र० १०१।
कक्करी–कर्करी–भाजनविधिविशेषः। जीवा० २६६।
कक्करे–कर्करः–कर्करायितकारी। उत्त० ४८६।
कक्कस–कर्कशाम्–चर्विताक्षराम्। आचा० ३८८। जो सीउण्हकोसादिफासो सो सरीरं किसं कुव्वई ति कक्कसो। दश० चू० १२३। कर्कशाम्–कर्कशद्रव्योपमाम्-अनिष्टामित्यर्थः। भग० २३१। रौद्रदुःखम्। भग० ३०५। कर्कशा–अतिशयोक्त्या मत्सरपूर्वा भाषा। दश० २१३। कर्कशद्रव्यमिव कर्कशोऽनिष्ट इत्यर्थः। भग० ४८४। कर्कशः–अतिदुस्सहः। जीवा० १०३।
कक्कायरिय–ककुदाचार्याः। नवपद० अनुत्त०।
कक्कावंस–वंशवृक्षविशेषः। भग० ८०२।
कक्केय–म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।
कक्को–सो दव्वसंजोगेण वा असंजोगेण वा भवति। नि० चू० द्वि० ११८आ। उव्वलयं अट्टगमादी। दश० चू० १०१।
कक्कोडई–वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२।
कक्कोडए–चतुर्थोऽनुवेलन्धरनागराजः तस्यैवाऽऽवासपर्वतः। ठाणा० २२६। कर्कोटकः—अनुवेलन्धरनागराजाऽऽवासभूतः पर्वतः लवणसमुद्रे ऐशान्यां दिश्यस्ति, तन्निवासी नागराजः, वरुणस्य पुत्रस्थानीयदेवः। भग० १९९। प्रथमोऽनुवेलन्धरनागराजः, तस्यैवाऽऽवासपर्वतश्च। जीवा० ३१३।
कक्कोलं–औषधिविशेषः। आव० ८११।
कक्कोलयं–स्वादिमे दृष्टान्तः। नि० चू० द्वि० ६० अ।
कक्ख–कक्षा। जीवा० २७५। भुजमूलम्। प्रश्न० ८४।
कक्खग–कक्षाकः। तं०।
कक्खड–कर्कशम्–कर्कशद्रव्यमिवाऽनिष्टम्। प्रश्न० १५६। रुक्षादिगुणसमन्वितम्। ओघ० ५०। कर्कशद्रव्यमिवाऽनिष्टेत्यर्थः। ज्ञाता० ६८। निष्ठुरो बलवत्त्वात्। ज्ञाता० १६२। अवमौदर्यम्। बृ० तृ० १२४ अ। पासट्ठितेहिं विओसविज्जंतिमाणा वि णोवसमंति। नि० चू० प्र० २१६ आ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कक्खडिया–करकडिया–करकटिका–निन्द्यचीवरिका । विपा० ४७ ।

कक्खडो–तिव्वकम्मोदए वट्टमाणो । नि० चू० प्र० २७६ अ ।

कङ्कट–कवचः। भग० ३१८ ।

कङ्कटुकरूपम्–कङ्कटुकतुल्यम् । उत्त० ३४७ ।

कच्चगे–चङ्गे । व्य० द्वि० ३०२ आ ।

कच्चातणा–कात्यायनः–कौशिकगोत्रविशेषभूते पुरुषे, तदपत्यसंतानेषु च । ठाणा० ३६० ।

कच्चायण–कात्यायनम्–मूलगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

कच्चायणसगोत्ते–कात्यायनसगोत्रम्–मूलनक्षत्रस्य गोत्रम्। सूर्य० १५० ।

कच्छ–कच्छः । नदीजलपरिवेष्टितो वृक्षादिमान् प्रदेशः । भग० ६२ । सूत्र० ३०७ । कच्छदेशः । जं० प्र० २२० । कक्षा–उरोबन्धनम् । भग० ३१८ । हृदयरज्जुः । भग० ३१७ । शरीराऽवयवविशेषो वनगहनं वा । भग० १९८ । समूहः । ठाणा० ४०७ । विजयविशेषः । प्रज्ञा० ७३ । श्रीऋषभस्वामिनो महासामन्तनाम । जं० प्र० २५२ । हृदयरज्जुः । औप० ६२ । जं० प्र० ५२८ । कच्छो नाम चक्रवर्तिविजेतव्यभुविभागरूपो विजयः । जं० प्र० ३४० । दक्षिणकच्छार्धकूटम् । उत्तरकच्छार्धकूटम् । जं० प्र० ३४१ । कच्छः–इहलोकगुणे देशविशेषः । आव० ८२४ । ऋषभदेवस्य पौत्रः । आव० १४३ । क्षेमायां राजधान्यां कच्छो नाम राजा चक्रवर्ती । जं० प्र० ३४४ ।

कच्छउडियो–गृहीतोभयमोट्टाकः । बृ० द्वि० १६० आ ।

कच्छकरा–अष्टादशश्रेणिषु अष्टमी श्रेणिः । जं० प्र० १९३ ।

कच्छकूडे–कच्छकूटम् । जं० प्र० ३४४ । कच्छविजयाऽधिपकूटम् । जं० प्र० ३३७ ।

कच्छकोह–कक्षाकोथः कक्षकोथो वा–कक्षाणां–शरीरावयवविशेषाणां वनगहनानां वा कोथः–कुथितत्वं शटितं वा कक्षाकोथः कक्षकोथो वा। भग० १९८ ।

कच्छगावती–कच्छा एव कच्छकाः, मालुकाकच्छकादयः, सन्त्यस्यामतिशायिन इति कच्छकावती, विजयनाम । महाविदेहे कच्छगावती नाम विजयः । जं० प्र० ३४६ । ठाणा ८० ।

कच्छटं–अन्ध्रदेशीयस्त्रीनेपथ्यविशेषः । आव० ५८१ ।

कच्छपुड–कच्छपुटः । व्य० द्वि० २०७ आ ।

कच्छपुडओ–कक्खपदेसे पुडा जस्स स कच्छपुडओ । नि० चू० प्र० १५८ अ ।

कच्छपुडियवाणिओ–नि० चू० प्र० १०७ अ ।

कच्छभरिंगियं–कच्छपरिङ्गितम् । येन कच्छपवद् रिङ्गन् वन्दते तत् । कृतिकर्मणि सप्तमदोषः। आव० ५४३ ।

कच्छभा–कच्छपाः–कूर्माः । उत्त० ६९९ । आव० ५४३ । कच्छपाः । प्रज्ञा० ४३ । राहो अष्टमं नाम । भग० ५७५ । कच्छपः । सूर्य० २८७ । मांसकच्छपाऽस्थिकच्छपभेदभिन्नो जलजन्तुविशेषः । प्रश्न ७ ।

कच्छभाणी–कच्छभानी – साधारणवनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ४० । जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

कच्छभी–कच्छपी । भारती वीणा । जं० प्र० १०१ । कच्छभी । वाद्यविशेषः । प्रश्न १५९ । पुस्तकपञ्चके द्वितीयम् । नि० चू० प्र० १८१ अ । वादित्रविशेषः । जीवा० २६६ । चतुरंगुलो दीहो वा वृत्ताकृती । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

कच्छभीए–कच्छपिका । उपकरणविशेषः । ज्ञाता० २२० ।

कच्छवि–कच्छपी । पुस्तकपञ्चके द्वितीयम्, यद् अन्ते तनुकं मध्ये पृथु । ठाणा० २३३ । आव० ६५२ ।

कच्छवी–अन्ते तनुकं मध्ये पृथुलं पुस्तकम् । बृ० द्वि० २११ आ ।

कच्छा–बन्धविशेषः । सम. १२७ । ठाणा० ८० । कक्षा–उरोबन्धनम् । विपा० ४७ । इक्खु ।दी । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

कच्छाणि–कच्छाः । नद्यासन्ननिम्नप्रदेशा मूलकवालुङ्कादिवाटिका वा । आचा० ३८२ ।

कच्छावईए–कच्छा एव कच्छका–मालुकाकच्छादयः सन्त्यस्यामतिशायिन इति । जं० प्र० ३४६ ।

कच्छावईकूडे–कच्छावतीकूटम् । महाविदेहस्य पद्मकूटस्य चतुर्थं कूटम् । जं० प्र० ३४६ ।

कच्छु–पामा । व्य० द्वि० १९२ अ । नि० चू० प्र०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२७ आ ।

कच्छुंभरि–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा २३ ।

कच्छुल्ल–कण्डूमान् । विपा० ७४ । पामावान् । बृ० द्वि० २२२ आ । कण्डूतिमान् । प्रश्न० १६१ ।

कच्छुल्लणारए–एतन्नाम्ना तापसः । ज्ञाता० २२० ।

कच्छू–कच्छूः–पामणा(मा) । जीवा० २८४, ३०८ । आ० ३७८ । पामा । बृ० द्वि० २२२ अ । जं० प्र० १७० । नि० चू० द्वि० ६२ अ । व्य० द्वि० १६२ अ ।

कच्छोटकः–चरकः । भग० ५० ।

कच्छोटग–कच्छोटकः । आव० ४१३ ।

कज्ज–असिवादियं कज्जं भण्णति । नि० चू० प्र० ४२ आ । अपवादकारणम् । अहवा कज्जंति णाण–दंसण–चरणा । नि० चू० तृ० १२ आ । कार्यः–कर्तव्यः समुपस्थितः । आचा० ११६ । अशिवादिनिस्तरणलक्षणः प्रयोजनः । व्य० प्र० ९ अ । गृहकरण–स्वजनसन्मानादिकृत्यः । भग० ७३९ ।

कज्जइ–फलं भवतीत्यर्थः । भग० ३७३ । क्रियते–व्यथते । यथा शूलं क्रियते–व्यथते (पीडयति) । आव० ४३३ ।

कज्जकोडुंबं–कुटुम्बे भवं कौटुम्बं–स्वराष्ट्रविषये कार्यम् । जीवा० १६६ ।

कज्जति–क्रियते । (कर्मकर्तरि) भवति । ठाणा० २४७ ।

कज्जत्थोकुरटिकास्थानम्–स्थानविशेषः । ओव० १६२ ।

कज्जमाणं–क्रियमाणम् – वर्तमानक्रियाक्षणभाविकार्यम् । विशे० ६४१ ।

कज्जमाणा–क्रियमाणा–ईर्यापथिकीक्रियायाः प्रथमो भेदः । आव० ६१५ ।

कज्जलंगी–कज्जलाङ्गी । कज्जलगृहम् । ज्ञाता० ६ ।

कज्जल–कज्जलं । मषी । भग० १० । कृष्णवर्णपरिणतः । प्रज्ञा० १० ।

कज्जलप्पभा–कज्जलप्रभा । अपरदक्षिणस्यां पुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३३५ ।

कज्जलमाणं–भरिज्जमाणं । नि० चू० तृ० ६४ अ ।

कज्जलायमाणं–प्लाव्यमानम् । आचा० ३७९ ।

कज्जलेइ–कज्जलमिति । कज्जलं–दीपशिखापतितम् । जं० प्र० ३२ ।

कज्जसेणे–तृतीयायामवसर्पिण्यां भारतवर्षे पञ्चमः कुलकरः । सम० १५० ।

कज्जोयए–अष्टाशीत्यां पञ्चदशो महाग्रहः । ठाणा० ७८ ।

कज्जोवए–कार्योपगः । अष्टाशीत्यां षोडशो महाग्रहः । जं० प्र० ५३४ ।

कटक–गिरिपादः । दुर्गः । व्य० द्वि० ४२ आ । सैन्यम् । नंदी० १६१ । सैन्यं किलिञ्जं वा । प्रश्न० ६ । उपकरणभेदः । आचा० ६० ।

कटकमर्द–कटकमर्देन मारणमादिश्य । ठाणा० ४१२ । कटकमर्देन मारणार्थं चाऽनुज्ञाताः । विशे० ९५३ ।

कटकितः–काष्ठादिभिः कुड्यादौ संस्कृतः । आचा० ३६१ ।

कटादिकाराः–छर्विकाः । प्रज्ञा० ५८ ।

कटासनम्–कटासनमित्येतस्माच्छय्येति । आचा० ३२० ।

कटाहक–पात्रविशेषः । आचा० ३४६ ।

कटुः–रसस्य द्वितीयभेदः । प्रज्ञा० ४७३ ।

कटुकाः–सुण्ठ्यादिवत् । उत्त० ६७७ ।

कटुका–औषधिविशेषः । उत्त० ६५३ ।

कट्टं–खण्डम् । अनुत्त० ५ ।

कट्टर–तीमनोन्मिश्रघृतवटिकारूपो भोज्यविशेषः । पिण्ड० १७२ ।

कट्टरादिकम्–क्वथितम् । बृ० प्र० २३४ आ ।

कट्टारिगा–शस्त्रविशेषः । क्षुरिका । नि० चू० प्र० ३०४ आ ।

कट्टु–कृत्वा । उत्त० ७०६, २४६, २५३ ।

कट्ठं–काष्ठम् । फलकादि । प्रश्न १६० । कष्टं–दुःखम् । ज्ञाता० १६७ । काष्ठम् । आचा० ३३ । श्रीपर्ण्यादिफलकादि । दश० १६३ । स्थूलमायतमेव । ठाणा० ४६६ । कुट्टिमम् । आव० ७६७ ।

कट्ठकम्मंताणि–काष्ठकर्मगृहाणि । आचा० ३६६ ।

कट्ठकम्म–कोट्टिमादि । नि० चू० द्वि० ७१ अ । काष्ठकर्म–काष्ठनिकुट्टितं रूपकम् । अनु० १२ । काष्ठकर्म–प्रतिमास्तम्भद्वारशाखादि । आचा० ६१ ।

कट्ठकम्माणि–काष्ठकर्माणि–रथादीनि । आचा० ४१४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दारुमयपुत्रिकादिनिर्मापणानि । ज्ञाता० १८० ।

कट्ठकरणं–काष्ठकरणम् । क्षेत्रम् । आव० २२७ । आचा० ४२४ ।

कट्ठकारे–काष्ठकारः । शिल्पविशेषः । अनु० १४६ ।

कट्ठणिप्फण्णं–काष्ठनिष्पन्नम् । मद्यविशेषः । आव० ८५४ ।

कट्ठपाउयारा–काष्ठपादुकाकाराः । प्रज्ञा० ५८ ।

कट्ठपेज्जा–मुद्गादियूषो घृततलिततण्डुलपेया वा । उपा० ३ ।

कट्ठमुद्दा–काष्ठं–काष्ठमयः पुत्तलको न भाषते एवं सोऽपि मौनावलम्बी जातः । यद्वा मुखरन्ध्राच्छादकं काष्ठखण्डम्, उभयपार्श्वच्छिद्रद्वयप्रेषितदवरकान्वितं मुखबन्धनं काष्ठमुद्रा । निरय० २७ ।

कट्ठविरूढगो–काष्ठविरूढः । आव० ४१३ ।

कट्ठसगडिया–काष्ठानां शकटिका । गन्त्री । ज्ञाता० ७६ ।

कट्ठसेज्जा–काष्ठशय्या । फलकादिशयनम् । प्रश्न० १३७–३८ ।

कट्ठसेट्ठी–अर्थजातगृहणेऽयशः । बृ० तृ० १९१ अ ।

कट्ठहारा–त्रीन्द्रियजीवविशेषः । उत्त० ६९५ । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

कट्ठाओ–काष्ठात्-मध्यसारात् । प्रज्ञा० ३६ ।

कट्ठावसेसो–काष्ठावशेषः । शुष्कवृक्षः । उत्त० ३०४ ।

कट्ठिया–काष्ठिकाः । औप० ६९ ।

कट्ठो–काष्ठः–श्रेष्ठिविशेषः । पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्तः । आव० ४२८ ।

कट्ठोले–कृष्टः । हलविदारितः । पिण्ड० ८ ।

कट्ठोल्लो–हलकृष्टो यः पृथिवीकायस्तत्क्षणादेव आर्द्रश्च शुष्कश्च क्वचिन्मिश्रः पृथिवीकायः । ओघ० १२९ ।

कठिणगं–कठिनकम् । प्रश्न० १२८ ।

कडंगर–फलशून्यधान्यम् । ठाणा० ४१९ ।

कड–छावणथूणादियाण एवमादि कडं भण्णति । नि० चू० प्र० २३० आ । कृतम्–सिद्धम्–पूर्णम् । भग० ७४५ । भावितम्–संस्कृतम् । भग० ६९१ । कटः–विदलवंशादिमयः । सम० १२६ । कृतः–निष्पादितः–राद्धः । पिण्ड० ६५ । निष्ठितभक्तः । ओघ० १८८ । निकाचितम्–सर्वकरणाऽयोग्यत्वेन व्यवस्थापितम् । भग० ९० । चतुष्कम् । सूत्र० ६७ । निकाचितम्–सकलकरणाऽयोग्यत्वेन व्यवस्थापितम् । प्रज्ञ० ४०३ । कृतम् । आव० ५१३ । कर्तुं प्रारब्धम् । पिण्ड० ६३ । कटम् । ओघ० १५३ । अनु० १५४ । यत् पुनरुद्धरितं सत् शाल्योदनादिकं भिक्षाचरदानाय करम्बादिरूपतया कृतं तत् । पिण्ड० ७७ । निष्ठितम्–पक्वम् । नि० चू० प्र० ९२ अ । कटः–भोजनविधिः । आव० ८५९ । धन्नभायणा । नि० चू० द्वि० १४७ आ ।

कडइत्तओ–कटकस्वामी । आव० ५६० ।

कडओ–कटकः । काशीजनपदाऽधिपः । उत्त० ३७७ ।

कडकरणं–कटकरणम् । कटनिर्वर्तकं–चित्राकरमयोमयं पाइल्लगादि । उत्त० १९५ । कृतकरणम्–मुद्रा । बृ० प्र० ३२ आ ।

कडक्ख–कटाक्षः–आविर्भाविकः । जं० प्र० ५२ ।

कडक्खचिट्ठिएहिं–कटाक्षचेष्टितैः । शृङ्गाराविर्भावकक्रियाविशेषः–कटाक्षचेष्टितम् । जं० प्र० ५२ ।

कडग–कटकः । नितम्बभागः । जं० प्र० १९६ । गिरिनितम्बः । जं० प्र० २३७ । आव० ५६० । कटकंवंशदलमयम् । अनुत्त० ६ । कलाचिकाऽऽभरणम् । प्रज्ञा० ८८ । जीवा० १९२, २५३ । अनीकम् । उत्त० ४३८ । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६८ । आव० ७५६ । कलाचिकाऽऽभरणविशेषः । भग० ४७७ । कटकानि–कङ्कणविशेषाः । उपा० २६ । पर्वतैकदेशाः । ज्ञाता० २६ । गण्डशैलाः । ज्ञाता० १०० । कटकः–भित्तिप्रदेशः । जं० प्र० २३० । वलयाकारं हस्ताऽऽभूषणम् । आव० ७०२ । कृतकः–अपेक्षितव्यापारः स्वभावनिष्पत्तौ भावः । सूत्र० २८३ । खंधावारो । नि० चू० तृ० ५ अ ।

कडगतड–कटतटानि– वैभारगिरेरेकदेशतटानि । ज्ञाता० ३६ ।

कडगमद्दं–कटकमर्दम् । आव० ६३२ । कटकमर्दः–परराष्ट्रे स्कन्धावारकृतो जनविमर्दः । बृ० द्वि० ४६ अ । नि० चू० द्वि० ४५ आ ।

कडगमद्दो–पाककुम्भी । नि० चू० प्र० ३०३ अ । परविसयमाइण्णो, एगस्स रण्णो अभिणिवेसेण अकारिणो वि गामणगरादिसव्वे विणासेइ ता एगेण कयमकज्जं

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वे बालवुड्ढादी जो जत्थ दीसइ सो तत्थ मारिज्जति एस कडगमद्दो। सह तेणकारिणा मोत्तुं वा तं कारिं-जो तस्सम आयरिओ गच्छो वा कुलं वा गणो वा तं वा वादेति। नि० चू० तृ० ५ अ।

कडगाई–कैतवानि। बृ० द्वि० ८८ अ।

कडग्गिदाहणं–कटानां विदलवंशादिमयानामग्नि: कटाग्नि:, तेन दाहनं कटाग्निदाहनम्; कटेन परिवेष्टितस्य बाधनमित्यर्थ:। सम० १२६।

कडच्छुत्ता–दर्वी। नि० चू० प्र० २०२ आ।

कडच्छेअ–कटकच्छेद:। ओघ० १८७।

कडच्छेज्जं–कटच्छेद्यम्। कटवत् क्रमच्छेद्यं वस्तु यत्र विज्ञाने तत्तथा। इदं च व्यूतपटोद्वेष्टनादौ भोजनक्रियादौ चोपयोगि। जं० प्र० १३९।

कडच्छेज्ज–द्वासप्ततौ कलासु नवषष्टितमा कला। ज्ञाता० ३६।

कडजुम्म–कृतयुग्म:। यो हि राशिश्चतुष्काऽपहारेण अपह्रियमाणश्चतुःपर्यवसितो भवति स कृतयुग्म:। ठाणा० २३७, २३८। कृतं–सिद्धं–पूर्णम्, तत: परस्य राशिसंज्ञान्तरस्याऽभावेन न त्र्योजःप्रभृतिवदपूर्णं यद् युग्मम्–समराशिविशेषस्तत् कृतयुग्मम्। भग० ७४४। त्रैतौजसि एकत्रिंशत् कृतयुग्मे नास्ति प्रक्षेप:। सूर्य० १६७।

कडजुम्मकडजुम्मे–यो राशि: सामयिकेन चतुष्काऽपहारेणाऽपह्रियमाणश्चतुष्पर्यवसितो भवति, अपहारसमया अपि चतुष्कापहारेण चतुष्पर्यवसिता एव; असौ राशि: कृतयुग्मकृतयुग्म इत्यभिधीयते। भग० ९६४।

कडजुम्मकलियोगे–कृतयुग्मकल्योजे सप्तदशादय:। भग० ९६४।

कडजुम्मतेओगे–यो राशि: प्रतिसमयं चतुष्कापहारेणाऽपह्रियमाणस्त्रिपर्यवसान्ते भवति, तत्समयाश्चतुष्पर्यवसिता एवाऽसौ अपह्रियमाणापेक्षया त्र्योज:; अपहारसमयापेक्षया तु कृतयुग्म एव; इति कृतयुग्मत्र्योज इत्युच्यते। भग० ९६४।

कडजुम्मदावरजुम्मे–पूर्वोक्तराशिभेदसूत्राणि तद्विवरणसूत्रेभ्योऽवसेयानि। इह च सर्वत्रापि अपहारकसमयापेक्षमाद्यं पदम्, अपह्रियमाणद्रव्यापेक्षं तु द्वितीयमिति। इह च तृतीयादारभ्योदाहरणानि कृतयुग्मद्वापरे राशौ अष्टादशादय:। भग० ९६४।

कडजोगि–कृतो योगो–घटना ज्ञानदर्शनचारित्रै: सह येन स कृतयोगी–गीतार्थ:। ओघ० ९८।

कडजोगी–कृतयोगी। सूत्रतोऽर्थतश्च छेदग्रन्थधर:। व्य० द्वि० १२३ अ। प्रत्युच्चारणे समर्थ: कृतयोगी। नि० चू० प्र० ३२२ आ। चउत्थादितवे कतजोगा। नि० चू० प्र० २६ आ। गीतार्थेत्यर्थ:। वेयावच्चे वा जेणऽण्णतावि कडो जोगो सो वा कडजोगी। नि० चू० प्र० २०१ आ। गार्हस्थ्ये येन कर्त्तनं कृतम्। बृ० द्वि० ११६ आ। कृतयोगी–गीतार्थ:। बृ० द्वि० १६५ आ।

कडड–वनस्पतिविशेष:। भग० ८०४।

कडणं–कटकमर्द:। बृ० तृ० १९ अ।

कडणा–त्रट्टिका। भग० ३७६।

कडतड–कटतटम्। गण्डतटम्। ज्ञाता० ६९।

कडपल्ला–उद्धदरा, धन्नभायणा। नि० चू० द्वि० १७ आ।

कडपूतना–व्यन्तरीविशेष:। विशे० १०१९।

कडपूयणसिवो–कडपूतनाशिव:। दश० १०४।

कडपूयणा–कटपूतना। महावीर स्वामिन उपसर्गकृद् व्यन्तरी। आव० २१०। कटपूतना–तपस्विनामवन्दनकारिका व्यन्तरी। दश० ३८।

कडपोत्ती–यदि कटोऽस्ति ततस्तमन्तराले ददति, अथ स नास्ति तत: पोत्तिं–चिलिमिनीं ददति। ओघ० ९२।

कडभू–रुक्खो। नि० चू० प्र० १२२ अ।

कडय–कटकम्। ओघ० १८०। पर्वततटम्। ज्ञाता० ६३।

कडयपल्ललं–कटकपल्वलम्। पर्वततटव्यवस्थितजलाशयविशेष:। ज्ञाता० ६७।

कडलां–आभरणविशेष:। कनकनिगड:–निगडाकार: पादाभरणविशेष: सौवर्ण: सम्भाव्यते, लोके च 'कडलां' इति प्रसिद्ध:। जं० प्र० १०६।

कडवल्लो–सट्टती। नि० चू० तृ० ५९ अ।

कडवा–करटिका। राज० ५०।

कडवाई–कृतवादी। ईश्वरेण कृतोऽयं लोक: प्रधानादिकृतो वा, यथा च ते प्रवादिन आत्मीयमात्मीयं कृतवादं

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गृहीत्वोत्थितास्तथाकृतवादिनो भण्यन्ते । सूत्र० १२ ।

कडवाणि–इक्षुयोन्नलकादिदण्डकाः । आचा० ४११ ।

कडवालए–अजङ्गमत्वेन गृहपालकाः । बृ० द्वि० १०४ अ० ।

कडसलागा–कटशलाका । आव० २२६ ।

कडसीस–कटशीर्षं । पलाशपत्रमयम् । बृ० द्वि० २५३ अ ।

कडहू–वृक्षविशेषः । बृ० द्वि० २८ आ ।

कडा–पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथात्वाऽवाप्तेः कृताः । सम० १०६ ।

कडाइं–पूर्वपरिणामापेक्षया परिणामान्तरेण कृतानि । भग० ५६६ ।

कडाईहिं–इह पदैकदेशात् पदसमुदायो दृश्यस्ततः कृतयोग्यादिभिः । कृता योगाः–प्रत्युपेक्षणादिव्यापारा येषां सन्ति ते कृतयोगिनः । भग० १२७ । कृतयोग्यादिभिः ज्ञाता० ७७ ।

कडाली–कटालिका । अश्वानां मुखसंयमनोपकरणविशेषो लोहमयः । अनुत्त० ६ ।

कडासणं–कटः–संस्तारः, आसनं–आसन्दकादिविष्टरम् । आचा० १३४ ।

कडाह–बहुपांशुलिकः । तं० । कटाहं–कच्छपपृष्ठं भाजनविशेषो वा । अनुत्त० ६ ।

कडाहसंठितो–कटाहसंस्थितः । आवलिकाबाह्यस्य पञ्चमं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

कडि–कटी । आचा० ३८ । कटिः–मध्यभागः कटीरिव । जीवा० १८७ ।

कडिई–कृतयोगी । नि० चू० प्र० १०२ अ ।

कडिणा–वनस्पतिविशेषः । सूत्र० ३०७ ।

कडिपट्टइल्ल–कटिपट्टकवान् । उत्त० ९८ ।

कडिपट्टए–करिपट्टकः । आव० ६२६ ।

कडिपट्टओ–कटिपट्टकः । उत्त० ९८ । अणच्छादनम् । बृ० तृ० १०२ अ ।

कडिबंधणं–कटिबन्धनम् । चोलपट्टकः । आचा० २८७ ।

कडिय–शरीरमध्यभागो कटिः, ततोऽन्यस्यापि मध्यभागः कटिरिव कटिरिति । जं० प्र० २८ । कटः संजातोऽस्येति कटितः–कटान्तरेणोपरि आवृतः । जीवा० १८७ ।

कडियडं–कटितटम् । मध्यभागः । जीवा० १८७ ।

कडिल्ल–कटाहः । ओघ० ५० । गहनम् । बृ० तृ० १५६ आ । व्य० द्वि० १७५ आ । उपकरणभेदः । दश० १६४ । कटिकः । विशे० १०३७ । मण्डकादिपचनभाजनम् । उपा० २१ । महागहनम् । व्य० प्र० १७८ अ ।

कडिल्लकं–मृन्मयं चनकादिभर्जनपात्रम् । पिण्ड० १६४ ।

कडिल्लगं–गहनम् । व्य० प्र० २५७ ।

कडिल्लदेसं–कडिल्लदेशः । गहनप्रदेशः । व्य० प्र० २०५ आ ।

कडु–कटुः । तीक्ष्णः । उत्त० ६५३ ।

कडुअंफलं–कटुकफलम् । अशुभफलं–विपाकदारुणमित्यर्थः । दश० १५६ ।

अडुअ–कटुकं । आर्द्रकतीमनादि । दश० १८० ।

कडुए–कटुकः । रोगविशेषः । कटुकं नागरादि, तदिव यः स कटुकोऽनिष्ट एवेति । भग० ४८४ । वैषद्यच्छेदनकृत् कटुकः । ठाणा० २६ । कटुकम्–अनिष्टम । औप० ४२ । भग० २३१ ।

कडुओ–अपराधापन्नस्य गोष्ठिकस्य यो दण्डपरिच्छेदकारी स कटुको भण्यते । बृ० द्वि० १९१ । कटुकः–शीतातपरोगादिदोषबहुलतया परिणामदारुणः । सूर्य० १७२ ।

कडुग–कटाहः । आव० १९८ । दोसावण्णस्स गोट्ठियस्स दंडपरिच्छेयकारी कडुगो भण्णति । नि० चू० प्र० १५८ आ ।

कडुगतुंबिफलं–कटुकतुम्बीफलम् । प्रज्ञा० ३६४ ।

कडुगतुंबी–कटुकतुम्बी । प्रज्ञा० ३६४ ।

कडुगफलविवागो–कटुकफलविपाकः । उत्त० ३०३ ।

कडुच्छिका–दर्वी । ओघ० १६६ ।

कडुच्छुअं–कडुच्छुकम्–धूपाधानकम् । जं० प्र० १९३ ।

कडुच्छुकं–दर्वी । ओघ० १६१ ।

कडुच्छुग–कडुच्छुकः । तापसभिक्षाभाजनविशेषः । आव० ३५६ ।

कडुच्छुय–परिवेषणाद्यर्थो भाजनविशेषः । भग० २३८ ।

कडुभंड–वेसणं हिंगु-मरिचादि, कटुकं शुण्ठ्यादिभाण्डं घटादि; इति कटुभाण्डम् । बृ० द्वि० २७१ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडुयं–कटुकम् । दारुणम् । प्रश्न० १६ । अनिष्टार्थम् । प्रश्न० ११६ । लवणसमुद्रस्य उदके पञ्चमभेदः । जीवा० ३७० । कटुकाम्–चित्तोद्वेगकारिणीम् । आचा० ३८८ ।

कडुयदोद्धियं–कटुकं दौग्धिकम् । भाषायां 'दूधी–कद्दूः' नामकशाकविशेषः । आव० ७२३ ।

कडुया–कटुका । तीक्ष्णा । जीवा० ३५१ ।

कडुहडं– नि० चू० प्र० २०२ आ ।

कडेवरसेणि–कलेवरश्रेणिः । कलेवराणि-एकेन्द्रियशरीराणि तन्मयत्वेन तेषां श्रेणिः कलेवरश्रेणिः–वंशादिविरचिता प्रासादादिष्वारोहणहेतुः । उत्त० ३४१ ।

कड्डन्ति–निन्दयन्ति । आव० ३४३ ।

कड्डिति–कर्षयन्ति । उत्त० १४८ ।

कड्डिऊण–कर्षयित्वा । आव० २०५ ।

कड्डिओ–क्षिप्तः । आव० ४२५ ।

कड्डिज्जमाणो–आकृष्यमाणः । प्रश्न० ६२ ।

कड्डिय–कृष्टः । उत्त० २१५ । उक्तम् । बृ० तृ० १४२ अ । कृष्टः–आकर्षितः । प्रश्न० २१ ।

कड्डेमि–क्वथयिष्यामि । आव० ३६६ ।

कड्डोकड्डाहिं–कर्षणापकर्षणैः परमाधार्मिककृतैः । उत्त० ४५६ ।

कढिअ–क्वथितः । निष्पक्वः । जं० प्र० १०५ ।

कढिण–कठिनम् । वंशकटादि । आचा० ३७२ । तृणविशेषः । बृ० तृ० ५२ आ । वंसो । नि० चू० प्र० १३४ आ ।

कढिणियं–अतिशयेन घनम् । बृ० प्र० ५५ अ ।

कढियं–क्वथितम् । जीवा० २७८ ।

कढियाई–क्वथितादयः । क्वथितं तीमनादि तदादयः । पिण्ड० १६८ ।

कणं–शाल्यादेः । आचा० ३४६ । कणः–तन्दुलः । उत्त० ४५ ।

कणइरगुम्मा–कणवीरगुल्माः जं० प्र० ६८ ।

कणइरा–कणयरा । अतिस्निग्धतया श्लक्ष्णश्लक्ष्णस्वेदकणाकीर्णा । जीवा० २७६ ।

कणए–पर्वगविशेषः । प्रज्ञा ३३ । अष्टाशीत्यामष्टमो महाग्रहः । सूर्य० २९४ । जं० प्र० ५३४ । ठाणा० ७८ ।

कणओ–कनकः । श्लक्ष्णरेखः प्रकाशरहितश्च । आव० ७५२ ।

कणक–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ । बाणविशेषः । प्रश्न० २१ । कणकाः–बाणाः । सम० १५७ ।

कणकणए–अष्टाशीत्यां नवमो महाग्रहः । सूर्य० २९५ । जं० प्र० ५३४ । ठाणा० ७८ ।

कणकनिज्जुत्त–कनकनियुक्तानि । हेमखचितानि । ज्ञाता० ५८ ।

कणकीटकः–निष्ठुरः कृमिः । उत्त० ४५७ ।

कणकुंडगं–कणिककुण्डम् । कणिकाभिर्मिश्राः कुक्कुसाः । आचा० ३४६ । आव० ८१४ ।

कणग–कनकतिलकम् । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ । कनकं देवकाञ्चनम् । आव० १८४ । कनके भवः कानकः । आव० २३१ । कनकः बाणविशेषः । बृ० द्वि० २३३ आ । कणकः बिन्दुः शलाका वा । कनकं सुवर्णमेव । औप० ५२ । तारकपातः । औघ० २०१ । घृतवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३५४ । कनकं–पीतरूपः सुवर्णविशेषः । जं० प्र० २३ । धान्यम् । भग० ४७० । कनकः–रेखारहितः । व्य० द्वि० २५४ आ ।

कणगकंताणि–कनककान्तीनि । कनकस्येव कान्तिर्येषां तानि । आचा० ३९४ ।

कणगकूडे–कनककूटम् । विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वते पञ्चमकूटस्य नाम । जं० प्र० ३५५ ।

कणगकेउ–कनककेतुः । अहिच्छत्रानगर्यां नृपतिः । ज्ञाता० १९३ । हस्तिशीर्षनगरे नरपतिः । ज्ञाता० २२७ ।

कणगखइयाणि–कनकखचितानि । कनकरसस्तबकाञ्चितानि । आचा० ३९४ ।

कणगखचितं–कणगसुत्तेण फुल्लिया जस्स पाडिया तं कणगखचितं । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कणगखचियं–कनकखचितम् । विच्छुरितम् । जीवा० २५३ ।

कणगखलं–कनकखलम् । आश्रयपदम् । आव० १९५ ।

कणगजालं–कनकजालम् । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणगज्झय–कनकध्वजः । कनकरथराजपुत्रः । आव० ३७३ । कनकध्वजः–कनकरथराजपुत्रः । ज्ञाता० १८९ ।

कणगणिगरमालिय।–कनकनिगरमालिका । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६९ ।

कणगणिगल–कनकनिगडः । निगडाकारः पादाभरणविशेषः सौवर्णः संभाव्यते । लोके च 'कडलां' इति प्रसिद्धः । जं० प्र० १०६ ।

कणगणिज्जुत्त–कनकनियुक्तम् । कनकविच्छुरितं, कनकपट्टिकासंवलितमित्यर्थः । जं० प्र० ३७ ।

कणगतिंदूसेणं–कनकतिन्दूषेण । स्वर्णकन्दुकेन । विपा० ८४ ।

कणगतिलक–कनकतिलकम् । ललाटाभरणम् । जं० प्र० १०६ ।

कणगनिगरणं–कनकस्य निगरणं कनकनिगरणम्, गालितं कनकमिति भावः । जीवा० २६७ ।

कणगनिगल–कनकनिगलानि । निगडाकाराः सौवर्णपादाभरणविशेषाः । औप० ५५ ।

कणगनिज्जुत्तं–कनकनियुक्तम् । कनकविच्छुरितम् । जीवा० १९२ ।

कणगपट्टं–कणगेण जस्स पट्टा कता तं कणगपट्टं । मिगा । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कणगपट्टाणि–कनकपट्टानि । कृतकनकरसपट्टानि । आचा० ३९४ ।

कणगपट्ठा–कनकपृष्ठान् । कांश्चिदिति रूपकम् । ज्ञाता० २३१ ।

कणगपिट्ठो–कनकपृष्ठिः । एतादृशो मृगः । ओघ० १५८ ।

कणगपुरं–कनकपुरम् । प्रियचन्द्रराजधानी । विपा० ९५ ।

कणगप्पभा–धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य षोडशममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

कणगप्पभो–कनकप्रभः । घृतवरद्वीपेऽपराद्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३५४ ।

कणगफुल्लियं–कणगेण जस्स फुल्लिताओ दिण्णाओ तं कणगफुल्लियं । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कणगफुसियाणि–कनकस्पृष्टानि । आचा० ३९४ ।

कणगरहे–कनकरथः । विजयपुरनगराधिपतिः । विपा० ७५ । तेतलिपुरनगरे राजा । ज्ञाता० १८४ । आव० ३७३ ।

कणगलता–चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ ।

कणगलया–चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०३ ।

कणगवत्थु–कनकवस्तु । द्विपृष्ठवासुदेवनिदानभूमिः । आव० १६३ ।

कणगसंताणे–कनकसन्तानकः । अष्टाशीत्यामेकादशो महाग्रहः । सूर्य० २९४ ।

कणगसनामा–कनकेन सह एकदेशेन समानं नाम येषां ते कनकसमाननामानः । सूर्य० २९५ ।

कणगा–धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य पञ्चदशमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । भग० ५०३ । भीमस्य राक्षसेन्द्रस्य तृतीयाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । भग० ५०४ । चतुरिन्द्रियजीवविशेषाः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । कणगा–सण्हरेहा पगासविरहिता य । नि० चू० तृ० आ ।

कणगाणि–कनकानि । कनकरसच्छुरितानि । आचा० ३९४ ।

कणगावलि–कनकावली । सौवर्णमणिकमयी । भग० ४७७ ।

कणगावलिभद्दो–कनकावलिभद्रः । कनकावलिद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिमहाभद्दो–कनकावलिमहाभद्रः । कनकावलिद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरमहावरो–कनकावलिवरमहावरः । कनकावलिवरे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरावभासभद्दो–कनकावलिवरावभासमहाभद्रः । कनकावलिवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरावभासमहाभद्दो–कनकावलिवरावभासमहाभद्रः । कनकावलिवरावभासे द्वीपे अपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरावभासमहावरो–कनकावलिवरावभासम-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हावरः । कनकावलिवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६६ ।

कणगावलिवरावभासवरो–कनकावलिवरावभासवरः । कनकावलिवरावभासे समुद्रे पूर्वार्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६६ ।

कणगावलिवरावभासो–कनकावलिवरावभासः । द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३६८ ।

कणगावलिवरो–कनकावलिवरः । द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३६८ । कनकावालसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६६ ।

कणगावली–कनकावलिः । कनकमयमणिकमयो भूषणविशेषः । कल्पनया तदाकारं यत्तपस्तत् । तपोविशेषः । औप० २६ । तपोविशेषः । नि० चू० प्र० ३०६ आ । कनकावली–कनकमयमणिकरूप आभरणविशेषः तपोविशेषश्च । अन्त० २७ । कनकमणिमयी । जीवा० २५३ । कनकावलिः–द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३६८ । सुवण्णमणिएहिं कणगावली । नि० चू० प्र० २५४ आ ।

कणतो–कनकः । रेखारहितो ज्योतिष्पिण्डः । ओघ० २०५ ।

कणपूपलिय–कणपूपलिकाः, कणिकाभिर्मिश्राः पूपलिकाः कणपूपलिकाः । आचा०, ३४६ ।

कणय–कणकाः, बाणविशेषाः । जं० प्र० २०६ । प्रहरणविशेषः । नि० चू० द्वि० ५७ आ ।

कणयमूलं–कनकमूलम् । बिल्वमूलम् । उत्त० १४२ ।

कणयर–गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कणविताणए–कणवितानकः । अष्टाशीत्यां दशमो महाग्रहः । सूर्य० २६५ । जं० प्र० ५३४ । अष्टाशीत्यां दशमो महाग्रहः । ठाणा० ७८ ।

कणवीर–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

कणसंताणए–अष्टाशीत्यामेकादशो महाग्रहः । ठाणा० ७८ । जं० प्र० ५३४ ।

कणादो–कणादमतप्ररूपकः । विशे० ८६६ ।

कणिआरवणं–कणिकारवनम् । आव० १८६ ।

कणिक्क–धान्यविशेषः । आव० १०२ । कणिक्कः । आव० ८५५ ।

कणिक्कमंडलिआ–ओघ० १३७ ।

कणिक्कमच्छा–मत्स्यविशेषाः । जीवा० ३६ । प्रज्ञा० ४४ ।

कणितारुक्खे–दिक्कुमाराणां चैत्यवृक्षः । ठाणा० ४८७ ।

कणिया–क्वणिता, काचिद् वीणा । जं० प्र० १०१ । कणिक्का । आव० ८५५ । तुसमुही । नि० चू० प्र० १६६ अ ।

कणियारय–कर्णिकारकः । कुत्सितवृक्षविशेषः । आव० ५५७ ।

कणियारे–दिशाचरविशेषः । भग० ६५६ ।

कणीयस–कनीयान्, कनिष्ठः, लघुरिति । अन्त० ८ ।

कणुओ–रजः, धूलिरजः । दश० ४७ ।

कणुय–कणुकम्, त्वगाद्यवयवः । आचा० ३४७ ।

कणे–कणः । अष्टाशीत्यां सप्तमो महाग्रहः । जं० प्र० ५३४ । ठाणा० ७८ ।

कणेरदत्त–कणेरुदत्तः, कुरुषु गजपुराधिपतिः । उत्त० ३७७ ।

कणेरुदत्ता–करेणुदत्ता, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणां मध्ये तृतीया । उत्त० ३७६ ।

कणेरुपइगा–करेणुपदिका, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणां मध्ये तुरीया । उत्त० ३७६ ।

कणेरुसेणा–करेणुसेना, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणां मध्ये षष्ठी । उत्त० ३७६ ।

कण्णो–कणः, अष्टाशीत्यां सप्तमो महाग्रहः । सूर्य० २६४ ।

कण्णंतेपुरं–अप्पत्तजोव्वणाण रायदुहियाण संगहो कन्नंतेपुरं । नि० चू० प्र० २७१ अ ।

कण्ण–कर्णः । आव० १६२ । वित्थारकण्ण । नि० चू० तृ० ४८ आ । कन्याः, कन्या इव कन्याः, अफला अथवा दूरफलाः । जं० प्र० २०६ । कोणं । नि० चू० प्र० १२ आ । कर्णः—प्रथमकोटिभागरूपः । सूर्य० ४६ । आव० ६२१ । श्रवणः । प्रश्न० ८ । कोटिभागः । सूर्य० ८ ।

कण्णकलं–कर्णकलम्, कर्णकलमिति च क्रियाविशेषणं द्रष्टव्यम्, तच्चैवं भावनीयम्—कर्णम्–अपरमण्डलगतप्रथमकोटिभागरूपं लक्ष्यीकृत्याऽधिकृतमण्डलं प्रथमक्षणादूर्ध्वं क्षणे क्षणे कलयाऽतिक्रान्तं यथा भवति तथा । सूर्य० ४६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्णकला-कर्णकला, कर्णः-कोटिभागः, तमधिकृत्याऽपरेषां मतेन कला-मात्रा । सूर्य० ८ ।

कण्णग-कन्यका, कन्या । आव० ८६३ ।

कण्णगूध-कण्णमलो । नि० चू० प्र० १६० आ ।

कण्णचवेडयं-दण्डविशेषः । नि० चू० प्र० २६६ अ ।

कण्णत्तिया-चर्मपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ । जीवा० ४१ ।

कण्णधार-कर्णधारः । आव० ३८७ । कर्णधारः, निर्यामकविशेषः । आव० ६०२ ।

कण्णपाउरणा-कर्णप्रावरणनामा अन्तरद्वीपः । प्रज्ञा० ५० ।

कण्णपाली-कर्णपाली । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।

कण्णपावरणो-कर्णप्रावरणः, अन्तरद्वीपविशेषः । जीवा० १४४ ।

कण्णपीढं-कर्णपीठम्, कर्णाभरणविशेषरूपम् । जीवा० १६२ । भग० १३२ । प्रज्ञा० ८८ । औप० ५० ।

कण्णपूर-कर्णपूरम्, कर्णाभरणविशेषः । भग० ३१७ ।

कण्णरोडयं-कर्णरोटकम्, राटिः । आव० ८९ ।

कण्णलोयण-शतभिषग्नक्षत्रस्य गोत्रम् । सूर्य० १५० ।

कण्णवालि-वर्णवाली, कर्णोपरितनविभागभूषणविशेषः । जं० प्र० १०६ ।

कण्णसप्पे-राहोः नवमं नाम । सूर्य० २८७ ।

कण्णा-तरुणित्थी । नि० चू० द्वि० १६७ आ ।

कण्णाकण्णि-नि० चू० तृ० ५५ अ । ण संचरिस्संति ताहे कण्णाकण्णि भरेति । नि० चू० तृ० ५० आ ।

कण्णाघातो-कर्णाघातः, कर्णयोराघातः । उत्त० ३०३ ।

कण्णायतं-कर्णायतम्, कर्णं यावद् आयतम्-आकृष्टम् । भग० ९३ ।

कण्णायय-कर्णं यावदाकृष्टः कर्णायतः । भग० २३० । आकर्णमाकृष्टः । भग० ३२३ ।

कण्णाहिंडिस्सति- । ओघ० ९२ ।

कण्णाहुइं-पूर्णकर्णाम् । महाप्र० ।

कण्णिअ-कर्णिकाः, कोणाः । जं० प्र० २२६ । बीजकोशः । जं० प्र० २४२ ।

कण्णिए-कर्णिकाः, कोणाः । अनु० १७२ ।

कण्णिगा-कर्णिका, बीजकोशः । जं० प्र० २८४ ।

कण्णिते-कर्णिकाः, कोणविभागः । ठाणा० ४३५ ।

कण्णियार-कर्णिकारः, वृक्षविशेषः । जीवा० ३५५ ।

कण्णियारकुसुमं-कर्णिकारकुसुमम्, काञ्चनारककुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

कण्णिलं-पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् कण्णिलायनम्, शतभिषग्गोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

कण्ह-कृष्णः, परिव्राजकविशेषः । औप० ९१ । नवमो वासुदेवः । आव० १५९ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ । बलदेववासुदेवयोर्धर्माचार्यनाम । सम० १५३ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ । कृष्णः-पुरुषसिंहधर्माचार्यः । आव० १६३ । वसुदेवपुत्रः । दश० ३६ । हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । कन्दविशेषः । उत्त० ६९१ । द्वारकायां वासुदेवः । अन्त० २ । ज्ञाता० १०० । वासुदेवनाम । निरय० ३९ ।

कण्हकंद-कृष्णकन्दः । अनन्तकायवनस्पतिविशेषः । भग० ३०० । प्रज्ञा० ३६४ ।

कण्हकणवीरए-कृष्णकणवीरः । वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३६० ।

कण्हगोमी-कृष्णगोमी, कर्णशृगाली । व्य० द्वि० १८७ अ ।

कण्हदल-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।

कण्हपक्खिय-कृष्णपाक्षिकः । अधिकतरसंसारभाग् जीवः । प्रज्ञा० ११७ ।

कण्हपरिव्वायगा-कृष्णपरिव्राजकाः, परिव्राजकविशेषाः । नारायणभक्तिका इति केचित् । औप० ९१ ।

कण्हफुसिताओ-कर्णपृषतः । नि० चू० तृ० ६० आ ।

कण्हबंधुजीवए-कृष्णबन्धुजीवः । वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३६० ।

कण्हभूमी-कृष्णभूमिः । आव० १०१ ।

कण्हराई-ईशानेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०५ । कृष्णपुद्गलरेखा । भग० २७१ ।

कण्हराती-कृष्णराजी, कृष्णपुद्गलपङ्क्तिरूपत्वात् । ठाणा० ४३२ । धर्मकथाया दशमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम् ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञाता० २५३ ।

कण्हरातीते–उत्तरपूर्वरतिकरपर्वते ईशानेन्द्रस्याग्रमहिष्या राजधानी । ठाणा० २३१ ।

कण्हलेस्सा–कृष्णद्रव्यात्मिका लेश्या, कृष्णद्रव्यजनिता वा लेश्या कृष्णलेश्या । प्रज्ञा० ३४४ ।

कण्हवडेंसय–कृष्णावतंसकम् । ईशानकल्पे विमानविशेषः। ज्ञाता० २५३ ।

कण्हवेला–आभीरविसए नदी । नि० चू० द्वि० १०२ आ ।

कण्हसप्प–कृष्णसर्पः । दर्वीकर–अहिभेदविशेषः । दर्वीव दर्वी–फणा, तत्करणशीलः । जीवा० ३६ । प्रज्ञा० ४६ । राहोः नवमं नाम । भग० ५७५ ।

कण्हसिरी–कृष्णश्रीः । दत्तगाथापतिभार्या । विपा० ८२ ।

कण्हसूरवल्ली–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कण्हा–कृष्णा । अन्तकृद्दशानामष्टमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अन्त० २५ । कण्हा (कण्णा)–कृष्णा (कन्या) । आभीरविषये नदीविशेषः । आव० ४१२ । वासवदत्तराज्ञी । विपा० ६५ । धर्मकथाया दशमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २५३ । कृष्णा–आर्याविशेषः । अन्त० २८ । ईशानेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०५ । कृष्णा–योगद्वारविवरणेऽचलपुरासन्ननदीविशेषः । पिण्ड० १४४ ।

कण्हाते–उत्तरपूर्वरतिकरपर्वते ईशानेन्द्रस्याऽग्रमहिष्या राजधानी । ठाणा० २३१ ।

कण्हासोए–कृष्णाशोकः । वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३६० ।

कण्हुइ–कुत्रचिद् देशे काले वा । उत्त० १४० ।

कण्हुई–कस्मिश्चित् सूत्रादौ वस्तुनि वा । उत्त० १२६ ।

कण्हुहरे–कण्हु–कस्यार्थं हरिष्यामि इत्येवमध्यवसायी । उत्त० २७४ ।

कण्हे–निरयावलिकानां प्रथमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । निरय० ३ ।

कण्हो–बंभवत्त । कण्हो–क्रोधजयी । मर० ।

कतं–कृतं ममानेन तत्प्रयोजनमिति प्रत्युपकारार्थं यद्दानं तत् कृतम् । ठाणा० ४९६ ।

कतकज्जो–कृतकार्यः । निष्ठिताखिलप्रयोजनः । सूर्य० २९२।

कतणासी–कृतनाशिनः, अकृतज्ञाः । ओघ० ७२ ।

कतपुण्णो–कृतपुण्यः, राजगृहे धनावहपुत्रः । आव० ३५३ ।

कतमाला–एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ ।

कता–कदा । आव० ३४२ ।

कति– । अनुत्त० ७ ।

कतिकट्ठा–कतिकाष्ठा, किंप्रमाणा । सूर्य० ७ ।

कतिविया–कइविका–कलाचिका । ज्ञाता० ४४ ।

कतिसंचिता–कति–कतिसङ्ख्याताः, सङ्ख्याता एकैकसमये ये उत्पन्नाः सन्तः सञ्चिताः—कत्युत्पत्तिसाधर्म्याद् बुद्धया राशीकृतास्ते कतिसञ्चिताः । ठाणा० १०५ ।

कतिसंचिया–कतीति सङ्ख्यावाची, ततश्च कतित्वेन सञ्चिताः–एकसमये सङ्ख्यातोत्पादेन पिण्डिताः कतिसञ्चिताः । भग० ७९६ ।

कती–'कति' इत्यनेन सङ्ख्यावाचिना द्वयादयः सङ्ख्यावन्तोऽभिधीयन्ते । ठाणा० १०५ । कृतमस्यास्तीति कृती–पुण्यवान् परमार्थपण्डितो वा । सूत्र० २९८ । सङ्ख्यावाची । भग० ७९९ ।

कत्त–चर्म्मकम् । नि० चू० प्र० ५६ आ ।

कत्तरी–कर्त्तरी । आव० ६२७ ।

कत्तलिकारूवा–पञ्चलतिकाः । जं० प्र० २२३ ।

कत्तविरिए–कार्त्तवीर्यः । सुभूमचक्रवर्त्तिपिता । आव० १९२ । ठाणा० ४३० ।

कत्तवीरिओ–सुभूमचक्रवर्तिनः पिता । सम० १५२ । कार्तवीर्यः–अनन्तवीर्यपुत्रः । आव० ३९२ । कार्त्तवीर्यः–संजातकामः–जातेच्छः । भग० १४ ।

कत्ताविय–कर्त्तापितम् । कर्तनं कारितम् । आव० ४१८ ।

कत्ति–कत्तिकडं–क इति कृतम् । आव० ७८२ । छदडिया (सादडी) । नि० चू० प्र० ४२ अ ।

कत्तिए–कार्तिकः । हस्तिनापुरे श्रेष्ठी । भग० ७३७ ।

कत्तिओ–कार्त्तिकः । राजाभियोगविषये हस्तिनापुरे श्रेष्ठी । आव० ८११ । श्रेष्ठिविशेषः । निर० २२ ।

कत्तिय–कृत्तिका । प्रथमं नक्षत्रम् । ठाणा० ७७ । भरतक्षेत्र आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्विंशतिकायां षष्ठतीर्थकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५४ ।

कत्तियाणक्खत्ते–कृत्तिकानक्षत्रम् । सूर्य० १३० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्ती-कर्त्तरिका (कृत्तिका) । ठाणा० २३४ । चर्म्मं । नि० चू० द्वि० १८ अ । कर्त्तरी, चर्मपञ्चके पञ्चमो भेदः । आव० ६५२ ।

कत्थं-यत्र कथिकादि गीयते तत् कथ्यम् । जं० प्र० ३९ । कत्थः-अनन्तजीववनस्पतिभेदः । आचा० ५६ ।

कत्थपुडिय-गान्धिकः । नि० चू० प्र० ३५६ अ ।

कत्थुरी-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कत्थुल-गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कत्थुलगुम्मा-कस्तुलगुल्माः । जं० प्र० ९८ ।

कत्थे-कथायां साधुकथ्यं ज्ञाताध्ययनवत् । ठाणा० २८८।

कथगो-कथकः । जीवा० २८१ ।

कथनम्-उपदेशः । आव० ६०४ ।

कदंबचीरिका-शस्त्रविशेषः । ठाणा० २७३ ।

कदंबपुप्फसंठिय-कदम्बपुष्पसंस्थितम् । कदम्बपुष्पवद् अधः सङ्कुचितम् उपरि विस्तीर्णमुत्तानीकृतार्द्धकपित्थ-संस्थानसंस्थितम् । सूर्य० २७४ ।

कदर्थितः-हीलितः । आचा० ४३० ।

कदल-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

कदली-वल्लिविशेषः । प्रज्ञा० ३१, ३३ । आचा० ३० । लतावलयभेदः । उत्त० ६९२ । नंदी० २१५ ।

कदलीथंभो-कदलीस्तम्भः । प्रज्ञा० २६६ ।

कदलीहरं-कदलीगृहम् । आव० १२३ ।

कदशनम्-निष्ठान्नं-सर्वगुणोपेतं संभृतमन्नम्, रसनिर्व्यूढम्-एतद्विपरीतं कदशनम् । दश० २३१ ।

कद्दम-कर्द्दमः । यत्र प्रविष्टः पादादिर्नाक्रष्टुं शक्यते कष्टेन वा शक्यते । ठाणा० २३५ । द्वितीयोऽनुवेलन्धरनागराजः । जीवा० ३१३ । कर्द्दमो गोवाटादीनाम् । ठाणा० २१९ । कर्दमः-नदीविदरकलक्षणः । ज्ञाता० ६७ ।

कद्दमए-कर्दमकः । ठाणा० २२६ । आग्नेय्यां दिशि वर्त-माने विद्युत्प्रभपर्वते नागराजः । वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० १९९ ।

कद्दमजलं-कर्दमजलम् । यद् घनकर्दमस्योपरि वहति । ओघ० ३२ ।

कद्दिवसं-कस्मिन् दिवसे । मर० ।

कनंगरा-काय-पानीयाय नङ्गराः-बोधिस्थनिश्चलीकरण-पाषाणस्ते कनङ्गराः कानङ्गरा वा, ईषन्नङ्गर इत्यर्थः । विपा० ७१ ।

कनकरसस्तवकाञ्चितानि-कनकखचितानि । आचा० ३९४ ।

कनकालुकः-भृङ्गारकः । जं० प्र० ५६ । भृङ्गारः । जं० प्र० २९२ ।

कनकावलि-तपोविशेषः । व्य० प्र० ११३ आ । कनका-वलिः-आभरणविशेषः । प्रज्ञा० ३०७ ।

कन्दलीकन्दक-सचित्तं तरुशरीरम् । आव० ८२८ ।

कन्दुकगतिः-सर्वेण सर्वत्रोत्पद्यते विमुच्यैव पूर्वस्थानम् । भग० ८४ । गतिविशेषः । ठाणा० ८९ ।

कन्न-कर्णः । पिण्ड० १५३ ।

कन्नकुज्जं-कन्यकुब्जम् । यत्र मृगकोष्ठकनगरे जितशत्रुराज्ञः कन्या यामदग्न्येन पूर्वं कुब्जीकृताः पश्चाद् अकुब्जीकृताः, अतः संवृत्तं तन्नगरनाम । नगरविशेषः । आव० ३९२ ।

कन्नधार-कर्णधारः । निर्यामकः । ज्ञाता० १३६ ।

कन्नपाउरणदीवे-कर्णप्रावरणद्वीपः । अन्तर्द्वीपविशेषः । ठाणा० २२६ ।

कन्नपालो-कर्णपालः । अलोभोदाहरणे मेण्ढः । आव० ७०१ ।

कन्नपीढ-कर्णाविव पीठे आसने-कण्डलाधारत्वात् कर्ण-पीठम् । ठाणा० ४२१ ।

कन्नवेयणा-कर्णवेदना । श्रोत्रपीडा । भग० १९७ ।

कन्नस-कनिष्ठम् । लघु, जघन्यम् । उत्त० २३५ ।

कन्नसर-कर्णसरः । कर्णगामी । दश० २५३ ।

कन्नाघाओ-कर्णाघातः । आव० ७१९ ।

कन्नामोडओ-कर्णामोटकः । आव० ४८५ ।

कन्नारोडयं-कर्णस्फोटम् । बृ० प्र० २८ आ ।

कन्नालीयं-कन्यालीकम् । कन्याविषयमनृतम्, अभिन्न-कन्यकामेव भिन्नकन्यकां वक्ति विपर्ययो वा । आव० ८२० ।

कन्नाहाडिया-कर्णाहृता । आव० ४११ ।

कन्नाहेडयं-कर्णाहिटकम् । आव० २९२ ।

कन्निया-कर्णिका । बीजकोशः । भग० ५१३ । मध्य-गण्डिका । कर्णिका नाम उन्नतसमचित्रबिन्दुकिनी । प्रज्ञा०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८५ । कर्णिका–पत्राधारभूता । प्रज्ञा० ३७ ।

कन्नीय–कर्णिका । भग० ५११ ।

कन्नीरहो–कर्णीरथः । प्रवहणम् । विपा० ४५ । प्रवहणविशेषः । ज्ञाता० ६३ ।

कन्नुक्कड–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

कन्नू–कांनु । कामपि । उत्त० १६४ ।

कन्यकुब्ज–नगरविशेषः । विशे० ४३९ ।

कन्याचोलकः–यवनालकः । आव० ४२ । नंदी० ८८ । जवनालकः । प्रज्ञा० ५४२ ।

कन्हो–द्वारवत्यां वासुदेवः । बृ० पृ० ५६ आ ।

कपर्दक–वराटकः । ओघ० १२९ । वराटः । प्रज्ञा० ४९ ।

कपाल–रोगविशेषः । आचा० २३५ ।

कपिंजल–कपिञ्जलः । लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।

कपिंजलक–कपिञ्जलकः । पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

कपिञ्चुः–चित्रपिच्छपक्षिविशेषः । आचा० ६९ ।

कपित्थं–कपेरिव लम्बते, 'त्थे'ति च करोतीति कपित्थम् । अनु० १५० । फलविशेषः । प्रज्ञा० १० । दश० १०० ।

कपिल–स्वयंबुद्धविशेषः । बृ० प्र० १८७ आ । प्रत्येकबुद्धविशेषः । उत्त० ५ । मतविशेषप्ररूपकः । उत्त० २६६ ।

कपिलदरिसण–मतविशेषः । आचा० १६३ ।

कपिहसितं–विरलवानरमुखहसितम् । ओघ० २०१ ।

कपोत–पक्षिविशेषः । आचा० ३१४ ।

कपोय–कपोतः । लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।

कपोलपाली–गण्डरेखा । जीवा० २७६ ।

कप्प–वत्थपुप्फचम्मादि वा कप्पं, रुक्खादि वा कप्पं । नि० चू० द्वि० ७१ अ । कल्पत इति कल्पः स्वकार्यकरणसामर्थ्योपेतः । भग० १५५ । कल्पः–बृहत्कल्पः । सप्तमनिर्युक्तिस्थानम् । आव० ६१ । आव० ७९३ । कल्पं–कम्बल्यादिरूपम् । ओघ० ३४ । कल्पः । अनु० १७१ । तथाविधसमाचारप्रतिपादकः । ज्ञाता० ११० । कल्पः–तथाविधसमाचारनिरूपकं शास्त्रम् । औप० ६३ । कत्तव्वं । नि० चू० प्र० २५ आ । कल्पः–विकल्पः समाचारो वा । औप० ३६ । छेदः । ठाणा० ४९६ । दसाकप्पववहारा । नि० चू० तृ० १०० आ । कल्पः–आचारः । प्रज्ञा० ७० । अपरिहार्यः । नि० चू० तृ० १३२ आ । कल्पः–दशाश्रुतस्कन्धकल्पव्यवहाराः । व्य० प्र० ६३ आ । आचारः । आचा० १६८, २४४ । ठाणा० २४४ । आचारो मर्यादित्यर्थः । ठाणा० ५११ । करणमाचारः । ठाणा १६७ । साध्वाचारः । ठाणा० ३७१ । छेदः । ठाणा० ४६७ । जिनकल्पिकादिसमाचारः । भग० ६१ । यतिक्रियाकलापः । उत्त० ५०२ । यतिव्यवहारः । उत्त० ६१६ । कल्पते–साध्वादिक्रियासु समर्थो भवतीति कल्पो–योग्यः । उत्त० ६३६ । विधिः । नंदी० ६१ । व्यवस्था स्थविरकल्पादिरूपा यत्र वर्ण्यते ग्रन्थे सः । नंदी० २०६ । देवलोकः । नंदी० २०७ । कल्पसूत्रम् । आव० ७२४ । दिवसः । बृ० प्र० २२४ आ । क्वचित्करणे । बृ० प्र० ३ अ । कल्पोक्तसाध्वाचारः । ठाणा० ३७३ । कल्पाद्युक्तसाध्वाचारः सामायिकच्छेदोपस्थापनीयादिः । ठाणा० ३७४ । कल्प्यन्ते–इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशादिदशप्रकारत्वेन देवा एतेष्विति कल्पाः–देवलोकाः । उत्त० ७०२ । कम्बल्यादिरूपम् । ओघ० ३४ । सम० ३८ । कृत्यम् । आव० ७६१ । कारणपुव्वगो । नि० चू० प्र० ७९ अ । समाचारः । प्रश्न० १०६ । अध्वकल्पः । बृ० द्वि० १२२ आ । समाचारो विकल्पो वा । प्रश्न० १५७ । कल्पशास्त्रोक्तसाधुसमाचारः । बृ० तृ० २४६ आ । औपम्यं, सामर्थ्यं, वर्णना, छेदनं, करणं, अधिवासश्च । आव० ५०० । अध्वकल्पः । नि० चू० तृ० ४० अ । आव० ३२४ । योग्यः । दश० ६ । तथाविधसमाचारनिरूपकं शास्त्रम् । भग० ११४ । कल्पः–यज्जिनकल्पिका अनवस्तृता रात्रावुत्कुटुकास्तिष्ठन्ति एष कल्पः । यत्कारणे समापतिते अज्भुषिराणि (अशुषिराणि) तृणानि गृह्णन्ति एष कल्पः । व्य० द्वि० २८७ अ । कल्पः–सदृशः । उत्त० ४६५ । समाचारी । व्य० प्र० १३६ आ । कल्पाध्ययनम् । व्य० द्वि० ४२० अ । सामर्थ्ये वर्णनायां च, छेदने करणे तथा । औपम्ये चाऽधिवासे च, कल्पशब्दं विदुर्बुधाः ॥१॥ बृ० प्र० ३ अ । जिणकप्पियाण अत्थुरणवज्जो कप्पो । जिणकप्प-थेरकप्पिएसु कज्जेसु अज्भुसिरगहणे कप्पो

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवति । नि० चू० प्र० १६१ आ । ८६४००००००० वर्षात्मकः कालः । आचा० १७ । समाचारविशेषः । विशे० ८ । वैमानिकदेवाऽऽवासाभिधायकः । भग० ६१ । देवलोकः । भग० २२१ । स्वकार्यकरणसमर्थो वस्तुरूपः । भग० २६६ । छेदः । उत्त० ६३८ । उपधिः । दश० २५० । पिण्ड० ७२ ।

कप्पइ–कल्पते । युज्यते । आचा० ४७ । कल्प्यते–वर्त्तते । आचा० १४१ । कल्पते–युज्यते । उपा० १३ । कल्पते–प्रभवति, पौनःपुन्येनोत्पद्यते । आचा० १४१ ।

कप्पओ–कल्पकः । कपिलब्राह्मणपुत्रः । आव० ६६१ ।

कप्पकरण–कल्पकरणम् । भाजनस्य धावनविधिलक्षणम् । बृ० प्र० २५८ आ । नि० चू० द्वि० २८ आ ।

कप्पकार–कल्पकराः । विधिकारिणः, परिकर्मकारिणः । जं० प्र० २४२ ।

कप्पट्ठ–कल्पस्थः । समयपरिभाषया बालक उच्यते । बृ० प्र० १४५ आ ।

कप्पट्ठओ–बालकः । पिण्ड० ६२ ।

कप्पट्ठग–बालः । नि० चू० द्वि० ११६ आ । बालकः । व्य० द्वि० ८ अ । कल्पस्थकाः–बालाः । व्य० प्र० ११६ अ ।

कप्पट्ठगरूय–कल्पस्थकरूपः । शिशुः । आव० ६३६ ।

कप्पट्ठिता–जिणकप्पिया । नि० चू० प्र० २६ आ ।

कप्पट्ठिती–कल्पशास्त्रोक्तसाधुसमाचारे स्थितिः–अवस्थानं कल्पस्य मर्यादा । बृ० तृ० २५१ अ ।

कप्पट्ठितो–आयरियाण पदाणुपालगो । नि० चू० प्र० ३०७ अ ।

कप्पट्ठिया–श्रेष्ठिवधूः । ठाणा० २६६ । पञ्चयामधर्मप्रतिपन्नाः । बृ० तृ० १२५ अ ।

कप्पट्ठी–सेज्जायरधूया । नि० चू० प्र० ७७ आ । तरुणी । बृ० तृ० ७६ आ ।

कप्पडप्पहारो–कर्पटप्रहारः । लकुटाकारवलितचीवरैस्ताडनम् । प्रश्न० ५६ ।

कप्पडिओ–कार्पटिकाः । ओघ० ८६ । सम० ३८ । कार्पटिकः–ब्रह्मदत्तसेवकः । आव० ३४१ । स्वप्ने द्रष्टान्तः । आव० ३४३ ।

कप्पडिगो–कार्पटिकः । आव० ३८४ ।

कप्पडितो–ब्रह्मदत्तसेवकः । उत्त० ३४५ ।

कप्पडिय–कार्पटिकः । आव० १६१ । दश० ५५ । दुर्बलः । आव० ८१४ । भिक्षाचराणां सार्थः । बृ० द्वि० १२५ अ ।

कप्पडिया–भिक्खायरा । नि० चू० तृ० ३७ अ । नि० चू० प्र० १८६ अ । कर्पटैश्चरन्तीति कार्पटिकाः वा–कपटचारिणः । ज्ञाता० १५२ ।

कप्पणं–कल्पना–रचना । जं० प्र० २१२ ।

कप्पणसत्थयं–शस्त्रविशेषः । नि० चू० द्वि० १८ आ ।

कप्पणा–कल्पना क्लृप्तिभेदः । औप० ६२ ।

कप्पणारहियं–कल्पनारहितम् । विशे० १५५ ।

कप्पणाविगप्पा–कल्पनाविकल्पाः कृतिभेदाः । भग० ३१७ ।

कप्पणि–कल्पनी–कर्त्तिकाविशेषः । प्रश्न० २१ । कल्पन्यः कृपाण्यः । जं० प्र० २०६ । कल्प्यते छिद्यते यया सा कल्पनी शस्त्रविशेषः । आचा० ६१ ।

कप्पणिज्जं–कल्पनीयं–उद्गमादिदोषपरिवर्जितम् । आव० ८३७ ।

कप्पणी–कल्पनी, प्रहरणविशेषः । आव० ४८७ । शस्त्रविशेषः । आव० ६५० ।

कप्पति–कल्पते–युज्यते । प्रश्न० १२४ ।

कप्पतिप्पे–पात्रक्षालनादौ । ग० ।

कप्पपालो–कल्पपालः । जं० प्र० १०० ।

कप्पय–कल्प एव कल्पकः–छंदः खण्डं कर्परमिति । उपा० २० ।

कप्पयति–कल्पयति–छिनत्ति । नि० चू० प्र० १६० अ ।

कप्पर–कर्परम् । आव० ६२०, ६२२, ३५२ । कवालं नि० चू० प्र० १०६ अ । कपालम् । बृ० तृ० ६८ आ । कर्प्परः । आव० १०३, ४१२ ।

कप्परुक्ख–उक्तव्यतिरिक्तसामान्यकल्पितफलदायित्वेन कल्पना कल्पस्तत्प्रधाना वृक्षाः कल्पवृक्षाः । ठाणा० ३६६ ।

कप्परुक्खग–चैत्यवृक्षः । ठाणा० १४५ ।

कप्पवडिंसियाओ–उपाङ्गानां पञ्चमवर्गे द्वितीयम् । निरय० ३ ।

कप्पविमाणोववत्तिआ–कल्पेषु–देवलोकेषु, न तु ज्योति-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरे, विमानानि, देवावासविशेषाः, अथवा कल्पाश्च सौधर्मादयो विमानानि च तदुपरिवर्तिग्रैवेयकादीनि कल्पविमानानि तेषु उपपत्तिः–उपपातो–जन्म यस्याः सकाशात् सा कल्पविमानोपपत्तिका । ठाणा० ६८ ।

कप्पा–कल्पा । कल्पनीया । प्रश्न० ५१ ।

कप्पागं–दण्डम् । आव० ७०० । कल्पाकं–सूत्रतोऽर्थतश्च प्राप्तं भिक्षुम् । व्य० द्वि० ५६ आ ।

कप्पातीत–जिनकल्पस्थविरकल्पाभ्यामन्यत्र । तीर्थकरः । भग० ८६४ ।

कप्पायं–कल्पः–उचितो य आयः–प्रजातो द्रव्यलाभः स कल्पायः । विपा० ५७ । कल्पाकः–शिरोजबन्धकल्पज्ञः । औप० ७७ ।

कप्पासट्ठिमिंजिया–कर्पासास्थिमिञ्जिका – त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

कप्पासिअ–त्रीन्द्रियजीवविशेषः । उत्त० ६६५ ।

कप्पासिए–कार्पासिकः । अनु० १४६ ।

कप्पासिया–कर्मार्यभेदविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

कप्पासो–पोंडा वमणी तस्स फलं पम्हा कच्चणिज्जा सणो वणस्सति जाती, तस्स वग्गो कप्पणिज्जो कप्पासो भण्णति । एला लाडाणं गड्डुरा भण्णंति तस्स रोमा कच्चणिज्जा कप्पासो भण्णति । नि० चू० प्र० १६१ आ ।

कप्पिअ–कल्प्यम् । आव० ११५ । कल्पितं स्वबुद्धिकल्पनाशिल्पनिर्मितम् । दश० ३४ । कल्पितः–यथास्थानं विन्यस्तः । जं० प्र० १८६ । कल्पिकं, एषणीयम् । दश० १६८ । कल्पिकः–सूत्रादिद्वादशविधः । बृ० प्र० ६२ आ ।

कप्पिआ–कल्पिका याः सौधर्म्मादिकल्पगतवक्तव्यतागोचरा ग्रन्थपद्धतयस्ताः कल्पिकाः । नंदी० २०७ ।

कप्पिआकप्पिअं–कल्पाकल्पप्रतिपदिकमध्ययनं कल्पाकल्पम् । नंदी० २०४ ।

कप्पिओ–कल्पितः । विपा० ३८ । कल्पितो–भेदवान् । कल्पिकः–उचितः । विपा० ४७ । कल्पितः–वस्त्रवत् खण्डितः । उत्त० ४६० । कल्पितः–कल्पनीभिर्वस्त्रवत्खण्डितः । उत्त० ४६० ।

कप्पिते–कल्पिकं–कल्पनीयमुचितमभिग्रहविशेषाद्भक्तादि । ठाणा० २६८ ।

कप्पियं–कल्पितं–इष्टं, रचितं वा । औप० ५६ ।

कप्पिया–कल्पिताः–व्यथस्थिताः । आचा० ३०५ ।

कप्पियारं–कल्पिकं । बृ० प्र० २०७ आ । कल्पितारं–मार्गदर्शकः । बृ० द्वि० १२१ आ ।

कप्पूरं–तंबोलपत्तसहिया खायइ । नि० चू० द्वि० ६० अ । कर्पूरः–घनसारः । प्रश्न० १६२ ।

कप्पूरपुड–गन्धद्रव्यः । ज्ञाता० २३२ ।

कप्पेऊणं–कल्पयित्वा प्रक्षाल्य । ओघ० २२२ ।

कप्पेति–कल्पयति–छिन्दति । आव० १२३ ।

कप्पमाणे–कल्पयन्–कुर्वाणः । ज्ञाता० २३८ ।

कप्पोवगा–कल्प्यन्ते–इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशादिदशप्रकारत्वेन देवा एतेष्विति कल्पाः– देवलोकास्तानुपगच्छन्ति उत्पत्तिविषयतया प्राप्नुवन्तीति कल्पोपगाः । उत्त० ७०२ ।

कप्पोववण्णे–कल्पेषु–सौधर्मादिषु,उपपन्नः । जीवा० ३४६ ।

कप्पोववन्नगा–सौधर्मादिदेवलोकोत्पन्नाः । ठाणा० ५७ ।

कप्पोववन्ने–कल्पेषु–सौधर्मादिषु उपपन्नः कल्पोपपन्नः । सूर्य० २८१ ।

कबंध–कबन्धं–शिरोरहितकडेवरम् । प्रश्न० ५० ।

कब्बड–क्षुल्लप्राकारवेष्टितं–कर्बटम् । प्रज्ञा० ४८ । आचा० २८५ । राज० ११४ । जीवा० ४०, २७६ । कुनगरम् । भग० ३६ । प्रश्न० ६६, ३६, ५२ । सूत्र० ३०६ । ठाणा० २६४ । अनु० १४२ । औप० ७४ । नि० चू० प्र० २२६ अ । कुनगरं, जत्थ जलथलसमुब्भवविचित्तभंडविणियोगो णत्थि । दश० चू० १५७ । कर्बटं–पांशुप्राकारनिबद्धं क्षुल्लकप्राकारवेष्टितम् । व्य० प्र० १६८ अ । दश० १६३ । कर्बटानि–क्षुल्लकप्राकारवेष्टितानि अभितः पर्वतावृतानि वा । जं० प्र० १२१ । कर्बटः–महाक्षुद्रसन्निवेशः । दश० २७५ ।

कब्बडए–अष्टाशीत्यां षोडशमहाग्रहः । ठाणा० ७८ ।

कब्बडमारी–मारीविशेषः । भग० १६७ ।

कब्बरूवं–नगरविशेषः । भग० १६३ ।

कब्बडाति–कुनगराणि । ठाणा० ८६ ।

कब्बडिया–अत्ताणा । नि० चू० द्वि० ११ अ ।

कब्बड्ड–बालकः । ग० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कब्बालभयते-कब्बाडमृतकः-क्षितिश्वानक ओडादिः, यस्य स्वं कर्म्मार्प्यते द्विहस्ता त्रिहस्ता वा त्वया भूमिः खनितव्यैतावत्ते धनं दास्यामीत्येवं नियम्येति । ठाणा० २०३ ।

कब्बुरए-कर्बुरकः- अष्टाशीत्यां महाग्रहे षोडशः । जं० प्र० ५३४ ।

कभल्लं-कपालं, घटादिकर्परम् । अनुत्त० ५ । कपालम् । उपा० २१ ।

कमं-अवतारं । नि० चू० द्वि० १०३ अ ।

कमंडलु-भाजनविशेषः । नि० चू० प्र० ३४७ आ ।

कम-भगवत्यां त्रयोदशशतेऽष्टमोद्देशकः कर्म्मप्रकृतिप्ररूपणार्थकः । भग० ५६६ । क्रम लङ्घय । प्रश्न० २० । क्रमः- यतिविहित आचारः । उत्त० ५०५ । क्रमपरं तु द्रव्यादिचतुर्द्धा । आचा० ४१५ । पाकस्य पेयादिपरिपाट्या प्रदानं क्रमः । आव० ८३७ । क्रमः । आचा० ४१५ ।

कमइ-कामति-घटते । पिण्ड० ७९ ।

कमजोग-क्रमयोगः परिपाटीव्यापारः । दश० १६३ ।

कमढं-खरंटो उ जो मलो तं कमढं भण्णति । नि० चू० प्र० १९० आ । कमढं-पात्रविशेषः । व्य० प्र० २१८ आ ।

कमढगं-कमढकं-पात्रविशेषः । व्य० द्वि० ३२४ आ । साधुजनप्रसिद्धं भाजनम् । नि० चू० प्र० ६१ अ । करोडगागारं । नि० चू० प्र० ७१ आ । उड्डाहपच्छायणं । नि० चू० द्वि० १११ आ । सबाह्याभ्यन्तरं शुक्लेपं कांस्य करोटकाकारं भाजनम् । बृ० द्वि० २९० अ । कमढकं- आर्यिकापात्रम् । ओघ० २०९ । पात्रम् । ओघ० ४४,८२ ।

कमढयं-अट्टगमयं कंसभायणसंठाणसंठियं । नि० चू० प्र० १७९ आ ।

कमणिया-क्रमणिका-उपानहः । तलिका । बृ० द्वि० १०१ अ ।

कमणी-पादप्रमाणं चर्म । बृ० द्वि० २२२ आ ।

कमणीउ-उपानहौ । नि० चू० प्र० १३७ अ ।

कमणीओ-उपानहौ । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

कमती-क्रमते-घटते । सम० १३९ ।

कमभिण्णं-क्रमभिन्नं, यत्र यथासङ्ख्यमनुदेशो न क्रियते । सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे त्रयोदशः । आव० ३७५ ।

कमभिन्न-क्रमभिन्नं-यत्र क्रमो नाराध्यते । सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे त्रयोदशः । अनु० २६२ । क्रमेण हि तिविहमित्येतत्र करोम्यादिना विवृत्य ततस्त्रिविधेनेति विवरणीयं भवतीति, अस्य च क्रमभिन्नस्यानुयोगोऽयं यथाक्रमविवरणे हि यथासङ्ख्यदोषः स्यादिति तत्परिहारार्थं क्रमभेदः । ठाणा० ४९५ ।

कमल-नागपुरनगरे गृहपतिविशेषः । ज्ञाता० २५२ । हरिणविशेषः । भग० १२७ । राज० १४४ । औप० २६ । रविबोध्यम् । जं० प्र० ११५ । सूर्यबोध्यम् । ज्ञाता० १६८ । कमलाराजधान्यां कमलावतंसकभवने सिंहासनविशेषः । ज्ञाता० २५२ । प्रश्न० ८४ ।

कमलदलो-शूलिहतश्चौरो नमस्काराद्यक्षः । भक्त० ।

कमलप्पभा-कालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । भग० ५०४ । धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

कमलसिरी-महाबलस्य राज्ञी । ज्ञाता० १२१ । कमलगृहपतेर्भार्या । ज्ञाता० २५२ ।

कमलवडेंसए-कमलाराजधान्यां भवनम् । ज्ञाता० २५२ ।

कमला-कालस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ । ठाणा० २०४ । धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । कमलकमलश्रियोः दारिका । ज्ञाता० २५२ ।

कमलामेलं-कमलामेलं, कमलापीडं वा । जं० प्र० २३४ ।

कमलामेला-द्वारिकायामन्यस्य राज्ञः दुहिता । आव० ९४ । द्वारिकायां दारिका । बृ० प्र० ३० अ । द्वारवत्यां नगर्यामन्यस्य राज्ञो दुहिता । विशे० ६१० ।

कमलावई-कमलावती, इषुकारनृपतिमहादेवी । उत्त० ३९५ ।

कमसो-क्रमतः । उत्त० ७ ।

कमा-धरणस्य प्रथमाग्रमहिषी । ज्ञाता० २५१ ।

कमिज्जणा-मुंडनादि । नि० चू० तृ० १३७ आ ।

कमेति-क्रमते-उत्सहते । बृ० प्र० १६४ आ ।

कम्बा-लता । प्रश्न० १६४ ।

कम्मंता-कार्याणि । कर्मकराः । उत्त० २६३ ।

कम्मंसि-सत्कर्माणि । उत्त० ५९७, १८८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मंसे–कर्मांशान्मूलप्रकृतीः । औप० ११३ ।

कम्म–अनुदयावस्थकर्मपुद्गलसमुदायरूपं कर्म । भग० ८२। मदनोद्दीपको व्यापारः । भग० १३४। गमनादि । भग० ३११ । ज्ञानावरणादि, क्रिया वा । दश० ७० । वानलक्षणं । भग० ४७७ । क्रियत इति कर्म–क्रिया । उत्त० २४६ । रक्षार्थं वसत्यादेः परिवेष्टनम् । उत्त० ७१०। क्रियते इति कर्म । आव० ३५ । अनाचार्यकं सर्वकालिकं वा । आव० ३५ । नंदी०१४४ । मनोवाक्कायक्रियालक्षणः । उत्त० १८ । कर्म्मणाम्–सुखदुःखप्राप्तिपरिहारक्रियाणां कायिकाधिकरणिकाप्रादोषिकापारितापनिकाप्राणातिपातरूपाणां कृषिवाणिज्यादिरूपाणां वा । आचा० १२६। अनुष्ठानम् – ज्ञानावरणादि । उत्त० ३८४ । ज्ञानावरणादि । ज्ञाता० २०५ । जीवनोपायः । जं० प्र० १३६ । कृषिवाणिज्यादि । जं० प्र० २५८ । यत्पुनर्विवाहप्रकरणादावुद्धरितं मोदकचूर्ण्यादि तद् भूयोऽपि भिक्षाचराणां दानाय गुडपाकदानादिना मोदकादि कृतं तत्कर्म्म । पिण्ड० ७७ । कृषिवाणिज्यादि । आव० १२६ । उत्क्षेपणापक्षेपणादि । भग० ५७ । भ्रमणादिक्रिया । ठाणा० २३ । अनाचार्यकं कादाचित्कं वा । भग० ५७३ । ठाणा० २८३ । कृष्याद्यानाचार्यकम् । ठाणा० ३०४ । उद्देशकस्य–विभागस्य द्वितीयप्रकारः । बृ० प्र० ८३ । कार्मणकरणं । बृ० तृ० १२३ अ । अष्टमपूर्वः । ठाणा० १६६ । अक्षरलेखनादिक्रिया। प्रश्न० ११८ । अन्तर्यत्र सुधादिपरिकर्म्यते । प्रश्न० १२७ । लौकिको व्यवहारः । सूर्य० १६६ । उत्क्षेपणावक्षेपणादि । सूर्य० २८६ । वन्दनादिलक्षणम् । सूर्य० २६६ । प्रज्ञापनायास्त्रयोविंशतितमं पदम् । प्रज्ञा० ६ । कारकवाचकः कर्तुरीप्सिततमं, ज्ञानावरणीयादि वा, क्रिया वा । आव० ५११ । ज्ञानावरणीयादि । आव० ७८२ । आरेचनभ्रमणादि । प्रज्ञा० ४६३ । हस्तकर्म, सावद्यानुष्ठानं वा । सूत्र० १८० । पृथिव्याद्यारम्भक्रिया । प्रश्न० १२७ । कृष्यादिव्यापारः । प्रश्न० ११७ । कृष्यादिकर्म । उत्त० २०६ । अनुष्ठानम् । आव० ४७८ । अनुष्ठानं–ज्ञानप्रशंसादि । उत्त० १२७ । कुत्सितानुष्ठानम् । उत्त० २०८ । अनाचार्यकं कादाचित्कं वा । आव० ४६५ । कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा । जीवा० ४६ । अनुष्ठानं, सम्यगुपयोगरूपं, मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगरूपं वा । सूत्र० ७१ । क्रिया, दशविधचक्रवाल सामाचारीप्रभृतिरितिकर्त्तव्यता । उत्त० ६६ । यदानाचार्योपदेशजं सातिशयमनन्यसाधारणं गृह्यते भारवहनकृषिवाणिज्यादि । आव० ४०८ । कार्मणकरणं । बृ० तृ० १२३ अ । कृष्यादि । पिण्ड० १२६ । अनावर्जकम्, अप्रीत्युत्पादकम् । पिण्ड० १२६ । कृषिवाणिज्यादि, मोक्षानुष्ठानं वा । प्रज्ञा० ५० । उत्क्षेपणावक्षेपणादि गमनादि वा । जं० प्र० १३० । अनाचार्योपदेशजं कर्म । जं० प्र० १३६ ।

कम्मआसीविसा–कर्म्मणा– क्रियया शापादिनोपघातकरणेनाशीविषाः–कर्माशीविषाः । भग० ३४१ ।

कम्मए–कर्मणो जातं कर्मजम् । प्रज्ञा० २६८ । जीवा० १४ । अष्टविधकर्मसमुदायनिष्पन्नमौदारिकादिशरीरनिबन्धनं च भवान्तरानुयायिकर्मणो विकारः कर्मैव वा कार्मणम् । अनु० १६६ ।

कम्मओ–कर्मतः–क्रियां जीवनवृत्तिम्–बाह्याभ्यन्तरभोजनीयवस्तुप्राप्तिनिमित्तभूतामाश्रित्येत्यर्थः । उपा० ६ ।

कम्मकडा–नामकर्मनिर्वर्त्तिता, अथवा कर्म–मदनोद्दीपको व्यापारस्तत्कृतं यस्यां सा कर्मकृता । भग० १३४ ।

कम्मकर–किंकरादन्यथाविधाः कर्मकराः । जं० प्र० २६३। कर्म्मकरः । उत्त० २२५ । कर्मकरः । आव० १६४। नियतकालमादेशकारी । प्रश्न० ३८ । नायकाश्रितः कश्चिद्भोगपरः । सूत्र० ३३१ ।

कम्मकारो–कर्मकारः लोहारादिः । जीवा० २८ । लोहकारो । नि० चू० प्र० २१४ आ ।

कम्मगंथि–कर्मग्रन्थिः–अतिदुर्भेदघातिकर्मरूपः । उत्त० ५६४ ।

कम्मगंठिय–कार्मग्रन्थिकः । प्रज्ञा० ३१६, ४२४ ।

कम्मगुरू–कर्मगुरुः–कर्मणा गुरुरिव गुरुः अधोनरकगामितया। उत्त० २७५ ।

कम्मगहणं–कर्मग्रहणं, आधाकर्मिकग्रहणम् । पिण्ड० ८६ ।

कम्मचिट्ठे–कर्मचेष्टा–क्रियन्त इति कर्माणि–अग्नौ समित्प्रक्षेपणादीनि तद्विषया चेष्टा । उत्त० ३६७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मणकारिया–कार्मणकारिणी । आव० ५६१ ।

कम्मणजोए–कुष्ठादिरोगहेतुः । ज्ञाता० १८८ ।

कम्मणा–कार्मणं । तथाविधद्रव्यसंयोगः । ठाणा ३१४ ।

कम्मदव्व–कर्मद्रव्यं–कर्मद्रव्यपरिच्छेदकोऽवधिः । आव० ३६ । कर्मशरीरद्रव्यं । प्रज्ञा० ३०४ ।

कम्मधम्मसंजोगो–कर्मधर्मसंयोगः । आव० ३८८ ।

कम्मनरवइ–कर्मनरपतिः । ज्ञाता० २३४ ।

कम्मपगडी–कर्मप्रकृतिः-प्रज्ञापनायां त्रयोविंशतितमं पदम् । भग० ६३ ।

कम्मपट्ठवणसयं–कर्मप्रस्थापनाद्यर्थप्रतिपादनपरं शतं कर्मप्रस्थापनशतम् । भग० ६४२ ।

कम्मपयडी–उत्तराध्ययने त्रयस्त्रिंशत्तममध्ययनम् । सम० ६४ ।

कम्मपुरिसा–कर्माणि–महारम्भादिसम्पाद्यानि नरकायुष्कादीनीति पुरुषाः कर्मपुरुषाः । ठाणा० ११३ ।

कम्मप्पवादो–कर्मप्रवादः–पूर्वविशेषः । उत्त० १७४ ।

कम्मप्पवाय–कर्मप्रवादः–ज्ञानावरणीयादिकर्मणो निदानादिप्रवदनमिति । दश० १३ । ज्ञानावरणादि कर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति । सम० २६ । कर्म्म–ज्ञानावरणीयादिकमष्टप्रकारं तत्प्रकर्षेण–प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभिर्भेदैः सप्रपञ्चं वदतीति कर्म्मप्रवादम् । नंदी० २४१ ।

कम्मप्पवायपुव्वं–कर्मप्रवादपूर्वं–अष्टमपूर्वनाम । आव० ३२१ ।

कम्मभूमगपलिभागी – कर्मभूमगाः– कर्मभूमिजातास्तेषां प्रतिभागः–सादृश्यं तदस्यास्तीति–कर्मभूमगप्रतिभागी, कर्मभूमगसदृश इत्यर्थः । प्रज्ञा० ४६१ ।

कम्मभूमगा–कर्म–कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा कर्मप्रधाना भूमिर्येषां ते कर्मभूमाः, कर्मभूमा एव कर्मभूमकाः । प्रज्ञा० ५० । जीवा० ४६ ।

कम्मभूमा–कर्मभूमाः । उत्त० ७०० । कर्म–कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा कर्मप्रधाना भूमिर्येषां ते कर्मभूमाः । प्रज्ञा० ५० ।

कम्मभूमि–कर्म्मभूमिः–कृष्यादिकर्म्मप्रधाना भूमिः कर्म्मभूमिः–भरतादिका पञ्चदशधा । ठाणा० ११५ । कृषिवाणिज्यतपःसंयमानुष्ठानादिकर्मप्रधाना भूमयः कर्मभूमयो–भरतपञ्चकैरावतपञ्चकमहाविदेहपञ्चकलक्षणाः । नंदी० १०२ ।

कम्मभूमी–कर्मभूमिः–कृष्यादिकर्म्मस्थानभूता भरतादिका । प्रश्न० ९६ ।

कम्मभूमो–कर्मभूमः–कर्मप्रधाना भूमिर्यस्य सः । जीवा० ४६ ।

कम्ममासओ–त्रयो निष्पावा निष्पन्नः–कर्ममाषकः । अनु० १५५ ।

कम्ममाहूय–कर्म्माहूय–कर्मोपादाय । आचा० १५८ ।

कम्मयं–कर्मकम्–अनुष्ठाम् । उत्त० २९० । कार्मणं–यदुदयात्कार्मणशरीरप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय कार्मणशरीररूपतया परिणमयति परिणमय्य च जीवप्रदेशैः सह परम्परानुगमरूपतया सम्बन्धयति तत्कार्मणशरीरनाम । प्रज्ञा० ४६९ ।

कम्मयणो–कम्मबहुलो । नि० चू० प्र० २७६–अ ।

कम्मयर–कर्मकरः छगणपुञ्जाद्यपनेता । जं० प्र० १२२ ।

कम्मया–कृषिवाणिज्यादिकर्मभ्यः सप्रभावा । राज० ११६ ।

कम्मरय–अष्टप्रकारं कर्मरजः–तत्र जीवगुण्डनपरत्वात्कर्मैव रजः कर्मरजः । दश० १७ ।

कम्मलेसा–कर्मलेश्या–कर्मस्थितिविधातृ तत्तद्विशिष्टपुद्गलरूपा । उत्त० ६५२ ।

कम्मलेस्सं–कर्म्मणो योग्या लेश्या–कृष्णादिका कर्म्मणो वा लेश्या–'लिश श्लेषणे' इतिवचनात् सम्बन्धः कर्म्मलेश्या । भग० ६५५ ।

कम्मलेस्सा–कर्म्मणः सकाशाद्या लेश्या–जीवपरिणतिः सा कर्म्मलेश्या–भावलेश्येत्यर्थः । भग० ६३१ ।

कम्मविउसग्गो–ज्ञानावरणादिकर्म्मबन्धहेतूनां ज्ञानप्रत्यनीकत्वादीनां त्यागः । भग० ९२७ ।

कम्मविगईए–कर्मणामशुभानां विगत्या–विगमेन स्थितिमाश्रित्य । भग० ४५६ ।

कम्मविवेगो–कर्मविवेकः–कर्मनिर्जरा । आव० ८५२ ।

कम्मविसुद्धीए–प्रदेशापेक्षया । भग० ४५६ ।

कम्मविसोहीए–रसमाश्रित्य । भग० ४५६ ।

कम्मवेदए–कर्मवेदकः–प्रज्ञापनायाः पञ्चविंशतितमं पदम् ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञा० ६।

कम्मसंपया–कर्मसम्पत्, कर्म-क्रिया तस्याः सम्पत्-सम्पन्नता, कर्मणां वा ज्ञानावरणादीनां सम्पत्-उदयोदीरणादिरूपा विभूतिः। उत्त० ६६।

कम्मसंवच्छरे–कर्मसंवत्सरः, कर्म-लौकिको व्यवहारस्तत्प्रधानः संवत्सरः। सूर्य० १६६। जं० प्र० ४८७।

कम्मसच्चा–कर्मणा-मनोवाक्कायक्रियालक्षणेन सत्या-अविसंवादिनः कर्मसत्याः। उत्त० २८१।

कम्मसमज्जणसयं–कर्मसमर्जनलक्षणार्थप्रतिपादकं शतं कर्म्मसमर्जनशतम्। भग० ६४०।

कम्मसमारंभा–कर्मसमारंभाः क्रियाविशेषाः। आचा० २३। क्रियाविशेषाः, कर्मणो वा ज्ञानावरणीयाद्यष्टप्रकारस्य समारम्भा-उपादानहेतवः क्रियाविशेषाः। आचा० २७। कर्मसमारम्भाः पाकादयः क्रियन्ते। आचा० १३०। जीवानुद्दिश्य य उपमर्दरूपः क्रियासमारम्भः। आचा० २६६।

कम्मसरीरगं–कर्म्मशरीरकम्-औदारिकादिशरीरम्। आचा० १४३।

कम्मसाला–घटादिनिष्पादनस्थानम्-कुम्भकारकुटी। बृ० द्वि० १७५ अ। जत्थ कम्म कारेति। नि० चू० तृ० २१ आ।

कम्मस्सबंधए–कर्मणो बन्धकः-यथाजीवः कर्मणो बन्धको भवति तथा प्रतिपादकं-प्रज्ञापनायाश्चतुर्विंशतितमं पदम्। प्रज्ञा० ६।

कम्महेउयं–सिक्खापुव्वगं। दश० चू० ११३।

कम्मा–क्रिया। आचा० २५।

कम्माजोए–काम्ययोगः-कमनीयताहेतुः। ज्ञाता० १८८।

कम्माणुप्पेही–कर्म-क्रिया तदनुप्रेक्षत इत्येवंशीलः कर्मानुप्रेक्षी। उत्त० २४६।

कम्माणुभाव–बाह्यतीर्थकरजन्मदीक्षाज्ञानापवर्गकल्याणसम्भूतिलक्षणबाह्यनिमित्तमधिकृत्य तथाविधस्य च सातवेदनीयस्य कर्म्मणोऽनुभावः-विपाकोदयः कर्म्मानुभावः। जीवा० १३०।

कम्मादाणं–कर्म्म-ज्ञानावरणादि आदीयते-स्वीक्रियतेऽनेन जन्तुभिरिति कर्मादानं-कर्मोपादानहेतुः। उत्त० ३४३।

कम्मादाणाइं–कर्म्माणि-ज्ञानावरणादीन्यादीयन्ते यैस्तानि कर्मादानानि, अथवा कर्माणि च तान्यादानानि च कर्मादानानि कर्महेतवः। भग० ३७२।

कम्मारगाम–कर्मारग्रामः। आव० १८८।

कम्मारदारए–कर्मारदारकः-लोहकारदारकः। जीवा० १२१।

कम्मारभिक्खू–कर्म्मकारभिक्षुकः—देवद्रोणीवाहकभिक्षुविशेषः। बृ० द्वि० २० अ, २८१ आ।

कम्मारिया–कर्मार्याः। प्रज्ञा० ५६।

कम्मारो–कर्म्मारः-लोहकारः। बृ० द्वि० १०७ अ।

कम्मावादी–कर्मवादी-कर्म ज्ञानावरणीयादि तद् वदितुं शीलमस्येति कर्मवादी। आचा० २२।

कम्मिणो–कर्म्मिणः-संक्लिष्टलेश्यास्थानवर्तिन आर्त्तध्यायिनो रौद्रध्यायिनश्चेत्यर्थः। व्य० द्वि० १८७ अ।

कम्मिया–कार्मिका-कर्म्मणां विकारः कार्मिका तया-अक्षीणेन कर्मशेषेण देवत्वावाप्तिरित्यर्थः। भग० १३८। कर्मिता-कर्म विद्यते यस्यासौ कर्मी तद्भावः कर्मिता। भग० १३८।

कम्मुणा–कर्मणा-मनोवाक्कायक्रिया। दश० १६०। सम्पूर्णमेव कर्मणा। दश० १६२। कायेन। दश० २२६। क्रियया। दश० २३३।

कयं–कृतम्-निर्वर्त्तितम्, अभ्यस्तम्। आव० ५६३। कार्यं, प्रयोजनम्। प्रश्न० ३५।

कयंगलं–कृताङ्गला, नगरीविशेषः। आव० २०४।

कयंगला–स्कन्दकचरित्रे नगरी। भग० ११२, १२३।

कयंत–कृतान्तं-दैवम्। प्रश्न० ६४। कृतघ्नः यमो वा। बृ० प्र० ३०१ आ।

कयंबे–कदम्बः-वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

कय–कृतः-दत्तः। ओघ० २१२। अनुज्ञातः। बृ० प्र० ५। कृतशब्दोऽत्रानुभूतवचनः। दश० १३६।

कयउस्सग्गो–कृतोत्सर्गः-कृतावश्यकः। ओघ० २१। कृतोपयोगः। ओघ० १४०।

कयकण्णचूलतो–कृतकर्णचूलकः। उत्त० २७२।

कयकरण–धणुवेदादिएसु सत्थेसु जेण सिक्खाकरणं कयं गिहिभावट्ठितेण सो साहू कयकरणो भण्णति। नि० चू० द्वि० १३ आ। ये षष्ठाष्टमादितपोभावितास्ते कृतकरणाः।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्य० प्र० १२५ अ । जेण चउत्थछट्ठमादीया कया । नि० चू० तृ० १४३ अ । धनुर्वेदे कृताभ्यासः । बृ० द्वि० ३८ आ । कृतकरणं–कृतकपुत्रककरणम् । आचा० ३२ । इषु शास्त्रे कृताभ्यासः । बृ० प्र० ३११ आ । कृतकरणः–बहुशो विहितचौरानुष्ठानः । प्रश्न० ४६ । धनुर्वेदादौ कृतपरिश्रमः । बृ० द्वि० ८५ अ ।

कयकिज्ञोववखरं–नगरे समानीय अस्थाने भाण्डक्षेपी भाटिकः । बृ० तृ० ११ आ ।

कयकुरुकय–कृतकुरुकुचः–कृतकुलः । व्य० द्वि० १६१ आ ।

कयगं–कृतकम् । आव० १७३ ।

कयग्गह–कचग्रहः-मैथुनसंरम्भे मुखचुम्बनाद्यर्थं युवत्याः पश्चाङ्गुलिभिः केशेषु ग्रहणम् । जं० प्र० १६३ ।

कयग्गाह–मैथुनसंरम्भे यत् युवतेः केशेषु ग्रहणं स कचग्रहः । राज० २३ ।

कयग्गाहगहियं–कचग्राहगृहीतं–मैथुनप्रथमसंरम्भे मुखचुम्बनाद्यर्थं युवत्याः पश्चाङ्गुलिभिः केशेषु ग्रहणं तेन कचग्राहेण गृहीतम् । जीवा० २५५ ।

कयजोग्गो–कृतयोगः– कर्कशतपोभिरनेकधाभावितात्मा । व्य० प्र० ११३ अ ।

कयणं–कतमा । पउ० ७१ ।

कयत्तंतिया–कर्त्तनी । बृ० प्र० २८ अ ।

कयत्था–कृतार्थाः–कृतप्रयोजनाः । ज्ञाता० २४ ।

कयत्थिउ–कदर्थितुम् । दश० ४१ ।

कयत्थे–कृतार्थः । उत्त० ३१९ । कृतस्वप्रयोजनः । भग० ६६२ ।

कयपंजली–कृतप्राञ्जलिः–पृच्छादिषु कृताः प्राञ्जलयो यैस्ते । आव० १०० ।

कयपंसु–कजप्रसवः–पद्मकुसुमः । ज्ञाता० ६६ ।

कयपज्जत्तिय–कृतपर्याप्तिकः–कृतकार्यः । उत्त० २१० ।

कयपडिकिई–उपकृतस्य प्रतीकारः । बृ० प्र० २६६ आ । कृतप्रतिकृतिर्नाम–प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादि दास्यन्ति न नाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदानम् । सम० ६५ ।

कयपडिकिरिया–कृतप्रतिक्रिया-अध्यापितोऽहमनेनेतिबुद्ध्या भक्तादिदानमिति । ओप० ४३ ।

कयपडिक्किई–कृतप्रतिकृतिः–प्रसन्ना आचार्याः सूत्रमर्थं तदुभयं वा दास्यन्ति न नाम निर्ज्जरेति अहारादिना यतितव्यम् । दश० ३१ ।

कयपुन्न–जन्मान्तरोपात्तसुकृतः । ज्ञाता० २५ । कृतपुण्यः । भग० ६६२ ।

कयबलिकम्मा–स्वगृहे देवतानां कृतबलिकर्मा । निरय० ७ । कृतबलिकर्मा । दश० ६८ ।

कयमालए–कृतमालकस्तमिश्राधिपतिः । जं० प्र० ७४ ।

कयमालक–तमिश्रागुहाधिपसुरः । जं० प्र० २५५ ।

कयमालगो–कृतमालकः–कोणिकघातको देवः । आव० ६८७ ।

कयमालयं–कृतमाल्यं तमिश्रागुहाया देवः । आव० १५० ।

कयमाला–कृतमाला–द्रुमजातिविशेषः । जं० प्र० ६८ ।

कयरूवो–रूवगाभरणादि, कयरूपो । नि० चू० द्वि० ८७ अ ।

कयरे–कतराणि । अनु० ६७ ।

कयरेहिंतो–कान्याश्रित्य । अनु० ६७ ।

कयलक्खण–कृतफलवल्लक्षणः । भग० ६६२ । कृतलक्षणाः-कृतफलवच्छरीरलक्षणाः । ज्ञाता० २५ । कृतलक्षणः । उत्त० ३२९ ।

कयलगं–चिब्भिडं, जरठ, तपुसादि वा । नि० चू० द्वि० १५७ अ ।

कयलिसमागमो–कदलीसमागमः । आव० २०७ ।

कयली–कदली–वनस्पतिविशेषः । ज्ञाता० ६५ ।

कयल्लयं–कृतम् । ओघ० ४६ ।

कयवणमालपिया–कृतवनमालपिता-हस्तिशीर्षनगरस्य पुष्पकरण्डकोद्याने यक्षः । विपा० ८९ ।

कयवम्मा–कृतवर्मा–विमलजिनपिता । आव० १६१ । सम० १५१ ।

कयवर–कचवरः । उत्त० ५६२ । पत्रतृणधूलिसमुदायः । आचा० ५५ ।

कयवरुज्झिय–कचवरोज्झिका– अवकरशोधिका । ज्ञाता० ११९ ।

कयवरो–बहु भुसिरदव्वसंकरो कयवरो । नि० चू० प्र० २५६ अ ।

कयविक्कय–क्रयविक्रयौ । भग० १९९ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कयविहव–कृतविभवाः–कृतसफलसंपदः । ज्ञाता० २५ ।
कयवेयद्दिए–कृतवितर्दिकं–रचितवेदिकम् । औप० ५ । कृतवितर्दिकम्–रचितवेदिकम् । निरय०१-१६ ।
कयव्वय–कृतव्रता–उपस्थापिता इत्यर्थः । व्य० द्वि० १०० अ ।
कयव्वयकंमे–कृतं–अनुष्ठितं व्रतानां–अनुव्रतादीनां कर्म–तच्छ्रवणज्ञानवाञ्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येन प्रतिपन्नदर्शनेन स कृतव्रतकर्मा प्रतिपन्नाणुव्रतादिरितिभावः । सम० १६ ।
कयव्ववसाओ–कृतव्यवसायः । आव० २६० ।
कया–कृता–परिनिष्ठिता । ओघ० १६६ ।
कयाइ–कदाचिदित्ति–वितर्कार्थः । भग० ६८३ ।
कयाणुराग–कृतानुरागः–विहिताभिष्वङ्गः । उत्त० ३८६ ।
कयारं–कचवरम् । विशे० ५२४ ।
करं–करः–गवादीन् प्रति प्रतिवर्षं राजदेयं द्रव्यम् । जं० प्र० १६४ । भग० ५४४ ।
करंकयं–नालिकेरवर्तुलम् । पउ० १ ।
करंज–करञ्जः, वृक्षविशेषः । भग० ८०३ । नक्तमालः । प्रज्ञा० ३१ ।
करंड–भाजनविशेषः । प्रश्न० ६३ ।
करंडक–वंशग्रथितः । ओघ० २११ । वेणुकार्यविशेषः । सूत्र ११७ । बहुपृथुलमल्पोच्छ्रयं मुखम् । बृ०द्वि० २४६ अ ।
करंडगा–करंडकः–वस्त्राभरणादिस्थानम् । ठाणा० २७२ ।
करंडय–करण्डकं–पृष्ठवंशास्थिकम् । जीवा० २७१ ।
करंडादी–उलंबगं–समचउरंसं । नि० चू० तृ० ५४ आ ।
करंडुअ–करण्डकं पृष्ठवंशास्थिकम् । जं० प्र० १११ ।
कर–करणं नाम नागरकादिप्रारम्भयन्त्रम् । संप्राप्तकामस्य–एकादशो भेदः । दश० १६४ । अष्टाशीत्यां त्र्यशीतितमो महाग्रहः । जं० प्र० ५३५ । करः–क्षेत्राद्याश्रितराजदेयद्रव्यम् । विपा० ३६ ।
करइल्ल–करकवान् । उत्त० ६७ ।
करए–करको–बादराप्कायविशेषः । प्रज्ञा० २८ । करकाः–वार्घटिकाः । उपा० ४० ।
करओ–जलगालनं–धर्म्मकरकः । बृ० द्वि० १०० आ ।
करकंडु–प्रत्येकबुद्धनाम । प्रज्ञा० १६ । द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे कलिङ्गेषु करकण्डुः–दधिवाहनराजपुत्रः । आव० ७१६, ७१७ । सम० १२४ । काञ्चनपुरनृपतिः । उत्त० ३०१ । पउमावईए रायपुत्तो । नि० चू० प्र० १६४ आ । करकण्डुः–कलिङ्गेषु दधिवाहनराजसुतो यो जीर्णं वृषभं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः । उत्त० २६६ । आगन्तुके दृष्टान्तः । नि० चू० प्र० २६६ आ ।
करकंडे–करकण्डः माहणपरिव्राजके द्वितीयनाम । औप० ९१ ।
करकंडुमा– नि० द्वि० ४६ अ ।
करक–हिमम् । आचा० ४० । भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ । प्रलियशकलः । पिण्ड० १०७ । करकः, पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ । अनु० १५२ ।
करकचियं–क्रकचितम्, करपत्रविदारितं काष्ठादि । अनु० १५४ ।
करकपाल–चतुर्थं महाकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ ।
करकय–क्रकचम् । आव० ४२० । करपत्रम् । उत्त० ४५६ । प्रश्न० २१ । जीवा० १२० । क्रकचः । प्रज्ञा० ३६७ । क्रकचं–येन दारु छिद्यते तत् । ठाणा० २७३ ।
करकरसद्द–व्यक्तव्यक्तशब्दम् । आव० २६२ ।
करकरिए–अष्टाशीत्यां पञ्चाशीतितमो महाग्रहः । ठाणा० ७६ ।
करग–करकः । जं० प्र० १०१ । घंटी । नि० चू० द्वि० ६४ आ । करकः कठिनोदकरूपः । दश० १५३ ।
करगओ–करपत्रम् । आव० ८०१ ।
करगगीवा–वार्घटिका ग्रीवा । अनुत्त० ५ ।
करगतं–क्रकचम् । आव० ६५१ ।
करगय–क्रकचम्, करपत्रम् । उत्त० ६५४ ।
करगा–उदगपासाणा वासे पडंति ते करगा । नि० चू० प्र० ४५ अ ।
करगे–करकः घनोपलः । जीवा० २५ ।
करगो–पाणियभंडयं । नि० चू० प्र० ११७ आ । करकः–जलाधारो मदिराभाजनं वा । सूत्र० ११८ ।
करघातो–करस्य पीडा । बृ० प्र० ७४ आ ।
करचोल्लए–करभोजनम् । आव० ३४१ ।
करजर–तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
करट–शरीरेण विमध्यमः । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।
करटी–वाद्यविशेषः । जीवा० २६६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करडि-करटी । जं० प्र० १०१ ।

करडुय-करडुकं-मृतकभक्तम् । व्य० द्वि० ३४२ अ ।

करडुयभत्त-घृतपूर्णः । नि० चू० द्वि० १०० आ । करडुकभक्तम्-मृतकभोजनं मासिकादि । पिण्ड० १३४ ।

करडो-कुरुटः-कुणालानगर्यां दोषार्त्ते उपाध्यायविशेषः । आव० ४६५ ।

करणं-करणं अनादिकालात् संहत्यावस्थानम् । विशे० १२६१ । अपूर्वप्रादुर्भावः । अन्योन्यसमाधानम् । आव० ४५७ । पिण्डविशुद्धयादिः । ज्ञाता० ७ । उत्त० ५८० । गुरुविषयं शिष्यविषयं च । आव० ४७१ । गुरुशिष्ययोः सामायिकक्रियाव्यापारणम् । आव० ४७१ । यत् प्रयोजन आपन्ने क्रियत इति करणम् । ओघ० ७ । कालविशेषरूपं चतुर्यामप्रमाणम् । उत्त० २०२ । जीवपरिणामः । विशे० ५३४ । करणं न्यायालयम् । नि० चू० प्र० ११२ अ । प्रतिलेखनादि । भग० ७२७ । करणम् । दश० ६१ । प्रयोगः । ज्ञाता० ४१ । इन्द्रियम् । कृतकारितानुमतिरूपम् । भग० ८६ । चारित्रम् । बृ० प्र० ११८ अ । अपूर्वकरणम् । उत्त० ५७९ । अवनामादिरावश्यकः । बृ० तृ० १३ अ । गात्रम् । आचा० ८६ । मनः । विशे० ११९५ । कृतिः स्वभावत एव निर्वृतिर्गृह्यते, न पुनः क्रियत इति । विशे० १२६१ । करणः-न्यायालयः । आव० ५२०, ७१७, ८२१, ८२२ । उत्त० ३०१ । नंदी० १६३ । परिणामविशेषः । बृ० प्र० १७ अ । आरंभः । बृ० प्र० १५८ अ । क्रिया । नंदी० १९० । आव० ८२१ । उत्त० १४९ । खण्डनम् । बृ० प्र० १७१ आ । उत्त० २०४ । वैयावृत्यम् । ओघ० ४५ । स्थापनम् । बृ० प्र० २३८ अ । बवादिगणितः । ओघ० ११५ । क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि । आचा० ४१९ । पादकर्म । बृ० द्वि० २१८ आ । क्रियतेऽनेनेति करणं क्रियायाः साधकतमं कृतिर्वा करणं-क्रियामात्रम् । भग० ७७३ । कर्म्म उत्प्लवनलक्षणं यत्करणं-क्रियाविशेषः । भग० ६२८ । अवश्यं विपाकदायित्वेन निष्पादनं निधत्तादिस्वरूपमिति । भग० ६३८ । इन्द्रियं कृत्यं वा । प्रश्न० ४१ । न्यायालयः । बृ० तृ० ३३ अ । साधनम् । औप० ४६ । अपवादः, विशेषवचनं च । जं० प्र० ५४१ । अभिधानम् । जं० प्र० १३४ । विवक्षितक्रियासाधकतमं करणम् । अनु० १३४ । पिण्डविशुद्धयादि । अनु० । मृत्पिण्डादि । आव० २७८ । परिभोगो जो विवरीयभोगं करेति । नि० चू० द्वि० १२६ आ । पिण्डविशुद्धिसमित्याद्यनेकविधम् । सम० १०६ । क्रियते येन तत्करणं मननादिक्रियासु प्रवर्तमानस्यात्मन उपकरणभूतस्तथा तथापरिणामवत्पुद्गलसङ्घात इति भावः । ठाणा० १०७ । उल्लगकरणं । नि० चू० प्र० ४२ आ । करणम् । आव० ४२६ । अङ्गभङ्गविशेषो मल्लशास्त्रप्रसिद्धः । औप० ६५ । करणं-विविष्टिदिवसो दुर्दिनग्रहणोत्पातदिनादिभ्यो भिन्नदिवसः । जं० प्र० २७३ । उपधिः । ओघ० २०७ । प्रयोगकरणं विश्रसाकरणं वा । भग० ६३९ । इषु शास्त्रे संयमे वा कृतकरणः । बृ० द्वि० ३५ आ । आधाकर्म । बृ० तृ० १२५ आ । शक्तिः । आचा० ३० । पिण्डविशुद्धयादि । उत्त० ५८० । भग० १२२, १३६ । कुर्वंत इत्यर्थः । भग० १०४ । जीववीर्यम् । भग० २५२ । कृतिः । आव० ४५७ ।

करणगुण-कलाकौशल्यम् । आचा० १२ ।

करणगुणसेढि-करणगुणेन-अपूर्वकरणादिमाहात्म्येन श्रेणिः करणगुणश्रेणिः प्रक्रमात्क्षपकश्रेणिरेव गृह्यते । उत्त० ५८० । करणेन-अपूर्वकरणेन गुणहेतुका श्रेणिः करणगुणश्रेणिः-सर्वोपरितनस्थितेर्मोहनीयादिकर्मदलिकान्युपादायोदयसमयात्प्रभृतिद्वितीयादिसमयेष्वसङ्ख्यातगुणपुद्गलप्रक्षेपरूपाऽऽन्तर्मौहूर्तिकी । उत्त० ५७९ ।

करणजड्डो- । नि० चू० द्वि० ३६ आ ।

करणतंतोवदरिसणत्थं-करणतंत्रोपदर्शनार्थं, मनोवाक्कायलक्षणकरणायत्ततोपदर्शनार्थम् । विशे० १३२८ ।

करणपती-न्यायाधीशः । नि० चू० तृ० १०१ अ ।

करणपर्याप्त- । प्रज्ञा० २६ ।

करणया-करणानां-संयमव्यापाराणां भावः-करणता । ज्ञाता० ५२ ।

करणविहीणो-क्रियाहीनः । मर० ।

करणवीरिए-लब्धिवीर्यकार्यभूतो क्रियाकरणं तद्रूपं कर-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवीर्यम् । भग० ९५ ।

करणवीरियं-क्रियावीर्यम् । नि० चू० प्र० १९ अ ।

करणसत्तो-करणं-क्रिया-तस्यां शक्तिः प्रवृत्तिः क्रियाशक्तिः । नंदी० १९० । करणशक्तिः-तन्माहात्म्यात् पुराऽनध्यवसितक्रियासामर्थ्यरूपा । उत्त० ५९१ ।

करणसच्चं-करणसत्यं,बाह्यं प्रत्युपेक्षणादि,त्रयोदशोऽनगारगुणः । आव० ६६० । यत्प्रतिलेखनादिक्रियां यथोक्तं सम्यगुपयुक्तः कुरुते । सम० ४६ । करणे सत्यं करणसत्यं यत्प्रतिलेखनादिक्रियां यथोक्तां सम्यगुपयुक्तः कुरुते । उत्त० ५९१ । यथोक्तप्रतिलेखनाक्रियाकरणम् । प्रश्न० १४५ ।

करणसभा-महावीरस्वामिनो निर्वाणस्थानम् । सम० ७३ ।

करणसाला-करणशाला । दश० १०८ ।

करणसालाए-न्यायालयः । नि० चू० द्वि० १२ अ ।

करणा-करणानि चक्षुरादीनीन्द्रियाणि । जीवा० २७१ ।

करणाए-उपकरणाय, उपकाराय । आचा० २८२ । उपकरणार्थम् । आचा० २८८ ।

करणाणुओगे-क्रियते एभिरिति करणानि तेषामनुयोगः करणानुयोगः । ठाणा० ४८१ ।

करणाणुपालया-पुव्वरिसीहिं पालियं जे पच्छा पालयंति ते करणाणुपालया । नि० चू० प्र० ३६० आ ।

करणापर्याप्ताः-ये करणानि-शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्त्तयन्ति अथचावश्यं निर्वर्त्तयिष्यन्ति ते । जीवा० १० । करणानि-शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्त्तयन्ति अथचावश्यं निर्वर्त्तयिष्यन्ति ते करणापर्याप्ताः । प्रज्ञा० २९ ।

करणालसा-करणालसाः-चरणालसाः, चरणधर्मं प्रत्यनुद्यताः स्वस्य परेषां च चिन्ताश्वासननिमित्तमितिभावः । प्रश्न० ३५ ।

करणि-सादृश्यम् । अनु० १२ । प्रशंसा, क्रिया । आव० ६९३ । क्रिया । आव० ८१८ ।

करणिज्जकिरिया-करणीयक्रिया-यद् येन प्रकारेण करणीयं तत्तेनैव क्रियते नान्यथा सा । सूत्र० ३०४ ।

करणिज्जो-करणीयः-सामान्येन कर्त्तव्यः । आव० ५७१ ।

करणी-क्रिया । अनु० १३८ । वर्गमूलमानीयते । जं० प्र० १९ ।

करणीयाइं-करणीयानि-कादाचित्कानि । ज्ञाता० ९१ ।

करतलं-हस्तसंखं । नि० चू० प्र० ६० आ ।

करतलपल्हत्थमुहे-करतले पर्यस्तं-अधोमुखतया न्यस्तं मुखं येन सः । भग० १८० ।

करधाण-करध्मानम्-परस्परं हस्तताडनम् । जं० प्र० २०६ ।

करपत्ते-क्रकचम् । ज्ञाता० २०४ । ठाणा० २७३ ।

करपत्रम्-शस्त्रविशेषः । आव० ८१९ ।

करपल्लीवण-करप्रद्दीपनं-वसनावेष्टितस्य तिलाभिषिक्तस्य करयोरग्निप्रबोधनम् । सम० १२६ ।

करबोडिय-व्याप्त । मर० ।

करभ- । नि० चू० द्वि० १२१ अ ।

करभी-घटसंस्थानकोष्ठिका । बृ० द्वि० १७९ अ ।

करमंदि-करमर्दी गुल्मभेदः । उत्त० ५४९ ।

करमद्द-करमर्दम् । आव० ६२२ । गुच्छविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

करमद्दिया- । नि० चू० द्वि० ६० अ ।

करमोअणं-करमोचनं-यत् करं मन्यमानो वन्दते न निर्जराम्, कृतिकर्मणि पञ्चविंशतितमो दोषः । आव० ५४४ ।

करयलं-करतलं-हस्तः । प्रश्न० ८ ।

करयलत्थो-करतलस्थः-वशवर्ती । आव० ७२१ ।

करयलपरिग्गहिय-करतलपरिगृहीतः करतलाभ्यां परिगृहीतः-निष्पादितः । जीवा० २४३ ।

करवत्तं-करपत्रम् । जीवा० ११७ । करपत्रं-क्रकचम उत्त० ४५९ । करवतम् । नंदी० १५५ ।

करवर-वनस्पतिविशेषः । पिण्ड० १२९ ।

करालं-उन्नतम् । अनुत्त० ६ ।

करालो-युक्तः । भक्ति० ।

करिसुयसयं-करिसु इत्यनेन शब्देनोपलक्षितं शतम् । भग० ९३८ ।

करि-करोति । ओघ० १११ ।

करिए-करिकः-अष्टाशीत्यां चतुरशीतितमो ग्रहः । जं० प्र० ५३५ ।

करित्ता-करेत्ता । अभ्यवहृत्य । ओघ० ४४ ।

करिमकरा-मत्स्यविशेषाः । सम० १३५ ।

करियातिओ-कृतवान् । नि० चू० प्र० १०९ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करिसग–कर्षकः । नंदी० १६४ ।

करिसणं–कर्षणं–कृषिः । प्रश्न० ८ ।

करिसो–कर्षः–पलस्य चतुर्भागः । अनु० १५४ ।

करीर–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

करीरपाणगं–पाणकस्य अष्टादशो भेदः । आचा० ३४७ ।

करिलं–रागद्वेषाभावे द्रष्टान्तविशेषः । बृ० प्र० ३७ अ ।

करीलो–वंशजातिविशेषः । व्य० प्र० २२५ आ ।

करील्ल–करीरं–प्रत्यग्रं कन्दलम् । अनुत्त० ४ ।

करीस–करीषम् । भग० ३०६ । करीषम्–शुष्कछगणम् । दश० ६२ ।

करीसओण्हा–करीषोष्मा । आव० ४१६ ।

करिणी–करेणु । उत्त० ६३४ ।

करुडगादियं–हिंगोलं । नि० चू० द्वि० २२ अ ।

करुणालंवणभूओ–करुणालम्बनभूतः । आव० ४१३ ।

करुल्लं–कपालम् । आव० २०१ ।

करेंतगो–कर्त्ता । आव० २६२ ।

करेइ–निर्मथ्यते । ज्ञाता० २४२ ।

करेणु–करेणुका–हस्तिनी । उत्त० ३४६ ।

करेणू–करेणुका । ज्ञाता० ६४ ।

करेमाणा–कुर्वाणाः । ज्ञाता० ५७ ।

करोटकं–कुप्यविशेषः । आव० ८२६ ।

करोटिका–भाजनविशेषः । पिण्ड० ६८, १५५ । भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ । पात्रविशेषः । आव० ४४३ । पात्रविशेषः । पिण्ड १०५ ।

करोडग–भाजनविशेषः । नि० चू० प्र० ७१ आ । नि० चू० प्र० २५६ अ । नि० चू० द्वि० ६३ आ ।

करोडि–करोडि । जं० प्र० १०१ । करोटिः । आव० ६८६ ।

करोडिआ–अतीवविशालमुखा कुण्डिकैव करोडिका । अनु० १५२ । करोटिका–स्थगिका । ज्ञाता० ४४ ।

करोडिय–करोटिका–मृद्भाजनविशेषः । भग० ११३ । करोटिकः–कपालिकः । विपा० ७६ ।

करोडिया–स्थगिका । भग० ५४८ । कापालिका । ज्ञाता० ५८ । करोट्या–कपालेन चरन्तीति करोटिका । ज्ञाता० १५२ ।

करोडी–करोटिका–कपालिका । आव० ६८६ ।

करोतिः–स्मरणे वर्तते न निष्पादने । नंदी० १७ ।

कर्कटः–पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः । आचा० ५५ ।

कर्करायितं– । उत्त० १२० ।

कर्कशः–स्पर्शस्य प्रथमभेदः । प्रज्ञा० ४७३ ।

कर्कशस्पर्शः–यदुदयाज्जन्तुशरीरेषु कर्कशः स्पर्शो भवति, यथा पाषाणविशेषादीनां तत् । प्रज्ञा० ४७३ ।

कर्केतन–रत्नविशेषः । सम० १३६ ।

कर्कोलकं–फलविशेषः । जीवा० १३६ ।

कर्णः–कण्ण–श्रवणः । आचा० ३८ ।

कर्णकं–भाजनस्योर्द्ध्वभागः । ओघ० १६८ ।

कर्णगति–कन्दादारभ्य शिखरं यावदेकान्तऋजुरुपायां दवरिकायां दत्तायां यदपान्तराले क्वापि कियदाकाशं तत्सर्वम् । जं० प्र० ३६३ ।

कर्णाघाटकेन– । विशे० ४०७ ।

कर्ण्णपर्पटका–शष्कुली । नंदी० ७५ ।

कर्ण्योपकरणी– । उत्त० ३८२ ।

कर्त्तव्यता– । आव० ८३४ ।

कर्द्दमजलम्–यद् घनकर्दमस्योपरि वहति । ओघ० ३२ ।

कर्परकः– । विशे० ६३८ ।

कर्पूरं–निर्यासवस्तुविशेषः । जीवा० १३६ ।

कर्प्परः–घटखण्डम् । नंदी० ६३ ।

कर्प्पासी–गुच्छविशेषः । आचा० ३० ।

कर्बुर–वर्णविशेषः । आचा० २६ । बकुशः–शबलो वा । भग० ८६१ । ठाणा० ३३६ ।

कर्म–योगः, व्यापारः, क्रिया । विशे० २०६ । सिद्धशब्दपर्यायः । ठाणा २५ । आर्यभेदः । सम० १३५ ।

कर्मकल्कः–कर्मसारः । प्रज्ञा० ३३१ ।

कर्मचक्री– । जं० प्र० २१५ ।

कर्मतः–आशीविसद्वितीयभेदः । विशे० ३८० ।

कर्मनिषेकः–तद्भवजीवितम् । आव० ४८० ।

कर्मप्रवादः–अष्टम पूर्वः । विशे० १००६ ।

कर्मभूमिजा–भूमिविशेषजन्मा । सम० १३५ ।

कर्म्मक्षय–सिद्धशब्दपर्यायः । ठाणा० २५ ।

कर्म्मद्रव्यकषायाः–तत्रादित्सितात्तानुदीर्णाः पुद्गला द्रव्य-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रधानात् कर्म्मद्रव्यकषायाः । आचा० ६१ ।

कर्ममास–त्रिंशदहोरात्रप्रमाणः । सूर्य० ११ । ठाणा० ३४५ ।

कर्म्मसारः–कर्म्मणः सारः । प्रज्ञा० ३३१ ।

कर्म्मार्या–यजनयाजनाध्ययनाध्यापनप्रयोगलिपिवाणिज्ययोनिपोषणवृत्तयः । त० ३–१५ ।

कर्षादीनि–मापविशेषः । ठाणा० ८८ ।

कलं–कलाम् भागम् । उत्त० ३१६ । शोभाया अंशः । ज्ञाता० १३१ ।

कलंकं–कलङ्कं–दुष्टतिलकादिकं चित्रादिकं वा । जीवा० २७७ । दुष्टतिलकादिकम् । औप० १६ ।

कलंकलियवायं–कलङ्कलिकावातम् । आव० २१७ ।

कलंकलीभागिणो–कलङ्कलीभावभाजः । सूत्र० ३४१ ।

कलंकलीभाव–कदर्थ्यमानता । प्रज्ञा० १०८ । उत्त० १८३ । आचा० ११७ ।

कलंत–उत्काल्यमानः । मर० ।

कलंदे–दिशाचरविशेषः । भग० ६५६ ।

कलंपि–कलामपि–मनागपि । व्य० द्वि० २२६ आ ।

कलंबचीरपत्तं–कलम्बचीरः । शस्त्रविशेषः । विपा० ७१ ।

कलंबचीरिया–कदम्बचीरिका–तृणविशेषः, दर्भादप्यतीवछेदकः । जीवा० १०८ ।

कलंबचीरियापत्तं–कदम्बचीरिकापात्रम् । जीवा० १०६ ।

कलंबवालुया–कदम्बपुष्पाकारा वालुका कदम्बवालुका । प्रश्न० २० ।

कलंबाणं–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

कलंबुगा–कलम्बुका सन्निवेशविशेषः । आव० २०६ ।

कलंबुया–जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

कलंबुयापुप्फं–कलम्बुयापुष्पं–नालिकापुष्पम् । सूर्य० ७१ । जीवा० ३३६ । जं० प्र० ४५३ । कलम्बुकापुष्पसंस्थानसंस्थितं–श्रोत्रेन्द्रियम् । प्रज्ञा० २६३ ।

कलंबुवालुयापट्ठ–कदम्बवालुकापृष्ठम् । आव० ६५१ ।

कलंबो–पिशाचानां चैत्यवृक्षः । ठाणा० ४४२ ।

कल–मधुरः । जं० प्र० २०६ । कलायास्त्रिपुराख्या वृत्तचणका वा । जं० प्र० १२४ । धान्यविशेषः । भग० ६८४ । पङ्कजलम् । उत्त० ३६१ । धनं । नि० चू० प्र० २०५ आ । पङ्कः । पिण्ड० १०२ । कर्दमः । भक्त० । कलं–माधुर्यविशिष्टध्वनिविशेषरूपम् । प्रश्न० १५६ । कलाः—अत्यन्तश्रवणहृदयहरा अव्यक्तध्वनिरूपा, अथवा कलावन्तः–परिणामवन्त इत्यर्थः । ज्ञाता० २३३ । औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । कला–वृत्तचनकाः । पिण्ड० १६८ ।

कलकल–उपलभ्यमानवर्णविभागः । औप० ५७ । उपलभ्यमानवचनविभागः । भग० ४६३ । कलकलशब्दयोगात् कलकलम् । प्रश्न० १६ । यत् कलकलशब्दं करोति तत् कलकलं अतितप्तमिति । प्रश्न० १६४ । चूर्णादिमिश्रजलम् । विपा० ७० । आचा० ३३१ । कलकलः व्याकुलशब्दसमूहः । जं० प्र० ४६३ । व्याकुलशब्दसमूहः । सूर्य० २८१ ।

कलकलंत–अतिक्वाथतः कलकलशब्दं कुर्वन्ति । उत्त० ४६१ ।

कलकलिता–कलकलायमानाः–कोलाहलबोलं कुर्वाणाः । प्रश्न० ५० ।

कलकलेइ–कलकलायति–भवजलधौ क्वथयति । आव० ५६७ ।

कलगिरः–व्यक्तवाचः । जं० प्र० १२७ ।

कलणाय–कलनादः । उत्त० १५० ।

कलत्तं–यस्मात् सर्वं आत्ते गृहणाति तस्मात् कलत्रम् । नि० चू० २०५ आ ।

कलन्दं–कुण्डं–कलन्दम् । उपा० २२-४ ।

कलभा–बालकावस्थाः । ज्ञाता० ६७ ।

कलभाणिणी–कलभानना–स्वरमनोज्ञानना । व्य० द्वि० २२६ आ ।

कलभिया– । ज्ञाता० ६३ ।

कलमल–जठरद्रव्यसमूहः । ठाणा० १४५ ।

कलमलजंबाल–मूत्रादिकर्दमः । मर० ।

कलमसालि–कलमशालिः, शालिविशेषः । जं० प्र० १०४ ।

कलमा-तन्दुलाः । आ० २३८ ।

कलमाल–बिंदु । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

कलमोडण– । नि० चू० द्वि० १६६ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलमोडियं- । नि० चू० प्र १३८ आ ।

कलयल-कलकलः-अव्यक्तवचनः । भग० ११५ । उपलभ्यमानवचनविभागः । भग० ११५ ।

कलयलसद्द-कलकलशब्दः । आव० २३१ ।

कललं-प्रथमसप्ताहो गर्भावस्था । तं० ।

कलशः-भाजनविधिविशेषः । जावा० २६६ ।

कलस-कलशः-महाघटः । जं० प्र० १०१ । कलशः-ताम्रादिकलशः-उपकरणवस्तु । दश० १६४ ।

कलसए-कलशकाः-आकारविशेषवन्तः । उपा० ४० ।

कलंसिबलिया-कलंसिवलिका- कलायाभिधानधान्यफलिका । भग० २६० ।

कलंसिअ-लघुतरकलश एव कलशिका । अनु० १५३ ।

कलसीपुरं-कलशीपुरं, कृतिकर्मदृष्टान्ते पुरम् । आव० ५१४ ।

कलहंस-लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४६ । कलहंसः-लोमपक्षीविशेषः । जीवा० ४१ ।

कलह-कलहः-वचनराटिः । भग० १६८ । जं० प्र० १२५ । भण्डनम् । आव० ४६६ । वाचिको विग्रहः । उत्त० ३४७ । क्रोधः । उत्त० २६१ । इह प्रेमहासादिप्रभवं युद्धम् । भग० ५७३ । महता शब्देनान्योऽन्यमसमञ्जसभाषणम् । भग० ५७२ । राटिः । प्रज्ञा० ४३८ । भग० ८० । राटिः । प्रज्ञा० ६६ । ठाणा० २६ । विरोधवाचिकः । उत्त० ४३५ । वादिगो । नि० चू० द्वि० ७१ आ । कलहः-राटिः । जीवा० १७३ । वाग्युद्धम् । ज्ञाता० २२० । जीवा० २८३ । वचनभण्डनम् । प्रश्न० ६२ । द्वादशं पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ । वाचिककलहः । प्रश्न० ६७ । भंडणं, विवादो । नि० चू० तृ० ३५ अ ।

कलहकर-कलहकरः-भण्डनकरणशीलः । आव० ४६६ ।

कलहकरत्वं-कलहहेतुभूतकर्त्तव्यकारित्वम्-षोडशममसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।

कलहकारी-आत्मना कलहं करोति तत्करोति येन कलहो भवति, सप्तदशममसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।

कलहगे-कलभकः । ओघ० १५८ ।

कलांतर- । आव० १०८ ।

कला-मात्रा । सूर्य० ८ । धनुर्वेदादिः । प्रश्न० ६४ । अंशः । ठाणा० ४६७ । योजनस्यैकोनविंशतिभागच्छेदनाः एकोनविंशतिभागरूपा इति भावः । सम० ३७ । विज्ञानम् । सम० ८३ । वट्टचणया । दश० चू० ६२ । वट्टचणगा । नि० चू० प्र० १४४ आ । ठाणा० ३४४ । द्विसप्ततिसु निपुणा लेखादिका । प्रश्न० ६७ ।

कलाइरिय-कलाचार्यः । उत्त० १४८ ।

कलाओ-कलादः । आव० ३७३ । कलनानि कलाः, विज्ञानानि । जं० प्र० १३६ ।

कलाचिका-हस्तमूलम्, कटकं, आभरणविशेषः । प्रज्ञा० ८८ । कटकम् । जीवा० १६२ ।

कलाद-सुवर्णकारः । नि० चू० द्वि० ४३ अ । कलादो नाम्ना मूषिकारदारक इति पितृव्यपदेशेनेति । ज्ञाता० १८७।

कलाय-कलादः-सुवर्णकारः । वृ० द्वि० १०७ आ । ज्ञाता० १४२ । प्रश्न० ३० । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ । कलायाः-चणकाकारा धान्यविशेषाः । उपा० ५ ।

कलाया-कलायाः-वृत्तचनकाः । भग० २७४ । कलायकाः-वृत्तचणकाः । दश० १६३ । कलायाः-चणकाकारा धान्यविशेषाः । उपा० ५ ।

कलालकुलं-कलालकुलम् । आव० ३६६ ।

कालव-कलापः-ग्रीवाभरणविशेषः । उपा० ४४ । कलापः-कण्ठाभारणविशेषः । भग० ४५६ । कलापः-भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ । कण्ठाभरणविशेषो मेखलाकलापः । औप० ५५ ।

कलावओ-कलापकः-ग्रीवाभरणम् । प्रश्न० १५६ ।

कलासवन्ने-कलानां-अंशानां सवर्णनं सवर्ण, सवर्णः-सदृशीकरणं यस्मिन् सङ्ख्याने तत् कलासवर्णम् । ठाणा० ४६६ ।

कलि-कलिः-एककः । सूत्र० ६७ ।

कलिंगं-कलिङ्गं-जनपदविशेषः, करकण्डूत्पत्तिस्थानम् । उत्त० २६६ । नैमित्तिकः । आचा० ३५६ । कलिङ्गः-द्रव्यव्युत्सर्गे देशविशेषः । आव० ७१६ । जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । देशविशेषः । ओघ० २१ । शिल्पसिद्धदृष्टान्ते देशविशेषः । आव० ४१० । देशविशेषः । व्य० द्वि० ४१४ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलिंगराया–कलिङ्गराजा–द्रव्यव्युत्सर्गे करकण्डुः । आव० ७१६ ।

कलिंच–क्षुद्रकाष्ठरूपः । भग० ३६५ । वंशकप्परी । बृ० तृ० ६८ आ । वंसकपड्डी । नि० चू० प्र० ११६ आ । नि० चू० प्र० २२० अ । नि० चू० प्र० १०५ आ ।

कलिंज–फलविशेषः । ओघ० १८७ । वंसमयो कड-वल्लो । नि० चू० तृ० ५९ अ ।

कलि–जघन्यः कालविशेषः कलहो वा । अनु० १३८ । प्रथमो भङ्गः । बृ० प्र० १८० आ । एकः । उत्त० २४८ । भग० ७४५ ।

कलिऊण–कलयित्वा–विज्ञाय । दश० ५९ ।

कलिओए–एकपर्यवसितः कल्योजः । ठाणा० २३७ । कलिना–एकेन आदित एव कृतयुग्माद्योपरिवर्त्तिना ओजो-विषमराशिविशेषः कल्योजः । भग० ७४५ ।

कलिओग–कल्योजः पर्वराशौ चतुर्भिर्भक्ते सति यद्येकः शेषो भवति तदा स राशिः । सूर्य० १६७ ।

कलिओगकडजुम्मे–कल्योजकृतयुग्मे, चतुरादयः । भग० ९६४ ।

कलिकन्दमूलं– । उत्त० ३८३ ।

कलिकरंडो–कलिकरण्डः–कलीनां–कलहानां करण्ड इव भाजनविशेष इव । परिग्रहस्यैकोनविंशतितमं नाम । प्रश्न० ९२ ।

कलिकलंक– । ओघ० १९९ ।

कलिकलंडो–कलिकारकः । आव० ३९० ।

कलिकलहो–कलिकलहः–राटीकलहः । प्रश्न० ४३ ।

कलिकलुसं–कलिकलुषम् । उत्त० ३३१ । कलहहेतु कलुषं मलीमसम् । विपा० ४० ।

कलिका–मुकुलं, कुड्मलम् । जीवा० १८२ ।

कलितोए–एकपर्यसितः कल्योजः । ठाणा० २३८ ।

कलित्तं–कटित्रं–कृत्तिविशेषः । औप० १० । कडित्रं कृत्तिविशेषः । ज्ञाता० ६ ।

कलिमलं–मलः । तं० ।

कलियोगकलिओगे–कल्योजकल्योजे पञ्चादयः । भग० ९६४ ।

कलियोगतेओगे–कल्योजत्र्योजे राशौ सप्तादयः । भग० ९६४ ।

कलियोगदावरजुम्मे–कल्योजद्वापरे षडादयः । भग० । ९६४

कलुणा–करुणा–दयास्पदभूता, करुणं वा पालयतीति । प्रश्न० १९ । कृपास्थानम् । पिण्ड० १११ । दीना । दश० २४८ । रङ्का । नि० चू० द्वि० १०६ अ ।

कलुणो–कुत्सितं शैत्यनेनेति निरुक्तवशात् करुणः, करु-णास्पदत्वात्, प्रियविप्रयोगादिदुःखहेतुसमुत्थः शोकप्रकर्षस्व-रूपः करुणो रसः । अनु० १३५ ।

कलुयावासा–द्वीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

कलुषसमापन्नः–नैतदेवमिति विपर्यस्त इति । ठाणा० २४७ ।

कलुसमावन्ने–कलुषमापन्नः–नाहमिह किञ्चिज्जानामीत्येवं स्वविषयं कालुष्यं समापन्न इति । भग० ११२ । नैतदेवमिति प्रतिपत्तिकः । ठाणा० १७६ । मति-मालिन्यमुपगतः । ज्ञाता० ९५ ।

कलुससमावन्न–कलुषसमापन्नः । भग० ५४ ।

कलुसा–कलुषयन्त्यात्मानमिति–कलुषाः–कषायाः । आव० ५८९ । कलुषयन्ति–सहजनिर्मलं जीवं कर्मरजसा मलि-नयन्ति इति कलुषाः–कषायाः । बृ० प्र० १४१ आ ।

कलेवर–मनुष्यशरीरम् । जीवा० १८० । शरीरम् । उत्त० ३४१ । शरीराणि । कलेवराणि–असङ्ख्यातखण्डी-कृतवालुकाकणरूपाणि । भग० ६७६ । कलेवराणि–मनुष्यशरीराणि । जं० प्र० २३ ।

कलेवरसंघाडा–कलेवरसङ्घाराः–मनुष्यशरीरयुग्मानि । जीवा० १८० । कलेवरसङ्घाटाः–मनुष्यशरीरयुग्मानि । जं० प्र० २३ ।

कलेसुयं–तृणविशेषः । सूत्र० ३०९ ।

कलो–चणओ । नि० चू० द्वि० ६३ आ । नि० चू० प्र० ४० आ ।

कलोवाइओ–पिच्छी–पिटकं वा । आचा० ३२७ ।

कल्कः–कक्क–कषायद्रव्यक्वाथ । आचा० ३६३ ।

कल्ककुहकम्– । सूत्र० ४०२ ।

कल्पतपस–तपविशेषः । आचा० २०३ ।

कल्काचारः–आचारविशेषः । आचा २०२ ।

कल्पकः–वैनयिकीबुद्धौ अर्थशास्त्रे मन्त्री । नंदी० १६१ ।

कल्पद्वयपर्युषितः–कल्पद्वयपर्युषितस्तु नियमाज्जिनकल्पि-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कपरिहारविशुद्धिकयथालन्दिकप्रतिमाप्रतिपन्नानामन्यतमः। आचा० २८० ।

कल्पनिका-शस्त्रविशेषः । भग० १९८ । सम० २९ ।

कल्पनी-कर्त्री-शस्त्रविशेषः । उत्त० ४६० ।

कल्पपालाः-सुरादिविक्रयकारिणः । मद्यपाः । व्य० द्वि० ४२० अ ।

कल्पस्त्रियः-कल्पयोः-देवलोकयोः स्त्रियः कल्पस्त्रियः-देव्यः । ठाणा० १०० ।

कल्पस्थितः-वाचनाचार्यो गुरुभूत इत्यर्थः । ठाणा० ३२४ ।

कल्पा-संविग्नविहारः । बृ० प्र० ११३ अ ।

कल्पातीतः-साधुभेदविशेषः । भग० ४ ।

कल्पावतंसिका-कल्पावतंसकदेवप्रतिबद्धग्रन्थपद्धतिः । निरय० २१ । नंदी० २०७ ।

कल्पिका-या कारणे प्रतिसेवना क्रियते सा । व्य० प्र० ४७ आ ।

कल्या-नीरोगी । नंदी० १६१ ।

कल्याणकं-यदासनप्रकम्पप्रयुक्तावधयः सकलसुरासुरेन्द्रा जीतमितिविधित्सवो युगपत् ससम्भ्रमा उपतिष्ठन्ते । जं० प्र० १५६ ।

कल्ल-कल्यः-अत्यन्तनीरुक्तया मोक्षः । उत्त० १२८ । प्रत्यूषः । आव० १४८ । नीरोगया मोक्खो । दश० चू० ७१ । कल्यं-श्वः, प्रादुः प्राकाश्ये च । ओघ० २६ । सुखमारोग्यं शोभनत्वं वा । सूत्र० ३८३ । कल्यं पूपकम् । ओघ० १७२, १७३ । कल्यं-शब्दं, शब्दशास्त्रम् । विशे० १३०४ । कल्ये । आव० ६५ । कल्यं-आरोग्यम् । आव० ७८८ । श्वः । भग० १२७ । कल्यः, मोक्षः । उत्त० १२८ । दश० १५८ । कल्यो-नीरोगः । चिन्तादिनापेक्षया द्वितीयदिने । उत्त० ४७६ ।

कल्लसरीरा-कल्यशरीराः, पटुशरीराः । ठाणा० २४७ ।

कल्लाकल्लिं-प्रतिप्रभातम् । उपा० ४० । प्रतिदिनम् । ज्ञाता० १४६ । कल्ये च कल्ये च अनुदिनमिति कल्याकल्यिं । विपा० ५१, ५८ ।

कल्लाणं-कल्यम्-आरोग्यं अणति-शब्दयतीति कल्याणं । आव० ७८८ । कल्याणं-एकान्तसुखावहम् । जीवा० २७८ । इष्टार्थफलसंप्राप्तिः । सूत्र० ३८३ । कल्याणहेतुः । सूर्य० २६७ । अर्थहेतुः । औप० ५ । कल्याणप्रापकत्वात्-अहिंसाया एकोनत्रिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ९९ । शुभम् । मुक्तिहेतुः । उत्त० १२८ । तत्त्ववृत्तया तथाविधविशिष्टफलदायी, अनर्थोपशमकारि वा कल्याणरूपं कलविपाकं वा । जीवा० २०१ । कल्याणं-श्रेयः । भग० ११६ । नीरोगताकारणम् । भग० १२५ । अनर्थोपशमहेतुत्वम् । भग० १६३ । कल्यो-मोक्षस्तमणति प्रापयतीतिकल्याणं-दयाख्यं संयमस्वरूपम । दश० १५८ । गुणसम्पद्रूपः संयमः । दश० १८९ । तत्त्ववृत्या तथाविधविशिष्टफलदायी, अनर्थोपशमकारी । जं० प्र० ४७ । कल्याणं-समृद्धिः । ठाणा० १११ । मंगलस्वरूपत्वात्-कल्याणम् । ठाणा० २४७ । अर्थप्राप्तिः । भग० ५४१ । एकान्तसुखावहम् । जं० प्र० ११९ । पर्वगविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । कल्यः-अत्यन्तनीरुक्तया मोक्षस्तमानयति अणति प्रज्ञापयतीति कल्याणः मुक्तिहेतुः । उत्त० १२८ । कल्यं-आरोग्यं अणन्ति-शब्दयन्तीति कल्याणाः । ठाणा० ४६४ । नीरोगताकरणम् । ज्ञाता० ७६ ।

कल्लाणकार-कल्याणकरणं, मङ्गलकरणम् । ज्ञाता० २२० ।

कल्लाणग-णाम ओहारो । नि० चू० प्र० ११३ आ । नि० चू० प्र० ७६ अ । कल्याणकं-अनुपहतं प्रवरम् । उपा० २६ ।

कल्लाणवयं- । नि० चू० प्र० १६५ अ ।

कल्लाणपुक्खल-कल्यां-आरोग्यं कल्यमणतीति कल्याणं, पुष्कलं-सम्पूर्णं च कल्याणपुष्कलम् । आव० ७८८ ।

कल्लाणयं-कल्याणकं-कल्याणकारि । जीवा० १६२ । परमवस्त्रलक्षणोपेतम् । जीवा० २६६ ।

कल्लाणी-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।

कल्लालघर-कल्पपालगृहम् । अनु० १४२ ।

कल्लालत्तणं-कौलालत्वं-सुराविक्रेतृत्वम् । आव० ८२९ ।

कल्लुगा-कृन्तकाः । नि० चू० द्वि० ८० आ । नदीपाषाणेषु उत्पद्यमाना द्वीन्द्रियविशेषाः । बृ० तृ० १६२ आ ।

कल्लुयावासा-द्वीन्द्रियविशेषः । जीवा० ३१ ।

कल्लेदाणिं-नित्यं । नि० चू० द्वि० १४४ आ ।

कल्लोलं-फलविशेषः । प्रश्न० १६२ ।

कल्हाडए-कल्हाडकः । गोरथकाः । बृ० द्वि० १३८ आ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्हारे–जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
कल्होडः–गोरथकः । दश० २१७ ।
कवइय–कवचिका–सन्नाहविशेषः । औप० ६२ । भग० ३१७ ।
कवए–कवचः–कङ्कटः । भग० ३१८ । तनुत्राणम् । जं० प्र० २१९ ।
कवचं–कङ्कटं–आवरणं । जीवा० १६३ । सन्नाहविशेषः । ज्ञाता० २२१ ।
कवड–कपटं–वेषपरावर्त्तादिर्बाह्यो विकारः । आव०५६६ । देशभाषानेपथ्यादिविपर्ययकरणम् । सूत्र० ३२६ । वेषभाषावैपरीत्यकरणम् । प्रश्न० ५८ । भाषाविपर्ययकरणम् । प्रश्न० २७ । वेषाद्यन्यथात्वम् । ज्ञाता० १५८ । वेषादिविपर्ययकरणम् । ज्ञाता० २३८ । परवञ्चनाय वेषान्तरकरणम् । जं० प्र० १६६ । नेपथ्यभाषाविपर्ययकरणम् । ज्ञाता० ८० । वञ्चनाय वेषान्तरादिकरणम् । भग० ३०८ ।
कवडसड्ढओ–कपटश्राद्धः । आव० ७६६ ।
कवडिया– । ओघ० १८८ ।
कवड्डगा–ताम्रमयं नाणकम् । नि० चू० प्र० ३३० अ ।
कवणो–कतमः । पउ० ७१ ।
कवय–कवचः–कङ्कटः । भग० १६३ । सन्नाहविशेषः । जं० प्र० २०५ । तनुत्राणम् । जीवा० २५९ । परिकरः । प्रश्न० ७५ ।
कवर्गप्रविभक्तिकं–पञ्चदशो नाट्यविधिः । जं०प्र० ४१७ ।
कवल–आहारविशेषः । ठाणा० ६३ । कुर्कुट्यण्डकमात्रा । ओघ० १८२ । कवलः । आव० ८४४ ।
कवलकः–उपकरणभेदः । आचा० ६० ।
कवलग्गाहो–कवलग्राहः–गलकण्टकापनोदाय स्थूलकवलग्रहणं,मुखविमर्दनार्थं वा दंष्ट्राधःकाष्ठखण्डदानम् । विपा०८१।
कवलिका– । भग० ६५१ ।
कवल्ली–कवली–गुडादिपाकभाजनम् । विपा० ५८ ।
कवल्लीओ–लोही । नि० चू० प्र० ३१७ अ ।
कवाडं–कपाटं–द्वारयन्त्रम् । दश० १८४ । कपाटं–प्रतोलीद्वारसत्कम् । जीवा० १५६ । कपाटानि–प्रतोलीद्वारसत्कानि । प्रज्ञा० ८६ ।
कवाडोब्भिन्न–यद् पिहितं कपाटं उद्भिद्य–उद्घाट्य साधुभ्यो दीयते तत् कपाटोद्भिन्नम् । पिण्ड० १०५ ।
कवाल–कपालं–कर्परम् । सूत्र० २९८ । घटखर्परादि । आचा० ३११ ।
कविंजला–लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ ।
कविकं–खलिनम् । आव० २६१ । दश० २८३ ।
कविकच्छु–कपिकच्छूः–तीव्रकण्डूतिकारकः फलविशेषः । प्रश्न० १६४ ।
कविकच्छू–कपिकच्छुः–खर्ज्जुकारी । ज्ञाता० २०४ ।
कविचियाओ–कलाचिकाः । भग० ५४८ ।
कविट्ठ–कपित्थं फलविशेषः । प्रज्ञा० ३६४ । फलविशेषः । आव० ७९८ । प्रज्ञा० ३२८ । भग० ८०३ । कपित्थफलम् । दश० १८५ । बहुबीजफलविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
कविट्ठपाणगं–पानकभेदः । आचा० ३४७ ।
कविट्ठलता–कपित्थलता । आव० १७३ ।
कवित्थ–कपित्थं फलविशेषः । उत्त० ६५३ ।
कवियच्छू–कपिकच्छूः–कण्डूविजनको वल्लीविशेषः । जीवा० १०७ ।
कविल–कपिलः–पक्षिविशेषः । ज्ञाता० २३१ । प्रश्न० ८ । सुस्थिताचार्याणां शिष्यः । नि० चू० द्वि० ३१ आ । ग्रन्थार्थपरिज्ञानशून्यः । परिव्राजकविशेषः । औप० ९१ । राजपुत्रविशेषः । मरीचिशिष्यः । आव० १७० । सुस्थिताचार्यशिष्यः वेदत्रयानुभववान् । बृ० तृ० ९८ अ । क्षुल्लकश्रमणः । नि० चू० प्र० ७८ अ । राजगृहनगरे ब्राह्मणः । व्य० द्वि० १६६ आ । नगरबाहिरिकायां ब्राह्मणः । आव० ६६१ । कौशाम्ब्यां काश्यपपुत्रः । उत्त० २८६ । लोभे दृष्टान्तः । क्षुल्लकविशेषः । नि० चू० प्र० ७८ अ । कपिलः । उत्त० २८६ । चम्पानगर्यां कपिलनामा वासुदेवः । ज्ञाता० २२२ ।
कविला–नामविशेषः । विनयबहुमानचतुर्थभङ्गे दृष्टान्तः । नि० चू० प्र० ८ अ । कपिला–दानस्यादत्री श्रेणिकस्य दासी । आव० ६८१ ।
कविलिए–कृष्णपुद्गलस्य भेदविशेषः । सूर्य० २८७ ।
कविल्ली–कटाहः–लोहभाजनविशेषः । आव० ३६९ । मण्डनकादिपचनिका लोही । अनु० १५९ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कविसाणए–कपिशायनं–मद्यविशेषः । प्रज्ञा० ३६४ ।
कविसीसं–कपिशीर्षकं–प्राकाराग्रम् । आव० २३१ ।
कविसीसए–कपिशीर्षकः–प्राकाराग्रम् । जं० प्र० ३२० ।
कविसीसग–कपिशीर्षकः । ज्ञाता० ६६ । जीवा० २१६ ।
कविहसितं–आगासे विकृतरूपं मुखं वाणरसरिसं हासं करेज्ज । नि० चू० तृ० ७५ अ ।
कविहसियं–कपिहसितं, यदाकाशे वानरसदृशं विकृतं मुखं हासं कुर्यात् । आव० ७५० । अकस्मान्नभसि ज्वलद्भीमशब्दरूपम् । जीवा० २८३ । कपिहसितं–अनभ्रे या विद्युत् सहसा तत् कपिहसितम् । भग० १९६ ।
कविहसिया–कपिहसितानि, अकस्मान्नभसि ज्वलद्भीमशब्दरूपाणि । अनु० १२१ ।
कवेलुका– । दश० १०१ ।
कवेलुयं–कवेलुकम् । जं० प्र० २३ ।
कवेल्ली–लोहकटाहम् । भग० २३८ ।
कवेल्लुकं–भाव्यम् । आव० ५२१ ।
कवेल्लुकापाकः– । जीवा० १२४ ।
कवेल्लुयं–कवेल्लुकं–मण्डनपचनिका लोही । जीवा० १८० ।
कवोड–कपोतः–पक्षिविशेषः । पिण्ड० ७६ ।
कवोतक–कपोतकः । प्रश्न० ८ ।
कवोय–कपोतकः पक्षिविशेषः । भग० ६६१ । कपोतः–पक्षिविशेषः । उत्त० ४५६ ।
कवोया–लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ ।
कवोलदेसो–कपोलदेशः–गण्डभागः । जीवा० २७३ ।
कव्व–काव्यः–धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थप्रतिबद्धग्रन्थः–संस्कृतप्राकृतापभ्रंशसङ्कीर्णभाषानिबद्धः, समविषमार्द्धसमवृत्तबद्धतया गद्यतया चेति, गद्यपद्यगेयवर्णपदभेदबद्धः । ठाणा० ४५० । गन्थः । ठाणा० २८८ । कवेरभिप्रायः । अनु० १३५ ।
कव्वग–भाजनस्यावकल्पमपवृत्य । व्य० द्वि० ३०२ आ ।
कव्वडं–कुणगरो । नि० चू० द्वि० ७० आ । वाडवोपमकूडसविखसमुब्भावियदुक्खछलव्ववहारतं कव्वडं । दश० चू० १५७ ।
कव्वालभयगो–तइओ भयगभेओ । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।
कव्वालो–खितिखाणतो उड्डमादी । नि० चू० द्वि० ४४ आ ।
कशा–बन्धनविशेषः । भग० १९३ । दश० २६७ ।
कषः–संसारः । जीवा० १५ ।
कषपट्टकं–सुवर्णपरीक्षकपाषाणविशेषः । जीवा० १९१ ।
कषायः–रसस्य तृतीयभेदः । प्रज्ञा० ४७३ । पीतरक्तवर्णाश्रयरञ्जनीयवस्तु । जं० प्र० १८९ ।
कषायसमुद्घातः–कषायोदयेन समुद्घातः । जीवा० १७ ।
कस–कशः–वर्ध्रविकारः । उत्त० ३६४ । कर्षन्ति–हिंसन्ति परस्परं प्राणिनोऽस्मिन्निति कषः–संसारः । प्रज्ञा० २८५ । कषः–चर्मदण्डः । जं० प्र० १४७ । कषः–वर्ध्रः । प्रश्न० १६४ । कष्यतेऽस्मिन् प्राणी पुनःपुनरावृत्तिभावमनुभवति कषोपलकष्यमाणं कनकवदिति कषः संसारः । उत्त० १९० । कर्म भवो वा । आव० ७७ । कषति–हिनस्ति देहिनः इति कषं कर्म्म । ठाणा० १९३ । कसः–चर्मयष्टिका । प्रश्न० २२ । कशा–आयुष उपक्रमे द्वितीयभेदः । आव० २७३ । संसारः । आचा० ६८ । कशः–चर्मयष्टिः । उत्त० ४८ । चर्मदण्डः । जं० प्र० २३५ ।
कसट्टं–कचवरं । ओघ० १८४ ।
कसट्टिया–कषपट्टः । भग० २१३ ।
कसप्पहारे–वर्ध्रताडनानि । ज्ञाता० ८७ ।
कसमाओ–कषमाय–कषमायन्ति, कषं गमयन्ति । विशे० ५४३ ।
कसर–कशरः–खशरः । भग० ३०८ ।
कसाइज्जति–कषायन्ते । आव० १११ ।
कसाइययं–कषायितकः । आव० २१९ ।
कसाईओ–कषायितः । आव० ३२३ ।
कसाए–कषायः कषायोदयः । प्रज्ञा० १३५ । कृषन्ति विलिखन्ति कर्मरूपं क्षेत्रं सुखदुःखशस्योत्पादनायेति कषायाः, कलुषयन्ति शुद्धस्वभावं सन्तं कर्ममलिनं कुर्वन्ति जीवमिति वा । प्रज्ञा० २९० । कर्षन्ति–हिंसन्ति परस्परं प्राणिनोऽस्मिन्निति कषः–संसारस्तमयन्ते–अन्तर्भूतण्यर्थत्वाद्गमयन्ति प्रापयन्ति ये ते कषायाः । प्रज्ञा० २८५ । अन्नरुचिस्तम्भनकृत्कषायः । ठाणा० २६ ।
कसाय–कषायं–प्रज्ञापनायाश्चतुर्दशं पदम् । प्रज्ञा० ६ । वल्लादि । दश० १८० ।
कसायकलहो–कलहस्य द्वितीयो भेदः । नि० चू० प्र०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५१ आ ।

कसायकुसील–कषायैः कुशीलः–कषायकुशीलः । भग० ८६० । कषायकुशीलः–यस्य पञ्चसु ज्ञानादिषु कषायैर्विराधना क्रियते सः, कुशीलस्य द्वितीयो भेदः । उत्त० २५६ ।

कसायदुट्ठो–हंकारंतो । नि० चू० द्वि० ४० अ । कसायदुष्टो यथा सर्षपनालिकाभिधानशाकमर्जिकाग्रहणकुपितो मृताचार्यदन्तभञ्जकः साधुः । ठाणा० १६३ ।

कसायपद–प्रज्ञापनायां चतुर्दशं पदम् । भग० ७४४ ।

कसायपच्चक्खाण–क्रोधादिप्रत्याख्यानं–तान् न करोमीति-प्रतिज्ञानम् । भग० ७२७ ।

कसायपायाल–कषाया एवागाधभवजननसाम्येन पातालमिव पातालं यस्मिन् सः–कषायपातालः । आव० ६०१ ।

कसायलोगो–कषायलोकः–औदयिकभावकषायलोकः । आचा० ८४ ।

कषायसंकिलेस–कषाया एव कषायैर्वा सङ्क्लेशः-असमाधिः कषायसङ्क्लेशः । ठाणा० ४८६ ।

कसायसंलीणया–कषायसंलीनता, संलीनताया द्वितीयो भेदः । सा च तदुदयनिरोधोदीर्णविफलीकरणलक्षणा । उदयस्सेव निरोहो उदयं पत्ताणं वाऽफलीकरणं,जं इत्थ कसायाणं कसायसंलीनता एसा । दश० २६ ।

कसाया–कषः, संसारस्तस्मिन् आ समन्तादयन्ते–गच्छन्त्येभिरसुमन्त इति कषायाः,यद्वा कषाया इव कषायाः । उत्त० १६० । कर्षन्ति परस्परं हिंसन्ति प्राणिनोऽस्मिन्निति कषं कर्म भवो वा, अथवा कृष्यन्ते शारीरमानसदुःखलक्षैर्घृष्यन्ते प्राणिनोऽस्मिन्निति कषं कर्मैव,भव एव वा,यतो यस्मात् कषं कर्म, कषो वा भव आयो लाभो येषां ततस्ते कषायाः । कषमायन्ति यतः, अतः कषायाः–कषं–गमयन्तीत्यर्थः । विशे० ५४३ । कृषन्ति–विलिखन्ति–कर्म्मक्षेत्रं सुखदुःखफलयोग्यं–कुर्वन्ति–कलुषयन्ति वा जीवमिति निरुक्तविधिना कषायाः । ठाणा० १६३ । कलुषाः । ५८६ । कषः–संसारस्तमयन्ते गच्छन्त्येभिर्जन्तव इति कषायाः–क्रोधादयः परिणामविशेषः । जीवा० १५ ।

कसासिव्वणी– । नि० चू० प्र० १२७ अ ।

कसाहीया–मुकुलिअहिभेदविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

कसिण–कृत्स्नः–सम्पूर्णः । आव० ४६२, ५०० । दश० २३४ । सूत्र० २७८ । व्य० द्वि० ३०१ आ । कृत्स्नः । विशे० ४२४ । भग० १४६ । व्य० प्र० ११८ आ । कृत्स्नं सर्वार्थग्राङ्कत्वात् । ज्ञाता० १५३ । कृत्स्नं कृष्णं वा । उत्त० ४८५ । प्रधानभावम् । नि० चू० प्र० १३६ आ । कृष्णं । क्लिष्टम् । दश० २३४ । वण्णतो जुत्तप्पमाणा । नि० चू० तृ० ४६ अ । सदसं प्रमाणातिरिक्तं । नि० चू० प्र० १३८ आ ।

कसिणखंध–कृत्स्नस्कन्धः–परिपूर्णस्कन्धः । अनु० ४० ।

कसिणधवलपडिवज्जगो–कृष्णधवलप्रतिपत्ता । आव० ३६४ ।

कसिणा–यावतोऽपराधानापन्नस्तावतीनां तच्छुद्धीनामारोपणा कृत्स्नारोपणा । सम० ४७ । कृत्स्ना यत्र झोषो न क्रियते । व्य० प्र० १२४ आ ।

कसिणाओ–कृत्स्नाः, सम्पूर्णा अनुपहृता । आचा० ३२३ ।

कसिणे–घनमसृणानि यैः सूर्यो न दृश्यते । बृ० द्वि० २४० अ ।

कसेरुगं–वनस्पतिविशेषः । आचा० ३४८ ।

कसेरुमती–नदीविशेषः । व्य० प्र० २२७ आ ।

कसेरुया–जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

कसेहि–परव्यतिरिक्त आत्मा शरीरं तत् कष्टतपश्चरणादिना कृशं कुरु, यदि वा "कष" कस्मै कर्म्मणेऽलमित्येवं पर्यालोच्य यच्छक्नोषि तत्र नियोजयेरित्यर्थः । आचा० १६१ ।

कहं–कथा वाक्यप्रबन्धरूपा । उत्त० ४२४ । कथं–केनप्रकारेण केनान्वर्थेनेति । सूर्य० २६२ ।

कहंतरं–कथान्तरम् । आव० ५६२ उत्त० ४२५ । उच्चस्वरः । बृ० प्र० २१३ अ ।

कहकह–हसितशब्दः ।

कहकहकं–प्रमोदभरजनितकोलाहलम् । जं० प्र० ४१६ ।

कहकहेंति–कहकहायमानं–प्रहसितविशेषः । प्रश्न० ५२ ।

कहग–कथकः सरसकथाकथनेन श्रोतृरसोत्पत्तिकारकः । जं० प्र० १२३ । कथकः । अनु० ४६ ।

कहणविहि–कथनविधिः, कथनप्रकारः । आव० ८६२ ।

कहणविही–कथनविधिः, कथनप्रकारः । आव० ८०३ ।

कहणा–धर्मकथालब्धिसंपन्नः । ओघ० ६३ । कथनाकथनम् । आव० २३४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहरत्तो–कथासु रक्तः–सक्तः कथारक्तः। ओघ० १२७।

कहल्लो–कभेल्लः–कर्परः । अन्त० १२ ।

कहा–संयमाराधनी या वाग्योगप्रवृत्तिः । बृ० द्वि० ४० अ । वाइगजोगेण संयमाराहणी कहा । नि० चू० तृ० १ आ । साधूवादं जल्पं वितडं वा एता तिण्णिवि कहा । नि० चू० प्र० २४० अ। आख्यानकानि। सम० ११८। वचनपद्धतिः, चरित्रवर्णनरूपा वा। ठाणा० १५६। ब्रह्मचर्यगुप्तेर्भेदः। आव० ५७२। कथा–वाक्यप्रबन्धः शास्त्रम्। सम० ५५ । कथा–वार्त्ता । दश० ११४ ।

कहाहिगरणाइं–कथा–राजकथादिका–अधिकरणानि च यन्त्रादीनि कलहा वा कथाधिकरणानि । सम० ५५ ।

कहिथ–कुत्रात्र । उत्त० १६२ ।

कहिय–कथितं–प्रबन्धेन प्रतिपादितम् । उत्त० ३४१ ।

कहियाइओ–कथितवान् । आव० २३७ ।

कांक्षा–ऐहलौकिकपारलौकिकेषु विषयेष्वाशंसा। तं०७१८।

कांचणय–यस्मादुत्पलादीनि काञ्चनप्रभाणि काञ्चननामानश्च देवास्तत्र परिवसन्ति ततः काञ्चनप्रभोत्पलादियोगात् काञ्चनकाभिधदेवस्वामिकत्वाच्च सः काञ्चनकः । जीवा० २९१ ।

कांचणिया–काञ्चनिका–राजधानीविशेषः। जीवा० २९२।

कांजिक–जहण्णेणं ज्ञावे कोदवोदणो जूहं, च तंदुलोदकं मुद्गरसो । नि० चू० प्र० ३२६ आ।

काइआण–निकाय । जं० प्र० ७५ ।

काइओ–कायिकः । आव० ७७८ ।

काइमाईया–गुच्छविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

काइय–कायिकी–प्रश्रवणम् । आव० ६३४ ।

काइयसमाहि–कायिकीसमाधिः । आव० ६१८ ।

काइया–चीयत इति कायः–शरीरं तत्र भवा तेन वा निर्वृता कायिकी, क्रियायाः प्रथमो भेदः । भग० १८१ । आव० ६११ । चीयते इति कायः शरीरं काये भवा कायेन निर्वृत्ता कायिकी । प्रज्ञा०४३५ । क्रियाः–व्यापारविशेषाः, तत्र कायेन निर्वृत्ता कायिकी कायचेष्टेत्यर्थः । सम०१०।

काइयामत्तो–कायिकीमात्रकम् । आव० ६३३ ।

काईया–कायिकी । आव० ५६ ।

काउंबरि–कादुम्बरि बहुबीजकवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

काउंबरिय–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

काउंबरो–काकोदुम्बरः–खादिमवृक्षविशेषः। आव० ८२८।

काउज्जुय–कायर्जुकः–कायेन ऋजुरेव ऋजुकः । उत्त० ५९० ।

काउज्जुयया–ऋजुकस्य–अमायिनो भावः कर्म्म वा ऋजुकता कायस्य ऋजुकता कायर्जुकता। ठाणा० १९६।

काउड्डावणे–कार्याकर्षणहेतुः । ज्ञाता० १८८ ।

काउदर–काकोदरः–दर्वीकरसर्पविशेषः । प्रश्न० ८ ।

काउय–कपोतः–बहुकृष्णरूपः । प्रज्ञा० ८० ।

काउलेसा–कपोतलेश्या–कपोतवर्णा लेश्या–धूम्रवर्णा । ठाणा० १७५ ।

काउस्सग्गो–कायस्योत्सर्गः कायोत्सर्गः । आव० ७७८।

काऊ–लोहे धम्यमाने यादृक् कपोतः–बहुकृष्णरूपोऽग्नेर्वर्णः। जीवा० १०३ । लेश्या कायवान् । आचा० २३१ ।

काऊअगणि–कृष्णाग्निः । सम० १३६ ।

काऊअगणिवण्णाभा–कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषां ते कृष्णाग्निवर्णाभाः । सम० १३६ ।

काए–कायः–शरीरं, देहः, बोन्दी, चयः, उपचयः, सङ्घातः, उच्छ्रयः, समुच्छ्रयः, कडेवरं, भस्त्रा, तनुः, पाणुरिति। आव० ७६७। पर्यायः, सामान्यरूपो निर्विशेषणो जीवत्वलक्षणः विशेषरूपो नैरयिकत्वादिलक्षणः। प्रज्ञा० ३७५। अष्टाशीतौ पञ्चत्रिंशत्तमो ग्रहः। जं० प्र० ५३८। कापोतिका। बृ० द्वि० १०१ अ। काकः–वायसः। ज्ञाता० २०५। कावोडी। नि० चू० प्र० १८७ अ। कवोडी। नि० चू० द्वि० १८ अ। अष्टाशीत्यां पञ्चत्रिंशत्तमो महाग्रहः। ठाणा० ७९ । कुहणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

काओ–कायः, जीवस्य विवक्षितः सामान्यरूपो विशेषरूपो वा पर्यायविशेषः । जीवा० १४० ।

काओअरा–दर्वीकरसर्पविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

काओली–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

काकंदी–काकंदी–सुविधिनाथजन्मभूमिः । आव० १६० ।

काकंधे–अष्टाशीत्यां महाग्रहे षट्त्रिंशत्तमः । ठाणा० ७९ ।

काक–भिक्षायां दृष्टान्तः । व्य० प्र० १६३ आ ।

काकजंघा–काकजंघा–वनस्पतिविशेषः । सा हि परिहृदय-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानस्नायुका-स्थूलसन्धिस्थाना च भवति इति तया जङ्घयोरुपमानम् । अनुत्त० ४ ।

काकणि-क्षत्रियभाषया राज्यम् । विशे० ४१० ।

काकणिरयणे-चक्रवर्त्तिनः सप्तमेकेन्द्रियरत्नम् । ठाणा० ३६८ ।

काकणी-सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनिः । ठाणा० ४७१ ।

काकतालीयम्-अवितर्कितसम्भवः, न्यायविशेषः । आचा० १८ ।

काकघट्टो-काकघृष्टः । आव० ५५४ ।

काकनः-पञ्चमं महाकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ ।

काकनाद-कुष्ठविशेषः । आचा० २३५ ।

काकमुख-रथाग्रभागः । जं० प्र० २४६ ।

काकपद-मणिलक्षणविशेषः । जं० प्र० १३८ ।

काकलि-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

काकली-मनोज्ञगीतादि । उत्त० ६३३ । सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनिः । ठाणा० ४७२ ।

काकस्सर-श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम् । ठाणा० ३६६ । ज० प्र० ४० ।

काकिणी-राज्यम् । बृ० द्वि० १५४ अ ।

काकुः- । जीवा० २६१ । प्रज्ञा० २४७ ।

काकुद-तालुकः । जं० प्र० ११३ । जीवा० २७३ ।

काकुपाठः- । भग० ३३ ।

काकुयं-काकुदं-तालु । प्रश्न० ८२ ।

काकोदरो-काकोदरः, दर्वीकरसर्पविशेषः । जीवा० ३६ ।

काकोली-साधारणवनस्पतिविशेषः । आचा० ५७ ।

कागंदी-काकन्दी-नगरीविशेषः । खेमतेऽवि गाहावतीनगरी । अन्त० २३ । जितशत्रुराजधानी । अनुत्त० २ । भद्रसार्थवाहीस्थानम् । अनुत्त० ८ ।

कागंदीए-काकन्दीनगरी तद्भवः । ज्ञाता० १६३ ।

कागजंघ-जहिं मणीपडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणिताणि कायाणि भण्णंति । नि० चू० प्र० २५४ आ ।

कागणि-कार्कणि-क्षत्रियभाषया राज्यम् । विशे० ४०६ ।

कागणिमंसं-काकणीमांसं श्लक्ष्णमांसखण्डम् । औप० ८७ । काकणीमांसं-तद्देहोत्कृत्त ह्रस्वमांसखण्डम् । विपा० ४७ । श्लक्ष्णखण्डपिशितम् । प्रश्न० ५६ ।

कागणिरयणं-काकणीरत्नम् । चक्रिणो रत्नविशेषः । जं० प्र० २३६ ।

कागणिलक्खण-द्वासप्ततौ कलायां द्वाचत्वारिंशत्तमा । ज्ञाता० ३८ ।

कागणी-रज्जं । नि० चू० प्र० २४३ आ । काकणी, चक्रिणो रत्नविशेषः । जं० प्र० १३८ । सपादा गुञ्जा । अनु० १५५ । रुप्पमयं । नि० चू० प्र० ३३०-अ ।

कागणीरयणे-काकणीरत्नम्-सुवर्णाष्टकनिष्पन्नम् । अनु० १७१ ।

कागभुत्तं-काकभुक्तं, यथा काक उच्चित्योच्चित्य विष्ठादेर्मध्याद्वल्लादि भक्षयति,विकिरति वा काकवत्सर्वं, काकवदेव कवलं प्रक्षिप्य मुखे दिशो विप्रेक्षते । ओघ० १६२ ।

कागलि-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कागवन्नो-काकवर्णः-शिल्पसिद्धदृष्टान्तः जितशत्रोरपरनाम । आव० ४१० ।

कागस्सर-काकस्वरं श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम् । अनु० १३२ । श्लक्ष्णस्वरेण काकस्वरम् । जीवा० १६४ ।

कागा-लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

कागिणी-काकिणिः-विंशतिकपर्दकाः । उत्त० २७२ । चक्रवर्त्तिरत्नम् । उत्त० ६५०, २७६ ।

कागिणीमंसगं-काकिणीमांसकं-श्लक्ष्णमांसखण्डम् । सूत्र० १२५ । श्लक्ष्णमांसम् । आव० ६५१ ।

कागो-काकः-वायसः । आव० ८५६ ।

काङ्क्षावान्-गृद्धः-मूर्छितः । आव० ५८७ ।

काच-काचः-पाषाणविकारः । औप० ६३ ।

काचनं-बन्धनम् । ठाणा० २२२ ।

काञ्चनकाभिधान- । ठाणा ३२७ ।

काञ्चनासंविधानकं- । प्रश्न० ८६ ।

काञ्जिकं-आरनालं । बृ० प्र० २६७ आ । सौवीरकम् । ठाणा० १४८ । अम्लम् । ठाणा० ४६२ । आरनालम् । ओघ० १५४ ।

काञ्जिकपत्रं-काञ्जिकेन बाष्पितम् । बृ० प्र०२६७ आ ।

काञ्जिका-आरनालम् । ओघ० २१५ ।

काडिअं-कौश्यौ, उभयप्रान्तौ । जं० प्र० २०१ ।

काण-काणः, भग्नाक्षः, स्फुटितनेत्रः । दश० २१५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचा० ३८९ ।

काणओ-चक्षुर्विकलः । बृ० द्वि० ११९ अ ।

काणकक्रयी-बहुमूल्यमपि अल्पमूल्येन चौराहृतं काणकं हीनं कृत्वा क्रीणातीत्येवंशीलः । प्रश्न० ५८ ।

काणक्रयेण- । उपा० ७ ।

काणगं-व्याधिविशेषात्सच्छिद्रम् । आचा० ३४९ ।

काणग-काणकः-चोरितमहिषः । व्य० प्र० २३१ आ ।

काणगमहिसो-जो चारिओ स काणगमहिसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

काणच्छि-काणाक्षः । नि० चू० प्र० २५७ अ । काणाक्षः । आव० २१८ । काणाक्षि । आव० २१८ ।

काणण-सामान्यवृक्षजातियुक्तानि नगराभ्यर्णवर्त्तीनि । स्त्रीणां पुरुषाणां वा केवलानां परिभोग्यानि वा । येभ्यः परतो भूधरोऽटवी वा तानि सर्वेभ्योऽपि वनेभ्यः पर्यन्तवर्तीनि वा । शीर्णवृक्षकलितानि वा । अनु० १५९ । स्त्रीपक्षस्य पुरुषपक्षस्य चैकतरस्य भोग्येषु वनविशेषेषु अथवा-यत्परतः पर्वतोऽटवी वा भवति तानि काननानि । ज्ञाता० ६७ । नगराद् दूरवर्त्ति वनखण्डः । भग० ४८३ । काननं-बृहद्वृक्षाश्रयैर्वनम् । उत्त० ४५१ । सामान्यवृक्षवृन्द नगरासन्नं काननम् । राज० ११२ । काननं सामान्यवृक्षवृन्दं नगरासन्नम् । जीवा० २५८ । सामान्यवृक्षोपेतं नगरासन्नं च । प्रश्न० १२७ । सामान्यवृक्षोपेतनगरासन्नवनविशेषः । प्रश्न ७३ । दूरवर्त्तिवनम् । आव० ५९८ । सामान्यवृक्षसंयुक्तं नगरासन्नं वनम् । भग० २३८ । सामान्यवृक्षवृन्दयुक्तानि नगरासन्नानि काननानि । ज्ञाता० ३९ ।

काणयं-काणकं-हीनम् । प्रश्न० ५८ ।

काणव-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

काणिट्ठ-लोहमय्य इष्टकाः । व्य० द्वि० १०६ आ । पाषाणमय्यः पक्वेष्टिका वा बलिका महत्यश्च कणिका, तन्मयगृहकारापकः । बृ० तृ० ५० आ ।

काणियं-काणितम् । आव० ३९६ । अक्षिरोगः । आचा० २३३ ।

काणो-काणः-दीपकाणः, फरलः । प्रश्न० २५ ।

काण्डं-धनुः । भग० ९३ ।

काण्डकरणं-उपकरणविशेषरूपम् । विशे० १२५९ ।

कातिता-कायिकी, कायचेष्टा । ठाणा० ३१७ ।

कातिते-कायिकं-शारीरिकम् । इडापिङ्गलादि प्राणतत्त्वम् । ठाणा० ४५२ ।

कादंबक-कादम्बाः, हंसविशेषाः । प्रश्न० ८ ।

कादम्बा-गन्धर्वभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

कादूसणिया-कम्-आत्मानं दूषयति तमस्कायपरिणामेन परिणमनात् कदूषणा सैव दूषणिका । भग० २६९ ।

काननं-अरण्यम् । दश० १४७ ।

काननद्वीपः-जलपत्तनम् । उत्त० ६०५ ।

कापालिक-दृष्टान्तविशेषः । नि० चू० प्र० १८० अ । चरगविसेसो । नि० चू० तृ० ३१ अ ।

कापालिका-अस्थिका । व्य० प्र० २०६ अ ।

कापिशायितं-मद्यविशेषः । जीवा० २६५ ।

कापिशायणं-कापिशयनं-मद्यविशेषः । जीवा० ३५१ ।

कापुरिसा-कापुरुषाः, कुत्सितनराः । ज्ञाता० ५० ।

कापोती-भारकायः, क्षीरभृतकुम्भद्वयोपेता कापोती भण्यते। आव० ७७० ।

काम-शब्दरूपगन्धाः । आव० ८२५ । काम्यमानत्वात् कामाः-मनोज्ञशब्यादयः । उत्त० ३१८ । विषयाः । उत्त० २७७ । स्त्रीसंगः । उत्त० २४३ । मैथुनसेवा । जीवा० १७३ । मनोज्ञशब्यादिकः । उत्त० १८८ । लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ । इच्छानङ्गरूपः कामः । आचा० ८९ । इच्छाकामः-अप्राप्तवस्तुकाङ्क्षारूपः । उत्त० ६६४ । स्वेच्छा । प्रज्ञा० ९९ । इच्छा । आव० ३६५ । रोगः । दश० ८६ । वाञ्छामात्रम् । भग० ८९ । मदनाभिलाषः । ठाणा० २९१ । इच्छा-अनुमतो वा । नि० चू० प्र० ७९ अ । अभिधारियो-अनुमयो वा । नि० चू० प्र० १४ आ । अवधृतार्थे द्रष्टव्यः । नि० चू० प्र० २३३ अ० । कामं-अनुमतम् । आव० ५२७ । सम्मतम् । पिण्ड० ४५ । अभ्युपगमः । सूत्र० ५३ । विमानविशेषः । जीवा० १३८ । तवेच्छया । आवा० ४०३ । कामशब्दः-मकरध्वजे अवधृतौ च । व्य० प्र० १४५ अ । कामौ-शब्दरूपे । उपा० ८ । कामः-इच्छा-मदनभेदभिन्नो विषयः । आव० ६६२ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामकंतं–कामकान्तं–विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामकमा–कामः–अभिलाषस्तेन क्रामन्तीति कामक्रमाः । उत्त० ४१० ।

कामकहा–कामकथा–रूपं सुन्दरं, वयश्चोदग्रं, वेषः उज्वलः, दाक्षिण्यं, मार्दवं, शिक्षितं च विषयेषु, शिक्षा च कलासु दृष्टमद्भूतदर्शनमाश्रित्य श्रुतं चानुभूतं च संस्तवः परिचयश्चेति कामकथा । दश० १०६, १०७ ।

कामकामे–कामकामः–कामेन–स्वेच्छया कामो–मैथुनसेवा यस्य सः–अनियतकाम इति । प्रज्ञा० ६६ ।

कामकूडं–कामकूटं–विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामगद्दहो–कामगर्दभः–मैथुने गर्दभ इवात्यन्तासक्तो जनः । पिण्ड० १३१ ।

कामगम–कामगमः–विमानविशेषः । औप० ५२ । कामगमः–स्वेच्छाचारी । प्रज्ञा० ६६ । कामगमः–यानविमानविकुर्वको देवविशेषः । जं० प्र० ४०५ ।

कामगुण–काम्यन्त इति कामाः–शब्दरूपरसगन्धस्पर्शास्त एव स्वस्वरूपगुणबन्धहेतुत्वाद् गुणाः कामगुणाः । आव० ६१५ । कामस्य–मदनाभिलाषस्य अभिलाषमात्रस्य वा सम्पादका गुणाः–धर्म्माः पुद्गलानां, काम्यन्त इति कामाः ते च ते गुणाश्चेति वा कामगुणाः । ठाणा० २६१ । शब्दादयः । प्रश्न० ९७ । काम्यन्ते–अभिलाषन्ते इति कामास्ते च ते गुणाश्च पुद्गलधर्माः–शब्दादय इति कामगुणाः, कामस्य वा मदनस्योद्दीपका गुणाः कामगुणाः शब्दादय इति । सम० ११ । कामगुणम् । आव० २०० । कामगुणः । मकरकेतुकार्यम् । अब्रह्मणस्त्रिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ६६ । आचा० ६६ । भग० ६६४ ।

कामजलं–स्नानपीढम् । आचा० ३६७ । ण्हाणपीढं । नि० चू० द्वि० ८३ आ ।

कामजाए–मनोज्ञशब्दादीनां प्रकारः समूहो वा । उत्त० २६१ ।

कामज्झयं–कामध्वजं, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामज्झया–कामध्वजा–वणिग्ग्रामे गणिका । विपा० ४५ ।

कामड्ढितगणे–महावीरस्य नवगणेषु सप्तमः । ठाणा० ४५१ ।

कामत्थिआ–कामार्थिनः मनोज्ञशब्दरूपार्थिनः । जं० प्र० २६७ । शब्दरूपार्थिनः । ज्ञाता० ५८ ।

कामदेव–उपासकदसायां द्वितीयमध्ययनम् । उपा० १ । येन श्रुते सामायिकमवाप्तम् । आव० ३४७ ।

कामध्वजगणिका–गणिकाविशेषः । ठाणा० ५०७ ।

कामप्पभं–कामप्रभं विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामफासे–कामस्पर्शः–अष्टाशीतौ ग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तमः । जं० प्र० ५३५ ।

कामभोग–काम्यन्त इति कामाः, भुज्यन्त इति भोगाः, ततश्च कामाश्च ते भोगाश्च कामभोगाः–अभिलषणीयशब्दादयः, यद्वा कामौ च शब्दरूपाख्यौ भोगाश्च स्पर्शरसगन्धाख्याः कामभोगाः । उत्त० २४३ । कामः–इच्छा भोगाः शब्दाद्यनुभवाः कामप्रतिबद्धा वा भोगाः कामभोगाः । आव० ३६५ । कामेषु–स्त्रीसङ्गेषु, भोगेषु धूपनविलेपनादिषु सः । उत्त० २४३ । कामौ च शब्दरूपलक्षणौ भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाः कामभोगाः, अथवा काम्यन्त इति कामाः–मनोज्ञास्ते च ते भुज्यन्त इति भोगाः–शब्दादयः ते कामभोगाः । ठाणा० १४३ । कामभोगः–शब्दादिभोगो मदनसेवा वा । औप० ४३ । भग० ६२५ । कामौ च शब्द रूपे भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाः कामभोगाः, अथवा काम्यन्त इति कामा मनोज्ञा ते च ते भुज्यन्त इति भोगाश्च शब्दादय इति कामभोगा । ठाणा० ६६ । कामभोगः, मदनकामप्रधानः शब्दादिविषयः विपाककटुश्च । दश० २७२ ।

कामभोगतिव्वाभिलासे–काम्यन्त इति कामाः शब्दरूपगन्धा भुज्यन्त इति भोगाः–रसस्पर्शाः कामभोगेषु तीव्राभिलाषः तदध्यवसायित्वं कामभोग तीव्राभिलाषः । आव० ८२५ ।

कामभोगमारो–कामभोगैः सह मारो–मदनः मरणं वा कामभोगमारः–अब्रह्मण एकविंशतितमं नाम । प्रश्न० ६६ ।

कामभोगरसगिद्धो–कामभोगरसगृद्धः–कामभोगेषु अभिहित स्वरूपेषु रसः–अत्यन्तासक्तिरूपस्तेन गृद्धास्तेष्वभिकाङ्क्षावान् । उत्त० २६५ ।

कामभोगासंसप्पओगे– कामभोगाशंसाप्रयोगः–कामभोगाभिलाषप्रयोगः । आव० ८३६ ।

काममहावण–वनविशेषः । भग० ६७५ ।

काममहावणे–काममहावनं–वाणारस्यां चैत्यविशेषः अन्त० २५ । ज्ञाता० २५१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामरए-कामलक्षणं रजः कामरजः । कामरतः । कामानुरागः । भग० ४८३ ।

कामरुवविउव्विणो-कामरूपविकरणाः, यथेष्टरूपाभिनिर्वृत्तनशक्तिसमन्विताः । उत्त० १८७ ।

कामरुविणो-कामरूपिणः-कामः-अभिलाषस्तेन रूपाणि कामरूपाणि तद्वन्तः-विविधवैक्रियशक्त्यन्विताः । उत्त० २५२ ।

कामल-और्णिकं, वस्त्रम् । व्य० द्वि० १९२ अ ।

कामलालसा-विषयलम्पटाः । उत्त० ५३० ।

कामलेसं-कामलेश्यं-विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामवन्नं-कामवर्णं-विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामविणए-शब्दादिविषयसम्पत्तिनिमित्तं तथा तथा प्रवर्तनं कामविनयः । उत्त० १७ ।

कामवृक्षः-वृक्षोपरिजातो वृक्षः । सूत्र० ३५२ ।

कामसमणुन्ने-कामसमनोज्ञः कामाः-इच्छामदनरूपाः सम्यग् मनोज्ञा यस्य स, अथवा सह मनोज्ञैर्वर्त्तत इति समनोज्ञः, कामैः सह मनोज्ञः कामसमनोज्ञः, यदिवा कामान् सम्यगनु-पश्चात् स्नेहानुबन्धाज्जानाति सेवत इति कामसमनुज्ञः । आचा० १२५ ।

कामसिंगारं-कामशृङ्गारं-विमानविशेषः । जी० १३८ ।

कामसिट्ठं-कामशिष्टं-विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामा-काम्यन्त इति कामाः स्त्रीगात्रपरिष्वङ्गादयः । सूत्र० २९५ । इच्छामदनरूपाः,गन्धालङ्कारवस्त्रादिरूपा वा । सूत्र० १८४ ।

कामावत्तं-कामावर्तं-विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

कामावसयिता- । सूत्र० १८४ ।

कामासंसपओग-कामाशंसाप्रयोगः-शब्दादावभिलाषकरणः । ठाणा० २७५ ।

कामिंजुया-लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ ।

कामिकतीर्थं-लौकिकतीर्थम् । विशे० ४१० ।

कामियसर-सरःविशेषः । बृ० प्र० ४७ आ ।

कामी-पंचविसया कामेतित्ति कामी । नि० चू० द्वि० १६० अ ।

कामे-कामयते-सेवते । दश० १९८ ।

कामेयगो-लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।

कामोत्कोचकारि- । प्रश्न० १४१ ।

कामोत्तरावडिंसए-कामोत्तरावतंसकः, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।

काम्पिल्य-अङ्गदेशे नगरी । ज्ञाता० १२५ । पञ्चाला यत्र काम्पिल्यं-नगरम् । ज्ञाता० १२५ ।

काम्पिल्यपुरं-द्रुपदराजधानी । प्रश्न० ८७ ।

कायंदी-काकन्दी, पुरुषपुण्डरीकवासुदेवनिदानभूमिः । आव० १६३ । नगरीविशेषः । भग० ५०१ ।

काय-जीवस्य निवासात् पुद्गलानां चितेः पुद्गलानामेव केषाञ्चित् शरणात्, तेषामेवावयवसमाधानात् कायः-शरीरम् । आव० ४५६ । भूमिस्फोटकविशेषः । आचा० ५७ । औदारिकादित्रयं घातिचतुष्टयं वा, अथवा-चीयत इति कायः । आचा० २५८ । प्रचयः । ठाणा० २१७ । निकायः । उत्त० ६९० । महाकायः । सूत्र० २७७ । कायः-राशिः । प्रदेशराशिः । भग० १४८ । निजदेहः । आव० ५४७ । कापोती, यया स्कन्धारुढया पुरुषाः पानीयं वहन्ति । पिण्ड० ३६ । चीयत इति कायः निकाय इति । उत्त० १८२ । गणः निकायः स्कन्धः वर्गः राशिः । विशे० ४१६ । कागः, काकविद्या । आव० ३१८ । गणः, निकायः स्कन्धः वर्गः राशिः पुञ्जः पिण्डः निकरः-सङ्घातः आकुलः समूहः । विशे० ४२६ । कायिकाभूमि गृहस्थसंबद्धां पश्यति । ओघ० ५६ । निकायः, पृथिव्यादिसामान्यरूपः । ठाणा० ६७ । औदारिकादिः शरीरः पृथिव्यादिषट्कायान्यतरो वा । भग० ३४७ । वंसो । दश० चू० १३१ । द्विपदादीनां प्रतिरूपम् । बृ० तृ० ६८ आ ।

कायकालः-कायस्थितिः । ठाणा० ३ ।

कायकिलेसो-कायक्लेशः-बाह्यतपो विशेषः । वीरासनादिभेदरूपः । दश० २९ । बाह्यतपःपञ्चमभेदः । भग० ९२१ ।

कायकोक्कुईया-कायकौकुच्यम्, यत्स्वयमहसन्नेव भ्रूनयनवदनादि तथा करोति यथाऽन्यो हसति । उत्त० ७०६ ।

कायकोडिया-काचो-भारोद्वहनं तस्य कोटी-भागः काचकोटी तथा ये चरन्ति काचकोटिकाः । ज्ञाता० १५२ ।

कायकं-काचकं-कचकवृक्षफलम् । आव० ५३० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायगुत्ती–गमणागमणपचलणादाणण्णसणप्फंदणादिकिरिया-णगोवणं कायगुत्ती । नि० चू० प्र० १७ अ ।

कायगुप्तिः–शायनासनादाननिक्षेपस्थानचंक्रमणेषु कायचेष्टा-नियमः । तत्त्वा० ९–४ ।

कायगो–क्रायकः । आव० ९७ ।

कायजोग–काययोगः–औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्य-परिणतिविशेषः । आव० ६०६ ।

कायछक्कं–कायषट्कं कायानां पृथिव्यादीनां षट्कं । सम्य-गनुपालनविषयतया ऽनगारगुणाः । आव० ६६० ।

कायट्ठिई–कायो नाम जीवस्य विवक्षितः सामान्यरूपो विशेषरूपो वा पर्यायविशेषस्तस्मिन् स्थितिः कायस्थितिः, यस्य वस्तुनो येन पर्यायेण जीवत्वलक्षणेन पृथिवीकायादि-त्वलक्षणेन वाऽऽदिश्यते व्यवच्छेदेन यद्भवनं सा । जीवा० १४० ।

कायट्ठिति–काये–निकाये पृथिव्यादिसामान्यरूपेण स्थितिः–कायस्थितिः असङ्ख्योत्सर्पिण्यादिका । सप्ताष्टभवग्रहणरूपा । ठाणा० ६६ । काय इव कायः । तत्र सामान्यरूपो निर्वि-शेषणो जीवत्वलक्षणः, विशेषरूपो नैरयिकत्वादिलक्षण-स्तस्य स्थितिः-अवस्थानं कायस्थितिः । सामान्यरूपेण विशे-षरूपेण वा पर्यायेणादिष्टस्य जीवस्य यदव्यवच्छेदेन भवनं सा । प्रज्ञा० ३७५ ।

कायठिई–कायस्थितिः–काय इति पृथिवीकायस्तस्मिन् स्थितिः ततोऽनुद्वर्तनेनावस्थानम् । उत्त० ६९० । आचा० ८८ । कायकालः । ठाणा० ३ । कायस्थितिः–प्रज्ञापनायामष्टा-दशं पदम् । भग० ३५७ । प्रज्ञा० ६ । जीवा० १४१ ।

कायणुवाए–जहा दगतीरे असंवसंवातिमेसु कायगुवाए । नि० चू० तृ० १४८ आ ।

कायतिगिच्छा–कायस्य–ज्वरादिरोगग्रस्तस्य चिकित्सा प्रति-पादकं तन्त्रं कायचिकित्सा । ठाणा० ४२७ ।

कायदुक्कड–कायदुष्कृतः–आसन्नगमनादिनिमित्ता । आव० ५४८ ।

कायदुप्पणिहाणे–कायदुष्प्रणिधानम्–कृतसामायिकस्याप्रत्यु-पेक्षितादिभूतलादौ करचरणादीनां देहावयवानामनिभृतस्था-पनम् । आव० ८३४ ।

कायपरित्तो–कायपरीत्तः प्रत्येकशरीरी । जीवा० ४४६ ।

कायपरीते–कायपरीतः यः प्रत्येकशरीरी स । प्रज्ञा० ३९४ । प्रत्येकशरीरी । प्रज्ञा० १३९ ।

कायबलिआ–कायबलिकाः-क्षुधादिपरीषहेष्वग्लानीभवत्का-याः । औप० २८ ।

कायबलिय–कायवलिकाः परीषहापीडितशरीरः।प्रश्न०१०५।

कायभव–काये–जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेह एव यो भवः जन्म सः कायभवः । भग० १३३ ।

कायभावो–काचभावः–काचधर्मः । आव० ५२१ ।

कायमओ–काचमयः । आव० ५५९ ।

कायमणिआ–काचमणि–कायः । आव० ७६६ ।

कायमणियओभीसे– । ओघ० २२३ ।

कायमणीय–काचमणिकः–कुत्सितः काचमणिः । आव० ५२१ ।

कायमाणं–कायमानम् । ओघ० ४६ ।

कायमाणमंडवो– नि० चू० प्र० २३० अ ।

काययोगः–औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणति-विशेषः । आव० ५८३ ।

कायरए–आजीविकोपासकः । भग० ३७० ।

कायराः–कातराः–परीषहोपसर्गोपनिपाते सति विषयलो-लुपा वा । आचा० १५३ । चित्तावष्टम्भवर्जिताः । ज्ञाता० ५२ ।

कायरिए–वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० १९९ ।

कायरिया–कातरिका–माया । सूत्र० ५७ ।

कायवरो–काचवरः–प्रधानकाचः । प्रश्न० १५३ ।

कायविसए–कायाणि–कायविसए । नि०चू०प्र०२५४आ

कायसंकिलेसे–कायमाश्रित्य सङ्क्लेशः–असमाधिः काय-संङ्क्लेशः । ठाणा० ४८९ ।

कायसंवेहो–विवक्षितकायात्–कायान्तरे तुल्यकाये वा गत्वा पुनरपि यथासम्भवं तत्रैवागमनम् । भग० ८०९ ।

कायसंसिओ–कायसंसृतः–देहसङ्गतः । दश० १२७ ।

कायसुखता–काये सुखं–यस्यासौ कायसुखस्तद्भावः काय-सुखता । प्रज्ञा० ४६२ ।

कायस्वभावः–अनित्यता दुःखहेतुत्वं निःसारता अशुचि-त्वम् । त० ७–७ ।

कायाणि–जहिं मणी पडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणि

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताणि कायाणि भण्णंति । दुते वा काये रत्ताणि कायाणि । नि० चू० प्र० २५४ आ । क्वचिद्देशे इन्द्रनीलवर्णः-कर्पासो भवति तेन निष्पन्नानि कायकानि । आचा० ३६४।

कायापरीत्तः-साधारणशरीरी । जीवा० ४४६ ।

कायिका-उच्चारभूमिः । आव० ७८१ । प्रश्रवणम् । आव० ७६८ ।

कारं-राजदेयं द्रव्यम् । भग० ४८१ ।

कारंडग-कारण्डकः-पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

कार-वैयावृत्यादिकरणः । बृ० प्र० ४३ अ, ५२ आ ।

कारओ-कारकः । विधायकः । उत्त० ३१३ ।

कारक-हेतुः । नं० १६५ । सम्यक् । विशे० १०६४ कर्तारम् । बृ० प्र० १५८ आ । हेतुर्व्यञ्जको वा । आव० ५६७ । सिप्पी ।

कारगं-करोतीति कारकं उदाहरणम् । ओघ० ११ । साधुः । सम्यग्दर्शनाद्यनुष्ठाना । आचा० ४१६ । क्रिया । बृ० प्र० ५२ आ ।

कारगसुत्तं-कारकसूत्रं । सूत्रस्य द्वितीयो भेदः । बृ० प्र० ५० आ ।

कारगारी-अपराधी । दश० ६८ ।

कारण-हेतुः, निमित्तम् । विशे० २७६ । उपपत्तिमात्रम् । भग० ११६ । आव० ६२ । अन्यथाऽनुपपत्तिमात्रम् । उत्त० ३०८। उपपत्तिमात्रं दृष्टान्तादिरहितम् । उत्त० ३०८ । परोक्षार्थनिर्णयनिमित्तमुपपत्तिमात्रं । ठाणा० ४६३ । कारणं नामालम्बनं । प्रज्ञा० ६७ । हेतुः-उपपत्तिमात्रम् । विशे० ४६३ । प्रयोजनम् । विशे० ८७६ । आव० ५२४ । करोतीति कारणं, कार्यं निर्वर्त्तयतीति । आव० २७७ । स्वेन व्यापारेण कार्ये यदुपयुज्यते तत्करणं । आव० २७८ । बाह्यकारणम् । प्रज्ञा० २२३ । करोतीति कारणं-परोक्षार्थनिर्णयनिमित्तमुत्पत्तिमात्रम् । ठाणा० ४६२ । कारणं-ज्ञानादिव्यतिरिक्तं कारणमाश्रित्य वन्दते तत् कृतिकर्मणि पञ्चदशो दोषः । आव० ५४४ । इष्टार्थानां हेतुः-कृषि पशुपोषणवाणिज्यादिः । भग० ७३६ । कारणः-हेतुः । प्रज्ञा० १८० ।

कारणजाए-कारणजातः-कारणप्रकारः । उत्त० २३५ ।

कारणपडिसेवि-अकृत्यं यतनया प्रतिसेवते इत्येवंशीलः कारणप्रतिसेवी । व्य० प्र० ८ अ ।

कारणभूता-प्रमाणभूताः । नि० चू० प्र० ३२० अ ।

कारणविणासाभाव-कारणविनाशाभावः । दश० १२८ ।

कारणविभागाभाव-कारणविभागभावः कारणविभागाभावात् न खलु जीवस्य पटादेरिव तन्त्वादिकारणविभागोऽस्ति कारणाभावादेव । दश० १२८ । कारणविरुद्ध-कार्योपलम्भानुमानम् । ठाणा० २६३ । कारणविरुद्धोपलम्भानुमानम् । ठाणा० २६२ ।

कारणसूई- याः-परव्यपरोपणादिकारणमुद्दिश्य कारयित्वा परस्य नखमूलादौ कुट्यन्ते ताः कारणसूच्यः । बृ० द्वि० २२३ आ ।

कारणा-यातना । व्य० प्र० २१० अ ।

कारणाइं-कारणानि-विवक्षितार्थनिश्चयस्य जनकानि । ज्ञाता० ११० ।

कारणानि-ज्ञातानि । सम० ११८ ।

कारणानुपलम्भानुमानम्-न्यायविशेषः । ठाणा० २६३ ।

कारणिक-विवादनिर्णायकः । अनु० ३१ । विशे० ६२३ । राजपुरुषाः । नंदी० १५२, १५६ । विशे० ४१६ ।

कारणिय-कारणिकः, न्यायकर्त्ता । आव० ७१८ । गुरुवैयावृत्यादिना व्यापृतः । आव० ७७८ । न्यायालयसत्कः पुरुषः । उत्त० ३०१ ।

कारणिया-कारणिका । आव० ६६ । कारणिका । नि० चू० प्र० ११२ अ । नि० चू० प्र० १३५ अ ।

कारणे-वेदनादिकारणमन्तरेण भुञ्जानस्य कारणदोषः । ग्रासैषणादोषे पंचमो दोषः । आचा० ३५१ ।

कारणेसु-कारणेषु-सिसाधयिषितप्रयोजनोपायेषु विषयभूतेषु ये मन्त्रादयो व्यवहारान्तास्तेषु । विपा० ४० ।

कारय-यस्मिन् सम्यक्त्वे सति सदनुष्ठानं श्रद्धत्ते, सम्यक् करोति च तत् कारयति सदनुष्ठानमिति कारकं सम्यक्त्वमुच्यते । विशे० १०६४ ।

कारवाहिआ-करं-राजदेयं द्रव्यं वहन्तीत्येवंशीलाः कारवाहिनस्त एव कारवाहिकाः कारबाधिता वा । जं० प्र० २६७ ।

कारवाहिया-करपीडिताः, नृपाभाव्यवाहिनो वा । औप० ७३ । कारं-राजदेयं द्रव्यं वहन्तीत्वंशीयेलाः कारवा-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिनस्त एव कारवाहिकाः, करवाधिता वा। भग० ४८१।

कारागृहम्-कारागारम्। उत्त० ५५५।

कारापकः-करणं कारस्तं कारयति कारापयतीति णके च कारापकः। आव० २६०।

कारापणे- । नि० चू० प्र० १०३ आ।

कारियणिमित्तकरणं-कारितनिमित्तकरणम्-सम्यगर्थपद-मध्यापितमस्माकं विनयेन विशेषेण वर्त्तितव्यं, तदनुष्ठानं च कर्त्तव्यम्। दश० ३१।

कारियनिमित्तकरणं-सम्यक् शास्त्रपदमध्यापितस्य विशेषेण विनये वर्त्तनं तदार्थानुष्ठानम्। सम० ६५।

कारियल्लई-वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

कारी-अपराधी। आव० ३४६। कर्त्तारः। अपराधिनः। आव० ६७२। अपराधिनी। दश० ६६।

करीषाग्निसमानः-फुम्फुकाग्निसमानः परिमलमदन-दाहरूपः। जीवा० ६५।

कारुअवण्णे- । जं० प्र० १६४।

कारुइज्ज-कारुकः, कारुकजातिविशेषः। करुटच्छिम्पकादिषु भवा कारुकीया। प्रश्न० ३०।

कारुण्यं-अनुकंपा, दीनानुग्रहः। त० ७-६।

कारुय-कारुकः-वरुटच्छिम्पकादिकः। प्रश्न ३०।

कारेल्लकं-वल्लीविशेषफलम्। अनुत्त० ६।

कारोडिआ-कारोटिकाः, कापालिकाः, ताम्बूलस्थगी-वाहका वा। जं० प्र० २६७। कापालिकाः। भग० ४८१।

कारोडिय-कारोटिकः। आव० १६१। कारोडिकः। कापालिकः। ताम्बूलस्थगिकावाहको वा। औप० ७३।

कार्तिकः-रोहितकेशचियभिन्नो मुनिः। सं०।

कार्त्तिकश्रेष्ठी-शक्रस्य पूर्वभवः। भग० ३२२।

कार्पटिकः-दीनकृपणः। दश० २६०। पिण्ड० १४०।

कार्मग्रन्थिकपरिभाषा- । उत्त० ५८६।

कार्मग्रन्थिका- । प्रज्ञा० ३६१।

कार्मणं-लक्षणतः संवत्सरं कार्मणं, यस्य ऋतुसंवत्सरः सावनसंवत्सरश्चेति पर्यायौ। ठाणा० ३४५।

कार्मणबन्धननाम-यदुदयात् कार्मणपुद्गलानां गृहीतानां गृह्यमाणानां च परस्परं सम्बन्धस्तत्कार्मणबन्धननाम। प्रज्ञा० ४७०।

कार्मणसङ्घातनाम-यदुदयवशात् कार्मणशरीररचनानु-कारिसङ्घातरूपा (परिणतिः) जायते तत्। प्रज्ञा० ४७०।

कार्यं-नेम (देशी)। पिण्ड० २८।

कार्यकारणभावः-न्यायविशेषः। आचा० ६६।

कार्यनिमित्तको विनयः-संग्रहमुपसंग्रहं वा मे करिष्यतीत्येवं बुद्धचा यो विनयः क्रियते सः। विनयस्य तृतीयो भेदः। व्य० प्र० २० आ।

कार्यव्यासङ्गात्-न्यायविशेषः। आचा० १०६।

कार्यानुपलब्ध्यनुमानम्-न्यायविशेषः। ठाणा २६३।

कार्यानुमानम्-न्यायविशेषः। ठाणा० २६२।

कार्षापण-माषः। प्रज्ञा० २५७। उत्त० २७६।

कालंजरवत्तिणी-कालञ्जरवर्त्तिनी-गङ्गामहानद्याविन्ध्यस्य चान्तरा अटवी। आव० ३४८।

कालंबवालुआ-कदंबवालुका-कदम्बवालुकानदीपुलिनम्। उत्त० ४५६।

काले-कालः-दक्षिणनिकाये प्रथमो व्यन्तरेन्द्रः। भग० १५७। तृतीयप्रथमप्रहरादिः। विपा० ६६। पिशाचेन्द्रः। जीवा० १७४। तमतमापृथिव्यां प्रथमो महानिरयः। प्रज्ञा० ८३। सप्तमः परमाधार्मिकः। सूत्र० १२४। आव० ६५०। पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु सप्तमः। उत्त० ६१४। कालानुयोगः। गणितानुयोगश्चेत्यर्थः। दश० ४। तृतीया पौरुषी। बृ० प्र० ६८ अ। अधिकृतावसर्पिणीचतुर्थ-भागरूपः। सूर्य० १। अष्टाशीत्यां महाग्रहे षट्पञ्चा-शत्तमः। जं० प्र० ५३५। कलनं-कालः कलासमूहो वा। आव० ४६५, ५६३। श्वा। स्वाध्यायकालः। मर-णम्। आव० २७५। कोणिकबन्धुः। आव० ६८३, ६८४। कोणिकस्य दण्डनायकः। आव० ६८४। कालः-कलासमूहो वा कालः। नि० चू० प्र० ५ आ। स्थितिः, प्रमाणं वा। ठाणा० ७६। मरणं, मारणान्तिकसमु-द्घातः। भग० ६५०। यः कण्ड्वादिषु पचति वर्णतः कालश्च स कालः। परमाधार्मिकसप्तमनाम। सम० २८। अष्टाशीत्यां महाग्रहे अष्टपञ्चाशत्तमः। ठाणा० ७६। पिशाचेन्द्रः। ठाणा० ८५। ज्ञाता० २५२। वेलम्बे-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्द्रस्य लोकपालः। प्रभञ्जनस्य लोकपालः। प्रथमो वायुकुमारः। ठाणा० १९८। प्रथमस्य वडवामुखपातालकलशस्याधिष्ठाता देवः। जीवा० ३०६। ठाणा० २२६। नवमहानिधौ षष्ठनिधिः। ठाणा० ४४८। गणितानुयोगः। जं० प्र० २। वर्तमानावसर्पिणीचतुर्थारकविभागरूपः। जं० प्र० १३। प्रस्तावः। उत्त० ४८६। मृत्युः। आचा० १२२। अवसरादिः। भग० ७७३। कलनं-कालः, कलासमूहो वा कालः,तेण वा कारणभूतेन, दव्वादिचउक्कयं कलिज्झतीति कालः-ज्ञायत इत्यर्थः। नि० चू० प्र० ५ आ। कालविषयम्। वृ० प्र० २०१ आ। निरयावलिकानां प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। निरय० ३। कल्यते-संख्यायतेऽसावनेन वा कलनं वा कला-समूहो वेति कालः वर्त्तनापरापरत्वादिलक्षणः। ठाणा० ५५। समयः। ठाणा० १९८। ठाणा० २०१। अवस्थितिः। भग० ५३३। नारकादित्वेन स्थितिर्जीवानां सः। नारकादिभवेऽवस्थानं सः। ठाणा० २०१। सञ्ज्ञाकालः। ओघ० १२२। कृष्णवर्णः, कृष्णश्च स्वाध्यायकालः। विशे० ८५४। स्वाध्यायकालः। शुना। मरणम्। आव० २७५। सुभिक्षदुर्भिक्षादिः कालः। आव० ८३७। प्रक्रमात् पतनप्रस्तावः। उत्त० ३३४। कालः। दिवसस्य प्रहरत्रयलक्षणः। भग० २९२। विमानविशेषः। सम० ३५। आमलकल्पानगर्यां गृहपतिविशेषः। कालवत्तंसकविमाने सिंहासनम्। ज्ञाता० २४७। मरणधर्मः। जं० प्र० १५८। दीर्घकालिकसंज्ञा। विशे० २८१। मरणम्। दश० ९। विशे० ८३७। विपा० ८०। क्षीयमाणादिलक्षणः। दश० ११५। कूणिकराज्ञो भिन्नमातृको भ्राता। भग० ३१६। षष्ठो निधिविशेषः। जं० प्र० २५८। गणितः। आव० २९६।

कालए- । जीवा० ३७०।

कालकंखी-कालम्-अनुष्ठानप्रस्तावं काङ्क्षत इत्येवंशीलः कालकांक्षी। उत्त० २६९।

कालक-विद्याप्रदानाय प्रशिष्यसकाशमागत आचार्यविशेषः। आव० ५२३।

कालकरणं-चन्द्रादित्यादिज्योतिषिकदेवगतिविशेषेण यद् भवति तत्। विशे० १२७५।

कालकाचार्यः-गुणननिमित्तमनुयोगे द्रष्टान्तः। बृ० प्र० ३९ अ। प्रवचनप्रत्यनीकशासकः। बृ० तृ० १५६अ, बृ० तृ० १५५ अ।

कालकाल-तत्रैकः कालशब्दो वर्त्तनादिरूपः। द्वितीयस्तु समय परिभाषया कालो मरणमुच्यते, ततश्च कालस्य मरणं क्रियारूपस्य कलनं कालःकाल इत्यर्थः। विशे० ८३७ अ। अभीष्टवस्त्ववाप्त्यवसरः, कालो, मरणं। मरणक्रियायाः कलनं काल इत्यर्थः। दश० ९। मरणक्रियाकलनं कालकालः। आव० २५७।

कालकूटं-कालकूटनामकं विषम्। उत्त० ४७८।

कालखमणो-कालक्षपणः-कालकाचार्यः। उत्त० १२७।

कालगज्ज-कालकाचार्यः। नि० चू० प्र० ३०३ अ।

कालगतिल्लतो-कालगतः। उत्त० १९०।

कालगय-कालगतः-मृतः। आव० ६२९।

कालगहिया-कालेन मृत्युना गृहीताः, पौनःपुन्यमरणभाज इत्यर्थः। धर्मचरणाय वा गृहीताः-अभिसन्धितः कालो यैस्ते कालगृहीताः। आचा० १८४।

कालग्गं-कालाग्रं-अधिकमासकः। यदिवाऽग्रशब्दः परिमाणवाचकस्तत्रातीतकालोऽनादिरनागतोऽनन्तः सर्वाद्धा वा। आचा० ३१८।

कालग्गहो-कालग्राही। व्य० द्वि० २५२ अ।

कालचक्कं-कालचक्रं। आव० २१७।

कालचारी-कालचारिणी-एतादृशी संयती। कालचारिश्रमणीयुक्तः। ओघ० ५७।

कालच्छेदे-कालपर्यन्ते। ओघ० २१३।

कालण्णाण-कालज्ञानं-सकलज्योतिःशास्त्रानुबन्धिज्ञानम्। जं० प्र० २५८।

कालदोस-कालदोषः-अतीतादिकालव्यत्ययः। सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे एकविंशतितमः। आव० ३७४। अनु० २६२।

कालधम्म-कालो-मरणं तल्लक्षणो धर्मः-पर्यायः कालधर्मः। विशे० १००३।

कालधम्मु-कालधर्म्मः-मरणः। ठाणा० १४३।

कालनिषीथं-कृष्णरजन्योः यत्र वा काले निषीथं व्याख्यायत इति। आचा० ४०८।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालपएसे–कालप्रदेशः–एकादिसमयः । प्रज्ञा० २०२ ।

कालपक्ख–कृष्णपक्षः । आव० ३४६ ।

कालपरियाए–मृत्युरवसरोऽत्रापि ग्लानावसरेऽसावेव कालपर्याय इति । आचा० २८२ ।

कालपाले–धरणेन्द्रस्य प्रथमलोकपालः । ठाणा १९७ ।

कालपोराणं–कृष्णपर्वणां उपरितनपत्रसमूहापेक्षया हरितालवत्पिञ्जराणां । जीवा० ३५५ ।

कालप्रत्युपेक्षणा–उचितानुष्ठानकरणार्थं कालविशेषस्य पर्यालोचना । ठाणा० ३६१ ।

कालप्रायश्चित्तं–त्रिविधप्रायश्चित्ते तृतीयम् । बृ० प्र० ४८ आ० ।

कालभूमी–कालभूमिः–कालमण्डलाख्या भूमिः । आ०७८४ ।

कालभेदः–अतीतादिनिर्देशे प्राप्ते वर्त्तमानादिनिर्देशः । ठाणा० ४९६ ।

कालभोइ–जो मज्झण्हे भुंजइ अणत्थमिए वा । नि० चू० तृ० ३८ आ० ।

कालमण्डला–कालभूमिः । आव० ७८४ ।

कालमरण–यस्मिन् काले मरणमुपवर्ण्यते क्रियते वा । उत्त० २२९ ।

कालमहं–कालमहत्–अनागताद्धा । उत्त० २५५ ।

कालमासा–मासाभेदः । ज्ञाता० १०७ ।

कालमासिणी–कालमासवती–गर्भाधानान्नवममासवती । दश० १७१ । नवमे मासे गब्भस्स वट्टमाणस्स । दश० चू० ७९ ।

कालमासे–कालस्य–मरणस्य मासः । उपलक्षणं चैतत्पक्षाहोरात्रादेस्ततश्च कालमासे-मरणावसर इतिभावः। ठाणा०९९।

कालमिगपट्ट–कालमृगपट्टः–कालमृगचर्म । जं० प्र० १०७। जीवा० २६९ ।

कालमियचम्म–कालमृगचर्म । ज्ञाता० २२० ।

कालमुही–कृष्णमुखी–उपद्रवकारिण्या विशेषणम् । ओघ० १७ ।

कालमुहे–कालमुखः । म्लेच्छविशेषः । जं० प्र० २२० ।

कालमूढो– । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

कालवडिंसगभवणे–चमरचञ्चाराजधान्यां भवनम्। ज्ञाता० २४७ ।

कालवत्तिणि–कालवर्त्तिनी–काले–भोगकाले यौवने वर्त्तत इति । अन्त० १२ ।

कालवादी–अस्ति जीवः स्वतो नित्यश्च कालत इति वादी। आव० ८१६ ।

कालवादिनः–विद्यते खल्वात्मा स्वेन रूपेण नित्यश्च कालवादिनः । सम० ११० । विद्यते खल्वयमात्मा स्वेन रूपेण न परापेक्षया ह्रस्वदीर्घत्वे इव नित्यश्च कालवादिनः। ठाणा० २६८ ।

कालवाल–नागकुमारेन्द्रस्य लोकपालः । भग० ५०४ ।

कालवासी–काले–प्रावृषि वर्षतीति एवंशीलः–कालवर्षी । काले जिनजन्मादिमहादौ वर्षतीतिकृत्वा । भग० ६३४ । कालवर्षी–अवसरवर्षीति । ठाणा० २७० ।

कालवेसि–जितशत्रुपुत्रः शृगालभक्षितः । म० २० ।

कालवेसिय–कालवेसिकः । मथुरायां कालाभिधवेश्यायाः पुत्रः । उत्त० ९२० ।

कालशौकरिकः–निरुपक्रमायुषि द्रष्टान्तः । भग० ७९६ । नरकादिकुगतिप्राप्तौ द्रष्टान्तः । उत्त० २७२ ।

कालसंजोग–कालसंयोगः–समयक्षेत्रमध्ये आदित्यादिप्रकाशसम्बन्धलक्षणः । ठाणा० ३५९ ।

कालसंदीवो–कालसन्दीपकः । आव० ६८६ ।

कालसंधिय–कालसन्धिता–काले स्वस्वोचिते सन्धानं सन्धा कालसन्धा सा सञ्जातैषामिति । जीवा० २६५ ।

कालसंयोगो–वर्त्तनादिकाललक्षणानुभूमिः मरणयोगो वा। ठाणा० १३३ ।

कालसमए–कालसमयः । सूर्य० ९० । कालेन–तथाविधेनोपलक्षितः समयः–अवसरः कालसमयः । सूर्य० २९४ ।

कालसिरी–कालगृहपतेर्भार्या । ज्ञाता० २४८ ।

कालसीमा–तस्यामेव सार्द्धत्रयस्त्रिंशति त्रिशतागुणितायां १००५ सप्तषष्ट्या हृतभागायां यल्लब्धं तदेषां कालसीमा। सम० ८० ।

कालसुणगो–कालसुनकाः–कालश्वानः । जीवा० २८२ ।

कालसूरियं–कालशौकरिकं, श्रेणिकस्य नरकनिवारणे द्रष्टान्तः । आव० ६८१ ।

कालसोयरि–विनयबहुमानचतुर्भङ्ग्यां चतुर्थे द्रष्टान्तः । नि० चू० प्र० ८ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालसोकरिकः–नामविशेषः । सूत्र० १७८ । महदापद्गतोऽपि स्वतः महदापद्गतेऽपि च परे आमरणादसञ्जातानुतापः । आव० ५६० । अभव्यकुमुदम् । बृ० प्र० १८८ ।

कालसौकरिकादिः– । सूत्र० १२२ ।

कालहत्थी–कालहस्ती कलम्बुकायां प्रत्यन्तिकः । आव० २०६ ।

कालहय–कालहतः–ग्रामेयकविशेषः । आव० ५५४ ।

कालहेसिं–काले–अराजकानां राजनिर्णयार्थके अधिवासनादिके समये हेषते शब्दादयतीत्येवंशीलं कालहेषि । जं० प्र० २३७ ।

काला–कालार्थ एकादशः । भग० ५११ । पिशाचभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० । मथुरायां जितशत्रुराजवेश्या । उत्त० १२० । काला सन्निवेशः । सिंहविद्युन्मतीगोष्ठीस्थानम् । आव० २०१ ।

कालाइक्कमो–कालस्यातिक्रमः, कालातिक्रमः । आव० ८३८ ।

कालाएस–कालप्रकारः । कालतः । भग० ८०६ ।

कालागुरु–गन्धद्रव्यविशेषः । सम० ६१ । कृष्णागुरुः । प्रश्न० ७७ । गन्धद्रव्यविशेषः । कृष्णागुरुः । सम० १३८ । कृष्णागुरुः । जं० प्र० ५१ । सुगन्धिद्रव्यविशेषः । जीवा० १६०, २०६ । प्रज्ञा० ८७ ।

कालाणुट्ठाई–यद्यस्मिन् काले कर्त्तव्यं तत्तस्मिन्नेवानुष्ठातुं शीलमस्येति कालानुष्ठायी, कालानतिपातकर्त्तव्योद्यतः । आचा० १३२ ।

कालातिक्कंत–कालं–दिवसस्य प्रहरत्रयलक्षणं अतिक्रान्तः कालातिक्रान्तः । भग० २९२ ।

कालातिक्कंता–ऋतुबद्धे काले वर्षाकाले च यत्र स्थितास्तस्यामृतुबद्धे काले मासे पूर्णे वर्षाकाले चतुर्मासे पूर्णे यत् तिष्ठति सा कालातिक्रान्ता । बृ० प्र० ९३ अ । तृष्णाबुभुक्षाकालाप्राप्ताः । ज्ञाता० ११३ ।

कालापाय–काल इत्यत्रापि कालादपायः कालापायः, काल एव वा । दश० ३६ ।

कालायवसितो–कालादवैश्यः । व्य० द्वि० ४३२ आ ।

कालायस–लोहः । जं० प्र० ३७, २३८ । जीवा० १९२ । लोहं । नि० चू० द्वि० ८७ अ । कालायसम्–लोहविशेषः । औप० ७१ । भग० ३२२, ४८१ ।

कालालोणे–कृष्णलवणं–सैन्धवलवणपर्वतैकदेशजम् । दश० ११८ ।

कालावभासे–कालावभासः, कालदीप्तिर्वा । भग० २६६ ।

कालावीचिमरणं–यथाऽऽयुष्ककाले मरणम् । उत्त० २३१ ।

कालासवेसियपुत्ते–पार्श्वापत्यीयः । भग० ९९ । प्रथमशतकगतद्रष्टान्तः । भग० ३२७ ।

कालिंगं–कालिङ्गम् । प्रज्ञा० ३७ ।

कालिंगी–वल्लीविशेषः । भग० ८०३ । आचा० ५७ । प्रज्ञा० ३२ ।

कालिकाचार्यः–गर्दभिल्लस्य शिक्षादाता । नि० चू० प्र० ३०४आ, २५६ । अशठाचीर्णे द्रष्टान्तः । बृ० तृ० १४ अ ।

कालिगि–संज्ञाविशेषः । विशे० २७७ ।

कालिञ्जर–नगविशेषः । उत्त० ३८३ ।

कालिनी–आर्द्रादेवता, रौद्रीत्यपरनाम । जं० प्र० ४९९ ।

कालिपोरेति–काकजङ्घावनस्पतिविशेषपर्व । अनुत्त० ४ ।

कालियं–काले-प्रथमचरमपौरुषीलक्षणे कालग्रहणपूर्वकं पठ्यत इति कालिकम् । विशे० ६२७ । दिवसनिशाप्रथमपश्चिमपौरुषीद्वय एव पठ्यते तत्, तत्कालेन निवृत्तं कालिकम्, उत्तराध्ययनादि । ठाणा० ५२ । नंदी० २०४ । कालेन निर्वृत्तं कालिकम्, प्रमाणकालेनेति भावः । दश० २ ।

कालियदीवे–द्वीपविशेषः । ज्ञाता० २२८ ।

कालियपुत्ते–कालिकपुत्रः । स्थविरविशेषः । भग० १३८ ।

कालियसुयं–इहैकादशाङ्गरूपं सर्वमपि श्रुतं कालग्रहणादिविधिनाऽधीयत इति कालिकम् । विशे० ९३१ । कालिकश्रुतं एकादशाङ्गरूपः । भग० ७९२ ।

कालियसुयमाणुओगिए–कालिकश्रुतानुयोगे–व्याख्याने नियुक्ताः–कालिकश्रुतानुयोगिकाः, कालिकश्रुतानुयोग एषां विद्यते इति कालिकश्रुतानुयोगिनः । नंदी० ५१ ।

कालिया–काले सम्भवन्तीति कालिकाः–अनिश्चितकालान्तरप्राप्तयः । उत्त० २४३ । कालिका–श्रेणिकभार्या । आव० ६८७ ।

कालियावाए–कालिकावातः–प्रतिकूलवायुः । ज्ञाता० १५८ ।

कालियावायरहिए–कालिकावातरहितः । आव० ३८७ ।

काली–चमरेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०३ । काली–अन्तकृद्दशानां अष्टमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्त० २५ । देवीविशेषः । निरय० १६ । धर्मकथायाः प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २४७ । कालगृहपतिकालश्रियोः दारिका । ज्ञाता० २४८ ।

कालीगमए– । ज्ञाता० २५१ ।

कालीपव्वंगसंकासे–कालीपर्वाङ्गसङ्काशः काली-काकजङ्घा तस्याः पर्वाणि स्थूराणि मध्यानि च तनूनि भवन्ति ततः, कालीपर्वाणीव पर्वाणि–जानुकूर्परादीनि येषु तानि कालीपर्वाणि, तथाविधैरङ्गैः–शरीरावयवैः सम्यक्काशते-तपःश्रिया दीप्यत इति कालीपर्वभिर्वा सङ्काशानि–सदृशानि अङ्गानि यस्य सः । उत्त० ८४ ।

कालुट्ठिती–उग्गए आदिच्चे दिवसतो जो गच्छति । नि० चू० तृ० ३८ आ ।

कालुणितेति–कारुण्यं-शोकः । ठाणा० ४६६ ।

कालुद्देसे–कालोद्देशः । आव० ८२२ ।

कलुसभावो–कलुषभावः कालुष्यम्–दुष्टाभिसन्धिरूपम् । दश० २१२ ।

कालुस्से–कसाउप्पत्ती । नि० चू० प्र० ३१ अ ।

कालेज्ज–कालेयकम् । सं० । कालेयकः । आव० ६५१ ।

कालेण–कालेन–प्रथमपश्चिमपौरुषीलक्षणेन हेतुभूतेनाधीयत्ते । ठाणा० १२६ । दुष्षमसुषमादिना विशिष्टेन कालेन सतोत्पत्त्यादिकमभूत् । आचा० ४२५ ।

कालेयक– । सम० २६ ।

कालोदाइ–कालोदधिः–अन्ययूथिकः । भग० ३२७, ३२३ । रजन्यां भिक्षाग्राही बौद्धसाधुः । बृ० द्वि० ६३ अ ।

कालोदायी–गुणशिलचैत्यनिकटवर्त्ती अन्ययूथिकः । भग० ७५० ।

कालोय–धातकीखण्डपरितः शुद्धोदकरसास्वादः कालोदः समुद्रः । अनु० ६० । धातकीखण्डानन्तरं समुद्रः । प्रज्ञा० ३०७ ।

कालोवक्कम–कालस्योपक्रमः कालोपक्रमः । यदिह नालिकादिभिरादिशब्दात् शङ्कुच्छायानक्षत्रचारादिपरिग्रहस्तैः कालउपक्रम्यते स कालोपक्रमः । यत्तु नक्षत्रादिचारैः कालस्य विनासनं स वस्तुनाशे कालोपक्रमः । अनु० ४८ ।

कालोवाय–कालोपायः–अपायभेदः । दश० ४० ।

कावालिए–अस्थिसरजस्कः । बृ० द्वि० ६० आ । कापालिकः–वृथाभागी । आव० ६२८ ।

काविट्ठं–महाशुक्रकल्पे विमानविशेषः । सम० २७ ।

काविलिज्जं–कापिलीयं, उत्तराध्ययनेष्वष्टमध्ययनम् । उत्त० २८६ ।

काविलियं–उत्तराध्ययनेषु अष्टममध्ययनम् । सम० ६४ ।

काविसायण–कपिशायनं–मद्यविशेषः । जं० प्र० १०० ।

कावो–कावः–कापडिवाहकः । जीवा० २८१ ।

कावोडी–कापोती–तुलाकारं पानीयानयनसाधनम् । दश० १३५ । दश० चू० ५७ ।

कावोय–कावडिवाहकः । अनु० ४६ ।

कावोयलेस्सा–कापोतस्य पक्षिविशेषस्य वर्णेन तुल्यानि यानि द्रव्यानि धूम्राणि इत्यर्थः, तत्साहाय्याज्जाता कापोतलेश्या मनाक् शुभतरा सा लेश्या येषां ते । ठाणा० ३२ ।

काशा–शर्करा । प्रज्ञा० ३६६ ।

काशिमण्डलं–काशिदेशः । उत्त० ४४८ ।

काश्यपादीनि–गोत्रविशेषः । सम० ११२ ।

काष्टपादुके–मौञ्जे । सूत्र० ११८ ।

काष्टमूलं–चणकचवलकादिकं द्विदलम् । बृ०प्र० २६७ आ।

काष्टमूलरसं–चणकचवलकादिद्विदलं तदीयेन रसेन यत्परिमाणितम् । पानकम् । बृ० प्र० २६७ आ ।

काष्ठमुद्रा– । ठाणा० ५१२ ।

काष्ठश्रेष्ठी–पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्तः । नंदी० १६६ । श्रमणविशेषः । बृ० द्वि० ६४ अ ।

काष्ठाशब्दः–प्रकर्षवाची । सूर्य० १३ ।

कासंकासे–कासंकषः । आचा० १३६ ।

कास–कासः–रोगविशेषः । भग० १६७ । गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । अष्टाशीतौ महाग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तमः । ठाणा० ७६ ।

कासगो–कर्षकः । नि० चू० द्वि० १४३ आ ।

कासणं–काशनं–खाट्करणम् । ओघ० ६२ ।

कासय–कर्षकः–कृषीवलः । उत्त० ३६१ ।

कासरनालियं–सीवण्णिफलं । दश० चू० ८६ ।

कासवं–काश्यपस्यापत्यं काश्यपः तं काश्यपगोत्रम् । नंदी० ४८ ।

कासवे–स्थविरविशेषः । भग० १३८ । कश्यपः–अन्त-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृद्दशानां षष्ठमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। अन्त० १८ । राजगृहे गाथापतिः । अन्त० २३ । उत्तराफालगुन्याः गोत्रनाम । जं० प्र० ५०० । काश्यपगोत्रो महावीरः । उत्त० ८३ । ऋषभस्वामी वर्धमानस्वामी वा । सूत्र० ६८ । कौशम्ब्यां राजबहुमतो ब्राह्मणः । उत्त० २८६ । नापितस्य सम्बन्धिक्षुरगृहम् । वृ० प्र० १८४ अ ।

कासवए–काश्यपः–नापितशिल्पः । आव० १३२ ।

कासवग–काश्यपः–नापितः । भग० ४७२ । सूत्र० ११६ ।

कासवगा–षष्ठीश्रेणिविशेषः । जं० प्र० १६३ ।

कासवगोत्ते–काश्यपगोत्रम् । सूर्य० १५० । आर्यजम्बुनामानगारस्य गोत्रम् । ज्ञाता० १३ ।

कासवनालियं–श्रीपर्णीफलम् । आचा० ३४६ । दश० १८५ ।

कासवसंट्ठियट्ठाण–यस्तु ग्राम एव त्रिकोणतया निविष्टः वृक्षा वा त्रयो यस्य बहिस्त्र्यस्राः स्थिताः एकतो द्वौ अन्यतस्त्वेकः काश्यपसंस्थितः । वृ० प्र० १८४ अ ।

कासवा–कशे भवः काश्यः–रसस्तं पीतवानिति काश्यपस्तदपत्यानि काश्यपाः । ठाणा० ३६० ।

कासवी–पञ्चमतीर्थकरस्य प्रथमा शिष्या । सम० १५२ ।

कासाइअ–कषायेण–पीतरक्तवर्णाश्रयरञ्जनीयवस्तुना रक्ता काषायिकी शाटिकेत्यर्थः । जं० प्र० १८६ ।

कासायं–काषायिकं–वस्त्रविशेषः । आव० ३५२ ।

कासि–काशीजनपदो यत्र वाणारसी नगरी । ज्ञाता० १२५ ।

कासिभूमि–काशीभूमिः–काश्यभिधानो जनपदः । उत्त० ३८३ ।

कासी–काशी–जनपदविशेषः । ज्ञाता० १४१ । प्रज्ञा० । वाणारसी, तज्जनपदोऽपि काशी । भग० ३१७ । अष्टाशीतौ महाग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तमः । भग० ६८० ।

कासीअ–अकार्षीत् । उत्त० ३२२ ।

कासीस–रागद्रव्यः । ज्ञाता० २३१ ।

कासो–इक्खु । दश० चू० ५८ ।

काह–कदा । भग० ११६ ।

काहए–अकथयत् । उत्त० ४८० ।

काहरो–कापोतिकः–जलवाहकः । दश० १३५ ।

काहलं–फल्गुप्रायम् । वृ० प्र० ४५ आ ।

काहला–खरमुही । जं० प्र० १९२ । तस्स मुहत्थाणे खरमुहाकारं कट्ठमयं मुहं कज्जति खरमुखी । नि० चू० तृ० ६२ अ । वाद्यविशेषः । ठाणा० ६३ ।

काहामि–करिष्यामि । उत्त० ४३३ ।

काहारसंठिते– । सूर्य० १२९ ।

काहारो–जलवाहकः । दश० चू० ५७ ।

काहावणं–कार्षापणम् । उत्त० २७६ । कर्षापणः–द्रम्मः । प्रश्न० ३० ।

काहितो–सज्झायादिकरणिज्जे जोगे मोत्तुं जो देसकहादिकहीतो कहेति सो काहितो । नि० चू० द्वि ६१ आ ।

काहिया–धम्मत्थकामेसु अण्णाओ विकहाओ कहेंता कहिया भवंति । नि० चू० तृ० ६ अ ।

काहीआ–कथिका । ग० ।

काहीउ–कथकः । ओघ० १५० ।

काहिए– । ओघ १५० । पासणिए । नि०चू०प्र०२६२ अ ।

काहीति–करिष्यति । ठाणा० ४९६ ।

किं–प्रश्ने क्षेपे वा । आचा० १६५ । प्रश्ने । ज्ञाता० १४९ । क्षेपप्रश्नपुंसकव्याकरणेषु । आव० ३७९ ।

किंकमे–किंकमे, अन्तकृद्दशानां षष्टमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम् । अन्त० १८ ।

किंकम्मय–किंकर्मकः । आव० ४०६ ।

किंकर–भार्यादेशकरः–अन्वर्थः पुरुषविशेषः । पिण्ड० १३५ । किङ्कराः–प्रतिकर्मपृच्छाकारिणः । जं० प्र० २६३ । किङ्करा–किङ्करभूताः । प्रज्ञा० ८६ । जीवा० १६० । प्रतिकर्मपृच्छाकारिणः । भग० ५४७ । आदेशसमाप्तौ पुनः प्रश्नकारी । प्रश्न० ३९ ।

किंकिणी–किङ्किणी, क्षुद्रघण्टिका । भग० ३२२ । प्रश्न० ७५ । क्षुद्रघण्टा घण्टिका वा । जं० प्र० ५२९ ।

किंजिन्धपुरं–आदित्यरथराजधानी । प्रश्न० ८९ ।

किण्णाइंनि–अथ किं पुनरित्यर्थः । भग० १४६ ।

किंगिरिडा–त्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

किंचनं–किञ्चनं–काञ्चनं–हिरण्यादि, अल्पमपि वा । आव० १५५ ।

किंचि–काञ्चिः मूशलमूलस्थलोहकटी । पिण्ड० १६४ ।

किंचिच्च सूरिवचनं– । ठाणा० २०३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किंचूणा–किञ्चिदूना–एकत्रिंशत्कवला । ठाणा० १४६ । ऊनोदरतायाः पञ्चमो भेदः । इत्थं पञ्चविंशतेरारभ्य यावदेकत्रिंशत्तावत्किञ्चिदूनोदरता । दश० २७ ।

किंचूणोमोअरिआ–किञ्चिन्न्यूनावमोदरिका – एकत्रिंशतो द्वात्रिंशत एकेनोनत्वात् । औप० ३८ ।

किणा– · । प्रज्ञा० ३०८ ।

किणापउल–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ ।

किंते–तद्यथार्थः । औप०५४ । तद्यथा । जं० प्र० १९२ । प्रश्न० १५६ । किंभूतान् । ज्ञाता० २३० ।

किंत्थुग्घं–किंस्तुघ्नं–एकादशमं करणम् । जं० प्र० ४९३ ।

किनए–किण्वं–अनन्तजीववनस्पतिभेदः । आचा० ५९ ।

किंनर–किन्नरेन्द्रः । जीवा० १७४ । किन्नरः–दक्षिणनिकाये पञ्चमो वाणव्यन्तरेन्द्रः । भग०१५८ । किन्नरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० । वाणव्यन्तरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६९ । चमरेन्द्रस्य रथानीकाधिपतिर्देवः । ठाणा० ३०२,४०६ । इन्द्रनाम । ठाणा० ८५ । किन्नरः–वाद्यविशेषः । देवविशेषो वा । प्रश्न० ७० । देवविशेषः । भग० ४७८ ।

किंनरकण्ठः–किन्नरकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः । जीवा० २३४ ।

किंनरी–देवीविशेषः । मैथुने द्रष्टान्तः । प्रश्न० ९० ।

किंनरोत्तमाः–किन्नरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

किंपगारे–किंप्रकारः–किंस्वरूपः । जीवा० ६५ ।

किंपत्तियं–कः प्रत्ययः कारणं यत्र तत् किम्प्रत्ययम् । भग० १८१, १३८ ।

किंपभासई–किं–कुत्सितं प्रकर्षेण भाषते इति किंप्रभाषते । उत्त० ४४३ ।

किंपाकफलः–फलविशेषः । आचा० १६४ ।

किंपाग–किम्पाकः वृक्षविशेषः । उत्त० ६२८, ४५४ । फलविशेषः । आव० ३८५ ।

किंपुरिसा–वाणव्यन्तरभेदविशेषः । प्रज्ञा०६९ । किंपुरुषः–उत्तरनिकाये पञ्चमो वाणव्यन्तरेन्द्रः । ठाणा० ८५,३०२ । भग० १५८ । किंपुरुषः–किन्नरेन्द्रः । जीवा० १७४ ।

किंपुरुषकण्ठः–किंपुरुषकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः । जीवा० २३४ ।

किंपुरुषाः–किन्नरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

किंपुरुषोत्तमाः–किन्नरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

किंभयाः–कस्माद् भयं येषां ते, कुतो बिभ्यतीत्यर्थः । ठाणा० १३५ ।

किंमए–किंमयः–किंविकारः । जीवा० ११० ।

किंमज्झं–किंमध्यं–किंशब्दस्य क्षेपार्थत्वात् असारम् । प्रश्न० १३७ ।

किंलेसे–का–कृष्णादिनामन्यतमा लेश्या येषां ते किंलेश्या । भग० १८८ ।

किंशुककुसुमं–पलासकुसुमम् । जीवा० १९१ ।

किंसंठिय–किंसंस्थितं–किमिव संस्थितम् । जीवा० ३७८ । किमिव संस्थिताः किंसंस्थिताः । जीवा० १०४ । किं संस्थितं–संस्थानं यस्याः यदिवा कस्येव संस्थितं–संस्थानं यस्याः सा किंसंस्थिता । सूर्य० ७३ ।

किंसुकफुल्ल–किंशुकफुल्लं–पलासकुसुमम् । ठाणा० ४२० ।

किंसुयपुप्फरासी–किंशुकपुष्पराशिः । प्रज्ञा० ३६१ ।

किइ–कृतिः–अवनामादिकरणं, मोक्षायावनामादिचेष्टैव वा। आव० ५११ ।

किइकम्म–कृतिकर्म–विश्रामणा । आव० ११८ । कृतिकर्म, वन्दनं, कार्यकरणम् । भग० ६३७ । वन्दनम् । आव० ८० । सम० २३ । ओघ० २२ । पादप्रक्षालनादि । ओघ० ६३ । द्वादशावर्त्तवन्दनम् । ओघ० १५६ ।

किई–कृतिः–द्वादशावर्त्तादिवन्दनम् । उत्त० १७ । कृतिकर्म वन्दनम् । दश० २४१ ।

किच्च–कृत्यः–आचार्याणां वैयावृत्त्वम् । आव० २६० । कृतिः–वन्दनकं–तदर्हतीति कृत्यः । उत्त० ५४ । कृत्यं, आसेवनीयं कालस्वाध्यायादि । आव० ५७३ । कृत्यं उचितानुष्ठानम् । उत्त० ६५ । आचार्याद्यभिरुचितकार्यम् । दश० २५० । कृत्यः–आचार्यादिः । दश० २५० । आचार्यः । दश० २३५ । माया । नि० चू० प्र० ७७ आ ।

किच्चकर–ग्रामकृत्ये नियुक्तः । ग्रामव्यापृतकः । नि० चू० प्र० १७६ आ । कृत्यानि कुर्वन्ति–अनुतिष्ठन्ति कृत्यकराः–नियोगिनः । उत्त० ३०५ । ग्रामचिन्तानियुक्तः । बृ० प्र० ३१३ आ । ग्रामकृत्ये नियुक्तः । बृ० तृ० ३३ अ ।

किच्चणं–तत्र दिवसे क्षणिका विमुक्तकृषिलवनव्यापारा ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघ० ७२ । कर्त्तनम् । बृ० प्र० २४१ आ ।

किच्चाइ-कर्तव्यानि यानि प्रयोजनानीत्यर्थः, अथवा कृत्यानि नैत्यिकानि । ज्ञाता० ६१ ।

किच्चिरस-कियच्चिरेण । आव० ५५६ ।

किच्चोवएसगो-कृत्योपदेशिकः कृत्यं-कर्तव्यं सावद्यानुष्ठानं तत्प्रधानाः कृत्या-गृहस्थास्तेषामुपदेशः-संरम्भसमारम्भारम्भरूपः स विद्यते यस्य सः । कृत्यं-करणीयं पचनपाचनकण्डनपेषणादिको भूतोपमर्दकारी व्यापारस्तस्योपदेशस्तं गच्छतीति कृत्योपदेशगः कृत्योपदेशको वा । सूत्र० ४७ ।

किच्छं-कृच्छ्रम् । आव० ३८४ ।

किच्छदुक्ख-कृच्छ्रदुःखं-गाढशरीरायासः । भग० ४७० ।

किच्छपाणो-कृच्छ्रप्राणः । उत्त० ११८ ।

किच्छोवगयप्पाण-कष्टगतजीवितव्यः । ज्ञाता० २११ ।

किटिभ-क्षुद्रकुष्ठविशेषः । जं० प्र० १७० । नवमं क्षुद्रकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ । आचा० २३५ ।

किट्ट-लोहादिमलः । आचा० ३२२ । अच्युतकल्पे विमान विशेषः । सम० ३६ । ऊर्णाद्यवयवाः तन्निष्पन्नं वस्त्रम् । बृ० द्वि० २०१ आ ।

किट्टइत्ता-कीर्त्तयित्वा-स्वाध्यायविधानतः संशुद्धय । उत्त० ५७२ । गुरोर्विनयपूर्वकमिदमित्थं मयाऽधीतमिति निवेद्य । उत्त० ५७२ ।

किट्टति-अपगच्छति । बृ० तृ० २३३ अ ।

किट्टा-रोमविसेसा । नि० चू० प्र० १२६ अ ।

किट्टिअं-कीर्त्तितम्-भोजनवेलायाममुकं मया प्रत्याख्यातं तत् पूर्णमधुना भोक्ष्य इत्युच्चारणेन । आव० ८५१ ।

किट्टिका-साधारणबादरवनस्पतिकायिकभेदः । जीवा०२७ ।

किट्टिय-कीर्त्तितं-अन्येषामुपदिष्टम् । प्रश्न० ११३ । कीर्त्तिता-पारणकदिने अयमयं चाभिग्रहविशेषः कृत आसीद् अस्यां प्रतिमायां स चाराधित एवाधुना मुक्तलोऽहमिति गुरुसमक्षं कीर्त्तनादिति । ठाणा० ३८८ ।

किट्टिसं-ऊर्णादीनां यदुद्धरितं किट्टिसं तन्निष्पन्नं सूत्रमपि ऊर्णादीनामेव द्विकादिसंयोगतो निष्पन्नं सूत्रम्, उक्तशेषाश्वादिलोमनिष्पन्नं वा किट्टिसम् । अनु० ३५ । कुतवो वरक्को किट्टिसं । नि० चू० प्र० १२६ अ । ऊर्णाद्यवयवनिष्पन्नं वस्त्रम् । बृ० द्वि० २०१ आ ।

किट्टिसिय-किल्बिषिका भाण्डादय इत्यर्थः । भग० ४८१ ।

किट्टी-किट्टिजमवयवनिष्पन्नः । ठाणा० ३३८ ।

किट्टीया-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

किट्टेइ-कीर्तयति-पारणकदिने इदं चेदं चैतस्याः कृत्यं तच्च मया कृतमित्येवं कीर्त्तनात् । भग० १२५ । ज्ञाता० ७२ ।

किट्ठं-वाहितं । नि० चू० प्र० २२ अ । कृष्टम् । आव० ६३० । कृष्टं कर्षणं लभ्यग्रहणायाकर्षणम् । जं० प्र० १६४ ।

किड्ढि-देवविमानविशेषः । सम० ६ । व[...]रातिविशेषः । भग० ८०४ ।

किड्ढिकूडं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिघोसं-देवविमानविशेषः । सम० १२ ।

किड्ढिजुत्तं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिज्झयं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिप्पभं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिया-अनन्तकायविशेषः । भग० ३०० ।

किड्ढियावत्तं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिलेसं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिवण्णं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिसाविया- । नि०चू०प्र० ३२६ अ ।

किड्ढिसिंगं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किड्ढिसिट्ठं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किट्ठुत्तरवडिंसगं-देवविमानविशेषः । सम० ६ ।

किठी-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

किडए-पाककुम्भी । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।

किडयं- । नि० चू० प्र० १०६ आ ।

किडिकिडिया-किटिकिटिका-निर्मांसास्थिसम्बन्ध्युपवेशनादिक्रियासमुत्थः शब्दविशेषः । भग० १२५ । निर्मांसास्थिसम्बन्धी उपवेशनादिक्रियाभावीशब्दविशेषः । ज्ञाता० ७६ ।

किडिकिडीभूयं- । विपा० ७६ ।

किडिभं-कुट्ठभेदो । नि० चू० द्वि० ६२ अ । जंघासु कालाभं रसियं वहति । नि० चू० प्र० १२७ आ । शरीरैक-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देशभाविकुष्ठभेदः । बृ० द्वि० २२२ अ । रोगविशेषः । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

किडिम(भ)-किडिमः-क्षुद्रकुष्ठविशेषः । भग० ३०८ ।

किडिया- । नि० चू० प्र० १२२ अ ।

किड्डंति-अन्तर्भूतकारितार्थत्वादन्यान् क्रीडयन्ति । भग० ६१८ ।

किड्डा-पाशककपर्दकैः क्रीडन्ति । ओघ० ५६ । क्रीडाप्रधाना दशा क्रीडा, दशदशायां द्वितीयादशा । ठाणा० ५१९ । क्रीडा-जन्तोर्द्वितीया दशा । दश० ८ । द्वितीयादशा । नि० चू० द्वि० २८ आ ।

किड्डावियाए-क्रीडापिका, क्रीडनधात्री । ज्ञाता० २१९ ।

किढ-वृद्धः । बृ० द्वि० २५६ आ ।

किढग-किटकः-वृद्धः । व्य० द्वि० २३४ अ ।

किढिण-वंशमयस्तापसभाजनविशेषः । निरय० २६ । किढिनं-वंशमयस्तापससम्बन्धीभाजनविशेषः । भग०३२२, ५२० ।

किढिणसंकाइयं-किढिणं - वंशमयस्तापसभाजनविशेषः, सांकायिकं-भारोद्वहनयन्त्रं किढिणसांकायिकम् । निरय० २६ ।

किढिणसंकाइयगं-किढिणं-वंशमयस्तापसभाजनविशेषस्ततश्च तयोः साङ्कायिकं भारोद्वहनयन्त्रं किढिणसाङ्कायिकम् । भग० ५१६ ।

किढिणपडिरुवगं-कठिनप्रतिरूपकं-कढिनं वंशमयस्तापससम्बन्धीभाजनविशेषस्तत्प्रतिरूपकं तदाकारं वस्तु । भग० ३२२ ।

किढिदासी-काष्ठिकीदासी । आव० २३७ ।

किढिया- । नि० चू० प्र० १३६ आ । स्थविरा माता । बृ० तृ० ११४ अ ।

किढी-थेरी । बृ०प्र० १९८ आ । स्थविरा स्त्री । बृ० तृ० १११ अ । काष्ठिकी । आव० २३७ ।

किणा-किञ्चिन्मात्रा । पिण्ड० १७३ ।

किणिऊणं-क्रीत्वा । आव० १९८ ।

किणित्ता-जातिजुंगितविसेसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

किणिया-किणिका-ये वादित्राणि परिणह्यन्ति वध्यानां च नगरमध्ये नीयमानानां पुरतो वादयन्ति । व्य० प्र० २३१ अ ।

किण्णं-कानि-किंविधानि । भग० १०९ ।

किण्णरछाया-किन्नरछाया-छायागतिभेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।

किण्णा लद्धा-केन हेतुना लब्धा-भवान्तरे उपार्जिता । ज्ञाता० २५० ।

किण्णे-केन हेतुना । भग० १६३ ।

किण्ह-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । कृष्णवर्णः-अञ्जनवत् स्वरूपेण । ज्ञाता० ७८ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

किण्हकेसरे-कृष्णकेशरः-कृष्णबकुलः । प्रज्ञा० ३६२ । जं० प्र० ३२ ।

किण्हगुलिया-उदायनदासी । नि० चू० प्र० ३४६ आ ।

किण्हचामरज्झय-कृष्णचामरध्वजा कृष्णचामरयुक्ता ध्वजा । जीवा० १९९ ।

किण्हपक्खिए-कृष्णपाक्षिका-शुक्लानां आस्तिकत्वेन विशुद्धानां पक्षो-वर्गः शुक्लपक्षस्तत्रभवाः शुक्लपाक्षिकाः तद्विपरीतास्तु कृष्णपाक्षिकाः । ठाणा० ६१ ।

किण्हपत्ता-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ । चतुरिन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

किण्हसिरी-षष्ठं चक्रवर्तिनः स्त्रीरत्नम् । सम० १५२ ।

किण्हा-नदीविशेषः । ठाणा० ४७७ । कृष्णा-ईशानदेवेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । जीवा० ३६५ ।

किण्होभासे-कृष्णप्रभः कृष्ण एव वाडवभासत इति कृष्णावभासः । ज्ञाता० ४ । कृष्णवर्ण एवावभासते-द्रष्टृणां प्रतिभातीति कृष्णावभासः । ज्ञाता० ७२ ।

कितिकंमं-वंदणं । नि० चू० प्र० २३८ अ । वेयावच्चं । नि० चू० प्र० ८० आ । कृतिकर्म । आव० ७९३ । विस्सामणं-नि० चू० प्र० २१३ अ । कृतिकर्म-द्वादशावर्त्तवन्दनम् । ओघ० १३९ । कृतिकर्म्म-वंदनकं, विश्रामणादिकं वा । व्य० द्वि० ७२ अ । कृतकर्म्म-विश्रामणा । व्य० द्वि० १८३ अ ।

कितिकम्माति-कृतिकर्म्माणि-विश्रामणा । व्य० द्वि० १७४ अ ।

कित्तइस्सामि-कीर्तयिष्यामि-प्रतिपादयिष्यामि । दश० १५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कित्तणं–कीर्त्यते–संशब्दयते येन कारयिता तत् कीर्त्तनं देवकुलादि । प्रश्न० ६५ ।

कित्तणयं–कीर्त्तनं शब्दनम् । आव० १८१ ।

कित्तणा–कीर्त्तना संशब्दना । आव० ४६२ ।

कित्ति–कीर्तिकूटं–केसरिह्लदसुरीकूटम् । जं० प्र० ३७७ । कीर्त्तिः एकदिग्व्यापी । भग० ६७३ । दश० २५७ । एकदिग्गामिनी प्रख्यातिर्दानफलभूता वा । भग० ६४३ । जातितपोबाहुश्रुत्यादिजनिता श्लाघा । दानसाध्या । सूत्र० १८२ । दानपुण्यफला । आव० ४६६ । प्रसिद्धिः । प्रश्न० ३६ । केसरिह्लदे देवताविशेषः । ठाणा० ७३ । सर्वदिग्व्यापी साधुवादः । ठाणा० ५०३ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः । भग० ५४१ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः सर्वदिग्गामिनी सैव । ठाणा० १३७ । दानपुण्यफला किर्त्तिः । ठाणा० १३७ । गुणोत्कीर्त्तनरूपा प्रशंसा, एकदेशगामिनी पुण्यकृता वा कीर्त्तिः । प्रज्ञा० ४७५ ।

कित्ति(त्ती)–चतुर्थवर्गे चतुर्थमध्ययनम् । निरय० ३७ । प्रख्यातिः । ज्ञाता० २२० ।

कित्तिकर–दानपुण्यफला कीर्त्तिस्तत्करणशीलः कीर्त्तिकरः । आव० ४६६ ।

कित्तिताइं–कीर्त्तितानि–संशब्दितानि नामतः । ठाणा० २६७ ।

कित्तिम–कृत्रिमः–योगेन निष्पन्नः । ओघ० १६८ । कृत्रिमः–क्रमेण शिल्पिकर्षकादिप्रयोगनिष्पन्नः । जं० प्र० ६६ ।

कित्तिमई–किर्त्तिमती, कीर्त्तिसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी च । उत्त० ३७६ । अलोभोदाहरणे श्रावस्त्यामजितसेनाचार्यस्य महत्तरिका । आव० ७०१ ।

कित्तिय–कीर्त्तितं–जनेन समुत्कीर्तितं कीर्त्तिदं वा । औप० ५ । कीर्त्तितः स्वनामभिः प्रोक्तः । आव० ५०७ ।

कित्तिया–कीर्त्तिता प्रदर्शिता । आचा० ४२ । कृत्तिका–अग्निभूतेर्जन्मनक्षत्रम् । आव० २५५ ।

कित्तिसेणो–कीर्त्तिसेनः–ब्रह्मदत्तपत्न्याः कीर्त्तिमत्याः पिता । उत्त० ३७६ ।

कित्ती–कीर्त्तिः एकदिग्गामिनी । प्रश्न० ८६ । कीर्त्तिः ख्यातिहेतुत्वात् । अहिंसायाः पञ्चमं नाम । प्रश्न० ६६ । दानपुण्यफलभूता, एकदिग्गामिनी वा प्रसिद्धिः । प्रश्न० १३६ । दानकृता एकदिग्गामिनी वा प्रसिद्धिः । औप० १०८ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः । बृ० तृ० ३६ आ ।

कित्तीजीवियं–कीर्त्तिजीवितम् । आव० ४८० ।

कित्तीपुरिसा–कीर्त्तिप्रधानाः पुरुषाः कीर्त्तिपुरुषाः । ठाणा० ४४८ ।

कित्तीपुरिसो–कीर्तिपुरुषः वासुदेवः । आव० १५६ ।

कित्तेइ–कीर्त्तयति–तत्समाप्तौ इदमिदं चेहादिमध्यावसानेषु कर्त्तव्यं तच्च मया कृतमिति कीर्त्तनात् । उपा० १५ ।

किन्न–कीर्णः क्षिप्तः । ठाणा० ४६४ ।

किन्नग्गन्थे–कीर्णः–क्षिप्तः ग्रन्थो–धनधान्यादिस्तत्प्रतिबन्धो वा येन स किर्णग्रन्थः । ठाणा० ४६४ ।

किन्नपुडगसंठिओ–आवलिकाबाह्यस्य नवमं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

किब्बिस–किल्बिषस्य पापस्य हेतुत्वात्, द्वितीयाधर्मद्वारस्याष्टादशं नाम । प्रश्न० २६ । पापाः । बृ० प्र० २१२ आ ।

किब्बिसभावणा–किल्बिषभावना । उत्त० ७०७ ।

किब्बिसिआ–किल्बिषिकाः–परविदूषकत्वेन पापव्यवहारिणो भाण्डादयः । जं० प्र० २६७ । पातकफलवन्तो निःस्वान्धपङ्ग्वादयः । ज्ञाता० ५६ । किल्बिषं–पापं उदये विद्यते येषां ते किल्बिषिकाः पापाः । ठाणा० १६२ ।

किमंग पुण–किं पुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थम् अङ्गेत्यामन्त्रणे यद्वा परिपूर्ण एवायं शब्दो विशेषणार्थः । निरय० ७ ।

किमाइया–किमादिका–उपादानकारणव्यतिरेकेण किमादिः मौलं कारणं यस्याः सा । प्रज्ञा० २५६ ।

किमाई–किमादिः–मौलं कारणम् । प्रज्ञा० २५६ ।

किमाहार–चतुर्दशशते षष्ठोद्देशः । भग० ६३० ।

किमिकुट्ठ–कृमिसंकुलं कोष्ठमुदरं कृमिकोष्ठः । व्य० द्वि० ३५० अ । कृमिकुष्ठः–रोगविशेषः । आव० ११६ ।

किमिच्छए–कः किमिच्छतीत्येवं यो दीयते स किमिच्छकः । दश० ११७ ।

किमिच्छयं–यो यदिच्छति तस्य तद्दानं समयत एव किमिच्छकम् । आव० १३६ ।

किमिण–कृपणः । ठाणा० ३४२ । कृमयः–अशुच्यादिसम्भवाः । उत्त० ६६५ । कतिपयकृमिवत् । ज्ञाता० १७७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किमिणा–कृमिवन्तः । प्रश्न० ६० ।

किमिय–कृमिकः जन्तुविशेषः । आव० ११७ ।

किमियडसंठितो–आवलिका बाह्यस्याष्टमं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

किमिरागकंबले–कृमिरागेण रक्तः कम्बलः कृमिरागकम्बलः । प्रज्ञा० ३६१ ।

किमिरागो–कृमिरागः । जं० प्र० ३४ ।

किमिरासि–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

किमुलग–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।

कियाडियाए–कर्णेन । व्य० प्र० ६ आ ।

किर–किल–परोक्षाप्तपादसूचकः । उत्त० ३४३, । अपारमार्थिकत्वख्यापकः । उत्त० ३४३ । परोक्षाप्तवादसूचकः सम्भावने । उत्त० ७१२ । परोक्षाप्तवादसूचकः । उत्त० ६२० । संशये । आव० २४० । परोक्षाप्तागमवादसंसूचकः । आव० १३० । किल–लक्षणमेवास्येदमभिधीयते न पुनस्तं कोऽपि छेत्तुं भेत्तुं वाऽऽरभत इत्यर्थसंसूचनार्थः । भग० २७६ ।

किराइं–किल । आव० ६१ ।

किराडयं–किराटकं द्रव्यम् । आव० ८२२ ।

किरिकिरिया–तेषामेव वंशादिकम्बिकातोद्यम् । आचा० ४१२ ।

किरिमालए–किरिमालकः । दश० ५१ ।

किरिय–क्रिया–सम्यगवादः । आव० ७६२ । चिकित्सा । आव० ५६६ । कायिक्यादिक्रियाभिधानार्थः । अष्टमशते चतुर्थोद्देशकः । भग० ३२८ ।

किरियट्ठाणं–क्रियास्थानम् । आव० ६५८ ।

किरियठाणं–क्रियास्थानं–सूत्रकृताङ्गस्याष्टादशमध्ययनम् । उत्त० ६१६ ।

किरियवादी–क्रियावादी जीवादिपदार्थसद्भावोऽस्त्येवेत्येवं सावधारणक्रियाभ्युपगमो यस्य सोऽस्तीति । सूत्र० २०२ । क्रियां–जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं यस्य सः । सूत्र० २०८ ।

किरियविसालं–क्रियाः–कायिक्यादिकाः विशालाः–विस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयन्ते तत् क्रियाविशालम् । सम० २६ ।

किरिया–अनुष्ठानम् । ठाणा० ५०३ । क्रिया–सम्यक्संयमानुष्ठानम् । प्रज्ञा० ५६ । कर्मबन्धः । बृ० द्वि० ७१ आ । क्रियन्ते मिथ्यात्वादिक्रोडीकृतैर्जन्तुभिरिति क्रियाः । कर्मबन्धनिबन्धनभूताश्चेष्टाः । उत्त० ६१३ । अस्ति परलोकोऽस्त्यात्माऽस्ति च सकलक्लेशाकलङ्कितं मुक्तिपदमित्यादिप्ररूपणात्मिका क्रिया । भग० ६२५ । आस्तिकता । ठाणा० ४०८ । योगः, व्यापारः, कर्म । विशे० २०६ । कायिक्यादिका आस्तिक्यमात्रं वा । सम० ५ । कायिक्यादिः संयमक्रिया च । नंदी० २४१ । देशान्तरप्राप्तिलक्षणा । विशे० ८३६ । अनुष्ठानम् । ठाणा० ५०४ । क्रिया–चारित्रम् । व्य० द्वि० ४५७ आ । वैद्योपदेशाद् औषधपानम् । नि० चू० प्र० १०१ अ । क्रिया–अस्तिवादरूपा । दश० २४२ । चेष्टा परिस्पन्दनलक्षणा । आव० ५२५ । सदनुष्ठानम् । सूत्र० ३६१ । अस्ति परलोक इत्यादिप्ररूपणात्मिका । उत्त० १७ । करणं क्रिया, कर्मबन्धनिबन्धना चेष्टा । आव० ६४२ । भग० १२१ । प्राणातिपातादिका । जीव० १२८ । एतन्नामा भगवतीसूत्रस्य तृतीयशतकस्य तृतीयोद्देशकः । भग० १८६ । क्रिया-करणं तज्जन्यत्वात् कर्मापि क्रिया । क्रियत इति क्रिया कर्म एव । भग० १८२ । करणं क्रिया–कर्मबन्धनिबन्धनचेष्टा । प्रज्ञा० ४३५ । प्रज्ञापनाया द्वाविंशतितमं पदम् । प्रज्ञा० ६ । क्रिया । आव० ११६ । अत्थिवादो । दश चू० १३ ।

किरियाठाणा–क्रियास्थानानि–करणं क्रिया–कर्मबन्धनिबन्धनचेष्टा तस्याः स्थानानि–भेदाः–पर्यायाः क्रियास्थानानि । सम० २५ । सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयमध्ययनम् । सम० ४२ । सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयमध्ययनम् । ठाणा० ३८७ ।

किरियातीता–किरियाए कीरमाणीएवि जा ण पण्णपति सा । नि० चू० प्र० २११ अ ।

किरियारुइ–क्रिया–सम्यक्संयमानुष्ठानं तत्र रुचिर्यस्य स क्रियारुचिः । प्रज्ञा० ५६ ।

किरियारुई–क्रियारुचिः–दर्शनाद्याचारानुष्ठाने यस्य भावतो रुचिरस्तीति सः । ठाणा० ५०४ । क्रिया–अनुष्ठानं तस्मिन् रुचिर्यस्य सः । उत्त० ५६३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किरियावरण–क्रियामात्रस्यैव–प्राणातिपातादेर्जीवैः क्रियमाणस्य दर्शनात्तद्धेतुकर्म्मणश्चादर्शनात् क्रियैवाचरणं–कर्म्म यस्य स क्रियावरणः । ठाणा० ३८३ ।

किरियावाई–क्रिया कर्तारं विना न संम्भवति सा चात्मसमवायिनीति वदन्ति तच्छीलाश्च ते क्रियावादिनः । क्रियां जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं येषां ते क्रियावादिनः । क्रियाप्रधानम् । भग० ९४४ । क्रियावादी–क्रियैव–चैत्यकर्मादिका प्रधानं मोक्षाङ्गमित्येवं वदितुं शील यस्य सः । सूत्र० ३७ । तत्र न कर्त्तारं विना क्रिया सम्भवति तामात्मसमवायिनीं वदन्ति ये तच्छीलाश्च ते क्रियावादिनः । आव० ८१६ । तत्र न कर्त्तारं विना क्रिया सम्भवतीति तामात्मसमवायिनीं वदन्ति ये तच्छीलाश्च ते क्रियावादिनः । सम० ११० । नियतशुक्लपाक्षिकाः । दशाश्रु० । सकलमतसमवसरणे कथञ्चिदात्माद्यस्तित्वादि क्रियावादिनः सम्यग्दृशः । भग० ९४४ ।

किरियावाद्दी–आत्मसमवायिनीं वदन्ति तच्छीलाश्च ये ते क्रियावादी । नंदी० २१३ । क्रियां वदतीति क्रियावादी वेज्जेत्यर्थः । नि० चू० तृ० ६६ आ । क्रियां–जीवाजीवादिरर्थोऽस्तीत्येवंरूपां वदन्तीति क्रियावादिनः आस्तिकाः । ठाणा० २६८ । यतः कर्मयोगनिमित्तं बध्यते, योगश्च व्यापारः स च क्रियारूपः, अतः कर्मणः कार्यभूतस्य वदनात्तत्कारणभूतायाः क्रियाया अप्यसावेव परमार्थतो वादीति । आचा० २२ ।

किरियाविसालपुव्वं–त्रयोदशपूर्वम् । ठाणा० १९९ ।

किरियाविहाणं–क्रियाविधानं–सिद्धक्रियाविधिः । प्रश्न० ११७ ।

किरियाहिं–क्रिया- सावद्याऽनवद्ययोगनिवृत्तिप्रवृत्तिरूपा । विशे० ६ ।

किलंत–क्लान्तः-ग्लानिमुपगतः । जीवा० १२२ । ग्लानिभूतः । ज्ञाता० २८ ।

किलकिलाइयरवे–किलकिलायितरवः सानन्दशब्दः । जं० प्र० ५३० ।

किलकिलायमानः–किलकिलशब्दं कुर्वाणः । नंदी० १५८ ।

किलाम–क्लमः शरीरायासः । भग० २९५ । देहग्लानिरूपः । आव० ५४७ । ग्लानि । ठाणा० १३ ।

किलामणया–ग्लानिनयनम् । भग० १८४ ।

किलामिओ–क्लामितः समुद्घातं नीतः, ग्लानिमापादितः । आव० ५७४ ।

किलामेंति–क्लमयन्ति--मूर्च्छापन्नान् कुर्वन्ति । प्रज्ञा० ५९२ ।

किलामेइ–मारणान्तिकादिसमुद्घातं नयति । भग० २३० ।

किलामेह–क्लमयथ--मारणान्तिकसमुद्घातं गमयथ । भग० ३८१ ।

किलिंच–शलाका । भक्त० । किलिञ्चं–क्षुद्रकाष्ठरूपः । दश० १५२ ।

किलिंजेण– । राज० १४१ ।

किलिकिञ्चतं–रोषभयाभिलाषादिभावानां युगपद्वा । सम० ६४ ।

किलिकिलाइतं–किलकिलायितम् । आव० ३४८ ।

किलिकिलितो–किलकिलायमानः । आव० ४२२ ।

किलिट्ठं–क्लिष्टं–बाधितम् । उत्त० १२२ ।

किलिन्नं–क्लिन्नं–निचितम् । उत्त० १२२ ।

किलीबे–क्लीबे–नपुंसकः । आचा० ३३१ ।

किलेसो–क्लेशः–रोगः । पिण्ड० ७० । क्लेशः-शारीरी । सूर्य० २९७ ।

किल्बिषिका–अन्तःस्थस्थानायाः । तत्व० ४, ४ ।

किवण–कृपणाः–रङ्कादयो दुःस्थाः । ठाणा० ३४२ । दरिद्राः आचा० ३२५ । अपरित्यागशीलः, अहवा दारिद्दोवहतो जायगो कृपणः । नि० चू० द्वि० ९८ आ । कृपणः–रङ्कः । भग० १०१ । दीनो वराककः, इन्द्रियैः पराजितः । सूत्र० ७२ । रङ्काः–रङ्कादयो दुःस्थाः । ठाणा० ३४१ । प्रश्न० २५ ।

किवणकलुणो–कृपणानां मध्ये करुणः कृपणकरुणः । अत्यन्तकरुणः । प्रश्न० ५९ ।

किवणकुलाणि–कृपणकुलानि–तर्क्कणवृत्तीनि । ठाणा० ४२० ।

किविणं–कृमिवत् । प्रश्न० १६२ । कृपणः–पिण्डोलकः । दश० १८४ ।

किविणवणीमते–कृपणाः–रङ्कादयो दुस्थाः, परेषामात्मदुस्थत्वदर्शनेनानुकूलभाषणतो यल्लभ्यते द्रव्यं सा वनी प्रतीतो तां पिबति–आस्वादयति पातीति वेति वनीपः स एव

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणीपकः–याचकः । ठाणा० ३४१ ।

किव्विस–किल्बिषं क्लिष्टतया निकृष्टमशुभानुबन्धि अधमः । उत्त० १८३ । किल्बिषिकं कर्म । दश० १८६ । किल्बिषं पापम् । प्रज्ञा० ४०५ ।

किव्विसत्तं–किल्बिषत्वं–चाण्डालप्रायदेवविशेषत्वम् । प्रश्न० ११२ ।

किस–कृशं स्तोकमपि तृणतुषादिकमपीत्यर्थः । कसनं–कसः परिग्रहग्रहणबुद्धया जीवस्य गमनपरिणामः । सूत्र० १३ ।

किसलय–किशलयः–अवस्थाविशेषोपेतः पल्लवविशेषः । जीवा० १८८ । किशलयः–अवस्थाविशेषोपेतः पल्लवविशेषः । जं० प्र० २६ । अतिकोमलः । जं० प्र० ५३ । अभिनवपत्रम् । उत्त० ३३४ ।

किसि–कृषिः–क्षेत्रकर्षणकर्म । प्रश्न० ९७ ।

किसिपरासरो–कृषिप्रधानः पारासरः कृषिपारासरः । उत्त० ११८ । शरीरेण कृशस्तेन पारासरः कृशपारासरः । उत्त० ११९ ।

किसी–कृषिः–कृषिकर्मोपजीवी । जीवा० २७९ ।

किसीए–कृषीकरणम् । आचा० ३२ ।

किहं–केन प्रकारेण । भग० ११६ ।

कीअ–कीचकः वंशः । दश० २४३ ।

कीअगडं–क्रीतकृतं–द्रव्यभावक्रयक्रीतभेदम् । दश० १७४ ।

कीएइ–भोजनदोषः । भग० ४६६ ।

कीकशं–अस्थि । प्रश्न० ११ ।

कीकसं– । आव० ६५१ ।

कीटः–कचवरनिश्रितो जीवविशेषः । आचा० ५५ ।

कीटजं–यत्तथाविधकीटेभ्यो लालात्मकं प्रभवति यथा पटसूत्रम् । उत्त० ५७१ ।

कीड–कीटः कृमिः । दश० १४२ । घुणादि । बृ० प्र० १५२ आं । चतुरिन्द्रियजीवभेदः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । उत्त० ६९६ ।

कीडति–क्रीडति–यथासुखमितस्ततो गमनविनोदेन गीतनृत्यादिविनोदेन वा तिष्ठति । जीवा० २०१ ।

कीडयं–वडयपट्टोति । नि० चू० प्र० १२६ अ ।

कीडाए–क्रीडायै–लंघनवलग्नास्फोटनक्रीडानां योग्यः । आचा० १०६ ।

कीते–द्रव्येण भावेन वा क्रीतं–स्वीकृतं यत्तत्क्रीतमिति । ठाणा० ४६० ।

कीय–शबले षष्ठो दोषः । सम० ३९ । क्रीतं–मूल्येन परिगृहीतम्, अष्टमदोषः ।

कीयकडं–क्रीतेन–क्रयेण कृतं–साधुदानाय कृतं क्रीतकृतम् । प्रश्न० १५४ ।

कीयगड–क्रयणं क्रीतं तेन कृतं–निष्पादितं क्रीतकृतं, क्रीतमित्यर्थः । पिण्ड० ९५ । भग० २३१ । क्रीतकृतम् । आचा० ३२९ । कयेण–कडं कीयकडं, कत्तिएण वा कडं–कीयगडं । नि० चू० द्वि० १०३ आ ।

कीयतिय–क्रीतत्रितयं–क्रयणक्रापणानुमतिरूपम् । दश० १६८ ।

कीरंत–क्रियमाणः । ज्ञाता० १७३ ।

कीर–शुकः । जीवा० १८८ ।

कीर्तिः–नीलवर्षधरपर्वते पञ्चमकूटः । ठाणा० ७२ ।

कीलं–कीलकम् । दश० १७६ । कण्ठः । सूत्र० १३० ।

कीलंति–यथासुखमितस्ततो गमनविनोदेन गीतनृत्यादिविनोदेन वाऽवतिष्ठन्ते । जं० प्र० ४६ । कामक्रीडां कुर्वन्ति । भग० ६१८ ।

कीलइ–क्रीडति । आव० १९२ ।

कीलओ–कीलकः । प्रश्न० ५६ ।

कीलकं–कर्पूराकारम् । बृ० द्वि० २४५ अ ।

कीलगसहस्सं–कीलकसहस्रं महत्कीलम् । जीवा० १८९ ।

कीलसंस्थाने–कीलवद्दीर्घमुच्चं गतं तस्मिन् । ओघ० २११ ।

कीलावणधाती–चउत्थी धाई । नि० चू० द्वि० ९३ आ । क्रीडनकारिणी । ज्ञाता० ४१ ।

कीलिआइ–क्रीडतं–स्त्रीभिः सह तदन्या क्रीडेति । सम० १६९ ।

कीलिका–यत्रास्थीनि कीलिकामात्रबद्धानि तत् । जीवा० १५, ४२ । अस्थित्रयस्यापि भेदकमस्थि । राज० ५७ । यत्रास्थीनि कीलिकामात्रबद्धान्येव भवन्ति तत् । प्रज्ञा० ४७२ ।

कीलिगा–अस्थित्रयस्यापि भेदकमस्थि । जं० प्र० १५ ।

कीलिय–क्रीडितं द्यूतादिक्रीडा । प्रश्न० १४० । कीलिका लोहरेखा । दश० ९१ ।

कीव–कीवः पक्षिविशेषः । प्रश्न० २३ । मन्दसंहननम् ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भग० ४७१ । नामविशेषः । ज्ञाता० २०८ । मैथुनाभिप्राये यस्याङ्गादानं विकारं भजति बीजबिन्दूश्च परिगलति स क्लीबः । बृ० तृ० ६६ आ । क्लीबः–असमर्थः । ठाणा० १६४ । क्लीबः–निःसत्त्वः । उत्त० ४५७ ।

कीस–कस्मात् । उत्त० १३५ । कीसत्ता–किंस्वता, किंस्वभावता, कीदृशता वा कः प्रकारः–किंस्वरूपतेत्यर्थः । भग० २२ । किम् । व्य० द्वि० ६७ अ ।

कुंकण–चतुरिन्द्रियजीवविशेषः । उत्त० ६९६ । कोकनदः । प्रज्ञा० ३७ ।

कुंकुम–केशरः । अनु० १५४ । आव० ८२३ । जीवा० १९१ । कुङ्कुमं, जात्यघुसृणम् । जं० प्र० २१३ । कुङ्कुमं–कश्मीरजम् । प्रश्न० १६२ । नि० चू० प्र० २७६ आ, १३६ अ ।

कुंकुमकेसरं–पद्मकम् । दश० २०६ ।

कुंकुमपुड–गन्धद्रव्यः । ज्ञाता० २३२ ।

कुंकुमचच्चिक्कछुरियंतो–कुकुमहस्तकव्याप्तांगः । पउ० २८–२८ ।

कुंच–क्रौञ्च–पक्षिविशेषः । उत्त० ४०७ । सम० १५८ । प्रश्न० २ ।

कुंचवीरगो–सगडपक्खिसारित्थं जलजाणं कज्जति । नि० चू० तृ० १७ अ ।

कुंचिक–तापसविशेषः । व्य० प्र० ६४ आ ।

कुंचिका– । नंदी १६५ । तालोद्घाटिनी । पिण्ड० १०६ ।

कुंचितो–तावसविशेसो । नि० चू० तृ० १०१ आ ।

कुंचिय–कुञ्चितः– कुण्डलीभूतः । भग० १० । वक्रः । प्रश्न० ८२ ।

कुंचियवेधि– । नि० चू० तृ० ५९ आ ।

कुंची–कुडिलो, मायावी । व्य० प्र० ६३ आ ।

कुंजरसेणा–कुञ्जरसेना–ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणां मध्ये षष्ठमी । उत्त० ३७९ ।

कुंजरावत्त–वज्रस्वामिपूजास्थानम् । मर० ।

कुंजरो–कौजीर्यतीति कुञ्जरः कुञ्जे–वनगहने रमति–रतिमाबध्नातीति कुञ्जरः । जीवा० १२२ ।

कुंट–हीनहस्तः । नि० चू० द्वि० ४३ आ । विकृतहस्तः । प्रश्न० २५ । अवयवविशेषः । आचा० ३८९ ।

कुंटत्त–कुण्टत्वं पाणिवक्रत्वादिकम् । आचा० १२० ।

कुंटितो–कुण्टितः । आव० ३९६ ।

कुंडं–पुढविमयं । दश० चू० ९९ । गङ्गाकुण्डादि । नंदी० २२८ । कुलियं । नि० चू०द्वि० २४ आ । स्थलविशेषः । भग० १४२ ।

कुंडग–सण्हतंडुलकणियाओ कुकुसा य कुंडगा । नि० चू० प्र० ३२ अ । कुडङ्गम्–जालिः । आव० ६७० । पानीयभाजनम् । नि० चू० द्वि० ६६ आ । कुण्डकः–कणक्षोदनोत्पन्नकुक्कुसः । उत्त० ४५ ।

कुंडग्गाम–कुण्डग्रामः, वर्धमानस्वामिविहारभूमिः । आव० २११। ब्राह्मणकुण्डग्रामविषयोऽष्टमशते त्रयंत्रिंशत्तमोद्देशकः। भग० ४२५ । वैश्यायनतापसस्थानम् । भग० ६६५ ।

कुंडदोहणी–कुण्डदोहनी । ओघ० ९७ ।

कुंडधारपडिमाओ–कुण्डधारप्रतिमे–आज्ञाधारप्रतिमे। जं० प्र० ८२ ।

कुंडधारी–तीर्यक्जृम्भकदेवविशेषः । आचा० ४२२ ।

कुंडपुरं–कुण्डपुरं–वर्द्धमानजन्मभूमिः । आव० १६० । प्रवज्यास्थानम् । आव० ३१२ । सुदर्शनाया वास्तव्यस्थानम् । उत्त० १५३ ।

कुंडमोए–कुण्डमोदं, हस्तिपादाकारं मृन्मयं पात्रम् । दश० २०३ ।

कुंडरिया–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

कुंडरोट्ट– । नि० चू० प्र० ११६ अ ।

कुंडल–कुण्डलं–कर्णाभरणविशेषरूपः । प्रज्ञा० ८८ । कर्णाभरणविशेषः । औप० ५० । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६८ । अरुणवरावभाससमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ । कुण्डलं–कर्णाभरणविशेषः । भग० १३२ ।

कुंडलजुअलं–कुण्डलयुगलं–कर्णाभरणम् । आव० १८० ।

कुंडलभद्दो–कुण्डलभद्रः–कुण्डले द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

कुंडलमहाभद्दो–कुण्डलमहाभद्रः– कुण्डले द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंडलवर–द्वीपविशेषः । अनु० ९० । कुण्डलवरे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ । कुण्डलसमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ । कुण्डलवराख्ये द्वीपे प्राकारकुण्डलाकृतिः–कुण्डलवरः । ठाणा० १६६, १६७ । कुण्डलवरः कुण्डलसमुद्रपरिक्षेपी द्वीपविशेषः । कुण्डलवरद्वीपपरिक्षेपी समुद्रश्च । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवरभद्दो–कुण्डलवरभद्रः कुण्डलवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवरमहाभद्दो–कुण्डलवरमहाभद्रः कुण्डलवरे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवरमहावर–कुण्डलवरे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवरावभास–कुण्डलवरसमुद्रानन्तरं द्वीपः, तदनन्तरं समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ ।

कुंडलवरावभासभद्द–कुण्डलवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ । कुण्डलवरसमुद्रपरिक्षेपी द्वीपः, कुण्डलवरावभासद्वीपतत्परिक्षेपी समुद्रश्च । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवरावभासमहाभद्दः–कुण्डलवरावभासे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवरावभासमहावर–कुण्डलवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवरावभासवर–कुण्डलवरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

कुंडला–कुण्डला सुकच्छविजये राजधानी जं० प्र० ३५२ ।

कुंडलाओ–विदेहेषु राजधानी, विशेषनाम । ठाणा० ८० ।

कुंडलिक–मात्रकं हस्तो वा । ओघ० १६७ ।

कुंडलो–कुण्डलः अरुणवरावभाससमुद्रपरिक्षेपी द्वीपविशेषः । ओघ० १६८ । कुण्डलद्वीपपरिक्षेपी समुद्रश्च । जीवा० ३६८ । कुण्डलः जम्बूद्वीपादेकादशकुण्डलाभिधानद्वीपान्तर्वर्त्ती कुण्डलाकारपर्वतः । प्रश्न० ९६ ।

कुंडागं–कुण्डाकं सन्निवेशः । आच० २०९ ।

कुंडिआ–कुण्डिका । अनु० १५२ ।

कुंडिका–कुण्डिका । उत्त० ११३ ।

कुंडिगा–कमण्डलू । बृ० द्वि० २१ आ ।

कुंडिनी–भीष्मराजधानी । प्रश्न० ८८ ।

कुंडिय–कुण्डिका कमण्डलू । भग० ११३ ।

कुंडिया–कुण्डिका–कमण्डलू । प्रश्न० १५२ । औप० ९५ । आव० ३०५ । आलुका । अनुत्त० ५ । भग० ६६३ ।

कुंडियायणस्स– । भग० ६७५ ।

कुंडी–पानीयभाजनविशेषः । नि० चू० तृ० ६१ अ ।

कुंडुक्क–भूमिस्फोटकविशेषः । आचा० ५७ ।

कुंडुल्कं–आलिन्दकम् । अनु० १५३ ।

कुंढो–कुण्ढः–मायावी । उत्त० १०८ ।

कुंत–भल्लः । आव० ५८८ । प्रज्ञा० ९७ । कुन्तम् । जीवा० ११७ । कुन्तकं–एतावद्द्रव्यं त्वया देयमित्येवं नियन्त्रणया नियोगिकस्य देशादेर्यत्समर्पणम् । विपा० ३९ । शस्त्रविशेषः । जीवा० १९३ । कुन्तः–भल्लाभिधः शस्त्रविशेषः । आव० ६५१ ।

कुंतग्गं–कुताग्रं–भल्लाग्रम् ।

कुंतफल–कुन्तफलम् । आचा० ३११ ।

कुंतल–शेखरकः । ज्ञाता १३८ ।

कुंती–पाण्डुराजपत्नी । प्रश्न० ८७ ।

कुंथु–कुंथवः–सत्त्वाः । ओघ० १२६ । अनुद्धरिप्रभृतिः । उत्त० ६९५ । पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः । आचा० ५५ । गोमयनिश्रितो जीवविशेषः । आचा० ५५ । षष्ठः चक्रवर्त्तिनाम् । नि० चू० प्र० २७६ आ । कुन्थुः–सप्तदशो जिनः, मनोहरेऽभ्युन्नते महाप्रदेशे स्तूपं रत्नविचित्रं स्वप्ने द्रष्टा प्रतिबुद्धा तेन तस्य कुन्थुरिति नामकृतम् । आव० ५०५ ।

कुंथू–कुः पृथ्वी तस्यां स्थितवानिति कुस्थः । आव० ५०५ । षष्ठः चक्रवर्त्तिनाम । सम० १५२ । ठाणा० ३०२ । कुन्थुः षष्ठः चक्री । आव० १५९ । त्रीन्द्रियजीवविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

कुंथूपिवीलिया–कुन्थुपिपीलिका–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः जीवा० ३२ ।

कुंदं–कुन्दं कुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ । जीवा० २७२ । लताविशेषः । भग० ८०२ । पुष्पजातिविशेषः । ज्ञाता० ६९ । पुष्पविशेषः । जं० प्र० ३५ ।

कुंदकलिका–धवलपुष्पम् । प्रज्ञा० ९१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंदगुम्मा–कुन्दगुल्माः । जं० प्र० ९८ ।
कुंदरुक्क–चीडाभिधानगन्धद्रव्यः । प्रश्न० ७७ ।
कुंदु–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ ।
कुंदुरुक्क–चीडा । सम० १३८ । सिल्हकम् । सूर्य० २९३ । कुक्कटरुत । आव० ४०८ । चीडा । ज्ञाता० ४० । औप० ५ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ । कुन्दुरुक्कः–चीडाभिधं द्रव्यम् । जं० प्र० १४४ । चीडा । प्रज्ञा० ८७ । कुन्दुरुष्कः–चीडा । जीवा० १६०, २०६ ।
कुंदुलता–लताविशेषः । जीवा० १८२ ।
कुंदो–गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
कुंभ–ललाटम् । बृ० तृ० १३ अ । आढकषष्ट्यादिप्रमाणतः । ठाणा० ४६२ । कुंभ एव, अहवा चउकट्ठि काउं कोणे कोणे धडओ बज्झति, तत्थ अवलंबिउं आरंभिउं वा संतरणं कज्जति । नि० चू० प्र०४४ आ । एगो घडणा वा । नि० चू० द्वि० ७७ आ । मुनिसुव्रतनाथस्य प्रथमशिष्यः । सम० १५२ । एकोनविंशतितमः तीर्थंकरस्य पिता । सम० १५१ । नवमस्वप्नः । ज्ञाता० २० । नरके एकादशः परमाधार्मिकः । उत्त० ६१४ । आव० ६५० । सम० २९ । मल्लिजिनपिता । ज्ञाता० १२४ । आव० १६१ । सूत्र० १२४ । आढकानां षष्ट्या जघन्यः कुम्भः अशीत्या मध्यमः शतेनोत्कृष्ट इति । ज्ञाता० ११९ । घटः । आव० २९५ ।
कुंभकारकड–उत्तरापथे प्रत्यन्तनगरम् । बृ द्वि० १५३ अ । उत्तरापथे णगरं । नि० चू० तृ० ४४ अ । कुम्भकारकटम् । उत्त० ११४ ।
कुंभकारापाकः– । जीवा० १२४ ।
कुंभकारुक्खेवो–कुम्भकारोत्क्षेपः–सेनापल्लयां पत्तनविशेषः। आव० ५३८ ।
कुंभग–मिथिलायां राजा । मल्लिपिता । ज्ञाता० १२४ ।
कुंभगारगड–कुम्भकारकृतः–नगरविशेषः । व्य० द्वि० ४३२ अ ।
कुंभगारो–कुम्भकारः–ढङ्काभिधो श्रमणोपासकः । आव० ३१३ ।
कुंभग्गं–कुम्भाग्रं–मगधदेशप्रसिद्धं कुम्भप्रमाणमुक्तामयं मुक्तादाम । जीवा० २१० । कुम्भपरिमाणतः । ज्ञाता० १२६ ।
कुंभग्गसो–कुम्भाग्रशः–अनेककुम्भपरिमाणानि । जं० प्र० १६२ ।
कुंभबलि–कुम्भबलिका । आव० ६७५ ।
कुंभार–प्रथमा श्रेणिविशेषः । जं० प्र० १९३ ।
कुंभि–कुम्भी–पाकभाजनविशेषः । प्रश्न० १६४ ।
कुंभिक– । प्रज्ञा० ११ ।
कुंभिका–कुम्भो मुक्ताफलानां परिमाणतया विद्यते येषु तानि कुम्भिकानि । ठाणा० २३२ ।
कुंभिक्का–कुम्भाग्रं–मगधदेशप्रसिद्धं कुम्भपरिमाणम् । जं० प्र० ५६ ।
कुंभिपाग–कुम्भ्यां–भाजनविशेषे–पाकः कुम्भीपाकः । सम० १२६ ।
कुंभी–नरके–रत्नप्रभादिनरकपृथिव्यात्मके स्थानानि–सीमन्तकाप्रतिष्ठानादीनि । उत्त० २४७ । मुखाकारा कोष्ठिका । बृ०द्वि० १७९अ । जस्स वसणा सुज्जंति । नि० चू० द्वि० ३३ अ । कुम्भी–उष्ट्रिकाकृतिः । सूत्र० १२५ । पिठरक एव सङ्कटमुखः कुम्भी । आचा० ३२७ । कुम्भी-नारकपचनस्थानम् । आव० ६५१ । वनस्पतिविशेषः । भग० ५११ । कुम्भिकः नरकपालविशेषः । आव० ६५१ ।
कुइयण्ण–कुविकर्णः गोमण्डलाधिपतिः । विशे० ३२८ ।
कुउब–कुतुपं– चर्ममयं घृतभरणभाजनम् । पिण्ड० १५४ ।
कुऊहलं–कुतूहलं–इन्द्रजालाद्यवलोकनगोचरः । उत्त० १५१ ।
कुऊहल्ले–कुतूहलः–औत्सुक्यः । सूर्य० ५ ।
कुकुम्मा–मत्स्यबन्धवागुरिकादयः । बृ० द्वि० ५१ अ । कुकर्माणः–मात्स्यिकादयः । ओघ० ७५ ।
कुच्छियकम्मा–मच्छबंधगादयो । नि० चू०प्र०१०७ अ ।
कुकम्मो–कुकर्मी–अङ्गारदाहककुम्भकारायस्कारादिकः । सूत्र० १६१ ।
कुकुइया–भाण्डाः । भाण्डप्रायाः । भग० ४७९ ।
कुकुच–भण्डचेष्टः । बृ० प्र० २१३ अ ।
कुकुचित–कुत्सितं–अप्रत्युपेक्षितत्वादिना कुचितं–अघस्यन्दितं यस्य सः कुकुचितः । ठाणा० ३७३ ।
कुकुर–श्वा । बृ० प्र० ८१ आ । श्वा । आचा० ३१४ ।
कुकुला–फुफुका । दश० ११५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुकुस–कुक्कुसा–तुषप्रायः, धान्यक्षोदः । आचा० ३४२ ।

कुकूलानलो–कुकूलानलः । कारीषाग्निः । प्रश्न० १४ ।

कुक्कडे–चतुरिन्द्रियजीवविशेषः । उत्त० ६६६ ।

कुक्कुइआ–कौत्कुच्यकारिणो भाण्डाः । जं० प्र० ३६४ ।

कुक्कुइए–कुत्सितसङ्कोचनादिक्रियायुक्तः कुचः कुकुचस्तद्भावः कौकुच्यम् । अनेकप्रकारा मुखनयनोष्ठकरचरणभ्रूविकारपूर्विकापरिहासादिजनिका भाण्डादीनामिव विडम्बनक्रिया । आव० ८३० । कौकुचिकः–कुकुचा वा–अवस्यन्दनं प्रयोजनमस्येति । ठाणा० ३७३ । कौत्कुच्यं–अनेकप्रकारा मुखनयनादिविकारपूर्विका परिहासादिजनिका भाण्डानमिव विडम्बनक्रिया । उपा० १०६ ।

कुक्कुइय–कुकुचेन–कुत्सितावस्पन्देन चरन्तीति कौकुचिकाः । औप० ९२ । खुंखुणकम् । सूत्र० ११७ ।

कुक्कुओ–स्थानशरीरभाषाभिश्चपलः । बृ० तृ० २४७ अ ।

कुक्कुटमांसकं–बीजपूरककटाहम् । ठाणा० ४५७ ।

कुक्कुटी–कवलानां प्रमाणं कुक्कुट्यण्डम् । शरीरम् । पक्षिणी । पिण्ड० १७३ ।

कुक्कुड–कुर्कुट-विद्यादिना दम्भप्रयोगलक्षणम् । व्य० प्र० १६६ अ । कुर्कुटः–ताम्रचूडः । ज्ञाता० १ । प्रश्न० ८ । कुक्कुडप्रायः । ओघ० ५६ । चतुरिन्द्रियजीविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । कक्कुटः–लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ । कुक्कुटाः चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

कुक्कुडगो–कुर्कुटः । आव० ४२८ ।

कुक्कुडजाइयं–कुक्कुटजातिकं, अनेन पक्षिजातिरुद्दिष्टा । आचा० ३४० ।

कुक्कुडपोअ–कुक्कुटपोतः–कुक्कुटचेल्लकः । दश० २३७ ।

कुक्कुडमंसए–कुक्कुटमांसकं–बीजपूरकं कटाहम् । भग० ६९१ ।

कुक्कुडलक्खण–द्वासप्ततौ कलायां सप्तत्रिंशत्तमा । ज्ञाता० ३२ ।

कुक्कुडसंडेयगामपउरा–कुक्कुडसम्पात्या ग्रामाः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च प्रचुरा यस्याः सा कुक्कुडसण्डेयग्रामप्रचूराः । राज० २ ।

कुक्कुडि–कुक्कुटिः माया । पिण्ड० ९३ । कुक्कुटी–शरीरम् । व्य० द्वि० ३३३ आ ।

कुक्कुडिअंडो–कुक्कुड्यण्डकम् । व्य० द्वि० ३३३ आ ।

कुक्कुडिअंडगपमाण–कुक्कुट्यण्डकस्य यत् प्रमाणं मानं तत् । भग० २९२ ।

कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ता–कुक्कुट्यण्डकप्रमाणमात्रा, कुक्कुट्यण्डकस्य यत्प्रमाणं–मानं तत्परिमाणं–मानं येषां ते तथा, अथवा कुकुटीव–कुटीरमिव जीवस्याश्रयत्वात् कुटी–शरीरं कुत्सिता अशुचिप्रायत्वात् कुटी कुकुटी तस्या अण्डकमिवाण्डकं उदरपूरकत्वादाहारः कुकुट्यण्डकं तस्य प्रमाणतो-मात्रा द्वात्रिंशत्तमांशरूपा येषां ते । भग० २९२ ।

कुक्कुडिय–कोकुटिकाः–मातृस्थानकारिणः । बृ० प्र० ३०५ अ ।

कुक्कुडी–कुकुटी–कुटीरम् । भग० २९२ ।

कुक्कुयय–खुंखुणकम् । सूत्र० ११७ ।

कुक्कुरा–कुकुरीः–श्वानस्ते च जिहिंसुः । आचा० ३१० ।

कुक्कुस–तुषप्रायो धान्यक्षोदः । दश० १७० ।

कुक्कुसा–अतिगुलीकाः । बृ० तृ० १९५ अ । कुक्कुसा–कणिक्का । आव० ६२२ ।

कुक्कुह–चतुरिन्द्रियजीवविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

कुचरा–चौरपारदारिकादयः । आचा० ३०८ । कुत्सितयचरा कुचरा पारदारकादि । नि० चू० तृ० ५८ अ ।

कुचा–मृत्तिकाया उदकस्य च वधः । बृ० प्र० २९४ आ ।

कुचिकर्णः–मागधजनपदे धनपतिः । आव० ३४ ।

कुचेले–जीर्णकर्पटः । ओघ० ७४ ।

कुच्चं–कूर्चम् । आव० ३९१ ।

कुच्चंधरो–कूर्चधरः अन्तःपुराधिष्ठायकः । ओघ० ७४ ।

कुच्चगं–कूर्चकाः क्रियन्ते येन । आचा० ३७२ ।

कुच्चो–कूर्चाः–येन तृणविशेषेण कुविन्दाः कूर्चान् कुर्वन्ति, कुशदर्भयोराकारकृतो विशेषः । प्रश्न० १२८ ।

कुच्चिए–कूर्चधरः । बृ० द्वि० ९० आ ।

कुच्ची–कुच्चंहरा । नि० चू० द्वि० १७२ अ ।

कुच्छणा–कुत्सना–अङ्गुल्यन्तराणां कोथः । व्य०द्वि०९ आ ।

कुच्छलवाहगा–त्रीन्द्रियजीवविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

कुच्छा–कुत्सा–प्रतिषेधः । दश० २७० ।

कुच्छि–कुक्षिः–द्विहस्तमानः । प्रज्ञा० ४८ । द्विहस्तिप्रमाणा । नंदी० ९६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुच्छिकिमिया-कुक्षिकृमयः-कुक्षिप्रदेशोत्पन्नाः कृमयः। जीवा० ३१ । कुक्षिप्रदेशोत्पन्ना कृमयः कुक्षिकृमयः। प्रज्ञा० ४१ ।

कुच्छिधार-कुक्षिधारा- नौपार्श्वनियुक्तकाः आवेल्लकवाहकादयः । ज्ञाता० १३६ ।

कुच्छिय-कुत्सित असारः । विशे० १०३७ ।

कुच्छिसूल-कुक्षिशूलं-रोगविशेषः । ज्ञाता० १२१ ।

कुच्छी-अष्टचत्वारिंशदङ्गुलप्रमाणा । भग० २७५ । अष्टचत्वारिंशदङ्गुलानि कुक्षिः । जं० प्र० ९४ । कुक्षिः-द्विहस्तमानाः । जीवा० ४० ।

कुच्छेज्जा-कुथ्येत्-पूतिभावं यायात् । अनु० १६२ ।

कुज्जा-कुर्यात्-करोतेः सर्वधात्वर्थत्वाद् गृह्णीयात् । उत्त० ५३९ ।

कुटुंबिया-साधुसद्देण विच्छुद्धा खेताणी गच्छन्ति । नि० चू० प्र० १०७ अ ।

कुटुंबी-प्रभूतपरिचारकलोकपरिवृतः । बृ० द्वि० २७६ आ ।

कुट्टणी-कण्डनकारिणी । बृ० द्वि० ६५ अ ।

कुट्टविंदो-वडपिप्पलआसत्थयमादिदाणवक्को मट्टियाए सह कुटिज्जति सो । नि० चू० तृ० ६४ अ ।

कुट्टा-चिश्वतिका । बृ० प्र० २६७ आ ।

कुट्टिज्जताणं- । राज० ५२ ।

कुट्टितं-छिद्रितं । नि० चू० द्वि० ६५ अ ।

कुट्टियं-पत्थरादिणा । नि० चू० द्वि० १७२ आ ।

कुट्टियाओ- । नि० चू० प्र० १७१ आ ।

कुट्टंबं-कोट्टंबिनीं-गामित्यर्थः । बृ० तृ० ९८ आ ।

कुट्टं-कष्टम् । नि० चू० प्र० २८९ अ । रोगविशेषः । नि० चू० प्र० १८८ अ । कुष्ठं-गन्धकहट्टविक्रेयो वस्तुविशेषः । विशे० १७३ । नि० चू० प्र० १० आ ।

कुंड-माया । नि० चू० द्वि० ६३ अ ।

कुडंग-वंशजालिका । बृ० द्वि० ९ अ । वनखण्डम् । बृ० द्वि० २४६ अ । वंशादिगहनम् । ज्ञाता० २३९ । देवकुलं वृक्षविषमो वा । व्य० प्र० २०५ अ ।

कुडंगीसरट्ठाणं-गन्धवदुज्जयिन्यां स्थानम् । मर० ।

कुडओ-चतुःसेतिकः कुडवः । ज्ञाता० ११९ ।

कुडगं-तुसमुहीकणिया कुक्कससीमा कुडगं भणणति । नि० चू० प्र० १९६ अ ।

कुडगफाणिए-कुटजफाणितं-कुटजक्काथम् । प्रज्ञा० ३६४ ।

कुडगो-कुटः-कुम्भः । आव० ३१० ।

कुडभी-लघुपताका । जीवा० २२९ । जं० प्र० ४०३, आव० ७१९ । जं० प्र० ३२५ । पताका । उत्त० ३०३ ।

कुडमुहे- । नि० चू० प्र० ३५७ आ ।

कुडय-कुटजपुष्पाणि । जं० प्र० २१२ ।

कुडयज्जुणणीव-कुटजार्जुननीपा-वृक्षविशेषास्तत् पुष्पाणि कुटजार्जुननीपानि । ज्ञाता० १६१ ।

कुडवं-मानविशेषः । आव० ८२३ ।

कुडह- । ओघ० २०९ ।

कुडा-कुण्डानि-गङ्गाकुण्डानि ।

कुडागाराणि-कूटागारान्- पर्वतोपरिगृहाणि । आचा० ३८२, नंदी० २२८ ।

कुडाविमा-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।

कुडाहच्चं-कूटाघातम् । राज० १३४ ।

कुडि-बृहती । आव० २६२ । कुटी । आव० ५२० ।

कुडिउ-बद्धाङ्गः । नि० चू० प्र० १६१ आ ।

कुडियंठो-कुण्डिकाण्ठः । आव० २७३ ।

कुडिय-हृतगवेषकः: । उत्त० १०९ ।

कुडिलगइ-कुटिलगतिः-वक्रगतिः । आचा० ४२ ।

कुडिलो-कुटिलः वक्रः । प्रश्न० ३० ।

कुडिव्वय-कुटिव्रतः-परिव्राजकविशेषः । औप० ९१ ।

कुडी-कुटी-शरीरम् । भग० २९२ । गृहः । आव० ४८४ ।

कुडीरग-कुटीरकं, तृणादिनिर्मितं लघुगृहम् । दश० १६६ ।

कुडीरी-ओरजम् । तं० ।

कुडुंबजागरिय-कुटुम्बचिन्तायं जागरणं-निद्राक्षयः कुटुम्बजागरिका । ज्ञाता० ८३ ।

कुडुंबिणीओ-पदातिरूपाः । भग० ५४८ ।

कुडुंबिया-कतिपयकुटुम्बस्वामिनः । राज० १२१ ।

कुडुंभगो-जलमंडुओ । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

कुडुग-बहुबीजविशेषः । भग० ८०३ ।

कुडुभं- । नि० चू० प्र० १८० आ ।

कुड्डंतर-कुड्यान्तरं-कुड्यं खटिकादिरचितं तेनान्तरं-व्य-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वधानं कुड्यान्तरम् । उत्त० ४२५ ।

कुड्ड-कुड्ड-भित्तिः । आव० ६१६ । कुड्यम् । ओघ० ६१, १५३ । कायोत्सर्गे चतुर्थो दोषः । आव० ७९८ । कुड्य-भित्तिः । उत्त० ५३० । खटिकादिरचितम् । उत्त० ४२५ ।

कुड्मलं-मुकुलं, कलिका । जीवा० १८२ ।

कुड्य- । ठाणा० ३०१ । आचा० १६५ ।

कुड्यैकदेशः-भित्तिमूलम् । दश० १७८ ।

कुढावय-अनुगमनम् । विशे० ६२० ।

कुढिय-हृतगवेषकः । उत्त० ११० । ग्रामाधिपः, आरक्षकः । आव० २७२ ।

कुढिया-कुविया । नि० चू० प्र० ७७ अ ।

कुढो-चौरहृतागवेषकः । बृ० द्वि० २२ अ । दश० चू० ४४ । नि० चू० प्र० ६ आ ।

कुणपके-कुहणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

कुणपनहो-कुणपे-मांसे सूक्ष्मो नखो नखावयवः स कुणपनखावयवः । व्य० प्र० २५५ आ । जनपदविशेषः । नि० चू० द्वि० ८० आ ।

कुणाल-अशोकश्रीपुत्रः । बृ० द्वि० १५३ आ । विशे० ४०६ । कुणालः, भावप्रणिधावुदाहरणे दृष्टान्तः । आव० ७१३ । असोगस्स पुत्तोः । बृ० तृ० ४७ अ ।

कुणालकुमार-पाडलिपुत्ते असोगसिरिराया तस्स पुत्तो कुणालो । नि० चू० तृ० ४४ आ ।

कुणाला-जङ्घार्धमानैरावतीकण्ठे नदी । बृ० तृ० १६१ आ । एरवती णदी कुणाला जणपदे, जनपदविशेषः । नि० चू० द्वि० ८० आ । जनपदः । राज० ११६ । जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । ज्ञाता० १४० । कुणाला यत्र श्रावस्तीनगरी । ज्ञाता० १२५ ।

कुणि-गर्भाधानदोषात् हृस्वैकपादो न्यूनैकपाणिर्वा कुणिः कुण्ट इति । प्रश्न० १६१ । पाणिविकलः । बृ० द्वि० ११९ अ ।

कुणिए- । राज० १४३ ।

कुणिओ-कुणिकः-सेवकविशेषः । प्रश्न० १५ ।

कुणिमं-मांसम् । तं० । उपा० २९ । रुधिरम् । आव० ५६१ । कुणपः-शवः । अनु० १३८ । प्रश्न० ५२ । मांसम् । पिण्ड० ७१ । जीवा० १०७ । शबस्तद्रसोऽपि वसादिः कुणपः । जं० प्र० १७१ ।

कुणिमवावण्ण-व्यापन्नं-विशरारुभूतं कुणिमं-मांसं यस्य स । जीवा० १०७ ।

कुणिमाहारे-कुणपः-शबस्तद्रसोऽपि वसादिः-कुणपस्तदाहारः कुणपाहारः । भग० ३०९ ।

कुणियं-मरहट्ठविसए चोद्दिति कुणियं वा भणंतो । नि० चू० प्र० २९४ आ । गर्भाधानदोषाद् हृस्वैकपादो न्यूनैकपाणिर्वा कुणिः । आचा० २३३ ।

कुण्डकोलिए-रूपकान्तः । उपासकदसायां षष्ठमध्ययनम् । उपा० १ ।

कुतप-बस्तिः । नंदी० १६२ । तैलादिभाजनविशेषः । भग० ४७९ । चर्ममयं भाजनविशेषः । बृ० द्वि० २३६ अ ।

कुतव-कुतपः-छागलम् । ठाणा० ३३८ । भाजनविशेषः । नि० चू० प्र० ३५४ अ ।

कुतित्थ-कुतीर्थम् । आव० ५६१ । कुत्सितानि च तानि तीर्थानि-कुतीर्थानि च शाक्यौलूक्यादिप्ररूपितानि तानि विद्यन्ते येषामनुष्ठेयतया स्वीकृतत्वात्ते कुतीर्थिनः । उत्त० ३३७ ।

कुतित्थियधम्मो-कुतीर्थिकधर्मः-चरकपरिव्राजकादिधर्मः । दश० २३ ।

कुतुंबक-कुस्तुम्बकः । जीवा० १०५ ।

कुतुंबकसंठिय-कुतुम्बकसंस्थितः-आवलिका बाह्यस्यैकविंशतितमं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

कुतुप-पक्वतैलादिभाजनम् । औप० ६९ । चर्मनिष्पन्नं घृतभरणपात्रम् । पिण्ड० ३५ । चर्मकुम्भः । पिण्ड० १०५ ।

कुतूहलं-नटादिविषयम् । आव० ३४६ ।

कुत्तिय-स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणं भूमित्रयं तत्संभवं वस्त्वपि कुत्रिकम् । भग० १३६ ।

कुत्तियावण-कुत्रिकं-स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणं भूत्रयं तत्सम्भवि वस्त्वपि कुत्रिकं तत्सम्पादको य आपणो-हट्टो देवाधिष्ठितत्वेनासौ कुत्रिकापणः । भग० ४७२ । कूनास्वर्गपातालमर्त्यभूमीनां त्रिकं कुत्रिकं तात्स्थ्यात् तद्व्यपदेश इति कृत्वा तत्स्थलोका अपि कुत्रिकमुच्यते, कुत्रिकमा-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणयति–व्यवहरति यत्र हट्टेऽसौ कुत्रिकापणः । अथवा धातुजीवमूललक्षणेभ्यस्त्रिभ्यो जातं त्रिजं सर्वमपि वस्त्वित्यर्थः, कौ–पृथिव्यां त्रिजमापणयति–व्यवहरति यत्र हट्टे स कुत्रिजापणः । विशे० ६६४ । कुत्रिमापणः । आव० ३२० । देवाधिष्ठितत्वेन स्वर्गमर्त्यपातालक्षणभूत्रितयसंभविवस्तुसंपादक आवणो–हट्टः कुत्रिकापणः । ज्ञाता०५६ । कुत्रिकं–स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणं भूमित्रयं तत्सम्भवं वस्त्वपि कुत्रिकं तत्सम्पादक आपणो–हट्टः कुत्रिकापणः । भग० १३६ । उत्त० १७१ ।

कुत्तियावणचच्चरी–कुत्रिकापणचर्चरी, (चर्चरी–चर्चा) । दश० ५८ ।

कुत्थुंभरि–कुस्तुम्भरि–वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

कुत्सति–निन्दति । आव० ५८७ ।

कुथुंभरि–धाणगा । नि० चू० प्र० १४४ आ ।

कुदंडयं–कुदण्डकं–काष्ठमयं प्रान्तरज्जुपाशम् । प्रश्न० ५६ ।

कुदंडो–कुदण्डः–असम्यग्निग्रहः । विपा० ६३ । बन्धनविशेषः । प्रश्न० २२ ।

कुदंसणं–मिथ्यादर्शनम् । आउ० । कुदर्शनाः शाक्यादयः । प्रज्ञा० ६० ।

कुद्दव–कोद्रवः, सामायिकलाभे दृष्टान्तः । आव० ७५ ।

कुद्दाल–वृक्षविशेषः । भग० २७८ । उपरितनो भागः । उपा० २१ । कोद्दालः । जं० प्र० ६८ । खननशस्त्रम् । शस्त्रविशेषः । आचा० ३३ । कुद्दालः–भूखनित्रम् । प्रश्न० २४ ।

कुद्ध–क्रुद्धः । ज्ञाता० २१७ ।

कुपक्ख–कुपक्षः–कुत्सितान्वयः । आचा० ३८८ ।

कुप्परा–कूर्पराविव कूर्परौ कूर्पराकारत्वात् । जं० प्र० २०० ।

कुप्पावयणियं–कुत्सितं प्रवचनं येषां ते तथा तेषु भवं कुप्रावचनिकम् । अनु० २६ ।

कुप्पासओ–कुर्पासकः–कंचुकाः । बृ० द्वि० २३५ अ । बृ० द्वि० २५६ आ ।

कुबेरदत्तो–निजसुतागामी । भक्त०

कुब्जसंस्थानं–पञ्चमं संस्थानम् । प्रज्ञा० ४७२ ।

कुब्जिका–वक्रजङ्घा । ज्ञाता० ४१ ।

कुब्बं–निम्नं क्षाममित्यर्थः । उपा० २१ ।

कुब्बरो–कूबरः वैश्रमणलघुपुत्रः । अन्त० ५ ।

कुमार–दुःखमृत्युः । उपा० ५१ । विरुपमारणप्रकारः । ज्ञाता० १६२ । प्रत्यन्तान् सीमासन्धिवर्तिनः क्षुभ्यतोऽन्तर्भूतण्यर्थत्वात् समस्ता अपि सीमापर्यन्तवर्त्तिनीः प्रज्ञाः क्षोभयतो दुर्दान्तान् दुःशिक्षितान् संग्रामनीति कुशलः सर्वतः सर्वासु दिक्षु यो दमयन् वर्तते स एतादृशः कुमारः । व्य० प्र० १७० अ । कुमारः–द्वितीयवयोवर्तिछात्रादिः । उत्त० ३६४ । कुत्सिता माराः कुमाराः– सौकरिकाः ओघ० ७५ । कुमारा–राज्यार्हाः । प्रथमवयस्थाः । ठाणा० ५०८ । मोदकप्रियकुमारः । पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्तः । नंदी० १६६ । अयस्कारः । उत्त० ४६१ । कुमारः राज्यार्हः । प्रश्न० ६६ । अमुक्तभोगी । बृ० द्वि० १३ आ ।

कुमारगाह–कुमारग्रहः उन्मत्ततहेतुः । भग० १६७ ।

कुमारग्गहो–कुमारग्रहः । जीवा० २८४ ।

कुमारनंदी–कुमारनंदी चम्पायां सुवर्णकारः । आव० २६६ । बृ० तृ० १०८ आ ।

कुमारपुत्तिय–कुमारपुत्रः निर्ग्रन्थविशेषः । सूत्र० ४१० ।

कुमारभिच्चं–कुमाराणां–बालकानां भृतौ पोषणे साधु कुमारभृत्यं, तद्धि शास्त्रं कुमारभरणस्य क्षीरस्य दोषाणां संशोधनार्थं दुष्टस्तन्यनिमित्तानां व्याधीनामुपशमनार्थं चेति। आयुर्वेदस्य प्रथमाङ्गम् । विपा० ७५ । ठाणा० ४२७ ।

कुमारभुत्ती–कुमारभुक्तिः । आव० ३६६ । नि० चू० प्र० २४३ अ ।

कुमारसमण–कुमारश्चासावपरिणीततया श्रमणश्च तपस्वि रिव तया कुमारश्रमणः । उत्त० ४६८ ।

कुमारामच्च–कुमारामात्यः । आव० ६७६, ४३६ नंदी० १६३ । दश० ५४ । कुमारामात्यः, असत्या सम्बद्धप्रलापित्वे उदाहरणम् । आव० ८३६ ।

कुमारामच्चत्तं–कुमारामात्यत्वम् । उत्त० १०५ ।

कुमारायं–कुमाराकं सन्निवेशः । वर्धमानस्वामिविहारभूमिः । आव० २०२ ।

कुमारिए–सौकरिकः । बृ० द्वि० ५१ अ । मारेति तं कुमारिया । नि० चू० प्र० १०७ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारिया–जे कुमारेण मारेंति ते । नि० चू० प्र० १०७ आ ।
कुमारोलग्गएहिं–कुमारावलगकैः । उत्त० ११५ ।
कुमुअं–कुमुदं गर्द्दभकम् । दश० १८५ । कुमुदं-चन्द्रबोध्यम् । जं० प्र० ११५ ।
कुमुतं–कुमुदं–चन्द्रविकाश्यं पद्मम् । प्रश्न० ८४ ।
कुमुदं–सहस्रारकल्पे विमानविशेषः । सम० ३३ । आनतकल्पे विमानविशेषः । सम० ३५ । कुमुदः–चन्द्रबोध्यम् । भग० ५२० । कुमुदः दिग्हस्तिकूटनाम । जं० प्र० ३६० । कुमुदो विजयः । जं० प्र० ३५७ । जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
कुमुदगुम्मं–आनतकल्पे विमानविशेषः । सम० ३५ ।
कुमुदप्पभा–कुमुदप्रभा, पुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३३५ ।
कुमुदा–कुमुदा पुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३३५ । अञ्जनकपर्वते पुष्करिणी । ठाणा० २३० ।
कुमुदुगं–धान्यविशेषः । सूत्र० ३०९ ।
कुमुयं–कुमुदं चन्द्रविकासि । जीवा० १७७ । १९१ । कुमुदः । राज० ८ । चन्द्रबोध्यादीनि । ज्ञाता० ९८ ।
कुमुयदल–कुमुददलम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
कुमुया–महाविदेहेषु राजधानीविशेषः । ठाणा० ८० । कुमुदा–पश्चिमदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्यां पुष्करिणी । जीवा० ३६४ ।
कुमुयाइं–चन्द्रविकासीनि । जं० प्र० २६ ।
कुम्म–कूर्मः षष्ठाङ्गे चतुर्थं ज्ञातम् । आव० ६५३ । सम० ३६ । उत्त० ६९४ । ज्ञाता० ९ । कच्छपः । ज्ञाता० ९ । साधोरुपमा । आव० ६५३ । कूर्मकः–कच्छपः । प्रश्न० ७० ।
कुम्मगामं–कूर्मग्रामः–वर्धमानस्वामिविहारभूमिः । भग० ६६६ । आव० २१३ ।
कुम्मापुत्त–कूर्मापुत्रः । द्विहस्तसिद्धयां दृष्टान्तः । विशे० १२२२ ।
कुम्मारगामं–कूर्मारग्रामः वर्धमानस्वामिविहारभूमिः । भग० ६६४ । आव० २२२ ।
कुम्मासा–कुल्माषाः सिद्धमाषाः, यवमाषा इत्यन्ये । दश० १८१ । अर्द्धस्विन्ना मुद्गादयो माषा इत्यन्ये । भग० ६६८ । कुल्माषाः–राजमाषाः । उत्त० २९५ । कुपितः–मनसा कोपवान् । विपा० ५३ । माषविशेषाः । आचा० ३१३ । कुल्माषाः–उडदाः । पिण्ड० १६८ । माषाः, ईषत्स्विन्ना मुद्गादयः । प्रश्न० १५३ । गोन्नद्वितीयनाम । आव० ८५४ ।
कुम्मुण्णया–कूर्मपृष्ठमिवोन्नता कूर्मोन्नता, अर्हदादीनां मातृयोनिः । प्रज्ञा० २२७ ।
कुम्मुन्नये–कूर्म्मः–कच्छपः तद्वदुन्नता कूर्म्मोन्नता । ठाणा० १२२ ।
कुय–कुव्वं–शिथिलम् । व्य० द्वि० २९७ आ ।
कुयवाय–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
कुरंग–द्विखुरविशेषः । प्रज्ञा० ४५ । मृगभेदः शृङ्गवर्णादिविशेषः । जं० प्र० १२४ । कुरङ्गः मृगः । प्रश्न० ७ । द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ ।
कुरंटओ–संदंशकः पुतपृष्ठजान्वाच्छादि । बृ० द्वि० २३७ आ ।
कुरच्छा(त्था)–देवजाणरहो वा विविधा संवहणा गच्छंति सेसा कुरच्छा(त्था) । नि० चू० तृ० ७१ आ ।
कुरज्ज–कुराज्यं भिल्लादिराज्यम् । जं० प्र० २७७ ।
कुरणं–राजकीयमन्यदीयं वाची तं । व्य० प्र० १७७ आ ।
कुरत्था–कुरथ्या–कुमार्गः । आव० ७४० ।
कुररी–पक्षिणी । उत्त० ४८० ।
कुररो–कुररः उत्क्रोशः । प्रश्न० २१ ।
कुरल–लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ । जीवा० ४१ ।
कुरबक–वृक्षविशेषः । विशे० ६९ ।
कुराईण–कुराजानः–प्रत्यन्तराजानः । आचा० ३३४ ।
कुराया–कुत्थितो राया, पच्चंतणिवो । नि० चू० प्र० २७७ अ ।
कुरिणंमि–महति अरण्ये । ओघ० १५८ ।
कुरु–जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । कुरुजनपदो यत्र हस्तिनागपुरं नगरम् । ज्ञाता० १२५ ।
कुरुआ–कुरुकुचा–पादप्रक्षालनादिका । ओघ० ८२ ।
कुरुए–कुरुकम् । सम० ७१ ।
कुरुकुचा–पादप्रक्षालनाचमनरूपा । ओघ० १२५ ।
कुरुकुय–अचित्तपुढवी । नि० चू० द्वि० १५६ आ । कुरु-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुच। ओघ० १९८। आचा० २०३।

कुरुकुया- । नि० चू० प्र० १४८ आ। पादप्रक्षालनादिका। बृ० द्वि० २९० अ।

कुरुकुरायंति-क्लिश्नीतः। आव० ३९३।

कुरुजणपदं-कुरुजनपदं देशविशेषः। आव० १४५।

कुरुजणवयं- ,, ,, । उत्त० ३९५।

कुरुदुक-काङ्कदुकबीजप्रायः। प्रश्न० ४३।

कुरुदुककडं-कुरुदुककृतं-कुरुदुकाः-काङ्कदुकबीजप्राया अयोग्याः सद्गुणानां तैः कृतं अनुष्ठितम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य क्वचित् चतुर्थं नाम। प्रश्न० ४३।

कुरुडः-कुणालायां स्थितमुनिः। उत्त० २०४।

कुरुदत्त-अग्निदग्धो मुनिः। सं०।

कुरुदत्तपुत्त-कुरुदत्तपुत्रः-ईशानसामानिकवक्तव्यतायां अनगारः। भग० १५९।

कुरुदत्तसुओ-कुरुदत्तसुतः-हस्तिनापुरे इभ्यपुत्रः। उत्त० १०९।

कुरुदत्तसुत-नैषेधिकीमाचरतां हतः। मर०।

कुरुभ-वनस्पतिविशेषः। भग० ८०२।

कुरुमई-कुरुमती, ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणां मध्येऽष्टमी, स्त्रीरत्नम्। उत्त० ३७९। सम० १५२।

कुरुया-देशतः सर्वतो वा शरीरस्य प्रक्षालनं कुरुका। व्य० प्र० १६३ आ।

कुरुविंद-कुरुविन्दः-तृणविशेषः। जं० प्र० ११०। तृणविशेषः। आचा० ५७। प्रज्ञा० ३३। तृणविशेषः। प्रश्न० ८०। कुटलिकः। प्रश्न० ८०।

कुरुए-कुत्सितं यथा भवत्येवं रूपयति-विमोहयति यत्तत् कुरूपं भाण्डादिकर्म। भग० ५७३।

कुर्यात्-आलोचयेद्। आचा० ३३७।

कुलं-आचार्यसंततिसंस्थितिः। त० ९-२७। उग्रादि। पिण्ड० १२९। वंशस्यावान्तरभेदम्। ज्ञाता० २२०। गृहम्। आचा० ३२१। बृ० द्वि० ८६ अ। नि० चू० प्र० १८५ अ। उत्त० ४०४। गिहं। नि० चू० प्र० ७० अ। समूहः। ज्ञाता० १६१। स्थानीयादि। आचा० ८१। एगं कुटुंबं। दश० चू० १६३। पितृसमुत्थं कुलम्। पिण्ड० १२९। सूत्र० २३६। उत्त० १४५। आव० ३४१। कुटुंबं। नि० चू० प्र० ८३ अ। १५९ आ। चान्द्रादिकं साधुसमुदायविशेषरूपं प्रतीतम्। ठाणा०२९९। कुटुम्बं, यूथं वा। प्रश्न० ३७। कृमिकीटवृश्चिकादि। जीवा० १३४। पैतृकः पक्षः। ज्ञाता० ७। प्रश्न० ११७। गच्छसमुदायरूपं चन्द्रादिकम्। प्रश्न० १२६। नागेन्द्रादि। बृ० द्वि० ८४ अ। विद्याधरादि। आव० ५१०। प्रख्यातं कुलम्। ओघ० ४८। अन्वयो गच्छः। उत्त० ३४७। पार्श्वनाथसन्तानम्। उत्त० ५००। कुलमदः, द्वितीयं मदस्थानम्। आव० ६४६। आर्यद्वितीयभेदे तृतीयः। सम० १३५। नागेन्द्रकुलादि। दश० २४२।

कुलए-कुडवं चतुःसेतिकामानम्। दश० १३४।

कुलओ-चतस्रः सेतिका कुडवः। अनु० १५१। कूलतः कुडवः। आव० ४२४।

कुलकहा-उग्रादिकुलप्रसुतानामन्यतमा कथा कुलकथा। स्त्रीकथाया द्वितीयभेदः। आव० ५८१। स्त्रीकथाया द्वितीयभेदः। ठाणा० २०९। कुलसम्बन्धेन स्त्रीणां कथा कुलकथा। प्रश्न० १३९।

कुलक्ख-म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५। कुलाक्षः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।

कुलगर-कुलकरः। आव० ४९९। कुलकराः-विशिष्टबुद्धयो लोकव्यवस्थाकारिणः कुलकरणशीलाः पुरुषविशेषाः। जं० प्र० १३२। कुलकराः-विशिष्टबुद्धयो लोकव्यवस्थाकारिणः पुरुषविशेषाः। ठाणा० ५१८।

कुलगरकालो-कुलकरकालः। आव० ११३।

कुलगा- । नि० चू० द्वि० १२० अ।

कुलघरं-पितृगृहम्। ज्ञाता० ११९। औप० ८९। बृ० प्र० २०७ अ। नि० चू० प्र० १९४ अ।

कुलच्चिया-कुलगता। व्य० प्र० २४८।

कुलजः-कुलपुत्रकः। बृ० द्वि० १९५ आ।

कुलजुत्तोए-आत्मकुलौचित्येनेत्यर्थः। व्य० प्र० २२४ अ।

कुलत्थ-एकत्र कुले तिष्ठन्ति इति कुलस्थाः। धान्यविशेषः। निरय० २४। चवलिकाकाराः चिपिटिका भवन्ति। भग० २७४। धान्यविशेषः। भग० ८०२। औषधिविशेषः। प्रज्ञा० ३३। कुलत्थाः-चपलकतुल्याश्चिपिटा

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवन्ति । जं० प्र० १२४ । कुलत्थाः धान्यविशेषः । दश० १९३ । चवलगसरिसा चिप्पिडया भवन्ति । ठाणा० ३४४ । एकत्र कुले तिष्ठन्तीति कुलस्थाः । अन्यत्र कुलत्थाः धान्यविशेषाः । ज्ञाता० ११० ।

कुलथेरा–कुलस्य लौकिकस्य लोकोत्तरस्य च व्यवस्थाकारिणस्तद्भङ्क्तुश्च निग्राहकास्ते । ठाणा० ५१६ ।

कुलधमा–कुलधमगा–ये कुले स्थित्वा शब्दं कृत्वा भुञ्जते । निरय० १५ ।

कुलधम्मे–कुलधर्म्मः–उग्रादिकुलाचारः । कुलं–चान्द्रादिकमार्हतानां गच्छसमूहात्मकं तस्य धर्म्मः–सामाचार । ठाणा० ५१५ ।

कुलपव्वए–कुलपर्वतः हिमाचलादि । जं० प्र० ४११ ।

कुलपव्वया–क्षेत्रमर्यादाकारित्वेन कुलकल्पाः पर्वताः–कुलपर्वताः, कुलानि हि लोकानां मर्यादानिबन्धनानि भवन्ति इतीह तेरुपमा कृता । सम० ६६ ।

कुलपुत्तओ–शय्यातरः । बृ० प्र० ३१० अ । कुलपुत्रकः । आव० ८१६ ।

कुलपुत्तगो–कुलपुत्रकः । आव० ४२२ ।

कुलपुत्तय–कुलपुत्रकः । उत्त० ५० ।

कुलपुत्र– । आचा० १०६ ।

कुलमसी–कुलमषी–कुलमालिन्यहेतुः, तृतीयाधर्मद्वारस्य त्रयोविंशतितमं नाम । प्रश्न० ४३ ।

कुलरोग–कुलरोगः–कुलजन्यरोगः । भग० १९७ ।

कुलल–गृध्रं, शकुनिका वा । उत्त० ४१० । पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ । कुररः–मार्जारनामा पक्षिविशेषः । उत्त० ५११ । मार्जारः । दश० २३७ । मज्जारो । दश० चू० १२६ ।

कुलवे–कुडवः । भग० ३१३ । कुलशिकाचतुर्थांशरूपो धान्यमानः । बृ० द्वि० २३६ अ ।

कुलसरिसं–श्रीमद्वणिजां रत्नवाणिज्यमिव । ज्ञाता०२०५ ।

कुला–कुलानि, नक्षत्राणि । सूर्य० १११ । कुला–कुलानिगृहाण्यामिषान्वेषणार्थिनो नित्यं येऽटन्ति ते, मार्जाराः । सूत्र० ८०० ।

कुलाण–मृद्भाजनं । नि० चू० द्वि० १०९ अ । भाजनानि । नि० चू० प्र० ३४४ आ । असोगस्स पुत्तो । नि० चू० प्र० २४३ अ ।

कुलाणुरूवं–कुलोचितम् । ज्ञाता० २०५ ।

कुलारिया–कुलार्याः । प्रज्ञा० ५६ ।

कुलार्या–विशुद्धान्वयप्रकृतयः । त० ३-१५ ।

कुलालचक्र–दृष्टान्तविशेषः । प्रज्ञा० ११ ।

कुलालया–कुलानि–क्षत्रियादिगृहाणि तानि नित्यं पिण्डपातान्वेषिणां परतर्कुकाणामालयो येषां ते कुलालयाः, निन्द्यजीविकोपगताः । सूत्र० ४०० ।

कुलिंग–पिपीलिकादि । भग० ७५४ । कुलिङ्गं–तापसादिलिङ्गम् । आव० १३४ । त्रीन्द्रियादि मर्दितः । ओघ० १६७ ।

कुलिंगच्छाए–पिपीलिकासदृशः । भग० ७५४ ।

कुलिंगाले–कुलस्य–स्वगोत्रस्याङ्गार इवाङ्गारो दूषकत्वादुपतापकत्वाद्वेति । ठाणा० ९८४ ।

कुलिंगे–द्वीन्द्रियादिः । ओघ० २२० ।

कुलिअ–कुलिकं, लघुतरं काष्ठं तृणादिच्छेदार्थं यत्क्षेत्रे वाह्यते तत्, मरुमण्डलादिप्रसिद्धम् । अनु० ४८ । क्षेत्रस्यास्थ्यादिशल्योद्धरणे साधनविशेषः । आव० ५५४ । कुलिकं, क्षेत्रविदारणं कृषिसाधनम् । दश० ४० ।

कुलिज्जं–कुलसमवायं । नि० चू० प्र० २९१ अ ।

कुलिय–कुलिकं–दन्तालवत्तिर्यक्कृतकाष्ठे उभयपार्श्वनिखातकाष्ठमयकीलकयोस्तिर्यग्व्यवस्थापिततीक्ष्णलोहपट्टकं हरितादिच्छेदनार्थं क्षेत्रेषु यद् बाह्यते तत् लाटादिकृषीबलप्रतीतं वेदितव्यम् । विशे० ४३५ । कडणकृतं कुड्यम् । सूत्र० ५८ । हलप्रकारः । प्रश्न० ८ । हलविशेषः । प्रश्न० २४ । कुंडं । नि० चू० द्वि० ८४ अ । कुलिकम् । आचा० ३३ ।

कुलिया–कुड्यम् । बृ० द्वि० १५९ अ ।

कुलीकोस–कुटीक्रोशः–पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

कुलोवकुला–कुलोपकुलानि । सूर्य० १११ ।

कुल्माषा–उडदा, राजभाषा वा । बृ० प्र० २६७ आ ।

कुल्लग–नितम्बः । नि० चू० द्वि० ६२ अ । कोल्लाकसन्निवेशः । आव० १७१ ।

कुक्कुरिकहट्टः–खाद्यकापणः । विशे० ८५३ ।

कुक्कुरिकापणः–खाद्यकापणः । आव० २७५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुवणउ-लउडगो । नि० चू० द्वि० १३३ आ ।
कुवणओ-लगुडः । बृ० तृ० ६८ अ ।
कुवणय-लगुडः । बृ० प्र० १५३ अ ।
कुवथंभं-कूपस्तम्भम् । विशे० १३५५ ।
कुवलय-नीलोत्पलं पद्मम् । प्रश्न० ८४ । कुवलयं तदेव नीलम् । जं० प्र० १६५ ।
कुवलयनं-वस्त्रादिमयं कुवलयनम् । व्य०द्वि०२७८ आ ।
कुविंद- । आचा० २२८ ।
कुविंदएण- । आचा० ३७६ ।
कुविंदवल्ली-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
कुविंदाः-तन्तुवायाः । प्रज्ञा० ५८ ।
कुविए-कुपितः-प्रवृद्धकोपोदयः । भग० ३२२ । ज्ञाता० ६८ । जं० प्र० २०२ ।
कुवितसाला-कुपितशाला-तूल्यादिगृहोपस्करशाला । प्रश्न० १२७ ।
कुवितो-कुविओ । नि० चू० प्र० २८६ अ ।
कुविय-कुप्यं-विविधं गृहोपस्कारात्मकम् । उत्त० २६२ । कुप्यः-गृहोपस्करः स्थालकच्चोलकादि । उपा० ८ । गृहोपस्करः । प्रश्न० ६२ । आसनशयनभण्डककरोटक-लोहाद्युपस्करजातम् । आव० ८२६ । कुपितः-जातकोपोदयः । भग० १६७ । कुपितम्-घटितम् । दश० ११५ ।
कुवियपमाणाइक्कमे-कुप्यप्रमाणातिक्रमः । आव० ८२५ ।
कुवेणी-कुवेणी रूढिगम्या । प्रश्न० ४८ ।
कुव्व-कुर्वं-इत्यागमप्रसिद्धो । व्य० प्र० १०७ आ ।
कुव्वकारिया-गुच्छविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
कुव्वासह-सुभरो । नि० चू० प्र० ३३२ आ ।
कुशः-तृणविशेषः । जीवा० २६ । प्रज्ञा० ३० ।
कुशलानुष्ठानं-ब्रह्मचर्यम् । सम० ६६ ।
कुशवच्चकम्-दुर्बलालम्बनः । आव० ५३४ ।
कुशाग्रीयया-शेमुष्या । आचा० ११६ ।
कुशूल-कोष्ठम् । बृ० द्वि० १६८ आ । विशे० ६३८ ।
कुष्माण्डी-विद्याविशेषः । आव० ४११ ।
कुसं-द्रुमगणविशेषः । जीवा० १४५ ।
कुसंतो-कुशान्तः-दर्भपर्यन्तः । जीवा० २१० ।
कुस-दर्भमिव निर्मूलान् । निरय० २६ । मूलभूतः । ज्ञाता० ११४ । कुशः-छिन्नमूलो दर्भः । भग० २६० । निर्मूलः । विपा० ७२ । दर्भः । ज्ञाता० ७६ । औप० ६ । भग० २७८ । जं० प्र० ६८ । प्रश्न० १२८ । दर्भसदृशस्तृणविशेषः । उत्त० ३३४ ।
कुसग्गं-कुशाग्रं, कुशाग्रपुरम्, अपरनाम प्रसेनजिद्राजधानी । आव० ६७० ।
कुसग्गजलबिन्दुसन्निहे-कुशाग्रजलबिन्दुसंन्निभः । उत्त० ३२६ ।
कुसट्टा-जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
कुसणं-द्विदलम् । आव० ८४४ । कुशनं सूपः, व्यञ्जनं वा । उत्त० १६० । मुद्गदाल्यादि तदुदकं वा । बृ० द्वि० २४६ आ । कुसिणं-व्यञ्जनम् । आव० ३१४, ८५६ ।
कुसणातिओ-कुसणादिकः मिश्रितः । आव० ८५७ ।
कुसत्तो-कुसत्त्वः-तुच्छधृतिबलः । बृ० द्वि० २४१ आ ।
कुसथंवो-कुशस्तम्बः-कुशसमूहः । आव० ६७१ ।
कुसपडिमा-कुशपडिमा । आव० ६३०, ६३५ ।
कुसपत्तएण- । आचा० ३७६ ।
कुसमघरगं-कुसुमगृहकं-कुसुमप्रकरोपचितं गृहकम् । जीवा० २०० ।
कुसमयमोहमोहमइमोहियाणं-कुत्सितः समयः-सिद्धान्तो येषां ते कुसमयाः-कुतीर्थिकास्तेषां मोहः-पदार्थेष्वयथावबोधः कुसमयमोहस्तस्माद्यो मोहः-श्रोतृमनोमूढता तेन मतिर्मोहिता-मूढतां नीता येषां ते कुसमयमोहमोहमतिमोहिताः । सम० ११० ।
कुसल-कुशलं-मिलितानां चौराणां सुखदुःखादितद्वार्ता प्रश्नः। प्रश्न० ५८ । कुशलः-आश्रवादीनां हेयोपादेयतास्वरूपवेदी । भग० १३५ । पंडितो । नि० चू० द्वि० १४६ आ । कुशलः-सम्यक्क्रियापरिज्ञानवान् । जीवा० १२२ । जं० प्र० ३८८ । आलोचितकारी । भग० ६३१ । गीतार्थः । आचा० ४३० । कुशलः-सम्बाधनाकर्मणि साधुः । औप० ६५ । कर्म्मक्षपणसमर्थः, प्रधानो वा । नि० चू० प्र० २५ आ । कुशलः-विधिज्ञः । प्रश्न० १२६ । क्रियापरो । नि० चू० प्र० २६६ आ । कुशलः-अवाप्तज्ञानदर्शनचारित्रो मिथ्यात्वद्वादशकषायोपशमसद-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावात्। आचा० १४७। क्षीणघातिकर्म्मांशो विवक्षितः। आचा० १४७। आलोचितकारी। अनु० १७७। श्रीवर्द्धमानस्वामी। आच० २१६। कुशाः द्रव्यतो दर्भादयो भावतः कर्माणि तान् कर्मरूपान् कुशान् लुनन्ति–समूलानुत्पाटयन्तीति तीर्थकराः। बृ० प्र० १६३ अ। स्ववितर्काच्चिकित्सादिप्रवीणाः। ज्ञाता० १८०। तीर्थकृत्। आचा० २११।

कुसलत्तणं–कुशलत्वं–सम्यग्ज्ञानम्। आव० ३४६। प्रावीण्यरूपम्। उत्त० १४३।

कुसलदिट्ठ–कुशलदृष्टं–तीर्थकरोपलब्धम्। दश० १०६।

कुसलनरपसंसियं– । आचा० ४२३।

कुसलाणबंधि–मोक्षानुकूलम्। च० ३।

कुसलोदंत–कुशलवार्त्ता। ज्ञाता० १४६।

कुसल्लियं–कुशल्यितं – अन्तःप्रविष्टतोमरादिशल्यशरीरमिव सञ्जातदुष्टशल्यम्। प्रश्न० १३४।

कुसवरो–कुशवरः–अपान्तरालद्वीपः। जीवा० ३६८।

कुसा–स्थावरजीवविशेषः। सूत्र० ३०७।

कुसिणं–दधिदुग्धादि। ओघ० १६३।

कुसिया–कुसिताः मोचयितुमसमर्थाः। व्य० द्वि० १५६ अ।

कुसी–कुशी। आव० ३६७।

कुसीमूलियं–कुशीमूलिका। आव० ८२६।

कुसील–कुशीलः–निर्ग्रन्थस्य तृतीयो भेदः। व्य० द्वि० ४०२ अ। निर्ग्रन्थस्य तृतीयभेदः। कुत्सितं शीलं–चरणमस्येति कुशीलः। भग० ८६०। कुशीलः–परतीर्थकः, पार्श्वस्थादिर्वा स्वयूथ्या अशीलगृहस्थः। सूत्र० १५३। कुत्सितशीलः कुशीलः–कालविनयादिभेदभिन्नानां ज्ञानदर्शनचारित्राचाराणां विराधक इत्यर्थः। ज्ञाता० ११३। कुत्सितं शीलमस्येति कुशीलः। आव० ५१७। कुशीलः। नि० चू० द्वि० १६८ अ। कुशीलः–असंविग्नः। ओघ० १२०।

कुसीलओ–कुशीलवः–विदूषकः। आव० ३६८।

कुसीलपडिसेवणया– कुशीलप्रतिषेवणता– कुशीलं–अब्रह्म तस्य प्रतिषेवणं कुशीलप्रतिषेवणं, तद्भावः। ठाणा० २८१।

कुसीलपरिभासिए–सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम्। सम० ३१।

कुसीलवे–कुशीलवानां–नटानां। बृ० प्र० १०३ आ।

कुसीलाणपरिभासा–सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम्। उत्त० ६१४।

कुसीलाणपरिहासा–कुशीलपरिभाषा, सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम्। आव० ६५१।

कुसुंबए–वनस्पतिविशेषः। प्रज्ञा० ३६।

कुसुंभ–औषधिविशेषः। प्रज्ञा० ३३। लट्टाकाणाः। यत्पुष्पैर्वस्त्रादिरागः। जं० प्र० १२४। कुसुम्भं–तैलस्य तृतीयभेदः। आव० ८५४। धान्यविशेषः। भग० ८०२।

कुसुंभग–कुसुम्भकः–लट्टा। धान्यविशेषः। भग० २७४। उदगविशेषः। नि० चू० तृ० ५२ आ।

कुसुंभरागः–प्रायोगिकरागः। आव० ३८७।

कुसुंभवणे–कुसुम्भवनम्। भग० ३६।

कुसुंभिओ–कुसुम्भिका, अतसी। ओघ० १४६।

कुसुण–कुशनं, दध्यादि। पिण्ड० १६५, ६०।

कुसुणियं–कुसुणितं–करम्बादिरूपतया कृतम्। पिण्ड० ६१।

कुसुमं–पाटलिपुत्राभिधं नगरम्। आव० २६४। कुसुमसमूहः। जीवा० २५५। कुसुमजातम्। जीवा० २५६। अविकसितः। औप० ५६।

कुसुमकुंडलं–धत्तूरकपुष्पसमानाकृतिकर्णाभरणं, दर्भकुसुमं वा। अन्त० ५।

कुसुमघरए–कुसुमप्रायवनस्पतिगृहम्। ज्ञाता० ६५।

कुसुमघरगा–कुसुमप्रकरोपचितानि गृहकाणि कुसुमगृहकाणि। जं० प्र० ४५।

कुसुमट्टिया–कुट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जंति। उसुमट्टिया, कुसुमट्टिया वा। नि० चू० तृ० ६४ अ।

कुसुमपुर–मायापिण्डोदाहरणे सिंहरथराजस्य नगरम्। पिण्ड० १३६। चूर्णद्वारविवरणे चन्द्रगुप्तराजधानी। पिण्ड० १४३। पाटलीपुत्रमभिधीयते। नि० चू० प्र० १३६ आ। बृ० द्वि० २२७ अ। मुरुण्डस्य राजधानी। बृ० द्वि० २५६ आ।

कुसुमरसं–कुसुमरसः, कुसुमासवः। दश० ७२।

कुसुमसंभवे–कुसुमसम्भवः, दशम मास नाम। जं० प्र० ४६०। सूर्य० १५३।

कुसुमा–कुसुमसदृशत्वात् सौकुमार्यादिगुणयोगेन कुसुमाः।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं० प्र० १३१ ।

कुसुमानि-पद्मलक्षणानि जातानि यत्र तत्कुसुमितम् । ठाणा० ५०२ ।

कुसुमासव-किञ्जल्कः । औप० ८ ।

कुसुमासवलोला-किञ्जल्कपानलम्पटाः । जीवा० १८८ । मकरन्दलम्पटाः । ज्ञाता० २७ । किञ्जल्कलम्पटाः । ज्ञाता० ५ ।

कुसुम्मिय-कुसुमितं-सञ्जातकुसुमम् । भग० ३७ ।

कुस्तुम्बकः-वनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ३७ ।

कुरस-कुशो-यो वेधे प्रान्तः प्रवेश्यते । बृ० प्र० ३६ आ ।

कुहंडयकुसुमं-कूष्माण्डिकाकुसुमं,पुष्पा(पुंस्क)लिकापुष्पम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

कुहंडिया-मुद्रितः । आव० २२४ ।

कुहंडे-कुहण्डः-वाणमन्तरविशेषः । प्रज्ञा० ९५ ।

कुह-कुहः-वृक्षः । दश० १७ ।

कुहए-कुहकं इन्द्रजालादि । दश० २५४ ।

कुहकं-कुहकं, परेषां विस्मयोत्पादनप्रयोगः । प्रश्न० १०९ । कुतूहलम् । उत्त० ६५६ ।

कुहकणरा-क्षेपकरणम् । नि० चू० द्वि० ७ आ ।

कुहण-भूमिस्फोटकविशेषः । आचा० ५७ । एक एवालापको द्रष्टव्यः, तद्योनिकानामपरेषामभावादिति भावः । सूत्र० ३५२ । कुहणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । कुहणः-चिलातदेशवासी । प्रश्न० १४ ।

कुहणया-कुधनता-दारिद्र्यभावः । क्रोधनता । प्रश्न०१०९ ।

कुहणा-कुहणाः-भूमिस्फोटाभिधानाः ते चाप्कायप्रभृतयः । प्रज्ञा० ३० । कुहणा-भूमिस्फोटाभिधानास्ते चाप्कायप्रभृतयः । जीवा० २६ । कुहणा-भूमिस्फोटकविशेषाः । सर्पछत्रकादिः । उत्त० ६९२ ।

कुहर-पर्वतान्तरालम् । ज्ञाता० ६३ । जं० प्र० १४४ ।

कुहव्वए-कन्दविशेषः । उत्त० ६९१ ।

कुहा-कुत्ति पुहवि तीए धारिज्जंति तेणं कुहा । दश० चू० ६ ।

कुहाड-प्रहरणविशेषः । नि० चू० प्र० १०५ अ ।

कुहित-कुथितः-कोथमुपनीतः । ज्ञाता० ६७ ।

कुहिय-कुथितः-पूतिभावमुपगतः । जीवा० १०७ । कोथमुपगतः, ईषद्दुर्गन्धः । ज्ञाता० १२९ ।

कुहुंडियाकुसुमं-कूष्माण्डीकुसुमं-पुष्पफलीकुसुमम् । जीवा० १९१ ।

कुहुक-कुतूहलम् । उत्त० ३४७ ।

कुहुण-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ । भूमिस्फोटकविशेषः । आचा० ५७ ।

कुहेडविज्जा-कुहेटकविद्या-अलीकाश्चर्यविधायिमन्त्रतन्त्रज्ञानात्मिका । उत्त० ४७९ ।

कूअ-कुतपः-तैलादिभाजनम् । जं० प्र० २६४ ।

कूअणता-कूजनता-आर्त्तस्वरकरणम् । ठाणा० १४९ ।

कूइआ-कूचिका । आव० १०२ ।

कूइए-कूजितम्-कासितम । आव० ५७४ ।

कूइगादि-कूचिकादि । आव० १९८ ।

कूचिया-कूचिका-बिन्दुरूपा बुद्बुदा । विशे० ६३३ ।

कूच्च-कूर्चः-गूढकेशोन्मोचको वंशमयः । उत्त० ४९३ ।

कूजणया-मातिपितिभातिभगिणीपुत्तदुहित्तमरणादीविं(सु) महइमहंतेण सद्देण रोवइत्ति कूजणया । दश० चू० १५ ।

कूजन्त-अव्यक्तं शब्दायमानम् । ज्ञाता० १६७ ।

कूजित-विविधविहगभाषयाऽव्यक्तशब्दं सुरतसमयभाविनम् । उत्त० ४२५ ।

कूट-कूटम् । भग० १८२ ।

कूटग्राह- । ठाणा० ५०७ ।

कूटप्रयोगकारी-प्रच्छन्नपापः । आव० ५८९ ।

कूड-कूटं-शिखरं,स्तूपिकाः अथवा कूटं-सत्त्वबन्धनस्थानम् । ठाणा० २०५ । कूटं-शिखरम् । जीवा० २०५ । परवञ्चनार्थं न्यूनाधिकभाषणम् । प्रश्न० २७ । मानादीनामन्यथाकरणम् । प्रश्न० ५८ । कार्षापणतुलाप्रस्थादेः परवञ्चनार्थं न्यूनाधिककरणम् । सूत्र० ३३० । कार्षापणतुलादेः परवञ्चनार्थं न्यूनाधिकरणम् । ज्ञाता० ८० । कार्षापणतुलाव्यवस्थापत्रादीनामन्यथाकरणम् । ज्ञाता० २३८ । रत्नकूटादि । अनु० १७३ । असद्भूतम् । आव० ८२१ । कूटं-भ्रान्तिजनकद्रव्यम् । जं० प्र० १६९ । महच्छिखरम् । जं० प्र० ४९ । मृगग्रहणकारणं गर्त्तादि । भग० ९३ । शिखरं, हस्त्यादिबन्धनस्थानं वा । भग० २३८ । माडभागः । रजतमय उत्सेधः । जं० प्र०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६ । भ्रान्तिजनकद्रव्यम् । भग० ३०८ । कूटः-सिद्धायतनकूटप्रभृतिः । प्रज्ञा० ७१ । माडभागः । जीवा० २०४, ३६० । कुटकेषु-अधोविस्तीर्णेषूपरि संकीर्णेषु वृत्तपर्वतेषु हस्त्यादिबन्धनस्थानेषु वा । ज्ञाता० ६७ । कूटं-प्रभूतप्राणीनां यातनाहेतुत्वं नरक इत्यर्थः । उत्त० २४३ । पर्वतः । नंदी० २२८ । माडभागः । राज० ६२ । पाषाणमयमारणमहायन्त्रम् । भग० ६७३ ।

कूडकवडमवत्थुगं-कूटकपटावस्तुकं-कूटं-परवञ्चनार्थं न्यूनाधिकभाषणं, कपटं-भाषाविपर्ययकरणं । अविद्यमानं वस्तु-अभिधेयोऽर्थो यत्र तत् । समानार्थत्वादेकमधर्मद्वारस्य षष्ठं नाम । प्रश्न० २६ ।

कूडग्गाहो-कूटेन जीवान् गृह्णातीति कूटग्राहः । विपा० ४८ ।

कूडछेलियहत्थो-कूटछेलिकाहस्तः-या च कूटेन स्थाप्यते चित्रकादिग्रहणार्थं छेलिका-अजा सा, कूटं-मृगादिग्रहणयन्त्रं च छेलिका चेति कूटछेलिका सा हस्ते यस्य सः । प्रश्न० १३ ।

कूडतुलकूडमाणे-कूटतुलाकूटमानं, तुलया कुडवादिमानेन च यन्न्यूनाधिकत्वम् । आव० ८२२ ।

कूडत्तं-कूटत्वं-न्यूनाधिकत्वम् । आव० ८२३ ।

कूडपासए-कूटपाशकः । आव० ४३५ ।

कूडया-कूटता-तुलादीनामन्यथात्वम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य द्वाविंशतितमं नाम । प्रश्न० ४३ ।

कूडरूवग-कूटरूपकः । आव० ४२१ । कूटरूप्यम् । आव० २०० ।

कूडलेहकरणं-कूटं-असद्भूतं लिख्यत इति लेखः, तस्य करणं-क्रिया कूटलेखक्रिया-कूटलेखकरणं अन्यमुद्राक्षरबिम्बस्वरूपलेखकरणमित्यर्थः । आव० ८२० ।

कूडव-मानविशेषः । आव० ८२३ ।

कूडवाही-कूटवाही, बलीवर्दः । आव० ७९७ ।

कूडसक्खिज्जं- कूटसाक्षित्वम्- उत्कोचमात्सर्याद्यभिभूतः प्रमाणीकृतः सन् कूटं वक्ति, अविधवाद्यनृतस्यात्रैवान्तर्भावो वेदितव्यः । आव० ८२० ।

कूडसामलिपेढे-कूटाकारा-शिखराकारा शाल्मली तस्याः पीठं-कूटशाल्मलीपीठम् । जं० प्र० ३५५ ।

कूडसामली-कूटाकाराशिखराकारा शाल्मली कूटशाल्मली । ठाणा० ६९, ७९ ।

कूडा-कूटाः-नन्दनवनकूटादिकाः । प्रश्न० ९६ ।

कूडागारं-धन्नागारं । नि० चू० प्र० २६५ अ । कूटागारं-सशिखरभवनम् । प्रश्न० ८२ । पव्वतसंठितं उवरुवरिभूमियाहिं वट्टमाणं कुडागारं, कूडेवागारं कूडागारं पर्वते कुट्टितमित्यर्थः । नि० चू० द्वि० ६९ आ । कूटाकारः । जीवा० २६९ ।

कूडागारसंठिओ-कूटाकारसंस्थितः-शिखराकारसंस्थितः । जीवा० २७९ ।

कूडागारसाला-कूटाकारेण-शिखराकृत्योपलक्षिता शाला कूटाकारशाला । भग० १६३ । कूटस्येव-पर्वतशिखरस्येवाकारो यस्याः सा तथा, सा चासौ शाला च । विपा० ६३ । कस्मिंश्चिदुत्सवे कस्मिंश्चिन्नगरे बहिर्भागप्रदेशे महती देशिकलोकवसनयोग्या शाला-गृहविशेषः । निरय० २२ । कूटस्येव-पर्वतशिखरस्येवाकारो यस्याः सा कूटाकारा यस्या उपरि आच्छादनं शिखराकारं सा कूटाकारेति, कूटाकारा चासौ शाला च कूटाकारशाला, यदिवा कूटाकारेण शिखराकृत्योपलक्षिता शाला कूटाकारशाला । राज० ५८ ।

कूडाहच्चं- कूटस्येव-पाषाणमयमारणमहायन्त्रस्येवाहत्या-आहननं यत्र तत् कूटाहत्यम् । भग० ६७० । कूटे इव तथाविधपाषाणसम्पुटादौ कालविलम्बाभावसाधर्म्यादाहत्या-आहननं यत्र तत् कूटाहत्यम् । भग० ३२३ ।

कूणिए-श्रेणिकचेल्लणयोः पुत्रः । निरय० ४ । श्रेणिकराजपुत्रः । ज्ञाता० ६ । चम्पानगर्यां राजा । निरय० १९ । चम्पायां राजा । भग० ६२० ।

कूणिओ-कूणिकः-चम्पायां राजा । भग० ३२० । शिक्षायोगदृष्टान्ते श्रेणिकपुत्रः, अपरनाम अशोकचन्द्रः । आव० ६७९ । भग० ५५६ । परकृतमरणे दृष्टान्तः । भग० ७९६ ।

कूपिअं-कूपिका, सन्निवेशः । महावीरस्वामिविहारभूमिः । आव० २०७ ।

कूबरं-युगन्धरम् । जं० प्र० २६१ ।

कूयरा-कुत्सितं शिष्टजनजुगुप्सितं चरन्ति इति कुचराः-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्भ्रामका, उद्भ्रामिका वा । बृ० द्वि० ६४ अ ।

कूर-भक्तं । बृ० प्र० २३६ अ । ओदनविशेषः । ओघ० १३३ । कूरः । आव० ३५२, ६२४ । धान्यविशेषः । आव० ३१४ । परिकथनायां दृष्टान्तः । ओघ० ६६ ।

कूरओडिया-कूरकोटिका-शिप्रचटिका । आव० ६२२ ।

कूरकम्मा-क्रूरकर्माः, क्रूराणि कर्माणि यस्य सः । प्रश्न० १३ ।

कूरगडुकप्राय-सीयकूरभोई अन्तपन्ताहारो । भग० ७०५ ।

कूरपुवगादि-कूरसिस्थादि, (देशीवचनं) । आव० ३१५ ।

कूरभायण-कूरभाजनः, ओदनभाजनः । दश० ३८ ।

कूरविहाणं-कूरविधानम् । आव० ८५५ ।

कूरिकड-क्रूरिकृतं, क्रूरं चित्तं क्रूरो वा परिजनो यस्यास्ति स क्रूरी, तेन कृतं-अनुष्ठितम् । तृतीयाधर्मद्वारस्य चतुर्थं नाम । प्रश्न० ४३ ।

कूर्मापुत्रः-नामविशेषः । औप० ११७ । कूर्मापुत्रः । प्रज्ञा० १०६ ।

कूर्मोन्नता-मनुष्ययोनिभेदः । आचा० ६७ ।

कूलधमग-कूले स्थित्वा । भग० ५१६ ।

कूलवारओ-कूलवारकः विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्तः । आव० ४३७ ।

कूलवाल-श्रमणविशेषः । सूत्र० १ ३ ।

कूलवालओ-कूलवालकः, विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्तः । आव० ४३७ ।

कूलवालक-गुरूणामेव प्रत्यनीकः । बृ० प्र० २१४ अ । विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्तः । नंदी० १६७ । शिलाक्षेपकः श्रमणः । उत्त० ४४ । आचार्यादिप्रतिकूलत्वे निदर्शनीभूतः क्षुल्लकः । उत्त० ५४६ ।

कूलवालगो-कूलवालकः-शिलाऽक्षेपकः श्रमणः । आव० ६८५ ।

कूलवालो-श्रमणोऽविनीतः । बृ० द्वि० ५ आ ।

कूव-कूपः । आव० ५८१ । प्रश्न० ८ । कूजकं-व्यावर्त्तकबलम् । ज्ञाता० २२१ । अन्धकूपादिः । प्रश्न० ५६ । कूपः-रोमरन्ध्रः । भग० ४६० । कुतुपः । ज्ञाता० ५७ ।

कूवए-अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य एकादशमध्ययनम् । अन्त० ३ ।

कूवणय-कूपनयः-कुमारायां कुम्भकारः । आव० २०२ ।

कूवति-कूजति-शब्दं करोति । आव० ८१६ ।

कूवमहो-कूपमहः-कूपसत्क उत्सवः । जीव० २८१ ।

कूवय-कूपकः, स्तम्भविशेषः । औप० ४८ ।

कूवयट्ठाणं-कूपकस्थानम् । नि० चू० प्र० ४७ अ ।

कूवर-कूबरं-तुण्डम् । ज्ञाता० १५६ ।

कूविए-चोरगवेषकः । ज्ञाता० ७६ । कूपिका । ज्ञाता० ७६ ।

कूविय-कूजकः, व्याहारकारी, गवां व्यवित्तका इत्यर्थः । पिण्ड ४७ ।

कूवियबल-निवर्त्तकसैन्यानि । ज्ञाता० २३८ ।

कूष्माण्डः-व्यन्तरविशेषः । प्रश्न० ५१ ।

कूष्माण्डाः-पिशाचविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

कूष्माण्डी-वल्लीविशेषः । जीवा० २६ । प्रज्ञा० ३० ।

कूसेह-(देशी०) गवेषयत । बृ० द्वि० १२० अ ।

कूहंड-कूष्माण्डः, व्यन्तरनिकायामुपरिवर्त्तिनो जातिविशेषः । प्रश्न० ६६ ।

कृकलासः-अण्डविशेषः । दश० २३० ।

कृतकुलः-कृतकुरुकुचः । व्य० द्वि० १६१ आ ।

कृतनिष्ठितता-तन्दुलानां वपनमारभ्य यावद् वारद्वयं कण्डनं तावत् कृतत्वम्, तेषाञ्च तृतीयवारं तु कण्डनं निष्ठितत्वम् । पिण्ड० ६६ ।

कृतप्रतिकृतिकः-कृते-उपकृते प्रतिकृतं-प्रत्युपकारः तद् यस्यास्ति स । ठाणा० २८५ ।

कृतमालिक-यक्षविशेषः । ठाणा० २५८ ।

कृतमाल्यक-तमिस्रागुहायाः अधिष्ठायकदेवः । ठाणा० ७१ ।

कृतयुगादीनि- । ठाणा० १७८ ।

कृतवीर्यः-कार्त्तवीर्यपिता क्षत्रियः । सूत्र० १७०, १७८ । कार्त्तवीर्यपिता । सूत्र० ३६५ ।

कृतिकर्म्म-द्वादशावर्त्तवन्दनकम् । ठाणा० ४०८ । कर्मणोऽपनयनकारकमर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायविषयमवनामादिरूपमिति । आव० ६८ ।

कृपणादि-द्रव्यशस्त्रम् । आचा० १७४ ।

कृमिः-पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः । कचवरनिश्रितो जीव-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृमिराग–लोभस्य लक्षणसूचकः । आचा० १७० । जीवा १९१ ।

कृमिरागपट्टसूत्रं– मनुष्यादिशोणितोत्पन्नकृमिलालसमुत्पन्नम् । अनु० ३५ ।

कृषिवलः–कर्षकः । आव० ८१५ ।

कृष्णः–केवलसम्यग्दर्शनी । आव० ८०५ । साधारणवनस्पतिविशेषः । आचा० ५७ । साधारणवनस्पतिकायिकभेदः । जीवा० २७ । कृष्णकं, साधारणवनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ४० ।

कृष्णपाक्षिकः–संसारापरीत्तः । जीवा० ४४६ ।

कृष्णराज्ञी–ईशानदेवेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । जीवा० ३६५ ।

कृष्णसारः–नेत्रमध्यवर्त्तिनी कनीनिका । उत्त० ६५२ ।

कृष्णवासुदेवः–द्वारिकाधिपतिः । प्रश्न० ८८ ।

केइ–काश्चिन्न सर्वा इत्यर्थः । ज्ञाता० २३१ ।

केइत्थ–कांश्चिदत्र । ज्ञाता० २३१ ।

केउ–केतु–मेघवृष्ट्या निष्पद्यते तत् । प्रासादगृहादिकम् । बृ० प्र० १३८ आ । वर्षावारिनिष्पाद्यं क्षेत्रम् । बृ० तृ० ५० अ ।

केउते–पातालकलशविशेषः । ठाणा० २२६ ।

केउमती–धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य अष्टादशमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

केउस्सवि– । सम० ८७ ।

केऊ–केतुः, जलकेत्वादिकः । औप० ५२ । ज्योतिष्कविशेषः । प्रश्न० ९५ ।

केऊर–पातालकलशविशेषः । ठाणा० ४८० । केयूरं–अङ्गदम् । जं० प्र० १०६ ।

केकई–अष्टमवासुदेवस्य माता । सम० १५२ ।

केकय–चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

केकयअद्धं–केकयार्द्धं, जनपदार्द्धविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

केकारवं–केकायितं–मयूराणां शब्दः । ज्ञाता० ९६ ।

केगमई–कैकेयी–लक्ष्मणवासुदेवमाता । आव० १६२ ।

केज्जगं–क्रय्यम् । आव० ६७७ ।

केतइ–वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

केतकी–वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३१ । वलयविशेषः । आचा० ३० । सुरभिकुसुमविशेषः । उत्त० ६५४ । जीवा० १९१ ।

केतनं–सामान्येन । ठाणा० २१८ । संकेतः । व्य० द्वि० १२५ अ ।

केतराती– । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

केतु–आकाशपतितोदकनिष्पाद्यं क्षेत्रम् । आव० ८२६ । ध्वजः । जीवा० १८८ ।

केतुकरे–चिह्नकरः अद्भूतकारित्वादिति । ठाणा० ४६३ ।

केतुमती–किन्नरेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ । ठाणा० २०४ ।

केदारः–वप्रः, जलस्थानम् । जीवा० १२३ ।

केमहालए–किमहालयः–कियान् । जं० प्र० ४५० । किं महत्त्वं यस्यासौ किंमहत्त्वः । भग० १५१ ।

केमहालय–किमहान्, कियत्प्रमाणमहत्त्वम् । जीवा० १३८ ।

केमहालिका–किम्महती । जीवा० ३७२ ।

केमहालिया–किम्महती । सम० १४२ । कियन्महती–किम्महत्त्वोपेता–कियती वा । अनु० १६३ ।

केमहिड्ढिए–केन रूपेण महर्द्धिकः, किंरूपा वा महर्द्धिरस्येति किंमहर्द्धिकः । कियन्महर्द्धिकः । भग० १५४ ।

केय–केतनं, केतः–चिह्नमङ्गुष्ठमुष्टिग्रन्थिगृहादिकम् । ठाणा० ४९९ । केतं–चिह्नम् । आव० ८४१ । केतः–चिह्नम् । भग० २९७ । केया–रज्जुः । दश० १०६ । रज्जु । नि० चू० प्र० २० ।

केयइ–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

केयइअद्धे–केकयीनामार्ध–अर्धमात्रमार्यत्वम् । राज० ११३ ।

केयइपुड–गन्धद्रव्यविशेषः । पुष्पजातिविशेषः । ज्ञाता० २३२ ।

केयण–कृतकम् । नि० चू० प्र० ३५१ अ । शृङ्गमयधनुर्मध्ये काष्ठमयमुष्ठिकात्मकम् । उत्त० ३११ । केतनं–मत्स्यबन्धनम् । सूत्र० ८२ ।

केयकंदली–कन्दविशेषः । उत्त० ६९१ ।

केयति–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

केयाघडिया–रज्जुबद्धघटिकाहस्तः सन् विहायसि व्रजेदि-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्याद्यर्थप्रतिपादनार्थः, त्रयोदशशते नवम उद्देशकः । भग० ५९६ । रज्जुप्रान्तबद्धघटिका । भग० ६२७ ।

केयार–अवन्तीजनपदे कूपविशेषः । व्य० प्र० १८ अ । नि० चू० प्र० ३५१ अ ।

केयावंती–केआवन्ति–केचन । आचा० १८५ ।

केयूरं–आभरणविशेषः । आव० १८२ । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६९ । बाह्याभरणविशेषावित्यर्थः । ठाणा० ४२१ ।

केयूवो–केयूपः, मेरोर्दक्षिणस्यां पातालकलशः । जीवा० ३०६ ।

केलास–कैलासः–मेरुः । नि० चू० द्वि० ९९ अ । कैलाशः राहोः कृष्णपुद्गलः । सूर्य० २८७ । साकेतनगरे गाथापतिविशेषः । अन्त० २३ । अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य सप्तममध्ययनम् । अन्त० १८ । ठाणा० २२६ । कैलाशः, नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवविशेषः । जीवा० ३६५ । तृतीयोऽनुवेलन्धरनागराजः, तस्यैवाऽऽवासपर्वतश्च । जीवा० ३१३ ।

केलासभवणं–कैलासभवनं कैलासपर्वतरूपाश्रयः । पिण्ड० १३२ ।

केलाससमा–कैलाससमा–कैलासपर्वततुल्या । उत्त० ३१६ ।

केलि–परिहासः । बृ० प्र० २६९ आ । क्रीडा । जीवा० १७३ । प्रज्ञा० ९६, २५८ । केलिः, नर्म । औप० ५२ ।

केलीकिलः– । आचा० २५५ ।

केवइका–द्रुम्माः । बृ० तृ० १३९ आ ।

केवइकालं–कियत्कालम् । भग० १९ ।

केवइकालस्स–कियता कालेन । जीवा० १४१ ।

केवगादि–द्रव्यविशेषः । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।

केवच्चिरं–कियच्चिरं, कियन्तं कालं यावत् । जीवा० ६७ । कियच्चिरं–कियत्कालम् । भग० ११६ ।

केवडिया–रूप्यकाः । बृ० प्र० २९७ आ ।

केवलं–शुद्धम् । आव० ७६९ । ठाणा० ४६ । अकलङ्कम् । उत्त० १८८ । सम्पूर्णज्ञेयविषयत्वात् सम्पूर्णम् । अनु० २ । परिपूर्णं, विशुद्धं वा । प्रश्न० १३५ । सकलजगद्भाविसमस्तवस्तुसामान्यपरिच्छेदरूपम् । प्रज्ञा० ५२७ । असहायं, मत्यादिज्ञाननिरपेक्षं, शुद्धं, तदावरणकर्ममलकलङ्काङ्करहितं, सकलं, तत्प्रथमतयैव अशेषतदावरणाभावतः सम्पूर्णोत्पत्तेः, असाधारणं, अनन्यसदृशं, ज्ञेयानन्तत्वादनन्तं, यथावस्थिताशेषभूतभवद्भाविभावस्वभावावभासि वा । आव० ८ । अद्वितीयम् । आव० ७६० । असहायं, मत्यादिनिरपेक्षत्वादकलङ्कं वा आवरणमलाभावात्, सकलं वा तत्प्रथमतयैवाशेषतदावरणाभावतः सम्पूर्णोत्पत्तेरसाधारणं वा, अनन्यसदृशत्वादनन्तं वा । ठाणा० ४७ । असहायं मत्यादिज्ञाननिरपेक्षत्वात् शुद्धं वा, आवरणमलकलङ्करहितत्वात्, सकलं वा तत्प्रथमतयैवाशेषतदावरणाभावतः सम्पूर्णोत्पत्तेः असाधारणं वा, अनन्यसदृशत्वात् अनन्तं वा । ठाणा० ३४८ । केवलः–शुद्धः, अन्यपदासंसृष्टः । दश० १२६ । परिपूर्णः । ज्ञाता० १८० । भग० १५५ । असहायं, शुद्धं, परिपूर्णं, असाधारणं, अनन्तं वा । भग० ६६ । सुद्धो अण्णेण सह असंजुत्तो । दश० चू० ५४ ।

केवलकप्प–केवलकल्पं, केवलं–केवलज्ञानं तत्कल्पं परिपूर्णतया तत्सदृशं परिपूर्णमित्यर्थः । प्रज्ञा० ६०० । परिपूर्णम् । जीवा० १०९ । संपूर्णम् । बृ० तृ० ५२ आ । केवलज्ञानसदृशः, संपूर्णपर्यायो वा केवलकल्प इति । भग० १५५ । केवलः–परिपूर्णः स चासौ स्वकार्यसामर्थ्यात् कल्पश्च केवलज्ञानमिव वा परिपूर्णतयेति, केवलकल्पः समयभाषया परिपूर्णः । ठाणा० ६१ । केवलः–परिपूर्णः स चासौ कल्पश्च स्वकार्यसमर्थ इति केवलकल्पः । ज्ञाता० १८० ।

केवलकप्पा–केवलकल्पा–परिपूर्णा, परिपूर्णप्राया वा । ठाणा० १९१ ।

केवलदंसणं–केवलमेव दर्शनं–सकलजगद्भाविवस्तुसामान्यपरिच्छित्तिरूपं केवलदर्शनम् । जीवा० १८ ।

केवलदंसणि–केवलं–सकलदृश्यविषयत्वेन परिपूर्णं दर्शनं केवलदर्शनी-तदावरणक्षयाविर्भूततल्लब्धिमतो जीवस्य सर्वद्रव्येषु मूर्तामूर्तेषु सर्वपर्यायेषु च भवतीति । अनु० २२० ।

केवलनाणं–केवलज्ञानं–पञ्चमकं ज्ञानं, अथवाऽनन्तराभिहितज्ञानसारूप्यप्रदर्शक एव । आव० ८ । पञ्चमं ज्ञानम् । ठाणा० ३३२ ।

केवलवेयसो–केवलवेदसः–अवगततत्त्वः । जीवा २५६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलि–केवली–श्रुतावधिमनःपर्यायकेवलज्ञानी । ठाणा० ६८ ।

केवलिआराहणा–केवलिनां–श्रुतावधिमनःपर्यायकेवलज्ञानिनामियं केवलिकी सा चासावाराधना चेति केवलिकाराधना । ठाणा० ६८ ।

केवलिइए–रूप्यकाः । बृ० तृ० ६३ आ ।

केवलिउवासग–केवलिनमुपास्ते यः श्रवणानाकाङ्क्षी तद् उपासनमात्रपरः सन्नसौ केवल्युपासकः । भग० २२२ ।

केवलिए–केवलं–अद्वितीयं केवलिप्रणीतत्वाद् वा कैवलिकम्। ज्ञाता० ५१ ।

केवलिकंसंसे–केवलिनः 'कम्मंस'त्ति कार्मग्रन्थिकपरिभाषयाऽंशशब्दस्य सत्पर्यायत्वात् सत्कर्माणि केवलिसत्कर्माणि भवोपग्राहीणि । उत्त० ५८६ ।

केवलिकी– । प्रज्ञा० ३६६ ।

केवलिकेवली–केवलिनस्तृतीयो भेदः । नि० चू० द्वि० १३६ आ ।

केवलिपन्नत्तो–केवलिप्रज्ञप्तः–सर्वज्ञदेशितः । प्रज्ञा० ३६६ ।

केवलिमरण–केवलिमरणम् । सम० ३३ । ये केवलिनः–उत्पन्नकेवलाः सकलकर्म्मपुद्गलपरिशाटतो म्रियन्ते तज्ज्ञेयमिति । मरणस्य द्वादशो भेदः । उत्त० २३४ ।

केवलिय–केवलमद्वितीयं नापरमित्थम्भूतम् । आव०७६० । कैवलिकं–परिपूर्णम् । आव० ३२६ । केवलस्य भावः कैवल्यं–घातिकर्मवियोगः । आव० ७३ ।

केवलिसमुग्घाय–केवलिनि अन्तर्मुहूर्त्तभाविपरमपदे समुद्घातः केवलिसमुद्घातः । जीवा० १७ ।

केवलिसावग–जिनस्य समीपे यः श्रवणार्थी सन् शृणोति तद्वाक्यान्यसौ केवलिश्रावकः । भग० २२२ ।

केवली–सर्वज्ञः । भग० ६७ । चतुर्दशशतके दशम उद्देशः । भग० ६३० ।

केवलीणठाणं–केवलिनां स्थानं, केवलिनामहिंसायां व्यवस्थितत्वात् । अहिंसायाः षट्त्रिंशत्तमं नाम । प्रश्न०६६ ।

केशर–पद्मपक्ष्मम् । भग० १२ । जं० प्र० १३८ ।

केशव–कृष्णः । आचा० ३६० ।

केशि–उदायनभागिनेयः । ठाणा० ४३१ ।

केशिगौतमीयं–केशिगौतमाभ्यामभिहितं । विशे० ६४८ ।

केस–केशाः–शिरोजाः । सम० ६१ । शिरसिजाः । उत्त० ३३८ । कः–अज्ञातकुलशीलसहजत्वादनिर्दिष्टनामकः सकारः प्राकृतशैलीभवः । जं० प्र० २०२ ।

केसभूमी–केशभूमिः; केशोत्पत्तिस्थानभूता मस्तकत्वक् । जीवा० २७३ ।

केसमंसु–श्मश्रूणि, कूर्चकेशाः । भग० ८८ ।

केसर–किञ्जल्कः । जं० प्र० ४२ । आचा० ८१ । वर्णविशेषः । आचा० २६ । केशरम् । आव० ४१६, ६३५ । ज्ञाता० ६८ । केशरः–गन्धः । आव० २७७ । केसरोपलक्षितः । जीवा० १७६ । केसरप्रधानम् । जीवा० १२३ । काम्पील्यनगरे उद्यानविशेषः । उत्त० ४३८ ।

केसरचामरवाल–सिंहस्कन्धचमरपुच्छकेशाः । ज्ञाता० २२२ ।

केसरपाली–केसरपालिः–स्कन्धकेशश्रेणिः । जं०प्र०५३० ।

केसरा–केसराणि–कर्णिकायाः परितोऽवयवाः । जं० प्र० २८४ ।

केसरि–द्रहविशेषः । ठाणा० ७३ ।

केसरिका–पात्रमुखवस्त्रिका । ओघ० २१२ ।

केसरिद्दहो–केसरिद्रहो नाम द्रहः । जं० प्र० ३७७ ।

केसरिया–केशरिका–प्रमार्जनार्थं चीवरखण्डम् । भग० ११३ । औप० ६५ ।

केसरी–चीवरखण्डं प्रमार्जनार्थम् । ज्ञाता० ११० । प्रतिवासुदेवनाम । सम० १५४ ।

केसरुमती– । व्य० प्र० २८० आ ।

केसव–केशवः–वासुदेवः । आव० १६६ । ज्ञाता० २१३ । जीवा० १२६ । वसुदेवलघुसुतः वासुदेवः । उत्त० ४८६ । अपरविदेहे जीर्णश्रेष्ठिपुत्रः, श्रेयांसजीवः । ऋषभपूर्वभववैद्यपुत्रस्य मित्रम् । आव० १४६ ।

केसवरिसं–केशवर्षः । आव० ७३४ ।

केसवाणिज्ज–केशवाणिज्यम् । दासीर्गृहीत्वाऽन्यत्र विक्रीणाति । आव० ८२६ ।

केसहत्थ–केशहस्तो–धम्मिल्लः । भग० ४६८ ।

केसा–केशाः–शिरोजाः । प्रश्न० ६८ ।

केसि–कीदृशी स्त्री । अनु० १३ ।

केसिआ–केशा विद्यन्ते यस्याः सा केशिका । सूत्र० ११६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केसिगोयमिज्जं–केशिगौतमीयं, उत्तराध्ययनेषु त्रयोविंशतितममध्ययनम् । उत्त० ६ । केशिगौतमीयं–उत्तराध्ययनेषु त्रयोविंशतितममध्ययनम् । उत्त० ४६७ ।

केसिसामि–केशिस्वामी । भग० १३८ । केशिनामा आचार्यः । भग० ५४८ ।

केसी–पार्श्वापत्यः श्रमणः । राज० ११८ । निरय० १, ४० । केशी–विगतिद्वारे उदायनस्य भागिनेयः । आव० ५३७ । केश्यभिधानः कंससत्को दुष्टोऽश्वः । प्रश्न० ७५ । उदायनस्य भागिनेयः । भग० ६१८ ।

केसुअ–किंशुकं–पलाशपुष्पम् । जं० प्र० २१२ ।

कैदारकः–मल्लः । पिण्ड० ६६ ।

कैवल्यं–घातिकर्मवियोगः । विशे० ५२७ ।

कोंकण–देशविशेषः । आचा ५ । व्य० प्र० १६८ अ । नि० चू० प्र० ६३ अ । नि० चू० द्वि० ७६ आ ।

कोंकणकसाधुः–अपध्यानाचरिते साधुः । आव० ८३० ।

कोंकणग–म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ । प्रज्ञा० ५५ । कोङ्कणकः–देशविशेषः । आव० ६३ । प्राणातिपातदोषविषये उदाहरणम् । आव० ८१८ ।

कोंकणगखमणओ–कोङ्कणकक्षपकः–मनोदण्डे उदाहरणम् । आव० ५७७ ।

कोंकणगदेसो–कोङ्कणकदेशः–कर्मसिद्धोदाहरणे देशविशेषः । आव० ४०८ ।

कोंकणगरुवं– । ओघ० १५६ ।

कोंकणगसावगो–कोङ्कणकश्रावकः–गुणोदाहरणे श्राद्धः । आव० ८२१ ।

कोंकारव–कोङ्कारवः, पुरद्वारस्योद्घाट्यमानस्याव्यक्तोऽयं शब्दः । दश० ४८ ।

कोंच–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । क्रौञ्चः–पक्षिविशेषः । आव० ३६६ । क्रौञ्चः, लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ । चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

कोंचवरो–क्रौञ्चवरः, अपान्तरालद्वीपः । जीवा० ३६८ ।

कोंचवीरग–पेटासदृशं जलयानम् । बृ० द्वि० ३२ अ ।

कोंचस्सरा–क्रौञ्चस्वरा–विद्युत्कुमाराणां घण्टा । जं० प्र० ४०७ । क्रौञ्चस्वरः, क्रौञ्चस्येव स्वरो यस्य सः । जीवा० २०७ ।

कोंचा–लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

कोंचावली–क्रौञ्चावलिः । जीवा० १६१ ।

कोंचासणं–क्रौञ्चासनं, यस्यासनस्याधोभागे क्रौञ्चो व्यवस्थितः सः । जीवा० २०० ।

कोंची–द्रविडदेशे नगरी । बृ० द्वि० २२७ अ ।

कोंटलवेंटलं–कार्मणवशीकरणादि । आव० १६३ ।

कोंडग–क्षत्रियविशेषः । नि० चू० प्र० १२ अ ।

कोंडलमेंढं–कुण्डलमेंढ–भृगुकच्छे वाणव्यन्तरविशेषयात्रास्थानम् । बृ० द्वि० १३६ अ । भृगुकच्छे वाणव्यन्तरविशेषः । बृ० द्वि० १३६ अ ।

कोंडिण्णो–कौण्डिन्य–तापसविशेषः । आव० २८७ ।

कोंडिन्न–कोण्डिन्य–शिवभूतिशिष्यः । विशे० १०२२ ।

कोंडियायण–चैत्यविशेषः । भग० ६७५ ।

कोंतियं–कौन्तिकम्–मधुविशेषः । आव० ८५४ । महुस्स पढमो भेओ । नि० चू० प्र० १६६ आ ।

कोंति–पाण्डुराज्ञो राज्ञी । ज्ञाता० २१३ ।

कोंतेय– । नि० चू० प्र० ३६ ।

कोअगडं–पार्श्वजिनस्य प्रथमपारणकस्थानम् । आव० १४६ ।

कोआसिअ–कोआसिते–विकसिते । जं० प्र० ११३ ।

कोआसिय–पद्मवद्विकसितम् । औप० १७ ।

कोइल–कोकिल–अन्यपुष्टः । उत्त० ६५३ ।

कोइलच्छद–कोकिलच्छदः–तैलकण्टकः । उत्त० ६५३ ।

कोइलच्छदकुसुमं–कोकिलच्छदकुसुमं–कोकिलच्छदः–तैलकण्टकः, तस्य कुसुमम् । प्रज्ञा० ३६० ।

कोइला–लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४६ । कोकिला–परभृत् । प्रश्न० ३७ ।

कोइल्लं–कोल्लेरं–नित्यवासविषये सङ्गमस्थविरदृष्टान्ते नगरम् । आव० ५३६ ।

कोउअ–कौतुकं–रक्षा । जं० प्र० १८६ । अलङ्कारविशेषः । आव० १८२ । मषीपुण्ड्रादि । उपा० ४४ ।

कोउगं–सौभाग्यादिनिमित्तं परेषां स्नपनादि । औप० १०६ । सौभाग्याद्यर्थं स्नपनम् । प्रज्ञा० ४०६ । अवतारणकादि । सूत्र० ३२५ । रक्षादिकम् । प्रश्न० ३६ । कौतुकं–रक्षादि । आव० १३० । कौतुकं–समवसरणम् । बृ० प्र० १६४ अ । मङ्गलकर्म । उत्त० ७१० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोउगामिगा–कौतुकात् मृगा इव मृगा । उत्त० ५०१ ।

कोउतं–कौतुकं–उत्सवः । आव० ४३३ ।

कोउय–कौतुकं–रक्षाविधानादि । भग० ५४५ । ललाटस्य मुशलस्पर्शनादीनि । उत्त० ४६० । कौतुकानि–मषीपुण्ड्रादीनि । निरय० ७ । कौतुकं–आश्चर्यम् । व्य० प्र० १६३ अ । मषीतिलकादिकम् । भग० १३७ । मषीपुण्ड्रादि । भग० ३१८ । सौभाग्याद्यर्थं स्नपनकम् । भग० ५१ ।

कोउयकरण–कौतुककरणं–सौभाग्यादिनिमित्तं परस्नपनकादिकरणम् । ठाणा० २७५ ।

कोऊहल–कौतुकं–अपत्याद्यर्थं स्नपनादि । उत्त० ४७६ ।

कोऊहलपडिया–कोऊहलप्रतिज्ञया–कौतुकेनेत्यर्थः । नि० चू० प्र० १८४ अ ।

कोऊहल्ल–कुतूहलं, नटादिषु कौतुकम् । दश० २६७ । कौतूहलम् । आव० ४१६ ।

कोऊहल्लिलो–कुतूहलवान् । ओघ० ६८ ।

कोकंतिय–कोकन्तिकः–लोमटकः, यो रात्रौ कौ कौ एवं रौति । प्रश्न० ७ । लोमटिकः, सनखपदश्चतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ । काकन्तिका–लोमटका ये रात्रौ को को इत्येवं रवन्ति । जं० प्र० १२४ । शृगालाकृतिर्लोमटको रात्रौ को को इत्येवं राररटीति । आचा० ३३८ ।

कोकंतिया–सनखपदचतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ । कोकन्तिकाः–लुङ्कडिकाः । जीवा० २८२ । लोमटकाः । ज्ञाता० ७० ।

कोकणदे–जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

कोकासवड्ढई–कोकाशवर्द्धकी–शिल्पकर्मविषये दृष्टान्तः । आव० ४०६ ।

कोकासिअ–कोकासिते–विकसिते । जं० प्र० २३६ ।

कोकासियं–कोकासितं–पद्मवद्विकसितम् । जीवा० २७३ । विकसितम् । प्रश्न० ८२ ।

कोकिला–लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।

कोक्कंतिए–कोकंतिया–लुङ्कडी । प्रज्ञा० २५४ ।

कोक्कासो–कोकाशः–शिल्पैरर्थोपार्जने कोकाशः । दश० १०७ । नामविशेषः । यन्त्रमयकापोतकारकः । व्य० द्वि० १२७ आ ।

कोक्कुइय–भाण्डा भाण्डप्राया वा । औप० ६६ । कौकुच्यम् । चेष्टाविशेषः । उत्त० ७०६ ।

कोच्चितो–शैक्षकः । व्य० द्वि० १४७ अ ।

कोच्छरं– । नि० चू० द्वि० १३४ अ ।

कोच्छा–कुत्सा–शिवभूत्यादयः । ठाणा० ३६० ।

कोच्छुभो–मणी । नि० चू० तृ० ८१ आ ।

कोज्जय–कुब्जकं, कुबो इति नाम्ना वृक्षविशेषः । जं० प्र० १६२ ।

कोंटलय–कौटलं ज्योतिषं निमित्तं वा । ओघ० १४६ ।

कोटा–ग्रीवा । प्रश्न० ५६ ।

कोंटिबो–उडवो । नि० चू० द्वि० ७७ आ ।

कोटिक–गणविशेषः । आचा० ८१ । दश० २४२ ।

कोटिकादिः–गणविशेषः । प्रश्न० १२६ ।

कोटिमं–उपरिबद्धभूमिकं गृहम् । व्य० द्वि० १०७ अ । उत्त० ७०६ ।

कोट्टंब–कौट्टम्बानि–गौडदेशोद्भवानि । व्य० द्वि० २०४ अ ।

कोट्ट–जं अडविमज्झे भिल्लपुलिंदचाउवन्नजणवयमिस्सं दुग्गं वसति वणिया च जत्थ ववहरंति तं कोट्टं भन्नति । नि० चू० द्वि० २१ अ । प्राकारः । उत्त० ६०५ । ओघ० २१० । अटव्यां चतुर्वर्णजनपदयुतं भिल्लदुर्गम् । बृ० द्वि० १०५ अ । प्राकारः । प्रश्न० १७ ।

कोट्टकिरियं–कुट्टनक्रिया–रौद्ररूपा चण्डिका, महिषकुट्टनक्रियावतीमित्यर्थः । भग० १६४ । तत्कुट्टनपरा कोट्टक्रिया । अनु० २६ ।

कोट्टगं–जत्थ लोगो अडवीए पउरफलाए गंतुं फलाइं सोसेति तं कोट्टगं भण्णति । नि० चू० द्वि० १२८ अ । कोट्टकं–पुलिंदपल्ली । बृ० प्र० १६५ आ । गंत्रीपोट्टलकादिभिरानीय नगरादौ विक्रीणाति । बृ० प्र० १४७ आ । लोकः प्रचुरफलायामटव्यां गत्वा फलानि यावत्पर्याप्तं गृहीत्वा यत्र गत्वा शोषयति, पश्चाद् गन्त्रीपोट्टलकादिभिरानीय नगरादौ विक्रीणाति तत् । बृ० द्वि० २६० अ ।

कोट्टणि–कोट्टन्यः–याः कोट्टग्रहणाय प्रतिकोट्टभित्तय उत्थाप्यन्ते ताः । जं० प्र० २०६ ।

कोट्टपाल–नगरं रक्खति जो सो णगररक्खिओ कोट्टपालो । नि० चू० प्र० १६५ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोट्टबलिकरण-कोट्टाय-प्राकाराय बलिकरणम् । कोट्टा-क्रीडा तेन बलिकरणं चन्दिकादे: पुरतो बस्तादेरिव उपहारविधानम् । प्रश्न० १४ ।

कोट्टरं-छिद्रम् । नि० चू० प्र० १६१ आ ।

कोट्टवीर-शिवभूतिशिष्यः । विशे० १०२२ । कोट्टवीरः-शिवभूतेर्लघुशिष्यः । उत्त० १८० ।

कोट्टा-कोट्टाः-क्रीडाः । प्रश्न० १७ ।

कोट्टागा-काष्ठतक्षकाः, वर्द्धकिनः । आचा० ३२७ ।

कोट्टितिय-कुट्टयन्तिका तिलादीनां चूर्णनिकारिका । ज्ञाता० ११७ ।

कोट्टिबा-गोभक्तदानस्थानम् । बृ० द्वि० १३३ अ ।

कोट्टिवे-जत्थ गोभत्तं दिज्जति । नि० चू० तृ० ४२ अ । उडुप । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

कोट्टिमं-कुट्टिमम् । आव० ५५० ।

कोट्टिमअकोट्टिमाइं-कृत्रिमाकृत्रिमाणि । पउ० ६५-३८ ।

कोट्टिमकारे-शिल्पविशेषः । अनु० १४९ ।

कोट्टिल्लं-ह्रस्वमुद्गरविशेषः । विपा० ७१ ।

कोट्टिल्लयं-मुद्गरकः । विपा० ७२ ।

कोट्टेइ-कुट्टयति । आव० ३९६ ।

कोट्ठ-कोष्ठः-कुशूलः । जं० प्र० १५४ । कुशूलः । जं० प्र० १६ । गन्धद्रव्यविशेषः । जीवा० १९१ । जं०प्र० ६० । उपरितनगृहं, धान्यकोष्ठो वा । जं० प्र० २१० । गन्धद्रव्यम् । जं० प्र० ३५ । कोष्ठः-कुशूलः । भग० २७४ । बृ० द्वि० १६८ आ । ठाणा० १२४ । सूर्य० ५ । कोष्ठकः, अपवरकः । जीवा० १६० । गङ्गासमुदायात्मकः । भग० ६७६ । धान्यभाजनानि । ठाणा० १७३ । कोष्ठान् आ-समन्तात् कुर्वते तस्मिन्निति । उत्त० ३५१ । अविनष्टसूत्रार्थधारणम् । नंदी० १७७ । पुलिंदपल्ली । नि० चू० द्वि० १४४ अ । कोष्ठं, बुद्धिभेदः । प्रज्ञा० ४२४ ।

कोट्ठए-श्रावस्तीनगर्यां चैत्यः । भग० ५५२, ६५६, ४८४ । आव० ३१२ । राज० १२६ । ज्ञाता० २५१ । निरय० २२ । श्रावस्तीनगर्यां चैत्यः । उपा० ५३ । वाणारसीनगर्यां चैत्यः । उपा० ३१, ३४ । आव० ७१४ ।

कोट्ठओ-वट्टमढो सुन्नओ । दश० चू० ८२ । अग्गिमालिंदओ । नि० चू० प्र० १९२ अ ।

कोट्ठग-कोष्ठकं-श्रावस्त्यां तिन्दुकोद्याने चैत्यविशेषः । उत्त० १५३ । कोष्ठकाः-अपवरकाः । प्रज्ञा० ८६ । बृ० प्र० ३१४ अ । जं० प्र० ७६ । अध्ययनापवरकः । बृ० द्वि० १०७ अ । कोष्टकः-चट्टानां शाला । व्य० द्वि० ४२० अ । आवासविशेषः । ओघ० ८२ ।

कोट्ठतो-कोष्ठकः । बृ० द्वि० ६२ अ ।

कोट्ठपुड-कोष्ठपुटः-गन्धद्रव्यपुटः । जीवा० १९१ । कोष्ठपुटे ये पच्यन्ते ते कोष्ठपुटाः-वासविशेषाः । ज्ञाता० २३२ । गन्धद्रव्यविशेषः । प्रज्ञा० ३०७ । कोष्ठं-गन्धद्रव्यं तस्य पुटाः । जं० प्र० ३५ । पुटैः परिमितानि यानि कोष्ठादिगन्धद्रव्याणि तान्यपि परिमेये परिमाणोपचारात् कोष्ठपुटानि । जीवा० १९२ ।

कोट्ठबुद्धिणो-कोष्ठबुद्धयः:-यथा कोष्टके धान्यं प्रक्षिप्तं तदवस्थमेव चिरमप्यवतिष्टते न किमपि कालान्तरेऽपि गलति, एवं येषु सूत्रार्थौ निक्षिप्तौ तदवस्थावेव चिरमप्यवतिष्टतः ते कोष्ठबुद्धयः । बृ० प्र० १९३ आ ।

कोट्ठबुद्धी-कोष्ठक इव धान्यं या बुद्धिराचार्यमुखाद्विनिर्गतौ तदवस्थानौ च सूत्रार्थौ धारयति न किमपि तयोः कालान्तरे गलति सा कोष्ठबुद्धिः । प्रज्ञा० ४२४ । कोष्ठवत्-कुशूल इव सूत्रार्थधान्यस्य यथाप्राप्तस्याविनष्टस्याऽऽजन्मधरणाद् बुद्धिः-मतिर्येषां ते । औप० २८ ।

कोट्ठसमुग्गयं-कोष्ठसमुद्गकम् । जीवा० २३४ ।

कोट्ठागार-दब्भादितणट्ठाणं । नि० चू० प्र० २६५ अ । जत्थ सणसत्तरसाणि धण्णाणि कोट्ठागारो । नि० चू० प्र० २७२ आ । कोष्ठा-धान्यभाजनानि तेषामागारं-गृहं कोष्ठागारं धान्यगृहम् । ठाणा० १७३ । कोष्ठा-धान्यपल्यास्तेषामगारं-तदाधारभूतं गृहम् । उत्त० ३५१ ।

कोट्ठारं-कोष्ठागारम् । आव० ४३५ ।

कोट्ठिया-पुरिसप्पमाणा हीणाधिया वा चिक्खल्लमती । नि० चू० तृ० ५९ अ । कोष्ठिका-लोहादिधातुधमनार्थं मृत्तिकामयी कुशूलिका । उपा० २१ ।

कुट्ठियाओ-कोष्ठिकातः-मृन्मयकुशूलसंस्थानायाः । आचा० ३४४ ।

कोडंड-कुदंड-कारणिकानां प्रज्ञापराधान्महत्यपराधिनोऽप-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रावे अल्पं राजग्राह्यं द्रव्यम् । भग० ५४४ ।

कोडंब–कोलम्बप्रान्तः, लोकेऽवनतं वृक्षशाखाग्रमुच्यते । ज्ञाता० २३६ ।

कोडंबिय– । नि० चू० प्र० ११८ अ ।

कोड–कुटिलः, क्रुद्धः । आव० ५३६ ।

कोडल्लय–णयवेसिय । नि० चू० द्वि० ६२ आ ।

कोडालसगुत्तो–कोडालसगोत्रः–ऋषभदत्तब्राह्मणस्य गोत्रः। आव० १७८ ।

कोडालसगोत्त–गोत्रविशेषः । आचा० ४२१ ।

कोडि–कोटिः–अस्रिः, विभागः । पिण्ड० ८३ । कोटयो–विभागाः सूक्ष्मपल्योपमापेक्षयाऽसंख्येयखण्डानि बादरपल्योपमापेक्षया तु कोटयः–सङ्ख्याविशेषाः । ठाणा० ९१ । विभागः । ठाणा० ४५२ ।

कोडिगारा–शिल्पार्यभेदः । प्रज्ञा० ५६ ।

कोडिण्ण–कौडिन्यः–शिवभूतेर्ज्येष्ठशिष्यः । उत्त० १८० । नगरविशेषः । ज्ञाता० ३०९ । कोडिन्यः–महागिर्याचार्यशिष्यः । आव० ३१६ । कौण्डिन्यः–बोटिकशिवभूतेरादिशिष्यः । आव० ३२४ ।

कोडितगणे–महावीरस्य नवमो गणः । ठाणा० ४५१ ।

कोडिन्न–कौण्डिन्यः–महागिरिसूरीणां शिष्यः । विशे० ९६० । शिवभूतेः प्रथमशिष्यः । विशे० १०२२ । उत्त० ३२१ । कोण्डिन्यः–मिथिलायां श्रीमहागिर्याचार्यशिष्यः । उत्त० १६३ ।

कोडिन्ना– । ठाणा० ३९० ।

कोडिपडागा–कोटिपताका । आव० ३४२ ।

कोडियं–गाढचम्पितम् । बृ० द्वि० २४३ आ ।

कोडियसहियं–कोटीभ्यां सहितं कोटीसहितम् । मिलितोभयप्रत्याख्यानकोटि, चतुर्थादिकरणमेव । आव० ८४० ।

कोडिसहियं–मीलितप्रत्याख्यानद्वयकोटि चतुर्थादि कृत्वाऽनन्तरमेव चतुर्थादेः करणम् । भग० २९६ ।

कोडिसिला–कोटीशिला । आव० १७६ ।

कोडी–कोट्यौ–अग्रे प्रत्याख्यानाद्यन्तकोणरूपे । उत्त० ७०६ । कोटि–पञ्चोत्तरं लक्षम् १०५००० । जीवा० ३२५ ।

कोडीए–कोट्या–अग्रभागेन । जं० प्र० ९८ ।

कोडीकरण–कोट्यौव कोटीकरणम् । दश० १६२ ।

कोडीणं–कोट्यः–अनेका कोटाकोटिप्रमुखाः सङ्ख्याः । जं० प्र० ९५ ।

कोडीणा– । ठाणा० ३९० ।

कोडीमातसा– । ठाणा० ३९३ ।

कोडीवरिसं–कोटिवर्षं, लाटजनपदे आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । कोटीवर्ष–मूलगुणप्रत्याख्यानोदाहरणे म्लेच्छनगरम् । आव० ७१५ ।

कोडीसहियं–कोटीभ्यां–एकस्य चतुर्थादिरन्तविभागोऽपरस्य चतुर्थादेरेवारम्भविभाग इत्येवंलक्षणाभ्यां सहितं–मिलितं युक्तं कोटीसहितं मिलितोभयप्रत्याख्यानकोटेश्चतुर्थादिः करणमित्यर्थः । ठाणा० ४९८ । कोटीसहितं–कोट्यौ–अग्रे प्रत्याख्यानाद्यन्तकोणरूपे सहिते मिलिते यस्मिंस्तत् ।

कोडुंबं–कौटुम्बं–स्वराष्ट्रविषयम् । जीवा० १६६ ।

कोडुंबिअ–कौटुम्बिकाः–अधिकारिणः । जं० प्र० १८८ । कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवगलकाः । जं० प्र० १९० । कौटुम्बिकः–श्रेष्ठ्यादिः । ओघ० १२० । कौटुम्बिका महर्द्धिकाः । बृ० ६५ अ । कौटुम्बिकः–कतिपयकुटुम्बप्रभुः । जीवा० २८० ।

कोडुंबित–कौटुम्बिकः–कतिपयकुटुम्बप्रभुः । ठाणा ४६३ ।

कोडुंबिय–कौटुम्बिकः–कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवलगकाः । भग० ३१८ । औप० १४ । कौटुम्बिकाः–कतिपयकुटुम्बप्रभवो राजसेवकाः । भग० ११५ । कौटुम्बिकाः–ग्राममहत्तराः । प्रश्न० ९६ । भग० ४७४ । कौटुम्बिकाः–कतिपयकुटुम्बनायकाः । भग० ४६३ । नि० चू० प्र० ७८ आ ।

कोडुं–स्फुटम् । आव० ४२० । कौतुकं–मनोरथः आव० ४३२ ।

कोढ–कुष्ठं–पाण्डुरोगः, गलत्कोष्ठं वा । बृ० प्र० १७० अ । रोगविशेषः । ज्ञाता० १८१ ।

कोढिउ–कुष्ठी । आव० ६७४ ।

कोढी–कुष्ठमष्टादशभेदं तदस्यास्तीति कुष्ठी । आचा० २३३ ।

कोणं–कर्णम् । बृ० प्र० १०७ आ ।

कोणंगुली–कोणेऽङ्गुलिः । आव० ६७९ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोण–कोणः–वादनदण्डः । जीवा० १६३ । जं० प्र० ३८ । कोणः । आव० ८४२ ।

कोणओ–लगुडो । नि० चू० प्र० १०५ आ ।

कोणा–अश्रयः । जीवा० १२३ ।

कोणालग–कोणालकः–पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

कोणिए–कूणिकः–चम्पानगर्यां राजा । भग० ३१६ । कोणिकः–चम्पानगर्यधिपतिः । अन्त २५ । चम्पानगर्यां राजा । प्रश्न० १ ।

कोणिओ–कोणिकः, राजविशेषः । विपा० ६० । श्रेणिकपुत्रः । दश० ५० । शिक्षायोगदृष्टान्ते श्रेणिकचेल्लणयोः पुत्रः । यः पूर्वभवे कुण्डीश्रमण आसीत् । आव० ६७८ ।

कोणिक–श्रेणिकपुत्रः । व्य० द्वि० ४२६ अ । चम्पायां राजा । ज्ञाता० ३ ।

कोण्हुआ–जम्बूकः । आव० ३५१ ।

कोतव–उदररोगनिष्पन्नं कौतवम् । अनु० ३५ । कोतवो–वरको । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कोतालि–गोट्ठी । नि० चू० तृ० १७ आ ।

कोताली–गोष्ठी । बृ० द्वि० ३१ आ ।

कोतुविआ–कुतुपेन बहिर्ग्रामे व्यवहारकृत् । बृ० द्वि० १६० आ ।

कोत्तिया–भूमिशायिनः । भग० ५१६ । निरय० २५ । औप० ६० ।

कोत्थ–जनपदविशेषः । भग० ६८० । उदरदेशः । ज्ञाता० ६८ ।

कोत्थल–वस्त्रकम्बलादिमयः । उत्त० ४५७ ।

कोत्थलकः–बस्तिः, अपाटितेनापनीतमस्तकेन निकर्षितचर्मान्तर्वर्तिसर्वास्थ्यादिकचवरेणापरचर्ममयस्थिगलकस्थगितापानछिद्रेण सङ्कीर्णमुखीकृतग्रीवान्तर्विवरेणाजापश्वोरन्यतरस्य शरीरेण निष्पन्नश्चर्ममयः प्रसेवकः कोत्थलापरपर्यायो इतिः । पिण्ड० १८ ।

कोत्थलकारिया–कोत्थलकारिका, भ्रमरीविशेषः । गृहकारिका । ओघ० ११७ ।

कोत्थलकारी–भ्रमरी । बृ० प्र० २७८ अ ।

कोत्थलगारिअ–कोत्थलकारिका–गृहकारिका । ओघ० ११८ ।

कोत्थलगारिया–कोत्थलकारिका–भ्रमरीविशेषः । आव० ६२५ ।

कोत्थलवाहगो–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

कोत्थुंभरि–कुस्तुम्भर्यो–धान्यककणाः । जं० प्र० २४३ ।

कोत्थूभो–कौस्तुभो–वक्षोमणिः । प्रश्न० ७७ ।

कोदंड–धनुः । भग० २६० । उत्त० ३११ । कुदण्डस्तु कारणिकानां प्रज्ञाद्यपराधात् महत्यप्यपराधिनोऽपराधे अल्पं राजग्राह्यं द्रव्यम् । जं० प्र० १६४ । चापः । जं० प्र० २०६ ।

कोदूसग–कोद्रवविशेषः । भग० २७४ ।

कोदूसा–धान्यविशेषः । भग० ८०२ ।

कोद्दंसा–औषधिविशेषः । प्रज्ञा ३३ ।

कोद्दव–कोद्रवः–धान्यविशे । भग० ८०२ । दश० १६३ । सूत्र० ३०६ । धान्यविशेषः । तृणविशेषः । ठाणा० २३४ । औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । कोद्रवः, धान्यविशेषः । तृणपञ्चके तृतीयोभेदः । आव० ६५२ ।

कोद्दवकूरं–कोद्रवतन्दुलम् । आव० २०० ।

कोद्दवजाउलयं–कोद्दवोभज्झी । ओघ० १६६ ।

कोद्दवोदणसेइया–कोद्रवौदनसेतिका । आव० ६६२ ।

कोद्दवुभज्जी–कोद्दवोभज्झी-कोद्दवजाउलयं । ओघ० १६६ ।

कोद्दालकः–एकोरूकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ ।

कोद्दालिय–कुद्दालिकः, भूखनित्रविशेषः । विपा० ५८ ।

कोधे–क्रोधे निश्रितमिति सम्बन्धात् क्रोधाश्रितं–कोपाश्रितं मृषेत्यर्थः । ठाणा० ४८६ ।

कोप्पर–कूर्परः । ओघ० ३१ । कूर्परम् । प्रज्ञा० ४७३ । स्कन्धावारः । आव० ६६७ ।

कोप्परथणी– । नि० चू० द्वि० ६४ अ ।

कोमल–श्रोत्रमनसां प्रह्लादकारि । व्य० प्र० २० अ । मनोज्ञम् । जीवा० १८८, २६५ । कोमलः–दृष्टिसुभगः । जीवा० ४७४ ।

कोमारा–मट्टिया, उल्लामट्टिया । नि० चू० प्र० २५५ आ ।

कोमुइजोगजुत्तो–कौमुदीयोगयुक्तः– कार्तिकपौर्णमास्यामुदितः । दश० २४६ ।

कोमुइया–कृष्णस्य प्रथमा भेरी । बृ० प्र० ५६ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोमुइवारं–कौमुदीवासरम् । आव० ८१६ ।
कोमुई–कौमुदी । ओघ० ९७ । कौमुदी–कार्त्तिकी पौर्णिमा । जं० प्र० ११५ ।
कोमुतिआ–कौमुदीकी–वासुदेवस्य देवतापरिगृहीता गोशीर्षचन्दनमयी तृतीया भेरी । आव० ९७ ।
कोमुदि–कौमुदी–कार्त्तिकी । प्रश्न० ८४ ।
कोमुदिका–वासुदेवस्य गोशीर्षश्रीखण्डमयी देवतापरिगृहीता तृतीया भेरी । विशे० ६१९ ।
कोमुदितं–उत्सववाद्यम् । ज्ञाता० १०० ।
कोमुदियवारो–कौमुदीमहः । आव० ५६२ ।
कोमुदी–कौमुदी । आव० ३५५ ।
कोमुदीनिसा–कौमुदीनिशा, कार्त्तिकपौर्णमासी । ज्ञाता० ३५ ।
कोयव–रूतपूरितः पटः, या लोके 'माणिकी' इति प्रसिद्धा । बृ० द्वि० २२० अ । कुतुपः । ठाणा० २३४ ।
कोयवगो–वरक्को । नि० चू० द्वि० ६१ अ । रूतपूरितपटः । ज्ञाता० २३२ ।
कोयवाणि–वस्त्रविशेषः । आचा० ३९३ ।
कोयवि–कौतपी–दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चके द्वितीयो भेदः । आव० ६५२ ।
कोरंग–कोरङ्कः–पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
कोरंट–कोरण्टकः–पुष्पजातिविशेषः । जं० प्र० ३४ ।
कोरंटक–अग्रबीजः । दश० १९३ । गुल्मविशेषः । आचा० ३० । स्थलजम् । प्रज्ञा० ३७ । कोरण्टकः, पुष्पजातिविशेषः । जीवा० १९१ ।
कोरंटगं–कोरंटकं–भरुकच्छे उद्यानम् । व्य० प्र० १७३ आ ।
कोरंटय–गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
कोरंटयगुम्मा–कोरण्टकगुल्माः । जं० प्र० ९८ ।
कोरंटयधाऊ–पीतवर्णः । (दे०) ।
कोरव–कोरकं–मुकुलम् । ठाणा० १८५ । जं०प्र० ५२८ ।
कोरव्व–कौरव्यः–कौरव्यगोत्रः । जीवा० १२१ । कुलविशेषः । आव० १७९ । कुरवः–कुरूवंशप्रसूताः । औप० २७ । कुरवः–आर्यभेदः । ठाणा० ३५८ । कुरवः । भग० ४८९ । कुलार्यभेदविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

कोरव्वीया– । ठाणा० ३९३ ।
कोरिंट–कोरिण्टं–कुसुमविशेषः । भग० ३१८ । कोरण्टकः–पुष्पजातिः । ज्ञाता० २३ ।
कोरिंटक–अग्रबीजाः । ठाणा० १८६ ।
कोरिंटमल्लदामं–कोरण्टकमाल्यदामं । प्रज्ञा० ३६१ ।
कोलंबए–कोलम्बः–शाखिशाखानामवनतमग्रं भाजनं वा । अनुत्त० ५ ।
कोलंबो–कोलम्बः–प्रान्तः । विपा० ५५ ।
कोल–कोलः–घुणः । आव० ६५६ । दश० १५५ । शूकरः । ज्ञाता० ७० । बृ० प्र० १४८ अ । बदरं । दश० चू० ८० । पिण्ड० १६१ । दश० १७६, १८५ । दरचूर्णम् । बृ० प्र० २६८ अ । उन्दराकृतिर्जन्तुविशेषः । प्रश्न० ७ । क्रोडः–शूकरः । प्रश्न० ७ । कुवलं–बदरम् । भग० २८५ ।
कोलघरियाओ–कुलगृहात्–पितृगृहादागताः कौलगृहिकाः । उपा० ४८ ।
कोलगिणी–कोलिकी । आव० ४२१ ।
कोलचुण्णं–बदरचुण्णं । दश० चू० ८० । बदरसक्तून् । दश० १७६ ।
कोलजुत्ती–कुलौचित्यः । व्य० प्र० २२४ अ ।
कोलट्ठिय–कुवलास्थिकम्–बदरकुलकः । भग० २८५ ।
कोलपाणगं–पाणकविशेषः । आचा० ३४७ ।
कोलपाले–धरणेन्द्रस्य द्वितीयलोकपालः । ठाणा० १९७ ।
कोलवं–कौलवं–तृतीयं करणम् । जं० प्र० ४९३ ।
कोलवालं–दवरकम् । आव० ४२७ ।
कोलवासंसि–कोला–घुणाः तेषामावासः । सम० ३९ ।
कोलसुणए–कोलशुनकः–मृगयाकुशलः श्वा । प्रज्ञा० २५४ । सूकरस्वरूपधारी । उत्त० ४६० ।
कोलसुणक–कोलश्वानः–महासूकरः । प्रश्न० ७ ।
कोलसुणग–सनखपदचतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ । कोलशुनकाः–महाशूकराः । जं० प्र० १२४ । पाटयित्वा भक्षणम् । नि० चू० द्वि० १२९ अ ।
कोलसुणयं–महासुकरं । आचा० ३३८ ।
कोला–घुणा । नि० चू० द्वि० ८३ अ । नि० चू० प्र० २५५ आ । घुणाः–तदावासभूते जीवप्रतिष्ठितः । आचा०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३७ ।

कोलाओ-कोलः । तं० ।

कोलाल-मृद्भाजनविशेषः । आव० ४८४ । कुलालाः-कुम्भकाराः । उपा० ४२ ।

कोलालिए-कौलालानि-मृद्भाण्डानि पण्यमस्येति कौलालिकः । अनु० १४९ ।

कोलालिया-कर्मार्यभेदविशेषः । प्रज्ञा० ५६ । कोलालिकाः-कुलालक्रयविक्रयिणः । बृ० द्वि० १७५ अ ।

कोलावास-कोला-घुणकीटकास्तेषामावासः । आचा० २९३ । घुणावासः । आचा० ४१० । कोला-घुणास्तदावासभूतः कोलावासः । आचा० ३३७ ।

कोलाहल-विलपिताऽऽक्रन्दितादिकलकलः । उत्त० ३०७ । बहुजनमहाध्वनिः । ज्ञाता० २२० । जीवा० १७३ । बोलः । प्रज्ञा० ९७ । आर्त्तशकुनिसमूहध्वनिः । भग० ३०६ । आर्त्तशकुनसमूहध्वनिः । जं० प्र० १६७ ।

कोलाहलभूत-कोलाहलः- विलपिताऽऽक्रन्दितादिकलकलः कोलाहल एव कोलाहलकः स भूत इति जातो यस्मिंस्तत् कोलाहलकभूतम् । उत्त० ३०७ ।

कोलाहलभूए-कोलाहलः-आर्त्तशकुनिसमूहध्वनिस्तं भूतः प्राप्तः कोलाहलभूतः । भग० ३०६ ।

कोलाहा-दर्वीकरअहिभेदविशेषः । जीवा० ३९ । प्रज्ञा० ४६ ।

कोलिअतंतुयं-कोलिकतन्तुकम् । ओघ० ११७ ।

कोलिओ-कृतिकर्मदृष्टान्ते द्वारिकायां वासुदेवभक्तो वीरकाभिधः कोलिकः । आव० ५१३ ।

कोलिकपुटक-वाद्यविशेषः । भग० २१६ ।

कोलिग-कोलिकः-जीवविशेषः । बृ० द्वि० १६४ अ ।

कोलिगजालग-कोलिकजालकानि-जालकाकाराः कोलिकानां लालातन्तुसन्तानाः । बृ० प्र० २७८ अ ।

कोलिय-कौलिकः-तन्तुवायः । नन्दी० १६५ ।

कोलियकः-लूता । ओघ० १२६ ।

कोलियकण्णा-कोलिककन्या विषभोजननिवृत्तौ दृष्टान्तः । आव० ५५६ ।

कोलियगो-कोलिकः । उत्त० १०० ।

कोलियापुडिगो-मक्कडसंताणओ । नि० चू० प्र० २५५ आ ।

कोलुणं-कारुण्यम् । नि० चू० द्वि० ५८ आ ।

कोलेज्जाओ-अधोवृत्तखाताकाराद् असंयतः । आचा० ३४४ ।

कोल्लइर-संगमस्थविरविहारभूमिः । नि० चू० द्वि० ९५ आ । कोल्लकिरं-क्रीडनधात्रीदोषविवरणे नगरम् । पिण्ड० १२५ ।

कोल्लगाणुगो-जो रयहरणणिसेज्जाए उवग्गाहियपादपुंछणे वा ठितो वा एति चिट्ठति वा । नि० चू० तृ० १३७ अ ।

कोल्लयग्गामे-वर्द्धमानजिनस्य प्रथमं पारणकस्थानम् । आव० १४६ ।

कोल्लयर-कुल्लयरं-नगरविशेषः । उत्त० १०८ ।

कोल्लर-हस्तिन उपरि कोल्लररूपा 'गेल्लि' या मानुषं गीलतीव । भग० १८७, ३९९ ।

कोल्लाए-सन्निवेशः । उपा० २, १४ । सन्निवेशः । महावीरस्वामिविहारभूमिः । भग० ६६२ ।

कोल्लाकसन्निवेशं-वर्द्धमानजिनस्य विहारभूमिः । आव० २०० ।

कोल्लाग-कोल्लाकः-सन्निवेशः । महावीरस्वामिविहारभूमिः । आव० १८८ ।

कोल्लागसन्निवेस-कोल्लागसन्निवेशः-व्यक्तसुधर्मगणधरयोर्जन्मभूमिः । आव० २५५ ।

कोल्लुकपरंपर-महाराष्ट्रप्रसिद्धकोल्लुकचक्रपरंपरन्यायः । बृ० प्र० ९० आ ।

कोल्लुगा-सिगाला । नि० चू० प्र० १७५ अ ।

कोल्हुकं-इक्षुयन्त्रम् । बृ० द्वि० १९९ आ ।

कोल्हुगाणुगे-क्रोष्टुकानुगः । आचार्याणां तृतीया उपमा । भिक्षोः तृतीया उपमा । व्य० प्र० १२१ आ ।

कोव-कोपः-क्रोधोदयात्स्वभावाच्चलनमात्रम् । भग० ५७२।

कोवघर-कोपगृहम् । विपा० ८३ ।

कोवडिओ-केतराती । दीणारो । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

कोवपिंड-कोपपिण्डः-कोहप्रसादात् पिंडं लभते स कोपपिण्डः । नि० चू० द्वि० १०० अ ।

कोविए-कोविदः-पण्डितः । उत्त० ४८२ । लब्धशास्त्रपरमार्थः । उत्त० ४१९ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोविओ–कोविदः–संसारविमुखप्रज्ञतया पण्डितः । पिण्ड० ७२ ।
कोवियप्पा–कोविदात्मा–कोविदः-लब्धशास्त्रपरमार्थ आत्माऽस्येति । उत्त० ४२० ।
कोविया–खोडिया–नाशिता । नि० चू० द्वि० १०८ आ ।
कोवेइ–कोपयति । विशे० ६५६ ।
कोशः–घटस्यादौ आकारः । विशे० ६३८ ।
कोशकं– । आचा० ३५७ ।
कोशकारकीटः– । दश० २७३ ।
कोशलजनपदः–कोशलजनपदोऽप्यभिधीयते यत्र अयोध्या नगरीति । ज्ञाता० १२५ । पिण्ड० ९८ ।
कोशला–देशविशेषः । पिण्ड० ९८ ।
कोशातकी–तिक्तरसपरिणता । प्रज्ञा० १० । वल्लीविशेषः । आचा० ३० ।
कोशिकारः–कीटविशेषः । आचा० ७१ ।
कोष्ठक–श्रावस्तीनगर्यां तैन्दुकोद्याने चैत्यः । विशे० ६३५ ।
कोष्ठ–लक्षणहीनम् । अनु० १०२ । वाससमुदायः । भग० ७१३ । धान्यपल्यः । उत्त० ३५१ ।
कोष्ठबुद्धिता–ऋद्धिविशेषः । ठाणा० ३३२ ।
कोसं–कोषं–भाण्डागारं चर्मलताद्यनेकवस्तुरूपम् । उत्त० ३१६ ।
कोस–सरावं । दश० चू० ९९ । जहिं रयणादियं दव्वं सो । कोशः । नि० चू० प्र० ३४ आ । कोशः–आश्रयः । प्रश्न० ६४ । समुदायो । नि० चू० द्वि० ६२ आ । क्रोशः–गव्यूतम् । उत्त० ६८६ । कोशः–वारकादिभाजनम् । सूत्र० ११८ ।
कोसंब–एकास्थिकवृक्षविशेषः । भग० ७०५, ८०३ । प्रज्ञा० ३१ ।
कोसंबगंडियं–
कोसंबवण–कौशाम्बवनं–कृष्णस्य कालकरणस्थानम् । अन्त० १६ ।
कोसंबाहारं–आर्यसुहस्तिविहारभूमिः । द्रमकदीक्षास्थानम् । नि० चू० प्र० २४३ अ ।
कोसंबि–कौशाम्बी–यमुनातीरे नगरीविशेषः । विशे० ४९५ । वर्धमानस्वामिविहारभूमिः । भग० ५५६ । आव० २२१ । शतानीकराजधानी । भग० ५५६ । विपा० ६८ । आव० २२२ ।
कोसंबिय–कोशाम्बी. अज्ञातोदाहरणेऽजितसेनराजधानी । आव० ६९९ ।
कोसंबी–कौशाम्बी–नगरीविशेषः । उत्त० २१४, १९३, ३७९ । यज्ञदत्तद्विजस्थानम् । उत्त० १११ । वत्सदेशराजधानी । बृ० द्वि० १६७ आ । द्रमकप्रव्रज्यास्थानम् । बृ० द्वि० १५३ आ । वर्द्धमानस्वामिपारणकस्थानम् । आव० २२५ । दुर्गन्धायाः उत्पत्तिस्थानम् । उत्त० १२३ । नगरीविशेषः । ज्ञाता० २५३ । वत्थजणवए णगरी । नि० चू० तृ० १६ अ । भग० ५५६ । नगरीविशेषः । उत्त० ४४ । दश० ४९ । तापसश्रेष्ठिस्थानम् । उत्त० ९९ । वत्सजनपदे आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । जितशत्रुराजधानी । उत्त० २८६, २८७ । धनपालराजधानी । विपा० ९५ । पद्मप्रभजन्मभूमिः । आव० १६० । शिक्षायोगदृष्टान्ते हारोत्पत्तिविषये नगरी । आव० ६७९ । भावप्रतिक्रमणदृष्टान्ते नगरी । आव० ४८५ । अज्ञातोदाहरणेऽजितसेनराजधानी । आव० ७०० । संपइस्स उप्पत्तिट्ठाणं । नि० चू० तृ० ४४ आ ।
कोसंबीओ–कौशाम्बीकः । आव० ६३ ।
कोसकोट्ठागारकहा–कोशो-भाण्डागारं, कोष्ठागारं–धान्यागारं, तत्कथा कोशकोष्ठागारकथा । ठाणा० २१० ।
कोसकोट्ठारे–कोशकोष्ठागारं, राज्ञः कोशकोष्ठागारसम्बन्धीविचारः । राजकथायाश्चतुर्थभेदः । आव० ५८१ ।
कोसग–कोशकः–चर्मपञ्चके चतुर्थो भेदः । ठाणा० २३४ । कोशः–चर्मपञ्चके चतुर्थो भेदः । आव० ६५२ । नखभंगरक्षकश्चर्मकोशः । बृ० द्वि० १०१ अ । अंगुलीनामगुष्ठस्य वा छादकः स कोशकः । बृ० द्वि० २२२ आ ।
कोसयं–कोशः । आव० ६२५ ।
कोसल–देशविशेषः । उत्त० ३७५ । भग० ६८० । कोशलकः–कोशलदेशोत्पन्नः । व्य० द्वि० २१९ आ ।
कसलग–कोशलकः–कोशलदेशीयः । पिण्ड० १६७ ।
कोसलपुरं–सुमतिनाथजन्मभूमिः । आव० १६० ।
कोसला–कोशला–अयोध्या, तज्जनपदोऽपि कोशला ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भग० ३१७ । अयोध्या । जं० प्र० १३६ । कोशला–जनपदविशेषः । ज्ञाता० १३० । प्रज्ञा० ५५ । कोशला–अचलगणधरजन्मभूमिः । आव० २५५ ।

कोसलाउरे–कोशलपुरे–मायोदाहरणे नगरं, यत्र पूर्वभवे धनपतिधनापहभार्ये नन्दनेभ्यस्य श्रीमतिकान्तिमतिदुहितरौ जाते । आव० ३६४ ।

कोसलिए–कोशलदेशोत्पन्नत्वात् कौशलिकः । ठाणा० ३२७ । कोशलायां–अयोध्यायां भवः कौशलिकः । जं०प्र० १३६ । कोशलदेशे भवः कौशलिकः । सम० ६० ।

कोसलियं–कौशलिकं–देशविशेषः । उत्त० ३५४ ।

कोसा–कोशा, पाटलिपुत्रे गणिका । आव० ४२५ । वेश्या, यस्या गृहे स्थूलभद्रो द्वादशवर्षं यावत् स्थितः । आव० ६६५ ।

कोसातकी–तिक्तरसे दृष्टान्तः । उत्त० ६७६ ।

कोसि–कोशी–प्रतिमा । ज्ञाता० ५७ ।

कोसिओ–कौशिकनामा अश्ववणिक् । आव० २२० । कौशिकनामा ब्राह्मणविशेषः । आव० १७१ । कौशिकः–तापसपुत्रः । आव० १७६ ।

कोसिकारकीड–कोशिकारकीटः–आत्मवेष्टकः कीटविशेषः। प्रश्न० ६१ ।

कोसिता–कौशिकाः–षड्डुलकादयः । ठाणा० ३९० ।

कोसियं–कौशिकं–हस्तगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

कोसियगोत्ते–कौशिकगोत्रम् । सूर्य० १५० ।

कोसियज्जो–कौशिकार्यः–आर्जवोदाहरणे चम्पायामुपाध्यायः । आव० ७०४ ।

कोसी–नदीविशेषः । ठाणा० ४७७ । कोशः–परिवारः । सूत्र० २७६ । कोशी–प्रतिमा । उपा० २४ ।

कोसेज्ज–कौशेयकं–कौशेयककारोद्‌भवं वस्त्रम् । प्रश्न० ७१ । वस्त्रम् । औप० १० । कौशेयं–त्रसरितन्तुनिष्पन्नम् । जं० प्र० १०७ । वेडयकारिणो । नि० चू० ४३ आ । वस्त्रविशेषः । जं० प्र० २०२ ।

कोसेयं–कौसेयं–त्रसरितन्तुनिष्पन्नं वस्त्रम् । जीवा० २६९ ।

कोहंडा–कूष्माण्डाः–पुंस्फलाः । अनु० १९२ ।

कोह–कारणेऽकारणे वाऽतिक्रूराध्यवसायः क्रोधः । आचा० १९१ । तत्रात्मीयोपघातकारिणी क्रोधकर्म्मविपाकोदयात् क्रोधः । आचा० १७० । क्रोधनं–क्रुध्यति वा येन सः क्रोधः–क्रोधमोहनीयसम्पाद्यो जीवस्य परिणतिविशेषः क्रोधमोहनीयकर्म्मैव । ठाणा० १९३ । अप्रीतिलक्षणः । उत्त० २६१ । क्रोधः–अप्रीतिपरिणामः । जीवा० १५ । क्रोधः–नोकर्मद्रव्यक्रोधः–चर्मकारचर्मकोथो नीलकोथादिश्च । विशे० ११७० । क्रोधः । आव० ८४८ । क्रोधः–सप्तम उत्पादनदोषः । पिण्ड० १२१ । षष्ठं पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ । कोथः–कुथितत्वं शटितं वा । भग० १९८ ।

कोहणिस्सिया–क्रोधनिःसृता–क्रोधान्निःसृता, क्रोधाद्विनिर्गतेति । प्रज्ञा० २५६ ।

कोहण–क्रोधनः–सकृत् क्रुद्धोऽत्यन्तक्रुद्धो भवति । नवममसमाधिस्थानम् । सम० ३७ । क्रोधनः–यः सकृत्क्रुद्धोऽत्यन्तक्रुद्धो वा भवेत् । नवममसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।

कोहनिस्सिया–क्रोधनिसृता–मृषाभाषाभेदः । दश० २०९ ।

कोहविवेग–क्रोधविवेकः–कोपत्यागः, तस्य दुरन्ततादिपरिभावनेनोदयनिरोधः । भग० ७२७ ।

कोहसन्ना–क्रोधोदयादावेशगर्भा प्ररूक्षनयनदन्तच्छदस्फुरणादिचेष्टैव संज्ञायतेऽनयेति क्रोधसंज्ञा । भग० ३१४ । क्रोधवेदनीयोदयात्तदावेशगर्भा पुरुषमुखवदनदन्तच्छदस्फुरणचेष्टा क्रोधसंज्ञा । प्रज्ञा० २२२ ।

कोहा–क्रोधा–क्रोधानुगता । आव० ५४८ ।

कोहाड–प्रहरणविशेषः । नि० चू० द्वि० ३१ आ ।

कोहंडियाकुसुमेइ–कुष्माण्डिकाकुसुमं–पुंस्फलीपुष्पं । जं० प्र० ३४ ।

कोहिल्लो– । ओघ० ९८ ।

कोहेतु–को हेतुः–का उपपत्तिः । सूर्य० २२ । किं कारणम् । सूर्य० १३ ।

कौकुच्यं–दुष्टकायप्रचारसंयुक्तं हास्यं असभ्यो वाक्प्रयोगश्च । (त० ७–२७) ।

कौटलं–अर्थशास्त्रम् । ज्योतिषं निमित्तं वा । ओघ० १४९ ।

कौटिल्यं–मायी । दश० २५४ ।

कौटुंबिकः–कर्षकः ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कौतुकं–थुथुकरणं, बन्धकडकादिबन्धनं, एतत् सर्वमपि कौतुकमुच्यते । बृ० प्र० २१५ अ ।
कौतुका– । भग० २३ ।
कौमोदकी–वासुदेवस्य गदा । उत्त० ३५० । गदाविशेषः । प्रश्न० ७७ । गदा, लकुटविशेषः । सम० १५७ ।
कौलिकः–कोकिलजातीयः पुरुषविशेषः । नंदी० १५५ ।
कौलिकी–कोकिलजातीया–भ्रामरम्, उत्पातिकीबुद्धेर्दृष्टान्तः । नंदी० १५५ ।
कौशलिकतया– । ठाणा० ४०१ ।
कौशाम्बकानने–वनविशेषः । ठाणा० ४३३ ।
कौशिकः– । दश० २१३ । दश० २१२ ।
कौशेयकानि–वस्त्रविशेषभूतानि । सम० १५८ ।
कौसुंभ–रागविशेषः । रञ्जनविशेषः । जं० प्र० १८८ ।
क्खलियं–स्खलितम् । विशे० ४०६ ।
क्खायं–ख्यातं, कथितं, प्रसिद्धम् । प्रज्ञा० ६८ ।
क्रतु–सयूपो यज्ञ एव । विशे० ७८५ ।
क्रम–गतिः, प्रवृत्तिः । विशे० २२० ।
क्रमभङ्गः–यथैको जीव एक एवाजीवेत्यादि । आव० ५६६ ।
क्रमभङ्गकाः–भङ्गस्य द्वितीयभेदः । ठाणा० ४७८ ।
क्रयाणकः–द्रव्यसमूहः । नंदी० १५० ।
क्राकचव्यवहारः–क्रकचेन काष्ठस्य तद्विषयं सङ्ख्यानं कल्प एव यत्पाट्यां क्राकचव्यवहारः । ठाणा० ४९७ ।
क्रियानयः–नयविशेषः । दश० ८० ।
क्रियाविशालं–कायिक्यादिक्रियाविशालं संयमक्रियाविशालं च । नंदी० २४१ ।
क्रियासिद्धिः–इहैव मोक्षावाप्तिलक्षणा । आचा० ४१९ ।
क्रीडारथः–क्रीडार्थं रथः । रथस्य प्रथमो भेदः । जीवा० १८९ ।
क्रीत–साध्वकल्यमशनादि । दश० २०३ । प्रश्न० १४४ ।
क्रूरच्छाणि– । नि० चू० प्र० ३२३ अ ।
क्रूराणि–क्रूराणि, निर्दयानि निरनुक्रोशानि । नि० चू० प्र० १९९ ।
क्रोधकारणः–गर्वः । आचा० १६४ ।
क्रोधनत्वं–अत्यन्तक्रोधनत्वम् । नवममसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।
क्रोधादिपिण्डः–क्रोधमानमायालोभैरवाप्तः क्रोधादिपिण्डः । आचा० ३५१ ।
क्रोधादिमानं–क्रोधादीनां मानम् । आचा० १६४ ।
क्रौंचारिः–कार्त्तिकेयः । आचा० २६ ।
क्रौष्टुकी–श्रीकृष्णस्य नैमित्तिकः । उत्त० ४६० ।
क्वणितं–शब्दितम् । आव० ६४६ ।
क्वणिता–काचिद्वीणा । जीवा० २६६ ।
क्वथितं–प्रधानम् । जीवा० २६८ ।
क्वथितोदकं–उष्णोदकम् । दश० २२८ ।
क्वाथं–फाणितम् । प्रज्ञा० ३६४ ।

क्ष

क्षणक्षयिभावप्ररूपकः–सामुच्छेदः । आव० ३११ ।
क्षणमात्रं–पलमात्रम् । नंदी० १५५ ।
क्षणिकं– । ओघ० ७२ ।
क्षणीभूतं–स्तिमितम् । ओघ० १८४ ।
क्षपर्काषः–भिक्षुविशेषः । उत्त० ४१८ ।
क्षपणं–अनारोपणम्, प्रस्थे चतुःसेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव झाटनमित्यर्थः । ठाणा० ३२६ ।
क्षपणोपसम्पत्–चारित्रनिमित्तं क्वचित्क्षपणार्थम् । आव० २७१ ।
क्षयनिष्पन्न–तत्फलरूपो विचित्र आत्मपरिणामः, केवलज्ञानदर्शनचारित्रादिः । ठाणा० ३७८ ।
क्षयोपशमं–अर्द्धविध्यातानलोद्घट्टनसमतां नीतम् । आव० ७९ ।
क्षान्तः–क्षामितसमस्तप्राणिगणः । आचा० २९१ ।
क्षात्रखानकः–सन्धिच्छेदकः । प्रश्न० ४६ ।
क्षारोदका–आमलकोदकाः । पिण्ड० ६५ ।
क्षाल–निर्द्धमनः । ठाणा० २९४ ।
क्षीरं– । जीवा० १९१ ।
क्षीरकाकोली–साधारणवनस्पतिविशेषः । आचा० ५७ ।
क्षीरपूरम्– । जीवा० १९१ ।
क्षीरबिडीलिका–साधारणवनस्पतिकायिकभेदः । जीवा० २७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षीररसा–वापीनाम । जं० प्र० ३७१ ।
क्षीरवरः–द्वीपविशेषः । अनु० ९० ।
क्षीराश्रवत्वं–ऋद्धिविशेषः । ठाणा० ३३२ ।
क्षीराश्रवः–क्षीरवन्मधुरवक्ता । आचा० ९८ ।
क्षीरिका–साधारणवनस्पतिकायिकभेदः । जीवा० २७ ।
क्षीरोदः–क्षीररसास्वादः समुद्रः । अनु० ९० ।
क्षुद्रिका–सर्वतोभद्राप्रतिमायाः प्रथमो भेदः । ठाणा०२९२ ।
क्षुद्रकीकण्टको– । नि० चू० तृ० १०० आ ।
क्षुद्रघण्टा–घण्टिकाः, किङ्किण्यः । जं० प्र० ५२९ ।
क्षुध इति कर्म्मणः । नि० चू० तृ० ८५ अ ।
क्षुभिताः–आकुलाः । ओघ० ७१ ।
क्षुरप्रसंस्थितं–रसनेन्द्रियसंस्थानम् । भग० १३१ ।
क्षुरिका–शस्त्रविशेषः । जीवा० १९२ । नंदी० १६४। आभरणविशेषः । पिण्ड० १२४ ।
क्षुल्लककुमारः–श्रमणविशेषः । सूत्र० ७२ ।
क्षुल्लकभव– । ठाणा० ८६ ।
क्षुल्लहिमवत्–हिमवद्वर्षधरपर्वते द्वितीयकूटम् । ठाणा०७२ ।
क्षुल्लिका–भद्रोत्तरप्रतिमायाः प्रथमो भेदः । ठाणा० २९३ ।
क्षुल्लिकाविमानप्रविभक्तिः– । ठाणा० ५१३ ।
क्षेत्रं–आर्यस्य द्वितीयभेदे प्रथमः । सम० १३५ ।
क्षेत्रगणितं–रज्जुगणितम् । ठाणा० २९३, ४९७ ।
क्षेत्रग्रहणलक्षणैका–सङ्ग्रहपरिज्ञासम्पतः, प्रथमो भेदः । उत्त० ४० ।
क्षेत्रप्रत्युपेक्षणा–कायोत्सर्गनिषदनशयनस्थानस्य स्थण्डिलानां मार्गस्य विहारक्षेत्रस्य च निरूपणा । ठाणा०३९१ ।
क्षेत्रमरणं–यस्मिन् क्षेत्रे मरणं इङ्गिनीमरणादि वर्ण्यते क्रियते वा, यदा वा तस्य शस्याद्युत्पत्तिक्षमत्वमुपहन्यते तदा तत् । उत्त० २२९ ।
क्षेत्रविज्ञानं–किमिदं मायाबहुलमन्यथा वा ? तथा साधुभिरभावितं भावितं वा नगरादीति विमर्शनम् । प्रयोगमतिसम्पतः तृतीयो भेदः । उत्त० ३९ ।
क्षेत्रार्याः–कर्मभूमिजाताः । त० ३-१५ ।
क्षेत्रोपक्रमः–क्षेत्रविनाशः । अनु० ४८ ।
क्षेमं–तत्तदुपद्रवाद्यभावापादनम् । राज० १०९ ।
क्षेमङ्करः–आधायाः परिवर्तितद्वारे वसन्तपुरे निलयश्रेष्ठिपुत्रः । पिण्ड० १०० ।
क्षोमः–आकस्मिकः संत्रासः । ओघ० १९ ।
क्षौमकं–वस्त्रम् । ठाणा० ५१२ ।

ख

खं–आकाशम् । आव० ८५० ।
खंघकरणी–कुडभकरणी साध्व्युपकरणम् । बृ० द्वि० २५३ अ ।
खंज–खंजः–पादविकलः । बृ० द्वि० ११९ अ ।
खंजणं–खञ्जनं–दीपमल्लिकामलः, स्नेहभ्यक्तशकटाक्षघर्षणोद्भवं वा । प्रज्ञा० ३६१ । जं० प्र० ३२ । दीपमलः । बृ० द्वि० ९२ अ० । खञ्जनः । सूर्य० २८७ । ज्ञाता० ६ ।
खंजन–खञ्जनं दीपादीनाम् । ठाणा० २१९ । दीपादिखञ्जनतुल्यः पादादिलेपकारी कर्द्दमविशेष एव । ठाणा० २३५ । स्नेहाभ्यक्तशकटाक्षघर्षणोद्भूतम् । उत्त० ६५२ । लोभस्य लक्षणसूचकः । आचा० १७० ।
खंजरीट–जीवविशेषः । दश० १४१ ।
खंड–शर्करा । बृ० प्र० ७५ आ । अनु० १५४ । भग्नकर्णः । विशे० ६३० । भिन्नः । जीवा० १३० । इक्षुविकारः । उत्त० ६५४ । मधु शर्करा वा । जीवा० २६८ । लवणम् । ओघ० १३७ । पव्वदेससहितं । नि० चू० तृ० २३ अ० । खण्डम् । प्रज्ञा० ३६४ । आचा० ६७ ।
खंडकण्णो–खण्डकर्ण्णः–अवन्तीपतेर्मन्त्री । व्य० प्र० १४९ आ ।
खंडकुटो–खंडकुटो नाम यस्य कर्णौ बोटौ स पानीयमूनं गृह्णाति । बृ० प्र० ५४ अ ।
खंडकुडे–खण्डकुटः । आव० १०१ ।
खंडग–खण्डप्रपातगुहाकूटं, वैताढ्यकूटनाम । जं० प्र० ३४१ । खण्डप्रपाता नाम वैताढ्यगुहा । ठाणा० ४५४ ।
खंडगप्पवायगुहा–खण्डप्रपातगुहा । आव० १५१ ।
खंडगमल्लगं–खंडमल्लकं–खण्डशरावं भिक्षाभाजनम् । ज्ञाता० २००, २०३ ।
खंडघडगं–खण्डघटकः–पानीयभाजनम् । ज्ञाता० २०० २०३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंडना–विराधना । प्रश्न० ७ ।
खंडपट्टे–खण्डपट्टः–धूर्त्तः । विपा० ७२ । खण्डः–अपरिपूर्णः पट्टः परिधानपट्टो यस्य मद्यद्यूतादिव्यसनाभिभूततया परिपूर्णपरिधानाप्राप्तेः ते खण्डपट्टाः–द्यूतकारादयः, अन्यायव्यवहारिणः, धूर्त्ता वा । विपा० ५६ ।
खंडपाडिय–खण्डपाडितः । विपा० ५६ ।
खंडप्पवायगुहाकूड–खण्डप्रपातगुहाधिपदेवनिवासभूतं कूटं खण्डप्रपातगुहाकूटम् । जं० प्र० ७७ ।
खंडप्रपाता–गुहाविशेषः । ठाणा० ७१ ।
खंडभेदः–क्षिप्तमृत्पिण्डस्येव । ठाणा० ४७५ ।
खंडभेय–खण्डभेदः–लोष्टादेरिव यः खण्डशो भवति । भग० २२४ ।
खंडरक्ख–खण्डरक्षः–दण्डपाशिकः । राय० २ । खण्डरक्षः । उत्त० १६५ । दण्डपाशिकः शुल्कपालो वा । औप० २ । श्रमणोपासकविशेषः । आव० ३१७ । शुल्कपालः । प्रश्न० ३० । शुल्कपालः कोट्टपालो वा । प्रश्न० ४६ ।
खंडरक्खा–खण्डरक्षाः–राजगृहे श्रावकविशेषाः । विशे० ६६१ । दण्डपाशिकाः शुल्कपाला वा । ज्ञाता० २ । दण्डपाशिकाः । ज्ञाता० २३६ । हिंडिकाः । बृ० द्वि० १८० आ ।
खंडलकं– । औघ० १८७ ।
खंडशर्करा–मत्स्यण्डी । जं० प्र० १०५ । प्रज्ञा० ३६६ । जीवा० २६८ ।
खंडाखंडिकतो–खण्डखण्डीकृतः । आव० ६३ ।
खंडाखंडेहिं–खण्डशः । आव० ३७० ।
खंडाभेद–खण्डभेदः । लोहखण्डादिवत् । प्रज्ञा० २६७ ।
खंडिअं–खण्डितम् । देशतो भग्नम् । आव० ५७२ । आव० ७७८ ।
खंडिए–खण्डिकः–छात्रः । उत्त० ३६४ ।
खंडिओ–छात्रः । आव० ५६१ ।
खंडित्तए–खण्डयितुं–देशतः भङ्क्तुम् । ज्ञाता० १३६ ।
खंडिय–खण्डितं–दण्ड इव विभागेन छिन्नम् । प्रश्न० १३४ । खण्डिकः–छात्रः । आव० २४६ । उत्त० ३६७ । विशे० ६८६ ।

खंडी–खण्डिः–अपद्वारम् । विपा० ५६ ।
खंडीओ–प्राकारच्छिद्ररूपाः । ज्ञाता० ८१ ।
खंत–पिता । बृ० तृ० ३२ आ । पिण्ड० १२७ । क्षमोपेतः क्षान्तः । सूत्र० २६८ । वृद्धः । उत्त० १२८ । आव० ३६६ । दश० ८६ । पिता । आव० ३०४ ।
खंतपुत्तो–वृद्धपुत्रः । आचा० ६४ ।
खंति–क्रोधनिग्रहः । ज्ञाता० ७ ।
खंतिखमे–क्षान्त्या क्षमते न त्वसमर्थतया योऽसौ क्षान्तिक्षमः–अनगारः । भग० १२२ ।
खंतिखमाते–क्रोधनिग्रहेण क्षमा–मर्षणं न त्वशक्ततयेति क्षान्तिक्षमा । ठाणा० १४६ ।
खंतिया–जननी । ओघ० १६३ । पिण्ड० १२६, १२७ ।
खंतिसुद्धि–क्षान्तिः–क्षमा शुद्धिः–आशयविशुद्धता, क्षान्तेः शुद्धिः–निर्मलता क्षान्तिशुद्धिः । उत्त० ५८ ।
खंती–क्षान्तिः–क्रोधनिग्रहः तज्जन्यत्वादहिंसाऽपि क्षान्तिः । अहिंसायास्त्रयोदशं नाम । प्रश्न० ६६ ।
खंतेण–पितरि गर्हिते । नि० चू० प्र० १७६ अ ।
खंद–स्कन्दः–कार्त्तिकेयः । भग० १६४ । जं० प्र० १२३ । ज्ञाता० ४६, १३६ । जीवा० २८१ । पात्रालके ग्रामकूटपुत्रः । आव० २०१ ।
खंदए–स्कन्दकः श्रावस्तीनगर्यां कात्यायनगोत्रो गर्दभालिशिष्यः स्कन्धकः परिव्राजकः । भग० ११२, १२४ । स्कन्दकः–स्कन्दकसम्बन्ध्युद्देशकः । भग० २१२ । भग० ३२१, ३२४, ४५६, ५१८, ५२३, ५५२, ५५४, ६२४ । श्रावस्तीनगर्यां जितशत्रोः पुत्रः । बृ० द्वि १५२ आ । जितशत्रुराजपुत्रः । उत्त० ११४ । भगवत्यां द्वितीयशत उद्देशकः । ज्ञाता० १२४, १६८ ।
खंदगगच्छो–दृष्टान्तविशेषः । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।
खंदगपडिमा–स्कन्दप्रतिमा । आव० २२१ ।
खंदगाह–स्कन्दग्रहः–उन्मत्तताहेतुः । भग० १६७ ।
खंदगो–आयविराहणाए दिट्ठंतो । नि० चू० तृ० ४४ अ । स्कंदकः । अन्त० १८ । चंपाणाम णगरी, तत्थ खंदगो राया । नि० चू० तृ० ४४ अ ।
खंदमह–स्कन्दस्य-कार्तिकेयस्य प्रतिनियतदिवसभावी उत्सवः स्कन्दमहः । जीवा० २८१ । कार्तिकेयोत्सवः । ज्ञाता०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६ ।

खंदसिरी–स्कन्दश्रीः–विजयस्य चौरसेनापतेर्भार्या । विपा० ५७ । राजगृहेऽर्जुनकमालाकारस्य भार्या । उत्त० ११२ ।

खंदिल–स्कन्दिलः तगरायामाचार्यशिष्यः, सद्व्यवहारकाचार्यः । व्य० प्र० २५६ आ ।

खंध–स्कन्धोऽचित्तमहास्कन्धः । विशे० २२६ । स्तम्भः । नि० चू० तृ० २१ अ । स्कन्धः । विशे० ४२६ । स्कन्धः–रूपवेदनाविज्ञानसञ्ज्ञासंकाराख्यः । प्रश्न० ३१ । स्कन्धः–अंशदेशः । जं० प्र० ११२ । स्कन्धः–स्थुडम् । राय० ६ । स्थुडः । दश० २४७ । औप० ७ । जीवा० १८७ । उत्त० २४ । स्थुडं यतो मूलशाखाः प्रभवन्ति । जं० प्र० २६ । पागारी पेढं वा, घरो मृदिष्टकदारुसंघातो स्कन्ध इत्यर्थः । नि० चू० द्वि० ८४ अ । स्कन्धः–संहतानेकपरमाणुरूपः । उत्त० ६७४ ।

खंधकरणी– । नि० चू० प्र० १८० आ । ओघ० २०६ ।

खंधगसीसा–कुम्भकारकटे यन्त्रपीलिताः । मर० ।

खंधग्गहो–स्कन्धग्रहः । जीवा० २८४ ।

खंधदेसा–स्कन्धदेशाः । स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहतां बुद्धिपरिकल्पिता द्व्यादिप्रदेशात्मका विभागाः । जीवा० ७ ।

खंधप्पएसा–स्कन्धप्रदेशाः–स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिणाममजहतां प्रकृष्टा देशाः–निर्विभागा भागाः परमाणवः । जीवा० ७ । स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिणामपरिणतानां बुद्धिपरिकल्पिताः–प्रकृष्टा देशा निर्विभागा भागाः परमाणव इत्यर्थः स्कन्धप्रदेशाः । प्रज्ञा० १० ।

खंधबीए–स्कन्धबीजः सल्लक्यादिः । सू० ३५० ।

खंधबीया–निहुशल्लक्क्यरणिकादयः स्कन्धबीजाः । आचा० ५७ । स्कन्धबीजं शल्लक्यादि । दश० १३६ ।

खंधभूयं–स्कन्धभूतं–नालकल्पम् । प्रश्न० १३४ ।

खंधवसहो–स्कन्धवृषभः–ककुदधरः । आव० ७१६ ।

खंधा–खन्धः–थुडम् । राय० ६ । स्कन्दन्ति–शुष्यन्ति धीयन्ते च–पुष्यन्ते पुद्गलानां विचटनेन चटनेन चेति स्कन्धाः । प्रज्ञा० ६ । स्कन्धाः–स्थुडाः । प्रज्ञा० ३१ । द्वीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

खंधार–स्कन्धावारः । विशे० ६७८ । स्कन्धावारः सैन्यसंनिवेशः । आव० ४२४ । राजबिम्बयुतं स्वचक्रं परचक्रं वा । बृ० द्वि० २७३ आ ।

खंधारमाणं–कलाविशेषः । ज्ञाता० ३८ ।

खंधावार–स्कन्धावारम् । आव० २१७ । स्कन्धावारः । हस्ती । आव० ६७१ । प्रज्ञा० ३०० । नि० चू० प्र० ३५८ अ । आव० २६६, ५५६ ।

खंभ–स्तम्भः । औत्पातिकीबुद्धौ द्वादशमुदाहरणम् । नंदी० १५३ । भग० २३८ । स्तम्भः–कायोत्सर्गस्य विंशतौ दोषे तृतीयो दोषः । आव० ७९८ । सामान्यतः । जीवा० १८२ । सुवर्णरूप्यमयं फलकम् । जीवा० १८० । औत्पात्तिकी बुद्धौ यस्य दृष्टान्तः । आव० ४१६ ।

खंभछाया–स्तम्भछाया, छायाभेदः । सूर्य० ९५ ।

खंभपुडंतरं–स्तम्भपुटान्तरं–द्वौ स्तम्भौ स्तम्भपुटं तेषामन्तरम् । जीवा० १८२ । जं० प्र० २५ ।

खंभबाहा–स्तम्भपार्श्वम् । जीवा० १८२ ।

खंभसीसं–स्तम्भशीर्षम् । जीवा० १८२ ।

खंभागरिसो–स्तम्भाकर्षः । आव० ४१२ ।

खंभालणं–स्तम्भालगनम् ।

खंभुग्गया–स्तम्भोद्गता–स्तम्भोपरिवर्तिनी । जं०प्र० ४३ ।

खंभोग्गया–स्तम्भोद्गता–स्तम्भोपरिवर्तिनी । जीवा० १६६ ।

खंवियाओ– । नि० चू० प्र० १८५ आ ।

खइअ–खचितानि–विच्छुरितानि । जं०प्र० २७५, ७६ ।

खइए–क्षयाज्जातः क्षायिकः–अप्रतिपातिज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणः । सूत्र० २३० । क्षायिकः–क्षयः कर्मणोऽपगमः स एव तेन वा निर्वृत्तः । अनु० ११४ ।

खइय–क्षापितं–प्रशस्तयोगैर्निर्वाणहुतभुक् तुल्यतां नीतम् । आव० ७६ । ख्यातम्–प्रसिद्धम् । आव० ७०० । खादितं–भक्षणम् । ठाणा० २७६ ।

खइया–असकृदासेविताः । बृ० द्वि० १३ अ ।

खइव–संवेगशून्यधर्मकथनलक्षणः । ठाणा० २७६ ।

खउर–खोरखदिरमादियाण खउरो । नि० चू० तृ० २३ अ । खपुरं–चिक्कणद्रव्यम् । बृ० द्वि० २२० आ । कठिनमतिशयेन घनम् । बृ० प्र० ५५ अ । शुष्कः । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खउरंगे–व्याघ्राङ्गः । मर० ।

खउरपुत्तो–क्षौरपुत्रः । आव० २११ ।

खउरिता–खरण्टिता रोसेणेत्यर्थः । रुष्टाः । नि० चू० प्र० २०७ अ ।

खउरियाओ–कलुषितचेतसः कषायेणानालपनम् । बृ० द्वि० २०९ आ ।

खओ–क्षयः–यथोक्तस्वरूपाकारपरिभ्रंशः । जीवा० १८३ ।

खओवसम–क्षयोपशमः–उदितानां क्षयोऽनुदितानां विष्कम्भितोदयत्वम् । ज्ञाता० ६४ ।

खओवसमिए–क्षायोपशामिकः–क्रियामात्रं क्षयोपशमेन वा निवृत्तः । भग० ६४६ । क्षयादुपशमाच्च जातः क्षायोपशामिकः देशोदयोपशमलक्षणः । सूत्र० २३० ।

खओवसमिया–तथाऽवधिज्ञानावरणीयस्य कर्मण उदयावलिकाप्रविष्टस्यांशस्य वेदनेन योऽपगमः स क्षयोऽनुदयावस्थस्य विपाकोदयविष्कम्भणमुपशमः क्षयश्च उपशमश्च क्षयोपशमौ ताभ्यां निर्वृत्तं क्षायोपशमिकः । प्रज्ञा० ५३६ ।

खक्खरओ–खर्खरकः । आव० ४२४ ।

खक्खरो–खर्खरः–अश्वोत्त्रासनाय चर्ममयो वस्तुविशेषः, स्फुटितवंशो वा । विपा० ४७ ।

खग्ग–खड्गः शस्त्रविशेषः । उत्त० ७११ । आटव्यो जीवस्तस्य विषाणं–शृङ्गम् । ठाणा० ४६४ । आयुधम् । भग० ३१८ । खड्गः–एकशृङ्ग आटव्यस्तिर्यग्विशेषः । बृ० द्वि० १०६ अ । गण्डीपदचतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ । खड्गः–अटव्यश्चतुष्पदविशेषः । औप० ५३ । प्रज्ञा० १०० । कायोत्सर्गफले दृष्टान्तः । आव० ८०१ । आटव्यश्चतुष्पदविशेषः । प्रश्न० १५८ । यस्य पार्श्वयोः पक्षवच्चर्माणि लम्बन्ते शृङ्गं चैकं शिरसि भवति । प्रश्न० ७ । एगसिंगी अरण्णे भवति । नि० चू० प्र० ४७ आ । आटव्यचतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८६ । वनजीवः । मर० ।

खग्गथंभणं–खड्गस्तम्भनं–कायोत्सर्गफले दृष्टान्तः । आव० ७९९ ।

खग्गपुरा–सुवल्गुविजये राजधानी । जं० प्र० ३५७ ।

खग्गपुराओ–विदेहेषु राजधानीविशेषः । ठाणा० ८० ।

खग्गा–गण्डीपदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

खग्गि–यस्य गच्छतो द्वयोरपि पार्श्वयोश्चर्माणि लम्बन्ते स जीवविशेषः । कोऽपि श्रावकः प्रथमयौवनमदमोहितमना धर्ममकृत्वा पञ्चत्वमुपागतः खड्गः समुत्पन्नः । नंदी० १६७ । खड्गिः–आरण्यपशुविशेषः । ज्ञाता० १०४ ।

खग्गी–खड्गी–श्वापदविशेषः । आव० ४३७ । आटव्यो जीवः । औप० ३५ । विजये राजधानी । जं० प्र० ३४७ ।

खग्गीतो–महाविदेहे विजयराजधानी । ठाणा० ८० ।

खग्गूड–कुटिलः । पिण्ड० १०० ।

खग्गूडप्राया:–अवसन्नाः । ओघ० १५६ ।

खग्गूडा–इहालसाः स्निग्धमधुराद्याहारलम्पटाः खग्गूडा उच्यन्ते । बृ० प्र० २४० अ । अलसाः, निर्द्धर्मप्रायाः । ओघ० ७१, १५३ ।

खग्गूडो–निर्धर्मप्रायः । ओघ० ४४ ।

खग्गूडे–खग्गूडप्रायः । ओघ० ७३ ।

खग्गूडो–शठप्रायः । ओघ० ४४ । निद्रालुः । बृ० प्र० २४२ अ ।

खचित–परिगतः । औप० ११ ।

खचिय–खचितं–मण्डितम् । ज्ञाता० २७ । भग० ४७७ ।

खज्ज–खाद्यं–कूरमोदकादि । ज्ञाता० २३ । खाद्यानि–अशोकवर्त्तयः । उपा० ५ । प्रश्न० १५३ । खाद्यम् । आव० २०० ।

खज्जइ–खाद्यते–भक्ष्यते । आव० ५६६ । खाद्यते खण्डखाद्यादि । उत्त० ३६० ।

खज्जगं–खाद्यकम् । निरय० ३४ ।

खज्जगविही–खण्डखाद्यादिलक्षणभोजनप्रकारः । भग० ६६२ । आव० ३१४ ।

खज्जगादि–खाद्यकादि । आव० ८२२ ।

खज्जगावणो–खाद्यकापणः कुल्लुरिकापणः । आव० २७५ ।

खज्जयं–खाद्यम् । उत्त० १५९ ।

खज्जुरी–वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

खज्जूरे–खर्जूरं–पिण्डखर्जूरादि । उत्त० ६५४ ।

खज्जूरपाणगं–पानकभेदः । आचा० ३४७ ।

खज्जूरसारए–मूलदलखर्जूरसारनिष्पन्न आसवः खर्जूर-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारः । प्रज्ञा० ३६४ ।

खज्जूरसारो–खर्जूरसारः । जीवा० २६५ ।

खज्जूरि–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

खज्जूरिवणं–खर्जूरिवनं–वृक्षविशेषवनः । जीवा० १४५ ।

खज्जूरिसार–खर्ज्जूरसारनिष्पन्न आसवविशेषः । ज० प्र० १०० ।

खज्जोयग–खद्योतकः–प्राणिविशेषः । आचा० ५० ।

खञ्जरीटः–जीवविशेषः । दश० १४१ ।

खटिका–वर्त्तिः । बृ० प्र० २५ आ ।

खट्ट–खट्वा । आव० ३५४ ।

खट्टमेहा–अम्लजलमेघाः । जं०प्र० १६८ । भग० ३०६ ।

खट्टा–खट्वा–तूल्यादि । प्रश्न० ६२ ।

खट्टामल्लो–अतिशयेन वृद्धः । खट्टामल्लो नाम प्रबलजराजर्जरितदेहतया यः खट्वाया उत्थातुं न शक्नोति । बृ० द्वि० ५६ आ ।

खट्टिका–कम्मजुंगितविसेसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

खट्टोदए–खट्टोदकं–ईषदम्लपरिणाममम् । जीवा० २५ । प्रज्ञा० २८ ।

खड–तृणम् । व्य० प्र० १०७ अ ।

खडखडावेह–वादयत । आव० २०४ ।

खडखडेइ–खटत्कारयति । उत्त० १३८ ।

खडपूलग–तृणपूलकः । नि० चू० तृ० १२८ अ ।

खडपूलय–तृणपूलिका । मर० ।

खडहडो– । नि० चू० प्र० १६६ आ ।

खडुग–खड्डुकः–टोलकः । बृ० तृ० ६२ अ ।

खड्डं–गर्त्तम् । आव० ६२४ ।

खड्डु–बृहत्प्रमाणः । विशे० १०३० । गर्त्तः । आव० १६६, ३८४ ।

खड्डा–गर्त्ता । आव० ३६८, ६८५ ।

खड्डुग–अङ्गुलीयकविशेषः । औप० ५५ ।

खड्डुय–खड्डुकः टक्करः । उत्त० ६२ ।

खणं–क्षणं–स्तोककालम् । दश० १८० । क्षणः–समयः । आव० ६१० । पारणम् । आव० ३२५ । क्षणं–अवसरः । सूत्र० ७६ । परमनिरुद्धः कालः क्षणः । सूत्र० २५ । बहुतरोच्छ्वासरूपः । ज्ञाता० १०४ । क्षणः–प्रस्तावः । उत्त० ६३१ । परमनिरुद्धः कालः क्षणः । अष्टप्रकारेण कर्म्मणा संसारबन्धनैर्वा विषयाभिष्वङ्गस्नेहादिभिः । आचा० ११२ । क्षणनं क्षणो–हिंसा । आचा० २११ । मुहूर्त्तः । ठाणा० ३४५ । क्षणं–अवसरम् । आचा० १०६ ।

खणजोइणो–परमनिरुद्धः कालः क्षणः, क्षणेन योगः–सम्बन्धः क्षणयोगः स विद्यते येषां ते क्षणयोगिनः । सूत्र० २५ ।

खणणं–खननम् । आव० ६१६ ।

खणभंगविघायत्थं–क्षणभङ्गविघातार्थं–निरन्वयक्षणिकवस्तुवादविघातार्थम् । दश० १३० ।

खणयन्नो–क्षण एव क्षणकः–अवसरो भिक्षार्थमुपसर्प्पणादिकस्तं जानातीति । आचा० १३२ ।

खणलव–कालोपलक्षणः क्षणलवादिषु संवेगभावनाध्यानासेवनतश्च निर्वर्त्तितवान् । ज्ञाता० १२२ ।

खणसंखडी–क्षणसङ्खडी । दश० ८६ ।

खणाति–क्षणाः सङ्ख्यातानप्राणलक्षणः । ठाणा० ८७ ।

खणिए–क्षणिकः निर्व्याघातः । ओघ० २०० ।

खणित्तु–खनित्वा–समाकृष्य । आचा० ४१७ ।

खणोकरेंति–प्रक्षालयन्ती । आव० २१५ ।

खण्णा–(देशी०) सर्वात्मना लूषिता । व्य० प्र० १४० आ ।

खतं–स्वदेहोद्भवमेव क्षतम् । अनु० २१२ ।

खतए–राहुप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेषः । राहोः चतुर्थनाथ । सूर्य० २८७ ।

खतोवसम–क्षयोपसमः क्रियारूप एव । ठाणा० ३७८ ।

खत्तं–क्षत्रम् । उत्त० २०७ । क्षत्रं–करीषविशेषः । पिण्ड० ८–१८ । ओघ० १३० ।

खत्तए–खातः–गर्त्तः इत्यर्थः । खातकः क्षेत्रस्येति गम्यते चौर इत्यर्थः । ज्ञाता० ७६ ।

खत्तखणग–क्षात्रखानका–ये सन्धानवर्जितभित्तीः काणयन्ति । ज्ञाता० २३६ ।

खत्तखयणण– । ज्ञाता० २३६ ।

खत्तमेहा–खात्रमेघाः–करीषसमानरसजलोपेतमेघाः । जं० प्र० १६८ । भग० ३०६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खत्ता–क्षत्ता–क्षत्रीयस्त्रीक्षुद्राभ्यां जातः । आचा० ८ । क्षत्राः–क्षत्रियजातयो वर्णसङ्करोत्पन्ना वा । तत्कर्मनियुक्ताः । उत्त० ३६३ ।

खत्तिआ–क्षत्रियाः–श्रेष्ठ्यादयः । दश० १६१ । क्षत्रिया । आव० १२८ । क्षणनानि क्षतानि तेभ्यस्त्रायत इति क्षत्रियः–राजा । उत्त० १८२ । राजा । भग० १०१ । राजकुलीनः । भग० ११५ । इक्ष्वाकुवंशादिकः । सूत्र० २३६ । कुलविशेषः । आव० १७६ । राष्ट्रकूटादयः । आचा० ३२७ । सामान्यराजकुलीनः । औप० ५८ ।

खत्तियकुंडग्गामं–क्षत्रियकुण्डग्रामं–सिद्धार्थराजधानी । आव० १७६ । नगरविशेषः । भग० ४६१ ।

खत्तिया–सामान्यतो राजोपजीविनः । बृ० द्वि० १५२ अ । क्षत्रियाः–हैहेयाद्यन्वयजाः । उत्त० ४१८ । चक्रवर्त्तिवासुदेवबलदेवप्रभृतयः । आचा० ३३३ । क्षत्रियाः–सामान्य राजकुलीनाः । राय० १२१ । क्षत्रियाः–शेषप्रकृतितया विकल्पिताः । जं० प्र० १४५ । क्षत्रियाः–आरक्षिकाः । नि० चू० प्र० २७७ अ ।

खत्थो–विलक्षः । दश० ५५ ।

खदिरचञ्चुः–वञ्जुलः । प्रश्न० १० ।

खदिरसारए–खदिरसारः । प्रज्ञा० ३६० ।

खद्धं–त्वरितम् । आचा० ३३७ । बृहच्छब्देन खरकर्कशनिष्ठुरम् । आव० ७२६ । बहुः । उत्त० १४६ । महाप्रमाणम् । बृ० द्वि० ६४ आ । प्रचुरम् । आव० ३६३, ५६ । बृ०प्र० २३५ अ । बृ० तृ० २४८ आ । ओघ० ६८, १२७ । पिण्ड० ७०, १३६ । आव० ७२६ । प्रश्न० १२८ । आचा० ३३६ । प्रचुरम् । व्य० प्र० १८० अ । प्रभूतम् । ओघ० ४८ । प्रश्न० १४१ । आचा० ३५३ । शीघ्रम् । आचा० ३५२ । बृहता बृहता कवलेन भक्षणम् । आव० ७२६ । बृहत्प्रमाणं । ओघ० २१६, १२१ । ठाणा० १३८ ।

खद्धपल्ललितो–प्रचुरपलालितः–सुखीधनाढ्यः । उत्त० २२५ ।

खद्धवसभो–समर्थवृषभः । उत्त० ३०३ ।

खद्धादाणिअगामो–खद्धादानिकग्रामः–समृद्धग्रामः । ओघ० ४८ ।

खद्धादाणिओ–बहुदानीयः–श्रीमान् । आव० ६७६ ।

खद्धादाणिय–प्रचुरादानीयः–ऋद्धिमान् धनाढ्यः । आव० ४३३ ।

खद्धादाणियगिहा–ईश्वरगृहा इत्यर्थः । नि० चू० प्र० ३५० अ ।

खनित्रम्–खननसाधनम् । शस्त्रविशेषः । आचा० ३६ ।

खन्ना–मत्स्यकच्छपविशेषाः । जीवा० ३२१ ।

खपुसवग्गुरि–अद्धजंघातियाओ । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

खपुसा–हिमाहिकण्टकादिरक्षार्थं पादपरिधानम् । बृ० द्वि० १०१ अ । घुटकच्छादकं चर्म । या घुण्टकं पिदधाति सा खपुसा । बृ० द्वि० २२२ आ ।

खमंत–क्षपयन्, क्षपणम् । पिण्ड० १६६ ।

खम–क्षेम–सङ्गतत्वम् । । क्षम–युक्तार्थः । बृ० प्र० १०७ अ । क्षमा । भग० ४६६ ।

खमइ–क्रोधाभावात् क्षमते । भग० ४६८ ।

खमए–क्षपकः । आव० २६३ । क्षपकः–विकृष्टतपस्वी । बृ० प्र० २५६ आ ।

खमओ–क्षपकः–श्रमणः । दश० ३७ । एकान्तरितादिक्षपणकर्त्ता । बृ० द्वि० ६४ आ ।

खमग–क्षपकं–मासक्षपकादिकम् । ओघ० ६४ । अनशनी भक्त० । उपोषिताः । बृ० प्र० २४४ आ । नि० चू० द्वि० ५५ अ । क्षपकः । आव० १६५ ।

खमणं–उपवासः । बृ० द्वि० ६४ आ । क्षपण–अभक्तार्थः । व्य० प्र० १६१ आ ।

खमणाइयं–क्षपणादि–अनशनतादि । आव० ८४० ।

खमया–क्षमा–क्रोधनिग्रहः । चतुर्दशोऽनगारगुणः । आव० ६६० ।

खमसि–क्षमसे क्षोभाभावेन । ज्ञाता० ७१ ।

खमा–क्षमा–अनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसञ्ज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभावः, अथवा क्रोधमानयोरुदयनिरोधः । सम० ४६ । सङ्गतत्वम् । औप० ५६ । रोसावगमो । नि० चू० प्र० २१६ अ । क्षमत्वम् । भग० ४५६ ।

खमामि–आत्मनि परे वाऽविकोपतया क्षमे । ठाणा० २४७ ।

खमावणय–परस्यासन्तोषवतः क्षमोत्पादनम् । भग०७२७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खमाह्-क्षमस्व, सहस्व । उत्त० ३६७ ।
खमिय-क्षपिकः । बृ० द्वि० २०५ अ ।
खय-क्षयः राजयक्ष्मा । बृ० प्र० १७० अ । सर्वविनाशः । भग० ५३६ ।
खयक्का-कीलकः । उत्त० ८५ ।
खयविक्कयाण- । नि० चू० तृ० ३७ आ ।
खरं-कठिनम् । जीवा० ८६ । उच्चेण महंतेण सरेण जं सरीसं उक्तं तं खरं । नि० चू० प्र० २६६ अ । खरस्थानम् । अनु० १३३ । सरोसवयणमिव अकंतं-खरं । नि० चू० प्र० २७८ अ ।
खरंटं-खरण्टयति-लेपवन्तं करोति यत् तत् खरण्टं अशुच्यादि । ठाणा० २४४ ।
खरंटणा-खिसना । ओघ० ४५ । णिप्पिवासा । नि० चू० द्वि० १३१ अ । प्रवचनोपदेशपूर्वकं परुषभणनम् । ओघ० ४२ । खरंटनं-निर्भत्सनम् । व्य० प्र० १२० आ ।
खरंटना-निर्भर्त्सना । बृ० प्र० १५० आ ।
खरंटि-खरण्टनम्, लेपविशेषः । पिण्ड० ८७ ।
खरंटिओ-तिरस्कृतः । उत्त० १३६ ।
खरंटिता-खउरिता रोसेणेत्यर्थः । रुष्टः । नि० चू० प्र० २०७ अ ।
खरंटेउं-निर्भर्त्स्य । बृ० प्र० ३६ आ ।
खरंटेति-भर्त्सयति । नि० चू० प्र० २११ आ ।
खरंटेहिंति-निर्भर्त्सयिष्यन्ति । दश० ३८ ।
खरंटो उ जो मलो तं कमढं भण्णति । नि० चू० प्र० १६० आ ।
खरंडिय-संतर्ज्य, निर्भर्त्स्य । आव० ४३१ ।
खर-खरस्थानम् । ठाणा० ३६७ । तिलम् । आव० ८५४ । गर्दभः । प्रज्ञा० २५२ । जीवा० २८२ । दासः । बृ० द्वि० १६७ अ । खरसन्नय । ओघ० १४६ ।
खरइ-क्षरति-संशब्दयति । विशे० २५५ ।
खरउ-शातवाहनस्यामात्यः । व्य० प्र० १६३ अ ।
खरए-राह्वाप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेषाः । सूर्य० २८७ । राहोः चतुर्थनाम । भग० ५७५ । राहो तृतीयनाम । सूर्य० २८७ । दासदासीरूपं द्व्यक्षरकम् । बृ० द्वि० १६४ आ ।

खरओ-द्व्यक्षरो वा कर्मकरः । ओघ० १५६ । दासः बृ० तृ० २२५ अ ।
खरकंट-खरा-निरन्तरा निष्ठुरा वा कण्टाः-कण्टकाः यस्मिस्तत् खरकण्टं बुब्बूलादिडालम् । ठाणा० २४४ ।
खरकंटयसमाणे-यस्तु प्रज्ञाप्यमानो न केवलं स्वाग्रहान्न चलति अपितु प्रज्ञापकं दुर्वचनकण्टकैर्विध्यति स खर-कण्टकसमानः । ठाणा० २४३ ।
खरकंडे-खरकाण्डम् । कठिनो विशिष्टो भूभागः । जीवा० ८६ ।
खरकम्मिअ-दण्डपासगः । ओघ० ८६ ।
खरकम्मिए-खरकर्मिकः-आरोग्याभिरतौ बीजपुरवनदृष्टान्ते कुम्भकाराद्यन्यतमः । आव० ४५३ ।
खरकम्मिओ-खरकर्मिकः-आरक्षकः । बृ० तृ० १०२आ ।
खरकम्मिय-खरकर्मिकः । आव० ६२७ ।
खरकम्मिया-सन्नद्धपरिकराः । बृ० द्वि० १२६ अ । रायपुरिसा । नि० चू० प्र० २१० अ । राजपुरुषाः । बृ० द्वि० २१३ आ ।
खरकरं-श्लक्ष्णपाषाणभृतचर्मकोशकविशेषः, स्फुटितवंशो वा । प्रश्न० ५६ ।
खरग-खरकः-वैद्यविशेषः । आव० २२६ । दासः । नि० चू० द्वि० १०५ आ ।
खरडिए- । ठाणा० ३८६ ।
खरणं-बब्बूलादिडालम् । ठाणा० २४४ ।
खरदूषणः-रावणभगिनीपतिः । प्रश्न० ८७ ।
खरपम्हं-खरा णिसड्ढा दासाओ जस्स तं खरपम्हं । नि० चू० प्र० २४५ आ ।
खरपिंड-कठिनपिण्डः । आचा० ३६१ ।
खरफरुस-खरपरुषः अतिकर्कशः । आव० ६१७ । ज्ञाता० ७६ । स्पर्शतोऽतीवकठोरः । भग० ३०८ ।
खरबायरपुढवी-खरबादरपृथिवी-मण्यादिषट्त्रिंशद्भेदात्मिको पृथिवी । आचा० २८ ।
खरबादरपुढविक्काइया-खरा नाम पृथिवी संघातविशेषं काठिन्यविशेषं वाऽऽपन्ना तदात्मका जीवा अपि खराश्च ते बादरपृथिवीकायिकाश्च, खरा चासौ बादरपृथिवी च स कायाः-शरीरं येषां ते एव खरबादरपृथिवीकायिकाः ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवा० २२ ।

खरमुखी–काहला, तस्स मुहत्थाणं खरमुहाकारं कट्ठमयं-मुहं कज्जति । नि० चू० तृ० ६२ अ ।

खरमुहि–खरमुखी काहला । भग० ४४७, २१६ । जं० प्र० १०१ ।

खरमुही–काहला । जीवा० २४५ । तोहाडिका । आचा० ४१२ । खरमुखी–काहला । औप० ७३ । जीवा० २६६ । खरमुही–काहला । जं० प्र० १६२ । राय० २५ ।

खरवायं–खरवातम् । आव० २१७ ।

खरशानया–पाषाणप्रतिमावत् । ठाणा० २३२ ।

खरस्सरे–यो वज्रकण्टकाकुलं शालमलीवृक्षं नारकमारोप्य खरस्वरं कुर्वन्तं कुर्वन् वा कर्षति स खरस्वरः । चतुर्दशः परमाधार्मिकः । सम० २९ । खरस्वरः–नरके चतुर्दशः परमाधार्मिकः । आव० ६५० । चतुर्दशः परमाधार्मिकः । उत्त० ६१४ । सूत्र० १२४ ।

खरा–कठिनाः । उत्त० ६८९ । सङ्घातविशेषं काठिन्य-विशेषं वाऽऽपन्ना पृथिवी । जीवा० २२ । निरन्तरा निष्ठुरा वा । ठाणा० २४३ ।

खरावत्ते–खरो–निष्ठुरोऽतिवेगितया पातकश्छेदको वा आवर्त्तनमावर्त्तः स च समुद्रादेश्चक्रविशेषाणां वेति खरा-वर्त्तः । ठाणा० २८८ ।

खरि–दुवक्खरिदा । नि० चू० तृ० २० अ ।

खरिए–द्वचक्षरिका । ओघ० २२३ ।

खरिका–कठोरकर्मा । उत्त० १०७ ।

खरिमुह–खरमुखी–नपुंसकी दासी वा । व्य० द्वि० १५० अ ।

खरियत्ताए–नगरबहिर्वर्त्ति वेश्यात्वेन । भग० ६६४ ।

खरिया–द्वयक्षरिका दासी । बृ० द्वि० ४७ आ । द्वय-क्षरिका । ओघ० ५६ । द्वयक्षरिका–कर्मकारी । ओघ० १५६ । दासी । नि० चू० द्वि० ३९ आ ।

खरेणं– । आव० ६४ ।

खरोट्ठी–लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

खर्जु–कण्डूम् । ठाणा० ५०५ ।

खव्वं–स एव उन्नतो जात्यादिना भावेनाशोकादिरिति । ठाणा० १८२ ।

खलं–कुथितादि विशिष्टम्, अल्पधान्यादि वा । सूत्र० ३२४ । खलं–धान्यमेलनपचनादिस्थण्डिलम् । जं० प्र० १४६ । धान्यमेलनादिस्थण्डिलम् । ज्ञाता० १०४ ।

खलखलंति–खटत्खटदिति भवन्ति,खलखलशब्दं कुर्वन्ति । आव० ७१६ ।

खलखलिति–खलखलशब्दं करोति । उत्त० ३०३ ।

खलखिलं–निर्जीवमित्यर्थः । व्य० द्वि० १९६ आ ।

खलगं–जत्थ मंसं सोसंति । नि० चू० द्वि० २२ आ ।

खलणा–स्खलना–प्रतिसेवणा, भङ्गो, विराधना, उपघातः अशोधिः, शबलीकरणं, मइलणा च । ओघ० २२५ ।

खलतिना– । ठाणा० ४१३ ।

खलपुरिसो–खलपुरुषः । राजपुरुषविशेषः । आव० ८२१ ।

खलमत्स्यः–मत्स्यविशेषः । प्रश्न० ६ ।

खलयं–खलकं–धान्यमेलनस्थण्डिलम् । ज्ञाता० ११६ ।

खलयारिओ–स्खलीकृतः । आव० २६४ ।

खलहाणाणि– । नि० चू० प्र० ३४४ आ ।

खलाहि–(देशी) अपसर । उत्त० ३५६ ।

खलिणं–कायोत्सर्गस्य एकोनविंशतौ दोषे त्रयोदशमदोषः । आव० ७९८ । अस्सरस्सी । दश० चू० १५४ । खलिनं–कविकम् । आव० २६१ । खलिनः–कविकः । ज्ञाता० २२० ।

खलियं–स्खलितं–छलितम् । ओघ० २२५ । विनष्टम् । बृ० तृ० १०२ आ ।

खलियाइ–स्खलितादि । भग० ८९१ ।

खलीकओ उपसर्गितः । दश० ३७ ।

खलीकुर्वन्ति– । ओघ० ४५ ।

खलीण–विषमभूमिः । आव० ५६ । खलिनं–कविकम् । दश० २८३ ।

खलीणा–खलीना–आकाशस्था । विपा० ४४ ।

खलुंक–गलिरविनीत इति । ठाणा० २५० । दुःशिष्यः । उत्त० ५४८, ५५३ ।

खलुंकिज्जं–खलुङ्कीयं, उत्तराध्ययनेषु सप्तविंशतितममध्य-यनम् । उत्त० ९ । सम० ६४ ।

खलुंकीयं–उत्तराध्ययनस्य सप्तविंशतितममध्ययनम् । उत्त० ५४८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खलु-विशेषणे विशेषेण-अत्यर्थम्। आचा० १०५। खलु-विश्रितम् । सूर्य० १४। अपिशब्दार्थः। आव० ५३०।

खलुए-गले । नि० चू० प्र० १३८ अ । पादमणिबन्धः। विपा० ७२ ।

खलुकाः-जानुकादिसंधयः, जानुकादिसन्धिषु वातः । बृ० द्वि० १२३ आ ।

खलुखेत्तं-खलुक्षेत्रं-यत्र किमपि प्रायोग्यं लभ्यते । व्य० द्वि० ३३५ आ ।

खलुखेत्ता-खलुक्षेत्राणि-यत्राल्पो लोको भिक्षा प्रदाता । बृ० प्र० २०६ आ ।

खलुग-खलुकः-घुण्टकः । बृ० द्वि० २२३ अ । चरण-गुल्फः । बृ० द्वि० २५२ अ ।

खलुगमेत्तो-कद्दमो । नि० चू० द्वि० ७६ आ ।

खल्लेज-स्खलयेयुः-निष्काशयेयुः । उत्त० ३६४ ।

खल्लए-कपर्द्दकविशेषः । ज्ञाता० २३५ ।

खल्लका-पत्रपुटानि । बृ० द्वि ६४ अ ।

खल्लकादिः-चर्मकोशः, पार्ष्णित्रम् । आचा० ३७० ।

खल्लग-खल्लकः चर्मपञ्चके द्वितीयो भेदः। आव० ६५२ । खल्लकः । ठाणा० २३४ ।

खल्लगादिपुडगे- । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

खल्लाडो-खल्वाटः । आव० ३१७ ।

खल्लिता-खल्लचौ । दश० ८६ ।

खल्ली-खलतिः । उत्त० १६५ । खल्वाटः । विशे० ६७२ ।

खल्लीडो-खल्वाटः । उत्त० १६५ ।

खल्लूट-साधारणवनस्पतिकायिकभेदः । जीवा० २७ ।

खल्लूर-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४ ।

खवए-क्षपको मासक्षपणादितपस्तप्यते । बृ० तृ० ३५ आ । मासादिक्षपकः । बृ० तृ० ३५ आ ।

खवगा-क्षपकाः-उपवासिकाः । ओघ० ६४ ।

खवणं-क्षपणं-प्रकृत्यन्तरसंक्रमितस्य कर्मणः प्रदेशोदयेन निर्जरणम् । विशे० १००६ । अप्रत्याख्यानादिप्रक्रमेण क्षपकश्रेण्यां मोहाद्यभावापादनम् । आचा० २६८ ।

खवणा-क्षपणा-पापानां कर्मणां क्षपणहेतुत्वात् क्षपणेति । ठाणा० ६ । क्षपणा श्रुतनाम । दश० १६ ।

खवणो-चउप्पगारं भवं खवेमाणो । जम्हा अप्पा कम्मं खयइ तम्हा वा । दश० चू० १४५ ।

खवलिओ-आमन्त्रितः । आव० १७५ ।

खवल्लमच्छ-मत्स्यविशेषः। जीवा० ३६ । प्रज्ञा० ४३ ।

खविउणं-क्षपयित्वा । पिण्ड० १६७ ।

खवियदंदा-क्षीणक्लेशाः । चउ० ।

खवुस- । नि० चू० प्र० १३६ आ ।

खस-खसः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।

खसखसा-प्रक्षाल्यमानकुण्डलिकादेः शब्दविशेषः । ओघ० १८७ ।

खसद्दुमो नाम मिगराया । व्य० प्र० २२३ आ।

खसरः-खर्जूः । जीवा० २८४ ।

खसर-खशरः-कशरः। भग० ३०८ । कसरः । जं० प्र० १७० ।

खसा-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

खसूचो-मूर्खः । सूत्र० २३७ ।

खहं-आकाशम् । ठाणा० ११५ । उत्त० ६६८ ।

खहयर-खचरजं-पुद्गलविशेषः। आव० ८५४। खचराः-वैताढ्यवासिनो विद्याधराः। जं० प्र०१६८। खे-आकाशे चरन्तीति खचराः । प्रज्ञा० ४३ ।

खहयरगब्भवक्कंतिया- । भग० ३२६ ।

खहे-खनने भुवो हाने च त्यागे यद्भवति तत् खहम् । भग० ७७६ ।

खाईं-अवश्यम् । आव० ४०१ ।

खाइ-कथय । उत्त० ६८, १७४। गच्छ, अवश्यं वा। आव० २२० । भग० १७० । तदा, अत्यन्तम् । आव० ७०१ । पुनः । भग० ३६८ ।

खाइज्जा-खादेत्-भाषेत् । दश० २३५ ।

खाइणं-देशभाषया वाक्यालङ्कारे। औप० ११५ ।

खाइमं-खाद्यत इति खाद्यं-खर्जूरादि । दश० १४६ । खादिमं फलादी। खं-आकाशं तच्चमुखविवरमेव तस्मिन् मातीति खादिमम् । आव० ८५० । खादिमं-त्रपुष-फलादि । आव० ८११ । खादिमं-पिण्डखर्जूरादि । उत्त० ४१८ । खादनं खादस्तेन निर्वृत्तं खादनार्थं तस्य निर्वर्त्यमानत्वादिति खादिमं । ठाणा० १०६ । खाद्यत

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इति खादिमं–नालिकेरादि । आचा० २६५ ।

खाइयं–खातवलयम् । प्रश्न० १६० ।

खाई–ख्याति अन्तर्भूतण्यर्थतया ख्यापयति–प्रकाशयति । प्रज्ञा० ६०० ।

खाओदया–खातायां भूमौ यान्युदकानि तानि खातोदकानि। भग० ६६४ ।

खाडखडे–नरकेन्द्रविशेषः । ठाणा० ३६५ ।

खाइहिला–कृष्णशुक्लपट्टाङ्कितशरीरा शून्यदेवकुलादिवासिन्यः । प्रश्न० ८ ।

खाडहिल्ला–खाडहिल्ला । आव० ४१७ ।

खाणं–खादनम् । आव० ११५ ।

खाणगतेणो–खत्तं खणंतो । नि० चू० द्वि ३८ आ ।

खाणी–खनिः । आव० २७४ ।

खाणु–स्थाणवः–कीलका ये छिन्नावशिष्टवनस्पतीनां शुष्कावयवाः 'ठुंठा' इति लोकप्रसिद्धाः । जं०प्र० ६६ । स्थाणुः–ऊर्ध्वकाष्ठम् । जं० प्र० १२४ । दश० १६४ । स्थाणुः । ज्ञाता० ६५, ७८, ७९ ।

खाणुगं–उद्धाययद्वियं कट्ठं खाणुगं भण्णति । नि० चू० प्र० ६९ अ ।

खाणू–स्थाणुः–कीलकः । बृ० द्वि० ७७ आ । नि० चू० प्र० ३२ अ ।

खातं–खातं, उभयत्रापि सममिति । प्रज्ञा० ८६ । नंदी० १६४ । भूमिगृहकादि । आव० ८२६ । उपरि विस्तीर्णमधः सङ्कुचितम् । राय० २ ।

खाति– । भग० २२९ ।

खातिका–अध उपरि च समखातरूपा । अनु० १५९ ।

खातिया–खातिका–परिखा । प्रश्न० ८ । उपरि विस्तीर्णाऽधः सङ्कुचखातरूपाः । भग० २३८ ।

खातोच्छ्रितम्–भूमिगृहस्योपरि प्रासादः । आव० ८२६ ।

खामिअविउसविआणं–क्षमितव्यवशमितानां – मर्षितत्वेनोपशान्तानाम् । सम० ३७ ।

खामित–क्षामितानि–वचसा मिथ्यादुष्कृतप्रदानेन शमितानि । बृ० तृ० २२१ अ ।

खामियं–मिथ्यादुष्कृतेन शमितम् । क्षामितव्यम् । बृ० तृ० २२२ अ ।

खामेत्ता–क्षमयित्वा । ज्ञाता० ७४ ।

खायं–खातं–उपरि विस्तीर्णमधः सङ्कटम् । ज्ञाता० २ । औप० ३ । खातमध उपरि च समम् । सम० १३७ । कूपादि । अनु० १५४ । ख्यातं–प्रसिद्धम् । आव० ५१४ । खातं–उभयत्रापि समम् । जीवा० १५९ । बृ० प्र० २८ अ । जं० प्र० ७६ । खातानि–पुष्करिण्यादिकानि । जं० प्र० २१० ।

खायजसो–ख्यातयशाः । आव० ६१७ ।

खायजाणए–खातज्ञायकः । आव० ४२४ ।

खार–कटुकम् । प्रज्ञा० ३६५ । क्षारं–तिलक्षारादि । प्रश्न० ५७ । तीक्ष्णम् । जीवा० ३०३ । क्षारः–परस्परं मत्सरः । जं० प्र० १२५ । करीरादिप्रभवः । दश० १३९ । परस्परमत्सरः । भग० १९८ । क्षारः–भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः । जीवा० ४० । परस्परं–मात्सर्यम् । जीवा० २८३ । वस्तुलादिर्लवणं वा । बृ० द्वि० २७१ अ । यवक्षारादिः । पिण्ड० ८ । वत्थुलमाती खारो । नि० चू० प्र० १९२ आ । वत्थुलादिगो । नि० चू० प्र० ३५६ अ । क्षाराः–क्षाररसामोरडप्रभृतयः । व्य० प्र० ६१ आ । क्षारः–तिलक्षारादिः । ओघ० १३० । क्षारो–भस्मादि । ठाणा० ४९२ ।

खारकडुयं–क्षारकटुकम् । आव० ५५६ ।

खारकाइए–क्षारकायिकी । आव० २१७ ।

खारगंधो–क्षारगन्धः–कटुकगन्धः विषगन्धः । आव० ७२३ ।

खारतंते–क्षरणं क्षारः, शुक्रस्य तद्विषयं तन्त्रं यत्र तत् क्षारतन्त्रम् । ठाणा० ४२७ ।

खारतउसी–क्षारत्रपुषी कटुका त्रपुषी । प्रज्ञा० ३६४ ।

खारतउसीफलं–कटुकात्रपुषी क्षारत्रपुषी तस्याएव फलं क्षारत्रपुषीफलम् । प्रज्ञा० ३६४ ।

खारमेहा–क्षारमेघाः सर्जादिक्षारसमानरसजलोपेतमेघाः। भग० ३०६ ।

खारवावी–क्षारवापी–क्षारद्रव्यभृतवापी । प्रश्न० २० ।

खारातणा–मण्वगोत्रविशेषः । ठाणा० ३९० ।

खारिअ–सलवणानि । ओघ० ९८ ।

खारिया–क्षारितानि यानि लवणखरण्टितानि शालनकान्यास्तानानीत्यर्थः । व्य० द्वि० १४२ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खारोदए-क्षीरोदकं-ईषल्लवणपरिणामम् । जीवा० २५ । क्षारोदकं-ईषल्लवणस्वभावम् । प्रज्ञा० २८ ।
खालु- । ओघ० २०९ ।
खासिअं-कासनं-कासितम् । विशे० २७४ ।
खासिए-कासितम् । आव० ७७९ ।
खासिय-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । खासिकः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।
खिखिएइ-खिङ्खिङ्करोति । उत्त० १२१ ।
खिंखिणि-किङ्किण्यः-क्षुद्रघण्टिकाः । जं० प्र० १०६ । किङ्किणी-क्षुद्रघण्टिकाः । प्रश्न० १५९ । जीवा० १८१ । ज्ञाता० १६७ । क्षुद्रघण्टाः । जीवा० १९२ ।
खिखिणिघंटाजालं-किङ्किणीघण्टाजालं-क्षुद्रघण्टासमूहः । जीवा० ३६९ ।
खिखिणिजालेण-किङ्किणीजालेण क्षुद्रघण्टिकाः एकैकेन घण्टाजालेन । जीवा० १८१ ।
खिखिणियाइं- । ज्ञाता० १३४ ।
खिखिणिस्सरे-किङ्किणि-क्षुद्रघण्टिकाः तस्याः स्वरो ध्वनिः किङ्किणिस्वरः । ठाणा० ४७१ ।
खिखिणी-किङ्किणी-भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६९ । क्षुद्रघण्टाः । जीवा० २०५ । क्षुद्रघण्टिकाः । जं० प्र० २३ । ठाणा० ४७२ ।
खिखिणीजालं-किङ्किणीजालं-क्षुद्रघण्टासंघातः । जीवा० २०५ ।
खिसं-परोक्षे हीलना खिसा । आव० ५२८ ।
खिसण-खिसनं-निन्दावचनं, अशीलोऽसावित्यादिवचनम् । प्रश्न० १६० । सूयया असूयया वा असकृद्दुष्टाभिधानं खिसनम् । दश० २५४ । जनसमक्षं निन्दा । भग० २२७ ।
खिसणा-खिसना-तान्येव लोकसमक्षम् । औप० १०३ । परिभवः । ओघ० २१५ । पुणोरदुघणियस्स भवइ थभा उ काहो उ वा हवेज्जा । दश० चू० १४० । लोकसमक्षमेव जात्याद्युद्घट्टनम् । अन्त० १८ ।
खिसणिज्ज-खिसनीयो जनमध्ये । ज्ञाता० ९६ ।
खिसंति-परस्परस्याग्रतः तद्दोषकीर्त्तनेन । ज्ञाता० १४९ ।
खिसंत-खरण्टयति । बृ० द्वि० ९८ आ । नन्दति । नि० चू० द्वि० १०६ अ । आव० ७९९ । स्वसमक्षं वचनैः कुत्सन्ति । भग० १६६ ।
खिसह-खिसत, जनसमक्षं निन्दत । भग० २१९ ।
खिसा-जुगुप्सा असमीक्षितभाषिणम् । ओघ० ५३ ।
खिसिज्जमाणो-निन्द्यमानः । आव० ८६३ ।
खिसितं-जन्मकर्माद्युद्घट्टनतः । ठाणा० ३७१ ।
खिसितवयणे-जन्मकर्माद्युद्घट्टनवचनम् । ठाणा० ३७० ।
खिसिय-खिसितः-निन्दापुरस्सरं शिक्षितः । व्य० प्र० १६९ आ ।
खिइ-क्षितयः-धर्माद्या ईषत्प्राग्भारावसाना अष्टौ भूमयः । आव० ६०० ।
खिइपइट्ठिअं-क्षितिप्रतिष्ठितं नगरविशेषः । आव० ११६ ।
खिइपइट्ठितं-जितशत्रुराजधानी । नि० चू० तृ० ६८ आ ।
खिइपइट्ठियं-क्षितिप्रष्ठितं, द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे प्रसन्नचन्द्रराजधानी । आव० ४८७ । आत्मसंयमविराधनादृष्टान्ते जितशत्रुनगरम् । आव० ७३२ । नगरविशेषः । उत्त० ३९५ । आव० ३७० । मगधाया मूलराजधानी । उत्त० १०५ । द्रव्यव्युत्सर्गे नगरम् । आव० ७२० ।
खिइपतिट्ठियं-क्षतिप्रतिष्ठितं-नगरविशेषः । उत्त० ३०४ । आव० ३८८ ।
खिइपदिट्ठिअं-क्षतिप्रतिष्ठितं-नगरविशेषः । आव० ११५ ।
खिज्जणिया-खेदक्रिया । ज्ञाता० २०५ ।
खिज्जिओ-खिन्नः-रुष्टः । आव० ६७३ ।
खिण्ण-श्रान्तः । नि० चू० द्वि० ९९ अ ।
खिति-क्षिति-क्षितिप्रतिष्ठितं, योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते नगरम् । अपरनाम चणकपुरं वृषभपुरं राजगृहं च । आव० ६७० ।
खितिखाणतो-उड्डुमादी । नि० चू० द्वि० ४४ आ ।
खितिपतिट्ठिय-जितशत्रुराजधानी । नि० चू० प्र० ३५१ आ ।
खित्त-क्षेत्रं-आकाशम् । अनु० १८१ । क्षिप्तं-व्याप्तम् । राय० २८ । क्षियन्ति-निवसन्ति तस्मिन्निति क्षेत्रं-आकाशम् । उत्त० ६४५ । क्षेत्रं-शस्योत्पत्तिभूमिः । आव० ८२६ । क्षेत्रं-यदाकाशखण्डं सूर्यःस्वतेजसा व्याप्नोति तत् । जं० प्र० ४५९ । इन्द्रकीलादिवर्जितं ग्रामनग-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रादि । बृ० प्र० ३६ अ । क्षियन्ति–निवसन्त्यस्मिन्निति क्षेत्रं–ग्रामारामादि सेतुकेतूभयात्मकं वा । उत्त० १८८ ।

खित्तचित–क्षिप्तचित्तः–पुत्रशोकादिना नष्टचित्तः । ठाणा० ३०५ । शोकेन । ठाणा० ३१५ ।

खित्तचित्ता–क्षिप्तं–नष्टं रागभयापमानैश्चित्तं यस्याः सा क्षिप्तचित्ता । बृ० तृ० २३० आ । अपमानतया क्षिप्तं–नष्टं चित्तं यस्याः सा क्षिप्तचित्ता । बृ० द्वि० २१० अ । अपमानेनोन्मत्ता । बृ० द्वि० २१० अ ।

खित्तवत्थुपमाणाइक्कमे–क्षेत्र–शस्योत्पत्तिभूमिः, वास्तु अगारं, क्षेत्रवास्तूनां प्रमाणातिक्रमः क्षेत्रवस्तुप्रमाणातिक्रमः । आव० ८२५ ।

खिद्यमानार्थतया प्रयोजनम् । आचा० १०६ ।

खिन्नो–खिन्नः विषण्णः । प्रश्न० ६२ ।

खिप्पंतो–क्षिप्यन्–प्रतीक्षमाणः । दश० ५७ ।

खिप्पामेव–शीघ्रमेव । ज्ञाता० ३२ ।

खिलप्रदेशे– । विशे० ४३७ ।

खिलभूमी–खिलभूमिः, हलैरकृष्टा भूमिः । प्रश्न० ३६ ।

खिलीभूय–खिलीभूतं-अनुभूतिव्यतिरिक्तोपायान्तरेण क्षपयितुमशक्यं निकाचितमित्यर्थः । भग० २५१ ।

खिल्लणयं– । निरय० ३४ ।

खिल्लरं–पल्वलम् । आव० ५६ ।

खिल्लरबंधे– । नि० चू० प्र० २२१ अ । गोष्पदे । नि० चू० तृ० १८ अ ।

खिल्लिउं–क्रीडितम् । आव० ५६६ ।

खिवाहि– । आचा० ३७८ ।

खिवेमाणे–क्षेपयन्–प्रेरयन् । ज्ञाता० ८५ ।

खीणकसातो–क्षीणकषायः । उत्त० २५७ ।

खीणभोगी–भोगो जीवस्य यत्रास्ति तद्भोगी–शरीरं तत्क्षीणंतपोरोगादिभिर्यस्य सः क्षीणभोगी–क्षीणतनुर्दुर्बलः । भग० ३११ ।

खीणमोह–क्षीणमोहः क्षीणमोहनीयकर्म्म । ठाणा० १७८ । क्षीणमोहः–श्रेणिपरिसमाप्तावन्तर्मुहूर्त्तं यावत्क्षीणवीतरागः । भूतग्रामस्य द्वादशं गुणस्थानम् । आव० ६५० ।

खीणे–क्षीणः वाताग्राकर्षणात्क्षयमुपगतः । भग० २७७ । जं०प्र० ६६ । क्षीणः–स चावशेषसद्भावे । भग० ६७६ ।

खीरं–क्षीरम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

खीर–क्षीरोदः–क्षीरवरद्वीपानन्तरं समुद्रः । प्रज्ञा० ३०७ ।

खीरकाओली–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

खीरकाकोलि–वल्लीविशेषः । भग० ८०४ ।

खीरगहण–क्षीराभ्यवहारम् । ओघ० ४७ ।

खीरघरं–क्षीरसाला । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

खीरणि–एकमस्थिकं फलविशेषः । भग० ८०३ ।

खीरदुमा–वडउम्बरपिप्पला । नि० चू० प्र० ३६ अ । क्षीरद्रुमाः, उदुम्बरादयः । ओघ० १२६ ।

खीरद्दुमो–क्षीरद्रुमः, वटाश्वत्थादिः । पिण्ड० ८ ।

खीरधाती–धातीविसेसा । नि० चू० द्वि० ६३ आ । स्तन्यदायिनी । ज्ञाता० ४१ ।

खीरपूरए–क्षीरपुरं–क्थ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत् क्षीरम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

खीरपूरेइ–क्षीरपूरं–क्थ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत्क्षीरम् । जं० प्र० ३५ ।

खीरप्पभो–क्षीरप्रभः क्षीरवरद्वीपाधिपतिर्देवः । जीवा० ३५३ ।

खीरभुस–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ । तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

खीरमहु–क्षीरमध्वाश्रयलब्धिः । विशे० ३८५ ।

खीरमेहे–क्षीरमेघा नामतो महामेघः । जं०प्र० १७४ ।

खीरवरो–क्षीरवरः-द्वीपविशेषः । जीवा० ३५२, ३५३ । प्रज्ञा० ३०७ ।

खीरवुट्ठी–क्षीरवृष्टिः । भग० १६६ ।

खीराइया–क्षीरकिताः–सञ्जातक्षीरकाः । ज्ञाता० ११६ ।

खीरामलएणं–अबद्धास्थिकं क्षीरमिव मधुरं यदामलकं तस्मादन्यत्र । उपा० ३ ।

खीरासव–क्षरन्ति ये ते क्षीराश्रवाः क्षीरवन्मधुरत्वेन श्रोतॄणां कर्णमनःसुखकरं वचनमाश्रवन्ति । औप० २८ । क्षीरमिव मधुरं वचनमाश्रवन्ति ये ते क्षीराश्रवाः, लब्धिविशेषवन्तः । प्रश्न० १०५ ।

खीरिज्ज–क्षीरिण्यः–गाव अत्र दुह्यन्ते । आचा० ३३५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीरिणि-क्षीरणी-एकास्थिकवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।
खीरो-क्षीरः क्षीरवरद्वीपाधिपतिर्देवः । जीवा० ३५३ ।
खीरोए-क्षीरमिवोदकं यस्य सः, क्षीरवन्निर्मलस्वभावयोः सुरयोः सम्बन्धि उदकं यत्रेति वा क्षीरोदः । जीवा० ३५३ । समुद्रविशेषः । जीवा० ३५३ ।
खीरोद-क्षीरोदः, समुद्रविशेषः । ज्ञाता० १२८ ।
खीरोदए-क्षीरसमुद्रे क्षीरोदकम् । प्रज्ञा० २८ । क्षीरोदकं-क्षीरसमुद्रजलम् । जीवा० २५ ।
खीरोदा-क्षीरोदा, अन्तरनदी । जं० प्र० ३५७ ।
खीरोयाओ-नदीविशेषः । ठाणा० ८० ।
खील- । व्य० द्वि० ३५८ अ । कीलकः । आव० ५७८ । कीलः-शङ्कुः । प्रश्न० ८ ।
खीलए-कीलकः, लोहकीलकः । दश० ५६ ।
खीलग-कीलकः । आव० ४२० ।
खीलगसंठिते-कीलकसंस्थितं सातीनखत्तस्स संठाणं । सूर्य० १३० ।
खीलगो-कीलकः । ओघ० १७८ ।
खीलच्छाया-छायाविशेषः । सूर्य० ६५ ।
खीलया-कीलिकाः । आव० ३६० ।
खीलसंठितं-जं उविज्जं तं ण ठाति तं खीलसंठितं । नि० चू० प्र० १२५ आ ।
खीलसंठियं- । नि० चू० तृ० ५१ आ ।
खुंखुणगा-घुर्घुरकाः-गुल्फाः । आव० २०६ ।
खुंदति-आस्कन्दति प्राप्नोतीत्यर्थः । व्य० द्वि० १८७ आ । क्षोदयन्ति-विनाशयन्ति । उत्त० ६२८ ।
खुंभणं-क्षोभणम् । प्रश्न० २४ ।
खु-खुर्वाक्यालङ्कारे अवधारणे वा । आचा० ८४ । अवधारणे । आव० ५३२ । निश्चितं अवधारणे वा । उत्त० ३६६ । निश्चये । जं० प्र० २०१ । वाक्यालङ्कारे प्रश्न० १२० । क्षुत्-अष्टप्रकारं कर्म । व्य० प्र० ३६ आ ।
खुई-क्षुतिः छीत्कारादिशब्दविशेषः । ज्ञाता० २२१ ।
खुच्चक- । व्य० प्र० २१८ आ ।
खुज्जं-यत्र शिरोग्रीवं हस्तपादादिकं च यथोक्तप्रमाणलक्षणोपेतं उरउदरादि च मण्डलं तत् कुब्जम्, पञ्चमं संस्थानम् । जीवा० ४१ । कुब्जकरणी । बृ० प्र० ३१४ अ । कुब्जः-यत्र शिरोग्रीवं हस्तपादादिकं च यथोक्तप्रमाणलक्षणोपेतं उरउदरादि च मडभं तत् । प्रज्ञा० ४१२ । कुब्जः-वक्रः । ओघ० ७४, ८२ । वक्रशरीरः । बृ० प्र० २४२ आ । सर्वगात्रमेगपार्श्वहीनं कुब्जम् । नि० चू० द्वि० ४३ आ० । अधस्तनकायमडभं, इहाधस्तनकायशब्देन पादपाणिशिरोग्रीवमुच्यते, तद् यत्र शरीरलक्षणोक्तप्रमाणव्यभिचारि यत्पुनः शेषं तद्यथोक्तप्रमाणं तत् कुब्जम् । ठाणा० ३५७ । कुब्जं-यत्र पाणिपादशिरोग्रीवं समग्रलक्षणपरिपूर्णं शेषं तु हृदयोदरपृष्ठलक्षणं कोष्ठं लक्षणहीनं तत् । अनु० १०२ । अधस्तनकायमडभं संस्थानम् । आव० ३३७ । कुब्जः-वक्रजङ्घः । प्रश्न० २५ । कुब्जं-ग्रीवादौ हस्तपादयोश्चतुरस्र लक्षणयुक्तं सङ्क्षिप्तविकृतमध्यम् । भग० ६५० ।
खुज्जत्तं-कुब्जत्वं-वामनलक्षणम् । आचा० १२० ।
खुज्जबोरी-कुब्जबदरी । ओघ० १०० ।
खुज्जसंठाण-ग्रीवाहस्तपादाश्च समचतुरस्रा लक्षणयुक्ता यत्र संक्षिप्तं विकृतं च मध्ये कोष्ठं तत् कुब्जसंस्थानम् । सम० १५० ।
खुज्जा-कुब्जा । आव० ६४ । नि० चू० प्र० २७७ अ । कुब्जा कुब्जिकाः-वक्रजङ्घाः । जं० प्र० १६१ । ज्ञाता० ४१ ।
खुज्जियं-कुब्जं पृष्ठादावस्यास्तीति कुब्जी । आचा० २३३ ।
खुट्टं-त्रुटितम् । आव० १४६ ।
खुट्टंति-कुट्टयन्ति । उप० मा० गा० ४६६ ।
खुट्टिमा-गान्धारस्वरस्य द्वितीया मूर्छना । जीवा० १६३ ।
खुट्टुं-रयणिपमाणातो जं आरतो तं । नि० चू० प्र० २१६ आ ।
खुडुंत-कीडंत । नि० चू० प्र० ११५ अ ।
खुड्ड-क्षुल्लः-लघुः । जीवा० २०० । क्षुद्रः बालः-शीलहीनो वा पार्श्वस्थादि । उत्त० ४७ । बालो । नि० चू० प्र० ६८ आ । क्षुल्लः । ओघ० १६० ।
खुड्डइ-त्रोटयति । भग० ६६८ ।
खुड्डए-क्षुल्लकः । आव० १६५ ।
खुड्डुका-भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खुड्डखुड्डगा–क्षुल्लक्षुल्लका–अतिलघवः आयताश्च । जं० प्र० ४४ ।

खुड्ड(खुंड)गं–मुद्रिका । आव० ४१८ ।

खुड्डग–मुद्रिका । आव० ६७१ । आव० ४१७ । क्षुल्लकः–द्रव्यभावबालः । दश० १६५ । क्षुल्लकः, हास्ये दृष्टान्तः । आव० ४०४ । क्षुल्लकः लघुः–बालकः । उत्त० १०२ ।

खुड्डगकुमारो–क्षुल्लककुमारः, योगसंग्रहे अलोभोदाहरणे कण्डरीकयुवराजपत्नीयशोभद्रायाः साध्व्यवस्थायां जातपुत्रः । आव० ७०१ ।

खुड्डगगणी–क्षुल्लकगणी, क्षुल्लकाचार्यः । व्य० प्र० २३७ आ ।

खुड्डंति–त्रोटयति । भग० ६६७ ।

खुड्डपाणा–क्षुद्रा–अधमा अनन्तरभवे सिद्धयभावात् प्राणाउच्छ्वासादिमन्तः क्षुद्रप्राणाः । ठाणा० २७३ ।

खुड्डय–क्षुद्रका–वयसा श्रुतेन वाऽव्यक्ताः । सम० ३६ । खुड्डाग अङ्गुलीयकैः । भग० ४५६ । क्षुल्लकः । दश० ६१ । क्षुद्रकं–अङ्गुलीयकविशेषः । जं० प्र० १०५ । अङ्गुलीयकम् । ज्ञाता० २७ ।

खुड्डलए–स्वल्पकुटीरकः । ओघ० ४६ । क्षुल्लकः । आव० ३८८ । ओघ० १६० ।

खुड्डा–क्षुद्राः–अखातसरस्यः । जं० प्र० ४० । लघवः । जीवा० १६७ । क्षुल्लं । लघु–स्तोकं च । जीवा० ४४२ । क्षुद्राः–अधमाः । क्रूराः । ठाणा० ३६६ ।

खुड्डागंभवग्गहणं–क्षुल्लकभवग्रहणं–षट्पञ्चाशदधिकावलिकाशतद्वयप्रमाणं समयोनम् । जीवा० ४३४ ।

खुड्डागंसव्वओभद्दं–क्षुद्रिकासर्वतोभद्रं, क्षुद्रिका–महत्यपेक्षया सर्वतः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च भद्रा–समसङ्ख्येति सर्वतो भद्रा तपोविशेषः । अन्त० २६ ।

खुड्डागं सीहनिक्कीलियं–क्षुल्लकं सिंहनिष्क्रीडितं–वक्ष्यमाणमहदपेक्षया क्षुल्लकं–ह्रस्वं सिंहस्य निष्क्रीडितं–विह्रीतं गमनमिति, तपोविशेषः । अन्त० २८ ।

खुड्डाग–क्षुल्लकः–लघुः । जीवा० १७७ । क्षुल्लकः–ह्रस्वः । प्रज्ञा० ५६६ । ज्ञाता० ११६ ।

खुड्डागनियंठ–क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीयम्, उत्तराध्ययनेषु षष्ठमध्ययनम् । उत्त० २५५ ।

खुड्डागपयरेसु–क्षुल्लकप्रतरयोः सर्वलघुप्रदेशप्रतरयोः । भग० ६०७ ।

खुड्डागभवग्गहणं–क्षुल्लं लघु स्तोकं च क्षुल्लमेव क्षुल्लकं एकायुष्कसंवेदनकालो भवस्तस्य ग्रहणं भवग्रहणं क्षुल्लकं च तद्भवग्रहणं च क्षुल्लकभवग्रहणम् । जीवा० ४४२ ।

खुड्डागसीहनिक्कीलियं–क्षुल्लकसिंहनिक्रीडितं वक्ष्यमाणमहासिंहनिक्रीडितापेक्षया क्षुल्लकं सिंहनिक्रीडितं सिंहगमनं तदिव यत्तपस्तत् । औप० ३० । ज्ञाता० १२२ ।

खुड्डियदुवारिया–क्षुद्रद्वाराः–सङ्कटद्वाराः । आचा० ३२६ ।

खुड्डिया–क्षुद्रिकाः लघ्व्यः । आचा० ३७० ।

खुड्डियाओ–क्षुल्लिकाः–लघवः । जीवा० १६७ । अखातसरस्यस्ता एव लघ्व्यः–क्षुल्लिकाः । जं० प्र० ४१ ।

खुड्डीय–क्षुल्लको । नि० चू० प्र० १३२ आ ।

खुण्णं–विषण्णं । बृ० द्वि० २०५ आ ।

खुंत–क्षुतं–तस्यैव सम्बन्धीशब्दः तच्चिन्हं वा । ज्ञाता० ८५ ।

खुत्तग–मनाङ् मग्नः केवलं तत उत्तरीतुमशक्तः । औप० ८७ ।

खुत्तो–निमग्नः । प्रश्न० ६० ।

खुद्द–क्षुद्रकर्म्मकारित्वात् क्षुद्रः । ज्ञाता० २३८ । क्षुद्रः–द्रोहकः अधमो वा । प्रश्न० ५ ।

खुद्दए–क्षुद्रकं–विनाशयितुं शक्यत इति क्षुद्रं तदेवानुकम्प्यतया क्षुद्रकं सोपक्रममम् । उत्त० ६२८ ।

खुद्दिमा–गान्धारग्रामस्य द्वितीया मूर्छा । ठाणा० ३६३ ।

खुद्दिया–क्षुद्रिका, जलाशयविशेषः । प्रश्न० १६० ।

खुन्निय–भूपतनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि । भग० ४६८ ।

खुप्पंते–कर्दम एव निमज्जति । ओघ० २६ ।

खुप्पति–सचिक्खलले जले मज्जति । नि० चू० द्वि० ७६ अ ।

खुप्पिज्ज–निमज्जनं । ओघ० २६ ।

खुप्पिलं–निमज्जकं । तं० ।

खुब्भंति–क्षुभ्यन्ति राज्यविलोडनाय संचलन्ति । व्य० द्वि० ३३ आ ।

खुभाएज्ज–स्कम्नीयात् क्षुभ्येत् । भग० २६६ ।

खुभिज्जा–क्षोभं यायात्, प्रकुप्येत् । ओघ० ४० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खुभियं-कलहः । बृ० द्वि० १९ आ ।

खुभियजल-क्षुभितजलः, क्षुभितं जलं यस्य सः । जीवा० ३२१ । वेलावशात् क्षुभितजलः । भग० २८२ ।

खुम्मिया-भूमितपनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि । ज्ञाता० ४८ ।

खुर-चरणे येषामधोवर्त्यस्थिविशेषः । उत्त० ६९९ । क्षुरम्-शस्त्रविशेषः । प्रश्न० १४ । आव० ३७० । खुरः-शफः । जीवा० ३८ । प्रज्ञा० ४५ । खुराः-पादतलरुपा अवयवाः । जं० प्र० २३४ । शफः । उपा० ४४ । क्षुरः-क्षुरः । ठाणा० २७३ ।

खुरखुरओ-चर्ममयं भाजनं वाद्यम् । बृ०द्वि०२३६ अ।

खुरदुगत्ता-चर्मकीटता । सूत्र० ३५७ ।

खुरनिबद्धा-रासभबलिवर्द्दादयः । पिण्ड० १०२ ।

खुरपत्त-क्षुरपत्रं-क्षुरप्रम् । जीवा० १०६ । विपा० ७१ ।

खुरपत्ते-क्षुरपत्रं-क्षुरः । ज्ञाता० २०४ ।

खुरप्पं-क्षुरप्रं-प्रहरणविशेषः । प्रज्ञा०८० । जीवा० १०३ ।

खुरप्पसंठाणसंठितं-क्षुरप्रसंस्थानसंस्थितं, जिव्हेन्द्रियसंस्थानम् । प्रज्ञा० २९३ ।

खुरबंध- । ज्ञाता० २३० ।

खुब्भंतं-क्षुभ्यन्तं, अधोनिमज्जन्तम् । ठाणा० ३८५ ।

खुरभंडं-क्षुरप्रादिभाजनम् । दश० १०५ ।

खुल-कर्कशक्षेत्रादयः । बृ० प्र० २४३ आ ।

खुलए-पादघुंटकः जानुरित्यर्थः । बृ० तृ० १६२ आ ।

खुलुगो-उवरिकडीओ आरद्धा । नि० चू० प्र० १८० अ ।

खुलमइ-क्षुभ्यति-पृथिवीं प्रविशति क्षोभयति वा पृथिवीं । बिभेति वा । भग० १८३ ।

खुल्लग-क्षुल्लकः-कपर्दकः । प्रश्न० ३७ ।

खुल्ला-खुल्लाः-लघवः शङ्खाः सामुद्रशङ्खाकाराः । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ ।

खुवे-क्षुवो, ह्रस्वशिखः शाखी । ज्ञाता० ६५ ।

खुह-क्षुरादिदुःखहेतुत्वात् क्षुत् । दश० २६१ ।

खुहत्ते-प्रसह्य । नि० चू० द्वि० १०६ अ ।

खुहा-क्षुधा, क्षुत्परीषहः, प्रथमपरीषहः । आव० ६५६ ।

खेज्जणा-खेदना-खेदसंसूचिका । ज्ञाता० २३५ ।

खेटकः-आवरणः सन्नाहः । जं० प्र० २५९ ।

खेटन-कर्षणः । जं० प्र० २४३ ।

खेटय-वाहय । नंदी० १५४ ।

खेट्यन्ते-उत्त्रास्यन्ते । उत्त० ६०५ ।

खेडं-पांशुप्रकारनिबद्धं खेटम् । राय० ११४ । जीवा० २७९ । प्रकारोपेतं खेटम् । ठाणा० २९४ । धूलीमयप्राकारोपेतम् । अनु० १४२ । पांशुप्राकारबद्धम् । आचा० २८५ । प्रज्ञा० ४७ । जीवा० ४० । खेट्यन्ते-उत्त्रास्यन्तेऽस्मिन्नेव स्थितैः शत्रव इति खेटं पांशुप्राकारपरिक्षिप्तम् । उत्त० ६०५ । खेटस्थानं उल्लुकानद्याश्चैकस्मिँस्तीरे धूलिप्राकारावृतनगरविशेषरूपम् । विशे० ९७२ । खेटानि-प्रांसुप्राकारनिबद्धानि क्वचिन्नद्यद्रिवेष्टितानि । जं० प्र० १२१ । खेटं-धूलिप्राकारम् । औप ७४ । भग० ३६ । विपा० ३९ । प्रश्न० ५२, ६९ । सूत्र० ३०९ । धूलीप्राकारोपेतम् । प्रश्न० ९२ । खेडं नाम धूलीपागारपरिक्खित्तं । नि० चू० द्वि० ७० आ । धूलीपागारो जस्स तं । नि० चू० प्र० २२९ आ ।

खेडगं-खेटकं-फलकम् । प्रश्न० ७० ।

खेडग-खेटकं-शस्त्रविशेषः । आव० ३६० ।

खेडठाणं-खेटस्थानं-उल्लूका नद्या एकस्मिन् तीरे यत् । आव० ३१७ ।

खेडत्थाम-खेटस्थाम-उल्लूकायां द्वितीये तीरे नगरविशेषः । उत्त० १६५ ।

खेडमारी-खेटमारी-मारीविशेषः । भग० १९७ ।

खेडय-खेटकं वंशशलाकादिमयम् । जं० प्र० २०५ । आवरणविशेषः । जीवा० १९३ ।

खेडरुवं-खेटरूपम् । भग० १९३ ।

खेडाउ-क्रीडनकानि । बृ० प्र० ४७ आ ।

खेडाति-धूलीप्राकारोपेतानि । ठाणा० ८६ ।

खेडाहारः-खेडग्रामस्य समासन्नो देशः परिभोग्यः खेडाहारः । सूत्र० ३४३ ।

खेडिय-खेटितम् । दश० १०५ ।

खेडु-द्यूतविशेषः । जं० प्र० २६४ ।

खेड्डा-क्रीडा । ग० ।

खेड्डाउ-क्रीडा । आव० ३६० ।

खेत्त-क्षेत्रं-आकाशम् । अनु० १८१ । प्रज्ञा० ३२८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षेत्रं–धान्यवपनभूमिः । प्रश्न० ३६ । क्षिप्तचित्तता । आव० ७३७ । क्षेत्रं–धान्यजन्मभूमिः । जं० प्र० १४६ । औप० ३६ । क्षेत्रं–ग्रामादि कृषिभूमिर्वा । प्रश्न० १२० । क्षियन्ति अवगाहन्ते निवसन्ति जीवादयोऽस्मिन्निति क्षेत्रं आकाशम् । विशे० ८६२ । क्षेत्रं–भौतादि भावितम् । दश० ११५ । आर्यम् । आव० ३४१ । क्षेत्रं–भार्या । ठाणा० ५१६ । यदाकाशखण्डमादित्यः स्वतेजसा व्याप्नोति तत् । भग० ३६३ ।

खेत्तच्छेए–क्षेत्रच्छेदः बुद्धया प्रतरकाण्डविभागः । जीवा० ६३ ।

खेत्तते–क्षेत्रं भार्या तस्या जातः क्षेत्रजः । ठाणा० ५१६ ।

खेत्तपरमाणु–क्षेत्रपरमाणुः–आकाशप्रदेशः । भग० ७८८ ।

खेत्तपलिओवमे–क्षेत्रं–आकाशं तदुद्धारप्रधानं पल्योपमं क्षेत्रपल्योपमम् । अनु० १८० ।

खेत्तमूढो–जं खेत्तं ण याणाति जम्मि वा खेत्ते मुज्झति रातो वा परसंथारं अप्पणो मण्णति । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

खेत्तवत्थु–इह क्षेत्रमेव वस्तु क्षेत्रवस्तु, क्षेत्रं च वास्तु च गृहं क्षेत्रवास्तु । उपा० ४ ।

खेत्तवासी–क्षेत्रवर्षी–पात्रे दानश्रुतादीनां निक्षेपकः । ठाणा० २७० ।

खेत्ताणि–क्षेत्राणि–क्षेत्रोपमानि पात्राणि । उत्त० ३६१ ।

खेत्तातिक्कंत–क्षेत्रातिक्रान्तः–क्षेत्रं सूर्यसम्बन्धि तापक्षेत्रं दिनमित्यर्थः, तदतिक्रान्तः तस्य आहारः । भग० २९२ ।

खेत्ताविचीमरणं–क्षेत्रावीचिमरणं–अवीचिमरणस्य द्वितीयो भेदः । उत्त० २३१ ।

खेत्ते–क्षेत्रिके–क्षेत्रस्वामिनि, गणावदेच्छेदके आचार्ये वा । व्य० द्वि २६ आ ।

खेत्तोवक्कमे–क्षेत्रोपक्रमः–क्षेत्रस्य परिकर्म–विनाशकरणम् । अनु० ४८ ।

खेत्तोवसंपदा–उपसम्पदायाः भेदः । नि०चू०प्र० २४१अ ।

खेत्तोवाय–क्षेत्रोपायस्तु लाङ्गलादिना क्षेत्रोपक्रमणे भवति उपायभेदः । दश० ४० ।

खेदियं–खिन्नं–खेदः क्लेशो वा । उत्त० ४५६ ।

खेमं–क्षेमं, विषयः । आव० ३४१ । क्षेमं परकृतोपद्रवरहितम् । जीवा० १६० । क्षेमं, तदुपद्रवाद्यभावापादनम् । जीवा० २५५ । क्षेमं देशसौस्थ्यम् । उत्त० १४५ । परचक्राद्युपद्रवाभावः । बृ० तृ० १५१ अ । लब्धस्य परिपालनं क्षेमः । ज्ञाता० १०३ ।

खेमंकर:–क्षेमङ्करः–पञ्चमः कुलकरः । जं० प्र० १३२ । अष्टाशीत्यां महाग्रहे नवषष्टितमः । ठाणा० ७९ । तृतीयः कुलकरः । ठाणा० ५१८ । चतुर्थः कुलकरः । सम० १५३ । क्षेमङ्करः–अष्टाशीत्यां महाग्रहे सप्तषष्टितमः । जं० प्र० ५३५ ।

खेमंधर–क्षेमन्धरः षष्ठः कुलकरः । जं० प्र० १३२ । चतुर्थकुलकरः । ठाणा० ५१८ । पञ्चमकुलकरः । सम० १५३ ।

खेम–क्षेमं–शिवम् । दश० २५८ । लब्धस्य च परिपालनं क्षेमम् । उत्त० २८३ । क्षेमं–राजविड्वरशून्यम् । दश० २२२ । सुस्थम् । उत्त० ३१३ । व्याध्यभावेन क्षेमत्वम् । उत्त० ५१० । परचक्राद्युपद्रवरहितम् । उत्त० ३५१ । क्षेमः–गुणोदाहरणे जितशत्रुराज्ञो मन्त्री । आव० ८१९ ।

खेम कुसल–क्षेमकुशलः–अनर्थानुद्भवानर्थप्रतिघातरूपः । ज्ञाता० ८९ ।

खेमते–क्षेमकः–अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य पञ्चममध्ययनम् । अन्त० १८ । क्षेमकः–गाथापतिविशेषः । अन्त० २३ ।

खेमपया–क्षेमपदानि–रक्षणस्थानानि । आचा० ४३० ।

खेमपुरा–खेमपुरा, राजधानी । जं० प्र० ३४५ ।

खेमपुरीओ–महाविदेहे विजयराजधानी । ठाणा० ८० ।

खेमल्लो–क्षेमिलो नाम शकुनज्ञाता । आव० १९७ ।

खेमा–क्षेमानाम्ना राजधानी । जं० प्र० ३४४ । क्षेमाणि–परकृतोपद्रवरहितानि । जं० प्र० ७६ । प्रज्ञा० ८६ । क्षेमा अशिवाभावात् । औप० २ ।

खेमाओ–महाविदेहे विजयराजधानी । ठाणा० ८० ।

खेमियं–क्षेमम् । गणि० ।

खेय–खेदः श्रमः संसारपर्यटनजनितः अभ्यासः । आचा १३२ । संयमः, खेदयत्यनेन कर्मेति खेदः संयमः । उत्त० ४१९ । खेदः–अग्निव्यापारः । आचा० ५३ ।

खेयण्ण–अग्निव्यापारं यो जानातीति खेदज्ञः । आचा०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३ । निपुणः । आचा० १५६,२७४ । जन्तुदुःखपरिच्छेत्तारः । आचा० १७९ । क्षेत्रज्ञः–निपुणः । आचा० ५३ । खेदज्ञः । आव० ५५५ ।

खेयन्न–खेदज्ञः–निपुणः । सूत्र० २५८ । खेदः–अभ्यासस्तेन जानातीति खेदज्ञः । आचा० १३२ । खेदज्ञः–गीतार्थः । ओघ० २०२ । ज्ञानी । नि० चू० प्र० २०१ आ । सर्वज्ञः । सूत्र० ३७० । तीर्थकृत् । सूत्र० २९६ । क्षेत्रज्ञः–संसक्तविरुद्धद्रव्यपरिहार्यकुलादिक्षेत्रस्वरूपपरिच्छेदकः । आचा० १३२ ।

खेयाणुगए–खेदयत्यनेन कर्मेति खेदः–संयमस्तेनानुगतो युक्तः खेदानुगतः । उत्त० ४१९ ।

खेल–श्लेष्मा । ओघ० १८६ । विशे० ३७९ । उत्त० २९१ । ठाणा० ३४३ । आव० ४७, ४३२, ५६४, ६१६, ७६५ । गोरसभाविता पोत्ता खेलो भन्नत्ति । नि० चू० द्वि० १८ आ । निष्ठीवनः । ओघ० १८६ । भग० ८७ । औप० २८ । प्रश्न० १०५ । सम० ११ । कफः । जं० प्र० १४८ । कण्ठमुखश्लेष्मा । भग० १२२ । मुखविनिर्गतः श्लेष्मा । उत्त० ५१७ । निष्ठीवनम् । ज्ञाता० १०३ ।

खेलइ–क्रीडति । उत्त० १४७ ।

खेलण–क्रीडा । नि०चू० द्वि ११९ आ । खेलति क्रीडति । व्य० द्वि० ८ अ ।

खेलणगं–क्रीडनकम् । आव० २९० ।

खेलन्ति–क्रीडन्ति । आव० २०५ ।

खेलमल्लग–श्लेष्ममल्लकः । दश० ३७ ।

खेलमल्लो–श्लेष्ममल्लकम्, श्लेष्मशरावः । आव० ४३२ । श्लेष्मकुण्डिका । आव० ३२१ ।

खेलसिंघाण–श्लेष्मसिङ्घानम् । आव० ८३२ ।

खेलासव–खेलनिष्ठीवनं तदाश्रवति–क्षरतीति खेलाश्रवः । ज्ञाता० १४७ ।

खेलूडे–अनन्तकायभेदः । भग० ३०० ।

खेलेज्ज–खेलयेत् । बृ० प्र० २३२ आ ।

खेलेसु– । प्रज्ञा० ५० ।

खेलौषधिः–औषधिविशेषः । ठाणा० ३३२ ।

खेल्लइ–क्रीडति । आव० ४०१ ।

खेल्लामो–क्रीडामः । उत्त० २८९ ।

खेवणि–क्षेपिण्यः–हथनालिरिति लोकप्रसिद्धा । जं० प्र० २०६ ।

खेवा–आरुहंतस्स उवरुवरिं हत्थालंबणे खेवा । नि० चू० द्वि० ६४ अ ।

खेवियं–क्षिपितं–पापम् । उत्त० ४५९ ।

खेवो–क्षेपः, परहस्ताद्द्रव्यस्य प्रेरणम् । अधर्मद्वारस्य विंशतितमं नाम । प्रश्न० ४३ ।

खोअ–इक्षुरसास्वादः समुद्रः । अनु० ९० ।

खोअवर–इक्षुवरः, द्वीपविशेषः । अनु० ९० ।

खोइय–क्षोभितः, विसंयोजितः । उत्त० १०० ।

खोओदए–क्षोदोदकम्, इक्षुरससमुद्रजलम् । जीवा० २५ ।

खोखरं–प्रतोदः कशा वा । आव० २६१ ।

खोखुब्भमाणो–क्षोक्षुभ्यमाणः, भृशं क्षुभ्यमाणः । औप० ४७ । महामत्स्यादिभिर्भृशं व्याकुलीक्रियमाणः ।

खोटकक्षेपः–हडीबन्धनम् । प्रश्न० १६४ ।

खोटकाः–समयप्रसिद्धाः स्फोटनात्मकाः । उत्त० ५४१ ।

खोट्टिज्जिहि–क्षेप्स्यते । आव० ९५ ।

खोट्टेउं–खटत्कर्त्तुम्, पिट्टितुम् । ओघ० १९४ ।

खोड–कोणः । आव० ७४२ । जं रायकुलस्स हिरण्णादि दव्वं दायव्वं । नि० चू० तृ० ८९ आ । प्रदेशः । बृ० प्र० २३५ आ । खोटः–राजकुले हिरण्यादि द्रव्यदातव्यम् । व्य० प्र० ४५ अ ।

खोडा–खोटकाः । ओघ० १०९ । स्थाणौ । नि० चू० तृ० ७२ आ । खोटका ते च त्रयस्त्रयः प्रमार्जनानां त्रयेण त्रयेणान्तरिताः–कार्या इति । ठाणा० ३६१ ।

खोडि–महाकाष्ठम् । प्रश्न० ५७ ।

खोडियं–नाशितम् । आव० ६६४ ।

खोडिया– । नि० चू० द्वि० १०४ आ ।

खोडी–पेटा । आव० २९८ ।

खोडेयव्वा–निषेधयितव्या । भग० ५८३ ।

खोडेहामि–स्खलयिष्यामि । आव० ३२२ ।

खोड्डाहारा–क्षौद्राहाराः–मधुभोजिनः, क्षीणं वा–तुच्छावशिष्टं तुच्छधान्यादिकं आहारो येषां ते । जं० प्र० १७१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खोतोदए–इक्षुसमुद्रे क्षोदोदकम् । प्रज्ञा० २८ ।
खोद–क्षोदः–इक्षुरसः । जीवा० १६८ । जं० प्र० ४२ ।
खोद्दाहार–मधुभोजिनः भूक्षोदेन वाऽऽहारो येषां ते–क्षोदाहाराः । भग० ३०६ ।
खोभ–क्षोभः संभ्रमः । आव० ७८४ ।
खोभण–क्षोभः–वेदोदयरूपः । पिण्ड० १६० ।
खोभिअ–क्षोभितः–स्वस्थानाच्चालितः । जं० प्र० ३७ ।
खोभिए–क्षोभः आकस्मिकः संत्रासः । ओघ० १६ ।
खोभितो–क्षोभितः । उत्त० १६८ ।
खोभित्तए–क्षोभयितुं–एतान्येवं परिपालयाम्युतोज्झामीति क्षोभविषयान् कर्तुं क्षोभयितुं संशयोत्पादनतः । ज्ञाता० १३४ ।
खोभियं–क्षोभितं–स्वस्थानाच्चालितः । जीवा० १६२ ।
खोभेति–क्षोभयति, ईषद्भूमिमुत्कीर्य तत्प्रवेशनेन । ज्ञाता० ६४ ।
खोम–क्षौमं–कार्पासिकम् । जीवा० २६६ । जीवा० २३२ । देववस्त्रम् । आव० १८० । दुकूलं, कार्पासिकं वस्त्रम् । जं० प्र० ५५ । क्षौमं, सामान्यतः कार्पासिकं अतसीमयम् । जं० प्र० १०७ ।
खोमजुअलं–क्षौमयुगलम् । आव० १२४ । कार्पासिकवस्त्रम् । प्रश्न० १३४ ।
खोमजुगलं–क्षौमयुगलम् । आव० ५६२ ।
खोमजुयलं–कार्पासिकवस्त्रयुगलम् । उपा० ५ । क्षोमयुगलम् । ज्ञाता० १२८ ।
खोमिते–कार्प्पासिकाम् । ठाणा० १३८ ।
खोमिय–क्षौमिकं, सामान्यकार्पासिकम् । आचा० ३९४ । क्षौमिकं–कार्पासिकं, वृक्षेभ्यो निर्गतं वा, अतसीमयं वा । प्रश्न० ७१ । दुकूलं–कार्प्पासिकमतसीमयं वा वस्त्रम् । सूर्य० २९३ । कार्पासिकम् । आचा० ३९३ ।
खोमियकप्पाय–क्षौमिककार्पासः । ठाणा० ३३९ ।
खोयरसघडए–इक्षुरसघटः । आव० १४५ ।
खोयरसो–क्षोदरसः–इक्षुरसः । जीवा० २६५, ३५१ ।
खोयवरो–क्षोदवरः, द्वीपविशेषः । जीवा० ३५५ ।
खोरए–खोरकं–तापसभाजनम् । दश० ५६ । क्षौरकम् । आव० ६२५ ।
खोरगं–द्रव्यभृतं भाजनम् । नि० चू० तृ० १३६ आ ।
खोरयं–रूप्यमयमहाप्रमाणभाजनविशेषः । नंदी० १५९ ।
खोरा–भुजपरिसर्पविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।
खोरुसताए–विरुद्धराज्यत्वेन । नि० चू० द्वि० १० आ ।
खोल–राजपुरुषविशेषः । आव० ८२१ । मद्यस्य किट्टविशेषः । प्र० बृ० २६८ आ । मद्याधःकर्दमः । आचा० ३४८ ।
खोलपक्कस–मद्यकीट्टः । नि० चू० ६६ आ ।
खोला–खोलाः, हेरिकाः, गुप्तचराः । राज्ञा नियुक्ताः । पिण्ड० ४६ । सीसखोला । बृ० द्वि० १०२ अ । गोरसभावितानि पोतानि । बृ० द्वि० १०० आ । बृ० प्र० १२६ अ । गोरसभाविता पेत्ता । नि० चू० द्वि० १८ आ ।
खोल्लं–कोत्थरं । नि० चू० द्वि० १३३ अ । देशीशब्दत्वात् कोटरम् । बृ० प्र० १५२ आ ।
खोसियं–खोसितं–जीर्णप्रायम् । पिण्ड० १०० ।
ख्यातं–स्वसंवेदनतः प्रसिद्धम् । उत्त० २५८ ।
ख्यातसत्यवृत्तिः–प्रसिद्धसत्यवृत्तिः । नंदी० १५६ ।

ग

गंग–गङ्ग–यस्माद्द्वैक्रिया उत्पन्ना स आचार्यः । आव० ३१२ । द्वैक्रियनिन्हवगुरुर्धनगुप्तशिष्यः । आव० ३१७ । धनगुप्तस्य शिष्यः । द्वैक्रियविषयो निन्हवः,पञ्चमो निन्हवः । ठाणा० ४१० । गाङ्गः–पुरुषपुण्डरीकधर्माचार्यः । आव० १६३ टी । गङ्गाचार्यः । उत्त० १५३ ।
गंगदत्त–मुनिविशेषः । भग० ७०६ । निरय० २२, ३६ । षष्ठबलदेववासुदेवयोः पूर्वभविको धर्माचार्यः । सम० १५३ । हस्तिनापुरे गृहपतिः । भग० ७०७ । गङ्गादत्तः । कृष्णवासुदेवपूर्वभवः । सम० १५३ । आव० १६३–टी० । मंकातीगाहावतीए जेट्ठपुत्तो । अन्त० १८ । वासुदेवपूर्वभवः । आव० ३५८ । रागान्निदानकृत् । भक्त० ।
गंगदत्ता–गङ्गदत्ता । सागरदत्तसार्थवाहपत्नी । विपा० ७४ ।
गंगदेवो–गङ्गदेवः–धनगुप्तशिष्य आचार्यः । उत्त० १६५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंगा–गङ्गा नदीविशेषः, यत्र नन्दो नाम नाविकः । आव० ३८६,१४३ । नदीविशेषः । ज्ञाता० ६४ । ठाणा० ७५ । हिमवद्वर्षधरपर्वतस्य पञ्चमं कूटम् । ठाणा० ७१ । गङ्गा नदीविशेषः । जं० प्र० २६० । गङ्गा द्वैक्रियोत्पत्तिस्थानम् । विशे० ६३४ ।

गंगाकुंड–यत्र हिमवतो गङ्गा निपतति तद्गङ्गाकुण्डम् । जं० प्र० ८७ । कुण्डविशेषः । नंदी० २२८ ।

गंगाकूलं–गङ्गाकूलं–गङ्गातटम् । उत्त० १२६ ।

गंगादीव–गङ्गाद्वीप इति नाम्ना द्वीपः । जं० प्र० २६३ ।

गंगादेवीकूडे–गङ्गादेवीकूटम् । जं० प्र० २६६ ।

गंगापवायद्दहे–गङ्गप्रपातद्रहः–हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्तिपद्मद्रदस्य पूर्वतोरेण निर्गत्य क्रमेण यत्र प्रपतति सः । द्रहविशेषः । ठाणा० ७४ ।

गंगायडं–गङ्गातटम् । आ० ६८८ ।

गंगावत्तणकूडे–गङ्गावर्तननाम्नि कूटे । जं० प्र० २६० ।

गंगावालुआ–गङ्गावालूका–गङ्गापुलिनगतधूली । अनु० १६२ ।

गंगेए–पार्श्वापत्यः । भग० ४३६ ।

गंगेय–भगवत्यां नवमशतके द्वात्रिंशत्तम उद्देशकः । भग० ४२५ । गङ्गापत्यः । ज्ञाता० २०८ ।

गंगेया–अणगारविशेषः । भग० ४५५, ६१७ ।

गंछिय–कारुजातिविशेषः । जं० प्र० १६४ ।

गंज–गुच्छविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । भग० ८०३ । गञ्जः–भोज्यविशेषः । प्रश्न० १५३ ।

गंजसाला–जत्थ धण्णं दलिज्जति सा गंजसाला । गंजा–जवा जत्थ अच्छंति सा गंजसाला । नि०चू०प्र० २७२ आ ।

गंजा–जवा । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

गंठ–ग्रन्थः–शब्दसंदर्भः । जीवा० २५५ ।

गंठि–ग्रन्थिः–कार्षापणादिपुट्टलिका । औप० २ । पर्वभङ्गस्थानं वा । आचा० ५६ । पर्वग्रन्थिः । जीवा० ३५५ । ग्रन्थि–घनोरागद्वेषपरिणामः । उत्त० ६४५ । ग्रन्थिः–गंठित्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगंथि व्व । जीवस्स कम्मजणिओ घणरागद्दोसपरिणामो । विशे० ५३२ ।

गंठिगो–ग्रन्थिकः–ग्रन्थिकसत्वः, ग्रन्थिभेदं कर्त्तुमसमर्थः । सूत्र० ३७३ ।

गंठिछेयओ–ग्रन्थिच्छेदकः । आव० ७०४ ।

गंठिभेए–ग्रन्थि–द्रव्यसम्बन्धिनं भिन्दन्ति–घुर्घुरकद्विकर्तिकादिना विदारयन्तीति ग्रन्थिभेदाः । उत्त० ३१२ ।

गंठिभेओ–ग्रन्थिभेदः–चौरविशेषः । प्रश्न० ३८ ।

गंठिभेयणो–घुर्घुरादिना यो ग्रन्थीः छिन्दति सः ग्रन्थिभेदकः । विपा० ५६ ।

गंठिम–ग्रन्थिमं–ग्रन्थनेन निष्पन्नं मालावत् । प्रश्न० १६० । ग्रन्थिमं–यत्सूत्रेण ग्रथितम् । जं० प्र० १०४ । यद् ग्रथ्यते सूत्रादिना ग्रन्थिमम् । ज्ञाता० ५६ ।

गंठियसत्त–ग्रन्थिकसत्त्वः–अभिन्नग्रन्थिजीवः । विशे०५३७ ।

गंठियसत्ता–ग्रन्थिगसत्त्वाः–ये ग्रन्थिप्रदेशं गत्वापि तद्भेदाविधानेन न कदाचिदुपरिष्टाद् गन्तारः ते चाभव्या एव । उत्त० ६४५ ।

गंठी–ग्रन्थि–पर्व, सामान्यतो भङ्गस्थानम् । बृ० प्र० १६१ आ । ग्रन्थिविहितम् । बृ०प्र० ८३ आ । आव० ८४५ । गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । ग्रन्थिः पर्व, सामान्यतो भङ्गस्थानं वा । प्रज्ञा० ३६ ।

गंड–वराङ्गः । जीवा० २१३ । पिण्ड० १५४ । पुरस्सरः । प्रज्ञा० २५४ । जीवा० २८२ । काण्डं–समूहः, गण्डो वा दण्डः । ज्ञाता० १२५ । गडु । उत्त० ३३८ । गण्डः–कपोलः । भग० १७४ । गंडमाला । नि० चू० प्र० १८६ अ । व्रणविशेषः । सूत्र० ६८ । गण्डं–अपद्रव्यम् । सूत्र० १४८ । वातपित्तश्लेष्मसन्निपातजं चतुर्द्धा गण्डं तदस्यास्तीति गण्डी–गण्डमालावान् । प्रश्न० १६१ । गोलम् । जं० प्र० ४२३ । व्याधिविशेषः । आव० ६२३ । गण्डम् । आव० ८२० । गण्डः–हस्तः । भग० ३१३ । स्तना । नि० चू० प्र० १८० अ । कपोलः । आचा० ३८ । प्रज्ञा० ८८ । गण्डः–कपोलैकदेशः । प्रज्ञा० १०१ । अमिलनचामरदण्डः । भग० ४८० । गण्डः–गण्डीपदश्चतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ । कपोलः । जीवा० १६२ । वारगः । जं० प्र० ५७ । स्तनः–कुचः । पिण्ड० १२२ । नि० चू० प्र० १२८ आ ।

गंडइया–गण्डिका–नदीविशेषः । आव० २१४ ।

गंडओ–मरुकः । आव० ३७२ । दंडपती । नि० चू० प्र० १५८ आ । गण्डकः–नापितः । उद्घोषणाकारकः ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघ० २०२ ।

गंडग–गंडकः–श्रवणे दृष्टान्तः । ग्रहणकाले प्राप्ते दृष्टान्तः । आव० ७४५ ।

गंडथणी–उण्णयथणी । नि० चू० द्वि० ६४ अ ।

गंडभागः–कपोलदेशः । जीवा० २७३ ।

गंडमाणिया–गण्डयुक्ता माणिका । राज० १४१ ।

गंडय–वनजीवाः । मर० ।

गंडरेहा–गण्डरेखा–कपोलपाली । जं०प्र० ११५ । प्रश्न० ८४ ।

गंडलीतोकाउं–खण्डीकृत्य । उत्त० २१६ ।

गंडलेहा–गण्डलेखा–कपोलपाली । जीवा० २७६ । कपोलपत्रवल्ली । औप० १३ । कपोलविरचितमृगमदादिरेखा । ज्ञाता० १३ ।

गंडवच्छासु–गण्डं–गडु, इह चोपचितपिशितपिण्डरूपतया गलत्पूतिरुधिरार्द्रतासम्भवाच्च तदुपमत्वाद्गण्डे कुचावुक्तौ ते वक्षसि यासां तास्तथाभूतास्तासु । उत्त० २६७ ।

गंडवाणिया–गण्डपाणिका–वंशमयभाजनविशेष एव यो गण्डेन–हस्तेन गृह्यते डल्लातो लघुतरः । भग० ३१३ ।

गंडविब्बोयणे–सुपरिकर्मितगण्डोपधानम् । भग० ५४० ।

गंडशैलः–ग्रावाणः । नंदी० १५३ ।

गंडसेल–गण्डशैलः–उपलः । उत्त० ६८६ ।

गंडा–गण्डीपदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

गंडाग–गण्डको–नापितः । आचा० ३२७ ।

गंडाति–रोगविशेषः । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

गंडिआ–गण्डिका–सुवर्णकाराणामधिकरणी (अहिगरणी) स्थापनी । दश० २१८ ।

गंडिक–गंडिकानुयोगः–यस्तु कुलकरादिवक्तव्यता गोचरः स गण्डिकानुयोगः । ठाणा० २०० ।

गंडिया–गण्डिका–खण्डविशेषः । भग० ७०५ । एकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयः गण्डिकाः । सम० १३२ । एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धतिः । नंदी० २४२ । सुवण्णगारस्स भन्नइ, जत्थसुवण्णगं कुट्टेइ । द० चू० १११ ।

गंडियाणुयोगे–इक्ष्वादीनां पूर्वापरपरिच्छिन्नो मध्यभागो गण्डिका गण्डिकेव गण्डिका–एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धतिः, तस्या अनुयोगो गण्डिकानुयोगः । नंदी० २४२ । भरतनरपतिवंशजानां निर्वाणगमनानुत्तरविमानवक्तव्यता व्याख्यानग्रन्थः । ठाणा० ४६१ ।

गंडी–गण्डी–गण्डमालावान् । प्रश्न० १६१ । अहिकरणविशेषः । नि० चू० प्र० २२ अ । वातपित्तश्लेष्मसन्निपातजं चतुर्द्धा गण्डं, तदस्यास्तीति गण्डी । आचा० २३४ । गण्डमस्यास्तीति गण्डी गण्डमालादि । नि० चू० द्वि० १४८ अ । गण्डमस्यास्तीति गण्डी गण्डमालावान् । आचा० २३३ । गण्डमस्यास्तीति गण्डी । यदिवोच्छूनगुल्फपादः स गण्डी । आचा० ३८६ । सुवर्णकारादीनामधिकरणी गण्डिका तद्वत्पदानि येषां ते तथा ते हस्त्यादयः । ठाणा० २७३ । नि० चू० प्र० १८१ अ । पञ्चपुस्तके प्रथमः । ठाणा० २३३ । पद्मकर्णिका । उत्त० ६६६ । तुल्यबाहल्यपृथक्त्वं पुस्तकम् । बृ० द्वि० २१६ आ । गण्डीपुस्तकं । यद् बाहल्यपृथक्त्वैस्तुल्यं दीर्घम् । आव० ६५२ । । गच्छति–प्रेरितः प्रतिपथादिना डीयते च कूर्दमानो विहायो गमनेनेति गण्डिः । दुष्टाश्वो दुष्टगोणो वा । उत्त० ४६ ।

गंडीतेंदुगो–गण्डीतिन्दुकः–वाणारस्यां तिन्दुकयक्षायतने यक्षः । उत्त० ३५६ ।

गंडीपद–व्याधिविशेषः । आचा० ३६० । चतुष्पदभेदः । सम० १३५ ।

गंडीपदा–गण्डीव–सुवर्णाकाराधिकरणीस्थानमिव पदं येषां ते गण्डीपदाः–हस्त्यादयः । प्रज्ञा० ४५ ।

गंडीपया–गण्डीपदाः हस्त्यादिकाः । जीवा० ३८ । गण्डीपद्मकर्णिका तद्वृत्ततया पदानि येषां ते गण्डीपादाः–गजादयः । उत्त० ६६६ ।

गंडीपोत्थगो–दीहो बाहल्लपुहत्तेण तुल्लो चउरंसो गंडीपोत्थगो । नि० चू० द्वि० ६० आ ।

गंडीव–सुवर्णकाराधिकरणीस्थानामिव । प्रज्ञा० ४५ ।

गंडुवहाण–गण्डोपधानम् । अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके तृतीयो भेदः । आव० ६५२ । गण्डोपधानम् । ठाणा० २३४ ।

गंडुवहाणिगा–उवहाणगस्सोवरिगंडपदेसे जा दिज्जति सा गंडुवहाणिगा । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

गंडूकः–पुष्पलम्बूसकः । जीवा० २५३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंडूपदः-पृथिव्याश्रितो जीवविशेषः । आचा० ५५ ।

गंडूयलगा-द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ ।

गंडूलया-अलसाः । प्रश्न० २४ ।

गंडोवहाणं-गण्डोपधानं-गलमसूरिका । बृ० द्वि० २२० अ ।

गंडोवहाणियाओ-गण्डोपधानिकाः-गल्लमसूरिकाणि । जं० प्र० २८५ ।

गंत-गत्वा । उत्त० ५९७ । भग० ६३ ।

गंतव्वं-गन्तव्यं युगमात्रभून्यस्तदृष्टिनेत्यर्थः । ज्ञाता० ६१ ।

गंतुंपच्चागता-उपाश्रयान्निर्गतः सन्नेकस्यां गृहपङ्क्तौ भिक्षमाणः क्षेत्रपर्यन्तं गत्वा प्रत्यागच्छन् पुनः द्वितीयायां गृहपङ्क्तौ यस्यां भिक्षते सा गत्वा प्रत्यागता, गत्वा प्रत्यागतं यस्यामिति च । ठाणा० ३६५ । नि० चू० तृ० १२ अ ।

गंतुकामं-योज्यमानम् । बृ० प्र० ७९ आ ।

गंतुकामा-गन्तुकामः यः सदैव गन्तुमना व्यवतिष्ठते । आव० १०० ।

गंत्रिका-युग्यविशेषः । आचा० ६० ।

गंत्रीढक्खनकं-इड्डुरम् । भग० ३१३ ।

गंथ-ग्रन्थः ज्ञानादिः । ठाणा० ४६५ । परिग्रहम् । बृ० प्र० १३५ अ । ग्रथ्यते-बध्यते कषायवशगेनात्मनेति ग्रन्थः । अथवा ग्रथ्नाति-बध्नात्यात्मानं कर्मणेति ग्रन्थः । उत्त० २६० । विप्रकीर्णार्थग्रन्थनाद् ग्रन्थः । अनु० ३८ । ग्रन्थः-अष्टप्रकारकर्मबन्धः । आचा० ३८ । सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे चतुर्दशमध्ययनम् । सम० ३१ । आव० ६५१ । ग्रन्थः-शालकादिसम्बद्धस्तद्भार्या तत्पुत्रादिः । प्रश्न० १४० । ग्रन्थः-ग्रथ्यतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वाऽर्थ इति ग्रन्थः । आव० ८६ । ग्रन्थः-सूत्रकृताङ्गस्य चतुर्दशमध्ययनम् । उत्त० ६१४ । गृथ्यते-विरच्यत इति ग्रन्थः । विशेषा० ५९१ । द्रव्यभावभेदभिन्नः । इह तु ग्रन्थं द्रव्यभावभेदभिन्नं यः परित्यजति शिष्य आचारादिकं वा ग्रन्थं योऽधीतेऽसो अभिधीयते । आदानपदाद् गुणनिष्पन्नत्वाच्च ग्रन्थः । सूत्र० २४१ । ग्रन्थः श्रुतस्य पर्यायः । विशे० ४२३ ।

गंथभेदगो- । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

गंथा-ग्रन्थात्-महतो द्रव्यव्ययात् । आचा० २७२ ।

गंथिअसत्ता-ग्रन्थिकसत्त्वाः-अभिन्नग्रन्थयः । उत्त० ७१३ ।

गंथिभेयग-ग्रन्थिभेदकाः-न्यासकान्यथाकारिणः घुर्घुरकादिना वा ये ग्रन्थीन् छिन्दन्ति । ज्ञाता० २३९ ।

गंथिम-ग्रन्थः-सन्दर्भः सूत्रेण ग्रन्थनं तेन निर्वृत्तं ग्रन्थिमं मालादि । ठाणा० २८६ । ग्रन्थिमं-ग्रन्थननिर्वृत्तं सूत्रग्रथितमालादि । भग० ४७७ । कौशलातिशयाद् ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितं रूपकम् । अनु० १३ । ग्रन्थनं-ग्रन्थस्तेन निर्वृत्तं ग्रन्थिमम् । जीवा० २५३ । यत्सूत्रेणग्रथितम् । जीवा० २६७ । ज्ञाता० १८० ।

गंथी-ग्रन्थिः-या दवरकस्यादौ बध्यते । जीवा० २३७ ।

गंथेहिं-ग्रन्थैः-अङ्गानङ्गप्रविष्टैः । आचा० २९१ ।

गंधंगं-गन्धाङ्गम् । उत्त० १४२ ।

गंध-गन्धः-विशोधिकोटिरूपः । सूत्र० १४५ । गन्धः-कोष्ठपुटादिलक्षणः । आव० १२९ । गन्धः वासादिः । जं० प्र० ४११ । गन्धः-गन्धाङ्गम् । जीवा० १३६ । गन्धः-गन्धवासादिः । जीवा० २४४ । वासः । जीवा० २४५ । गन्धः-पटवासादिः । पिण्ड० ९६ । आमोदः । उत्त० ३६९ । गन्ध्यते-आघ्रायत इति गन्धः । अनु० ११० । गन्धाः-वासाः । जं० प्र० १९१ । विशुद्धकोटिः । बृ० प्र० ५१ अ । नासिकेन्द्रियम् । गन्ध्यते-आघ्रायते शुभोऽशुभो वा गन्धोऽनेनेति गन्धः । प्रज्ञा० ५९९ । गन्धः-कोष्ठपुटपाकः । भग० २०० । कोष्ठपुटादिः । दश० ९१ ।

गंधकासाइ-गन्धकाषायी । आव० १२३ ।

गंधकासाइआ-गन्धकाषायिकी-सुरभिगन्धकषायद्रव्यपरिकर्मिता लघुशाटिका । जं० प्र० २७५, ४२० ।

गंधकासाइए-गन्धप्रधानया कषायरक्तया शाटिकयेत्यर्थः । भग० ४७७ ।

गंधकासाई-गन्धप्रधाना कषायेण रक्ता शाटिका गन्धकषायी । उपा० ४ ।

गंधगहणेन-पूतिर्गृह्यते । आचा० १३१ ।

गंधचंगेरी-भाजनविशेषः । जीवा० २३४ ।

गंधजुत्ती-गन्धानां-गन्धद्रव्याणां श्रीखण्डादीनां लहसणा-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीनां च युक्तयो गन्धयुक्तयः । उत्त० ३० ।

गंधट्टए–गन्धाट्टकः–गन्धद्रव्यक्षोदः । ठाणा० ११७ । गन्ध–द्रव्याणामुपलकुष्ठादीनां 'अइओ' त्ति चूर्णं गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम् । उपा० ३ ।

गंधणा–गन्धना–अमानी सर्पः । सर्पजातिविशेषः । दश० ३७ । गन्धना–सर्पजातिविशेषः । उत्त० ४६५ ।

गंधद्धणि– गन्धघ्राणिः– यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्घ्राणेन्द्रियस्य तृप्तिरूपजायते तावती पुद्गलसंहतिरुपचाराद् गन्ध-घ्राणिः । जं० प्र० ३० । गन्धस्तेन या घ्राणिः–तृप्तिः गन्धघ्राणिः–गन्धोत्कर्षः । ज्ञाता० २६ । सुरभिगन्धगुणः तृप्तिहेतुः । ज्ञाता० १२६ । यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्गन्धविषये गन्धघ्राणिरुपजायते तावती गन्धपुद्गलसंहतिरुपचारात् गन्धघ्राणिरित्युच्यते । राज० ७ । यावद्भिर्गन्धपुद्गलै-र्गन्धविषये घ्राणिरुपजायते तावती गन्धपुद्गलसंहति-रुपचाराद् गन्धघ्राणिः । जीवा० १८६ ।

गंधपलिआमं–गंधामं–गंधपलिआमं अंबयं आदिसद्दातो मातुलुंगं वा पक्कं अण्णेसिं आमयाणं मज्झे छुब्भति तस्स गंधेणं ते अण्णे आमया पच्चंति जं तत्थ ण पच्चंति तं गंधामं भण्णति नि० चू० द्वि० १२५ आ । यदपक्कफलं तत् गंधपर्यायामं । बृ० प्र० १४३ आ ।

गंधपुडियाइ–गन्धपुटिकादि । आव० १६८ ।

गंधपुलागं–विकटपलांडुलसुणादिग्युत्कटगन्धि । बृ० तृ० २११ अ ।

गंधप्पिओ–गन्धप्रियः घ्राणेन्द्रियदृष्टान्ते कुमारविशेषः । आव० ४०१ । नि० चू० प्र० ११७ अ ।

गंधमादण–गन्धमादनः–गजदन्तकगिरिविशेषः । प्रश्न० ११६ । पर्वतविशेषः । ठाणा० ६८, ३२६ ।

गंधमायण–पर्वतविशेषः । प्रश्न० १६१ । ठाणा० ७१ । गन्धेन स्वयं माद्यतीव मदयति वा तन्निवासिदेवदेवीनां मनांसि इति गन्धमादनः । जं० प्र० ३१५ । गन्धमादनः–वक्षस्कारगिरि । जं० प्र० ३१२ । गन्धमादनः वक्ष-स्कारपर्वतविशेषः । जीवा० २६३ ।

गंधमायणकूडे–गन्धमादनकूटम् । जं० प्र० ३१३ ।

गंधमायणा–गजदन्तविशेषः । ठाणा० ८० ।

गंधर्वकण्ठः–गन्धर्वकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः । जीवा० २३४ ।

गंधर्वानीकं–सैन्यविशेषः । जीवा० २१७ ।

गंधवट्टए–गन्धचूर्णम् । विपा० ८६ ।

गंधवट्टओ–गन्धवर्त्तकः । आव० १२३ ।

गंधवट्टयं–गन्धवर्त्तकं–गन्धद्रव्यचूर्णपिण्डम् । जं० प्र० ३६४ ।

गंधवट्टि–गन्धवर्त्तिः–गन्धद्रव्याणां गन्धयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निर्वर्त्तितगुटिका । सम० १३८ ।

गंधवट्टिभूए–गन्धवर्त्तिभूतं–सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्यगु-टिकाकल्पम् । औप० ५ ।

गंधवट्टिभूया–गन्धवर्त्तिभूतानि–सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्य-गुटिकाकल्पानि । प्रज्ञा० ८७ । सौरभ्यातिशयाद् गन्ध-द्रव्यगुटिकाकल्पाः । जं० प्र० ५१ ।

गंधवत्तिभूए–गन्धवर्त्तिभूतः–सौरभ्यवर्त्तिभूतः । जीवा० २०६ ।

गंधवासा–गन्धवर्षः–कोष्ठपुटपाकवर्षणम् । भग० २०० ।

गंधवुट्ठी–गन्धवृष्टिः–कोष्ठपुटपाकवृष्टिः । भग० १६६ ।

गंधव्वं–गन्धर्व्वं नाट्यादि । जीवा० १६४ । गन्धर्वं–नृत्यं गीतयुक्तम् । विपा० ४५ । गान्धर्वं–गीतम् । आव० ५६५ । गान्धर्व्वं नगरविकुर्वणम् । आव० ७३५ । गन्धर्वं–मुरजादिध्वनिसनाथं गानम् । भग० ३२३ । गन्धर्वैः कृतं गान्धर्वं नाट्यादि । जं० प्र० ३६ । पद-स्वरतालावधानात्मकम् । जं० प्र० ३६ । गन्धर्वः–गन्धर्वजातीयो देवः । प्रज्ञा० ६६ । जीवा० १७२ । एकविंशतितमो मुहूर्त्तः । जं० प्र० ४६१ । सूर्य० १४६ । गान्धर्वः–विवाहविशेषः । आव० १७४ ।

गंधव्वगणो–गन्धर्वगणः–गन्धर्वसमुदायः । प्रज्ञा० ६६ ।

गंधव्वघरगं–गन्धर्वगृहकं–गीतनृत्याभ्यासयोग्यं गृहकम् । जीवा० २०० ।

गंधव्वघरगा–गीतनृत्याभ्यासयोग्यानि गृहकाणि । जं० प्र० ४५ ।

गंधव्वछाया–गन्धर्वछाया । प्रज्ञा० ३२७ ।

गंधव्वणगरं–गन्धर्वनगरं–सुरसदनप्रासादोपशोभितनगरा-कारतया तथाविधनभःपरिणतपुद्गलराशिरूपम् । जीवा० २८३ । अनु० १२१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंधव्वणागदत्तो–गन्धर्वनागदत्तः–कषायप्रतिक्रमणोदाहरणे गान्धर्वप्रियः श्रेष्ठिपुत्रः । आव० ५६५ ।

गंधव्वनगर–गन्धर्वनगरं-आकाशे व्यन्तरकृतं नगराकार-प्रतिबिम्बम् । भग० १९६ ।

गंधव्वनयर–गन्धर्वनगरं-यत् चक्रवर्त्यादिनगरस्योत्पात-सूचनाय संध्यासमये तस्य नगरस्योपरि द्वितीयं नगरं प्राकाराट्टलकादिसंस्थितं दृश्यते । व्य० द्वि० २४१ अ ।

गंधव्वपन्नगो–गन्धर्वप्रज्ञकः । आव० १४४ ।

गंधव्वलिवी–लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

गंधव्वसमय–गन्धर्वसमयः–नाट्यसमयः । जीवा० २६६ । जं० प्र० १०१ ।

गंधव्वा–नारुजातिविशेषः । जं० प्र० १९३ । वाणव्यन्तर-भेदविशेषः । प्रज्ञा० ६९ ।

गंधव्विया–गान्धर्विकाः–सङ्गीतकलानिपुणः । दश० ४४, ४५ ।

गंधसमिद्धो–गन्धसमृद्धः–गन्धिलावत्यां वैताढ्यपर्वते गान्धारजनपदे नगरविशेषः । आव० ११६ ।

गंधसमुग्गय–गन्धद्रव्यैरतिविशिष्टैः परिपूर्णं भृतः समुद्गकः गन्धसमुद्गकः । प्रज्ञा० ६०० ।

गंधसमुद्धं–विद्यामन्त्रद्वारविवरणे धनदेवनगरम् । पिण्ड० १४१ ।

गंधसयं–गन्धशतं-गन्धाङ्गशतम् । जीवा० १३५ ।

गंधहत्थी–गन्धहस्ती–हस्तीविशेषः । भग० ७ । अनुयोगप्रकाण्डः । व्य० प्र० २५८ ।

गंधहस्ती–आचार्यविशेषः । आचा० १ ।

गंधहारग–गन्धहारकः–चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

गंधांगं–वालकप्रियङ्गुपत्रकदमनकत्वक्कन्दनोशीरदेवदार्वादि । आचा० ६१ । जातिकुसुमादिद्रव्यः । आचा० ४१८ ।

गंधा–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । गंधयुक्तीकृता गंधा । नि० चू० प्र० १४४ आ ।

गंधापाति–नवमकूटः । ठाणा० ७२ ।

गंधावाती–गन्धापाती । ठाणा० ७१ ।

गंधारं–गान्धारं-जनपदविशेषः । उत्त० २९९, ३०४ । गान्धारः- द्रव्यव्युत्सर्गे देशविशेषः । आव० ७१६, ७२० । गन्धो विद्यते यत्र स एव गन्धारो, गन्धवाहविशेषः । ठाणा० ३९३ । गान्धारः गन्धो विद्यते यस्य स गन्धारः, स एव गान्धारः-गन्धवाहविशेषः । अनु० १२७ । वीतभयनगरे श्रावकः । उत्त० ९९ । जनपद-विशेषः । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।

गंधारओ–श्रावकविशेषः । आव० २९८ ।

गंधारगाम–सप्तस्वरे तृतीयः स्वरः, संगीते ग्रामविशेषः । ठाणा० ३९३ ।

गंधारजणवए–गान्धारजनपदः-गन्धिलावत्यां जनपदविशेषः । आव० ११६ ।

गंधारी–गान्धारी–बलकोट्टलघुभार्या । उत्त० ३५४ । अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य तृतीयमध्ययनम् । अन्त० । १५ । कृष्णवासुदेवस्य राज्ञी । अन्त० १८ । चत्वारि-महाविद्यायां द्वितीया । आव० १४४ ।

गंधावई–गन्धापाती; वृत्तवैताढ्यम् । जं० प्र० ३७९ । गन्धापाती वृत्तवैताढ्यः हरिवर्षस्य पर्वतः । जीवा० ३२९ ।

गंधिए–गंधिकाः-गन्धावासाः । भग० ४७७ ।

गंधिला–विजयविशेषः । ठाणा० ८० ।

गंधिलाइ–गन्धिलावत्याः-शीतोदोत्तरकूलवर्तिनोऽष्टमविजयः । जं० प्र० ३१४ ।

गंधिलावई–गन्धिलावती विजयः । जं० प्र० ३५७ ।

गंधिलावईकूडे–गन्धिलावतीकूटम् । जं० प्र० ३१३ ।

गंधिलावती–धातकीखण्डे विजयविशेषः । ठाणा० ८० ।

गंधिलावतीविजए–गन्धिलावतीविजयः । आव० ११६ ।

गंधिले–गन्धिलो विजयः । जं० प्र० ३५७ ।

गंधोदय–गन्धः–आमोदस्तत्प्रधानमुदकं–जलं गन्धोदकम् । उत्त० ३६९ । गन्धोदकं–कुङ्कुमादिमिश्रितम् । जं० प्र० ३९४ ।

गंधोवरए–गन्धापवरकः । दश० ६१ ।

गंभीर–गम्भीरः–अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अन्त० १ । गम्भीरः–परैरलब्धमध्यो निरूपम-ज्ञानवत्त्वेऽपि रहः कृतपरदुश्चरितानामपरिस्राविर्त्वात् हर्ष-शोकादिकारणसद्भावेऽपि तद्विकारादर्शनाद्वा । जं० प्र० १४९ । अलब्धमध्यभागः । जीवा० १८८ । अलब्ध-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यम् । ज्ञाता० २ । अतिमन्द्रः । जं० प्र० ५२६ । अलक्ष्यदैन्यादिविकारः । प्रश्न० १३३ । साणुणादि । नि० चू० प्र० १०६ अ । अलक्ष्यमाणान्तर्वृत्तित्वम् । प्रश्न० ७४ । चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । गाम्भीर्यः–अलब्धमध्यात्मको गुणः । उत्त० ३५३ । भग्नत्वादिदोषवर्जितं, शेषजनेन च प्रायेणालक्षणीयमध्यभागं स्थानं गम्भीरम् । व्य० प्र० ६२ अ । अलब्धमध्यः । उत्त० ५५४ । अलब्धस्ताघम् । जीवा० १२३ । निपुणशिल्पिनिष्पादिततयाऽलब्धस्वरूपमध्यम् । जीवा० २६६ । मन्मथोद्दीपि । जीवा० २७६ । स्वरविशेषः । नि० चू० प्र० २७८ अ । गम्भीरः–खेदसहः । आचा० ३ । अतीवोत्कटः । जीवा० १०७ । प्रज्ञा० ८१ । गम्भीरं–अप्रकाशम् । दश० १७५, २०४ । अवनतम् । ज्ञाता० १५ । गम्भीरः–द्राक्षाचन्दनलताद्याच्छादितप्रदेशः । विशे० १२६३ ।

गंभीरमालिणी–अन्तरनदी, गम्भीरं जलं मलते–धारयतीति गम्भीरमालिनी । जं० प्र० ३५७ ।

गंभीरमालिणीओ–नदीविशेषः । ठाणा० ८० ।

गंभीरलोमहरिसो–गम्भीरः–अतीवोत्कटो रोमहर्षो-रोमोद्धर्षो भयवशाद् यस्मात् सः गम्भीररोमहर्षः । जीवा० १०७ ।

गंभीरविजय–गम्भीरविजयः–गम्भीरमप्रकाशं विजयः–आश्रयः । दश० २०४ ।

गंभीरशब्दं–गम्भीरशब्दं मेघस्येव । सम० ६३ ।

गंभीरसाणुणाए–गम्भीरसानुनादः–सामायिकदानस्य स्थानम् । आव० ४७० ।

गंभीरा–अस्थाघा । नि० चू० प्र० ३३६ अ ।

गंमुणिग–फलविशेषः । नि० चू० द्वि० ११६ अ ।

गइंद–गजेन्द्रः । ज्ञाता० ६५ ।

गइ–गतिः–पदवी । आचा० २२४ । गत्यर्थानां ज्ञानार्थतया हिताहितलक्षणा स्वरूपपरिच्छित्तिः । उत्त० ४७२ । गमनं गतिः–देशान्तरप्राप्तिः । उत्त० ५५६ । गतिरणवादीनां गमनपरिणामः । विशे० २६७ । गतिशब्देन-मनुष्यगतेर्जीवापगमः । जं० प्र० १५४ । विहायोगतिनामोदयसम्पाद्या गतिरूपा । भग० ६४३ । गतिः–गतिनामकर्मोदयसम्पाद्यो जीवपर्यायः । प्रश्न० ६८ । अनुकूलं गमनं गतिः । आव० २८१ ।

गइकाय–गतिकायः यो भवान्तरगतौ, स च तेजसकार्मणलक्षणः । दश० १३४ । गतिकायः–नारकतिर्यङ्नरामरलक्षणां चतुर्विधां गतिमाश्रित्य कायः । सर्वसत्त्वानामपान्तरालगतौ वा यः कायः । आव० ७६७ ।

गइचरमे–यः पृच्छासमये सामर्थ्यान्मनुष्यगतिरूपे पर्याये वर्तमानोऽनन्तरं न किमपि गतिपर्यायमवाप्स्यति किन्तु मुक्त एव भविता सः गतिचरमः । प्रज्ञा० २४५ ।

गइतसत्त–नामकर्मोदयाभिनिर्वृत्तगतिलाभाद् गतित्रसत्वम् । आचा० ६७ ।

गइप्पवाए–गतेः प्रपातः गतिप्रपातः । गतिशब्दप्रवृत्तिरुपनिपततीत्यर्थः । प्रज्ञा० ३२८ ।

गइप्पवायं–गतिः प्रोच्यते–प्ररूप्यते यत्र तद्गतिप्रवादं गतेर्वा प्रवृत्तेः क्रियायाः प्रपातः–प्रपतनसम्भवः प्रयोगादिष्वर्थेषु वर्त्तनं गतिप्रपातस्तत्प्रतिपादकमध्ययनं गतिप्रपातं तत् । भग० ३८० ।

गइरइया–गतौ रतिः–आसक्तिः प्रीतिर्येषान्ते गतिरतिकाः । सूर्य० २८१ ।

गइरतिया–गतौ रतिः–आसक्तिः प्रीतिर्येषान्ते गतिरतिकाः । जीवा० ३४६ ।

गइरागइ–द्वयोर्द्वयोः पदयोर्विशेषणं विशेष्यतयाऽनुकूलं गमनं गतिः, प्रत्यावृत्त्या प्रातिकूल्येनागमनमागतिः । गतिश्चागतिश्च गत्यागती । आव० २८१ ।

गइलक्खण–गमनं गतिः–देशान्तरप्राप्तिः, लक्ष्यतेऽनेनेति लक्षणं, गतिर्लक्षणमस्येति गतिलक्षणः । उत्त० ५५६ ।

गइल्लऐणं–गतेन । बृ० प्र० २७ आ ।

गइसमावण्णे–गतिसमापन्नः–गतियुक्तः । सूर्य० १६७ ।

गई–तत्र गम्यते–नैरयिकादिगतिकर्मोदयवशादवाप्यते इति गतिः–नैरयिकत्वादिपर्यायपरिणतिः । प्रज्ञा० २८५ । गमनं गतिः–प्राप्तिरिति । प्रज्ञा० ३२८ । गम्यते–तथाविधकर्मसचिवैः प्राप्यते इति गतिः–नारकत्वादिपर्यायपरिणतिः । प्रज्ञा० ४६६ । तथापरिणामवृत्तिः । दश० ७० । गतिः–प्रवृत्तिः । विशे० २२०, २२२ । ठाणा० ४६४ । प्रज्ञापकस्थानापेक्षया मृत्वाऽन्यत्र गमनम् ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणा० १३३ ।
गए–गजः–अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्याष्टममध्ययनम् । अन्त० ३ । गतः–व्यवस्थितः । जीवा० २४२ ।
गओ–गतः–प्राप्तोऽन्तर्भूत इति यावत् । विशे० ३० । स्वस्थानं प्राप्तः । ज्ञाता० १६६ ।
गगणतलं–गगनतलं–अम्बरतलम् । सूर्य० २६४ ।
गगणवल्लभपामोक्खा–गगनवल्लभ प्रमुखाः । जं०प्र० ७४ ।
गगणवल्लभो–गगनवल्लभः । आव० १४४ ।
गग्गर–गग्गरकः–परिधानविशेषः । जं० प्र० ५२६ ।
गग्गरगसिव्वणा– । नि० चू० प्र० १२७ अ ।
गग्गा–गौतमगोत्रस्य भेदः । ठाणा० ३६० ।
गग्गे–गार्ग्यः गर्गसगोत्रः । उत्त० ५५० ।
गच्चागइ–गतिश्च गतिश्च गत्यागती । विशे० ८५५ ।
गच्छंति–धावन्ति । उत्त० ५०४ ।
गच्छ–गच्छः–एकाचार्यपरिवारः । औप० ४५ ।
गच्छइ–गच्छति–स्वीकरोति । विशे० ६०६ ।
गच्छति–आरभते । प्रज्ञा० ६०१ । प्रवर्तते । उत्त० २४३ ।
गच्छपागट्ठित्तणं–गच्छप्रकर्षित्वम् । बृ० प्र० ११६ अ ।
गच्छागच्छि–एकाचार्यपरिवारो गच्छः । गच्छेन गच्छेन-भूत्वा गच्छागच्छी । औप० ४५ ।
गजचलनमलनं–अशुभकर्मफलविपाकविशेषः । सम० १२६ ।
गजदन्तः–वनस्पतिविशेषः । जीवा० १९१ । जं० प्र० ३१४ ।
गजसुकुमाल–सोमिलद्विजेन मारितो मुनिविशेषः । विशे० ८४३ । अनु० १३७ । धरण्यां क्षिप्तो मुनिः । सं० । गजसुकुमालः–कृष्णभ्राता । व्य० प्र० १८८ आ ।
गजानीकं–सैन्यस्य भेदः । जीवा० २१७ ।
गज्ज–गद्यं–महुरं हेउनिजुत्तं गहियमपायं विरामसंजुत्तं, अपरिमियं चऽवसाणे कव्वं गज्जंति नायव्वं । दश० ८७ । गद्यं–अच्छन्दो निबद्धम् । ठाणा० २८८ ।
गज्जइ–गर्जति–साक्षेपं जल्पति । विशे० ६२७ ।
गज्जफलाणि–वस्त्रविशेषः । आचा० ३९३ ।
गज्जभो–गर्जभः–अपरोत्तरोस्यां वातविशेषः । आव० ३८६ ।
गज्जला– । नि० चू० प्र० २५५ अ ।
गज्जहाणुकूलवाए–गर्जभानुकुलवातः । आव० ३८७ ।
गज्जिते–गर्जितं–जीमूतध्वनिः । ठाणा० ४७६ ।
गज्जियाति–गर्जितानि–स्तनितानि । भग० १९५ ।
गज्जियकरणं–गर्जितकरणम् । आव० ७३५ ।
गट्ठिए–तद्गतस्नेहतन्तुभिः सन्दर्भितः । भग० २९२ ।
गड्ड–गण्डम् । उत्त० ३३८ ।
गड्डुलं–आविलं आकुलं वा । ठाणा० २७८ । सम० ५३ ।
गड्डुं–गर्त्तः श्वभ्रम् । भग० ६८३ । गर्त्ता–नीचैरुत्खातितो भूमिभागः । भग० १७४ ।
गड्डुरिका–ईतिः । राज० ६ ।
गड्डुरिया–गड्डुरिका ईतिविशेषः । जं० प्र० २९ ।
गड्डा–गर्त्ता । बृ० द्वि० ९ अ । ओघ० २० । खड्डा । नि० चू० प्र० ६८ अ ।
गड्डाइ–गर्ता–महती खड्डा । जं० प्र० १२४ ।
गड्डाओ–गर्त्त्यः । बृ० प्र० २८ अ ।
गड्डाहारा–क्षुद्राहारा । जं० प्र० १७१ ।
गड्डी–गन्त्री । ओघ० १४१ । आव० १०३ । भंडी । नि० चू० प्र० १८७ अ । दुचक्क । ओघ० १४० ।
गढिए–ग्रथित आहारविषयस्नेहतन्तुभिः सन्दर्भितः । भग० ६५० । लोभतन्तुभिः सन्दर्भितः । ज्ञाता० ८५ ।
गढिते–मूर्छितः । विपा० ३८ ।
गढियगिद्धो–ग्रथितगृद्धः–अत्यन्तगृद्धिमान् । प्रश्न० ३६ ।
गण–मूलभेदो । नि० चू० प्र० १५२ आ । गणः–एक-समाचारजनसमूहः । प्रश्न० ८६ । एकवाचनाचारक्रिया-स्थानां समुदायः सूत्रं वा । आव० १३४ । गणः–स्थविरसन्ततिसंस्थितिः । तत्त्वा० ९–२४ । कुलसमुदायः । बृ० प्र० २९१ अ । ठाणा० २९९ । स्कन्धस्य पर्यायः । विशे० ४१६, ४२६ । परिवारः । जं० प्र० ३२३ । एकवाचनाचार्यतिसमुदायः । जं० प्र० १५३ । समु-दायः–निजज्ञातिः । जं० प्र० १६७ । गणः–समुदायः । आव० २४१ अ कोटिकादिः । दश० २४२ । शिष्य-वर्गम् । भग० २३२ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणए–गणकः–जोतिषिकः भाण्डागारिको वा । औप० १४ ।

गणओ–गणशो–बहुशोऽनेकशो वा । सूत्र० ३८९ ।

गणका–गणितज्ञा भाण्डागारिका इति । ज्योतिषका इत्यपरे । राज० १२१ ।

गणग–गणकाः–गणितज्ञाः भाण्डागारिकाः । भग० ४६४ । गणकाः–ज्योतिषिकाः भाण्डागारिका वा । भग० ३१८ । जं० प्र० १९० ।

गणचिंतगो–गणावच्छेदकादिः । बृ० द्वि० २४० आ ।

गणट्ठकरे–गणस्य–साधुसमुदायस्यार्थान्–प्रयोजनानि करोतीति गणार्थकरः–आहारदिभिरुपष्टम्भकः । ठाणा० २४१ ।

गणणं–गणनं–एतावदधीतमेतावच्चाध्येतव्यमिति । आव० ६८ । पाठे स्मृतौ वा गणनम् । आव० ६८ ।

गणणग्गं–गणनाग्रं–संख्या धर्म्मस्थानात् स्थानं, दशगुणमित्यर्थः । आचा० ३१८ ।

गणणायग–गणनायकाः–प्रकृतिमहत्तराः । राज० १४० । गणनायकाः–मल्लादिगणमुख्याः । जं० प्र० १९० । गणनायकः–प्रकृतिमहत्तरः । औप० १४ ।

गणणोवगं–गणनां-कराङ्गुलिरेखास्पर्शनादिनैकद्वित्रिसंख्यात्मिकामुपगच्छति–उपयाति गणनोपगम् । उत्त० ५४२ ।

गणति–गणयति–प्रेक्षते, आलोचयति वा । आव० ५३६ ।

गणथेरा–ये गणस्य लौकिकस्य लोकोत्तरस्य च व्यवस्थाकारिणस्तद्भङ्क्तुश्च निग्राहकास्ते गणस्थविराः । ठाणा० ५१६ ।

गणधम्म–मल्लादिगणव्यवस्था जैनानां वा कुलसमुदायो गणः–कोटिकादिस्तद्धर्म्मः–तत्सामाचारी गणधर्म्मः । ठाणा० ५१६ । गणधर्मः–मल्लादिगणव्यवस्था । दश० २२ ।

गणधर–जिनशिष्यविशेषः, आर्यिकाप्रतिजागरकः वा साधुविशेषः । ठाणा० १४३ । जिनशिष्यविशेषः आर्यिकाप्रतिजागरको वा साधुविशेषः समयप्रसिद्धः । ठाणा० २४४ । अनुत्तरज्ञानदर्शनादिधर्मगणं धारयतीति गणधरः । दश० १० । आव० ६१ ।

गणधरता–लब्धिविशेषः । ठाणा० ३३२ ।

गणधरदेवकृतं–अङ्गप्रविष्टं मूलभूतमित्यर्थः । नंदी० २०३ ।

गणनागुणे–द्विकादि । आचा० ८६ ।

गणनायग–गणनायकाः–प्रकृतिमहत्तराः । भग० ३१८, ४६३ ।

गणमूढो–जे गणे ता ऊणं अहियं वा मन्नति सो । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

गणराजा–सेनापतिः । आव० ५१६ ।

गणराया–गणराजाः–सामन्ताः । भग० ३१७ । आचा० ३७७ । समुत्पन्ने प्रयोजने ये गणं कुर्वन्ति ते गणप्रधाना राजानो गणराजाः सामन्ता इत्यर्थः । भग० ३१७ । विशालीनगर्यां चेटकाभिधो गणराजः । आव० २१४ ।

गणसंठिति–गणसंस्थितिः–स्वगच्छकृता मर्यादा । ठाणा० २४१ ।

गणसंमया–गणसंमताः महत्तरादयः । दश० १०३ ।

गणसोभकरे–गणस्यानवद्यसाधुसामाचारीप्रवर्त्तनेन वादिधर्मकथिनैमित्तिकविद्यासिद्धत्वादिना वा शोभाकरणशीलो गणशोभाकरः । ठाणा० २४१ ।

गणसोहिकरे–गणस्य यथायोगं प्रायश्चित्तदानादिना शोधिशुद्धिं करोतीति गणशोधिकरः । ठाणा० २४१ ।

गणहर–यस्त्वाचार्यदेशीयो गुर्वादेशात् साधुगणं गृहीत्वा पृथग्विहरति स गणधरः । आचा० ३५३ । गणं–गणसमूहं धारयति–आत्मन्यवस्थापयतीति गणधरः । उत्त० ५५० । निर्ग्रन्थीवर्त्तापकः । बृ० द्वि० २०३ आ । गणधरः–सूत्रकर्त्ता । आव० ३१४ । गणधरः–आचार्यः । प्रज्ञा० ३२७ । आव० ६१ ।

गणहरा–गणः–एकवाचनाचारयतिसमुदायस्तं धरन्तीति गणधराः, वाचनादिभिर्ज्ञानादिसम्पदां सम्पादकत्वेन गणाधारभूता इति भावः । जं० प्र० १५४ । गणधराः–तन्नायका आचार्याः भगवतः सातिशयानन्तरशिष्याः । ठाणा० ४३० ।

गणा–एकक्रियावाचनानां साधूनां समुदायाः । ठाणा० ४३०, ४५२ । निवूढपइन्ना जोगा । दश० चू० १५८ । समानवाचनाक्रियाः साधुसमुदायाः । सम० १४ ।

गणापु–रचाउ । नि० चू० प्र० १६ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणाभिओगो–गणाभियोगः । आव० ८११ ।
गणावच्छेइए–गणावच्छेदकः–गच्छकार्यचिन्तकः । आचा० ३५३ ।
गणावच्छेए–गणस्यावच्छेदो–देशोऽस्यास्तीति गणावच्छेदकः । ठाणा० २४५ । प्रज्ञा० ३२७ ।
गणावच्छेदे–गणस्यावच्छेदो–विभागोऽशोऽस्यास्तीति, यो हि गणांशं गृहीत्वा गच्छोपष्टम्भायैवोपधिमार्गणादिनिमित्तं विहरति स गणावच्छेदकः । ठाणा० १४४ ।
गणावच्छेतितो–उवज्झाओ । नि० चू० प्र० २१२ अ ।
गणाहिवई–आर्यिकाणां गणधरः । बृ० प्र० ३०६ अ ।
गणि–परिच्छेदः । नंदी० १६३ । गणाधिपतिः, आचार्यः । ठाणा० १७२ । अर्थपरिच्छेदः । औप० ३४ । गणिशब्दः परिच्छेदवचनः । सम० १०७ । प्रज्ञा० ३२७ । उवज्झाओ । नि० चू० प्र० ३११ आ ।
गणिअ–गणितं–सङ्ख्यानं, सङ्कलिताद्यनेकभेदं पाटीप्रसिद्धम् । जं० प्र० १३७ । गणितं, अङ्कविद्या । जं० प्र० १३६ ।
गणिआयरिओ–गणित्वमाचार्य्यत्वं च यस्यास्त्यसौ । नि० चू० प्र० ३०० अ ।
गणिका–भावस्याप्रशस्ते दृष्टान्तः । ठाणा० १५५ । वाराङ्गना । आव० ५५ ।
गणितं–विष्कम्भपादाभ्यस्तः परिक्षेपः । तत्त्वा ३-११ । सम० १३० ।
गणितपरिभाषया– । भग० ७४५ ।
गणितप्पहाणा–बावत्तरिकलासु प्रथमा कला ।ज्ञाता०३८।
गणितानुयोगः–अर्हद्वचनानुयोगे द्वितीयभेदः सूर्यप्रज्ञप्त्यादिकः । आचा० १ । ठाणा० ४८१ ।
गणित्तिय–माला । आव० ४३३ ।
गणिपिडग–गणिनः आचार्यस्य पिटकमिव पिटकं गणिपिटकम् । सम० ५ । परिच्छेदसमूहो गणिपिटकम्, गुणानां गणोऽस्यास्तीति गणी–आचार्यस्तस्य पिटकमिव पिटकं सर्वस्व भाजनं गणिपिटकम् । सम० १०७ । गणिनः–आचार्यास्तेषां पिटकमिव पिटकं–सर्वस्वाऽऽधारो गणिपिटकम् । उत्त० ५१३ । द्वादशाङ्गी । आव० ५७ । गुणगणोऽस्यास्तीति आचार्यस्तस्य पिटकं–सर्वस्वं गणिपिटकम् । अनु० ३८ । परिच्छेदसमूहः । नंदी० १६३ । गणीनां–अर्थपरिच्छेदानां पिटकमिव पिटकं स्थानं गणिपिटकम् । औप० ३४ । पिटकमिव वालञ्जकवाणिजकसर्वस्वाधारभाजनविशेष इव यत्तत्पिटकं, गणिन आचार्यस्य पिटकं गणिपिटकं–प्रकीर्णकश्रुतादेशश्रुतनिर्युक्त्यादियुक्तं जिनप्रवचनम् । औप० ३४ । गणिपिटकं–आचार्यसर्वस्वम् । दश० १३ ।
गणिम–गणणाए गणिज्जंति । नि० चू० प्र० ८६ आ । आव० १८६ । गणिमं–गण्यते संख्यायते वस्त्वनेनेति, एकादि रूपकादि । अनु० १५१ ।
गणियं–गणितं सङ्ख्यानम् । आव० १२८ । ज्ञाता० ३८। जीवा० ३२५ । गणितविषये बीजगणितादौ परं पारमुपगतः । आचा० ४१६ । गणितं–संख्यानं सङ्कलितादि अनेकभेदं–प्राटीप्रसिद्धम् । सम० ८४ । एकादि । ठाणा० १९८ ।
गणियधम्मो–गणितधर्मः यद् बहु स्तोकेन गुण्यते । प्रज्ञा० २७५ ।
गणियपयं–गणितपदमित्येवंप्रकारस्य गणितस्य सञ्ज्ञा । भग० ४२६ ।
गणियलिवी–लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।
गणियविसए–गणितविषयः–गणितगोचरः गणितप्रमेयः । भग० २७६ ।
गणियसुहुमया–परिकम्मेसु गणियसुहुमया । नि० चू० तृ० ६७ आ ।
गणियसुहुमे–गणितसूक्ष्मं–गणितं सङ्कलनादि तदेव सूक्ष्मं सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वात् । ठाणा० ४७८ ।
गणियाघरविहेडिओ–गणिकागृहविनिर्गतः । आव०५७७।
गणियापाडग–गणिकापाटकं–गणिकागृहविथिः । दश० १०८ ।
गणियायारा–गणिकाकाराः–समकायाः । ज्ञाता० ६८ ।
गणिविज्जा–गणि–आचार्य तस्य विद्या–ज्ञानम्, सबालवृद्धो गच्छो–गणः सोऽस्यास्तीति गणिविद्या । नंदी० २०५ ।
गणिसंपइ–गणिसम्पदः–आचाराद्यष्टभेदभिन्ना, अष्टौ सम्पदः । उत्त० ३८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणी–गच्छाधिपः । आचा० ३५३ । गणः–साधुसमुदायो यस्यास्ति स्वस्वामिसम्बन्धेनासौ गणी गणाचार्यः–गणनायकः । ठाणा० १४० । उवज्झातो अन्नो व गच्छे वुड्ढो । नि० चू० द्वि० ६३ आ । गणोऽस्यास्तीति गणी गणाचार्यः । ठाणा० १४३, २४४ । गुणानां गणोऽस्यास्तीति गणी–आचार्यः । सम० १०७ । आचार्यः । अनु० ३८ । नंदी० १६३ । उपाध्यायः । बृ० तृ० ६५ अ । बृ० द्वि० ३ अ । गणी–गणाधिपतिः । दश० २४२ । गणाचार्यः । उत्त० १७ । आचार्यः । आव० ५२ । अर्थपरिच्छेदः । भग० ७११ । गणी–उपाध्यायः । व्य० प्र० १७१ आ । गणी–गच्छाधिपतिः । व्य० प्र० १३७ अ । गणोऽस्यास्तीतिगणी–गणावच्छेदकः । व्य० द्वि० २३ अ । वृषभः । व्य०द्वि० ३६७ आ । गणी–उपाध्यायः । बृ०तृ० १७७ आ ।

गणेइ–गणयति दृष्ट्या परिभावयति । पिण्ड० ७८ ।

गणेत्तिया–गणेत्रिका–कलाचिकाऽऽभरणविशेषः । भग० ११३ । रुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणम् । ज्ञाता० २२० । हस्ताभरणविशेषः । औप० ६५ ।

गण्डक–लम्बूसकः । राज० १०४ ।

गण्डकादिः–शरीरोद्भवो व्रणविशेषादिः । आव० ७६५ ।

गण्डलेखा–कपोलविरचितमृगमदादिरेखा । निरय० ४ ।

गत–व्यवस्थितः । सूत्र० ३८६ । स्थितः । विशे० २०७ । ज्ञानम् । आचा० १६७ ।

गतप्रत्यागतलक्षणं– । आचा० ५३ ।

गतवाही–शुक्रमहाग्रहस्य द्वितीया विधि । ठाणा० ४६८ ।

गता–गदा । जीवा० ११७ ।

गतिचंचल–चञ्चलस्य प्रथमो भेदः । बृ० प्र०१२४ अ ।

गतिचपलः–द्रुतचारी । उत्त० ३४६ ।

गतिनामनिहत्ताउए–गतिर्नरकगत्यादिभेदाच्चतुर्द्धा सैव नाम गतिनाम तेन सह निधत्तमायुर्गतिनामनिधत्तायुः । प्रज्ञा० २१७ ।

गतिपरिणाम–अजीवपरिणामे द्वितीयो भेदः । ठाणा० ४७५ ।

गतिपरियाए–चलनं मृत्वा वा गत्यन्तरगमनलक्षणः, यश्च वैक्रियलब्धिमान् गर्भान्निर्गत्य प्रदेशतो बहिः सङ्क्रामयति स वा गतिपर्यायः । ठाणा० ६६ ।

गतिपरियाते–गतिपर्यायः चलनं जीवत एव । ठाणा० १३३ ।

गतिप्पहाणं–प्रधानगतिं मुक्तिमिति । उत्त० ४६६ ।

गतिरतिया–गतौ रतिर्येषां ते गतिरतिकाः समयक्षेत्रवर्त्तिनः । ठाणा० ५७ ।

गतिश्रङ्क्रमणं–उपाश्रयान्तरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरणम् । सम० १०७ ।

गतिसमावन्नगा–गतिं–गमनं समिति सन्ततमापन्नकाः प्राप्ताः गतिसमापन्नकाः, अनुपरतगतय इत्यर्थः । ठाणा० ५८ ।

गती–गमनं, गम्यत इति वा गतिः–क्षेत्रविशेषः । गम्यते वा अनया कर्म्मपुद्गलसंहत्येति गतिः–नामकर्मोत्तरप्रकृतिरूपा, तत्कृत्वा वा जीवावस्था । ठाणा० ३४४ ।

गत्त–गात्रं–अङ्गम् । प्रश्न० ६० । उरः । ज्ञाता० ६६ । श्वभ्रम् । भग० ३०७ । गात्रं–स्कन्धोरुपृष्ठादि । अनु० १७७ । देहः । भग० ७०५ ।

गत्तगाइं–गात्राणि–ईषादीनि । राज० ६३ ।

गत्तपरिपुंछणं–गात्रपरिपुञ्छनं–पुच्छम् । जं०प्र० ५२६ ।

गत्ता–गर्त्ता–महती खड्डा । २८२ ।

गत्ताइं–गात्राणि–ईषादीनि । जं० प्र० २८५ ।

गत्ति–कृत्तिः–चर्म । ओघ० ३४ ।

गदतियातो–गर्हितं । नि० चू० द्वि० १६ अ ।

गद्दतोय–चन्द्राभविमानवासी पञ्चमो लोकान्तिकदेवः । भग० २७१ । ठाणा० ४३२ । आव० १३५ ।

गद्दभा–एकखुरचतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

गद्दभालि–गर्दभालिः–स्कन्दकचरिते श्रावस्तीनगर्यां स्कन्दकपरिव्राजकस्य गुरुः । भग० ११२ । अनगारविशेषः । उत्त० ४३६, ४४२ ।

गद्दभिया–गर्दभिका–शालिरत्नम् । आव० ४३५ ।

गद्दभो–यवराजस्य पुत्रः । बृ० प्र० १६१ अ । गर्दभः–दृष्टान्तविशेषः । ओघ० ८४ । एकखुरचतुष्पदः । जीवा० ३८ ।

गद्दा–गर्त्ता । ज्ञाता० ६७ ।

गद्यं–अच्छन्दोबद्धं शस्त्रपरिज्ञाध्ययनवत् । जं० प्र० ३५६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गब्भ–गर्भः–उदरसत्त्वः । ठाणा० ५२३ । गर्भः–हंसनिर्वर्त्तितः कोसिकाकारः । अनु० ३४ । गर्भः सजीवपुद्गलपिण्डकः । भग० २१८ । गर्भो–मध्यभागः । जं० प्र० १८३ ।

गब्भगडंडिया–रणपट्टगो । नि० चू० प्र० २४५ आ ।

गब्भगिहं–गर्भगृहं–गेहाकारद्रुमगणविशेषः । जीवा० २६६ । उत्त० २१६ ।

गब्भघर–गर्भगृहं–सर्वतो वर्तिगृहान्तरं, अभ्यन्तरगृहम् । जं० प्र० १०६ ।

गब्भघरए–मोहनगृहस्य गर्भभूतानि वासभवनानीति । ज्ञाता० १२६ ।

गब्भघरगा–गर्भगृहकाणि–गर्भगृहाकाराणि । जीवा० २००। जं० प्र० ४५ ।

गब्भट्ठमे वासे– । ज्ञाता० ३८ ।

गब्भमासो–गर्भमासः । कार्तिकादिर्यावत् माघमासः । व्य० २४० अ ।

गब्भया–मत्स्यविशेषः । प्रज्ञा० ४४ ।

गब्भवक्कंतिय–गर्भे–गर्भाशये व्युत्क्रान्तिः–उत्पत्तिर्येषां ते गर्भव्युत्क्रान्तिका न संमूर्च्छिनजा इत्यर्थः । सम० १३५ ।

गब्भवक्कंतियमणुस्सा–गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः । प्रज्ञा० ५० ।

गब्भवक्कंतिया–गर्भे व्युत्क्रान्तिः–उत्पत्तिर्येषां ते,अथवा गर्भात्–गर्भावाशाद् व्युत्क्रान्तिः–निष्क्रमणं येषां ते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः । जीवा० ३५ । प्रज्ञा० ४४ ।

गब्भवसही–गर्भवसतिः । आव० ३२५ ।

गब्भवासो–गर्भवासः–मध्यभागविस्तारः । प्रश्न० ६२ ।

गब्भसाडणा–गर्भशातनाः–गर्भस्य खण्डशो भवनेन पतनहेतवः । विपा० ४२ ।

गब्भसारो–गर्भसारः । आव० ४१३ ।

गब्भाकरा–गर्भकरा गर्भाधानविधायिनी विद्या । सूत्र० ३१६ ।

गब्भिआ–गर्भिता–अनिर्गतशीर्षकाः । दश० २१६ ।

गब्भिजा–गर्भे भवाः गर्भजाः–नौमध्ये उच्चावचकर्मकारिणः । ज्ञाता० १३७ ।

गब्भिया–गर्भिता–जातगर्भा डोडकिता इत्यर्थः । ज्ञाता० ११६ । जासिणं तावं सीसयं । दश० चू० ११२ ।

गब्भिल्लगा– । ज्ञाता० २२८ ।

गब्भुद्देसो–गम्भोद्देशके–गब्भसूत्रोपलक्षितोद्देशके सप्तदशपदस्य षष्ठे सूत्रम् । भग० ७६१ ।

गब्भो–गर्भः–गर्भावासः । प्रज्ञा० ४४ ।

गम–सदृशपाठः कृतः । ठाणा० १८३ । इहादिमध्यावसानेषु किञ्चिद्विशेषतो भूयोभूयस्तस्यैव सूत्रस्योच्चारणं गमः। नंदी० २०३ । अर्थगमाः–अर्थपरिच्छेदाः । नंदी० २११ । प्रकारः । विशे० ६३० । गम्यते अनेन वस्तुरूपमिति गमः–प्ररूपणा । उत्त० २४० । प्रकारः । बृ० प्र० १५२ आ । चतुर्विंशतिदण्डकादिः, कारणवशतो वा किञ्चिद्विसदृशः सूत्रमार्गः । आव० ५६६ । गमनम् । बृ० प्र० ७७ अ । गमः–व्याख्या । भग० २४३ । वाचनाविशेषः, पाठः । ज्ञाता० ३६ । जं० प्र० २६६ । गमाः–तदक्षरोच्चारणप्रवणाभिन्नार्थाः । दश० ८८ । गमकः–भङ्गः । ओघ० ३५ । गमः–पाठः । जं० प्र० ३२८ । सदृशपाठः । जं० प्र० २१६ । योगः । पिण्ड० १२४ । आगमो । नि० चू० प्र० २०२ अ । सदृशः पाठः । भग० ४५ । गम्यतेऽनेनेति गमः–पन्था । विशे० ८६६ ।

गमग–गमकः–भङ्गः । ओघ० ३५ ।

गमणं–अवधावनम् । बृ० द्वि० २१८ आ । गमनम्–आसेवनरूपतया प्रापणम् । आव० ८२३ । संहितादिक्रमेण व्याख्यातुः प्रवर्त्तनम् । उत्त० ११ । अन्यतोऽन्यत्र गमनम् । दश० १५५ । अभिगमः, मैथुनासेवना वा । आव० ८२५ । मैथुनासेवनम् । उपा० ८ । वेदनम् । ठाणा० ३४८ । वर्त्तनम् । आचा० २६२ भिक्षादानार्थमभ्यन्तरप्रवेशः । ओघ० १६६ ।

गमणगुण–गमनं–गतिस्तद् गुणो–गतिपरिणामपरिणतान जीवपुद्गलानां सहकारिकारणभावतः कार्यं मत्स्यान जीवस्येव यस्यासौ गमनगुणो गमने वा गुणः–उपकारो जीवादीनां यस्मादसौ गमनगुण इति । ठाणा० ३३३ गतिसामर्थ्यः । ज्ञाता० ३५ ।

गमणपयार–गमनप्रचारः–गतिक्रियावृत्तिः । ज्ञाता० ३५

गमणागमण–ईर्यापथिकी । ज्ञाता० २०० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गमयति–स्फेटयति प्रापयति वा शिवम् । नंदी० २३ ।
गमा–गमाः–अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदाः । सम० १०८ । वस्तुपरिच्छेदप्रकाराः नामादयः । उत्त० ३४२ । अर्थपरिच्छित्तिप्रकाराः । उत्त० ७१३ । भङ्गका गणितादिविशेषाश्च गमाः–सदृशपाठाः । विशे० २९८ । प्रकाराः–द्विरुच्चारणीयाणि पदानि । बृ० द्वि० १५९ आ । भङ्गगणितादयः–सदृशपाठा वा । बृ० तृ० ११० आ ।
गमागमसंववहारो–गमागमसंव्यवहारः । आव० ३९५ ।
गमिः–अयमनेकार्थत्वाद्धातूनामवस्थाने वर्त्तते । दश०७० ।
गमिओ–ज्ञापितः । आव० ६२७ ।
गमिकं–गमा अस्य विद्यन्त इति । आव० २५ । दृष्टिवादः । नंदी० २०३ ।
गमित्तए–गन्तुम् । उत्त० ३४० ।
गमेइ–गमयति । आव० १७२ ।
गमेय–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
गमो–पकारो । नि० चू० प्र० ११५ आ ।
गम्मधम्म–गम्यधर्मः–यथा दक्षिणापथे मातुलदुहिता गम्या उत्तरापथे पुनरगम्यैव । दश० २२ ।
गम्मो–गम्यो गमनीयो वा अष्टादशानां कराणाम्, ग्रसते वा बुद्ध्यादीन् गुणान् ग्रामः । बृ० प्र० १८१ अ । गम्यः–परिभवस्थानम् । प्रश्न० १२० ।
गय–गतः–स्थितः । जीवा० १६४ । प्रज्ञा० ६१ । गतः । ज्ञाता० ११८ । चीर्णम् । सूर्य० २२ । गजः । प्रश्न० ७३ । प्रथमस्वप्ननाम । ज्ञाता० २० । गतः–आश्रितः । भग० १६१ । गदा–लकुटविशेषः । प्रश्न० २१ ।
गयउर–गजपुरं नगरविशेषः । उत्त० १०६, ३५४, ३५५ ।
गयकंठ–गजकण्ठः–हस्तिकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः । जीवा० २३४ ।
गयकण्णो–गजकर्णः अन्तरद्वीपविशेषः । जीवा० १४४ ।
गयकन्नदीवे–अन्तरद्वीपविशेषः । ठाणा० २२६ ।
गयकन्ना–गयकन्नान्तर्द्वीपे मनुष्यविशेषः । ठाणा० २२६ । गजकर्णनामा अन्तर्द्वीपः । प्रज्ञा० ५० ।
गयकलभे–गजकलभः–करिपोतः । प्रज्ञा० ३६० ।
गयग्गपदगं – गजाग्रपदकं–योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते एडकाक्षनगरे पर्वतविशेषः । आव० ६६६ ।
गयग्गपदगो–गजाग्रपदकं-यत्र इन्द्रैरावणस्य पदानि-देवताप्रभावेणोत्थितानि तेन प्रसिद्धं दशार्णकूटम् । आव० ६६९ ।
गयग्गपय–गजाग्रपदो दशार्णकूटवर्त्ती । आचा० ४१८ ।
गयग्गपादगो–गजाग्रपादकः दशार्णकूटापरनामा । आव० ३५९ ।
गयग्गोपवतो–पर्वतविशेषः । नि० चू० प्र० ३४१ अ ।
गयछाया–गजछाया । प्रज्ञा० ३२७ ।
गयजोही– । ज्ञाता० ३८ ।
गयणंफुसे–गगनस्पर्शा–अतिप्रबलतया नभोऽङ्गणव्यापिना । उत्त० ४९ ।
गयण्हाण–गजस्नानम् । दश० २२६ ।
गयतालुए–गजतालुकम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
गयतेये–गततेजाः । भग० ६८४ ।
गयत्थरणो– । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।
गयदंतसंठिते–गजदन्तसंस्थितम् । सूर्य० १३० ।
गयनियत्त–अनुसंपन्ना एवात्मीयेन व्यक्तविहाडादिना समं गतास्तस्य च कालगततया प्रतिभग्नत्वादिना वा कारणेन प्रत्यागन्तव्यं नाभवत्ततः प्रत्यागच्छन्तस्तं साधुमुपसंपद्यते । व्य० द्वि० ३७९ अ ।
गयपुरं–गजपुरं–कुरुजनपदे आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । कुरुजनपदे नगरविशेषः । आव० १४५ । शान्तिकुन्थुनाथजन्मभूमिः । आव० १६० । पांडवानां राजधानी । आव० ३६५ । यत्र धनश्रीजीवइभ्यश्रावकशङ्खस्य दुहिता सर्वाङ्गसुन्दरी च्युता । आव० ३९४ ।
गयमच्छर–गतमत्सरः-परस्परासहनत्वर्जितो निर्मत्सरो वा । ज्ञाता० २३१ ।
गयमागम–गतागमः । व्य० द्वि० १५८ अ ।
गयमारिणि–गुच्छविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
गयलक्खणं– । ज्ञाता० । ३८ ।
गयविक्कमसंठिते–गजविक्रमसंस्थितम् । सूर्य० १३० ।
गयसुकुमाल–गजसुकुमालः–अनगारविशेषः । उत्त० ५८२ । वसुदेवपुत्रः । आव० २७३ । प्रद्वेषविषये दृष्टान्तः । आव० ४०४ । पितृवने श्वशुरदग्धः । मर० ।
गया–गदा-प्रहरणविशेषः । औप० ३ । गता–स्थिता ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञाता० १७ ।

गयागत-अव्यक्ता, अविहाडा, अदेशिका, अभाषिका वा अन्यं साधुमुपसंपद्यते, अस्माकममुकप्रदेशेन यथा वा यत्र तेषां गन्तव्यं तत्र ये विवक्षितसाधोरन्येऽव्यक्तविहाडादयो गन्तुकामास्तान् ब्रुवते वयं युष्माभिः सह गमिष्यामस्तत्र यत्र गन्तुकामस्ततो यदि प्रत्यागच्छन्ति तदेतत् गतागतम् । व्य० द्वि० ३७६ अ ।

गया(ज्ज)लं-उद्वेल्यमानं परिधीयमानं वा गर्जयति । जीवा० २६६ ।

गर-य आहारं स्तम्भयति कामर्ण वा गरः । ओघ० १६६ । गराद्यपरनाम । जं० प्र० ४६४ । गरः-विषम् । भग० १८२ ।

गरण-करणः-विपरिणामहेतुः । भग० ६५ । विषम् । उत्त० ४२६ ।

गरलिगाबद्धं-णिविखत्तं । नि० चू० प्र० ८३ आ ।

गरहं-गर्हा-निन्दा, जुगुप्सा । उत्त० ६४ ।

गरहइ-आत्मनैव गर्हते-निन्दति । भग० ५८ ।

गरहणय-गर्हणं-परसमक्षमात्मदोषोद्भावनम् । भग० ७२७ ।

गरहणा-कुत्सनान्येव च गर्हणीयसमक्षाणि । औप० १०३ । गर्हणीयसमक्षं कुत्सा । अन्त० १८ ।

गरहणाते-लोकसमक्षदायकादिनिन्दा गर्हता । प्रश्न० १०६ ।

गरहणिज्जे-गर्हणीयः समक्षमेव । ज्ञाता० ६६ ।

गरहह-जनसमक्षं निन्दां कुरुत । भग० २१६ ।

गरहा-गुरुसाक्षिका आत्मनो निन्दा गर्हा । ठाणा० २१४ ।

गरहिए-गर्हचाणि दास्यादि कुलानि । आचा० ३२७ ।

गरहिज्जा-गुरुसाक्षिका । ठाणा० १३७ ।

गरहित्तए-गर्हितुं गुरुसमक्षं तानेव जुगुप्सितम् । ठाणा० ५७ ।

गरहित्ता-गर्हणं जनसमक्षं निन्दां विधाय । भग० २२७ ।

गराइ-गरादि गरं वा । जं० प्र० ४६३ ।

गरिट्ठव-एकास्थिकभेदविशेषः । भग० ८०३ ।

गरिहंति-गर्हन्ते-कुत्सन्ति । दश० १८८ ।

गरिहा-आलोचना, विकटना, शुद्धिः, सद्भावदायणा णिंदणा गरहणा विउट्टणं सल्लुद्धरणं च । ओघ० २२५ । गर्हा-जुगुप्सा । दश० १४४ । गर्हणं गर्हा-दुश्चरितं प्रति कुत्सा । ठाणा० ४३ । गर्हा-गर्हणं, परसाक्षिकी कुत्सा, षड्भेदभिन्नं प्रतिक्रमणमेव, प्रतिक्रमणस्य सप्तमं नाम । आव० ५५२ ।

गरिहाहि-गर्हणं गुरुसमक्षं निन्दनमेव । ज्ञाता० २०६ ।

गरिहिअ-गर्हितं निन्द्यम् । आव० ४७८ । निन्दितः । दश० १६७ ।

गरिहिइ-गर्हति लोकसमक्षं कुत्सति । भग० १६६ ।

गरु-अधःपतनहेतुरयोगोलकादिगतो गुरुः । अनु० ११० । गन्धद्रव्यविशेषः । नि० चू० प्र० २७६ आ ।

गरुगी-जा इत्थी जस्स साहुस्स माउलदुहियादिया भव्वा सा गरुगी भण्णति । नि० चू० प्र० ११० अ ।

गरुड- । व्य० प्र० १६५ अ ।

गरुडवूहो-गरुडव्यूहः कोणिकस्य युद्धे सैन्यरचना । आव० ६८४ । गरुडाकारसैन्यविन्यासविशेषः । प्रश्न० ४७ । सैन्यस्य व्यूहविशेषः । भग० ३१७ ।

गरुडवेगः-देवविशेषः । जं० प्र० ३५६ ।

गरुयं-गुरुकं-बादरम् । प्रश्न० ३६ ।

गरुयनिवतितं-गुरुकनिपतितं विद्युदादिगुरुकद्रव्यनिपातजनितध्वनिः । प्रश्न० ५१ ।

गरुल-गरुडः सुपर्णः । प्रश्न० ८ । गरुडः-सुपर्णकुमारजातीयः वेणुदेवः । ठाणा० ६६ । गरुडा गरुडध्वजाः सुपर्णकुमाराः । प्रश्न० ६६ । गरुडलांछनत्वात् गरुडः । सम० ६२ । गरुडाः-सुवर्णकुमाराः । राज० १२३ । गरुडः गरुडध्वजः । भग० १३५ । सुवर्णकुमाराः । ज्ञाता० १०६ । गरुडध्वजाः-सुपर्णकुमारा इत्यर्थः । सम० १५५ ।

गरुलदेवे-गरुडदेवः-गरुडो गरुडजातीयो वेणुदेवनामा मतान्तरेण गरुडवेगनामा वा देवः । जं० प्र० ४, ३५५ ।

गरुलपविखयं-एकत उभयतो वा स्कन्धोपरि वस्त्राञ्चलानामारोपणरूपम् । बृ० तृ० २५४ अ । एकत उभयतो वा स्कन्धोपरि कल्पाञ्चलनामारोपणरूपम् । बृ० प्र० १२५ अ ।

गरुलवूह-गरुडव्यूहम् । निरय० १८ ।

गरुलासणं-गरुडासनं-यस्यासनस्याधोभागे गरुडो व्य-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वस्थितिः सः । जीवा० २०० ।

गरुलोववाए-गरुडोपपातः- कालिकसूत्रविशेषः । नंदी० २०७ ।

गर्जिकृत्-गर्जिता । ठाणा० २७० ।

गर्त्तलङ्घन-दारुसंक्रमस्य भेदः । आचा० २०२ ।

गर्दभक-कुमुदम् । दश० १८५ । प्राणिविशेषः । आचा० ३७६ ।

गर्दभिल्लः-नृपतिविशेषः । बृ० तृ० १५६ अ ।

गर्भोत्पादनं-गर्भपातनम् । व्य० प्र० १६३ आ ।

गलंतिया-गलन्तिका गर्गरी । आव० ६६२ ।

गल-गलं-बडिशम् । विपा० ८० । प्रश्न० १३, ५७ । बिडिषम् । ज्ञाता० २३४ । आचा० ३८ । उत्त० ४६० । विघ्नो नाग्गो । विशे० २२ । गलः । ओघ० १८० । दंडगस्स अंते लोहकंटगो कज्जति । नि० चू० प्र० २१५ अ ।

गलइ-अनन्तजीववनस्पतिभेदः । भग० ८०४ ।

गलओ-गलः । आव० ४०५ । ग्रीवा । आव० २०३ ।

गलओस-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

गलकः-स्वरभंगः । बृ० प्र० ६१ अ ।

गलकवोला-गलकपोलौ । जीवा० २७५ ।

गलकुक्कुटी-गल एव कुक्कुटी । पिण्ड १७३ ।

गलगहिओ-गलगृहीतः । आव० ३४६ ।

गलच्छल्लं-गलगृहणम् । प्रश्न० ५६ ।

गलणं- । नि० चू० प्र० २३२ आ ।

गलत्थल्ला-हस्तेन गलग्रहणरूपा । ज्ञाता० १६८ ।

गलयंत्रं-यन्त्रविशेषः । दश० २७० ।

गललाय-गललातानि कण्ठे न्यस्तानि वरभूषणानि । जं० प्र० २६५ ।

गलवृन्दं-शरिरान्तर्वर्धमानावयवविशेषः । प्रज्ञा० ४७३ ।

गलि-अविनीतः । उत्त० ४८ । मरालः । आव० ७६७ ।

गलिगर्दहा-गलिगर्दभाः-दुःशिष्याः । उत्त० ५५४ ।

गलिच्चा-गलसत्कानि आभरणानि । पिण्ड० १२४ ।

गलियलंबणा-गलितलम्बना-आलम्बनाद् भ्रष्टा, लम्ब्यन्ते इति लम्बनाः-नङ्गरास्ते गलिता यस्यां सा ज्ञाता० १५८ ।

गली-गलिः दुष्टाश्वः । उत्त० ६२ । गिलत्येव केवलं न तु वहति-गच्छति वेति गलिः-दुष्टाश्वो दुष्टगोणो वा । उत्त० ४६ ।

गलेरवं-यो गलेनात्यन्तं रटति । आव० ६६१ ।

गल्ल-कपोलः । उपा० २१ ।

गल्लोदए-गल्लोदकाः । दश० १०४ ।

गवं-मृगादिपशुः । सूत्र ७२ ।

गवए-गवाकृतिराटव्यो जीवविशेषः । बृ० द्वि० १०६ अ ।

गवओ-गोणागिती गवओ । नि० चू० प्र० ४७ आ ।

गवक्खए-गवाक्षः । आव० ६७६ ।

गवक्खजाल-गवाक्षजालं-गवाक्षाकृतिरत्नविशेषो दाम-समूहः । जीवा० १८१, २०५, ३६१ । जं० प्र० ५० ।

गवक्खसंठिओ-गवाक्षसंस्थितः-वातायनसंस्थितः । जीवा० २७६ ।

गवक्खो-गवाक्षः-वातायनः । जीवा० २७६ । प्रश्न० १३८ । नंदी० ७३ ।

गवच्छ-आच्छादनम् । जं० प्र० ५८ ।

गवच्छिता-गवच्छं-आच्छादनं गवच्छा सञ्जाता एष्विति गवच्छिकाः (ताः) । राज० ७१ ।

गवत्थिया-गवस्था-आच्छादनम् । जीवा० २१४ ।

गवय-वनगवः । जं० प्र० १२४ । आटव्यः पशुविशेषः । प्रश्न० ३८ । गवयः द्विखुरश्चतुष्पदः । जीवा० ३८ । गवाकृतिर्वर्त्तुलकण्ठः । प्रश्न० ७ । द्विखुरचतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

गवलं-महिषीशृङ्गम् । आचा० २६ । उत्त० ६५२ । ज्ञाता० १०१ । महिषं शृङ्गम् । जीवा० १६४ । प्रज्ञा० ६१ । माहिषं शृङ्गं उपरितनत्वग्भागापसारणे द्रष्टव्यम् । प्रज्ञा० ३६० । शृङ्गम् । प्रश्न० २२ ।

गवलगुलिया-तस्यैव माहिषशृङ्गस्य निबिडतरसारनिर्वर्तिना गुटिका गवलगुटिका । जं० प्र० ३२ । गवलगुलिका-महिषशृङ्गगोलिका । ज्ञाता० २६ । गवलं-महिष्यशृङ्गं गुलिका-नीली गवलस्य वा गुलिका गवलगुडिका । ज्ञाता० १०१ ।

गवलसामला-गवलं-महिषशृङ्गं तद्वत् श्यामलः श्यामा ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञाता० २३१ ।

गवलेइ-माहिषं शृङ्गं तदपि चापसारितोपरितनत्वग्भागं ग्राह्यम् । जं० प्र० ३२ ।

गवाणी-सामान्येन गवादनी । आचा० ४११ ।

गवालीयं-गवालीकं-गोविषयमनृतम् । आव० ८२० ।

गवासं-गावश्चाश्वाश्च गवाश्वं, गावो वाहदोहोपलक्षिताः अश्वाः-तुरगाः । उत्त० २६५ ।

गवेल-गौः । अनु० १२९ ।

गवेलग-गवेलकः-उरभ्रः । औप० १२ । ज्ञाता० २ ।

गवेलगा-गवेलकाः-ऊरणकाः । अनु० १२९ । ठाणा० ३९५ । गवेलकाः उरभ्राः । भग० १३५ । गावश्च-एलकाश्च ऊरणका गवेलकाः । ठाणा० ३९५ ।

गवेषणा-व्यतिरेकधर्मालोचनम् । नंदी० १८७ ।

गवेसओ-गवेषकः शोधकः । आव० ४१८ । गवेषकः । आव० ३५४ ।

गवेसण-व्यतिरेकतो गवेषणम् । भग० ६६३ । गवेषणं-व्यतिरेकधर्मैरन्वेषणम् । औप० ९५ । व्यतिरेकधर्मालोचनम् । आव० ९९ । अनुपलभ्यमानस्य पदार्थस्य सर्वतः परिभावनम् । पिण्ड० २९ । गवेष्यतेऽनेनेति गवेषणं तत ऊर्ध्वं सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मत्यागोऽन्वयधर्माध्यासालोचनम् । नंदी० १७६ । गवेषणं-व्यतिरेकधर्मालोचनम् । भग० ४३३ । इह शरीरकण्डूयनादयः पुरुषधर्माः प्रायो न घटन्त इति व्यतिरेकधर्मालोचनरूपम् । ज्ञाता० १२ ।

गवेसणा-व्यतिरेकधर्मालोचना गवेषणा । आव० १८ । नंदी० १८७ । गवेषणं-व्यतिरेकधर्मालोचनं गवेषणा । विशे० २१६ । गवेषणा-प्रार्थना । सूत्र० ७२ । अदिट्ठे गवेषणा थुभियाइचिंधेहिं गवेसणा । नि० चू० प्र० १९९ अ ।

गवेसति-गवेषयति । आव० २०० ।

गवेसमाणे-गवेषयन्-व्यतिरेकधर्मपर्यालोचनतः बहुजनस्य । ज्ञाता० ८१ ।

गव्व-गर्वः-अभियोगः । आव० ७७२ । गर्वं-शौण्डीर्यम् । भग० ५७२ ।

गह-ग्रहः-देवयोनिविशेषः । विशे० ६७१ । ग्रहः-उत्क्षेपः प्रारम्भरसविशेषः । दश० ८८ ।

गहगज्जिय-ग्रहगर्जितं-ग्रहचारहेतुकं गर्जितम् । जीवा० २८२ । ग्रहसञ्चलादौ गर्जितं-स्तनितं ग्रहगर्जितम् । भग० १९६ ।

गहजुद्धं-ग्रहयुद्धं-यदेको ग्रहोऽन्यस्य ग्रहस्य मध्येन याति । जीवा० २८२ ।

गहण-गुपिलं । दश० चू० १२० । नंदी० ४२ । गहनं-सङ्कुलम् । आव० ५६७ । वननिकुञ्जः । दश० २२९ बृ० द्वि० ९ अ । अपूर्वस्य ग्रहणं ग्रहणम् । व्य० द्वि० ३७६ अ । गहनः-गुपिलः । उत्त० २९० । वृक्षवल्लीलतावितानवीरुत्समुदायः । भग० ९२ । सर्वांगीणं कराभ्यामादानम् । बृ० तृ० २३० अ । गहनं-वृक्षगह्वरम् । विपा० ६२ । धवादिवृक्षैः कटिसंस्थानीयम् । सूत्र०८९ । गह्वरम् । प्रश्न० ३९ । गहनमिव गहनं दुर्लक्ष्यान्तस्तत्त्वत्वात् । प्रथम अधर्मद्वारस्य विंशतितमं नाम । प्रश्न० २७ । चद्सूरुवरागो गहणं भण्णति । नि० चू० तृ० ७० आ । गृह्यत इति ग्रहणम् । प्रज्ञा० २६२ । ग्रहणकम् । प्रश्न० ३० । सम्बन्धनम् । जीवा० ४४२ । सूत्रादेस्तत्प्रथमतया आदानम् । आव० २६७ । भाषाद्रव्याणां काययोगेन यत् ग्रहणम् । दश० २०८ । सर्वाङ्गिकं तु ग्रहणम् । ठाणा० ३२७ । ग्रहणं ग्रहस्य वस्तुनः परिच्छेदः । अनु० २१६ । गृहस्थस्य गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहणं, यस्मात्प्रदेशाद्भण्डकं गृण्हाति तं प्रदेशम् । ओघ० १६६ । गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहणं शरावसंपुटम् । ओघ० १३९ । निर्जलप्रदेशोऽरण्यक्षेत्रं वा । आचा० ३८२ । आक्षेपकम् । उत्त० ६३० । गृह्यत इति ग्रहणं ग्राह्यम् । आ० ६३० । स्वीकरणम् । उत्त० ७११ । ज्ञानम् । उत्त० ५०३ । ग्रहणं-परस्परेण सम्बन्धनम् । जीवेन वा औदारिकादिभिः प्रकारैर्ग्रहणम् । भग० १४८ ।

गहणकप्पा-सुत्तं अत्थं उभयं वा गेण्हंतेण भत्तिबहुमाणा अब्भुट्ठाणाइविणओ पयुंजियव्वो । नि० चू० तृ० १४६ अ ।

गहणगुण-ग्रहणं-औदारिकशरीरादितया ग्राह्यता इन्द्रियग्राह्यता वा वर्णादिमत्त्वात् परस्परसम्बन्धलक्षणं वा तद्गुणो धर्मो यस्य स तथा । ठाणा० ३३४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गहणजाय–यानि पुनर्द्रव्याणि समश्रेणिविश्रेणिस्थानि भाषात्वेन परिणतानि कर्णशष्कुलीविवरप्रविष्टानि गृह्यन्ते तानि चानन्तप्रदेशिकानि, द्रव्यतः क्षेत्रतोऽसंङ्ख्येयप्रदेशावगाढानि, कालत एकद्वित्र्यादियावदसङ्ख्येयसमयस्थितिकानि, भावतो स्पर्शवन्ति, तानि चैवं भूतानि ग्रहणजातमित्युच्यन्ते । आचा० ३८५ ।

गहणविदुग्ग–एगजातीयअणेगजाईयरुक्खाउलं गहणविदुग्गं । नि० चू० द्वि० ७० आ । सूत्र० ३०७ । गहनविदुर्गः–पर्वतैकदेशावस्थितवृक्षवल्ल्यादिसमुदायः । भग० ९२ ।

गहणसिक्खा–द्वादशवर्षाणि यावत् सूत्रं त्वयाऽध्येतव्यमित्युपदेशो ग्रहणशिक्षा । विशे० ६ ।

गहणा–गह्वरा । आव० ५९६ । दोषविशेषः । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

गहणाई–ग्रहणादयः–ग्रहणबन्धनताडनादयः दोषाः । पिण्ड० १६२ ।

गहणागरिस–एकस्मिन्नेव भवे ऐर्यापथिककर्मपुद्गलानां ग्रहणरूपो य आकर्षोऽसौ ग्रहणाकर्षः । भग० ३८६ ।

गहणी–ग्रहणी । आव० ६४४ । गुदाशयः । औप० १६ । प्रश्न० ८२ । ग्रहणी–गुदाशयः । जं० प्र० ११७ ।

गहदंडा–दण्डा इव दण्डाः–तिर्यगायताः श्रेणयः ग्रहाणां–मङ्गलादीनां त्रिचतुरादिनां दण्डा ग्रहदण्डाः । भग० १९५ ।

गहदंडो–दण्डाकार व्यवस्थितो ग्रहो ग्रहदण्डः । जीवा० २८२ ।

गहन–महाटवी । वनम् । सूत्र० २४५ । गह्वरम् । ओघ० १८१, १९० ।

गहभिण्णं–ग्रहभिन्नं–ग्रहविदारितम् । विशे० १२९४ । मज्झेण जस्स गहो गतो तं गहभिण्णं । नि० चू० तृ० ९९ अ ।

गहभिन्नं–यस्य मध्येन ग्रहोऽगमत् तत् ग्रहभिन्नम् । व्य० प्र० ६२ अ ।

गहमुसलं–ग्रहमुशलम् । जीवा० २८२ । ग्रहमुशलं–ऊर्ध्वायता श्रेणिः । भग० १९६ ।

गहयुद्ध–ग्रहयुद्धं ग्रहयोरेकत्र नक्षत्रे दक्षिणोत्तरेण सम श्रेणितयाऽवस्थानम् । भग० १९६ ।

गहरा–लोमपक्षी विशेषः । प्रज्ञा० ४९ ।

गहरो–लोमपक्षीविशेषः । जीवा० ४ ।

गहसंघाडओ–ग्रहसङ्घाटकः-ग्रहयुग्मम् । जीवा० २८२ ।

गहसमं–प्रथमतो वंशतन्त्र्यादिभिर्यः स्वरो गृहीतस्तत्समं गीयमानं ग्रहसमम् । अनु० १३२ । ठाणा० ३९४ । गीतस्य तृतीयो भेदः । नि० चू० तृ० १ अ ।

गहसिंघाडग–ग्रहसिंघाटकं–ग्रहाणां सिङ्घाटकफलाकारेणावस्थानम् । भग० १९६ ।

गहसुसंपउत्त–यः प्रथमं वंशतन्त्र्यादिभिः स्वरो गृहीतस्तन्मार्गानुसारि ग्रहसुसंप्रयुक्तम् । जीवा० १९५ । प्रथमतो वंशतन्त्र्यादिभिर्यः स्वरो गृहीतस्तत्समेन स्वरेण गीयमानं ग्रहसुसंप्रयुक्तम् । जं० प्र० ४० ।

गहा–ग्रहाः–अङ्गारकादयो गृह्यन्ते । आव० ... । ग्रहाः–ज्योतिष्कभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६९ । ग्रहाः सूर्यादिकेत्वन्ता नव, सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनोदेवाः । भग० १९५ ।

गहाय–गृहीत्वा–सम्प्रधार्य । उत्त० २०६ ।

गहावसव्व–गहापसव्यं–ग्रहाणामपसव्यगमनं, प्रतीपगमनम् । भग० १९६ ।

गहिंति–गमिष्यन्ति–ग्रहीष्यन्ति वा स्वीकरिष्यन्ति । उत्त० १९४ ।

गहिअ–गृहीतः-अनिक्षिप्तः । ओघ० ५८ ।

गहिए–धनिकः । बृ० तृ० ४९ आ ।

गहिओ–गृहीतः-अवधारितः । आव० ४१५ ।

गहियं–पडिबद्धं । दश० चू० १५१ । गृहीतम् । विशे० ४०५ । प्रश्न० ३० ।

गहियगहणं–गृहीतग्रहणं–गृहीतं ग्रहणं–ग्रहणकं येन सः । प्रश्न० ३० ।

गहियट्ठा–परस्मात् । भग० ५४२ । अर्थविधारणात् । गृहीतार्थम् । भग० १३५ ।

गहियवलंजो–सेज्जातरो खेत्तस्स अंतोबहिं वा गहियवलंजो । नि० चू० प्र० १५८ अ ।

गहियाउपहरणे–गृहीतायुधप्रहरणः–गृहीतानि आयुधानि शस्त्राणि प्रहरणनाय–परेषां प्रहारकरणाय येन सः । भग० ३१८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गहियो-विडम्बयितुं प्रारब्धः । बृ० तृ० ४७ आ ।

गहिल्लगवेस-ग्रहगृहीतवेषः भूतविष्ट इव विचित्रवेसवान् । दश० १६ ।

गहो-ग्रहः । आव० ३६७ । राहुलक्षणः । ३६ ।

गां-वृषभम् । आचा० ३८४ ।

गाइयव्वं-गातव्यम् । ओघ० १५७ ।

गाउअं-द्वे धनुःसहस्रे गव्यूतम् । अनु० १५७ ।

गाउयं-क्रोशद्वयं गव्यूतिः । ओघ० २३ । गव्यूतं-द्विधनुःसहस्रप्रमाणम् । प्रज्ञा० ४८ । जीवा० ४० । धनुःसहस्रद्वयप्रमाणम् कोशः । भग० २७५ ।

गागरं-स्त्रीपरिधानविशेषः । प्रश्न० ७० ।

गागरा-मत्स्यविशेषः । प्रज्ञा० ४४ ।

गागरि-गर्गरी । अनु० १५२ ।

गागरी-बृहद्वर्तुलघटिका । तं० ।

गागलि-शालमहाशालभागिनेयः । उत्त० ३२४, ३२१ । गाङ्गलिः-तापसविशेषः । दश० ५१ ।

गागली-पृष्टिचम्पायां यशोमतीपुत्रः । आव० २८६ ।

गाढ-निबिडम् । नंदी० ४६ । अत्यर्थम् । ओघ० १२७, ३२४ । गाढं-बाढम् । भग० ३७ ।

गाढोकय-गाढीकृतम्-आत्मप्रदेशैः सह गाढबद्धम् । भग० २५१ ।

गाणंगणिए-गणाद्गणं षण्मासाभ्यन्तर एव सङ्क्रामतीति गाणङ्गणिकः । उत्त० ४३५ ।

गाणंगणितो-णिक्कारणे गणातो अण्णं गणं संकमंतो गाणंगणिओ । नि० चू० तृ० ८० आ ।

गाणंगणिया-गाणंगणिकता-गणे गणे प्रविशतीत्येवं प्रवादलक्षणा । व्य० द्वि० ४६ अ ।

गाणि-गानम् । आव० ६७४ ।

गातब्भंग-गात्राभ्यङ्गः-तैलादिनाऽङ्गम्रक्षणम् । ठाणा० २४७ ।

गातुच्छोलणाइं-गात्रोत्क्षालनं-अङ्गधावनम् । ठाणा० २४७ ।

गात्राणि-ईषादीनि । जं० प्र० ५५ ।

गाधेन-उद्वेधेन । ठाणा० ४८० ।

गामंतरं-ग्रामादन्यो ग्रामः ग्रामान्तरम् । आव० १४ ।

गामंतिय-ग्रामस्यान्ते समीपे वसतीति ग्रामान्तिकः । सूत्र० ३१५ ।

गाम-ग्रसति बुध्यादीन् गुणानिति गम्यो वाऽष्टादशानां करणामिति ग्रामः । आचा० २८५ । ग्रामाः-सङ्घाताः । उत्त० ६१३ । ग्रसन्ति बुद्धयादीन् गुणानिति ग्रामाः । आचा० २५४ । इन्द्रियग्रामो रूढेः । जनपदाश्रयः । ठाणा० ५१६ । समूहः । आव० ६५० । ग्रसति गुणान् गम्यो वाऽष्टादशानां कराणामिति ग्रामः । उत्त० ६०५ । ग्रामः-ग्रामशब्देन चात्र प्रतिश्रय उपलक्षितः । आचा० २६१ । ग्रसते बुद्धयादीन् गुणानिति ग्रामः । अनु० १४२ । ग्रसते बुद्धयादीन् गुणान् यदि वा गम्यः शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशानां कराणामिति ग्रामः । राज० ११४ । ग्रसति-बुद्धयादीन् गुणान् यदि वा गम्यः शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशानां कराणामिति ग्रामः । व्य० प्र० १६८ अ । करादियाण गम्मो गामो । नि० चू० द्वि० ७० आ । नि० चू० प्र० २२६ अ । ग्रामः-जनपदप्रायजनाश्रितः । प्रश्न० ३६ । दशकुलसाहस्रिको ग्रामः । ज्ञाता० ४४ । जनपदप्रायजनाश्रितः स्थानविशेषः । भग० ३६ । इन्द्रियग्रामः । उत्त० ११२ । इन्द्रियवर्गः । प्रश्न० ६३ । जनपदाध्यासितः । औप० ७४ । ग्रसति बुद्धयादीन् गुणान् गम्यो वा करादीनामिति ग्रामः । सन्निवेशविशेषः । आव० ५६३ । ग्रसति बुद्धयादीन् गुणानिति यदिवा गम्यः-शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशानां कराणामिति ग्रामः । जीवा० ४०, २७६ । सीमापर्यन्तः, प्रजासमध्यासितगृहाऽऽरामवापीदेवकुलादिरूपः, केवला प्रजा वा, प्रधानपुरुषो वा । विशे० ८६७ । ग्रसति बुद्धयादीन् गुणानिति ग्रामः, यदि वा गम्यः शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशकराणामिति ग्रामः । प्रज्ञा० ४७ । ग्रामः-इन्द्रियम् । दश० २६७ । शालिग्रामादिः । दश० २८१ । इन्द्रियसमूहः । भग० १०१ । समूहः । ज्ञाता० १ । ग्रसति बुद्धयादीन् गुणानिति ग्रामः । दश० १४७ ।

गामउड-गाममहत्तरो । नि० चू० प्र० २०६ अ । ग्राममहत्तरः । बृ० द्वि० २१२ आ ।

गामउडपुत्तो-ग्रामकूटपुत्रः । आव० २०२ ।

गामकंटए-इन्द्रियं तद्दुःखहेतुः कण्टकः स ग्रामकण्टकः । दश० २६७ । ग्रामः-इन्द्रियग्रामस्तस्य कण्टका इव

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्टकाः ग्रामकण्टकाः–प्रतिकूलशब्दादयः । उत्त० ११२ । ग्रामकण्टकाः–नीचजनरूक्षालापाः । आचा० ३११ ।

गामघाए– । ज्ञाता० २३६ ।

गामघाय–ग्रामघातः । सूत्र० ३०६ ।

गामतेणो–गामतो हरंतो गामतेणो । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

गामथेरा–ये ग्रामनगरराष्ट्रेषु व्यवस्थाकारिणो बुद्धिमन्त आदेयाः प्रभविष्णवस्ते तत्स्थविराः । ठाणा० ५१६ ।

गामधम्म–ग्रामधर्मः–विषयोपभोगगतो व्यापारः । आचा० ३३१ । ग्रामा–जनपदाश्रयास्तेषां तेषु वा धर्म्मः समाचारो–व्यवस्थेति ग्रामधर्म्मः, अथवा ग्रामः–इन्द्रियग्रामो रूढेस्तद्धर्मो–विषयाभिलाषः । ठाणा० ५१५ । ग्रामधर्मः–प्रतिग्रामं भिन्नः । दश० २२ ।

गामधम्मतित्ति–ग्रामधर्माः–शब्दादयः कामगुणास्तेषां तप्तिः–गवेषणं पालनं वा ग्रामधर्मतप्तिः, अब्रह्मणोऽष्टादशं नाम । प्रश्न० ६६ ।

गामधम्मा–ग्रामाः–इन्द्रियग्रामास्तेषां धर्माः–स्वभवा यथा स्वविषयेषु प्रवर्त्तनं ग्रामधम्माः । आचा० २१८ । ग्रामधर्म्माः–विषयाः । आचा० २७६ ।

गामपिंडोलगं–ग्रामपिण्डोलकः–भिक्षयोदरभरणार्थं ग्राममाश्रितः तुन्दपरिमृजो द्रमकः । आचा० ३१४ ।

गामभोइओ–ग्रामभोजिकः । आव० ३५५ ।

गाममहो–गामे महा गाममहो यात्री इत्यर्थः । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गाममारी–ग्राममारी । भग० १९७ ।

गामरट्ठमयहरो–ग्रामराष्ट्रमहत्तरः । आव० ७३८ ।

गामरोग–ग्रामरोगः । भग० १९७ ।

गामवधो–गामस्स वधो गामवधो ग्रामघातेत्यर्थः । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गामवाह–ग्रामवाहः । भग० १९६ ।

गामा–ग्रामाः–वृत्त्यावृत्ताः कराणां गम्या वा । जं० प्र० १२१ । ग्रामादीनां च जीवाजीवता प्रतीतैव, तत्र करादिगम्या ग्रामाः । ठाणा० ८६ ।

गामाणुगामं–एकस्माद् ग्रामादवधिभूतादुत्तरग्रामाणामनतिक्रमो ग्रामानुग्रामं ग्रामपरम्परा । ठाणा० ३१० । एक ग्रामाल्लघुपश्चाद् भावाभ्यां ग्रामोऽणुग्रामः । ठाणा० ३१० । मासकप्पो जत्थ कतो ततो जं गम्मइ तं गामाणुगामं । नि० चू० प्र० १९१ अ । ग्रामानुग्रामम् । आव० १४२ ।

गामाणुगामो–मासकप्पविहारगामाओ गच्छतो अण्णो अणुकूलो गामो गामाणुगामो । नि० चू० प्र० २१९ अ ।

गामायं–ग्रामाकं नाम सन्निवेशः । आव० २०८ ।

गामायारा–ग्राम्याचाराः–विषयाः । आव० १३४ ।

गामिए–ग्राममहत्तरः । नि० चू० प्र० १४१ आ ।

गामिया– ग्रामिकाः–ग्रामधर्म्माश्रिताः । आचा० ३०८ ।

गामिल्लय–ग्रामेयकः । आव० ४३५, ।

गामील्लए–ग्रामेयकः । आव० ५५४ ।

गामेयगा–ग्रामेयकाः । उत्त० २६३ ।

गामेल्लग–ग्रामेयकः–ग्रामवास्तव्यः । दश० ५९ । आव० १०३ ।

गामेल्लगत्तणं–ग्रामेयकत्वम् । आव० ७२१ ।

गामेल्लया–ग्रामवासीजनः । ओघ० ४६ ।

गामेल्लयपारद्धो–ग्रामेयकप्रारब्धः । आव० ३५१ ।

गाय–गात्रं–ईषादि । जीवा० २३१ । कायः । दश० ११७ । कायः–चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

गायकम्मं–गात्रकर्म–हस्तादिगात्रचम्पनरूपमङ्गपरिकर्म । प्रश्न० १३७ ।

गायगंठिभेय–गात्रात्–मनुष्यशरीरावयवविशेषात् कट्यादेः सकाशाद् ग्रन्थिकार्षापणादिपोट्टलिकां भिदन्ति–आच्छिन्दन्तीति गात्रग्रन्थिभेदाः । ज्ञाता० २ ।

गायदाहं–जत्थ गाआ डज्झंति तं गायदाहं भण्णति । नि० चू० प्र० १९२ आ ।

गायाइं–गात्राणि भरतशरीरावयवाः । जं० प्र० २७५ ।

गारं–अगारं गेहम् । ठाणा० ३७१ ।

गारत्थ–गृहस्थः–गृहधर्मवान् । दश० १० ।

गारत्था–गिहत्था । नि० चू० प्र० ४६ आ ।

गारत्थिए–गृहस्थाः–पिण्डोपजीविनो धिग्जातिप्रभृतयः । आचा० ३२४ ।

गारत्थियवयण–अगारं–गेहं तद्वृत्तवो अगारस्थिता-गृहिणः

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेषां–यत्तदगारस्थितवचनम् । ठाणा० ३७० ।
गारव–गौरवं–आदरः । प्रश्न० ३५ । गौरवं–यद्गौरवनिमित्तं वन्दते तत्, कृतिकर्मणि चतुर्दशो दोषः । आव० ५४४ । गुरोर्भावः गौरवः । आव० ५७९ । गौरवः गमनपर्यायः । ठाणा० ४५३ । लब्धिमाहात्म्यम् । बृ० द्वि० २६० अ । परिवारर्धिधर्मकथाद्यष्टप्रकारोऽभिमानः । व्य० प्र० २५७ । गौरवः गर्वः । ठाणा० ४९६ ।
गारवा–गौरवाणि–ऋद्धिरससातगौरवरूपाणि । प्रश्न० ९७ ।
गारविए–गर्वेण लब्धिसम्पन्नोऽहमितिकृत्वा एकाकी भवति । ओघ० १५० ।
गारी–अगारी । ओघ० ९९ ।
गालणं–गालनं–छाणनम् । प्रश्न० २५ । घनमसृणवस्त्राद्यन्तेन गालनम् । आचा० ४२ ।
गालणा–यैरूपायैर्गर्भो द्रवीभूय क्षरति । विपा० ४२ ।
गालियदहियस्स–गालितस्य दध्नः । आव० ६२४ ।
गालेमाणे–गालयन्–अतिवाहयन् । भग० ४६२ ।
गालो–वेगलो । नि० चू० द्वि० ६८ आ ।
गाव–बलीवर्दसुरभयः । प्रश्न० ३७ ।
गाविकुविय–गोगवेषकः । भर० ।
गाविमग्गो–गोमार्गः । आव० ४१९ ।
गावी–गौ–त्रिपृष्ठवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३टी. ।
गासं–ग्रासं–कवलम् । उत्त० ११७ ।
गासेषणा– । आचा० २८३ ।
गाह–गाथा । आव० ७९३ । ज्ञाता० ३८ । महान् निर्बन्धः । बृ० द्वि० २१ अ । ग्राहः–जलजन्तुविशेषः । प्रश्न० ७ । ग्राहः–स्थूलदेहो जलजन्तुविशेषः । आव० ८१९ ।
गाहग–ग्राहक आचार्यः, ग्राहयतीति ग्राहकः, ग्राहको नाम शिष्यः गृह्णातीति ग्राहकः । व्य० प्र० २५७ अ । ग्राहकं–प्रतिपाद्यस्य विवक्षितार्थप्रतीतिजनकम् । प्रश्न० १२० । ग्राहकः–शिक्षयिता गुरुः । उत्त० १४५ । गुरुः । आव० ३४१ ।
गाहणगिरा–ग्राहयतीति ग्राहिका, ग्राहिका चासौ गीश्च ग्राहकगीः । आव० २३७ ।
गाहगसुद्धं–ग्राहकशुद्धं–यत्र ग्रहीता चारित्रगुणयुक्तः । विपा० ९२ ।
गाहण–ग्राह्यते शिष्य एतदिति बाहुलकात् कर्मण्यनट् ग्राहणं–आचारादिसूत्रं आसेवना । व्य० प्र० २२९ अ ।
गाहवतीओ–सुकच्छमहाकच्छविजयोर्विभागकारिणी नदी। ठाणा० ८० ।
गाहा–गाथा–प्राक्तनपञ्चदशाध्ययनार्थस्य गानाद् गाथा, गाथा वा तत्प्रतिष्ठाभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रे गाथा श्लोकश्च । सम० ३२ । गीयत इति गाथा, सा चेहार्थाद्धर्माभिधायिनी सूत्रपद्धतिः । उत्त० ३८५ । गीयते–शब्द्यते स्वपरसमयस्वरूपमस्यामिति गाथा सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययनम् । उत्त० ६१४ । गाहा–घरं गिहं वा । व्य० द्वि० २८३ अ । गाहा गेहं तत्र ऋतौ–ऋतुबद्धे काले वर्षाकाले वा पर्युषितः । व्य० द्वि० २८३ अ । गाथा–सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कंधे षोडशमध्ययनम् । आव० ६५१ । गृह्णन्ति ग्राहाः जलचरविशेषाः । उत्त० ६९९ । गाथा–सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययनम् । उत्त० ६१४ । संस्कृतेतरभाषानिबद्धा आर्या । जं० प्र० १३७ । प्रतिष्ठा निश्चितिश्च । आव० ८०४ । गीयत इति गाथा–छन्दोविशेषरूपा । उत्त० ३३४ । गृहम् । बृ० द्वि० ८६ अ । ग्राहाः–जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकायां तृतीयो भेदः । प्रज्ञा० ४३ । विक्षिप्ताः सन्त एकत्रमीलिता अर्था यस्यां सा गाथा, अथवा सामुद्रेण छन्दसा वा निबद्धा वा गाथा । गीयते–पठ्यते मधुराक्षरप्रवृत्त्या गायन्ति वा तामिति गाथा । सूत्र० २६२ ।
गाहावइ–गृहपतिः–गृहस्वामी । बृ० द्वि० ८६ अ । गृहपतिः–गृही । भग० २२८ । गृहपतिः–ऋद्धिमद्विशेषः । उपा० १ । गृहपतयः–कुटुम्बनायकाः । भग० ५०२ ।
गाहावइकरंडग–गृहपतिकरण्डकः–श्रीमत्कौटुम्बिककरण्डकः । ठाणा० २७२ ।
गाहावइकुंडे–गाहावत्या अन्तरनद्याः कुण्डं–प्रभवस्थानं ग्राहावतीकुण्डनाम कुण्डम् । जं० प्र० ३४५ ।
गाहावइकुलं–गृहपतिकुलं–पाटकं रथ्यां ग्रामादिकं वा । आचा० ३३७ । गृहपतिकुलं–गृहिगृहम् । भग० ३७४ ।
गाहावइदीवे–ग्राहावतीद्वीपः । जं० प्र० ३४६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहावइरयण–गृहपतिरत्नं–कौटुम्बिकरत्नम् । जं० प्र० २४३ ।

गाहावई–गृहपतिः–माण्डलिको राजा । भग० ७०० । गृहस्थः । पिण्ड० ४ । गृहपतिः । आचा० ३३५ । गृहस्य पतिः–गृहपतिः, सामान्यतः प्राकृतपुरुषः । सूत्र० ३६४ । ग्राहाः–तन्तुनामानो जलचरा महाकायाः सन्त्यस्यामिति ग्राहावती महानदी । जं० प्र० ३४६ ।

गाहावतिरयणे–गृहपतिः–कोष्ठागारनियुक्तः । ठाणा० ३६८ ।

गाहाविया–कृष्टा । आव० ६८७ ।

गाहासोलसग–गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्य आरात्सप्त सूत्राणि, तत्र सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे षोडशाध्ययनानि तेषां च गाथाभिधानं षोडशमिति गाथाभिधानमध्ययनं षोडशं येषां तानि गाथाषोडशकानि । सम० ३२ । गाथाषोडशकः–गाथाख्यं षोडशमध्ययनं यस्मिन् श्रुतस्कन्धे सः, सूत्रकृताङ्गस्याद्यः श्रुतस्कन्धः । सूत्र० ८ ।

गाहासोलसमे–प्राक्तनपञ्चदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गाथा, सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययननाम । सम० ३१ ।

गाहिंति–प्रज्ञापयन्ति । बृ० द्वि० १६४ आ ।

गाहिज्जंति–ग्राह्यन्ते । आव० १०१ ।

गाहिंति–ग्राहयति । आव० ३४३ ।

गाहिया–ग्राहिका–अक्लेशेनार्थबोधिका । औप० ७८ ।

गाहोकया–गाथीकृताः–पिण्डीकृताः । सूत्र० २६२ ।

गाहेंति–भावयंति । नि० चू० प्र० ३३८ आ ।

गाहेंहिति–ग्राहयिष्यन्ति–प्रापयिष्यन्ति स्थलेषु स्थापयिष्यन्तीत्यर्थः । भग० ३०६ ।

गिज्झंति–गृध्यन्ति प्राप्तस्यासन्तोषेणाप्राप्तस्यापरापरस्याकाङ्क्षावन्तो भवन्तीति । ठाणा० २६३ ।

गिज्झ–गृद्धः–प्रतिबद्धः । दश० २६८ ।

गिज्झवओ–ग्राह्यवाक्यः । आदेयवाक्यः । आव० २३६ ।

गिज्झह–गृध्यत–गृद्धिं प्राप्तभोगेष्वतृप्तिलक्षणां कुरुत । ज्ञाता० १४६ ।

गिज्झियव्वं–गर्द्धितव्यं–अप्राप्तेष्वाकाङ्क्षाकार्या । प्रश्न० १५६ ।

गिज्झु–ग्राह्यः–संवेद्यः । उत्त० ४०२ ।

गिणिभमेत्तं–उदाहरणं । नि० चू० प्र० २६६ आ ।

गिण्हमाणे–बाह्यादावङ्गे गृण्हन् । ठाणा० ३२७ । गृण्हन्–ग्रीवादाववलम्बयन् । ठाणा० ३५३ ।

गिण्हित्तए–ग्रहीतुं–आदातुं विधातुमित्यर्थः । ज्ञाता० १४६ ।

गिण्हियव्वे–गृह्यते–उपादीयते कार्यार्थिभिरिति ग्रहीतव्यः कार्यसाधक इति । उत्त० ६८ ।

गिद्ध–गृध्रः–पक्षिविशेषः, गृद्धो वा मांसलुब्धः शृगालादिर्वा । भग० १२० । गृद्धः–प्राप्ताहारे आसक्तोऽतृप्तत्वेन वा तदाकाङ्क्षावान् । भग० ६५० । विशेषाकाङ्क्षावान् । भग० २६२ । आकाङ्क्षावान् । ज्ञाता० ८५ । मूर्छितः । विपा० ३८ । मूर्च्छितः, कांक्षावान् । आव० ५८७ । गृद्धं–प्राप्तातृप्तिः । ठाणा० १४५ ।

गिद्धपट्ठ–गृध्रैः स्पृष्टं–स्पर्शनं यस्मिंस्तद् गृध्रस्पृष्टं, यदिवा गृध्राणां भक्ष्यं पृष्ठमुपलक्षणत्वादुदरादि च तद्भक्ष्यकरिकरभादिशरीरानुप्रवेशेन महासत्वस्य मुमूर्षोर्यस्मिंस्तत् गृध्रपृष्ठम् । ठाणा० ६३ ।

गिद्धपट्ठठाण–गृध्रपृष्ठस्थानानि–यत्र मुमूर्षवो गृध्रादिभक्षणार्थं–रुधिरादिदिग्धदेहा निपत्यासते । आचा० ४११ ।

गिद्धपिट्ठ–गार्द्धपृष्ठं–अपरमांसादिहृदयन्यासाद् गृद्धादिनाऽऽत्मव्यापादनम् । आचा० २६० । गृध्रैः स्पृष्टं–स्पर्शनं यस्मिंस्तत् गृध्रस्पृष्टम्, यदिवा गृध्राणां भक्ष्यं पृष्ठमुपलक्षणत्वादुदरादि च मर्तुर्यस्मिंस्तद् गृध्रपृष्ठम् । उत्त० २३४ ।

गिद्धपिट्ठमरणं–गृध्रपृष्ठमरणं, मरणस्य चतुर्दशो भेदः । सम० ३३ । उत्त० २३० ।

गिद्धाइभक्खणं–गृद्धाः प्रतीतास्ते आदिर्येषां शकुनिकाशिवादिनां तैर्भक्षणम् गम्यमानत्वादात्मनः तदनिवारणादिना तद्भक्ष्यकरिकरभादिशरीरानु प्रवेशेन च गृध्रादिभक्षणम् । उत्त० २३४ ।

गिद्धापिट्ठ–गृध्रस्पृष्टं गृध्रैः स्पर्शनं कडेवराणां मध्ये निपत्य गृध्रैरात्मनो भक्षणमित्यर्थः । ज्ञाता० २०५ ।

गिद्धि–गृद्धिः–गार्द्ध्यं ममत्वं वा । सूत्र० १७१ ।

गिद्धी–गृद्धिः–अभिकाङ्क्षा । ठाणा० ४४७ ।

गिम्ह–ग्रीष्मः–उष्णकालः । ओघ० २१२ । ग्रीष्मः–

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्येष्ठादिः । भग० ४६२ । ग्रीष्मः-उष्णकालः । भग० २११ । ग्रीष्मः-षष्ठः ऋतुः । सूर्य० २०६ । वैशाखज्येष्ठौ । ज्ञाता० १६१ । ग्रीष्मकालः-उष्णकाल इत्यर्थः । सूर्य० ६१ ।

गिम्हा-ग्रीष्मा-उष्णकालमासाः । जं० प्र० १५० ।

गिरा-गीः-वाणी । बृ० द्वि० २५५ आ ।

गिरि-गिरयः-गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरयः-गौपालगिरिचित्रकूटप्रभृतयः । भग० ३०७ । गिरिशब्देन क्षुद्रगिरयो ग्राह्याः । जं० प्र० २२३ । गिरयः-दुर्गादिकरणार्थं जनावासयोग्याः पर्वताः । जं० प्र० २१० । गृणन्ति-शब्दायन्ते जनं निवासभूतत्वेनेति गिरयः । जं० प्र० १६८ । गिरिः-महापाषाणः । औप० ८८ ।

गिरिउडे- । नि० चू० १६२ आ ।

गिरिकडग-गिरिकटकः-पर्वतनितम्बः । ज्ञाता० २३८ ।

गिरिकण्णइ-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

गिरिगिह-गिरिगृहं-पर्वतोपरि गृहम् । ठाणा० २६४ । प्रश्न० १२७ । भग० २०० । आचा० ३६६ ।

गिरिजण्णयं-अवरण्हसंखडी । नि० चू० द्वि० १५ अ ।

गिरिजत्ता-गिरियात्रा-गिरिगमनम् । ज्ञाता० ४६ ।

गिरिजन्नो-गिरियज्ञः-उस्सूरं मत्तवालसंखडी वा । गिरियज्ञः-कोंकणादिदेशेषु सायाह्नकालभावीप्रकरणविशेषः । बृ० द्वि० ६५ आ ।

गिरिणगरं-गिरिनगरं नगरविशेषः । आव० ५२ । विशे० ४१३ । गिरिनगरं-परदारगमने पुरम् । आव० ८२३ ।

गिरिणयरं-गिरिसमीपे नगरं गिरिनगरम् । अनु० १४६ ।

गिरितडगं-गिरितटकं सन्निवेशविशेषः । उत्त० ३७६ ।

गिरिनदी- । ज्ञाता० २५ ।

गिरिपक्खो-गिरिपक्षः-पर्वतपार्श्वः । औप० ८८ ।

गिरिपडणे-पर्वतपातः । ज्ञाता० २०२ ।

गिरिपुरं-नगरविशेषः । उत्त० ३७६ ।

गिरिप्पवात-गिरिप्रपातः । आव० ३५० ।

गिरिफुल्लिगा-नगरीविशेषः । नि० चू० द्वि० १०० आ ।

गिरिफुल्लिय-गिरिपुष्पितम्, मानपिण्डदृष्टान्ते नगरम् । पिण्ड० १३३, १३४ ।

गिरिमह-पर्वतमहः । आचा० ३२८ ।

गिरिराया-सर्वेषामपि गिरीणामुच्चैस्त्वेन तीर्थकरजन्माभिषेकाश्रयतया च राजा गिरिराजः, मेरुनाम । जं० प्र० ३७५ । गिरिराजः, । सूर्य० ७८ ।

गिरिविडकादि-आभरणविशेषः । आचा० ३६४ ।

गिरिसरिउवला-गिरिसरिदुपला-गिरिसरित्पाषाणाः । आव० ७५ ।

गिरिसरित्परिस्यः- । आव० ५५२ ।

गिरिसिद्धो-गिरिसिद्धः । दश० ४४ ।

गिरी-जत्थ पव्वए आरूढेहिं अहो पवायट्ठाणं दीसइ सो गिरी भण्णइ । नि० चू० द्वि० ५२ अ ।

गिला-ग्लानिः । व्य० प्र० १८५ अ ।

गिलाइ-ग्लायति ग्लानो भवति । भग० १२६ । ग्लानिः-खेदः । भग० २३२ ।

गिलाए-ग्लातिः-खेदः । भग० २१६ ।

गिलाण-ग्लानः । आव० ७८४ । ग्लानः-पञ्चमः कुडङ्गः । आव० ८५६ । अनीरुजः । आव० ८४३ । क्षीणहर्षः, अशक्त इत्यर्थः । ज्ञाता० १८० । अपगतप्रमोदः । सूत्र० १३७ । ग्लानो नाम रोगाभिभूतः । दश० ३१ । मन्दः । ओघ० १४ । जरादिगहितो विमुक्को वा । नि० चू० प्र० १४ आ । विकृष्टतपसा कर्त्तव्यताऽशक्तो वातादिक्षोभेण वा ग्लानः । आचा० २८१ । मन्दोऽपगतहर्षो वा । उत्त० २४६ ।

गिलाणभत्तं-गिलाणस्स दिज्जंति तं गिलाणभत्तं । नि० चू० प्र० २७२ आ । ग्लानभक्तं-ग्लानस्य नीरोगतार्थं भिक्षुकदानाय यत् कृतं तत् भक्तम् । भग० २३१ । भग० ४६७ । ग्लानः सन्नारोग्याय यद् ददाति तत् ग्लानभक्तम् । ज्ञाता० ५२ । औप० १०१ । ग्लानो रोगोपशान्तये यद्ददाति ग्लानेभ्यो वा यद् दीयते तत् । ठाणा० ४६० ।

गिलायं-ग्लानं-पर्युषितम् । बृ० प्र० ३१२ आ ।

गिलायंति-ग्लायन्ति-श्राम्यन्ति । ठाणा० १३५ ।

गिलासणि-भस्मको व्याधिः । आचा० २३५ ।

गिलासिणि-रोगविशेषः । नि० चू० द्वि० १४८ अ ।

गिल्लि-वाहनविशेषः । उत्त० ४३८ । भग० २३७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस्तिन उपरि कोल्लररूपा या मानुषं गिलतीव । अनु० १५६ । जीवा० २८१ । पुरुषद्वयोत्क्षिप्ता डोलिका । जं० प्र० १२३ ।

गिल्ली–पुरुषद्वयोक्षिप्ता झोल्लिका । सूत्र० ३३० । भग० २३७ ।

गिल्लीओ–हस्तिन् उपरि कोल्लराकाराः । भग० ५४७ ।

गिहंतरं–गिहं चेव अंतरं गिहं । दश० चू० ५१ ।

गिहंतरनिसिज्जा–गृहान्तरनिषद्या–गृहमेव गृहान्तरं गृहयोर्वा अपान्तरालं तत्रोपवेशनम् । दश ११७ ।

गिह–गृहं–पाशकल्पाः पुत्रकलत्रादयः । दश० २७३ । गृहं–शरणं, लयनम् । जीवा० २६६ । सकुड्डंगिहं । नि० चू० प्र० २६५ अ । वणरायमंडियं भवणं तं चेव वणविवज्जियं गिहं । नि० चू० द्वि० ७० अ । गृहं–अस्मद्गृहकल्पम् । जीवा० २७६ । गृहं–अपवरकादिमात्रम् । ठाणा० २६४ । अवस्थितप्रासादरूपम् । उत्त० ३८६ । गृहं सामान्यवेश्म । उत्त० ३०८ ।

गिहकम्म–गृहनिष्पत्त्यर्थं कर्म गहकर्म इष्टकामृदानयानादि । उत्त० ६६५ ।

गिहत्थ–गहस्थः–गृहलिंगे तिष्ठतीति गहस्थः । व्य० द्वि० २७ आ ।

गिहत्थसंसट्ठं–गृहस्थसंसृष्टम् । आव० ८५४ ।

गिहदुवारं–अग्गदारं पावेसितं तं गिहदुवारं भण्णति । नि० चू० प्र० १६२ अ ।

गिहमुहं–अग्गिमालिंदयो छड्डारुआलिंदो एते दो वि गिहमुहं । नि० चू० प्र० १६२ अ ।

गिहवइ–गृहपतिः धनाभिपः । आव० २६४ । गृहपतिः अवग्रहे तृतीयो भेदः । आचा० ४०२ । गृहपतिः–सामान्यमण्डलाधिपतिः । बृ० प्र० १०८ अ ।

गिहवती–शय्यादाता । ठाणा० ३४० ।

गिहवास–गृहमेव वा पारवश्यहेतुतया पाशः गृहपाशः । उत्त० ६६४ । गृहवासं–गृहावस्थानम् । उत्त० ६६४ ।

गिहापत्तणं–गृहेष्वागमनं गृहापतनम् । जीवा० ३४४ ।

गिहाययणं–गृहेषु तेषामायातनं गमनं गृहायतनम् । जीवा० २७६ ।

गिहि–गृही–भद्रकः । ओघ० ५७, १०५ । असंयतः । दश० २३६ । सकलत्रः । दश० २६० ।

गिहिचेतियं–पडिमा । नि० चू० द्वि० ६६ आ ।

गिहिजोग–गृहियोगः–गृहसम्बन्धं तद्वालग्रहणादिरूपः गृहिव्यापारो वा प्रारम्भरूपः । दश० २३१ । गिहीहिं समं जोगं–संसग्गि, गिहिकम्मं जोगो वा । दश० चू० १२२ ।

गिहिणिसेज्जा–पलियंकादी । नि० चू० द्वि० ६५ अ ।

गिहिधम्म–गृहस्थधर्मं एव श्रेयानित्याभिसंधाय तद्यथोक्तचारिणो गृहिधर्म्माः । अनु० २५ । गृहिधर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धेर्देवातिथिदानादिरूपगृहस्थधर्मानुगताः । औप० ६ । गृहिधर्मा–गृहस्थधर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धाय तद्यथोक्तकारी । ज्ञाता० १६५ ।

गिहिधम्मचिंतए– । ज्ञाता० १६५ ।

गिहिभायणं–गृहिभाजनं स्थाल्यादिः । सम० ३६ ।

गिहिमत्तो–घंटीकरगादि । नि० चू० द्वि ६४ आ । गृहिमात्रं–गृहस्थभाजनम् । दश० ११७ ।

गिही–गृद्धिः–अभिष्वङ्गलक्षणा । आव० ६५८ । अधाभद्रकः । नि० चू० प्र० १४७ अ ।

गिहेलुगं–गिहेलुकः–उम्बरः । आचा० ३६७ ।

गीअं–गीतिका–पूर्वार्द्धसदृशाऽपरार्धलक्षणा आर्या । जं० प्र० १३८ ।

गीइयं– । ज्ञाता० ३८ ।

गीई–गीतेन सूत्रेण केवलेन सम्यक् पठितेन गीतमस्यास्तीति गीति । बृ० प्र० ११२ अ ।

गीतजसे– । ठाणा० ४०६ ।

गीतत्थो–गृहीतार्थः । नि० चू० प्र० ७६ आ ।

गीतयशसः–गन्धर्वभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

गीतरतयः–गन्धर्वभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

गीतरती–गन्धर्वेन्द्रः । उत्त० ४२५ । ठाणा० ८५ ।

गीतिया–गीतिका–गानविशेषः । आ० ५५७ ।

गीय–गीतं–स्वरग्रामानुगतगीतिकानिबद्धम्, शब्दितम् । उत्त० २८७ । गीतं–गानमात्रम् । भग० ३२३ । ज्ञाता० ३८ । रागगीत्यादिकम् । जं० प्र० ३६ ।

गीयजसे–गीतयशः–उत्तरनिकाये अष्टमो व्यन्तरेन्द्रः । भग० १५८ । ठाणा० ८५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीयत्थ-गीतार्थः-वस्त्रपात्रपिंडैषणाध्ययनादिच्छेदसूत्राणि च सूत्रतोऽर्थतस्तदुभयतो वा येन सम्यगधीतानि स गीतार्थः। व्य० प्र० २४ आ। स्वयं व्यवहारमवबुद्धयते प्रतिपद्यमानो वा प्रतिपद्यते व्यवहारं सः गीतार्थः। व्य० प्र० ६ आ। सूत्रार्थतदुभयविदः, अन्यथा हेयोपादेयपरिज्ञानयोगात् ते एतादृशा एवंविधा गीतार्था गणावच्छेदिनः। व्य० प्र० १७२ अ।

गीयरइपिय-गीतरतिप्रियः-गीतेन या रती-रमणं क्रीडा सा प्रिया येषां गीतरतयो वा लोकाः प्रिया येषां ते। औप० ६२।

गीयरई-गीतरतिः-दक्षिणनिकाये अष्टमो व्यन्तरेन्द्रः। भग० १५८।

गीयसद्दं-गीतशब्दं-पञ्चमादिहुङ्कृतिरूपम्। ठाणा० ४०६।

गीया-गीतार्था-वृषभाः। व्य० प्र० २५१।

गुंगुयंता-कान्दिशीकाः। उत्त० १७९।

गुंजंत-गुञ्जन्तः शब्दविशेषं विदधानाः। जीवा० १८८। शब्दायमानाः। ज्ञाता० २७।

गुंज-गुञ्जा-रक्तिका। जं० प्र० ३४।

गुंजद्धराग-गुञ्जा तस्या अर्धरागो गुञ्जार्धरागः। प्रज्ञा० ३६१।

गुंजा-गुञ्जा-भम्मा। आचा० ७४। आतोद्यविशेषः। प्रश्न० ५१। चणोठिया। अनु० १५५।

गुंजालिका-सारिण्येव वक्रा। अनु० १४९।

गुंजालिकाः-दीर्घा गम्भीराः कुटिलाः श्लक्ष्णाः जलाशयाः। आचा० ३८२।

गुंजालिया-गुञ्जालिकाः वक्रसारिण्यः। भग० २३८। औप० ९३। वक्रा नदी। प्रज्ञा० २६७। वक्रसारणी। प्रश्न० ६०। वक्रसारिणी। ज्ञाता० ६७। नद्य एव वक्रा गुञ्जालिकाः। प्रज्ञा० ७२। अन्नेऽन्ने कवाडसंजुत्ताओ गुंजालिया भन्नंति। नि० चू० द्वि० ७० आ।

गुंजालियाओ-सारण्यस्ता एव वक्राः गुञ्जालिकाः। जं० प्र० ४१।

गुंजावाए-गुञ्जा-भम्मा तद्वत् गुञ्जन् यो वाती स गुञ्जावातः। आचा० ७४। यो गुञ्जन्-शब्दं कुर्वन् वाति गुञ्जावातः। जीवा० २९। प्रज्ञा० ३०।

गुंजावाता-ये गुञ्जतो वान्ति। उत्त० ६९४।

गुंजावाय-गुञ्जन् सशब्दं यो वाति स गुञ्जवातः। भग० १९६।

गुंजिए-गुञ्जितं-निर्घातविकारो गुञ्जावद्गुञ्जितो महाध्वनिः। आव० ७३६।

गुंजितं-निर्घातः-तस्सेव विकारो गुंजावत्। गुंजमानो महाध्वनिः। नि० चू० तृ० ७० आ।

गुंजीवल्ली-वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

गुंज्जित-गुंजावत् गुंजमानो महाध्वनिर्गुंजितम्। व्य० द्वि० २४१ आ।

गुंठा-मायाविनः। व्य० प्र० २५५। गुंठा-माया। व्य० प्र० २५६।

गुंठो-वाहणा गुंठादि गुंठो घोडगो। नि० चू० तृ० ३७ आ। घोटको महिषो वा। बृ० द्वि० १२५ आ।

गुंडिज्जइ-गुण्डयते। आव० ६२५।

गुंडिय-गुण्डित-परिकरिता। प्रश्न० ४७। गुण्डितः। ज्ञाता० ६१।

गुंतरुक्ख- । भग० ८०३।

गुंद-वृक्षफलविशेषः। आव० ८२८।

गुआर- । जं० प्र० १९४।

गुग्गुलभगवं-गुग्गुलभगवान्। आव० ७१२।

गुग्गुलमार- । आव० ७१२।

गुच्छ-वृन्ताकीप्रभृतिः। जीवा० २६; १८८। गुच्छः-वृन्ताकीसल्लकीकर्पास्यादिकः। आचा० ३०। पत्रसमूहः। भग० ३७। जं० प्र० २५। गुच्छाः-वृन्ताकीप्रभुतयः। भग० ३०६। जं० प्र० ३०। जीवा० २६।

गुच्छगलइअंगुलिओ-अङ्गुलिभिर्लातो-गृहीतो गोच्छको येन सोऽयमङ्गुलिलातगोच्छकः। उत्त० ५४०।

गुच्छय-गोच्छकं-पात्रकोपरिवर्त्युपकरणम्। उत्त० ५४०।

गुच्छा-वृन्ताक्यादयः। औप० ८। गुच्छाः-वृन्ताकीप्रभृतयः। प्रज्ञा० ३०। ज्ञाता० २८। पल्लवसमूहाः। ज्ञाता० २८।

गुच्छिय-सञ्जातगुच्छम्। भग० ३७।

गुज्झ-गुह्यं-रहस्यम्। विपा० ४०। लज्जनीयव्यवहार-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोपितम् । ज्ञाता० १२ । गुह्यं गोपनीयत्वात्, अब्रह्मणस्य चतुर्विंशतितमं नाम । प्रश्न० ६६ । गुह्यः-बहिर्जनाप्रकाशनीयः । राज० ११६ । गुह्यं-लज्जनीयव्यवहारगोपनम् । भग० ७३९ ।

गुज्झक्खिणी-स्वामिनी । बृ० तृ० १७१ आ ।

गुज्झगं-गुह्यकम् । ओघ० १६० ।

गुज्झगा-गुह्यकः भवनवासिनः । दश० २४९ ।

गुज्झगो-गुह्यकः-देवः । आव० ६३४ । देवविशेषः । पिण्ड १३१ । वैमानिकः । आव० ८१३ ।

गुज्झदेसो-गुह्यदेशः । जीवा० २७० ।

गुज्झाणुचरिअ-गुह्यानुचरितं सुरसेवितमित्यर्थः । दश० २२३ ।

गुट्ठ-स्तम्बः । उपा० २२ ।

गुट्ठी-गोष्ठी-दत्तवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३ टी ।

गुडधाना- । ठाणा० ११८ । सूर्य० २९३ ।

गुडपर्पटिका- । सूर्य० २९३ ।

गुडसत्थं-गुडशस्त्रं-नगरविशेषः । आव० ४११ ।

गुडा-तनुत्राणविशेषः । प्रश्न० ४७ । महाँस्तनुत्राणविशेषः । विपा० ४६ ।

गुडिया- । नि० चू० प्र० ३ आ ।

गुडेणं- । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।

गुण-गुण्यते-भिद्यते विशेष्यतेऽनेन द्रव्यमिति गुणः । आचा० ९९ । आत्मा वा शब्दाद्युपयोगानन्यत्वाद् गुणः । आचा० ९९ । रसना । आचा० ३९३ । स्वभावः-यथोपयोगस्वभावः । सम० ११२ । गुणशब्दोंऽशपर्यायः । अनु० १११ । ज्ञानादिः रूपादिश्च । अनु० १०५ । ज्ञानम् । उत्त० ७० । आचा० ८० । अनु० २६९ । प्रशस्तता । ज्ञाता० १२ । कटिसूत्रम् । ज्ञाता० ३५ । कान्तिलक्षणः । ज्ञाता० ३५ । क्षान्त्यादिः । आव० ४९ । विविधार्थसंवादनलक्षणः । सम० १२४ । उत्तरगुणो भावनादिरूपः । प्रज्ञा० ३९९ । स्वाध्यायध्यानादिः । आव० २६५ । कडीसुत्तयं । नि० चू० प्र० २५४ आ । निरवद्यानुष्ठानरूपः । आचा० ३३ । सौभाग्यादिकः । भग० ११९ । गुणः-गुणव्रतम् । भग० १३६ । प्रियभाषित्वादिः । ज्ञाता० ४३ । सौन्दर्यादिः । ज्ञाता० २२० । संयमगुणः । भग० १३६ । कार्यं दाक्षिण्यादिः । भग० १४८ । दर्शनज्ञाने । विशे० २ । निर्जराविशेषः । ज्ञाता० ७३ । गुणः-शब्दादिकः । आचा० ६२ । गुणः-ज्ञानादिः । सूर्य० ५ । अनन्तगमपर्यायवस्त्वमुच्चारणं वा । सूत्र० ७ । मूलोत्तरगुणभूतः । सूत्र० ४०० । उपकारः । प्रश्न० ३६ । गुणव्रतम् । औप० ८२ । सहवर्त्ती । औप० ११७ । पर्यायः विशेषः धर्मश्च । प्रज्ञा० १७९ । रक्तसूत्ररूपः । जीवा० २०५ । क्षान्त्यादिः । जीवा० २७४ । सुरूपादिः । आव० ५८५ । प्रशस्तत्वम् । प्रश्न० ७४ । वर्णादिः सहभावी धर्म्म एव । प्रश्न० ११७ । ऐहिकामुष्मिकोपकाराः । प्रश्न० १२३ । निर्विभागो भागः । जं० प्र० १२९ । धर्म्मः । ठाणा० ३३४ । गुणाः-संयमगुणाः । निरय० २ । गुण्यन्ते संख्यायन्त इति गुणाः-पिण्डविशुद्धयाद्युत्तरगुणरूपाः । विशे० २ । गुणाः-रूपादयः । उत्त० ५५७ । गुणं-गुणव्रतम् । भग० ३२३ ।

गुणओ-गुणतः-कार्यतः-कार्यमाश्रित्येत्यर्थः । ठाणा० ३३३ ।

गुणकरणं-गुणानां करणं गुणकरणं, गुणानां कृतिः । आव० ४६६ । तपकरणं-अनशनादि संयमकरणं च पश्चाश्रवविरमणादि गुणकरणमुच्यते । उत्त० २०५ ।

गुणकरो-गुणकरः-गुणाः-ज्ञानादयस्तत्करणशीलः, भावकरविशेषः । आव० ४९९ ।

गुणकल्पना- । आचा० ५५ ।

गुणकारोत्ति-गुणकारस्तेन यत्सङ्ख्यानं तत्तथैवोच्यते । तच्च प्रत्युपन्नमिति लोकरूढम्, अथवा यावतः कुतोऽपि तावत एव गुणकराद्यादृच्छिकादित्यर्थः । ठाणा० ४९७ ।

गुणचंद-गुणचन्द्रः-चन्दावतंसकराज्ञः प्रियदर्शनाराज्यो ज्येष्ठः पुत्रः । आव० ३६६ । आधाकर्मानुमोदनायां श्रीनिलयनगरे राजा । पिण्ड० ४९ । आधाकर्मपरिभोगे शतमुखपरे श्रेष्ठी । पिण्ड० ७४ । गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्रः । पिण्ड० ७८ । उत्कृष्टमालापहृतविवरणे साधुः । पिण्ड० १०९ । मानपिण्डोदाहरणे क्षुल्लकः । पिण्ड० १३४ । प्रज्ञा० ४४१ ।

गुणचूडः-गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तश्रेष्ठीपुत्रः । पिण्ड० ७८ ।

गुणट्ठीए-गुणार्थी-रन्धनपचनप्रकाशातापनाद्यग्निगुणप्रयो-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जनत्वात् । आचा० ५३ ।
गुणतत्तिला-गुणग्राहका । नंदी० ६४ ।
गुणदेशः-गुणोद्देशा । प्रश्न० १०२ ।
गुणना-परावर्तना । बृ० प्र० २३३ अ ।
गुणनिकाकाले- । ठाणा० २५७ ।
गुणनिप्फन्नं-गुणनिष्पन्नम् । ज्ञाता० ४१ ।
गुणनी- । नंदी० १६६ ।
गुणभावणा-गुणभावना । आव० ४८४ ।
गुणभूई-गुणभूतिः- अचिन्त्या गुणसम्पत् । आव० २३७ ।
गुणभूतत्वम्- । दश० ५७ ।
गुणमह्-गुणैर्महान्-उपशमकः । आव० ८३ ।
गुणमित्रः-आधाकर्मण अभोज्यतायां उग्रतेजसः पुत्रः । पिण्ड० ७१ ।
गुणयारो-गुणकारः । सूर्य० ११४ ।
गुणरयणं-गुणरत्नं तपःकर्मः । अनु० १ । गुणरत्नसंवत्सराभिधस्तपोविशेषः, तपोविशेषः । अन्त० ३, १८ ।
गुणरयणचच्चिका-गुणरत्नचाकचिक्याः-गुणरत्नमण्डिताः । चउ० ।
गुणरयणसंवच्छरं-गुणानां-निर्जराविशेषाणां रचनं-करणं संवत्सरेण सत्रिभागवर्षेण यस्मिंस्तपसि तद् गुण-रचनसंवत्सरम्, गुणा एव वा रत्नानि यत्र स तथा गुणरत्नः संवत्सरो यत्र तद् गुणरत्नसंवत्सरं तपः । भग० १२५ । ज्ञाता० ७३ ।
गुणवंतो-गुणवन्तः-पिण्डविशुद्धयाद्युत्तरगुणोपेताः । आचा० ३५० ।
गुणवती-गुणचन्द्रस्य राज्ञी । पिण्ड० ४६ ।
गुणविरियं-जं ओसहीण तित्तकडुयकसायअंबिलमहुर-गुणताए रोगावणयणसामत्थं एतं गुणविरियं । नि० चू० प्र० १६ अ ।
गुणव्वत-गुणव्रतः-दिग्व्रतोपभोगपरिभोगव्रतलक्षणः । ठाणा० २३६ ।
गुणशतकलितः-प्रश्रयादिगुणोपेतः सूरिः । आचा० ३ ।
गुणशेखरः-गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्रः । पिण्ड० ७८ ।
गुणश्रेणिः- । प्रज्ञा० ६०८ ।
गुणश्रेणिरचना- । भग० १८ ।
गुणसंकर-गुणसमुदायरूपः । ज्ञाता० १६८ ।
गुणसङ्क्रमः- । उत्त० ५८० ।
गुणसमिय-गुणयुक्तोऽप्रमत्ततया यतिः गुणसमितः । आचा० २१७ ।
गुणसमृद्धं-महाबलराजधानी । पिण्ड० ४७ ।
गुणसागरः-गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणचन्द्रपुत्रः । पिण्ड० ७८ ।
गुणसिद्धी-गुणसिद्धिः--अन्वर्थसम्बन्धः । दश० ७१ ।
गुणसिलं-गुणशिलं राजगृहे चैत्यविशेषः । उत्त० १५८ । उपा० ४८ । विपा० ८६ । गुणशिलं राजगृहनगरे चैत्यम् । भग० ६, ३२३, ३७६, ५०२, ७३६, ७५० । ज्ञाता० ३६ । आव० ३२५ । अनुत्त० १७७ । अन्त० १८ । गुणशिलः--वर्धमानस्यामिनः समवसरणस्थानम् । उद्यानविशेषः । व्य० प्र० १७४ अ ।
गुणसिलयं-राजगृहे चैत्यम् । आव० ३१४ ।
गुणसिला-गुणशिला--स्कन्दकचरित्ते राजगृहनगरे चैत्यम् । भग० ११२ ।
गुणसेढीयं-गुणश्रेणी--क्षपणोपक्रमविशेषरूपा । सामान्यतः किल कर्मबह्वल्पमल्पतरमल्पतमं चेत्येवं निर्जरणाय रचयति, यदा तु परिणामविशेषात् तत्र तथैव रचिते कालन्तर-वेद्यमल्पं बहु बहुतरं बहुतमं चेत्येवं निर्जरणाय तदा सा गुणश्रेणीत्युच्यते । औप० ११३ ।
गुणसेन-गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्रः । पिण्ड० ७८ ।
गुणस्थानक- । ठाणा० ५३ ।
गुणा-सौभाग्यादयः, अथवा लक्षणव्यञ्जनयोर्ये गुणाः । ठाणा० ४६१ । चारित्रविशेषरूपाः । सम० ४६ । शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च । सम० १२७ । ज्ञानादयः । सम० १२४ । प्रभावाः । सम० १२५ । साधनभूता उपकारकाः । उत्त० ४१६ । पिण्डविशुद्धयादयः । उत्त० ५६७ । विपा० ४५ । सन्तः मुनयः पदार्था वा । आव० ७६० । रसादिकाः संयमगुणा वा । आव० ८५० । कार्याणि । प्रश्न० ७४ । शुक्लादयः । विशे ३५६ । गुणव्रतानि । सम० १२० । भग० ३६८ । महर्द्धिप्राप्त्यादयः शकन्ध्वा-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिदर्शनात् । सम० १५७ । । पर्यवाः धर्म्माः विशेषा वा । भग० ८८९ । गुणाः-करुणादयः । औप० ३३ । क्षान्त्यादयः । जं० प्र० ११३ । गुणाः-सप्तविंशतिरनगारगुणाः । प्रश्न० १४५ । गुणास्तु पुद्गलानुवर्त्तिनः पर्यायाः । विशे० ३६२ ।

गुणागुणे-ऋजुता । आचा० ८६ ।

गुणाणं विराहणा-गुणानां विराधना हिंस्यप्राणिगतगुणानां हिंसकजीवचारित्रगुणानां वा विराधना-खण्डना । प्रश्न० ६।

गुणालयं-गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तस्य वास्तव्यपुरम् । पिण्ड० ७८ ।

गुणिता-अधीता । ओघ० ५३ ।

गुणत्तर-भवस्थकेवलिसुहं । नि० चू० तृ० २४ आ ।

गुणत्तरतरं-मोक्खसुहं । नि० चू० तृ० २४ आ ।

गुणत्तरधरो-गुणेषूत्तराः-प्रधाना गुणोत्तराः ज्ञानादयस्तान् धारयतीति गुणोत्तरधरः । उत्त० ३५७ ।

गुणुद्देसो-गुणोद्देशः-गुणदेशः । प्रश्न० १०२ ।

गुण्यते-भिद्यते । आचा० ९९ ।

गुत्त-गुप्तं-युक्तम् । प्रश्न० १३४ । वृत्त्या फलहकेन वा वृत्तम् । बृ० द्वि० १८१ आ । गुप्तः-अभेदवृत्तिः । भग० १९४ । प्राकाराद्यावृता । भग० ३१३ । न स्वामिभेदकारिणः । पराप्रवेश्या । जीवा० २६० । गुप्तिभिः-वसत्यादिभिः । जं० प्र० १४८ । तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः । सूत्र० २९८ । संमूढः । ओघ० ११९ । प्रविष्टः । नि० चू० प्र० १७२ आ । गां त्रायत इति गोत्रं-साधुत्वम् । सूत्र० ४१३ । प्राकारवेष्टितत्वाद् गुप्तम् । ठाणा० ३१२ । गोत्रं-कुलम्, नामानि । ठाणा० २९४ ।

गुत्तदुवारा-गुप्तद्वारा-कपाटादियुक्तद्वारा । भग० ३१३ ।

गुत्तदुवारे-द्वाराणां स्थगितत्वाद् गुप्तद्वारम् । ठाणा० ३१२ ।

गुत्तपालिय-गुप्तपालिकाः-तदन्यतो व्यावृत्तमनोवृत्तिका मण्डलिकाः । भग० १९४ । गुप्ता-पराप्रवेश्या पालिः-सेतुर्यस्य सः । जीवा० २६० ।

गुत्तबंभचारी वसत्यादिनवब्रह्मचर्यगुप्तियोगात् । ज्ञाता० १०३ ।

गुत्ता-गुप्ता-पराप्रवेश्या । राज० ११३ । वृत्त्या कुड्येन वा परिक्षिप्ता । बृ० प्र० ३१० अ ।

गुत्तागुत्तिंदिय-गुप्तागुप्तेन्द्रियः-गुप्तानि शब्दादिषु रागादिनिरोधाद् अगुप्तानि च आगमश्रवणेर्यासमित्यादिष्वनिरोधादिन्द्रियाणि येषां ते । औप० ३५ ।

गुत्तिंदिय-गुप्तेन्द्रियः शब्दादिषु रागादिरहितः इत्यर्थः । औप० ३५ ।

गुत्ति-रक्षा । बृ० द्वि० १२९ आ । गोपनं गुप्तिः-सम्यग्योगनिग्रहः । प्रवचनविधिना मार्गव्यवस्थापनमुन्मार्गगमननिवारणं गुप्तिः । उत्त० ५१४ ।

गुत्तिसेण-गुप्तिसेनः । सम० १५३ ।

गुत्ती-गुप्तिः-प्रविचाराप्रविचाररूपा । आव० ५७२ । सूत्र० २४४ । मनोगुप्त्यादिः वसत्यादिर्वा । प्रश्न० १३४ । अशुभानां मनःप्रभृतीनां निरोधः, अहिंसायास्त्रिचत्वारिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ९९ ।

गुत्तीओ-गुप्तयः मनोवाक्कायलक्षणा अनवद्यप्रविचाराप्रविचाररूपाः । प्रश्न० १४२ ।

गुत्तीतो-गुप्तयः-रक्षाप्रकाराः । ठाणा० ४४५ । गोपनानि गुप्तयः-मनःप्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति । सम० ९ । गोपनं गुप्तिः-मनःप्रभृतीनां कुशलानां प्रवर्तनमकुशलानां च निवर्त्तनमिति । ठाणा० ११२ ।

गदं-अपानम् । नंदी० १५२ ।

गुपिलं-गहनम् । नंदी० ४२ ।

गुप्ति-विधानतो ज्ञात्वाऽभ्युपेत्य सम्यग्दर्शनपूर्वकं त्रिविधस्य योगस्य निग्रहः । तत्त्वा० ९-४ ।

गुप्फ-गुल्फः-घुटिकः । जं० प्र० ११० ।

गुब्भंगं-मृगीपदम् । नि० चू० प्र० २११ अ ।

गुम्मं-गुल्मं-वृन्दमात्रम् । औप० ५९ । वंशजालिप्रभृतिः । ज्ञाता० ३६ । समूहः-समुदायः । बृ० द्वि० २६० अ । गुच्छैकदेशः-उपाध्यायाधिष्ठितः । औप० ४५ । गुल्मः-नवमालिकाप्रभृतिः । भग० ३०६ । प्रज्ञा० ३० । जीवा० २६ । गुल्मः-नवमालिकादिः । औप० ८ । जीवा० १८८ । जं० प्र० ३० । लतासमूहः । विशे० ९०४ ।

गुम्मइअ-गुल्मितं-घूर्णितचेतनम् । बृ० प्र० २३१ आ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुलमयितं-मूढम् । औप० ६४ ।
गुम्मा-गुल्मा नाम ह्रस्वस्कन्धबहुकाण्डपत्रपुष्पफलोपेताः । जं० प्र० ६८ । गुल्मा-पुष्करिणी नाम । जं० प्र० ३६० ।
गुम्मिय-गुल्मेन-समुदायेन चरन्तीति गौल्मिकाः । व्य० प्र० १३५ अ । गुल्मं-स्थानं तद्रक्षपाला गुल्मिकाः । ओघ० ८० । स्थानकरक्षपालाः । ओघ० ८२ ।
गुम्मी-शतपदी त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । उत्त० ६९६ ।
गुमुगुमती-गुमगुमायमाना । आव० ५१४ ।
गुरु-स्वप्रयोजननिष्ठः । उत्त० ६३१ । पूज्यास्तीर्थकृद्गण-भृदादयः । उत्त० २३१ । यथावच्छास्त्राभिधायकाः । उत्त० ६२२ । अधोगमनहेतुः । ठाणा० २६ । स्पर्शस्य चतुर्थो भेदः । ४७३ । गुरूणां-मात्रादिकानां । जं० प्र० १६९ । गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः-धर्मोपदेशदाता । आव० ११९ । धर्मोपदेशकः । ज्ञाता० १२३ । पिता-महादिलक्षणः । आव० ५१६ । आचार्यः । दश० ४५ । सारोपेतम् । दश० २६३ । तीर्थकरादिः । पिण्ड० ११४ । गृणन्ति तत्त्वमिति गुरवः-तीर्थकरगणधरादयः । विशे० ३ । मातापितृधर्म्माचार्याः । ठाणा० ३६९ । गौर-वार्हः । उत्त० ४४ । वैद्यः । बृ० द्वि० १४१ अ । गुरुः-धर्माचार्यः । उत्त० १५२ । आचार्यः । बृ० तृ० ९५ अ । धर्मज्ञो धर्मकर्त्ता च सदा धर्मप्रवर्त्तकः । सत्त्वे-भ्यो धर्मशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते । प्रज्ञा० १६३ । आय-रियो । नि० चू० द्वि० १६४ अ । दीक्षाद्याचार्यः । भग० ७२७ । चैत्यसाधुः । उपा० १३ ।
गुरुअब्भुट्ठाणं-गुर्वभ्युत्थानम् । आव० ८५३ ।
गुरुअमुई-गुर्वमोची-निष्ठुरं निर्भर्त्सितोऽपि गुरुणाममोचन-शीलः । बृ० प्र० १२१ आ ।
गुरुई-गुर्वी-गुरुका । ज्ञाता० १५९ ।
गुरुए-गुरुकः-भगवत्याः प्रथमशतके गुरुकविषयो नवम उद्देशः । भग० ६ ।
गुरुओ-गुरुकर्मा । सूत्र० १९७ ।
गुरुक-गुरुकः-षण्मासः । व्य० प्र० ६ । ठाणा० १४५ । बृ० प्र० ४९ अ ।
गुरुकुलं-गुरोः कुलं गुरुकुलं-गुरुसान्निध्यम् । आचा० २०३ ।
गुरुगतराग-गुरुतरकः-चतुर्मासपरिमाणः । व्य० प्र० १८७ अ ।
गुरुगती-भावप्रधानत्वान्निर्देशस्य गोरवेण ऊर्ध्वाधस्ति-र्यग्गमनस्वभावेन या परमाण्वादीनां स्वभावतो गतिः सा गुरुगतिः । ठाणा० ४३४ ।
गुरुगो-गुरुको नाम व्यवहारो मासो मासपरिमाणः । व्य० प्र० १८७ अ ।
गुरुजणं-गुरुजनः-गुणस्थसुसाधुवर्गः । आव० ५१९ ।
गुरुतप्पओ-गुरुतल्पकः-दुर्विनीतः । प्रश्न० ३६ ।
गुरुनिओगविणयरहिया-गुरुषु मात्रादिषु नियोगेन-अव-श्यंतया यो विनयस्तेन रहिताः गुरुनियोगविनयरहिताः । भग० ३०८ ।
गुरुनिग्गहो-गुरुनिग्रहः । आव० ८११ ।
गुरुपरिओसगए-गुरुपरितोषगतः-गुरुपरितोषजातः । आव० २६९ ।
गुरुपरिभासिय-गुरून् परिभाषते विवदते गुरुपरिभाषिकः । उत्त० ४३४ ।
गुरुपरिसंस्थापनम्- । दश० २८४ ।
गुरुपर्वक्रमलक्षणः केवलश्रद्धानुसारिणः प्रति । प्रज्ञा० २ ।
गुरुमहत्तरएहिं-गुर्वोः-मातापित्रोर्महत्तराः-पूज्याः, अथवा गौरवार्हत्वेन गुरवो महत्तराश्च वयसा वृद्धत्वाद्ये ते गुरुमहत्तराः । ठाणा० ४६३ ।
गुरुयत्ता-गुरुकता-विस्तीर्णता । भग० २१५ ।
गुरुलहुपज्जव-गुरुलघुद्रव्याणि-बादरस्कन्धद्रव्याणि-औदा-रिकवैक्रियाहारकतैजसरूपाणि तत्पर्यवाः । जं० प्र० १३० ।
गुरुलहुफासपरिणामे- । सम० ४१ ।
गुरुवायणोवगयं-गुरुप्रदत्तया वाचनया उपगतं-प्राप्तं गुरुवाचनोपगतं न तु कर्णाघाटकेन शिक्षितम् । अनु० १६ ।
गुरुविषयं-गुराविदं करणं गुरुकरणम् । आव० ४७१ ।
गुरुसम्भारियत्ता-गुरोः सम्भारिकस्य च भावो गुरु-सम्भारिकता गुरुता सम्भारिकता चेत्यर्थः । अतिप्रकर्षा-वस्था । भग० ४५६ ।
गुरूणां-आलोचनार्हाणामाचार्यादीनाम् । उत्त० २३३ ।
गुर्जरः-देशविशेषः । अनु० १३९ ।
गुलं-गुडम् । अनु० १५४ । गुल्मं-लतासमूहः । भग०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७ ।

गुलइय–गुल्मवान् । औप० ७ ।

गुलकडं– । नि० चू० प्र० १६६ आ ।

गुलगुलाइअ–गुलगुलावित रूपेण । जं० प्र० १४४ ।

गुलदव–गुलद्रवं नाम यस्यां कवल्लिकायां गुड उत्काल्यते तस्यां–यत्तप्तमतप्तं वा पानीयं तद्गुडोपलिप्तं द्रवं गुडद्रवम् । बृ० प्र० २५३ अ ।

गुलपाणिय–गुलो जीए कवल्लीए कड्ढिज्जति तत्थ जं पाणीयं कयं तत्तमतत्तं वा तं गुलपाणियं भण्णति । नि० चू० प्र० २०४ अ ।

गुलया–द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

गुललावणिका–गुडपर्पटिका । ठाणा० ११८ ।

गुललावणिया–गुडलावणिका–गुडपर्प्पटिका गुडधाना वा । सूर्य० २६३ । भग० ३२६ । प्रश्न० १६३ ।

गुलवंजणी–मोदती । नि० चू० तृ० ६४ अ ।

गुलिका–तुवरवृक्षचूर्णगुटिका । बृ० द्वि० १०० आ, १०२ अ । पिटकं बुसपुञ्जो वा पिण्डका वा । बृ० द्वि० ६४ आ ।

गुलिगा–लोलगा । नि० चू० द्वि० १४ आ ।

गुलिय–गुटिका । आव० २६६ ।

गुलियविरेयणपीओ–पीतविरेचनगुलिकः । उत्त० ३७६ ।

गुलिया–गुटिका–द्रव्यवटिकाः । विपा० ४१ । द्रव्यसंयोगनिष्पादितगोलिकाः । ज्ञाता० १८३ । आव० ६७६ । हरितालिकासारनिर्वर्त्तिता गुटिका । जं० प्र० ३४ । वक्कलाणि । बृ० द्वि० १०२ आ । गुटिका वटिका । उत्त० १४३ । मुखे प्रक्षेपकस्य स्वरूपपरावर्त्तादिकारिका गुटिका । पिण्ड० ६६ । गुलिकाः–पीठिकाः । मनोगुलिकापेक्षया प्रमाणतः क्षुल्लाः । जीवा० ३६३ । नीत्री । ज्ञाता० १०१ । पीठिकाः । जीवा० ३५६ । गुलिकाः–वर्णद्रव्यविशेषः । औप० ११ ।

गुलियासहस्सं–गुलिकासहस्रम् । जीवा० २३३ ।

गुलुकः–गुल्फः । जीवा० २७० ।

गुलुम्मातितो–सङ्गाभिलाषी । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।

गुलू–गुरुः–आचार्यः । बृ० द्वि० २८३ अ ।

गुल्फपादः– । आचा० ३८६ ।

गुल्मं–स्थानम् । ओघ० ८? ।

गुल्मः–रोगविशेषः । बृ० प्र० १७० अ ।

गुल्मकं–लतासमूहः । जं० प्र० २५ ।

गुल्मिका–गोत्तिपालाः । ओघ० २२३ ।

गुवंति–गुप्यन्ति–व्याकुलीभवन्ति । भग० ६७० ।

गुवल–गुप्तः । नि० चू० द्वि० ४० आ ।

गुविते–गुप्येत–व्याकुलो भवेत् क्षुभेद् । ठाणा० १६२ ।

गुविलं–व्याप्तम् । महाप० ।

गुविला–गम्भीरा । बृ० तृ० २१ अ ।

गुविलो–गहणो । नि० चू० तृ० १४६ अ ।

गुहा–कन्दरा । भग० २३७ । प्रश्न० २० । सुरङ्गाः । जं० प्र० २०६ । लयनम् । उत्त० ४६३ । तिमिश्रागुहादयः । नंदी० २२८ । उष्ट्रिकाकृतिर्नरकविशेषः । सूत्र० १३० ।

गुहालयन– । आचा० २२६ ।

गुह्यापवरकः–मन्त्रगृहादि रहःस्थानम् । दश० १६६ ।

गूढं–मांसलत्वादनुद्धतम् । जीवा० २७० । अनुपलक्षम् । प्रश्न० ८० ।

गूढगब्भा–गूढगर्भा । आव० २१२ ।

गूढदंत–जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिष्यति उत्सर्पिण्यां तृतीयश्चक्रवर्त्ती । सम० १५४ । गूढदन्तः–अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अनुत्त०२ । अन्तरद्वीपविशेषः । जीवा० १४४ ।

गूढदंता–गूढदन्तनामा अन्तरद्वीपविशेषः । प्रज्ञा० ५० ।

गूढदंतदीवे–अन्तरद्वीपविशेषः । ठाणा० २२६ ।

गूढमुत्तोलि–गूथगोणीं । तं० ।

गूढसामत्थो–गूढसामर्थ्यः । आव० ६४६ ।

गूढसिरागं–गूढशिराकं–अलक्ष्यमाणशिराविशेषम् । प्रज्ञा० ३७ ।

गूढा–गूढाः–बहिःसंवृत्तिमन्तः । उत्त० ५२६ ।

गूढावत्ते–गूढश्चासावावर्त्तश्चेति गूढावर्त्तः । ठाणा० २८८ ।

गूथं–वर्चः । ओघ० १२३ ।

गूहग–विष्ठा । तं० ।

गूहणं–किंचिकहणं । दश० चू० १२४ । सति बलपरक्कमे अकरणं गूहणं । नि० चू० प्र० १८ अ । गूहनं–किञ्चित्कथनम् । दश० २३३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गूहे–गूहयेत् । दश० २३२ ।
गुंजनं– । जं० प्र० २४४ ।
गृहकोलिका–गृहगोधिका । दश० २३० ।
गृहजातः–दासः । उत्त० २६५ ।
गृहजामाता–गृहस्थाता दुहितृपतिः । नंदी० १६२ ।
गृहणैषणा– । आचा० २८३ ।
गृहपतिः–माण्डलिको राजा । आव० १५६ । गृहस्थः । आचा० ३२१ ।
गृहपतिरत्न– । जं० प्र० २१६ ।
गृहपत्यवग्रहः–अवग्रहपञ्चके तृतीयो भेदः । आचा० १३४ । माण्डलिकावग्रहः । आव० १५६ ।
गृहिव्यापारः–गृहियोगः–प्रारम्भरूपः । दश० २३१ ।
गृहशाला– । उत्त० ६०५ ।
गृहस्थी–भिक्षां प्रयच्छन्ती गृहस्थी । ओघ० १६२ ।
गृहस्थोपसम्पत्-उपसम्पतौ प्रथमो भेदः । आव० २६७ । यत्पुनरवस्थाननिमित्तं गृहिणामनुज्ञापनं सा गृहस्थविषया । बृ० प्र० २२२ अ ।
गृहाचारः–गार्हस्थ्यं–आगारधर्मः । उत्त० ५७८ ।
गृहीतव्यः–निश्रेतव्यः । व्य० प्र० २०५ अ ।
गृहे–गृहलिंगे । व्य० द्वि० २७ आ ।
गेंदुए–गेन्दुकः–पुष्पलम्बूसकः । जं० प्र० २७५ ।
गेंदुकदवरकः– । ठाणा० २८६ ।
गेंदुग– । नि० चू० द्वि० ७१ आ ।
गेज्जं–गद्यं–यत्र स्वरसञ्चारेण गद्यं गीयते । जं० प्र० ३६ ।
गेण्हितुं–गृहीत्वा । आव० ८२७ ।
गेद्धावरंखी–भोयणकाले परिवेसणाए इतो बाहित्ति भणितो ताहे गेद्धो इव रिखंतो भायणं उड्डेति । नि० चू० द्वि १०१ अ ।
गेधी–सदोसुवलद्धेवि अविरमो गेधी । नि० चू० द्वि० ७१ आ ।
गेयं–गन्धर्व्यो रीत्या बद्धं गानयोग्यम् । जं० प्र० २५६ । गीयत इति गेयं—तंतिसमं तालसमं वण्णसमं गहसमं लयसमं च कव्वं । तु होइ गेयं पंचविहं गीयसन्नाए । दश० ८७ । ठाणा० ३९७ ।
गेरुअ–गैरिका–धातुः । दश० १७० ।
गेरुआ–परिवायया । नि० चू० द्वि० ६८ अ ।
गेरुक–मृत्तिकाभेदः । आचा० ३४२ ।
गेरुय–गैरिकः–मणिविशेषः । प्रज्ञा० २७ । गेरुअः–मणिभेदः । उत्त० ६८९ ।
गेलन्न–ग्लानत्वम् । ओघ० ८६ । ग्लान्यं–ग्लानत्वम् । ठाणा० ३१३ ।
गेल्लि–हस्तिन उपरि कोल्लररूपा या मानुषं गिलतीव । भग० १८७ ।
गेविज्जं–ग्रैवेयकं–ग्रीवा बन्धनम् । प्रश्न० १६ । ग्रैवेयं ग्रीवाभरणविशेषः । जं० प्र० १०५ । ग्रीवात्राणं ग्रीवाभरणं वा । जं० प्र० २१६ । ग्रैवेयकं–कण्ठलम् । औप० ५५ । ग्रैवेयं–ग्रीवाभरणम् । जीवा० २५६ ।
गेविज्जगा–ग्रैवेयकाः । प्रज्ञा० ६६ ।
गेविज्जन–लोकपुरुषस्य ग्रीवास्थाने भवानि ग्रैवेयकानि । ठाणा० १७६ ।
गेविज्जा–ग्रैवेया–देवावासास्तन्निवासिनो देवा अपि । उत्त० ७०२ ।
गेवेज्ज–ग्रैवेयकं–ग्रीवाभरणम् । भग० १६३ । लोकपुरुषस्य ग्रीवाविभागे भवानि विमानानि । अनु० ६२ ।
गेहं–गृहम् । उत्त० ३२० ।
गेहसंठिया–गेहस्येव वास्तुविद्योपनिबद्धस्य गृहस्यैव संस्थितं संस्थानं यस्याः सा गेहसंस्थिता । सूर्य० ६६, ७० ।
गेहागारा–गेहाकाराः भवनत्वेनोपकारिणः । सम० १८ । गेहाकारा–नामद्रुमगणाः । जं० प्र० १०६ । ठाणा० ५१७ ।
गेहागारो–गेहाकारः द्रुमविशेषः । जीवा० २६६ । गृहाकारः–षष्ठः कल्पवृक्षः । आव० १११ ।
गेहावणसंठिय–गृहयुक्त आपणो गृहापणो–वास्तुविद्याप्रसिद्धस्तस्येव संस्थितं–संस्थानं यस्या सा गृहापणसंस्थिता सूर्य० ६६ ।
गेहावणाइ–गेहेषु आयतनानि आपतनानि वा उपभोगार्थमागमनानि । जं० प्र० ११६ ।
गेहावणो–गृहयुक्त आपणो वास्तुविद्याप्रसिद्धः गृहापणः सूर्य० ६६ ।
गेहि–गृद्धिः–अप्राप्तार्थाकाङ्क्षा । प्रश्न० ६७ । अप्राप्तस्य

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राप्तिवाञ्छा । प्रश्न० ४४ । विषयाभिकाङ्क्षा । उत्त० २६४ ।

गेहिए–गेहकः–भर्त्ता । उत्त० १३७ ।

गेही–गृद्धिः–प्राप्तार्थेष्वासक्तिः । भग० ५७३ ।

गैरिकः– । जीवा० २३ ।

गोंड–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

गोंफा–गुल्फौ–घुण्टकौ । प्रश्न० ८० ।

गो–पुरित्थगतो लोगं तं गच्छतीति । दश० चू० १०३ । गोशब्देन गावोबलिवर्दाः । बृ० प्र० १५७ आ । गो–गाविओ । नि० चू० द्वि० १३७ अ ।

गोअ–गोत्रं–गुणनिष्पन्नाभिधानम् । औप० ५७ ।

गोअम–विचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापयुक्तवराटकमालिकादिचर्चितवृषभकोपायतः कणभिक्षाग्राहिणो गोतमाः । अनु० २५ । गौतमः । आचा० ३५६ । गौतमः–आगम प्रसिद्धो गणधरविशेषः । आव० ४१३ ।

गोअरे–सामायिकत्वाद् गोरिव चरणं गोचरः । दश० १८ ।

गोउरं–गोभिः पूर्यत इति गोपुरं–पुरद्वारम् । जीवा० २७९ । प्रतोली कपाटो वा, पुरद्वारम् । प्रश्न० ८ । गोपुरं–नगरप्रतोली पुरद्वारम् । भग० २३८ ।

गोउलं–घोसं । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गोकण्णो–गोकर्णः–अन्तरद्वीपविशेषः । जीवा० १४४ । द्विखुरचतुष्पदविशेषः । प्रश्न० ७ । जीवा० ३८ ।

गोकन्न–द्विखुरचतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

गोकन्नदीवे–अन्तरद्वीपविशेषः । ठाणा० २२६ । गोकर्णनामान्तरद्वीपः । प्रज्ञा० ५० ।

गोकर्ण–मृगभेदः । शृङ्गवर्णादिविशेषः । जं० प्र० १२४ ।

गोकलिंज–डल्ला । जं० प्र० ५८ । गोकलिञ्जं नाम यत्र गोभक्तं प्रक्षिप्यते । राज० १४१ । गवां चरणार्थं यद्वंशदलमयं महद्भाजनं तद्गोकलिञ्जं डल्लेति । उपा० २० ।

गोकिलिञ्जरं– । जीवा० २१३ ।

गोकुलं–परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे ग्रामविशेषः । पिण्ड० १२७ ।

गोक्षुरकं–त्रिकण्टकम् । ओघ० १२४ ।

गोखीरफेणो–गोक्षीरफेनः । जीवा० २७२ ।

गोग्गहणे– । ज्ञाता० २२६ ।

गोघायको–गोघातकः । आव० ३९१ ।

गोचरः–विषयः । आव० ५८९ ।

गोच्छं–भाजनवस्त्रविशेषः, वक्ष्यमाणलक्षणं प्रमार्जयति । ओघ० ११७ ।

गोच्छओ–गोच्छकः–पात्रवस्त्रप्रमार्जनहेतुः कम्बलशकलरूपः । प्रश्न० १५६ । कंबलमयो बद्धपात्रोपरि । बृ० द्वि० २३७ अ ।

गोच्छकः–यः पात्रकस्योपरि दीयते सः । ओघ० १९९ ।

गोच्छिया–जातगुच्छाः । ज्ञाता० ५ ।

गोजलोया–द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ ।

गोजिब्भा–गोजिव्हा । प्रज्ञा० ३६७ ।

गोजूंति–गोचरं । नि० चू० द्वि० १४४ अ ।

गोज्ज–नर्त्तकः । दश० ४९ ।

गोज्झपेक्खिया–नृत्यविशेषप्रेक्षिका । आव० ९२ ।

गोट्ठं–गोष्ठं–गोकुलम् । आव० ७१९ ।

गोट्ठामाहिल–गोष्ठमाहिलः यः स्पृष्टाबद्धप्ररूपकः । उत्त० १५३ । सप्तमो निण्हवः । विशे० १००२ । विनयकरणभीरुः कुशिष्यः । विशे० ६१४ । अर्थाज्ञाविराधनायां दृष्टान्तः । नंदी० २४८ । गोष्ठामाहिलः यस्माद बद्धिका उत्पन्नाः स आचार्यः । आव० ३१२ । गोष्ठमाहिलः–गच्छप्रधानः श्रावकः । आव० ३०८ । नि० चू० प्र० ३३५ आ ।

गोट्ठि–समवयसां समुदायो गोष्ठी । दश० २२ । जनसमुदायविशेषः । ज्ञाता० २०६ ।

गोठ–गोष्ठः–गोष्ठामाहिलः–अभिनिवेशे दृष्टान्तः । व्य० द्वि० १७९ अ ।

गोट्ठिदासी–गोष्ठादासी । आव० २०१ ।

गोट्ठिधम्मो–गोष्ठीधर्मः–गोष्ठीव्यवस्था । दश० २२ ।

गोट्ठिलए–गोष्ठीकः । आव० ९२ । विपा० ५५ ।

गोट्ठी–गोष्ठी–जनसमुदायः । ज्ञाता० २०६ । आव० ८२२, ८२४ । उत्त० ११२ । महत्तरादिपुरुषपञ्चकपरिगृहीता । बृ० द्वि० २०० अ ।

गोडंडेणालिया– । नि० चू० प्र० ४६ आ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोड–गोडः–चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

गोड्ड–मौल्यं–गौल्यरसोपेतं मधुररसोपेतमितियावत् । भग० ७४८ ।

गोण–बलीवर्दः । बृ० प्र० २४७ आ । ओघ० ६७ । आव० २२६ । गौणं–गुणनिष्पन्नम् । प्रश्न० ६ । गोणाः–गावः । जं० प्र० १२४ । प्रश्न० ७ । गोणः–गौः । प्रज्ञा० २५२ । गौः । ओघ० २०१ । नि० चू० प्र० २ अ । गवः । आव० १६०; ८२६ ।

गोणपोतलओ–गोपेतः । आव० १६८ ।

गोणपोयए–गोणपोतकौ–गोपुत्रकौ । उपा० ४६ ।

गोणलक्खण– । ज्ञाता० ३८ ।

गोणसं–गोनसं–सर्प्पजातिविशेषम् । व्य० प्र० २३ अ ।

गोणस–गोणसः–निष्फणाहिविशेषः । प्रश्न० ७ ।

गोणसखइयं–गोनसभक्षितम् । आव० ७६४ ।

गोणसहा–गोधरेकः । उत्त० ६६६ ।

गोणसा–मुकुली–अहिभेदविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

गोणा–बलीवर्दाः । उत्त० ५४८ । गोणा–द्विखुरचतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ । प्रज्ञा० ४५ । गावः । प्रश्न० ३८ ।

गोणाई–गवादीनि । ओघ० १४२ ।

गोणादिचमढणा–बलीवर्दादिपादप्रहारादिः । ओघ० ८१ ।

गोणी–गौः । विशे० ६१८ । आव० ६६ ।

गोण्णं–गुणादागतं गौणं, व्युत्पत्तिनिमित्तं द्रव्यादिरूपं गुणमधिकृत्य यद्वस्तुनि प्रवृत्तं नाम तद् गौणनाम । पिण्ड० ४ । गुणनिष्पन्नम् । बृ० तृ० २४८ अ ।

गोण्णनाम–गुणैर्निष्पन्नं गौणं तच्च तन्नामं च गौणनाम । आचा० १६६ ।

गोतम–भक्तिकर्तव्यतायां दृष्टान्तः । व्य० द्वि० १७२ आ ।

गोतमगोत्ते–गौतमगोत्रम् । सूर्य० १५० ।

गोतमा–गोतमस्यापत्यानि गौतमाः क्षत्रियादयः । ठाणा० ३६० । गौतमः–प्रथमो गणधरः । अनुत्त० ३ । ज्ञाता० ११४ । लघुतराक्षमालार्चितविचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापवद्वृषभकोपायतः कणभिक्षाग्राही । ज्ञाता० १६५ ।

गोतित्थं–गोतीर्थं–तडागादिष्विव प्रवेशमार्गरूपो नीचो नीचतरो भूदेशः । जीवा० ३०८ । क्रमेण नीचो नीचतरः प्रवेशमार्गः । जीवा० ३२३ । प्रज्ञा० ४१३ । गवांतीर्थं–तडागादाववतारमार्गो गोतीर्थं, ततो गोतीर्थमिव गोतीर्थं–अवतारवतीभूमिः । ठाणा० ४८० ।

गोतित्थसंठाणसंठिए–गोतीर्थसंस्थानसंस्थितः–क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरमुद्वेधस्य भावात् । जीवा० ३२५ ।

गोतिपाला–गुल्मिकाः । ओघ० २२३ ।

गोत्त–गूयते–शब्द्यते उच्चावचैः शब्दैर्यत् तद् गोत्रं–उच्चनीचकुलोत्पत्तिलक्षणः पर्यायविशेषः, तद्विपाकवेद्यं कर्मापि गोत्रम्; यद्वा कर्मणोऽपादानविवक्षा गूयते शब्द्यते उच्चावचैः शब्दैरात्मा यस्मात् कर्म्मणः उदयाद् गोत्रम् । प्रज्ञा० ४५४ । प्रकाशकाद्यपुरुषाभिधानस्तदपत्यसन्तानो गोत्रम् । जं० प्र० ५०० । सञ्ज्ञा । आव० २७६ । अभिधानम्, कर्मविशेषः । ठाणा० ४५५ । गां–वाचं त्रायते–अर्थाविसंवादनतः पालयतीति, समस्तागमाधारभूतः । सूत्र० २३५ । गोत्रशब्दो नामपर्यायः । उत्त० १८१ । गौतमगोत्रादि । ज्ञाता० २२० । प्रकाशकाद्यपुरुषाभिधानतस्तदपत्यसन्तानो गोत्रम् । सूर्य० १५० । गोत्रं–संज्ञा । विशे० ८७४ ।

गोत्ता–इतराणि त्वितराणि नामानि । ठाणा० ३८६ । तथाविधैकैकपुरुषप्रभवा मनुष्यसन्तानाः उत्तरगोत्रापेक्षया । ठाणा० ३६० ।

गोत्तासए–गोत्रासकः–हस्तिनापुरे भीमकूटग्राहिदारकः । विपा० ५० ।

गोत्थुभ–गोस्तुभः–लवणसमुद्रमध्ये पूर्वस्यां दिशि नागराजावासपर्वतः । भग० १४४ ।

गोथुभत्ति–कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेषः । सम० १५८ ।

गोथूभा–गोस्तूपा–दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्यापरस्यांशक्रदेवेन्द्रस्य नवमिकाऽग्रमहिष्या राजधानी । ठाणा० २३१ । जीवा० ३६५ । पूर्वदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य अपरस्यां दिशि पुष्करिणीविशेषः । जीवा० ३६४ । पाश्चात्याञ्जनपर्वतस्य पाश्चात्यायां पुष्करिणीविशेषः । ठाणा० २३० ।

गोथूभे–गोस्तुभः–प्राच्यां लवणसमुद्रमध्यवर्त्तिनो वेलन्धरनागराजनिवासभूतपर्वतस्य पौरस्त्याच्चरमान्तादपसृत्य वडवामुखस्य महापातालकलशस्य पाश्चात्यश्चरमान्तो येन

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यवधानेन भवति । सम० ७१ । वेलन्धरनागराजस्य आवासपर्वतः । देवविशेषः । ठाणा० २२६ । श्रेयांसनाथस्य प्रथमः शिष्यः । सम० १५२ ।

गोथूभो–गोस्तूपः–भुजगेन्द्रस्यावासपर्वतः । जीवा० ३११ । प्रथमो वेलन्धरनागराजः, भुजगेन्द्रो भुजगराजः । जीवा० ३११ ।

गोदत्ता–ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणां मध्ये द्वितीया । उत्त० ३७९ ।

गोदासे–गणविशेषः । ठाणा० ४५१ ।

गोदुहू–गोदोहिका । ठाणा० २९९ ।

गोदोहिका–गोर्दोहनं गोदोहिका । ठाणा० ३०२ ।

गोदोहिकासनं–आसनविशेषः । उत्त० ६०७ ।

गोदोहिया–गोदोहिका । आव० २२७ ।

गोदोहियाए– । आचा० ४२४ ।

गोदोही–गोदोहिका । आव० ६४८ ।

गोधंमो–अनाचारः । नि० चू० प्र० ११३ आ ।

गोध–अलसः । उत्त० २६२ । व्यवहारी । दश० ५६ ।

गोधणं–गोधनं–गवादिद्रव्यम् । आव० ८२५ ।

गोधा–गोधा । प्रश्न० ८ । म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

गोधिका–वाद्यविशेषः । ठाणा० ३९५ ।

गोधूमजंतगं–गोधूमयन्त्रकम् । उत्त० २२३ ।

गोधूमो–गोधूमः–धान्यविशेषः । आव० ८५५ ।

गोधेरकः–गोणसहा । उत्त० ६९९ ।

गोनिषद्यिका–यस्यां तु गोरिवोपवेशनं सा । ठाणा० २९९ । उपवेशनविशेषः । बृ० तृ० २०० अ ।

गोपालओ–गोपालकः–अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतलघुपुत्रः । आव० ६९९ ।

गोपालगिरिः–गिरिविशेषः । जं० प्र० १६८ । भग० ३०७ ।

गोपालघटः– । उत्त० ५५९ ।

गोपुच्छसंठाणसंठिया–गोपुच्छस्येव संस्थानं गोपुच्छसंस्थानं तेन संस्थिता गोपुच्छसंस्थानसंस्थिता–ऊर्ध्वीकृतगोपुच्छाकारा । जीवा० १७८ ।

गोपुट्ठए–गोपृष्ठाद्युत्पतितम् । भग० ६८० ।

गोपुर–प्राकारद्वारम् । जीवा० २५८ । गोपुरं–पुरद्वारम् । सूर्य० ६९ । औप० ३ । प्रश्न० ८ । जीवा० २६९ । प्रतोली । ज्ञाता० २२२ । प्रतोलीद्वाराणां परस्परतोऽन्तराणि । अनु० १५९ । गोभिः पूर्यन्त इति गोपुराणि प्रतोलीद्वाराणि । उत्त० ३११ ।

गोपुरसंठिओ–गोपुरसंस्थितः । जीवा० २७९ ।

गोपुरसंठिया–गोपुरस्येव–पुरद्वारस्येव संस्थितं संस्थानं यस्याः सा गोपुरसंस्थिता । सूर्य० ६९ ।

गोपेन्द्रवाचकः–द्रव्यानुयोगे परपक्षनिवर्तकः । दश० ५३ ।

गोप्पतं–गोष्पदं–तत्कल्पं देशविरत्यादिकमल्पतमम् । ठाणा० २७९ ।

गोप्पहेलिया–गोप्रहेल्या । आचा० ४११ ।

गोफण–गोफणः–प्रस्तरप्रक्षेपकोदवरकगुम्फितः शस्त्रविशेषः । आव० ६१३ ।

गोफणा–चम्मदवरगमया । नि० चू० प्र० १०५ आ । चर्मदवरकमयी । बृ० तृ० ६८ अ ।

गोबर–गोमयः । बृ० प्र० २७० आ ।

गोबहुल–शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेषः । भग० ६६० । गोबहुलः–प्रचुरगोमान् शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेषः । आव० १९९ ।

गोब्बरगाम–गूर्बरग्रामः–मगधाविषये ग्रामः । आव० ३५५। गोर्बरग्रामः–ग्रामविशेषः । आव० २१२ । वइरिसगामासन्नं । बृ० तृ० २१७ आ । सन्निवेशः, इन्द्राग्निवायुभूतिगणधराणां जन्मभूमिः । आव० २५५ ।

गोभत्तं–गोभक्तं छगणादि । आव० ६१ ।

गोभत्तकलंदयं– । नि० चू० द्वि० ६१ आ ।

गोभूमी–सदा गावश्चरति यत्र तेन गोभूमिः । आव० २११ ।

गोमंडलं–गोवर्गः । बृ० प्र० १५७ आ ।

गोमए–गोमयं–छगणम् । भग० २१३ ।

गोमड–गोमृतः–मृतगोदेहः । जीवा० १०६ ।

गोमयं–गोकरिसो गोमयं । नि० चू० प्र० २६५ आ ।

गोमयकीडगो–गोमयकीटकः–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

गोमयकीडा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

गोमाणसिआ–गोमानस्यः–शय्यारूपाः स्थानविशेषाः । जं० प्र० ३२६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोमाणसिया–गोमानस्यः शय्याः । जीवा० २०४, ३५६ । राज० ६२ । गोमानसिकाः शय्यारूपाः–स्थानविशेषाः । जीवा० २३० ।

गोमाणसीओ–शय्याः । जं० प्र० ४६ ।

गोमाणसी-गोमानुषी-शय्यारूपा । जीवा० ३६३ ।

गोमायुः–शृगालः । प्रज्ञा० २५४ । आचा० १६७ ।

गोमायुपुत्तो– । भग० ६५६ ।

गोमिज्जए–गोमेजकः–मणिभेदः । प्रज्ञा० २७ । उत्त० ६८६ ।

गोमिनि–गोमिनि–नानादेशापेक्षया गौरवकुत्सादिगर्भमामन्त्रणवचनम् । दश० २१६ ।

गोमिय–गोमिकः–गोमान् । प्रश्न० ३८ । गोम्मिक–गौल्मिकः–गुप्तिपालः । प्रश्न० ५६ ।

गोमिया–सुंकिया । नि० चू० प्र० १४० अ । दंडपासिया । नि० चू० १६४ अ । ठाणइल्ला । नि० चू० द्वि० ११ आ ।

गोमुत्तिअदड्ड–गोमूत्रदग्धः–गोमूत्रसहितं स्थानम् । ओघ० ५४ ।

गोमुत्तियवूहो–गोमूत्रिकाव्यूहः–गोमूत्रिकाकारसैन्यविन्यासविशेषः । प्रश्न० ४७ ।

गोमुत्तिया–गोचर्यामभिग्रहविशेषः । नि० चू० तृ० १२ अ । उत्त० ६०५ ।

गोमुह–गोमुखनामा अन्तरद्वीपः । प्रज्ञा० ५० । गोमुखः अन्तरद्वीपविशेषः । जीवा० १४४ ।

गोमुहदीव–अन्तरद्वीपविशेषः । ठाणा० २२६ ।

गोमुहिए–गोमुखवदुरःप्रच्छादकत्वेन कृतानि गोमुखितानि । ज्ञाता० २३७ ।

गोमुही–गोमुखी-काहिला–यस्या मुखे गोश्रृङ्गादिवस्तु दीयत इति । अनु० १२६ । काहला । ठाणा० ३६५ ।

गोमूत्रिका–यस्यां तु वामगृहाद्दक्षिणगृहे दक्षिणगृहाच्च वामगृहे भिक्षां पर्यटति सा गोमूत्राकारत्वात् गोचरभूमिरपि । बृ० प्र० २५७ अ । प्रज्ञा० ४७३ ।

गोमूत्रिकाबन्धः–मुद्रिकाबन्धः । ओघ० १४५ ।

गोमेज्ज–गोमेयकः–रत्नविशेषः । जीवा० २०४ ।

गोमेज्जए–गोमेज्जकः । जीवा० २३ । गोमेदकः–पृथिवीभेदः । आचा० २६ ।

गोमेयकं–रत्नविशेषः । उत्त० ४५१ ।

गोम्मिए–गौल्मिकः- शुल्कपालः । बृ० द्वि० २२८ अ ।

गोम्मिय–गुप्तिपालकः । प्रश्न० ३७ ।

गोम्मिया–बद्धस्थाना आरक्षकाः । बृ० द्वि० १०६ आ । बद्धस्थाना मार्गरक्षकाः । बृ० द्वि० ८३ अ । गुल्मेन समुदायेन चरन्तीति गौल्मिकाः स्थानरक्षपालः । बृ० द्वि० २६० अ० । गौल्मिकाः ये राज्ञः पुरुषाः स्थानकं बद्ध्वा पन्थानं रक्षन्ति । बृ० द्वि० ८३ अ ।

गोम्ही–कर्णश्रृगाली । अनु० २१४ । कण्णसियाली । नि० चू० प्र० १६३ अ । त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । कर्णसियालिया । प्रज्ञा० ४२ ।

गोय–गाम्नायत इति गोत्रं–मौनं वाक्संयमः, जन्तूनां जीवितम् । सूत्र० २४६ । गीयते–शब्द्यते उच्चावचैः शब्दैः कुलालादिव मृद्द्रव्यमत आत्मेति गोत्रम् । उत्त० ६४१ । गुणनिष्पन्नम् । भग० ११५ । अन्वर्थिकम् । भग० ५६१ । गोत्रं-गुणनिष्पन्नः । निरय० ७ । गोत्रं–अन्वर्थः । राज० १३ । सरीरं । दश० चू० ५६ । गोत्रं–आन्वर्थिकीसञ्ज्ञा । विपा० ४२ ।

गोयम–प्रथमो गणधरः । नि० चू० द्वि० ७७ अ । स्थविरविशेषः । नि० चू० प्र० २०७ आ । गौतमं–रोहीणिगोत्रम् । जं० प्र० ५०० । गौतमः–अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अन्त० १ । कुमारविशेषः । अन्त० २ । भक्तिबहुमाने तृतीयभङ्गे दृष्टान्तः । नि० चू० प्र० ८ अ । ह्रस्वोबलिवर्दस्तेन गृहीतपादपतनादिविचित्रशिक्षेण जनचित्ताक्षेपदक्षेण भिक्षामटन्ति ये ते गौतमः । औप० ८६ । एषणासमितिदृष्टान्ते धिग्जातीयश्चक्रकरः । आव० ६१६ । प्रतीच्यां दिशि लवणसमुद्राधिपसुस्थितनामदेवावासभूतो द्वीपविशेषः । प्रज्ञा० ११४ । गोव्रतिका गृहीतशिक्षं लघुकायं वृषभमुपादाय धान्याद्यर्थं प्रतिगृहमटन्ति ते गौतमाः । सूत्र० १५४ । नि० चू० प्र० ३५२ आ ।

गोयमकेसिज्जं–उत्तराध्ययनेषु त्रिंशत्तममध्ययनम् । सम० ६४ ।

गोयमदीव–गौतमद्वीपः–द्वीपविशेषः । सम० ७६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमसामी–गौतमस्वामी,प्रथमो गणधरः, । आव० ६५ । ज्ञाता० १७०, १७१, १७८, २२६ । अन्त० २२ ।

गोयर–गोचरः–भिक्षाग्रहणविधिलक्षणः । सम० १०७ । नंदी० २१० । भिक्षाटनम् । ज्ञाता० ६१ । गोचरः–भिक्षाटनम् । भग० १२२ । गोरिव चरणं गोचरः । उत्त० ११६ । गोरिव चरणं गोचरः–उत्तमाधममध्यम-कुलेष्वरक्तद्विष्टस्य भिक्षाटनम् । दश० १६३ ।

गोयरग्गपविट्ठो–गोरिव चरणं गोचरस्तस्याग्र्यं–प्रधानं तस्मिन् प्रविष्टः गोचराग्रप्रविष्टः । उत्त० ११६ ।

गोयरचरिया–गोश्चरणं गोचरः चरणं–चर्या गोचर इव चर्या गोचरचर्या–भिक्षाचर्या । आव० ५७५ ।

गोयरतिअ–गोचरत्रिकं–त्रिकालभिक्षाटनम् । ओघ० ६५ ।

गोयारिया–गोचरचर्या । नि० चू० प्र० ६ अ ।

गोयावरी–गोदावरी–नदीविशेषः । व्य० प्र० १६३ अ ।

गोरक्खरा–एकखुरचतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

गोरखुरो–गोरखुरः–एकखुरचतुष्पदः । जीवा० ३८ ।

गोरव–गौरवं–अशुभाध्यवसायविशेषः । प्रश्न० ६२ । ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्गमनस्वभावः । ठाणा० ४३४ ।

गोरस–गोरसं–गोभक्तादि । आव० ६१ । गोरसः । आव० ३४३ । सूत्र० २६३ ।

गोरसकुंड–गोरसकुण्डः । आव० ६४१ ।

गोरसदवो–गोरसद्रवः–दध्यादिपानकम् । पिण्ड० १५० ।

गोरसधोवणं–गोरसधावनम् । आव० ६२४ ।

गोरहत्ति–गोरहकः–कल्होटकः । आचा० ३६१ ।

गोरहग–गोरथकः–कल्होडः । दश० २१७ । कल्होडकः । बृ० द्वि० १३८ आ ।

गोरहसंठितो पासातो । नि० चू० द्वि० ६६ आ ।

गोरा–नदीपाषाणशृङ्गिका । बृ०तृ० १६२ आ । गोधूमा । नि० चू० तृ० ३७ आ ।

गोरी–गौरी–कृष्णवासुदेवस्य राज्ञी । अन्त० १८ । अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम् । अन्त०१५ । चत्वारिमहाविद्यायां प्रथमा । आव० १४४ । बलकोट्ट-ज्येष्ठभार्या । उत्त० ३५४ ।

गोरीपाडलगोरा–गौरी या पाटला पुष्पजातिविशेषस्तद्वद्ये गौरास्ते गौरीपाटलागौराः । ज्ञाता० २३१ ।

गोरूग– । नि० चू० प्र० २२६ आ ।

गोरूवं–गौः । आव० १८६ ।

गोरे–गोधूमः । बृ० द्वि० १२६ अ ।

गोल–देशान्तरेऽवज्ञासंसूचकः । आचा० ३८८ । गोलः–तत्तद्देशप्रसिद्धितो नैष्ठुर्यादिवाचकोऽयं शब्दः श्वा वा । दश० २१५ । साधोरुपमानम् । दश० १६ । गोले–नाना-देशापेक्षया गौरवकुत्सितादिगर्भमामन्त्रणवचनमिदम् । दश० २१६ । ज्ञाता० १६७ । वृत्तपिण्डः । ठाणा० २७२ । गोलकः–वर्तुलः पाषाणादिमयः । अनुत्त० १४ ।

गोलगो–गोलकः–जन्तुमयो वर्तूलाकारः । आव० ४१६ । आव० ४२२ ।

गोलछाया–गोलमात्रस्य छाया गोलच्छाया । सूर्य० ६५ ।

गोलपुंजछाया–गोलानां पुञ्जो गोलपुञ्जो गोलोत्कर इत्यर्थः, तस्य छाया गोलपुञ्जच्छाया । सूर्य० ६५ ।

गोलय–गोलकः–वृत्तोपलः । जं० प्र० ३२६ । पिण्डकः । उत्त० ५३० ।

गोलव्वायणं–गोलव्यायनं–अनुराधागोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

गोलव्वायणसगोत्ते– । सूर्य० १५० ।

गोलांगूल–गोलाङ्गूलं–वानरः । भग० ५८२ ।

गोलाकारे–गोलाकारः–वृत्ताः । सूर्य० २६७ ।

गोलावलिछाया–गोलनामावलिर्गोलावलिस्तस्याः छाया गोलावलिच्छाया । सूर्य० ६५ ।

गोलिका:–भण्डिकाः । ठाणा० ४१६ ।

गोलिकातणा– । ठाणा० ३६० ।

गोलिगि–महियविक्कया । नि० चू० तृ० ४५ अ ।

गोलियधणुयं–गोलिकधनुः । उत्त० २४५ ।

गोलिया–गोलिका–गन्धप्रधाना शाला । व्य० द्वि० २४८ आ । मथितविक्रायकाः । बृ० द्वि० १५४ आ ।

गोलियालिंगं–अग्नेराश्रयविशेषः । जीवा० १२३ ।

गोलोममेत्तो–अहस्तप्राप्या–गोलोममात्रा । नि० चू० प्र० ३५४ अ ।

गोलोमा–द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३१ । प्रज्ञा० ४१ ।

गोल्लविसओ–गोल्लविषयः–गोल्लदेशः । आव० ४३३ । गौडविषयः–गौडदेशः । आव० ८३० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोल्ला- । ठाणा० ३६० ।

गोल्हाफलं-बिम्बफलम् । प्रश्न० ८१ । जीवा० २७२ ।

गोवग्गो-गोपः । आव० ३६० ।

गोवग्गं-गोरूपाणि । ठाणा० ५०२ ।

गोवच्छय-गोवत्सः । उत्त० ३०३ ।

गोवती-गोपतिः-गवेन्द्रः । ज्ञाता० १६१ ।

गोवतीते-गोव्रतिकः-गोश्चर्यानुकारी । ज्ञात० १६५ ।

गोवल्लं-गोवल्लायनं-पूर्वाफाल्गुन्या गोत्रम् । जं०प्र०५००।

गोवल्लायणसगोत्ते-पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रस्य गोत्रम् । सूर्य० १५० । जं० प्र० ५०० ।

गोवाटादि-कर्द्दमः । ठाणा० २१६ ।

गोवालो-यो गाः पालयति गोपालः । उत्त० ४६५ । गोपालः । आव० ४१८ ।

गोवलकंचु-गोवालकञ्चुकम् । बृ० द्वि० १०६ अ ।

गोवालकंचुगो-गोवालकञ्चुकः । बृ० द्वि २१७ अ ।

गोवालगमाया-गोपालकमाता शिवा, शृगालिनी । आव० ६७५ ।

गोवालवुयं- । नि० चू० प्र० २१२ आ ।

गोवाला-गोपालाः-राजा । नंदी० १५१ ।

गोवालियाओ- । ज्ञाता० २०४ ।

गोवाली-गोपाली-संवरोदाहरणे श्रीपार्श्वस्वामिसाध्वी । आव० ७१४ । वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

गोविंद-गोविन्दः । आव० ७१३ । भिक्षुविशेषः । नि० चू० द्वि० ३६ अ । श्रावकविशेषः । व्य० द्वि० १७६ अ ।

गोविंददत्त-गोपेन्द्रदत्तः-सद्व्यवहारकाचार्यः । तगरायामाचार्यस्याष्टमः शिष्यः । व्य० प्र० २५६ अ ।

गोविंदनिज्जुत्ति-हेतुशास्त्रभेदः । बृ० तृ० १४२ अ ।

गोविंदवायगो-मिच्छादिट्ठी व्रतेसु ठवित्तो पच्छा समत्तपडिवत्तस्स सम्मं आउट्टस्स मूलं । नि० चू०तृ० १२६ अ । नि० चू० तृ० ८३ अ । गोविन्दवाचकः-मूलप्रायश्चित्ते दृष्टान्तः । व्य० प्र० १०३ आ । वाचकविशेषः । नि० चू० प्र० २६३ आ ।

गोविही- । ठाणा० ४६८ ।

गोवृषः-बलीवर्दविशेषः । बृ० प्र० २१३ अ ।

गोव्रतिकाः-गोचर्यानुकारिणः । अनु० २५ ।

गोशालः-आजीविकमतप्रवर्तकः । नंदी० २३६ ।

गोशालकः-जिनोपसर्गकारीनिह्नवः । विपा० ६४ । सूत्र० ३८६ । ज्ञाता० १६२ । उत्त० ४७ ।

गोशीर्षं-चन्दनविशेषः । सम० १३८ ।

गोशीर्षचन्दनं-चन्दनविशेषः । ज्ञाता० १२८ ।

गोसंखी-गोशङ्खी-कौटुम्बिक आभीराणामधिपतिः । आव० २१२ ।

गोसंखो(स)डी-उज्जूहिगा । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।

गोसंधिओ-गोसन्धिकः-गोष्ठाधिपः । आव० ८६३ ।

गोस-गोषः-प्रत्यूषः । आव० ७८१ । प्रातः । व्य० प्र० २३६ ।

गोसाल-मङ्खलिपुत्रः । भग० ६५६, ६६० । आव० १६६ ।

गोसालसिस्सा-आजीवगा । नि० चू० द्वि० ६८ अ ।

गोसाला-गोणादि जत्थ चिट्ठंति सा गोसाला । नि० चू० प्र० २६५ अ ।

गोसीस-गोशीर्षं-उत्तमचन्दनविशेषः । प्रश्न० १३५ । चन्दनविशेषः । जीवा० २२७ । गोशीर्षनामकचन्दनम् । प्रज्ञा० ८६ ।

गोसीसचंदणं-गोशीर्षचन्दनम् । आव० ११६ ।

गोसीसावलिसंठिते-गोशीर्षावलिसंस्थितं-गोः शीर्षं गोशीर्षं तस्यावली-तत्पुद्गलानां दीर्घरूपा श्रेणिः तत्समं संस्थानम् । सूर्य० १२६ ।

गोसे-प्रातः । व्य० प्र० २३५ । उदियमादिच्चे । नि० चू० तृ० ७७ अ० ।

गोसो-प्रत्यूषः । आव० ३५१ ।

गोस्तूपा-समुद्रमध्यवर्त्तिनः पर्वतविशेषाः । प्रश्न० ६६ ।

गोष्ठानि-घोषा । ठाणा० ८८ ।

गोष्ठामाहिलः-मिथ्यादर्शनशल्ये दृष्टान्तः । आव० ५७६ । स्वाग्रहग्रस्तः कश्चित् । सूत्र० २३३ । गोष्ठामाहिलः । आचा० २०६ ।

गोह-राजपुरुषः । उत्त० १७६ । गोधः-आरक्षः । आव० २६६, ३१६ । उत्त० १६२ । अधमः । आव० ४१५ । गोहः-जारः । ओघ० ४६ । दण्डिकः-आरक्षकः । आव० ६६२ । कर्मकरः । दश० १८१ । प्राकृतः । आव० ३०१ । उपपतिः । नंदी० १४५ । गोधः ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दश० ८६ ।

गोहा–गोधा । उत्त० ६९९ । गोधा–भुजपरिसर्पतिर्यग्-योनिकः । जीवा० ४० ।

गोहिआ–चर्मावनद्धवाद्यविशेषः । दर्दरिकेत्यपरनाम्ना प्रसिद्धा । अनु० १२६ ।

गोहिका–भाण्डानां कक्षाहस्तगतातोद्यविशेषः । आचा० ४१२ ।

गोहुम–गोधूमः–धान्यविशेषः । ज्ञाता० २३१ । दश० १९३ । औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

गोहे–गोधा–सरीसृपविशेषः । भग० ३६५ । गोधा । आव० ९६ । व्यवहारी । दश० ५९ ।

गोहेहिं– । नि० चू० प्र० ३४४ आ ।

गौतमः–रागद्वेषादिसहभावविरहितो गणधरविशेषः । उत्त० २४१ । गौतमस्यापत्यम् ।

गौतमस्वामी–प्रथमगणधरः । आचा० २१ ।

गौतमादिः–सूत्रत आत्मागमवान् । आव० ५७ ।

गौरखरः– । उत्त० २७० ।

गौरवं–ऋद्धा नरेन्द्रादिपूज्याचार्यत्वादिलक्षणया । सम०९ ।

गौरीपुत्राः–भिक्षाकाः । जं० प्र० १४२ ।

गौर्गलिः–असञ्जातकिणस्कन्धः । आचा० ८७ ।

ग्रन्थ–ग्रन्थ-काव्यं धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थनिबद्धं संस्कृतप्राकृतापभ्रंशसंकीर्णभाषानिबद्धं, गद्यपद्यगेयचौर्णपदबद्धं वा । जं० प्र० २५९ । विशे० ४१६ ।

ग्रन्थविच्छेदविशेषः–वस्तु । नंदी० २४१ ।

ग्रहगृहीतः–उन्मत्तः–हृतः । पिण्ड० १६३ ।

ग्रहणकं–सूचकम् । उत्त० २४२ ।

ग्रहणकुलिपकम्– । बृ० प्र० ९१ आ ।

ग्रहणवाक्यम्– । विशे० ५६३ ।

ग्रहणशिक्षा–प्रथमा शिक्षा । नंदी० २१० । ग्रहणाभ्यासः । आव० ८३३ । बृ० प्र० ६४ ।

ग्रहणा–शिक्षा आसेवनात्मिका । उत्त० २८२ ।

ग्रहणावग्रहे– । आचा० ४०२ ।

ग्रहदण्डाः–दण्डाकारव्यवस्थिता ग्रहा–ग्रहदण्डाः ते चानर्थोपनिपातहेतुतया प्रतिषेध्या न स्वरूपतः । जीवा०२८२ ।

ग्रहगर्जितानि–ग्रहचारहेतुकानि गर्जितानि, इमानि स्वरूपतोऽपि प्रतिषेध्यानि । जी० २८२ ।

ग्रहापसव्यं– । जीवा० २८२ ।

ग्रहोपरागः– । उत्त० २२९ ।

ग्रामकूटः–ग्रामे महत्तरः । नि० चू० प्र० १७६ आ ।

ग्रामणीः–आधाकर्मपरिहरणे वणिग् । पिण्ड० ७२ ।

ग्रामभोगिकः–ग्रामनगरपतिः । ओघ० ४६ । ठक्कुरः । आव० २३८ ।

ग्रामरक्ष–त्रिकचत्वारादिव्यवस्थितं शक्तिकुन्तादिहस्ता उपचरन्ति । आचा० ३०८ ।

ग्रामेण–जनसमूहेन । सम० ५३ ।

ग्रामेयकः–ग्राम्यः । नंदी० १४९ ।

ग्राहः–अभिलाषः । आव० ८१४ ।

ग्राहणाकुशलः–यो बह्वीभिर्युक्तिभिः शिष्यान् बोधयति, व्याख्याप्रायोग्यः सूरिः । आचा० ३ ।

ग्राह्यवाक्यः–सर्वत्रास्खलिताज्ञः, व्याख्याप्रायोग्यः सूरिः । आचा० २ ।

ग्रीवा–लोकपुरुषस्य त्रयोदशरज्जूपरिवर्त्तीप्रदेशः । उत्त० ७०२ । कोटा । प्रश्न० ५६ । आचा० ३८ ।

ग्रीवाग्रहः–ग्रीवाग्रहणं–प्रतिमल्लेनापरमल्लस्य गलग्रहणम् । वि० १३० ।

ग्रैवेयकाणि–लोकपुरुषग्रीवास्थाने भवानि विमानानि । आव० ४० ।

घ

घंघसालगिहे–घङ्घशालागृहे । पिण्ड० १०५ ।

घंघशाला–शालाविशेषः । आचा० ३०९, ४०२ । सम० ३८ । घङ्घशाला–अनाथमण्डपम् । ओघ० २०० । बृहच्छाला । आव० ६५४ । घट्टनं धर्मकथनं वा तत्राव्यतिरिक्ता बहुकार्पटिकासेविता वसतिर्घंघशाला । व्य० द्वि० २५ अ ।

घंघनघोलना–न्यायविशेषः । विशे० ५३७ ।

घंटए–पिबेत् (ग०)

घंटलोह–घंटालोहः–यस्मिन्नेव दिने यत्र लोहे घंटाकृता तल्लोहं तस्मिन्नेव दिने विनष्टम् । व्य० द्वि० २०२ अ ।

घंटा–सियालो । बृ० प्र० ११९ अ । किङ्किण्यपेक्षया

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किञ्चिन्महत्यो घण्टाः । जीवा० १८१ । जं० प्र० २३ ।
घंटाजालं–किङ्किण्यपेक्षया किञ्चिन्महती घण्टा तज्जालम् । जीवा० १८१ ।
घंटापासगा–घण्टापार्श्वा-घण्टैकदेशविशेषाः । जं०प्र० ५३ ।
घंटापासो–घण्टापार्श्वः । जीवा० २०७ ।
घंटि– । नि० चू० द्वि० ६४ आ ।
घंटिआ–घण्टिकाः–घण्टावादकाः । जं० प्र० १८२ । घण्टिका–घर्घरिकाः । जं० प्र० १०६ ।
घंटियक्षः–कुलदेवता । बृ० प्र० २१५ अ ।
घंटिक्करग–स्थालः । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।
घंटिया–घण्टिकाः । प्रश्न० १५६ । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ । क्षुद्रघण्टाः । जं० प्र० ५२६ ।
घंटियाजाल–घण्टिकाजालं किङ्किणीवृन्दम् । भग० ४७८ ।
घंतु–घातुकः–हननशील इति । उत्त० ४३६ ।
घंसण–चन्दनस्येव घर्षणम् । आव० २७३ । विशे०८४३ ।
घंसिका–अनुरङ्गा यानविशेषः । बृ० द्वि० १२५ आ ।
घंसित्ता–घृष्ट्वा । आव० ८३१ ।
घंसियगा–घर्षितकाश्चन्दनमिव दृषदि । औप० ८७ ।
घओदए–घृतोदकं–बादरः अप्कायिकविशेषः । प्रज्ञा० २८ ।
घटं– । आव० २८० ।
घटकः–भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।
घटकारः–स्वविज्ञानप्रकर्षप्राप्तः । नंदी० १६५ ।
घटखर्प्पर–कपालः । आचा० ३११ ।
घटना–अप्राप्तानां संयमयोगानां प्राप्तये घटना । भग० ४८४ ।
घटाभोज्यं–महत्तरानुमहत्तरादिर्बहिरावासितः । व्य० द्वि० ३६२ अ ।
घटिकालय– । ठाणा० १२२ ।
घटिकालयादीनि–येष्वतिसम्पीडिताङ्गा दुःखमाकृष्यमाणाः–बहिर्निष्क्रामन्ति जन्तवः । उत्त० २४७ ।
घटिज्जंताणं– । राज० ५२ ।
घट्टइ–सर्वदिक्षु चलति, पदार्थान्तरं वा स्पृशति । भग० १८३ । घट्टते–परस्परं संघट्टमाप्नोति । जीवा० ३०७ ।
घट्टए–लिप्तपात्रमसृणताकारकः पाषाणः । बृ० द्वि० २५३ अ ।
घट्टग–घट्टकः येन पाषाणकेन पात्रं नवलेपं मसृणं क्रियते । ओघ० १४४ । पाषाणकः–येन पात्रकं लेपितं सद् घृष्यते । ओघ० १३० । घट्टकः । ठाणा० ३३९ ।
घट्टगरइतं–घट्टकेन रचितं–मसृणितं–घृष्टम् । ओघ०१४५ ।
घट्टण–घट्टनं खञ्जागतिः । प्रज्ञा० ३२९ । आव० ७९१ । चालकम् । दश० १५२ । पिण्ड० १७१ । चलनम् । ओघ० १३६ । आहननम् । ओघ० ५२ । घट्टनं–मिथश्चालनम् । दश० २२८ । सजातीयादिना चालनम् । दश० १५४ । घट्टनानि–जालादीनि चलनानि । ओघ० १८१ । आव० ५४० ।
घट्टणता– । ठाणा० २८० ।
घट्टणया–वङ्कगतेः प्रथमो भेदः । घट्टनता । प्रज्ञा० ३२८ । घट्टनता–अक्षिण रजः प्रविष्ठं मर्दित्वा दुःखयितुमारब्धम्, स्वयमेवाक्षिण गले वा किञ्चित्सा लुकादि उत्थितं घट्टयति । आव० ४०५ ।
घट्टणा–घट्टना–चलनम् । ओघ० २२ ।
घट्टनता–अक्षिकणुकादेः । आचा० २५५ ।
घट्टना–कदर्थना । आचा० २६३ ।
घट्टयंतं–वस्त्वन्तरं स्पृशन्तम् । ठाणा० ३८५ ।
घट्टिओ–घट्टितः–मुद्रितः । दश० ६२ ।
घट्टित–घट्टितः–प्रेरितः । प्रश्न० ५९ । सुष्ठुतरं परितापितः । बृ० तृ० ८१ आ ।
घट्टितघट्टनं–घट्टितानि–संबद्धानि घट्टनानि जालादीनि चलनानि यस्य सः । आव० ५४०, ५४६ । ओघ० १८१ ।
घट्टिय–घट्टितः–सुविहितोपायः । धीवरादिकृत उपायः । पिण्ड० १७१ । घट्टितः–स्पष्टः । प्रश्न० ६० । परस्परं घर्षयुक्ता । जं० प्र० ३७ ।
घट्टे–घट्टयति अङ्गुल्या मसृणानि करोति । ओघ० १४३ ।
घट्टेइ–घट्टयति स्पृशति । ओघ० २११ । हस्तस्पर्शनेन घट्टयति । ज्ञाता० ६६ ।
घट्टेउं–घट्टयित्वा–तिरस्कृत्य । ओघ० १९२ ।
घट्टं–घृष्टं पाषाणादिना उपरि घर्षिते । सूर्य० २९३ । जीवा० १६० ।
घट्टा–घृष्टानीव घृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमावत् । सम० १३८ । प्रज्ञा० ८७ । घृष्टा इव घृष्टा खर-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाणया पाषाणवत्। जं० प्र० २०। येषां-जङ्घे श्लक्ष्णीकरणार्थं फेनादिना घृष्टे भवतस्तेऽवयवावयविनोरभेदोपचारात् घृष्टाः। अनु० २६। घृष्टा इव घृष्टा खरशाणया प्रतिमेव। औप० १०। घृष्टा-जङ्घासु दत्तफेनका। ओघ० ५५। घृष्टा। ठाणा० २३२।

घड-घटकारः-कर्म्मजायां बुद्धौ दृष्टान्तः। नंदी० १६५। घटा-समुदायरचना। भग० २१५।

घडओ-घटः। आव० ४२३। घटकः। आव० ५५६।

घडक-घटकः। अनु० १५२।

घडणं-घटनं-अप्राप्तसंयमयोगप्राप्तये यत्नः। प्रश्न० १०६।

घडण-घटकः-लघुर्घटः। जं० प्र० १०१।

घडणजयणप्पहाणो-घटनं-संयमयोगविषयं चेष्टनं यतनं-तत्रैवोपयुक्तत्वं ताभ्यां प्रधानः-प्रवरः घटनयतनप्रधानः। उत्त० ५२२।

घडणा-घटना-परस्परादिघर्षणा। विशे० ५३७।

घडदास-घटदास। आचा० ३८८।

घडदासी-घटदासी-जलवाहिनी। सूत्र० २४५।

घडभिंगारो-घटभृङ्गारः-जलपरिपूर्णः कलशभृङ्गारः। औप० ६६।

घडमुह-घटमुखं, घटकमुखमिव मुखं तुच्छदशनच्छदत्वात्। भग० ३०८।

घडमुहपवत्तिए-घटमुखेनेव कलशब्दनेनेव प्रवर्त्तितः-प्रेरितः घटमुखप्रवर्त्तितः। सम० ८५।

घडा-गोष्ठी। बृ० द्वि० १८८ आ। गोट्ठी। नि० चू० प्र० १५६ आ। महत्तरानुमहत्तरादिगोष्ठीपुरुषसमवायलक्षणा। बृ० तृ० ६ आ। घटा-समुदायः। भग० ८३।

घडाविओ-योजितः। आव० ६८८।

घडिगा-घटिका-मृन्मयकुल्लडिका। सूत्र० ११८।

घडिगापोद्दवत्- । नि० चू० द्वि० ४१ आ।

घडितव्वं-घटितव्यं-अप्राप्तेषु योगः कार्यः। ठाण० ४४१।

घडिय-घटितं-संयोगो जातः। आव० ८२४। कूपितम्। दश० ११५।

घडियनाती-घटितज्ञातिः-दृष्टाभाषितः। व्य०द्वि०८५ अ।

घडियल्लय-घटितः। आव० ४१०।

घडियव्वं-अप्राप्तानां संयमयोगानां प्राप्तये घटना कार्या। भग० ४८४। अप्राप्तप्राप्तये घटना कार्या। ज्ञाता० ६०।

घडीमत्तयं-घटीमात्रकं-घटीसंस्थानं मृन्मयभाजनविशेषः। बृ० द्वि० २६ आ।

घडेंति-घटयन्ति संयोजयन्ति। जं० प्र० ३६४।

घडेमि-घटयामि। आव० ४२०।

घणंगुले-घनाङ्गुलम्। अनु० १७३। प्रतरश्च सूच्या गुणितो दैर्घ्येण विष्कम्भतः पिण्डतश्च समसङ्ख्यं घनाङ्गुलम्। अनु० १५८।

घणं-अन्यान्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशतो निबिडा। जीवा० १८७। घनं-वादित्रविशेषः। जं० प्र० ४१२। घनम्। आव० २०८, ८३८। घनं-कांस्यतालादि। जीवा० २६६। निबिडा। ओघ० ३०। निश्छिद्रम्। ज्ञाता० २। घनं-कंसकादि। जीवा० २४७। देवविमानविशेषः। सम० ३७। कोट्ठगपुडगादिगंधा। नि० चू० तृ० १ अ। कलुषः। बृ० द्वि० १३८ अ। घनः-यस्य राशेर्यो वर्गः स तेन राशिना गुण्यते ततो घनो भवति। प्रज्ञा० २७५। निबिडप्रदेशोपचयः। सूर्य० २८६। घनाकारं वादित्रम्। सूर्य० २६७। व्याप्तः। प्रज्ञा० ३६। घनः-सङ्ख्यानं यथा द्वयोर्घनोऽष्टौ। ठाणा० ४६६। घनः-बहुलत्तरः। जीवा० २०७। स्त्यानीभूतोदकः पिण्डीभूतो वा। जीवा० ६१। घनं-कांश्यतालादिकम्। भग० २६७। जं० प्र० १०२। चतुःषष्टिपदात्मकं तपः घनतपः। उत्त० ६०१।

घणकडियकडिच्छा-अन्योऽन्यं शाखानुप्रवेशाद् बहलनिरन्तरच्छायः। भग० ६२८।

घणकडियकडिच्छाए-अन्योऽन्यं शाखानुप्रवेशाद् बहुल निरन्तरच्छायः। औप० ६।

घणकरणं-घनकरणं-यथायोगं निधत्तिरुपतया निकाचनारूपतया वा व्यवस्थापनम्। पिण्ड० ४१।

घणकुड्डा-घनकुड्या-पक्वेष्टकादिमयभित्तिकाः। बृ० प्र० ३१० आ।

घणगणियभावणा-घनगणितभावना। जीवा० ३२५।

घणघणाइय-घनघनायितः घणघणायितरूपः। जं० प्र० १४४।

घणदंतदीवे-अन्तरद्वीपविशेषः। ठाणा० २२६।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घणदंता-घनदन्तनामा अन्तरद्वीपः। प्रज्ञा० ५० ।
घणदन्तो-घनदन्तः-अन्तरद्वीपविशेषः। जीवा० १४४ ।
घणमुइं-जस्स मुइंगस्स घणसद्दसारित्थो सद्दो सो घणमुइं । नि० चू० द्वि० १७१ आ ।
घणमुइंग-मेघसदृशध्वनिर्मुरजः । जं० प्र० ६३ ।
घणमुयंगो-घनमृदङ्गः-घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्गः। जीवा० २१७ । पटुना पुरुषेण प्रवादितः घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्गः । जीवा० १६२ ।
घणवट्टे-सर्वतः समं घनवृत्तम् । भग० ८६१ ।
घणवाए-घनवातः-घनपरिणामो वातो रत्नप्रभापृथिव्याद्यधोवर्त्ती । जीवा० २६ । घनवातो-घनपरिणामो रत्नप्रभापृथिव्याद्यधोवर्त्ती । प्रज्ञा० ३०, ७७ ।
घणवाय-घनवातः-अत्यन्तघनः पृथिव्याद्याधारतया व्यवस्थितः हिमपटलकल्पः । आचा० ७४ ।
घणवायवलय- । प्रज्ञा० ७७ ।
घणवाया-रत्नप्रभाद्यधोवर्तिनां घनोदधिनां विमानानां वाऽऽधारा हिमपटलकल्पा वायवो घनवाताः। उत्त० ६६४।
घणविज्जुया- । भग० ५०४। ठाणा० ३६१ ।
घणसंताणिया-घनसन्तानिका-घनतन्तुका। ओघ० ११८ ।
घणसंमद्दे-घनसम्मर्दः-यत्र चन्द्रः सूर्यो वा ग्रहस्य नक्षत्रस्य वा मध्ये गच्छति स योगः । सूर्य० २३३ ।
घणोदधिवलए-घनोदधिवलयः-वलयाकारघनोदधिरूपः। जीवा० ९५ ।
घत्तह-यतध्वम् । तं० ।
घत्तामो-क्षिपामः-दिशो दिशि विकीर्णसैन्यं कुर्म्मः । जं० प्र० २३३ ।
घत्तिय-प्रेरितः । ओघ० १३७ ।
घत्तिया-दूरमुत्सारिताः । पउ० २८-९०९ ।
घत्तिहामि-यतिष्ये । विपा० ८३ ।
घत्तेह-प्रक्षिपत । जं० प्र० २४० ।
घत्थं-ग्रस्तं-अभिभूतम् । आव० ५८८ ।
घत्थे-गृहीताः । पिण्ड० ४७ ।
घत्थो-ग्रस्तः । मर० ।
घन-घनतपः । उत्त० ६०१ । स्त्यानो हिमशिलावत् । ठाणा० १७७ । वाद्यकशब्दविशेषः । ठाणा० ६३ । हस्ततालकं सालादि । आचा० ४१२ ।
घनकडियकडच्छाए-कटः सञ्जातोऽस्येति कटितः-कटान्तरेणोपरि आवृत इत्यर्थः कटितश्चासौ कटश्च कटितकटः घना-निविडा कटितकटस्येवाधो भूमौ छाया घनकटितकच्छायः । जीवा० १८७ ।
घनगुप्तः-नामशिल्पः । विशे० ६२७ ।
घनतपः-षोडशपदात्मकः प्रतरः पदचतुष्टयात्मिकया श्रेण्या गुणितो-घनो भवति, आगतं चतुःषष्ठिः ६४ स्थापना तु पूर्विकैव नवरं बाहल्यतोऽपि पदचतुष्टयात्मकत्वं विशेषः, एतदुपलक्षितं तपो घनतप उच्यते । उत्त० ६०१ ।
घनपरिमंडलं-चत्वारिंशत्प्रदेशावगाढं चत्वारिंशत्परमाण्वात्मकं च, तत्र तस्या एव विंशतेरुपरि तथैवान्या विंशतिरवस्थाप्यते । प्रज्ञा० १२ ।
घनोदधि-घनः-स्त्यानो हिमशिलावत् उदधिः-जलनिचयः स-चासौ चेति घनोदधिः । ठाणा० १७७ ।
घनोपलः-करकः । प्रज्ञा० २८ ।
घम्मपक्कं-घर्मपक्वम् । विपा० ८० ।
घम्मो-घर्मः। आव० ३४६ ।
घय-घृतवरः-क्षीरोदसमुद्रानन्तरं द्वीपः । प्रज्ञा० ३०७ । द्वीपविशेषः । अनु० ९० । घृतं-आज्यम्। दश० १८० । घृतविक्रयी, कर्म्मजायां बुद्धौ दृष्टान्तः । नंदी० १६५ ।
घयउरा-घृतपूर्णाः । उत्त० २१० ।
घयकुडो-घृतकुटः-घृतकुम्भः । आव० ३१० ।
घयणं-भाण्डः, औत्पत्तिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। नंदी० १५३।
घयणो-घृतान्नः । आव० ४१६ । भाण्डः । बृ० प्र० २१३ ।
घयपुण्णो-घृतपूर्णाः । उत्त० २०६ ।
घयमंडो-घृतमण्डः-घृतसारः । जीवा० ३५४ ।
घयमेहे-घृतवत् स्निग्धो मेघो घृतमेघः। जं० प्र० १७४।
घयवरो-घृतवरः द्वीपविशेषः, घृतोदकवाप्यादियोगाद् घृतवर्णदेवस्वामीकत्वाच्च द्वीपः । जीवा० ३५४ ।
घयविक्किणओ-घृतविक्रायकः । आव० ४२७ ।
घयविक्किणिया-घृतविक्रायिकाः । आव० १६७ ।
घरंतरं-घरंतरा उपरेण जंतं घरंतरं। नि०चू०प्र० १८७।
घर-गृहाणि सामान्यजनानां सामान्यानि वा । अनु०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५९ । गृहम् । आव० ५८१, ८४५ । गृहं–सामान्यम् । प्रश्न० ८ ।
घरओ–गृहम् । आव० ३९१ ।
घरकुटीए–बहिरवस्थितं धनकादि, अथवा तत्कलहिका-न्तर्गतकुट्यां वा निवसति । आव० ५७ ।
घरकोइल–गृहगोधिका । पिण्ड० १०३ ।
घरलोइलओ–गृहकोकिलः–गृहगोधा । आव० ३८९ ।
घरकोइलि[illegible]–गृहकोकिलिका–घरोलिका । ओघ० १२६ ।
घरकोइलिया–गिहिकोइला । नि० चू० प्र० १८२ आ । गृहकोकिला–गृहगोधिका । आव० ७११ ।
घरकोइलो–गृहकोकिला । आव० ६४१ ।
घरघरओ–घरघरकः–कण्ठाभरणविशेषः । जं० ५२९ ।
घरचिडओ–चटकः । नि० चू० द्वि० ३३ आ ।
घरछाइणिया–गृहच्छादनिका । उत्त० १४७ ।
घरछादणिया–गृहच्छादनिका । आव० ३४३ ।
घरजामाउ–गृहजामाता । ज्ञाता० २०१ ।
घरट्ट–घंटी, यन्त्रविशेषः । ओघ० १६५ । भ्रमणकल्पम् । दश० ११४ ।
घरणी–गृहिणी । आव० २२४ ।
घरवइ–गृहाणां वृतिः । बृ० प्र० १८४ अ ।
घरवगडा–गृहवगडा–गृहवृतिपरिक्षेपः । बृ० प्र० ३०९आ ।
घरसमुदाणिया–गृहसमुदानं–प्रतिग्रहम् । औप० १०६ ।
घरा–गृहाणि सामान्यतः । जं० प्र० १०७ । गृहाणि–प्रासादाः । दश० १९३ । गृहाणि सामान्यजनानां सामान्यं वा । भग० २३८ ।
घरास–घरावासो । नि० चू० प्र० २०५ आ । गृहवासः । बृ० द्वि० २०७ अ ।
घरोइला–भुजपरिसर्पविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।
घरोलिका–गृहकोकिलिका । ओघ० १२६ ।
घरोलिया–भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिकः । जीवा० ४० ।
घर्मा–आद्यभूमिः । आव० ६०० ।
घल्लइ–क्षिपति । पउ० ६२–१२ ।
घसा–जत्थ एगदेसे अक्कममाणे सो पदेसो सव्वो वलइ सा । दश० चू० १०२ । शुषिरभूमिः । दश० २०५ ।
घसिरं–ग्रसिता–बहुभक्षी । बृ० प्र० २४८ अ ।
घसिरो–बहुभक्खणो । ओघ० ९८ । नि० चू० प्र० २०१ अ ।
घसो–भूराजिः । जीवा० २८२ । स्थलादधस्तादवतरणम् आचा० ३३८ ।
घाए–घातः–गमनम् । सूर्य० ८, ४९ ।
घाओ–घाताः–प्रहाराः । ज्ञाता० ६९ । संपीडनम् । ओघ० १३६ ।
घाड–घाटः–मस्तकावयवविशेषः । पुरुषादिवधः । ज्ञाता० १३८ ।
घाडामुह–घाटामुखं–शिरोदेशविषयः । भग० ३०८ । घाटामुखं–कृकाटिकावदनम् । जं० प्र० १७० ।
घाडिए–मित्रम् । नि० चू० द्वि० ७८ अ ।
घाडिय–सहचारी । ज्ञाता० ८९ । मित्रम् । नि० चू० द्वि० १२७ अ ।
घाणं–तिलपीडनयन्त्रम् । पिण्ड० १७ । घ्राणं–गन्धः । प्रज्ञा० ६०१ । घ्राणो–गन्धो गन्धोपलम्भक्रिया वा । गन्ध-गुणः । भग० ७१३ । घ्रायत इति घ्राणो–गन्धगुणः । भग० ७५३ ।
घाणामाइ–घ्राणमयात् । ठाणा० ३६९ ।
घाणिदिए–घ्राणेन्द्रियम् । प्रज्ञा० २९३ ।
घाणो– । ओघ० १६६ ।
घात–हन्यन्ते प्राणिनः स्वकृतकर्मविपाकेन यस्मिन् घातः–नरकः । सूत्र० १२८ ।
घातिकर्म–वेदनीयादिकर्म । प्रज्ञा० ५६५ ।
घातो–घातः–देशतो घातनम् । प्रश्न० १३७ ।
घाय–घात्यन्ते–व्यापाद्यन्ते नानाविधैःप्रकारैर्यस्मिन् प्राणिनः स घातः–संसारः । सूत्र० १६१ ।
घायए–घातकः योऽन्येन घातयति । जं० प्र० १२३ ।
घायओ–घातकः–योऽन्येन घातयति । जीवा० २८० ।
घायणा–घातना–प्राणवधस्य षष्ठः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।
घालती–गृहीतभाण्डाः । निरय० २५ ।
घास–ग्रासम्–आहारम् । उत्त० ६०६ । ग्रासम् । उत्त० २९४ । घासाः–बृहत्यो भूमिराजयः । आचा० ४११ । ग्रस्यत इति ग्रासः–आहारः । सूत्र० ४९ । औप० ३८ ।
घिंसिसिखासे–ग्रीष्मकाले, शिशिरकाले, वर्षाकाले । ओघ०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०५ ।

घिसु-ग्रीष्मे । उत्त० १२३ ।

घिणा-घृणा-पापजुगुप्सालक्षणा। प्रश्न० ५। आव० ३५१।

घिणोअण्णो-जीवदयालु । नि० चू० प्र० १२० अ ।

घीरोलिय-गृहकोकिलिकाः-गृहगोधिकाः । प्रश्न० ८ ।

घुंटकः-गुल्फः । प्रश्न० ८० ।

घुंटिउ-पीत्वा । तं० ।

घुट्टंति-पिबन्ति । नंदी० ६३ ।

घुट्टग-घुट्टकः-लेपितपात्रमसृकारकः पाषाणः । पिण्ड० ९ ।

घुणः-काष्ठनिश्रितो जीवविशेषः । आचा० ५५ ।

घुणकोटकः-सचित्ताचित्तवनस्पतिशरीरेऽपि कीटविशेषः । सूत्र० ३५७ ।

घुणक्खर-घुणाक्षरः-न्यायविशेषः । दश० १११ ।

घुणखइयं-घुणखादितं-कोलावासः । आव० ६५६ ।

घुणचुण्ण-घुणचूर्णं-अचित्तचूर्णम् । विशे० ६६० ।

घुणाक्षरकरणं-न्यायविशेषः । दश० १५८ ।

घुणितं-घुणाणं आवासो घुणितं काष्टमित्यर्थः । नि० चू० प्र० २५५ आ ।

घुरघुरायमाणं-अन्तर्नदन्तं-गलमध्ये रवं कुर्वन्तम् ।सम० ५२ ।

घुर्घुरं- । सूत्र० ३२१ ।

घुर्घुरकं- । उत्त० ३१२ ।

घुर्घुरादि- । विपा० ५६ ।

घुलति-भ्राम्यति । उत्त० १५० ।

घुल्ला-घुल्लिका । जीवा० ३१ । घुल्लाः-घुल्लिकाः द्वीन्द्रिय-जीवविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

घूमायमानः- । ज्ञाता० १५२ ।

घूय-घूकः-कौशिकः । ज्ञाता० १३८ ।

घूरा-जङ्घा खलका वा । सूत्र० ३२४ ।

घूर्णितचेतसः- । नंदी० १५२ ।

घृत-स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतादिवत् । प्रज्ञा० १० ।

घृतपूपः-घृतनिष्पन्नः पूपः । आव० ४५८ ।

घृतपूर्णं-सुपक्ववस्तुविशेषः । उत्त० ६१ । अशनम् । आव० ८११ ।

घृतवारकाः- । विशे० ६३७ ।

घृतविक्रयी- । नंदी० १६५ ।

घृतोदः-घृतवरद्वीपानन्तरं समुद्रः । प्रज्ञा० ३०७ । घृत-रसास्वादः समुद्रः । अनु० ९० ।

घृष्टः- । आचा० ३६१ ।

घेच्चिओ-पिट्टितः । आव० २०६ ।

घेच्छति-ग्रहीष्यति । आव० २३४ ।

घेत्थिहि-ग्रहीष्यति । आव० २९३ ।

घोच्छामो-गर्हिताः स्म । आव० ९० ।

घोड-घोटकः । ग० । घोटा डं(डि)गराः । व्य० द्वि० २३३ आ ।

घोडए-घोटकः-अश्वः । प्रज्ञा० २५२ ।

घोडओ-घोटकः-सामान्योऽश्वः । जीवा० २८२ ।

घोडगा-एकखुरचतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

घोडगो-घोटकः-अश्वः । आसुव्व विसमपायं गायं ठावित्तु ठाइ उस्सग्गे । आव० ७९८ । बलीवर्दः । नि० चू० तृ० ३७ आ ।

घोडमादो-असंखंडीदोषविशेषः । नि० चू० द्वि० ३२ अ ।

घोडयगीवो-घोटकग्रीवः । आव० १७६ ।

घोडा-घोट्टा-चट्टा, जूअकारादिधुत्ता । नि० चू० प्र० २०७ आ । चट्टा । बृ० तृ० ९९ आ । बृ० प्र० ३११ अ । बृ० द्वि० ३० आ ।

घोडो-घोटः-एकखुरचतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ ।

घोण-नासा । प्रश्न० ८२ ।

घोणसो-सर्पः । आव० ४२६ ।

घोणा-नासिका । जं० प्र० २३६ ।

घोर-घोरः-अतिनिर्घृणः, परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमाश्रित्य निर्दयः, आत्मनिरपेक्षः । भग० १२ । घोरः-निर्घृणः परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमधिकृत्य निर्दयः, अन्यैर्दुरनुचरो वा । सूर्य० ५ । घूर्णयतीति घोरः-निरनुकम्पः । उत्त० २१७। प्राणसंशयरूपम् । आचा० १९४ । आत्मनिरपेक्षम् । ठाणा० २३३। घोरं-हिंसा । भग० १७५ । रौद्रम् । दश० १९७ । घोरो-निर्घृणः परिषहेन्द्रियकषायाख्यानां रिपूणां विनाशे कर्त्तव्ये । अन्ये त्वात्मनिरपेक्षं घोरम् । ज्ञाता० ८ ।

घोरगत्त-घोरगात्रम् । उत्त० ३०३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घोरगुणे-घोराः-अन्यैर्दुरनुचरा गुणा ज्ञानादयो यस्य स। सूर्यं० ४। अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य सः। भग० १२।

घोरतवस्सी-घोरतपस्वी-घोरैस्तपोभिस्तपस्वी । भग० १२। सूर्यं० ४।

घोरपरक्कमो-घोरपराक्रमः-कषायादिजयं प्रति रौद्रसामर्थ्यः। उत्त० ३६५।

घोरबंभचेरवासी-घोरं-दारुणं अल्पसत्वैर्दुरनुचरत्वात् ब्रह्मचर्यं यत्तत्र वस्तु शीलं यस्य स घोरब्रह्मचर्यवासी । सूर्यं० ४। भग० १२।

घोरमहाविसदाहो-घोरा-रौद्रा महाविषा-प्रधानविषयुक्ता। दंष्ट्रा-आस्यो यस्य स घोरमहाविषदंष्ट्रः। आव० ५६६।

घोरविसं-परम्परया पुरुषसहस्रस्यापि हननसमर्थविषम्। भग० ६७२।

घोरव्वओ-घोरव्रतः-धृतात्यन्तदुर्धरमहाव्रतः। उत्त०३६५।

घोरा-झगिति जीवितक्षयकारिणी औदारिकवतां, परिजीवितानपेक्षा वा। प्रश्न० १७।

घोरासमं-घोराश्रमः-गार्हस्थ्यम्। उत्त० ३१५।

घोलण-घोलनं-अङ्गुष्ठकाङ्गुलिगृहीतसञ्चाल्यमानयूकाया इव। आव० २७३। अङ्गुष्ठकाङ्गुलिगृहीतसंचाल्यमानयूकाया इव घोलनम्। विशे० ८४३।

घोलिओ-घूर्णितः। आव० ३०३।

घोलितः- । नंदी० १६२।

घोलियया-घोलितका दधिघट इव पट इव वा। औप० ८७।

घोष- । ठाणा० २०५।

घोषविशुद्धिकरणता-उदात्तानुदात्तादिस्वरशुद्धिविधायिता। उत्त० ३६।

घोषातकी-कटुकवल्लीविशेषः। नंदी० ७७।

घोसं-नर्दितम्। ज्ञाता० १६१। देवविमानविशेषः। सम० १२, १७। ज्ञाता० २५१। गोउलं। नि० चू० द्वि० ७० आ। घोषः-गोकुलम् उत्त० ६०५। बृ० प्र० १८१ आ। बृ० द्वि० १८३ अ। घोषः-शब्दः। उपा० २५। उदत्तादिः। भग० १७। घोषः-अनुनादः। जं० प्र० ११७। गोष्ठः। ठाणा० ८५। घोषः-दशमो दक्षिणनिकायेन्द्रः। भग० १५७। जीवा० १७०। स्तनितकुमाराणामधिपतिः। प्रज्ञा० ९४। निनादः। जीवा० २०७।

घोसगसद्दो-घोषकशब्दः। आव० ४२४।

घोसण-घोषणं। आव० ११५।

घोसवई-घोषवती सेनाविशेषः। आव० ५१४।

घोसवती-घोषवती-प्रद्योतराज्ञो वीणा। आव० ६७४।

घोससमं-घोषा-उदासादयस्तैर्वाचनाचार्याभिहितघोषैः समं-घोषसमम्। अनु० १५।

घोसा-निनादः। जं० प्र० ५३।

घोसाइ-घोषा-गोष्ठानि। ठाणा० ८६।

घोसाडइ-वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

घोसाडए-घोषातकी। प्रज्ञा० ३६४।

घोसाडयं-घोषातकम्। प्रज्ञा० ३७।

घोसाडिफलं-घोषातकीफलम्। प्रज्ञा० ३६४।

घोसाडियाकुसुमं-घोषातकीकुसुमम्। जं० प्र० ३४। जीवा० १९१।

घोसेह-घोषयत-कुरुत। ज्ञाता० १०३।

घ्राणं-पोथः। जं० प्र० २३७।

च

चंकमंत-चङ्क्रममाणः। ज्ञाता० २२१।

चंकमणं-चङ्क्रमणं-गमनम्। आव० ५२९।

चंकमणगं-प्रचङ्क्रमणकं-भ्रमणम्। ज्ञाता० ४१।

चंकमणिया-चङ्क्रमणिका-गतागतादिका। आव ५५८।

चंक्रमणभूमिः- । ओघ० १२२।

चंक्रमणिका- । ओघ० १२२।

चंगबेरे-चङ्गबेरा-काष्ठपात्री। दश० २१८।

चंगिकं-औदारिकम्। ओघ० ९०।

चंगेरी-चङ्गेरी-ग्रथितपुष्पसशिखाकरूपा। प्रज्ञा० ५४२। महतीकाष्ठपात्री बृहत्पट्टलिका वा। प्रश्न० ८।

चंगोडए-नाणककोष्ठागारम्। बृ० तृ० ९३ आ।

चंचरिकः-भ्रमरः। प्रज्ञा० ३६१।

चंचलायमाणं-चञ्चलायमानं सौदामिनीयमानं कान्ति-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झात्कारेणेत्यर्थः । जं० प्र० २०२ ।

चंचले–चञ्चलः–अनवस्थितचेत्तः । प्रज्ञा० ६६ । विमुक्तस्थैर्यम् । ज्ञाता० १३८ ।

चंचा–सप्तमदशा । नि० चू० द्वि० २८ आ ।

चंचु–चञ्चुः–शुकचञ्चुः । जं० प्र० २६५ ।

चंचुच्चियं–चञ्चुरितं–कुटिलगमनं, अथवा चञ्चुः–शुकचञ्चुस्तद्वद्वक्रतयेत्यर्थः, उच्चितं–उच्चिताकरणं–पादस्योत्पादनं चंचुच्चितम् । जं० प्र० २६५ । चञ्चुरितं–कुटिलगमनम् । शुकचञ्चुस्तद्वद्वक्रतयेत्यर्थः, उच्चितं–उच्चताकरणं पादस्य उच्चितं वा–उत्पाटनं पादस्यैवं चञ्चूच्चितम् । औप० ७० । जं० प्र० ५३० । चञ्चुरितं–कुटिलगमनम् । चञ्चुः–शुकचञ्चुस्तद्वद्वक्रतया उच्चितं–उच्चताकरणं पादस्योत्पाटनं वा (शुक)पादस्येवेतिचञ्चूच्चितम् । भग० ४८० ।

चंचुमालइय–पुलकिता । भग० ५४१ । पुलकितः । औप० २४ ।

चंड–रौद्रः । भग० ४८४ । चण्डः–कोपनः परुषभाषी वा । उत्त० ४६ । चण्डः–चारभटवृत्त्याश्रयणतः । उत्त० ४३४ । क्रोधः । भक्त० । चण्डं–झगिति व्यापकत्वात् । ज्ञाता० १६२ । चण्डा–रौद्रा । भग० १६७, २३१, ५२७ । चण्डत्वं संरम्भारब्धत्वात् । ज्ञाता० ६६ । चण्डः उत्कटरोषत्वात् । ज्ञाता० २३८ ।

चंडकोसिओ–चण्डकौशिकः । आव० १६६ । प्रद्वेषे सर्पविशेषः । आव० ४०५ । चंडकौशिकः–येन कर्म्मणां क्षये कृतेऽवाप्तं सामायिकम् । आव० ३४७ । दृष्टिविषसर्पविशेषः । आचा० २५५ । नंदी० १६७ ।

चडगं–समूहः । आव० ६७१ ।

चंडतिव्व–चण्डतीव्रः अत्यर्थतीव्रः । ज्ञाता० १६२ ।

चंडपिंगल–मोहान्निदानकृत् । भक्त० । चण्डपिङ्गलः– अर्थोदाहरणे चोरः । आव० ४५२ ।

चंडप्रद्योतः–उज्जयिन्यधिपतिः । नंदी० १६६ । प्रश्न०६० ।

चंडमेहो–चण्डमेघः–अश्वग्रीवराज्ञो दूतः । आव० १७४ ।

चंडरुद्दो–चण्डरुद्रः–कायदण्डोदाहरणे उज्जयिन्यामाचार्यः । आव० ५७७ । चण्डरुद्रः–परुषवचने उदाहरणम् । बृ० तृ० २१८ अ । साधुविशेषः । ओघ० ३८ ।

चंडरुद्राचार्यः–खरपरुषवचने दृष्टान्तः । व्य०प्र० ११८ अ ।

चंडवडंसओ–चन्द्रावतंसकः–साकेतनगरे राजा, यो माघमासे प्रतिमयास्थितः सन् कालगतः । आव० ३६६ ।

चंडवडिंसओ–चन्द्रावतंसकः–कोशलदेशे साकेतनगरे नृपतिः। उत्त० ३७५ ।

चंडविसं–दष्टकनरकायस्य झगिति व्यापकविषम् । भग० ६७२ ।

चंडा–वेगवती–झटित्येव मूर्च्छोत्पादिका । ठाणा० ४६१ । चण्डा–चमरासुरेन्द्रस्य मध्यमिका पर्षत् । जीवा० १६४ । चमरस्य द्वितीया पर्षत्, तथाविधमहत्त्वाभावेनेषत्कोपादिभावाच्चण्डा । भग० २०२ । चण्डौ क्रोधनत्वात् । ज्ञाता० ६६ । ठाणा० १२७ । चण्डा–शक्रदेवेन्द्रस्य मध्यमिका पर्षत् । जीवा० ३६० ।

चंडाए–चण्डया–रौद्रयाऽत्युत्कर्षयोगेन । ज्ञाता० ३६ ।

चंडाल–चाण्डालः–ब्राह्मस्त्रीशूद्राभ्यां जातः । आचा० ८ ।

चंडालरूवे–चण्डालस्येव रूपं–स्वभावः यस्य सः । ज्ञाता० ८० ।

चंडालियं–चण्डेनाऽऽलमस्य चण्डेन वा कलितश्चण्डालः, स चातिक्रूरत्वाच्चण्डालजातिस्तस्मिन् भवं चाण्डालिकम् । उत्त० ४७ । चण्डः–क्रोधस्तद्वशादलीकं–अनृतभाषणं चण्डालिकम् । उत्त० ४७ ।

चंडावेणया– । भग० ८०२ ।

चंडिक्कं–चाण्डिक्यं–रौद्ररूपत्वम् । प्रश्न० १२० । चाण्डिक्यम् । सम० ७१ ।

चंडिक्किए–चाण्डिकितः–सञ्जातचाण्डिक्यः प्रकटितरौद्ररूपः । भग० ३२२ । ज्ञाता० ६८ । चाण्डिक्यः–रौद्ररूपः । जं० प्र० २०२ । चाण्डिक्यितः–दारुणीभूतः । विपा० ५३ ।

चंडिक्किय–प्रकटितरौद्ररूपः । भग० १६७ ।

चंडी–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

चंडीदेवगा–चण्डीदेवकाः–चक्रधरप्रायाः । सूत्र० १५४ ।

चंद–तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । निरय० २१ । चन्द्रः । निरय० ३६ । धर्मकथाश्रुतस्कंधेऽष्टमवर्गे देवः । ज्ञाता० २५३ । ठाणा० ३४४ । चन्द्रः । प्रज्ञा० ३६१ । चान्द्रः–प्रथमो द्वितीयश्चतुर्थश्च युगसंवत्सरः । सूर्य० १५४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्द्रो–वक्षस्कारपर्वतः । जं० प्र० ३५७ । चन्द्रः–चन्द्राकारमर्द्धदलम् । प्रज्ञा० ४११ । देवविशेषः । जीवा० २९२ । द्वीपविशेषः । जीवा० ३१७ । देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदऊडु–चन्द्रर्त्तुः । सूर्य० २०९ ।

चंदकंतं–देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदकंता–द्वितीयकुलकरस्य भार्या । सम० १५० । आव० ११२ । ठाणा० ३९८ ।

चंदकूडं–देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदग–चन्द्रकः चक्राष्टकोपरिवर्त्तिपुत्तलिकायामाक्षिगोलकः । बृ० द्वि० १०० अ ।

चंदगइण–चन्द्रगतिना । पउ० २८–४५, ५१ ।

चंदगविज्झं–राधावेधोपमम् । आउ ।

चंदगविज्झयं–चन्द्रावेध्यकं-प्रकीर्णकविशेषः । आव० ७४० ।

चंदगवेज्झं–चक्राष्टसुपरिपुतलिकाक्षिचंडिकावेधवत् । नि० चू० द्वि० १७ आ ।

चंदगवेज्झो–चन्द्रकवेधः । ओघ० २२७ ।

चंदगुत्त–चन्द्रगुप्तः । दश० ६१ । नंदी० १६७ । विमर्शदृष्टान्ते राजा । आव० ४०५ । प्रशंसाविषये पाटलीपुत्रराजा । आव० ८१८ । चूर्णद्वारविवरणे कुसुमपरे राजा । पिण्ड० १४२ । नि० चू० तृ० ६ अ । बिन्दुसारपिता । बृ० प्र० ४७ अ । नि० चू० प्र० २४३ अ । पाडलिपुत्ते राया । नि० चू० द्वि० १०२ अ । बृ० प्र० ४७ अ । अशोकस्य पितामहः । बृ० द्वि० १५४ अ ।

चंदगुत्तपपुत्तो–चन्द्रगुप्तप्रपौत्रः । विशे० ४०९ ।

चंदगोमी–चन्द्रगोमी–व्याकरणकर्त्ता कोऽपि । सूर्य० २९२ ।

चंदघोसे–चन्द्रघोषः–चन्द्रध्वजः संवेगोदाहरणे आरक्षुराभिधप्रत्यन्तनगरे मित्रप्रभमनुष्यः । आव० ७०९ ।

चंदच्छाए– । ज्ञाता० १२४, १३२ ।

चंदच्छाये–चन्द्रच्छायः– अङ्गजनपदराजश्चम्पानिवासी । ठाणा० ४०१ ।

चंदजसा–चन्द्रयशाः कुलकरपत्नी । आव० ११२ । संवेगोदाहरणे चन्द्रध्वजभगिनी । आव० ७०९ । विमलवाहनकुलकरस्य भार्या । सम० १५० । ठाणा० ३९८ ।

चंदज्झयं–देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदण–चंदणं मलयजम् । प्रश्न० १६२ । चन्दनं–उपकारकम् । प्रश्न० १५७ । भग० ८०३ । चन्दनः–मणिभेदः । उत्त० ६८९ । चन्दनः । प्रज्ञा० २७ । चन्दनं–वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । गन्धद्रव्यविशेषः । नि० चू० प्र० २७६ आ ।

चंदणकंथा–चन्दनकन्था–गोशीर्षचन्दनमयी भेरी । आव० ९६ ।

चंदणकयचच्चागा–चंदनकृतचर्चाकः–चन्दनकृतोपरागः । जीवा० २०५ ।

चंदणकलसा–चन्दनकलशाः–मांगल्यघटाः । जं० प्र० ४९, ४२० । औप० ५ । जीवा० २०५ । चन्दनकलशाः–माङ्गल्यकलशाः । प्रज्ञा० ८६ । जीवा० १६० ।

चंदणग–चन्दनकः-अक्षः । प्रश्न० २४ ।

चंदणघडो–चन्दनघटः–चन्दनकलशः । जीवा० २२७ ।

चंदणज्जा–महावीरस्वामिनः प्रथमशिष्या । सम० १५२ ।

चंदणथिग्गलिया–चन्दनथिग्गलिका । आव० ९८ ।

चंदणपायवे–चन्दनपादपः–मृगग्रामनगरे उद्यानविशेषः । विपा० ३५ ।

चंदणपुड–गन्धद्रव्यविशेषः । ज्ञाता० २३२ ।

चंदणा–चन्दनकाः–अक्षाः । उत्त० ६९५ । चन्दना–शीलचन्दनाया द्वितीयं नाम । आव० २२४ । चन्दनकाः–अक्षाः, द्वीन्द्रियजीवविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

चंदणि–वर्चोगृहम् । आव० ६८१ ।

चंदणिउदय–आचमनोदकप्रवाहभूमिः । आचा० ३४१ ।

चंदणिका–चन्दनिका–वर्चोगृहम् । उत्त० १०६ ।

चंदणिया–वर्चोगृहम् । आव० ३५८, ६९६ ।

चंदणो–चन्दनकः–अक्षः, द्वीन्द्रियजीवविशेषः । जीवा० ३१ ।

चंददहे–द्रहविशेषः । ठाणा० ३२६ ।

चंददिण–चन्द्रदिनं–प्रतिपदादिका तिथिः । सम० ५० ।

चंददीवो–चन्द्रद्वीपः–जम्बूद्वीपसत्कचन्द्रस्य द्वीपः । जीवा ३१७ ।

चंदद्दह–चन्द्रह्रदः, चन्द्रह्रदाकाराणि चन्द्रह्रदवर्णानि चन्द्रश्चात्र देवः स्वामीति चन्द्रह्रदः । जं० प्र० ३३० ।

चंदद्धं–चन्द्रार्द्धं–अष्टमीचन्द्रः । जीवा० २०७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदन–चंदन–मणिविशेषः । जीवा० २३ । काष्ठविशेषः । जीवा० १३६ । गन्धद्रव्यविशेषः । जीवा० १९१ ।

चंदनकं–अक्षम् । ओघ० १३५ ।

चंदनघड–चन्दनघटः चन्दनकलशः । प्रज्ञा० ८६ ।

चंदनमाला– । प्रश्न० १२७ ।

चंदपडिमा–चन्द्राकारा प्रतिमा चन्द्रप्रतिमा । व्य० द्वि० ३५६ अ ।

चंदपरिवेस–चन्द्रपरिवेषः–चन्द्रसमन्ताज्जामानः कुण्डलाकारस्तेजः परिधिः । भग० १९५ ।

चंदपरिवेसो–चन्द्रस्य परितो वलयाकारपरिणतिरूपः । जीवा० २८३ ।

चंदपव्वत–वक्षस्कारपर्वतविशेषः । ठाणा० ३२६,८० ।

चंदपुत्तो–चन्द्रपुत्रः । आव० ३९७ ।

चंदप्पभ–देवविमानविशेषः । सम० ८ । मथुरायां गाथापती । ज्ञाता० २५३ । चन्द्रप्रभा–सुराविशेषः । आव० ६९५ । शीतलनाथजिनस्य शिबिकानाम । सम० १५१ । चन्द्रकान्तः । जं० प्र० ५१ । जीवा० २३४ । चन्द्रप्रभः । प्रज्ञा० २७ । चन्द्रप्रभः–एकोरुकद्वीपे द्रुमविशेषः । जीवा० १४६ । चन्द्रकान्तः । मथुरानगर्यां भिण्डवडेंसकोद्याने गाथापतो । ज्ञाता० २५३ । धर्मकथाश्रुतस्कंधेऽष्टमवर्गे देवीचन्द्रप्रभाया विमानम् । ज्ञाता० २५३ । धर्मकथाश्रुतस्कंधेऽष्टमवर्गे देवीचन्द्रप्रभाया सिंहासनम् । ज्ञाता० २५३ ।

चंदप्पभा–चन्द्रस्येव प्रभा–आकारो यस्याः सा चन्द्रप्रभा सुराविशेषः । जीवा० ३५१ । जं० प्र० १०० । चन्द्रस्य ज्योतिषेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । जीवा० ३८४ । चन्द्रस्येव प्रभा–आकारो यस्याः सा चन्द्रप्रभा मद्यविधिविशेषः । जीवा० २६५ । चन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । जं० प्र० ५३२ । शिबिकाविशेषः । आव० १८४ । भग० ५०५ । चन्द्रप्रभा–चन्द्रस्येव प्रभा–आकारो यस्याः सा । प्रज्ञा० ३६४ । वर्धमानजिनस्य शिबिकानाम । सम० १५१ । चन्द्रस्येव प्रभा–आकारो-यस्याः सा चन्द्रप्रभा । जं० प्र० १०० । धर्मकथायाः अष्टमाध्ययने प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२, २५३ । मथुरानगर्यां चंद्रप्रभगाथापतेर्दारिका । ज्ञाता० २५३ । धर्मकथाश्रुतस्कंधेऽष्टमवर्गे प्रथमाध्ययने देवी । ज्ञाता० २५३ ।

चंदप्पह–चन्द्रप्रभः–मणिभेदः । उत्त० ६९८ । पृथिवीभेदः । आचा० २९ । चन्द्रस्येव प्रभा–ज्योत्सना सौम्याऽस्येति, अष्टमजिनः, यस्मिन् गर्भगते देव्याश्चन्द्रपाने दोहदः चन्द्रसदृशवर्णश्च तेन चन्द्रप्रभः । आव० ५०३ ।

चंदमग्गा–चन्द्रमार्गाः–चन्द्रमण्डलानि । सूर्य० ९ । चन्द्रस्य मार्गाः-चन्द्रस्य मण्डलगत्या परिभ्रमणरूपा मण्डलरूपा वा मार्गा आख्याता इति चन्द्रमार्गाः । सूर्य० १३७ ।

चंदमसं–चान्द्रमसं–सौम्यापरनाम, मृगशिरोदेवता । जं० प्र० ४९९ ।

चंदलेसं–देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदलेहिकं–आभरणविशेषः । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

चंदवडिंसयं–चन्द्रावतंसकं–चन्द्रविमानम् । जं०प्र० ५३३ ।

चंदवडिंसो–नियमस्थिरो नृपः । मर० ।

चंदवण्णं–देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदसंवच्छर–चन्द्रसंवत्सरः 'ससिसमगे' त्यादिलक्षणगाथा । सूर्य० १६८, १७१ ।

चंदसाला–चन्द्रशाला । आव० १२३ ।

चंदसालिआ–चन्द्रशालिका–शिरोगृहम् । जं० प्र० १०७ ।

चंदसालिय–चन्द्रशालिका–प्रासादोपरितनशाला । प्रश्न०८।

चंदसालिया–चन्द्रशालिका । शिरोगृहम् । जीवा० २६९ ।

चंदसिंगं–देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदसिट्ठं–देवविमानविशेषः । सम० ८ ।

चंदसिरी–मथुरानगर्यां चन्द्रप्रभगाथापतेर्भार्या । ज्ञाता० २५३ ।

चंदसूरदंसणं–चन्द्रसूरदर्शनं । अन्वर्थानुसारी तृतीयदिवसोत्सवः । विपा० ५१ ।

चंदसूरदंसणिय–चन्द्रसूर्यदर्शनं–उत्सवविशेषः । ज्ञाता० ४१ । चन्द्रसूर्यदर्शनिकाभिधानं सुतजन्मोत्सवविशेषः । औप० १०२ ।

चंद्रसूरपरिवेसा–चन्द्रादित्ययोः परितो वलयाकारपुद्गलपरिणतिरूपाः सुप्रतीता । अनु० १२१ ।

चंदसूरोवरागा–चन्द्रसूर्योपरागाः–राहुग्रहणानि । अनु० । १२१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदा–चन्द्रः-चन्द्रमाः सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्ती देवः। भग० १९५। चन्द्रा–चन्द्रराजधानी। जंबू० प्र० ५३३। चन्द्राः–ज्योतिष्कभेदविशेषः। प्रज्ञा० ६९।

चंदाणण–जम्बूद्वीपे ऐरावतक्षेत्रे प्रथमो जिनः। सम० १५३। चन्द्राननं–चन्द्रप्रभजन्मभूमिः। आव० १६०।

चंदाणणा–शश्वती प्रतिमानाम। ठाणा० २३०। चन्द्रानना–चन्द्राननप्रतिमा। जीवा० २२८।

चंदाणयं– । नि० चू० प्र० ३०६ आ।

चंदाभ–देवविमानविशेषः। सम० १४। चन्द्राभः–कुलकरनाम। जं० प्र० १३२। पञ्चमं लोकान्तिकविमानम्। भग० २७१। ठाणा० ४३२।

चंदायण–चान्द्रायणः–अभिग्रहविशेषः। व्य० द्वि० ३३४ आ।

चंदालगं–चन्दालकं–देवातार्चनिकाद्यर्थं ताम्रमयं भाजनम्। सूत्र० ११८।

चंदावत्तं–देवविमानविशेषः। सम० ८।

चंदावली–चन्द्रावली-तडाकादिषु जलमध्यप्रतिबिम्बितचन्द्रपङ्क्तिः। जीवा० १९१। तटागादिषु जलमध्ये प्रतिबिम्बिता चन्द्रपङ्क्तिः। जं० प्र० ३५।

चंदिमा–चन्द्रमा–ज्ञातायां दशममध्ययनम्। सम० ३६। उत्त० ६९४। ज्ञाता० १०। आव० ६५३। अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य षष्ठमध्ययनम्। अनुत्त० २।

चंदुत्तरवडिंसगं–देवविमानविशेषः। सम० ८।

चंदोत्तरणं–कोशाम्ब्यामुद्यानविशेषः। विपा० ६८।

चंदोदयं–चन्द्रोदयं–चन्द्राननापुर्यां चन्द्रावतंसराज्ञ उद्यानम्। पिण्ड० ७६।

चंदोयरणंसि–उद्दंडपुरनगरे चैत्यविशेषः। भग० ६७५।

चंदोवतरणे–कौशाम्बीनगर्यां चैत्यविशेषः। भग० ५५६।

चंदोवराग–चन्द्रोपरागः–चन्द्रग्रहणम्। जीवा० २८३। भग० १९६।

चंदोवराते–चन्द्रस्य–चन्द्रविमानस्योपरागो–राहुविमानतेजसोपरञ्जनं चन्द्रोपरागो ग्रहणमित्यर्थः। ठाणा० ४७६।

चंपं–चम्पा–यत्र वासुपूज्यस्वामिपादमूले तरुणधर्मा पद्मरथो राजा प्रव्रजितुं गतः। आव० ३९१। नगरीविशेषः। आव० २१३, २२५।

चंपक–वृक्षविशेषः–आद्यंद्विपेषु तु विविधसुगन्धिगन्धवस्तुनिकुरम्बोन्मिश्रविमलशीतलसलिलसेकात् तत्प्रकटनं घ्राणेन्द्रिय ज्ञानस्य। विशे० ६९।

चंपकच्छल्ली–सुवर्णचम्पकत्वक्। जीवा० १९१।

चंपकदमनक–गन्धद्रव्यविशेषः। जीवा० १९१।

चंपकपट्टं–फलकविशेषः। उत्त० ४३४।

चंपकप्पिओ–चम्पकप्रियः–पार्श्वस्थदृष्टान्ते कुमारः। आव० ५२०।

चंपकभेद–सुवर्णचम्पकच्छेदः। जीवा० १९१।

चंपकलया–लताविशेषः। प्रज्ञा० ३०।

चंपगकुसुमं–चम्पककुसुमं–सुवर्णचम्पककुसुमम्। जीवा० १९१।

चंपगजीइ–गुल्मविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

चंपगपट्ट–फलयविसेसो। नि० चू० प्र० ३५७ आ।

चंपगपुड–पुष्पजातिविशेषः। गन्धद्रव्यविशेषः। ज्ञाता० २३२।

चंपगवण–चम्पकवनं, वनखण्डनाम। जं० प्र० ३२०। ठाणा० २३०।

चंपगलया–लताविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

चंपगेइ–चम्पकः–सामान्यतः सुवर्णचम्पको वृक्षः। जं० प्र० ३४।

चंपगो–चम्पकः–वृक्षविशेषः। जीवा० २२२।

चंपतो–किंपुरुषाणां चैत्यवृक्षः। ठाणा० ४४२।

चंपय–मुनिसुव्रतस्वामिजिनस्य चैत्यवृक्षः। सम० १५२।

चंपयकुसुमं–चम्पककुसुमं–सुवर्णचम्पकवृक्षपुष्पम्। प्रज्ञा० ३६१।

चंपयछल्ली–चम्पकछल्ला–सुवर्णचम्पकत्वक्। प्रज्ञा० ३६१।

चंपयभेदे–चम्पकभेदः सुवर्णचम्पकस्य भेदो द्विधाभावः। प्रज्ञा० ३६१।

चंपयवडिंसए–चम्पकावतंसकः। भग० १९४।

चंपयवणं–चम्पकवनम्। भग० ३६। आव० १८६।

चंपरमणिज्ज–चम्परमणीयः–उद्यानविशेषः। आव० २०२।

चंपा–चम्पापुरी। उत्त० ३७९, ३८०। जितशत्रुराजस्य नगरी। ज्ञाता० १७३। उत्त० ९२। क्षितिप्रतिष्ठितस्य पञ्चमं नाम। उत्त० १०५। पालितसार्थ-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाहवास्तव्या नगरी । उत्त० ४८२ । कपिलवासुदेवस्य नगरी । ज्ञाता० २२२ । उत्त० ३२१, ३२४ । नगरी, दत्तराजधानी । विपा० ६५ । संवेगोदाहरणे नगरी । आव० ७०६ । सङ्गपरिहरणविषये नगरी । आव०७२३। आर्जवोदाहरणे नगरी । आव० ७०४ । स्त्रीलोलुपसुवर्णकारवास्तव्यानगरी । आव० ६५ । द्रव्यव्युत्सर्गे दधिवाहननगरी । आव० ७१६ । वासुपूज्यस्वामिनो जन्मभूमिः । आव० १६० । चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्ते नगरी । आव० ३६६ । नगरीविशेषः । आव० २१२ । कुमारनन्दीवास्तव्या नगरी । आव० २६६ । इहलोके कायोत्सर्गफलदृष्टान्ते पुरी । आव० ७६६ । जिनदत्तस्य पुत्रीसुभद्रोदाहरणे नगरी । दश० ४६ । कुणिकराज्ञो राजधानी । भग० ३१६ । अङ्गेषु आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । नगरीविशेषः । औप० १ । प्रज्ञा० ५५ । अन्त० १ । कोणिकराजधानी । ज्ञाता० १ । अन्त० २५ । ज्ञात० २५२ । भग० ४८४, ६१८, ६२० । धन्नसार्थवाहवास्तव्या नगरी । ज्ञाता० १६३ । चम्पा । ज्ञाता० १२५, १३२ । माकन्दीसार्थवाहवास्तव्या नगरी । ज्ञाता० १५६ । सागरदत्तसार्थवाहवास्तव्या नगरी । ज्ञाता० २००, २०५ । कुणिकराजधानी । निरय० ४, १६ । नगरीविशेषः । उपा० १६ । जितशत्रुराज्ञो नगरी । उपा० १६ । सुभद्रावास्तव्या नगरी । व्य० प्र० ११७ अ । अनंगसेनसुवर्णकारवास्तव्यं नगरम् । बृ० तृ० १०८ आ । अनङ्गसेनवास्तव्यं नगरम् । नि० चू० प्र० ३४५ अ । खंधगरायरायहाणी । नि० चू० तृ० ४४ अ । योगसंग्रहे आपस्तु दृढधर्मदृष्टान्ते नगरी । आव० ६६७ । सुनन्दवणिग्वास्तव्या नगरी । उत्त० १२३ । दधिवाहनराजधानी । उत्त० ३००, ३०२ । शय्यम्भवसूरिविहारभूमिः । दश० ११ । रविविषयप्रश्ननिर्णये नगरी । भग० २०६ । लोभपिण्डदृष्टान्ते पुरी । पिण्ड० १३३, १३६ । कोणिकराजधानी । विपा० ३३ । प्रश्न० १ । भग० ६७५ ।

चंपानयरि- । ज्ञाता० २०८ ।

चंपाप्रविभक्ति-त्रयोदशनाट्यभेदः । जं० प्र० ४१७ ।

चंपे-चम्पकः-वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३६१ ।

चंमं-चर्ममयं तूलिकाद्युपकरणम् । बृ० द्वि० १०० आ ।

चंमतियं-आस्तरप्रावरणोपवेशनोपयोगिकृत्तितूलिकावर्धरूपं वा । बृ० द्वि० २५३ अ ।

च-प्रकृतमनुकर्षति । उत्त० १६७ । प्रस्तावनायाम् । विशे० १०३६ । वा । उत्त० २०६ । जं० प्र० ४५६ । चशब्दश्चेदित्येतस्यार्थे वर्त्तते । भग० ४६८ । उक्तसमुच्चयार्थः । आव० ८ । एवकारार्थः । आव० १० । चः-आधिक्यार्थे । आचा० ५५ । पूरणार्थः । आव० १२ । च शब्दः-समाहारेतरेतरयोगसमुच्चयान्वाचयावधारणपादपूरणाधिकवचनादिष्विति । ठाणा० ४६५ । अपिशब्दार्थः । उत्त० ४७६ । आभिनिबोधिकश्रुतज्ञानयोस्तुल्यकक्षतोद्भावनार्थः । आव० ७ पृथक् पृथक् अवग्रहादिस्वरूपस्वातन्त्र्यप्रदर्शनार्थः । आव० ६ । इवादेशः । जं० प्र० २०० । अधिकवचनः । आचा० १०२ ।

चइओ- । त्याजितः । ओघ० ६० ।

चइत्ता-त्यक्त्वा, अथवा च्युत्वा, कृत्वा । भग० १२६ । चित्वा कृत्वेति । औप० १०१ ।

चइय-च्यावितः-स्वत एवायुष्कक्षयेण भ्रंशितः । भग०२६३। त्याजिता-भोज्यद्रव्यात् पृथक्कारिता दायकेन । भग० २६३ । च्यावितः-ताभ्य एवायुःक्षयेण भ्रंशितः । त्याजितः-देयद्रव्यात्पृथक्कारितो दायकेन । प्रश्न० १०८ ।

चइया-त्याजिताः । ओघ० १५८ ।

चउक्क-चतुष्कं-रथ्याचतुष्कमेलकम् । औप० ४ । रथ्याचतुष्कमीलकः । औप० ५७ । आव० १३६, २०७ । रथ्याचतुष्कमीलनस्थानम् । भग० १३७, २००, २३८ । प्रश्न० ५८ । चतुष्पथयुक्तम् । ज्ञाता० २८ । जीवा० २५८ । प्रभूतगृहाश्रयश्चतुरस्रो भूभागः चतुष्पथसमागमो वा चतुष्कम् । अनु० १५६ । यत्र रथ्याचतुष्टयम् । ठाणा० २६४ ।

चउक्का- । चक्रे । नि० चू० तृ० १२१ आ ।

चउगर- । भग० ४६४ ।

चउचरणगवी-चतुश्चरणगौः । आव० १०३ । चतुर्णां चरणानां सम्बन्धिनी सा गौः । विशे० ६३५ ।

चउजमलपय-चतुर्यमलपदं-द्वात्रिंशदङ्कस्थानलक्षणं, चतुर्विंशतेरङ्कस्थानानामुपरितनाङ्काष्टकलक्षणं वा । अनु०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०६ ।

चउजायग–चतुर्जातकं– त्वगेलाकेसराख्यगन्धद्रव्यमरिचात्मकम् । जीवा० ३५५ ।

चउत्थं–चत्वारि भक्तानि यत्र त्यज्यन्ते तच्चतुर्थं, इयं चोपवासस्य संज्ञा । ज्ञाता० ७३ । चतुर्थं भक्तं यावद् भक्तं त्यज्यते यत्र तच्चतुर्थ, उपवासस्य संज्ञा । भग० १२५ । मेहुणं । नि० चू० द्वि० १६६ आ ।

चउत्थगं–चतुर्थं–एकमुपवासम् । ओघ० १३६ ।

चउत्थभत्त–चतुर्थभक्तं–केवलं एकं पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थं पारणकदिने भक्तं-भोजनं परिहरति यत्र तपसि तत् चतुर्थभक्तम् । ठाणा० १४७ । चतुर्थभक्तं एकदिनान्तरितः । जं० प्र० १३२ ।

चउत्थभत्तस्स–चतुर्थभक्ते एकस्मिन् दिवसेऽतिक्रान्ते इत्यर्थः। प्रज्ञा० ५०५ ।

चउदसभत्तं–चतुर्दशभक्तं–षड्रात्रोपवासः। आव० १६८।

चउदसरूवी–चतुर्दशोपकरणधारी । बृ० द्वि० २३७ आ ।

चउदिसि–चतुर्दिक–चतस्रो दिशः समाहृताः । जीवा० २२२ ।

चउपुरिसपविभत्तगती–चतुःपुरुषप्रविभक्तगतीः–चतुर्द्धा पुरुषाणां प्रविभक्तगतिः, विहायोगतेश्चतुर्दशो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।

चउप्पडोआरे–चतुर्षु–पूर्वापरविदेहदेवकुरूत्तरकुरुरूपेषु क्षेत्रविशेषेषु प्रत्यवतारः–समवतारः, चतुर्विधस्य पर्यायो वा । जं० प्र० ३१२ ।

चउप्पडोयारे–चतुर्षु भेदलक्षणालम्बनानुप्रेक्षालक्षणेषु पदार्थेषु प्रत्यवतारः–समवतारो विचारणीयत्वेन यस्य तच्चतुष्प्रत्यवतारः । भग० ६२६ ।

चउप्पय–चतुष्पदं–नवमं करणम् । जं० प्र० ४६३ । चत्वारि पदानि येषां ते चतुष्पदाः–अश्वादयः । प्रज्ञा० ४४ । जीवा० ३८ ।

चउप्पाइय–चतुष्पादिकः–भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः । जीवा० ४० ।

चउप्फलं–कप्पं । नि० चू० प्र० १६१ आ ।

चउप्फला–पुट । नि० चू० प्र० १८० आ ।

चउप्फाला– । ज्ञाता० ५३ ।

चउफास–चतुःस्पर्शं–सूक्ष्मपरिणामम् । भग० ६६ ।

चउब्भाइय–घटकस्य–रसमानविशेषस्य चतुर्थभागमात्रो मानविशेषः । भग० ३१३ ।

चउब्भागपलिओवमं–चतुर्भागमात्रं पल्योपमं चतुर्भागपल्योपमम् । जं० प्र० ५३६ ।

चउब्भागमंडलं–चतुर्भागमण्डलम् । सूर्य० २१, २७ ।

चउभाइया–चतुष्षष्ठिपलमाना चतुर्भागिका । अनु०१५२।

चउभागपल्लोवमं–चतुर्भागः पल्योपमस्य चतुर्भागपल्योपमम् । जीवा० ३८५ ।

चउमासिआ–चतुर्थी भिक्षुप्रतिमा । सम० २१ ।

चउमुहं–चतुर्मुखम् । आव० १३६ ।

चउम्मुह–चतुर्मुखं–देवकुलादि । ठाणा० २६४ । भग० २३८ । चतुर्मुखदेवकुलिकादि । अनु० १५६ । तथाविधदेवकुलकादि । औप० ५७ । प्रश्न० ५८ । चतुर्द्वारं देवकुलादि । भग० २३८, औप० ४ । यस्माच्चतसृष्वपि दिक्षु पन्थानो निस्सरन्ति । जीवा० २५८ । चतुर्मुखम् । भग० २०० ।

चउरंगं–अश्वा गौः सगड पाइक्का । नि० चू० प्र० ८६ आ ।

चउरंगिज्जं–चतुरङ्गीयं–उत्तराध्ययनेषु तृतीयमध्ययनम् । उत्त० ६ ।

चउरंतं–चतुरन्तं–चतुर्विभागम् । प्रश्न० ६३ । चतुरन्तं–दानादिभेदेन चतुर्विभागं, चतसृणां वा नरनारकादिगतीनामन्तकारित्वाच्चतुरन्तम् । भग० ७ ।

चउरंतगमाइया–चतुरन्तगमादिका,शारिपट्टादिका। आव० ५८१ ।

चउरंतचक्कवट्टी–चतुरन्तचक्रवर्ती-त्रिसमुद्रहिमवत्परिच्छिन्नेषु चतुर्ष्वन्तेषु चक्रेण वर्त्तितुं शीलं यस्यासौ । जीवा० २७८ ।

चउरंस–चतुरस्रं–चतुष्कोणम् । जीवा० २७६ । चतुरस्रः । भग० ८५८ । चतुरस्रः–संस्थानविशेषः । प्रज्ञा० २४२ ।

चउरंससंठाणपरिणया–चतुरस्रसंस्थानपरिणताः । प्रज्ञा० ११ ।

चउर–चतुरः–दक्षः । ठाणा० ३६७ । अनु० १३३ ।

चउरग–चकोरकः–पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउल- । भग० ८०३ ।

चउवग्गो-णामवत्थव्वा संजयासंजतीओ वि आगंतुगा संजता संजतीओ य । नि० चू० द्वि० १५५ आ ।

चउवीसइत्थय-चतुर्विंशतिस्तवः-आवश्यकसूत्रे द्वितीयमध्ययनम् । आव० ४९९ ।

चउसट्ठिआ-चतुष्पलप्रमाणा-चतुषष्ठिका । अनु० १५१ ।

चउसट्ठिकला-चतुःषष्ठिकला । आव० ५५ ।

चउसट्ठिगुणा-चतुःषष्ठिगुणा । उत्त० ४८४ ।

चउसट्ठिया-चतुषष्ठिका-पलं मानविशेषः, तस्यैव चतुषष्ठितमांशस्वभावापलमिति तात्पर्यम् । भग० ३१३ ।

चउसरणगमण-अर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणकरणम्। चउ० ।

चउसाले- । नि० चू० प्र० २६० अ ।

चउसालयं-चतुःशालकम् । जीवा० २६६ ।

चउसुवग्गेसु-संजतिसंजयसावगसाविगाण य एते । नि० चू० प्र० २२७ आ ।

चओ-चयः-स्तोकतरा वृद्धिः । पिण्ड० ४१ । पिण्डनेत्यर्थः । नि० चू० प्र० २० आ ।

चओवचइयं-चयापचयिकं-वृद्धिहन्यात्मकम् । आचा०६६ ।

चकार-छकार-जकार-झकार-ञकार-प्रविभक्तिनाम-षोडशो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

चक्क-चक्रं-सुदर्शनम् । उत्त० ३५० । अरघट्टयन्त्रिकाचक्राणि । ज्ञाता० २ । रथाङ्गम् । सूर्य० ६९ । रथाङ्गं अरघट्टाङ्गं वा । औप० ३ । चक्रम् । आव० ८२९ । ओघ० १३ । प्रहरणविशेषः । आव० ४८७ । जीवा० ११७ । प्रहरणम् । आव० ५८५ । रायचिंधसहियं सचक्कं । नि० चू० प्र० ३५८ अ । चक्कं-तिलयन्त्रम् । बृ० द्वि० १९९ आ । तिलपीडनयन्त्रम् । बृ० द्वि० २२१ अ । तिलपीलगं । नि० चू० द्वि० ६१ आ । चक्रः-रत्नभूतप्रहणविशेषः । ठाणा० ९९ । चक्रः-वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० २०० । चक्रं-धर्मचक्रम् । ओघ० ६० । सम० ६१ । चक्रं-आज्ञा । व्य० द्वि० २२८ अ । चक्रं-अरम् । प्रश्न० ४८ ।

चक्कग-चक्रकं-भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६९ । चक्रकं-चक्राकारः-शिरोभूषणविशेषः । जं० प्र० १०६ ।

चक्कझया-चक्रालेखरूपचिह्नोपेताः ध्वजाः । जं०प्र० ६० ।

चक्कद्धचक्कवालसंठिया-चक्रार्द्धचक्रवालसंस्थिताः । सूर्य० ३६ ।

चक्कद्धया-चक्रध्वजाः-चक्रालेखरूपचिह्नोपेता ध्वजाः । जीवा० २१५ ।

चक्कपुरं-चक्रपुरं-कुन्थुजिनस्य प्रथमचारणकंस्थानम् । आव० १४६ । पुरुषपुण्डरीकपुरम् । आव० १६२ ।

चक्कपुरा-चक्रपुरा-राजधानी । जं० प्र० ३५७ ।

चक्कपुराओ- । ठाणा० ८० ।

चक्कमंतो-चङ्क्रम्यमाणः । आव० ४१२ ।

चक्कमज्झभूमी-चक्रमध्यभूमिः । आव० ४१७ ।

चक्कयरो-चक्रकरः । आव० ६१६ ।

चक्करयणे-चक्रवर्तेरेकेन्द्रियं प्रथमं रत्नम् । ठाणा० ३९८ ।

चक्कला-पादानामधःप्रदेशः । जं० प्र० ५५ । जीवा० २१० ।

चक्कलिकाभिन्नं-तिर्यक्बृहत्कत्तलिकाकृतम् । बृ० प्र० १७५ अ ।

चक्कलिय-चक्रम् । नि० चू० द्वि० १२४ आ ।

चक्कवट्टिविजय-पुष्कलावर्त्तो सप्तमो विजयः स एव चक्रवर्त्तिविजेतव्यत्वेन चक्रवर्तिविजयः । जं० प्र० ३४९ ।

चक्कवट्टी-ऋद्धिप्राप्तार्यभेदः । प्रज्ञा० ५५ । चक्रवर्त्तिनः चतुर्दशरत्नाधिपाः, षट्खण्डभरतेश्वराः । आव० ४८ । चक्रेण रत्नभूतप्रहरणविशेषेण वर्त्तितुं शीलं ययोस्तौ चक्रवर्त्तिनः । ठाणा० ६९ ।

चक्कवाग-चक्रवाकः-रथाङ्गः । प्रश्न० ८ । लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।

चक्कवालं-चक्रवालं विशेषस्य सामान्येऽनुप्रवेशात् । समचक्रवालम् । जं० प्र० ३६७ । मण्डलम् । प्रज्ञा० ६०० । सूर्य० ६९ । जीवा० १७८ । चक्रवालं-सर्वं परिमण्डलरूपम् । जीवा० २६६ । चक्रवालं-सर्वतः परिमण्डलरूपम् । जं० प्र० १०२ । चक्रवालः-नगरविशेषः । आव० १४४ । चक्रवालं-चक्रम् । भग० १८८ । चक्रम् । आउ० । चक्रवालं-जलपरिमाण्डल्यम् । सम० १२७ ।

चक्कवालविक्खंभ-चक्रवालविष्कम्भः-वृत्तव्यासः, इदं च प्रमाणयोजनमवसेयम् । सम० ६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्कवालसामायारि–सामाचारीविशेषः । नि० चू० प्र० २६३ आ । नि० चू० द्वि० ३९ आ ।

चक्कवाला–चक्रवाला–वलयाकृतिः । ठाणा० ४०७ । मण्डलबन्धेन स्थिताः । ओघ० ५५ । चक्रवालं–मण्डलं ततश्च यया मण्डलेन परिभ्रम्य परमाण्वादिरुत्पद्यते सा चक्रवाला । भग० ८६६ ।

चक्कवालानि–पृष्ठस्योपरिमण्डललक्षणानि । व्य० प्र० २३ अ ।

चक्कवूह–चक्रव्यूहः–चक्राकारः सैन्यविन्यासविशेषः । प्रश्न० ४७ । ज्ञाता० ३८ ।

चक्काइट्ठगो–चक्राविद्धः । आव० २१७ ।

चक्कागं–चक्राकं–चक्राकारं–एकान्तेन समम् । प्रज्ञा० ३६ । चक्राकारः सम इत्यर्थः । बृ० प्र० १६१ आ । चक्रकं–चक्राकारः–समच्छेदो मूलकन्दादिनां भङ्गः । आचा० ५९ । पक्षिविशेषः । ज्ञाता० २३१ । लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ । जस्स चक्कागारा भंगो समोत्ति वुत्तं भवति । नि० चू० द्वि० १४१ अ ।

चक्कारबद्ध–चक्रारबद्धं गन्त्र्यादि । दश० १९३ ।

चक्काह– । सम० १५२ ।

चक्कियंति–सक्किज्जति । नि० चू० द्वि० ७९ अ ।

चक्किया–चाक्रिकाः-चक्रप्रहरणाः–कुम्भकारतैलिकादयो वा । औप० ७३ । चक्रिकाः–चक्रप्रहरणाः कुम्भकारादयो वा भग० ४८१ । कुम्भकारतैलिकादयः । ज्ञाता० ५९ । शक्नुयात् । भग० ३२५ ।

चक्कलेंडा–चक्री लण्डिका–द्विमुखसर्पः । आव० ३५७ ।

चक्खल्लाउडुओ–दतिको येन तीर्यते । ओघ० ३३ ।

चक्खिदिअत्थोवगहे–चक्षुषः प्रथममेव स्वरूपद्रव्यगुणक्रियाकल्पनातीतमनिर्देश्यसामान्यमात्रस्वरूपार्थावग्रहणं चक्षुरर्थावग्रहः । प्रज्ञा० ३११ ।

चक्खिदिए–चक्षुरिन्द्रियम् । प्रज्ञा० २९३ ।

चक्खिय–दृष्टा । आव० ४१७ ।

चक्खु–चक्षुः विशिष्ट–आत्मधर्मः तत्त्वावबोधनिबन्धनः श्रद्धास्वभावः । राज० १०९ । चक्षुःशब्दोऽत्र दर्शनपर्यायः । आचा० ३०२ । चक्षुः–ज्ञानम् । आचा० २०८ । चक्षुरिव चक्षुः–श्रुतज्ञानम् । सम० ४ । लोचनम् । भग० ७३९ । चक्षुः–श्रुतज्ञानं शुभाशुभार्थविभागोपदर्शकत्वात् । भग० ७ ।

चक्खुकंता–पञ्चमकुलकरस्य भार्यानाम । सम० २५० । आव० ११२ । ठाणा० ३९८ । चक्षुःकान्तः–कुण्डलसमुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

चक्खुदंसणं–सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि चक्षुषा दर्शनं–रूपसामान्यपरिच्छेदः चक्षुर्दर्शनम् । जीवा० १८ ।

चक्खुदंसणि–चतुर्दशनी–चक्षुदर्शनलब्धिमान् । अनु० २२० ।

चक्खुदए–चक्षुर्दयः–चक्षुरिव चक्षुः–श्रुतज्ञानं शुभाशुभार्थविभागकारित्वात्तद्दयते इति चक्षुर्दयः । सम० ४ ।

चक्खुदये–चक्षुरिव चक्षुः श्रुतज्ञानं दयत इति चक्षुर्दयः । भग० ७ ।

चक्खुदो–चक्षुरिव चक्षुः–विशिष्ट आत्मधर्मस्तत्त्वावबोधनिबन्धनं श्रद्धास्वभावः तद् ददातीति चक्षुदः । जीवा० २५५ ।

चक्खुप्फास–चक्षुस्पर्शः–दृष्टिस्पर्शः । भग० ७७ । चक्षुःस्पर्श–स्थूलपरिणतिमत्पुद्गलद्रव्यम् । उत्त० १९६ । चक्षुःस्पर्शः–चक्षुर्विषयः । आचा० ३० । जं० प्र० ४४१ । दृष्टिपातः । भग० १३८ । दर्शनम् । ज्ञाता० ४६ । औप० ६० । सूर्य० ६१ । चक्षुःस्पर्शो दृग्गोचरे चक्षुःस्पर्शगो वा दृग्गोचरगतः । उत्त० ५९ ।

चक्खुभीया–चक्षुशब्दोऽत्र दर्शनपर्यायः,दर्शनादेव भीता दर्शनभीताः । आचा० ३०२ ।

चक्खुम–चक्षुष्मान्–द्वितीयः कुलकरनाम । सम० १५० । जं० प्र० १३२ । ठाणा० ३९८ । आव० १११ ।

चक्खुमेंटा–एक्कं अंत्थि उम्मल्लेति बितिरं णिमिल्लेति । नि० चू० तृ० १२४ आ ।

चक्खुल्लोयणलेसं– । आचा० ४२३ ।

चक्खुविक्खेवो–चक्षुर्विक्षेपः–चक्षुर्भ्रमः । भग० १७५ ।

चक्खुसुभो–चक्षुःशुभः–कुण्डलसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६८ ।

चक्खुसे–चाक्षुषः चक्षुरिन्द्रियग्राह्यः । दश० २०२ ।

चक्खुहरं–चक्षुर्हरति आत्मवशं नयति विशिष्टरूपातिशयकलितत्वाच्चक्षुर्हरम् यत्तत् । जीवा० २५३ । चक्षुर्हरं, चक्षुर्द्धर–चक्षूरोधकम् । जं० प्र० २७५ । चक्षुर्हरं–लोचनानन्ददायकत्वात्, चक्षू रोधकं वा घनत्वात् । भग०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७७ ।
चक्खू–चक्षुः-विशिष्टआत्मधर्मस्तत्त्वावबोधनं श्रद्धास्वभावः । जीवा० २५५ ।
चक्रवर्त्तिता– । ठाणा० ३३२ ।
चक्रवाल–प्रत्युपेक्षणादि नित्यकर्म्म । बृ० प्र० २२१ अ ।
चक्रवालसामाचारी–सामाचारीविशेषः । आव० ८३३ । प्रतिदिनक्रियाकलापरूपा । बृ० प्र० २०७ आ ।
चक्रार्द्धचक्रवालं- चतुर्थनाट्यविशेषः । जं० प्र० ४१५ ।
चक्षुर्म्मेलः–यदेकं चक्षुरुन्मीलयति । व्य०प्र० १०१ आ ।
चच्चपुडा–चच्चपुटाः–आघातविशेषाः । जं० प्र० २३६ ।
चच्चरं–चत्वरं–सीमाचतुष्कम् । उत्त० १०६ । त्रिपथभेदि चत्वरम् । ज्ञाता० २८ । स्थानविशेषः । विपा० ५७ । आव० १३६, ४०२ । चत्वरं–बहुतररथ्यामीलनस्थानम् । भग० १३७ । चत्वरम् । भग० २००, २३८ । चतुष्पथसमागमः, षट्पथसमागमो वा चत्वरम् । अनु० १५६ । रथ्याष्टकमध्यम् । ठाणा० २६४ ।
चच्चरसिवंतरितो–चत्वरशिवान्तरितः । उत्त० २२१ ।
चच्चागा–उपरागाः । जं० प्र० ४६ । चर्चाकाः–चन्दनकृतोपरागाः । राज० ६४ ।
चच्चिअ–चर्चितं–समण्डनकृतम् । जं० प्र० २७८ ।
चटकसूत्रं–कोशकारभवं सूत्रम् । अनु० ३४ ।
चटुल–चन्टुलः–विविधवस्तुषु क्षणे क्षणे आकाङ्क्षादिप्रवृत्तेः । प्रश्न० ३० ।
चटुलकं– । सूत्र० १२५ ।
चटुली:–पर्यन्तज्वलिततृणपूलिका । नंदी० ८४ ।
चट्टवेसो–विप्रवेषः–चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्तः । आव० ३६६ ।
चट्टशाला– । बृ० प्र० ६३ अ ।
चट्टा–जूअकारादिधुत्ता । नि० चू० प्र० २०७ आ ।
चट्टुक– । आचा० ३५७ ।
चट्टो–विप्रः । आव० ४०० ।
चडंतो–आरुहन् । नि० चू० द्वि० १३३ आ ।
चडकर–चटकरप्रधानः–विस्तरवान् । विपा० ३६ । चटकरं–वृन्दम् । जं० प्र० १४५ ।
चडगर–चटकरं–आडम्बरः । बृ० द्वि० १३० अ । विस्तारवृन्दं (देशीशब्दः) । जं० प्र० १६६ । विस्तारवन्तः । जं० प्र० २०० । चटकरप्रधानं–विच्छर्द्दप्रधानम् । ज्ञाता० ३६ । समुदायः । ज्ञाता० २०० । चटकरः–विस्तारवान् । भग० ३१६ ।
चडगरत्तण–चडकरत्वं–अतिप्रपञ्चकथनम् । दश० ११५ ।
चडत्ति–झटिति । आव० ३५७ ।
चडप्फडंत–कम्पमानम् । उत्त० ५२२ ।
चडप्फड–प्रलपसि । नि० चू० प्र० १३२ अ ।
चडप्फाडेंतो–करपादौ भूमौ आस्फोटयन् । नि० चू० द्वि० २६ अ ।
चडयपट्टाति– । नि० चू० प्र० १२६ अ ।
चडवेला–चपेटाः । प्रश्न० ५७ ।
चडावणा–आरोपणा । ठाणा० ३२५ । जं दव्वादि पुरिसविभागेण दाणं सा आरोवणा । नि० चू० तृ० ८५ अ ।
चडाविओ–आरोहितः । आव० ४३४ ।
चडाविज्जइ–चटाप्यते । ओघ० ८४ ।
चडाविया–चटापितः । आव० ५०६ ।
चडुगे–अपवृत्य । व्य० द्वि० ३०२ आ ।
चण–चणकं–चणकक्षेत्रं, योगसंग्रहे शिक्षा दृष्टान्ते यद् वास्तुपाठकैश्चणकाभिधनगरं निवेशितम् । अपरनाम क्षितिप्रतिष्ठितं, वृषभपुरं, कुशाग्रपुरं, राजगृहं च । आव० ६७० ।
चणगपुरं–चणकपुरं–क्षितिप्रतिष्ठितस्य द्वितीयं नाम । उत्त० १०५ ।
चणगा–चणकाः–धान्यविशेषाः । अनु० १६२ ।
चणगो–चणकाः, पारिणामिकीबुद्धौ गोल्लविषये चणकग्रामे ब्राह्मणः, श्रावकः । आव० ४३३ ।
चणयग्गामो–चणकग्रामः, गोल्लविषये ग्र ः आव० ४३३ ।
चतुरंगः–सेना । आव० ७६७ ।
चतुरय–चतुरकाः–सभाविशेषाः, ग्रामप्रसिद्धाः । सम० १३८ ।
चतुर्विधशब्दः–चतुष्प्रत्ययवतारम् । भग० ६२६ ।
चतुष्कपूरणं– । प्रश्न० १२७ ।
चतुष्कलपसेकसिक्तः–चत्वारः कल्पाः सेकविषया रसवती-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्राभिज्ञेभ्यो भावनीयाः । जीवा० २६८ ।

चतुःकल्याणकं–तत्र चत्वारि चतुर्थभक्तानि चत्वार्याचाम्लानि चत्वारि एकस्थानानि चत्वारि पूर्वार्द्धानि चत्वारि निर्वृतिकानि च भवन्ति । बृ० प्र० १२८ अ ।

चतुःषष्टीपदवास्तुन्यासः– । जं० प्र० २०८ ।

चत्त–जेण सरीरविभूसादिणि निमित्तं हत्थपादपक्खालगादीहिं परिकम्म वदंति तं । दश० चू० १५० । त्यक्तं–निर्दयतया दत्तम् । बृ० द्वि० २०० आ । च्युतः–जीववत् क्रियातो भ्रष्टः । २९३ ।

चत्तदेह– त्यक्तदेहः– परित्यक्तजीवसंसर्गजनिताहारप्रभवोपचयः । भग० २९३ । परित्यक्तजीवसंसर्गसमुत्थशक्तिजनिताहारादिपरिणामप्रभवोपचयः । प्रश्न० १०८,१५५ ।

चत्तरं–चत्वरं–बहुरथ्यापातस्थानम् । जीवा० २५८ । औप० ४ । यत्र बहवो मार्गा मिलन्ति । औप० ५७ । अनेकरथ्यापतनस्थानम् । प्रश्न० ५८ ।

चत्ता–स्वयमेव दायकेन त्यक्ता–देयद्रव्यात्पृथक्कृताः । प्रश्न० १०८ । स्वयमेव दायकेन त्यक्ता भक्ष्यद्रव्यात्पृथक्कृता । भग० २९३ ।

चनिकः–मतविशेषः । बृ० प्र० १७३ आ ।

चनिकोपासकः– । आचा० १४६ ।

चन्द्रः–रत्नविशेषः । जीवा० १९१ ।

चन्द्रकान्तः–चन्द्रप्रभः । जीवा० २३४ ।

चन्द्रकान्ताद्याः–मणयः । सम० १३९ । ठाणा० २६३ ।

चन्द्रगुप्तः–चाणक्यस्थापितो राजा । व्य०प्र० १४० आ । नृपतिर्नाम । जं० प्र० २६३ । ठाणा० २८१ ।

चन्द्रगोपकः– । जं० प्र० ४२३ ।

चन्द्रनखा–खरदूषणपत्नी । प्रश्न० ८७ ।

चन्द्रप्रतिमं–प्रकीर्णतपोविशेषः । उत्त० ६०१ ।

चन्द्रप्रभः–मणिविशेषः । जीवा० २३ ।

चन्द्रभागा–नदीविशेषः । ठाणा० ४७७ ।

चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति–चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति–सूर्यमण्डलप्रविभक्ति– नागमण्डलप्रविभक्ति–जक्षमण्डलप्रविभक्ति–भूतमण्डलप्रविभक्त्यभिनयात्मकामण्डलप्रविभक्तिनामा दशमो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।

चन्द्रमासः–मुहूर्त्तपरिमाणमष्टौ शतानि पञ्चाशीत्यधिकानि । सूर्य० ११ ।

चन्द्रमुखा–मूलद्वारविवरणे धनदत्तपत्नी । पिण्ड १४४ ।

चन्द्ररुद्र–जो पुण खरफरुसं भणंतो आयरिओ । नि० चू० तृ० १३५ अ ।

चन्द्रशेखरः– । जं० प्र० ३२७ ।

चन्द्रहासं–परमासवविशेषः । जीवा० १९८ ।

चन्द्रागमनप्रविभक्ति–चन्द्रागमन–सूर्यागमन–प्रविभक्त्यभिनयात्मक–आगमनागमनप्रविभक्तिनामा सप्तमो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।

चन्द्रादि–गच्छविशेषः । प्रश्न० १२६ ।

चन्द्रानना–आज्ञाऽऽराधनखण्डनादोषदृष्टान्ते पुरीविशेषः । पिण्ड० ७६ । मूलद्वारविवरणे धनदत्तनगरी । पिण्ड० १४४ ।

चन्द्रावतंसः–आज्ञाराधनखण्डनादोषदृष्टान्ते राजा । पिण्ड० ७६ ।

चन्द्रावरणप्रविभक्ति–चन्द्रावरणप्रविभक्ति–सूर्यावरणप्रविभक्त्यभिनयात्मक–आवरणावरणप्रविभक्तिनामा अष्टमो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।

चन्द्रावलिप्रविभक्ति–पञ्चमो नाट्यभेदः । जं०प्र० ४१६ । चन्द्रावलिप्रविभक्ति–सूर्यावलिप्रविभक्ति–वलयावलिप्रविभक्ति–हंसावलिप्रविभक्ति–तारावलिप्रविभक्ति-मुक्तावलिप्रविभक्ति–रत्नावलिप्रविभक्ति–पुष्पावलिप्रविभक्तिनामा पञ्चमो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।

चन्द्रास्तमयनप्रविभक्ति-चन्द्रास्तमयनप्रविभक्ति–सूर्यास्तमयनप्रविभक्त्यभिनयात्मकः-अस्तमयनास्तमयनप्रविभक्तिनामा नवमो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।

चन्द्रिका–आधाकर्मपरिभोगे गुणचन्द्रश्रेष्ठिनः स्त्री । पिण्ड० ७४ ।

चन्द्रोद्गमप्रविभक्ति–चन्द्रोद्गमप्रविभक्ति-सूर्योद्गमप्रविभक्त्यभिनयात्मकः–उद्गमनोद्गमनप्रविभक्तिनामा षष्ठो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।

चन्द्रोद्योतः–द्वीपः समुद्रोऽपि च । प्रज्ञा० ३०७ ।

चपलकाः–आलिसन्दकाः । जं० प्र० १२४ ।

चपलितः–भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।

चप्पडए–चप्पलकाः–चतुष्पलाः । बृ० तृ० २०३ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चप्पडग-चप्पडकः-काष्ठयन्त्रविशेषः। प्रश्न० ५७।
चप्पाचप्पं- । नि० चू० तृ० ५० आ।
चप्पाचप्पि- । नि० चू० तृ० ५५ अ।
चप्पुटिका-अप्सरो निपातो नाम चप्पुटिका। प्रज्ञा०६००। जीवा० १०६। अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुलिकृतः आस्फोटः। भग० २६६।
चप्पुडिया-चप्पुटिका। आव० ५३६। अप्सरो निपातो-चप्पुटिका। जीवा० ३६६। चप्पुटिका अङ्गुलीद्वयोत्थः शब्दः। उत्त० १०८।
चप्फलिगाइय-कौतूहलिकं-आशीर्वादः। आव० ४३२।
चप्रलापः-नकुलः। उत्त० ६६६।
चमक्कं-चमत्कारं। ग०।
चमढण-प्रवचनोक्तैर्वचनैः खिसनं करोति। ओघ० ४३। निर्भर्त्सनम्। बृ० द्वि० २१५ आ।
चमढने-मर्दने। ओघ० १२६।
चमढिउं-मर्दित्वा। आव० ४०५।
चमढियं-विनाशितम्। व्य० प्र० १८४ अ।
चमढेत्ता-तिरस्कृत्य। आव० २०४।
चमढ्यंते-कदर्थ्यन्ते। ओघ० ६६।
चमतिगं- । नि० चू० प्र० १८० अ।
चमर-द्विखुरविशेषः। प्रज्ञा० ४५। चमरः-प्रथमो दक्षिणनिकायेन्द्रः। भग० १५७। पञ्चमतीर्थंकरस्य प्रथमः शिष्यः। सम० १५२। दक्षिणात्यासुरकुमाराणामधिपतिः। ठाणा० ८४। जीवा० १७०। प्रज्ञा० ६४। ज्ञाता० १६१।
चमरचञ्चा-देवस्थानविशेषः। भग० १४३। चमरेन्द्रराजधानी। सम० ३२। जं० प्र० ३३६। ठाणा० ५२४। चमरचञ्चा-चमरेन्द्रराजधानी। भग० १७१। जं० प्र० ४०७। भग० ६१७। दाक्षिणात्यस्यासुरनिकायनायकस्य चञ्चा-चञ्चाख्यानगरी चमरचञ्चा। ठाणा० ३७६।
चमरा-चमरा-आरण्यगौः। प्रश्न० ७। आटव्यो गावः। जं० प्र० ४३।
चमरी-चमरी-द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः। जीवा० ३८। गोविशेषः। प्रश्न० ७६।
चमरुप्पातो-चमरस्य-असुरकुमारराजस्योत्पतनं-उर्ध्वगमनं चमरोत्पातः। ठाणां० ५२४।
चमसो-चमसः-दर्विका। औप० ६४।
चम्म-चर्म-अङ्गुष्ठाङ्गुल्योराच्छादनरूपम्। जीवा० २६०। राज० ११३। पुद्गलविशेषः। आव ८५४। सिंहादीनां चर्माणि। दश० १६३। स्फुरकः। भग० १६४। त्वक्। प्रश्न० ८। चर्म-सेवालः। विशे० ५१७।
चम्मए-चर्मकृति-छवडिया। ओघ० २१७।
चम्मकडे-चर्मकटः-कटस्य तृतीयभेदः। आव० २८६। वर्द्धव्यूतमञ्चकादिः। ठाणा० २७३।
चम्मकारा-पदकारा। नि० चू० द्वि० ४३ आ ८।
चम्मकिड्डुं-चर्म्मव्यूतं-खट्वादिकम्। भग० ६२८।
चम्मकोसए-चर्मकोशकः। ओघ० २१७। चर्मकोशः-पाष्णित्रं खल्लकादिः। आचा० ३७०।
चम्मखंडं-चर्मखण्डम्। नि० चू० प्र० २२७ आ।
चम्मखंडिअ-चर्मपरिधानाश्चर्मखण्डिकाः, अथवा चर्ममयं सर्वमेवोपकरणं येषां ते चर्मखण्डिकाः। अनु० २५।
चम्मखंडिए-चर्मखण्डकः-चर्मपरिधानः चर्मोपकरण इति। ज्ञाता० १६५।
चम्मचडिया-चर्मचटकाः-चर्मपक्षिणः। उत्त० ६६६।
चम्मच्छेदन-चर्मच्छेदः-वर्द्धपट्टिका, चर्मच्छेदनकं पिप्पलकादि। ओघ० २१८।
चम्मज्झामे-चर्मध्यामं-चर्म च तद्ध्यामं च-अग्निना ध्यामलीकृतं-आपादितपर्यायान्तरम्। भग० २१३।
चम्मट्ठिल-चर्मास्थिलः-चर्मचटकः। प्रश्न० ८।
चम्मपक्खी-चर्मात्मकौ पक्षौ चर्मपक्षौ तौ विद्येते येषां ते चर्मपक्षिणः। प्रज्ञा० ४६। चर्मरुपौ पक्षौ विद्येते यस्य स चर्मपक्षी। जीवा० ४१।
चम्मपट्टो-चर्मपट्टः-वर्द्धः। विपा० ७१।
चम्मपणयं-चर्मपञ्चकं-अजे१ डक२गो३महिष४मृगा५जिनलक्षणम्। आव० ६५२।
चम्मपाय-चर्मपात्रं-स्फुरकः खड्गकोशको वा। भग० १६१।
चम्मयरु-श्रेणिविशेषः। जं० प्र० १६४।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चम्मरयणे-चक्रवर्तेरेकेन्द्रियं तृतीयं रत्नम् । ठाणा० ३९८ ।

चम्मरुक्ख-वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

चम्मिय-चर्मणि नियुक्ताश्चार्म्मिकाः । भग० ३१७ ।

चम्मे-चर्म्मपक्षिणः-चर्मचटकाप्रभृतयः, चर्मरूपा एव हि तेषां पक्षा इति । उत्त० ६९९ ।

चम्मेट्ठ-लोहमयः प्रतलायतो लोहादिकुट्टनप्रयोजनो लोहकाराद्युपकरणविशेषः । भग० ६१७ । चर्मेष्टः-चर्मनद्धपाषाणः । प्रश्न ४८ । चर्मेष्टः-चर्मवेष्टितपाषाणविशेषः। प्रश्न० २१ ।

चम्मेट्ठग-चर्मेष्टकं-चर्मपरिणद्धकुट्टनोपगरणविशेषः । जं० प्र० ३८७ । चर्मेष्टिका-इष्टकाशकलादिभृतचर्मकुतपरूपा यदाकर्षणेन धनुर्धरा व्यायामं कुर्वन्ति । उपा० ४७ । चर्मेष्टकम् । राज० २२ । चर्मेष्टका । अनु० १७७ । चर्मेष्टकम् । जीवा० १२१ ।

चयं-अधिकत्वेन वृद्धिः । सूर्य० १६ । शरीरम् । भग० १२९ ।

चयइ-ददाति । भग० २८९ । त्यजति-विरहयति । भग० २८९ ।

चयणं-वैमानिकज्योतिष्कमरणम् । ठाणा० ४६६ । चयनं-कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । प्रज्ञा० २९२ ।

चयति-च्यवते । जीवा० ११० । चीयते-सामान्यतश्चयमागच्छति । प्रज्ञा० २२८ ।

चयनं-व्याख्यानान्तरेणासकलनम् । ठाणा० ४१७ । कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । ठाणा० १९५ । कषायादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । ठाणा० १०१, ५२७ ।

चयमाणे-च्यवमानः-जीवमानः जीवन्नेव मरणकाल त्यजन् इत्यर्थः । भग० ८६ ।

चयिका-पोठिका । पिण्ड० १०७ ।

चयो-चीयते चयनं वा चयः, परिग्रहस्य तृतीयं नाम । प्रश्न० ९२ ।

चयोवचयं-चयोपचयं-चयेन अधिकत्वेन वृद्धिरपचयेन हीनत्वेनापवृद्धिः । सूर्य० १३ ।

चरः-उपचरकः । आचा० ३७७ ।

चरंतं-चरत्-विश्वं व्याप्नुवत्, अब्रह्मणस्तृतीयं नाम । प्रश्न० ६६ ।

चरंतमेसणं-परिशुद्धाहारादिना वर्त्तमानम् । आचा० ४२९ ।

चरंति-आचरन्ति । प्रश्न० ९५ । चरन्ति-प्रवर्तन्ते । जं० प्र० २२७ । भिक्षानिमित्तं पर्यटन्ति । उत्त० ३९२ । आसेवन्ते । उत्त० ३६३ ।

चरंतिअ-चरन्ति यस्यां दिशि तीर्थंकरादयो यावद् युगप्रधाना विहरन्ति सा दिक् । आव० ४७० ।

चरंतिया-सा इमा जाए दिसाए तित्थकरो केवली मणपज्जवणाणी ओहिणाणी चोद्दसपुव्वी जाव णवपुव्वी जो जम्मि वा जुगपहाणो आयरिओ जत्तो विहरति ततो हुत्तो पडिच्छति । नि० चू० तृ० ९९ आ ।

चरंतो-विहरन्ति । व्य० प्र० ६२ आ ।

चर-सूचामात्रत्वादस्य चरमशब्दोपलक्षितोऽपि चरणः-प्रथम उद्देशकः । भग० ६३० ।

चरइ-चरति-करोति । सम० ९६ । आचरति । सम० १६, २१ । चरति-अटित्वा आनीतं भुङ्क्ते । दश० २५३ ।

चरए-धाटिभिक्षाचरः । ज्ञाता० १९५ ।

चरकः-मतविशेषः । उत्त० २४१ । जीवा० १४३ । नि० चू० प्र० १८६ अ ।

चरग-चरकः-धाटिभिक्षाचरः । जं० प्र० २३६ । चरकः-मतविशेषः । आव० ८५६ । चरतीति चरकः-दंशमशकादिः । सूत्र० ६५ । चरकः-कच्छोटकादयः । भग० ५० । कच्छोटकादिकः । प्रज्ञा० ४०५ ।

चरगपरिव्वायग-चरकपरिव्राजकः - धाटिभैक्ष्योपजीविनस्त्रिदण्डी, अथवा चरकः-कुच्छोटकादिः परिव्राजकस्तु कपिलमुनिसूनुः । भग० ५० ।

चरगपरिव्वायय-चरकपरिव्राजकः-धाटिभैक्ष्योपजीवी त्रिदण्डी । प्रज्ञा० ४०५ ।

चरगा-धाटिवाहकाः सन्तो ये भिक्षां चरन्ति ते, ये च भूञ्जानाश्चरन्ति वा ते चरकाः । अनु० २५ । कणदाः, धाटिवाहका वा । बृ० प्र० २४२ आ ।

चरण-चारित्रं-क्रिया । व्य० द्वि० ४५७ आ । चर्यते-मुमुक्षिभिरासेव्यत इति चरणं, चर्यते गम्यते प्राप्यते भवोदधेः परकुलमनेनेति चरणं-व्रतं-श्रमणधर्मादयो मूल-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणाः । विशे० २ । चतुर्वेदब्राह्मणः । बृ० प्र० ५६ अ । चारणलब्धिः । विशे० ३८५ । गमनम् । आव० ५५२ । गवेषणम् । प्रश्न० १०६ । नित्याऽनुष्ठानम् । ओघ० ७ । व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधम् । सम० १०६ । महाव्रतादि । ज्ञाता० ७ । औप० ३३ । विशिष्टं गमनम्, गमनम् । नंदी० १०६ । उत्तराध्ययनेषु एकत्रिंशतममध्ययनम् । उत्त० ६ । व्रतादि । भग० १२२ । ज्ञाता० ६१ । उत्त० ५६७ । उच्चावचकुलेष्वविशेषेण पर्यटनम् । उत्त० ६०७ । गतिचरणं भक्खणाचरणं, आचरणाचरणं च । नि० चू० प्र० १ अ । आचारः । उत्त० ५३२ । चारित्रं, सच्चेष्टेतियावत् । उत्त० ५१६ । चरणं–व्रतश्रमणधर्मादि । भग० १३६ । सर्वतो देशतश्च चारित्रमिह विवक्षितम् । विशे० २ । चारित्रं–समग्रविरतिरूपम् । दश० ११० ।

चरणकरणपारविऊ–चर्यत इति चरणं मूलगुणाः, क्रियत इति करणं–उत्तरगुणास्तेषां पारं–तीरं पर्यन्तगमनं तद्वेत्तीति चरणकरणपारवित् । सूत्र० २६८ ।

चरणकरणानुयोगः–अर्हद्वचनानुयोगस्य चतुर्थो भेदः,आचारादिकः । आचा० १ । अनुयोगस्य प्रथमो भेदः । ठाणा० ४८१ ।

चरणगुणट्ठिओ–चरणगुणस्थितः–सर्वनयविशुद्धः । उत्त० ६६ । चर्यत इति चरणं–चारित्रं, गुणः साधनमुपकारकमित्यनर्थान्तरं, ततश्च चरणं चासौ गुणश्च निर्वाणात्यन्तोपकारितयाः चरणगुणस्तस्मिन् स्थितः–तदासेवितया निविष्टः । उत्त० ६६ ।

चरणगुणा–चरणान्तर्गता गुणाः, चरणं–व्रतादि गुणाः पिण्डविशुद्धयादयश्चरणगुणाः । उत्त० ५६७ ।

चरणग्गो–चरणेन अग्रः–प्रधानः चरणाग्रः । पिण्ड० ४१ ।

चरणनया–चरणनयाः–चरणवृत्तयः । विशे० १३५२ ।

चरणमालिया–चरणमालिका–भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।

चरणरिया–चरणेर्या–चरतेर्भावे ल्युट् चरणं तद्रूपेर्या चरणेर्या, चरणं गतिर्गमनमित्यर्थः । आचा० ३७५ ।

चरणविही–उत्तराध्ययनेषु एकत्रिंशत्तममध्ययनम् । सम० ६४ ।

चरति–उपपद्यते । सूर्य० ११ ।

चरमंतपएस–चरमाण्येवान्तवर्तित्वात् अन्ताश्चरमान्तास्तत्प्रदेशश्च चरमान्तप्रदेशः । प्रज्ञा० २२६ ।

चरमं–चरमं–पर्यन्तवर्त्ति । प्रज्ञा० २२८ । चरमम् । प्रज्ञा० २३४ । चरमेभ्योऽल्पस्थितिकेभ्यो नारकादिभ्यः परमा–महास्थितयो महाकर्म्मतरा इत्याद्यर्थप्रतिपादनार्थः । एकोनविंशतितमशतके पञ्चम उद्देशकः । भग० ७६१ । प्रान्तं पर्यन्तवर्त्ति । भग० ३६५ । आव० ८५२ । शैलेशीकालान्त्यसमयभावी । प्रज्ञा० ३०३ । अर्वाग्भागवर्त्ति स्थित्यादिभिः । भग० ६३० । चरमः–यस्य चरमो भवो भविष्यति स चरमः । भग० २५६ ।

चरमअचरिमसमय–चरमास्तथैव अचरमसमयाश्च प्रागुक्तयुक्तेरेकेन्द्रियोत्पादापेक्षया प्रथमसमयवर्तिनो ये ते चरमाचरमसमयाः । भग० ६६६ ।

चरमचरमः– । जं० प्र० ४१८ ।

चरमचरमनामनिबद्धनाम–चरमपूर्वं मनुष्यभव–चरमदेवलोकभव–चरमच्यवन–चरमगर्भसंहरण – चरमभरतक्षेत्रावसर्प्पिणीतीर्थंकरजन्माभिषेक –चरमबालभाव–चरमयौवन–चरमकामभोग– चरमनिष्क्रमण– चरमतपश्चरण–चरमज्ञानोत्पाद–चरमतीर्थप्रवर्त्तन– चरमपरिनिर्याणाभिनयात्मकः, द्वात्रिंशत्तमो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

चरमचरमसमय–चरमाश्च ते विवक्षितसङ्ख्यानुभूतेश्चरमसमयवर्तित्वात् चरमसमयाश्च प्रागुक्तस्वरूपा इति चरमचरमसमयाः । भग० ६६६ ।

चरमतियति– । बृ० प्र० ६३ अ ।

चरमनिदाघकालसमओ–चरमनिदाघकालसमयः–ज्येष्ठमासपर्यन्तः । जीवा० १२२ ।

चरमपाहुडिआ–चरमप्राभृतिका–बादरा । दश० १६२ ।

चरमप्रदेशजीवप्ररूपी–जीवप्रदेशो निह्नवः । आव० ३११ ।

चरमसमय–चरमसमयशब्देनैकेन्द्रियाणां मरणसमयो विवक्षितः स च परभवायुषः प्रथमसमय एव तत्र च वर्तमानाश्चरमसमयाः । भग० ६६६ ।

चरमसमयनियंठो–यश्चरमे–अन्तिमे समये वर्त्तमानः सः चरमसमयनिर्ग्रन्थः । उत्त० २५७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरमाइं–चरमाणीति प्रश्नमुद्दिश्य प्रवृत्तत्वात्, प्रज्ञापनाया दशमं पदम् । प्रज्ञा० ६ ।

चराइं–चराणि अनियततिथिभावित्वात् । जं० प्र० ४६४ ।

चरामि–आसेवयामि । आव० ५६७ ।

चरि–चारिः–आजीविका । उत्त० ११६ । अचारिचरित्वा च । उत्त० ४४८ ।

चरिअ-चरिका–नगरप्राकारान्तरालेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्गः–द्वारं व्यक्तम् । जं० प्र० १०६ । गृहाणां प्राकारस्य चान्तरेऽष्टहस्तविस्तारो हस्त्यादि सञ्चारमार्गश्चरिका: । अनु० १५६ ।

चरिअकामो–चरितुं कामः- भक्षयितुं कामः । ओघ० ३६ ।

चरिआ–ग्रामादिष्वनियतविहारित्वम् । सम० ४१ । चरिका संदेशकारीणी दासी । आव०३४६ । चरिका–परिव्राजिका। ओघ० १६४ ।

चरित्त–चारित्रं–विरतिपरिणामरूपेण क्षायिकभावापन्नम् । जं० प्र० १५१ । चर्यते–मुमुक्षुभिरासेव्यते तदिति, चर्यते वा गम्यते अनेन निर्वृत्ताविति चरित्रं; अथवा चयस्य कर्मणां रिक्तीकरणाच्चरित्रं निरुक्तन्यायादिति, चारित्रमोहनीयक्षयाद्याविर्भूत आत्मनो विरतिरूपः परिणामः । ठाणा० २४ । चर्यते आसेव्यते यत्तेन वा चर्यते–गम्यते मोक्ष इति चरित्रं–मूलोत्तरगुणकलापः । ठाणा० ५२ । चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चारित्रम् । अनु० २२१ । चरन्ति-गच्छन्त्यनेन मुक्तिमिति चरित्रम् । उत्त० ५५६ । चारित्रं–चारित्रमोहनीयक्षयक्षयोपशमोपशमजो जीवपरिणामः । भग० ३५० । मूलोत्तरगुणरूपम् । बृ० प्र० १७२ अ । चारित्रं–बाह्यं सदनुष्ठानम् ।राज० ११६ । चारित्रं–सावद्ययोगनिवृत्तिलक्षणम् । प्रश्न० १३२ । चयरिक्तीकरणाच्चारित्रम् । ओघ० ६ । चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं क्षयोपशमरूपं तस्य भावः । इहान्यजन्मोपाताष्टविधकर्मसञ्चयापचयाय चरणं चारित्रं, सर्वसावद्ययोगनिवृत्तिरूपा क्रियेत्यर्थः । आव० ७८ । चारित्रम् । आव० ७६३ । चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं क्षयोपशमरूपं तस्य भावः चारित्रं अशेषकर्म्मक्षयाय चेष्टेत्यर्थं: । दश० २३ । अनुष्ठानम् । ज्ञाता० ८१ ।

चरित्तकसायकुसील–यः कषायाच्छापं प्रयच्छति स चारित्रे कुशीलः । भग० ८६० ।

चरित्तधम्मे–चयरिक्तीकरणाच्चारित्रं तदेव धर्म्मश्चारित्रधर्म्मः । ठाणा० ५१५ । चरित्रधर्म्मः–क्षान्त्यादिश्रमणधर्मः । ठाणा १५४ ।

चरित्तधम्मो–चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं–क्षयोपशमरूपं तस्य भावश्चारित्रं,अशेषकर्मक्षयाय चेष्टेत्यर्थः, ततश्चारित्रमेव धर्मः चारित्रधर्मः । दश० २३ । प्राणातिपातादिनिवृत्तिरूपः । दश० १२० ।

चरित्तपज्जवे–चरित्रपर्यवाः–चारित्रभेदाः क्षायोपशमिका इति । उत्त० ५६२ ।

चरित्तपुलाए–पुलाकस्य तृतीयो भेदः, मूलोत्तरगुणप्रतिसेवनया चारित्रं विराधयति । भग० ८६० ।

चरित्तपुलात–चारित्रपुलाकः–पुलाकस्य तृतीयो भेदः। चारित्रनिस्सारत्वं य उपैति स पुलाकः । उत्त० २५६ । मूलोत्तरगुणप्रतिसेवनातश्चरणपुलाकः । ठाणा० ३३७ ।

चरित्तभावभासा–चारित्रभावभाषा–भावभाषाभेदः,चारित्रं प्रतीत्योपयुक्तैर्या भाष्यते सा । दश० २०८ ।

चरित्तविणओ–चारित्राद्विनयः, चारित्रविनयः । दश० २४१ ।

चरित्तवीरियं–असेसकम्मविदारणसामत्थं खीरादिलद्धुप्पादणसामत्थं च । नि० चू० प्र० १६ अ ।

चरित्तसंकिलेसे–चारित्रस्य सङ्क्लेशः अविशुद्धमानता स चारित्रसङ्क्लेशः । ठाणा० ४८६ ।

चरित्तायारे–चारित्राचारः–समितिगुप्तिभेदोऽष्टधा । ठाणा० ३२५ । समितिगुप्तिरूपोऽष्टधा । ठाणा० ६५ ।

चरित्तिंदे–चरित्रेन्द्रः–यथाऽऽख्यातचारित्रः। ठाणा० १०४ ।

चरिमंत–चरमान्तः–अपान्तराललक्षणः । जीवा० ६४ । चरमरूपः पर्यन्तः । जीवा० २८६ ।

चरिमंतपएसा–चरिमाण्येवान्तवर्त्तित्वादन्ताश्चरिमान्तास्तेषां प्रदेशाः चरिमान्तप्रदेशाः । भग० ३६६ ।

चरिम–चरमोऽनन्तरभावी भवो यस्यासौ चरमः । राज० ४७ । चरमः–यस्य चरमो भवः संभवी योग्यतयाऽपि सः, भव्यः । प्रज्ञा० १४३ । चरमो भवो भविष्यति यस्य सोऽभेदाच्चरमो भव्यः । प्रज्ञा०३९५ । चरमसमयभावी–चतुर्थसमयभावीति । प्रज्ञा० ५६६ । चरमभववान् भव्यविशेषः ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवा० ४४४ ।

चरिमपदं- । भग० ३६५ ।

चरिमभव-चरमभवः-पश्चिमभवः । प्रज्ञा० १०८ ।

चरिमभवत्थ-चरमभवस्थः-भवचरमभागस्थः । भग० १८१ ।

चरिमा-वद्धमाणसामिणो सिस्सा । नि० चू० प्र० ३५३ अ ।

चरिमाचरमो-नारकभवेषु स एव भवो येषां ते चरमाः,नारकभवस्य वा चरमसमये वर्त्तमानाश्चरमाः । भग० ६०० ।

चरिय-चरिका-नगरप्राकारयोरन्तरमष्टहस्तो मार्गः । सम० १३७ । चरिका-अष्टहस्तप्रमाणो मार्ग्गः । राज० ३ । चरितं-चेष्टनम् । प्रश्न० ६२ । चरितः-सेवितः । प्रश्न० ५१ । चरितं-यद्वृत्तम् । दश० ३४ ।

चरियव्वगं-चरणं-तृणादनम् । आव० २२६ ।

चरिया-चरणं चर्या-ग्रामानुग्रामविहरणात्मिका । उत्त० ८३ । नवमः परिषहः, वर्जितालस्यो ग्रामनगरकुलादिष्वनियतवसतिर्निर्ममत्त्वः प्रतिमासं चर्यामाचरेदिति । आव० ६५६ । विहितक्रियासेवनम् । उत्त० ८१ । दशविधचक्रवालसामाचारी इच्छामिच्छेत्यादिका । सूत्र० ८८ । चरिका-नगरप्रकारयोरन्तरालेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्गः ।प्रश्न० ८ । अष्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरालमार्गः। औप० ३ । जीवा० २५८, २६९ । ज्ञाता० २ । चरिका । आव० ६४० । चरिका-परिव्राजिका । व्य० प्र० २०५ आ । ग्रहप्राकारान्तरो हस्त्यादिप्रचारमार्गः । भग० २३८ । नगरप्राकारान्तराले हस्ताष्टकमानो मार्गः । बृ० तृ० ५३ अ ।

चरियाचरिए-चारित्राचारित्रं-देशविरतिः स्थूलप्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणम् । आचा० ६८ ।

चरियारए-चर्यारताः-निरोधासहिष्णुत्वाचङ्क्रमणशीलाः। आचा० ३६९ ।

चरिसामि-चरिष्यामि-अनुष्ठास्यामि । उत्त० ४०९ ।

चरु-बलम् । निरय० २७ । स्थालीविशेषः । औप० ९४ । चरुः-भाजनविशेषः । भग० ५२० ।

चरे-चरेः-आसेवस्व । उत्त० ३४१ । चरेत्-आसेवेत । उत्त० ५९ । चरति-आचरति । दश० २५५ । चरेत्-उद्युक्तो भवेत् । आचा० १२२ । विदध्यात् । आचा० १८० । चरेत्-गच्छेत् । प्रवर्त्ततेतियावत् । उत्त० ४३० ।

चरेज्ज-चरेत्-सेवेत । भग० ३६८ ।

चर्चः-संहितादि चर्चः । ठाणा० ३८ ।

चर्मकारकोत्थः-कोथविशेषः । आव० ३९१ ।

चर्मकृतिः- । ओघ० २१७ ।

चर्मदलं-चतुर्थं क्षुद्रकुष्ठम् । आचा० २३५ । प्रश्न० १६१ ।

चर्म्मपक्षिणः-चर्ममयपक्षाः पक्षिणः, वल्गुलिप्रभृतयः । ठाणा० २७३ । खचरप्रथमो भेदः । सम० १३५ ।

चर्मपक्षौ-चर्मात्मकौ पक्षौ चर्मपक्षौ । प्रज्ञा० ४९ ।

चर्मपञ्चकम्- ठाणा० २३४ ।

चर्या-वहनं गमनमित्यर्थः । ठाणा० २४० ।

चलंतं-स्वस्थानादन्यत्र गच्छन् । ठाणा० ३८५ ।

चलंतसंधि-चलन्तः-शिथिलीभवन्तः सन्धयो यस्मिस्तत् । उत्त० ३३४ ।

चलं-श्लथम् । ठाणा० २०९ । गन्तुं पथि प्रवृत्तः । ओघ० २३ । अनियतविहारित्वात् । आचा० २५८ । अवधिः, अनवस्थितश्च । आव० २८ । गमनाभिमुखम् । ओघ० १४१ । चलः-गमनक्रियायोगात् हारादिः । आव० १८५ । चलो वायुराशुगत्वात् । जं०प्र०२६५ ।

चलइ-चलति-कम्पते । जीवा० ३०७ । स्थानान्तरं गच्छति । भग० १८३ ।

चलचल-तवए पढमं जं घयं खित्तं तत्थ अण्णं घयं अपक्खिवंती आदिमे जे तिण्णि घाणा पयतिते चलचलेति । नि० चू० प्र० १९६ आ ।

चलचलओग्गहिमं- । आव० ८५७ ।

चलचवलं-चलचपलं-अतिशयेन चपलम् । प्रज्ञा० ९६ । जीवा० १७२ ।

चलणं-चलनं-मोटनम् । ओघ० १७७ । चलनः-चलनविषयको भगवत्याः प्रथमशतके प्रथमोद्देशकः । भग० ५ ।

चलणमालिआ-चरणमालिका-संस्थानविशेषकृतं पादाभरणं लोके पगडां इति प्रसिद्धम् । जं० प्र० १०६ ।

चलणाओ-चलनकः, भगवत्याः प्रथमशतकदशमोद्देशः । भग० ५ ।

चलणाहण-पारिणामिकबुद्धौ षोडशो दृष्टान्तः । नंदी० १६५ ।

चलणि-चलनप्रमाणः कर्दमश्चलनीत्युच्यते । भग०३०७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चलणिगा–मल्लचलणाकृतिः । नि० चू० प्र० १७९ आ ।
चलणिचिक्खल्लो– । नि० चू० द्वि० ७९ आ ।
चलणी–चलनी । ओघ० २०९ । चरणमात्रस्पर्शी कर्दमः । जीवा० २८२ ।
चलत–ईषत्कम्पमानम् । जीवा० १८८ ।
चलतोरणं–जेण वामं दक्खिणं वा चालिज्जति सो चलतोरणं । नि० चू० तृ० ६३ आ ।
चलनकालः–उदयावलिका । भग० १५ ।
चलमाणे–चलत्–स्थितिक्षयादुदयमागच्छत् विपाकाऽभिमुखीभवद्यत्कर्मेति प्रकरणगम्यं तत् । भग० १५ ।
चलसत्ते–चलं–अस्थिरं परीषहादिसम्पाते ध्वंसात् सत्त्वं यस्य स चलसत्त्वः । ठाणा० २५१ ।
चलहत्थो–णाम कंपणवाउणा गहितो । नि० चू० प्र० १०१ अ ।
चलाचल–चलाचलं–अप्रतिष्ठितम् । दश० १७५ ।
चलिः–परिस्पन्दनार्थः । दश० ७० ।
चलिअ–चलितं–विलासवद्गतिः । जं० प्र० २६५ ।
चलिए–चलनं–अस्थिरत्वपर्यायेण वस्तुन उत्पादः । भग० १८ ।
चलेमाणे–गच्छन् । आचा० २६५ ।
चवइ–च्यवते–अपयाति–चरति । आचा० ४०९ ।
चवणं–च्यवनं–पातः । आचा० १६३ । उद्वर्त्तना । जीवा० १३५ ।
चवल–चपलं–उत्सुकतयाऽसमीक्षितम् । प्रश्न० ११९ । चरलत्वं कायस्य । ज्ञाता० ९९ । चञ्चलम् । ज्ञाता० १३८ । हस्तिग्रीवादिरूपकायचलनवत् । प्रश्न० १२९ । चापल्यं–कायौत्सुक्यम् । जं० प्र० ३८८ । चपला कायतोऽपि । ज्ञाता० ३६ । चपलः । आव० १८५ ।
चवलगं–चपलकम् । आव० ६२२ ।
चवलगा–धान्यविशेषः । नि० चू० प्र० १४४ आ ।
चवला–चपला–कायचापलोत्पेता । भग० १६७ ।
चवलाए–चपलया–कायचापल्येन । भग० ५२७ ।
चवलिअ–चपलितः । जं० प्र० १०१ ।
चवेडा–चपेटा–करतलाघातः । उत्त० ६२ । चपेटा–पञ्चाङ्गुलीप्रहारः । उत्त० ४६१ ।

चव्वायं–चार्वाकः–रोमन्थायमाणः । व्य० प्र० २५५ ।
चषकः–भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।
चसक–चषकः–सुरापानपात्रम् । जं० प्र० १०१ ।
चसूरि–विस्तारः । भग० ७६० । विस्तरः । ओघ० ५ । अनु० १३९ । नंदी० ३३ ।
चाइया–शकिताः । उत्त० ६२७ ।
चाई–त्यागी–सङ्गत्यागवान् । भग० १२२ । सर्वसङ्गत्यागः, संविग्नमनोज्ञसाधुदानं वा । प्रश्न० १५७ ।
चाउक्कालं–चतुष्कालं–दिवसरजनीप्रथमचरमप्रहरेष्वित्यर्थः । आव० ५७६ ।
चाउग्घंट–चतस्रो घण्टा अवलम्बमाना यस्मिन् सः । ज्ञाता० ४५ । चतस्रो घण्टाः–पृष्ठतोऽग्रतः पार्श्वतश्च यस्य सः । ज्ञाता० १३२ ।
चाउजामो–चातुर्यामः–निर्वृत्तिधर्म एव । आव० ५६३ ।
चाउज्जाभा–चतुर्महाव्रतानि । भग० १०१ । चातुर्यामः–महाव्रतचतुष्टयात्मको यो धर्मः । उत्त० ४९९ ।
चाउज्जायग–चातुर्जातकं–सुगन्धद्रव्यविशेषः । उत्त० २१९ ।
चाउज्जायगा–सुगंधदव्वं । नि० चू० प्र० ३१८ आ ।
चाउत्थजरो–चातुर्थज्वरः । आव० ५५९ ।
चाउत्थहिय–चातुर्थाहिकः–ज्वरविशेषः । भग० १९८ ।
चाउद्दसी–चतुर्दशी तिथिः । ज्ञाता० १३९ ।
चाउप्पायं–चतुष्पदा–भिषग्भैषजातुरप्रतिचारकात्मकचतुर्भा-(त्मकभा)ग चतुष्टयात्मिका । उत्त० ४७५ ।
चाउम्मासिएसु– । आचा० ३२७ ।
चाउम्मासियं–चातुर्मासिकं–चतुर्मासातिचारनिर्वृत्तं प्रतिक्रमणम् । आव० ५६३ ।
चाउम्मासियमज्जणए– । ज्ञाता० १४० ।
चाउरंगिज्जं–उत्तराध्ययनेषु तृतीयमध्ययनम् । सम० ६४ । नि० चू०प्र० ९ अ । चातुरङ्गीयम् । दश० १०५ ।
चाउरंत–चातुरन्तं–चतुर्गतिकम् । प्रश्न० ९१ । चतुर्विभागं-संसारः । ज्ञाता० ८९ । चतुरन्तः संसारः । आव० ५४६ । चतुरन्तः–चतसृष्वपि दिक्ष्वन्तः–पर्यन्तः, एकत्र हिमवानन्यत्र च दिक्त्रये समुद्रः स्वसम्बन्धितयाऽस्येति । चतुर्भिर्वा हयगजरथनरात्मकैरन्तः–शत्रुविनाशात्मको यस्य स । उत्त० ३५० । चतुर्विभागं नरकादिगतिविभागेन । ठाणा ४४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाउरंतचक्कवट्टि-चतुर्षु -दक्षिणोत्तरपूर्वापररूपेषु पृथिवीपर्यन्तेषु चक्रेण वर्तितुं शीलं यस्य स चातुरन्तचक्रवर्त्ती । जं० प्र० ५८ ।

चाउरंतचक्कवट्टी- दिक्त्रयभेदभिन्नसमुद्रत्रयहिमवत्पर्वतपर्यन्तसीमाचतुष्टयलक्षणा ये चत्वारोऽन्तास्तांश्चतुरोऽपि चक्रेण वर्त्तयति पालयतीति-चतुरन्तचक्रवर्त्ती-परिपूर्णषट्खण्डभरतभोक्ता । अनु० १७१ ।

चाउरंतमुक्ख-चतुरन्तमोक्षः-संसारविनाशः । आव० ५४६ ।

चाउरक्क-चातुरक्यं चतुःस्थानपरिणामपर्यन्तम् । जीवा० २७८, ३५३ ।

चाउलं-तन्दुलधावनम् । बृ० द्वि० २४६ आ ।

चाउलणा-जहा आफासुयं अणेसणिज्जंति तेसिं चाउलणा कहिज्जति । नि० चू० द्वि० १४८ आ ।

चाउलपलंबं-अर्द्धपक्वशाल्यादि कणादिकमित्येवमादिकम् । आचा० ३४२ । तन्दुलाः-शालिव्रीह्यादेः त एव चूर्णीकृतास्तत्कणिका वा । आचा० ३२३ ।

चाउललोट्टो-रोट्टः । ओघ० १३७ ।

चाउला-तन्दुलाः-शालिव्रीह्यादेः । आचा० ३२३ ।

चाउलोदग-तण्डुलोदकम् । पिण्ड० १० । तन्दुलोदकंअट्ठिकरकम् । दश० १७७ ।

चाउलोदयं-तन्दुलधावनोदकम् । आचा० ३४६ ।

चाउवण्णं-चातुर्वर्ण्यं-ब्राह्मणादिलोकः । भग० ६६० ।

चाउवन्न-चत्वारो वर्णाः-प्रकाराः श्रमणादयो यस्मिन् स तथा स एव स्वार्थिकाण्विधानाच्चातुर्वर्णः । ठाणा० ३२१ ।

चाउव्वण्णाइण्णे-चत्वारो वर्णाः-श्रमणादयः समाहृता इति चतुर्वर्णं तदेव चातुर्वर्ण्यं तेनाकीर्णः-आकुलश्चातुर्वर्ण्याकीर्णः, अथवा चत्वारो वर्णाः-प्रकारा यस्मिन् स तथा, दीर्घत्वं प्राकृत्वात्, चतुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञानादिभिर्महागुणैरिति चतुर्वर्णाकीर्णः । ठाणा० ५०३ ।

चाउव्वण्णाइन्ने-चातुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञानादिगुणैरिति चातुर्वर्णाकीर्णः । भग० ७११ ।

चाउवेज्ज-चातुर्वेद्यः । आव० १०३, ६९५ ।

चाउव्वेज्जभत्तं-चातुर्वेद्यभक्तम् । आव० ८२४ ।

चाउसालए-चतुःशालकं-भवनविशेषः । जं० प्र० ३९१ ।

चाउस्सालं-चतुःशालम् । ओघ० ४६ । गृहम् । बृ० द्वि० १४८ आ ।

चाएइ-शक्नोति । आव० ७०३ ।

चाकचिक्यं- । नंदी० ५५ ।

चाक्रिकः-यान्त्रिकः । ओघ० ७५ ।

चाटुयार-चाटुकरः-मुखमङ्गलकरः । प्रश्न० ३० ।

चाडु-चाटु । आव० ९३ ।

चाडुकर-चाटुकरः । प्रश्न० ५६ ।

चाडुयं-हावभावम् । जीवा० ६९६ ।

चाणक्क-चाणक्यः-कौटिल्यः । दश० ५२, ६१ । पाशके दृष्टान्तः । आव० ३४२ । चन्द्रगुप्तमन्त्री । नि० चू० तृ० ४ आ । नीतिकारः-कौटिल्यः । चूर्णद्वारविवरणे चन्द्रगुप्तमन्त्री । पिण्ड० १४२ । उपायेनार्थोपार्जनकारको ब्राह्मणः । दश० १०७ । विमर्शदृष्टान्ते नीतिकारो द्विजन्मा । आव० ४०५ । प्रशंसाविषये पाटलीपुत्रे चन्द्रगुप्तराजमन्त्री । आव० ८१७ । गोब्बरग्रामे सुबन्धुना दग्धः । मर० । सुबन्धुप्रदीपितः । भक्त० । पाडलीपुत्ते मंती । नि० चू०द्वि० १०२ अ । नि० चू० प्र० ११९ अ । चाणक्यः-पाटलीपुत्रनगरे मन्त्री । विशे० ४१० । व्य० प्र० १४० आ । चाणक्यः-शत्रुदग्धोऽनशनी । सं० । चाणाक्यः-संन्यासे दृष्टान्तः । व्य० प्र० २५६ अ । ठाणा० २८२ । पारिणामिकबुद्धौ द्वादशो दृष्टान्तः । नंदी० १६७ ।

चाणूरः-कंसराजसम्बन्धी एतदभिधानो मल्लः । प्रश्न० ७४ ।

चातुरंतसंसारकंतारो-चातुरंतसंसारकान्तारः । आव० ७९३ ।

चामरगंडा-चामरदण्डाः । ज्ञाता० ५८ ।

चामरच्छायं-चामरच्छायनं-स्वातीगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

चामरधारपडिमाओ-चामरधारप्रतिमाः । जं०प्र० ८१ ।

चारंचरइ-चारश्चरति-मण्डलगत्या परिभ्रमति । जीवा० ३७७ ।

चार-चरन्ति-भ्रमन्ति, ज्योतिष्कविमानानि यत्र स चारो-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्योतिश्चक्रक्षेत्रं समस्तमेव । ठाणा० ५८ । नियुक्ताः । नि० चू० द्वि० १०६ अ । चरणं चारः–अनुष्ठानम् । आचा० २१२। विहारः। भग० ३ । ज्योतिषामवस्थानक्षेत्रम् । भग० ३६४ । ठाणा० ५८ । चारः–ज्योतिश्चारस्तद्विज्ञानम् । जं० प्र० १३६ । मण्डलगत्या परिभ्रमणम् । जीवा० ३७८ । जं० प्र० ४६२ । चरणम् । प्रश्न० ६५ । फलविशेषः । प्रज्ञा० ३२८ । चारं–परिभ्रमणम् । सूर्य० ११ । चारः । ज्ञाता० ३८ ।

चारकपालकः– । उत्त० ६२ ।

चारकादि– । आचा० १६५ ।

चारग–चारकः- गुप्तिः । प्रश्न० ६० । औप० ८७ । गुप्तिगृहम् । प्रश्न० ५६ । बन्धनगृहम् । आव० ११४ ।

चारगपरिसोहणं–चारगशोधनम् । ज्ञाता० ३७ ।

चारगपाले–चारकपालः–गुप्तिपालकः । विपा० ७१ ।

चारगबंधणं–चारकबन्धनम् । सूत्र० ३२८ ।

चारगभंडे–चारकभाण्डः–गुप्त्युपकरणम् । विपा० ७१ ।

चारगभडिया–चारकभट्टिनी, भर्तृका । आव० ६३ ।

चारगवसहि–चारकवसति–गुप्तिगृहम् । प्रश्न० ५६ ।

चारट्ठिइए–चारस्य–यथोक्तस्वरूपस्य स्थितिः- अभावो यस्य स चारस्थितिकः–अवगतचारः । सूर्य० २८१ ।

चारट्ठिइओ–चारकस्थितिकः–चारस्य स्थितिः–अभावो यस्य सः, अपगतचारः । जीवा० ३४६ ।

चारट्ठितीया–चारे–ज्योतिश्चक्रक्षेत्रे स्थितिरेव येषां ते चारस्थितिकाः–समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घण्टाकृतय इत्यर्थः । ठाणा० ५७ ।

चारण– । व्य० प्र० १७६ आ ।

चारणगणे–नव गणे चतुर्थो गणः । ठाणा० ४५१ ।

चारणा–अतिशयचरणाच्चरणाः–विशिष्टाकाशगमनलब्धियुक्ताः । प्रश्न० १०५ । चारणाः–जङ्घाचारणादयः । ज्ञाता० १०० । चरणं–गमनमतिशयवदाकाशे एषामस्ति इति चारणाः । भग० ७६४ । ऋद्धिप्राप्तार्यभेदः । प्रज्ञा० ५५ । जङ्घाचारणा विद्याचारणाश्च । सम० ३४ । चारणा–जङ्घाचारणविद्याधराः । जीवा० ३४४ । चरणं–गमनं तद्विद्यते येषां ते चारणाः । प्रज्ञा० ४२४ ।

चारणिका–अनेकशो भिन्नाः । ओघ० २६ ।

चारते–चारकं–गुप्तिगृहम् । ठाणा० ३१८ ।

चारपुरिसो–चारपुरुषः । उत्त० २१४ ।

चारभट–सूर । प्रश्न० ११६ । भटः, बलात्कारप्रवृत्तिः । औप० २ । शूरः । उत्त० ३४६, ४३४ । आचा० ३५३ ।

चारभट्टः– । सूत्र० ३०६ ।

चारभड–अबलगकादयः । ओघ० ६२ । चारभटः । प्रश्न० ३०, ५६ । ओघ० १६३ ।

चारभडओ–चारभटः । आव० ८३१ ।

चारभडा–स्वामिभटाः । पिण्ड० १११ । सेवगा । नि० चू० प्र० ३५८ अ । चारभटाः–राजपुरुषाः । बृ० प्र० ३११ अ ।

चारभडिया– । बृ० प्र० २६ आ ।

चारविसेसे–चारविशेषः । सूर्य० २७६ ।

चारवृक्षः–यस्मिन् चारकुलिका उत्पद्यन्ते । अनु० ४७ ।

चारस्थितिकाः–समयक्षेत्रबहिर्वर्तिनो घण्टाकृतयः । ठाणा० ५८ ।

चारा–हेरिकाः । भग० ४ ।

चारि–चारीम् । विशे० ६३५ । तृणाति । आव० १८६ । चारिकः । आव० २०२ । चरः । उत्त० १२२ । हेरिकः । बृ० तृ० ४० आ ।

चारिए–चारिकः । आचा० ३८८ ।

चारिगा–चारिका । उत्त० १६२ ।

चारित–चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं–क्षयोपशमरूपं तस्य भावः चारित्रं, इहान्यजन्मोपात्ताष्टविधकर्मसञ्चयाय चरणभावश्चारित्रं, सर्वसावद्ययोगविनिवृत्तिरूपा क्रिया वा । आव० ५६२ । अण्णणोवचियस्स कम्मचयस्स रित्तीकरणं चारित्तं । नि० चू० प्र० १८ आ । चयस्य–राशेः प्रस्तावात्कर्मणां रिक्तं–विरेकोऽभाव इतियावत् तत्करोतीत्येवंशीलं चयरिक्तकरं चारित्रम् । उत्त० ५६६ । अष्टविधकर्मचयरिक्तीकरणाद्वा चारित्रं–सर्वविरतिक्रियेत्यर्थः । चरन्त्यनिन्दितमनेन चारित्रं । विशे० ५४५ । चयरित्तीकरणाच्चारित्रम् । ओघ० ६ । बाह्यं सदनुष्ठानम् । ज्ञाता० ७ ।

चारित्तबलिय–चारित्रबलिकः । औप० २८ ।

चारित्तभट्ठो–चारित्रभ्रष्टः–अव्यवस्थितपुराणः । आव०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३३ ।
चारित्र–आर्यभेदः । सम० १३५ । ठाणा० ३३७ ।
चारित्रतः शापं ददत् चारित्रतः । ठाणा० ३३७ ।
चारित्रधर्मः–चारित्रसम्बन्धी धर्मः । आव० ७८८ ।
चारित्रधर्माङ्गानि–संयमात्मप्रवचनानि । भग० ६ ।
चारित्रभेदाः–क्षपणवैयावृत्यरूपाः । ठाणा० ३८१ ।
चारित्रर्द्धिः–निरतिचारता । ठाणा० १७३ ।
चारित्रसमाधिप्रतिमा–समाधिप्रतिमाया द्वितीयो भेदः । सम० ६६ । ठाणा० ६५ ।
चारित्रोपसम्पत् वैयावृत्यकरणार्थं क्षपणार्थं चोपसम्पद्यमानस्य । ठाणा० ५०१ । वैयावृत्यविषया क्षपणविषया च । आव० २६८ ।
चारिय–चारिकः–हैरिकः । प्रश्न० ३० । प्रणिधिपुरुषः । प्रश्न० ३८ ।
चारिया–चारिका । आव० ३१६ ।
चारी–चीर्णवान्–विहृतवान् । आचा० ३१० ।
चारीभंडिय–चारीभण्डिकः । ओघ० १४८ ।
चारु–चारुः–प्रहरणविशेषः । राज० ११३ । प्रहरणविशेषः । जीवा० २६० ।
चारुदत्त–यो वेत्रवतीं नदीमुत्तीर्य परकुलं गतः । नामविशेषः । सूत्र० १६६ । चारुदत्तः–ब्रह्मदत्तपत्न्या–वच्छयाः पिता । उत्त० ३७६ ।
चारुपव्वए– । ज्ञाता० १२१ ।
चारुपीणया–चारुपीनका । जं० प्र० १०१ ।
चारुपीनकः–भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।
चारुवण्णो–चारुवर्णः सत्कीर्त्तिः गौराद्युदात्तशरीरवर्णयुक्तः, सत्प्रज्ञो वा । औप० ३३ ।
चारू–चारुः–शोभनः । सूर्य० २६४ । सम० १५२ ।
चारोपपन्नकाः–ज्योतिष्काः । ठाणा० ५८ ।
चारोवगो–चारोपगः–चारयुक्तः । जीवा० ३४० ।
चारोववन्नगा–ज्योतिश्चक्रचरणोपलक्षितक्षेत्रोपपन्नाः। भग० ३६४ । चरन्ति–भ्रमन्ति ज्योतिष्कविमानानि यत्र स चारो–ज्योतिश्चक्रक्षेत्रं समस्तमेव । तत्रोपपन्नकाश्चारोपपन्नकाः–ज्योतिष्काः । ठाणा० ५७ ।
चारोववन्नो–चारः–मण्डलगत्वा परिभ्रमणमुपपन्नाः–आश्रितवन्तश्चारोपपन्नाः । जीवा० ३४६ ।
चार्वाकिः–यथा वृषनेत्रं वृषसागारिकं नीरसमरो वृषभश्चर्वयति एवं यः कार्यः रोमन्थायमाणो निष्फलं रचयन् तिष्ठन्–चर्वणशीलः चार्वाकिः । व्य० प्र० २५६ अ ।
चालणा–क्वचित्किञ्चिदनवगच्छन् पृच्छति शिष्यः कथमेतदिति इयमेव चालना । दश० २१ । दूषणं चाल्यते–आक्षिप्यते यया वचनपद्धत्या सा चालना । बृ० प्र० १३६ अ । सूत्रार्थगतदूषणात्मिका । उत्त० २० ।
चालना–सूत्रस्य अर्थस्य वा अनुपपत्त्युद्भावनं चालना। अनु० २६३ ।
चालनी–यया कणिक्कादि चाल्यते चालनी । आव०१०२ ।
चालित्तए–भङ्गकान्तरगृहीतान् भङ्गकान्तरेण कर्त्तुम् । ज्ञाता० १३६ ।
चालिया–चालिताः–इतस्ततो विक्षिप्ता । जं० प्र० ३७ ।
चालेति–चालयति–स्थानान्तरनयनेन । ज्ञाता० ६४ ।
चालेमाणो–चलन्–शरीरस्य मध्यभागेन सञ्चरन् । जीवा० १२० ।
चाव–चापाः–कोदण्डः । जं० प्र० २०६ । चापं–धनुः । जीवा० २७३ ।
चाववंसे–पर्वगविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
चाविय–च्यावितं–आयुःक्षयेण भ्रंशितम् । प्रश्न० १५५ ।
चावोण्णतं– । सम० ३६ ।
चास–पक्षिविशेषः । उत्त० ६५२ । चाषः–पक्षिविशेषः । आव० ६८७ । प्रज्ञा० ३६० । किकिदीवी । पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
चासपिच्छए–चासस्य पतत्रम् । प्रज्ञा० ३६० ।
चासा–लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।
चिचइअं–(देशी०) खचितम् । आव० १८० ।
चिचणिकामयी–अम्बिलिकामयी । ओघ० ३० ।
चिचतिया–दीप्ताः । नि० चू० प्र० ३४८ अ ।
चिचापाणग–पानकविशेषः । आचा० ३४७ । चिञ्चापानकम् । बृ० प्र० २५३ अ ।
चिचियंत–चिचिकुर्वन् सर्पेण ग्रस्यमानः शब्दायमानो मण्डुकः । उत्त० ५२२ ।
चिचियायंतं–चिचिमिति कुर्वन्तम् । उत्त० ५२१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चितनिका-परिभावनीयः । ठाणा ३४६ ।

चिंता-चिन्ता-पूर्वकृतानुस्मरणम् । भग० १८० । मनश्चेष्टा । आव० ५८३ । ततो मुहुर्मुहुःक्षयोपशमविशेषतः स्वधर्मानुगतसद्भूतार्थविशेषचिन्तनं चिन्ता । नंदी० १७६ । कथमिदं भूतं कथं चेदं सम्प्रति कर्तव्यं कथं चैतद्भविष्यतीति पर्यायलोचनम् । नंदी० १६० ।

चितापसंग-चिन्ताप्रसंगः-चिन्तासातत्यम् । प्रश्न० ६१ । औप० ४६ ।

चितासुविणे-जाग्रदवस्थस्य या चिन्ता-अर्थचिन्तनं तत्संदर्शनात्मकः स्वप्नश्चिन्तास्वप्नः । भग० ७०६ ।

चिंतिए-चिन्तितः-स्मरणरूपः । भग० ११५, ४६३ । चिन्तितः । विपा० ३८ । चिन्तितः चिन्तारूपश्चेतसोऽनवस्थितत्वात् । जं० प्र० २०३ ।

चिंतिय-चिन्तितं-अपरेण हृदि स्थापितम् । ज्ञाता० ४१ ।

चिंतियाइओ-चिन्तितवान् । आव० १५२ ।

चिंतेमि-चिन्तयामि-युक्तिद्वारेणापि परिभावयामि । प्रज्ञा० २४६ ।

चिंधं-चिह्नं स्वस्तिकादि । आव० ३२१ । लाञ्छनम् । ज्ञाता० २२२ ।

चिंधत्थी-चिह्नयते-ज्ञायतेऽनेनेति चिह्नं स्तननेपथ्यादिकं, चिह्नमात्रेण स्त्री चिह्नस्त्री, अपगतस्त्रीवेदछद्मस्थः केवली वा, अन्यो वा स्त्रीवेषधारी । सूत्र० १०२ ।

चिंधद्धय-चिह्नध्वजः-चक्रादिचिह्नप्रधानध्वजः । भग० ३१६ ।

चिंधपट्ट-चिह्नपट्टः-योधतासूचको नेत्रादिवस्त्ररूपः-सौवर्णो वा पट्टो येन सः । भग० १६३ । ध्वजपटः । ज्ञाता० २७ । चिह्नपट्टः योधचिह्नपट्टः । भग० ३१८ । नेत्रादिमयः । विपा० ४७ । नेत्रादिचीवरात्मकः । प्रश्न० ४७ ।

चिंधपुरिसे-पुरुषचिह्नैः-श्मश्रुप्रभृतिभिरुपलक्षितः पुरुषश्चिह्नपुरुषः । ठाणा० ११३ ।

चिंधिअ-दर्शितः । आव० ६२ ।

चिंधे-चिंधपुरिसे-चिह्नपुरुषः । अपुरुषोऽपि पुरुषचिह्नोपलक्षितः । आव० २७७ ।

चिह्नं-केतम् । आव० ८४१ ।

चिअं-चितं-इष्टिकादिरचितं प्रासादपीठादि । अनु० १५४ ।

चिअत्ते-मनःप्रणिधानम् । दश० १८० ।

चिइ-कुशलकर्मणश्चयनं चितिः, रजोहरणाद्युपधिसंहतिः । आव० ५११ ।

चिइया-चितिका-शस्त्रविशेषः । आव० ६५१ ।

चिई-चयनं चितिः-प्रवेशनम् । आव० ४७४ । चियन्ते मृतकदहनाय इन्धनानि अस्यामिति चितिः-काष्ठरचनात्मिका । उत्त० ३८६ ।

चिउरंगरागो-चिकुराङ्गरागः-चिकुरसंयोगनिमितो वस्त्रादौ रागः । जीवा० १६१ ।

चिउरंगराते-चिकुराङ्गरागः-चिकुरसंयोगनिर्मितो वस्त्रादौ रागः । राज० ३३ ।

चिउर-चिकुरः-रागद्रव्यविशेषः । जं० प्र० ३४ । जीवा० १६१ । पीतद्रव्यविशेषः । प्रज्ञा० ३६१ । चिकुरो-रागद्रव्यविशेषः । राज० ३३ ।

चिउररागे-चिकुररागः-चिकुरनिष्पादितो वस्त्रादौ रागः । प्रज्ञा० ३६१ ।

चिए-चयः-प्रदेशानुभागादेर्वर्धनम् । भग० ५३ ।

चिकित्सित्वा- । आव० ११८ ।

चिक्कण-अन्योन्यानुवेधेन गाढसंश्लेषरूपः । पिण्ड० २७ । चिक्कणं-दुर्विमोचम् । प्रश्न० २२ । दारुणम् । दश० २०६ ।

चिक्कणिका-नोकर्मद्रव्यलोभः, आकारमुक्तिः । आव० ३६७ ।

चिक्कणीकय-चिक्कणीकृतं-सूक्ष्मकर्मस्कन्धानां सरसतया परस्परं गाढसम्बन्धकरणतो दुर्भेदीकृतम् । भग० २५१ ।

चिक्खल-सकर्दमः प्रदेशः । ओघ० २१६ ।

चिक्खलगोलए-कर्दमगोलः । दश० ६४ ।

चिक्खल्ल-शुष्कः । ओघ० २६ । यत्र निमज्जनं स्यात् सः चिक्खल्लः । ओघ० २६ । चिदिति करोति खल्लं च भवतीति चिक्खल्लम् । अनु० १५० । कर्दमः संसार पक्षे विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्धः । सम० १२७ । कर्दमः । दश० ८७ । उत्त० १२८ । प्रज्ञा० ८० । आव० १६६, ६२१, ६२४ । व्य० द्वि० ६ आ ।

चिगिच्छए- । ज्ञाता० १११ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिच्चं-चिच्चं नाम च्युतं वानमित्यर्थः, विशिष्टवानम् । जीवा० २३१ । चिच्चं नाम व्यूतं विशिष्टं वानमित्यर्थ । जं० प्र० २८५ ।
चिच्ची-चित्कारः । विपा० ५० ।
चिज्जंति-चीयन्त बन्धनतः, निधत्ततो वा । भग० २५३ ।
चिट्ठं-भृशमत्यर्थम् । आचा० १८४ ।
चिट्ठइ-तिष्ठति-ऊर्द्ध्वस्थानेन वर्त्तते । जीवा० २०१ ।
चिट्ठा-चेष्टा-व्यापाररूपा । आव० ७८५ ।
चिट्ठित्तु-स्थातुं-कायोत्सर्गं कर्त्तुम् । आव० २७१ ।
चिट्ठियव्वं-शुद्धभूमौ ऊर्द्ध्वस्थानेन स्थातव्यम् । ज्ञाता० ६१ ।
चिट्ठिस्सामो-स्थास्यामः-वर्त्तिष्यामः । ज्ञाता० १५६ ।
चिट्ठे-तिष्ठन्-ऊर्ध्वस्थानेनासमाहितो हस्तपादादि विक्षिपन् । दश० १५६ । स्थातव्यम् । ओघ० २२ ।
चिट्ठेज्जा-तिष्ठेत्-ऊर्ध्वस्थानेनाऽवतिष्ठेत् । प्रज्ञा० ६०६ ।
चिट्ठेमाणे-चेष्टयन्-व्यापारयन् चेष्टमानो वा । भग० ५४ ।
चिडगा-लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ । प्रज्ञा० ४६ ।
चिडिग-चिटिकाः-कलम्बिकाः, पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
चिण-आसंकलनतः चितवन्तः । ठाणा० १७६ ।
चिणविसए-देशविशेषः । नि० चू० प्र० २५५ अ ।
चिणाइ-अनुभागबन्धापेक्षया निधत्तावस्थाऽपेक्षया वा । भग० १०२ ।
चिंणिसु-तथाविधापरकर्म्मपुद्गलैश्चितवन्तः-पापप्रकृतीरल्पप्रदेशा बहुप्रदेशीकृतवन्तः । ठाणा० २८६ ।
चितं-बद्धम् । ओघ० १८० ।
चिति-चयनं चितिः, इह प्रस्तावात् पत्रपुष्पाद्युपचयः । उत्त० ३०६ । चितिः भित्त्यादेश्चयनं, मृतकदहनार्थं दारुविन्यासो वा । प्रश्न० ८ ।
चितीकया-चैत्यत्वेन स्थापिता । बृ० तृ० २६ आ ।
चित्तंग-चित्राङ्गाः-पुष्पदायिनः । सम० १८ ।
चित्तंगओ-चित्राङ्गकः-द्रुमगणविशेषः । जीवा० २६७ ।
चित्तंगा-चित्रस्य-अनेकविधस्य विवक्षाप्राधान्यान्माल्यस्य कारणत्वाच्चित्राङ्गाः । ठाणा० ३४८, ५१७ । चित्रस्य अनेकप्रकारस्य विवक्षाप्राधान्यान्माल्यस्य अङ्गं-कारणं तत्सम्पादकत्वाद् वृक्षा अपि चित्राङ्गाः । जं० प्र० १०४ । आव० १११ ।
चित्तंतरलेसागा-चित्रमन्तरं लेश्या च प्रकाशरूपा येषां ते चित्रान्तरलेश्याकाः । सूर्य० २८१ । जीवा० ३४१ ।
चित्तं-चित्रं-अद्भुतम् । जीवा० १६४ । आश्चर्यभूतम् । जीवा० १७५ । आलेखः । जीवा० १८६, २१४ । चित्रं-नानारूपम् । जीवा० २०५ । इत्थीमादीरूवं दट्ठुं तदंगावयवसरुवंचितणं चित्तं । नि० चू० तृ० १ आ । किलिञ्चादिकं वस्तु । अनुत्त० ५ । चैतन्यम् । सम० १८ । मनो विज्ञानं च । अनु० ३६ । भावमनः । औप० ६० । चित्रं-अनेकरूपवत् आश्चर्यवद्वा । सूर्य० २६३ । एगतरवण्णुज्जलं । नि० चू० प्र० २५३ अ । चित्रः-श्रीदामराजस्यालङ्कारिविशेषः । विपा० ७० । चित्रकूटः-पर्वतविशेषः । प्रश्न० ६६ । शङ्खराजभागिनेयः । आव० २१४ । नानारूपः आश्चर्यवान् वा । जीवा० २०६ । पर्वतविशेषः । जं० प्र० ३५४ । वाराणस्यां ब्रह्मदत्तजीवसंभूतचण्डालज्येष्ठभ्राता । उत्त० ३७६ । चित्रः-कर्बुरः । उत्त० ३०५ । प्रदेशीराज्ञो मन्त्रि । निरय० ६,१५,४० । चित्रं-अनेकविधः । ठाणा० ५१७ । चित्रः-ब्रह्मदत्तराज्ञःविद्युन्मालाविद्युन्मतीपिता । उत्त० ३७६ । चित्तं-सामान्योपयोगरूपम् । भग० ८६ । प्रदेशीराज्ञः सारथिनाम । राज० ११५ । चित्तं-त्रिकालविषयं-ओघतोऽतीतानागतवर्तमानग्राहि । दश० १२५ । चित्रं-आलेखः । जं० प्र० ३२ । ठाणा० १६७ । चेतयति येन तच्चित्तं-ज्ञानम् । आचा० ६६ । चित्रकूटपर्वतः । भग० ६५४ ।
चित्तउत्ते- । सम० १५४ ।
चित्तए-चित्रकः । प्रज्ञा० २५४ ।
चित्तकम्मे-चित्रकर्म्म-चित्रलिखितं रूपकम् । अनु० १२ ।
चित्तकणगा-द्वितीया विद्युत्कुमारीमहत्तरिकाया नाम । ठाणा० १६८ । चित्रकनका । जं० प्र० ३६१ । विदिग्रुचकवास्तव्याविद्युत्कुमारीस्वामिनी । आव० १२२ ।
चित्तकम्माणि-चित्रकर्माणि । आचा० ४१४ ।
चित्तकरसेणो-चित्रकरश्रेणिः । आव० ५५८ ।
चित्तकारे-चित्रकारः-शिल्पभेदः । अनु० १४६ ।
चित्तकूड-चित्रकूटः-पर्वतविशेषः । आव० ८२७ । चित्र-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूटपर्वतः । जं० प्र० ३०८, ३५४ । ठाणा० ८० । सीतामहानद्याः उत्तरे द्वितीयो वक्षस्कारपर्वतः । ठाणा० ३२६ । चीत्रकूटम् । जं० प्र० ३४४ । पर्वतनाम । ठाणा० ७४, १२६ । गिरिविशेषः । जं० प्र० १६८ । भग० ३०७ । विजयविभागकारिणः पर्वतविशेषः । प्रश्न० ९६ ।

चित्तगरसेणी–चित्रकृच्छ्रेणि । आव० ६४ ।

चित्तगा–सनखपदचतुष्पदविशेषाः । प्रज्ञा० ४५ । चित्रकाः–सनखपदचतुष्पदविशेषाः, आरण्यजीवविशेषाः । जीवा० ३८ ।

चित्तगुत्ता–चित्रगुप्ता–दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । दक्षिणरुचकवास्तव्या सप्तमी दिक्कुमारी-महत्तरिका । जं० प्र० ३९१ । भग० ५०३ । ठाणा० २०४ ।

चित्तघरगं–चित्रगृहकं–चित्रप्रधानं गृहकम् । जीवा० २०० ।

चित्तघरगा–चित्रप्रधानानि गृहकाणि । जं० प्र० ४५ ।

चित्तजीवो–चित्तमंतो । दश० चू० ६० ।

चित्तनिवाई–चित्तं–आचार्याभिप्रायस्तेन निपतितुं–क्रियायां प्रवर्त्तितुं शीलमस्येति चित्तनिपाती । आचा० २१५ ।

चित्तपक्खा–चतुरिन्द्रियजीवविशेषाः । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० ४२ । ठाणा० १९७ ।

चित्तपडयं–चित्रपटकम् । आव० ६७७ ।

चित्तपत्तए–चतुरिन्द्रियजीवभेदः । उत्त० ६९६ ।

चित्तप्पहार– । ज्ञाता० २३० ।

चित्तफलयं–चित्रफलकम् । आव० १९९ ।

चित्तभित्ति–चित्रभित्तिः–चित्रगता स्त्री । दश० २३७ ।

चित्तमंत–चित्तमात्रा–स्तोकचित्तेत्यर्थः । दश० १३८ । चित्तवान्–आत्मवान् । दश० १४० ।

चित्तरक्खट्ठा–चित्तरक्षार्थं–मनोऽन्यथाभावनिवारणार्थं दाक्षिण्याद्युपेतः । पिण्ड० ४६ ।

चित्तरसा–चित्रो–मधुरादिभेदभिन्नत्वेनानेकप्रकार आस्वादयितॄणामाश्चर्यकारी वा रसो ये ते । जं० प्र० १०४ । चित्रा–विविधा मनोज्ञा रसा–मधुरादयो येभ्यस्ते चित्तरसा भोजनाङ्गा इति भावः । ठाणा० ५१७ । भोजनदायिनः । सम० १८ । आव० १११ । चित्रा–विचित्रा-रसा मधुरादयो मनोहारिणो येभ्यः सकाशात् सम्पद्यन्ते ते चित्ररसाः । ठाणा० ३९९ । चित्ररसः–द्रुमगणविशेषः । जीवा० २६८ ।

चित्तलंग–चित्तलाङ्गाः–कर्बुरावयवाः । भग० ३०८ ।

चित्तलगा–सनखपदश्चतुष्पदविशेषाः । आरण्यजीवविशेषाः । जीवा० ३८ ।

चित्तलया–विविधवर्णवस्त्राणि । ग० ।

चित्तलिणो–मुकुली–अहिभेदविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

चित्तविचित्त–चित्रविचित्रं–मनोहारिचित्रोपेतम् । जीवा० १९२ । एगतरेण वा णणण्णउज्जलो विचित्तो दोहिं वण्णेहिं चित्तविचित्तो । नि० चू० प्र० २२९ अ ।

चित्तविभ्रमः–चित्तविलुप्तिः । ओघ० २११ ।

चित्तविलुत्ती–चित्तविलुप्तिः–चित्तविभ्रमः । ओघ० २११ ।

चित्तसंभूइ–चित्रसंभूतिः–उत्तराध्ययनेषु त्रयोदशमध्ययनम् । उत्त० ९ ।

चित्तसंभूयं–उत्तराध्ययनेषु त्रयोदशमध्ययनम् । सम० ६४ ।

चित्तसभा–चित्रसभा–चित्रकर्मवन्मण्डपः । प्रश्न० ८ । आव० ९३ ।

चित्तसालं–चित्रशालम् । जीवा० २६९ ।

चित्तसालयघर–चित्रशालगृहं–चित्रकर्मवद्गृहम् । जं० प्र० १०६ ।

चित्तसेणओ–चित्रसेनकः–ब्रह्मदत्तपत्न्या भद्रायाः पिता । उत्त० ३७९ ।

चित्तसुद्धे–चैत्रशुक्लः । ज्ञाता० १५४ ।

चित्ता–नानारूपा आश्चर्यवन्तो वा । जं० प्र० ५४ । चित्रा–विदिग्रुचकवास्तव्याविद्युतकुमार्यः स्वामिनी । आव० १२२ । मुसिता । नि० चू० तृ० ४० आ । चित्रा–चित्रवन्तः आश्चर्यवन्तो वा । सम० १३९ । भग० ५०५ । चित्रा–द्वादशं नक्षत्रम् । ठाणा० ७७ । सूर्य० १३० । प्रथमा विद्युत्कुमारीमहत्तरिका । ठाणा० १९८, २०४ । चित्रा । जं० प्र० ३९१ । कर्बुरा । ज्ञाता० १३९ ।

चित्ताचिल्लडय–आरण्यो जीवविशेषः । आचा० ३३८ ।

चित्ताणुय–चित्तानुगः–चित्तं–हृदयं प्रेरकस्यानुगच्छति–अनुवर्त्तयतीति । उत्त० ४९ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तानुशयः–मनःप्रद्वेषः । उत्त० ३६८ ।
चित्तामूलं–चित्रमूलम् । प्रज्ञा० ३६४ ।
चित्तारा–शिल्पार्यभेदः । प्रज्ञा० ५६ ।
चित्तावरक्खा–चित्तावरक्षा । आव० २२१ ।
चित्रक–एकवर्णः । नि० चू० प्र० २२९ आ ।
चित्रक्षुल्लकः–लब्धकामार्थे दृष्टान्तः । आचा० २०१ ।
चित्रा–त्वाष्ट्रीत्यपरनाम । जं० प्र० ४९९ ।
चिद्ध–चिह्नं–पिशाचकेतुः । ज्ञाता० १३८ ।
चिन्नं–चीर्णम् । सूर्य० २१ ।
चिपिड–चिपटा–निम्ना । ज्ञाता० १३८ ।
चिप्पिउं–चिप्पित्वा–कुट्टयित्वा । बृ० द्वि० २०३ अ ।
चिप्पित–कुट्टिया । नि० चू० तृ० ६३ आ ।
चियं–चितं–उत्तरोत्तरस्थितिषु प्रदेशहान्या रसवृद्ध्याऽवस्थापितः । प्रज्ञा० ४५९ । चितः–शरीरे चयं गतः । भग० २४ । चितः–धान्येन व्याप्तः । अनु० २२३ ।
चियगा–चितिः । प्रश्न० ५२ । चितिका । आव० ६७५ ।
चियट्ठाणं–चितस्थानम् । आव० ५६० ।
चियत्त–लक्षणोपेततया संयतः । भग० ६२४ । त्यक्तः, प्रीतिविषयो वा । भग० ४९८ । संयमोपकारकोऽयमिति प्रीत्या मलिनादावप्रीत्यकरणं वा । ठाणा० १४९ । प्रीतिकरः, नाप्रीतिकरः । राज० १२३ । नाप्रीतिकरः । ज्ञाता० १०९ । औप० १०० । आव० ७९३ । प्रीतिकरं त्यक्तं वा दोषैः । औप० ३८ । लोकानां प्रीतिकरः, नाप्रीतिकरः । भग० १३५ । त्यक्तः । भग० १३६ । संयमीनां संमतः उपधिः–रजोहरणादिकः । ठाणा० १४९ ।
चियत्तकिच्च–प्रीतिकृत्यं वैयावृत्यादि । ठाणा० २०० । त्यक्तकृत्यः–परित्यक्तसकलसंयमव्यापारः । बृ० प्र० २५७ आ ।
चियलोहिए–चितं–उपचयप्राप्तं लोहितं– शोणितमस्येति चितलोहितः । उत्त० २७५ ।
चियाए–त्यागः । अशनादेः साधुभ्यो दानं त्यागः । ठाणा० २३४ । त्यजनं त्यागः–संविग्नैकसाम्भोगिकानां भक्तादिदानम् । ठाणा० २९७ । त्यागो–दानधर्म्म इति । ठाणा० ४७४ । त्यागः–यतिजनोचितदानम् । ज्ञाता० १२३ ।
चियाग–त्यागः–संयतेभ्यो वस्त्रादिदानम् । आव० ६४६ ।
चिरं–वारिसितो । नि० चू० तृ० ६५ अ ।
चिरंतणं–चिरन्तनं–आचार्यपरम्परागतम् । बृ० द्वि० २४१ आ ।
चिरट्ठितीए–चिरस्थितिकः । भग० १३२ ।
चिरपरिचिअ–चिरपरिचितः–सहवासादिना स पूर्वो यः । उत्त० ३२२ ।
चिरपव्वइओ–चिरप्रव्रजितः । बृ० प्र० ६२ अ ।
चिरपोराण–चिरपुराणं–चिरप्रतिष्ठितत्त्वेन पुराणम् । भग० २०० ।
चिररायं–चिररात्रं-प्रभूतकालं यावज्जीवमित्यर्थः । आचा० २४५ ।
चिरसंसट्ठ–चिरं–प्रभूतकालं संसृष्टः–स्वस्वाम्यादिसम्बन्धेन सम्बद्धो यः । उत्त० ३२२ ।
चिराणओ–चिरन्तनः । आव० ४२१ ।
चिराणयं–चिरन्तनम् ।
चिराणो–चिरन्तनः । नि० चू० तृ० ३३ अ ।
चिराति– । ज्ञाता० ११८ ।
चिरिक्का–छटा । नि० चू० तृ० ४४ आ । छटाः । उत्त० ११६ ।
चिरुएहिं–वृकैः । बृ० ११८ आ ।
चिर्पितः–नपुंसकभेदः । उत्त० ६८३ ।
चिर्भटिका–त्रपुषी । नंदी० १४६ ।
चिलाइपुत्त–उपशमादिपदत्रयीवान् । मर० । उपशमविवेकसंवरपदत्रयवान् । भक्त० ।
चिलाइया–चिलाता–धनसार्थवाहदासी । आव० ३७० । चिलाती–अनार्यदेशोत्पन्ना । ज्ञाता० ४१ ।
चिलाए–चिलातः–मूलगुणप्रत्याख्याने कोटीवर्षे नगरे म्लेच्छाधिपतिः । आव० ७१५ । धनसार्थवाहस्य दासचेटः । ज्ञाता० २३५ ।
चिलातपुत्रः–मुनिविशेषः । आचा० २९४ । सूत्र० १७२ ।
चिलातिपुत्तो–कीटिकाभक्षितो मुनिः । सं० ।
चिलातीपुत्रः–रागे दृष्टान्तविशेषः । व्य० प्र० १२ अ । संक्षेपरुचिस्वरूपनिरूपणे दृष्टान्तः । उत्त० ५६५ । नंदी०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६६ । भूतभावनायां यस्य दृष्टान्तः । आव ५६५ ।
चिलातो–किरातः । आव० १५० ।
चिलाय–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
चिलायगो–चिलातकः–धनसार्थवाहदासीचिलातायाः पुत्रः । आव० ३७० ।
चिलायपुत्त–चिलातीपुत्रः–त्यक्तदेहे दृष्टान्तः । व्य० द्वि० ४३२ आ ।
चिलायविसय–चिलातविषयः–म्लेच्छदेशः । प्रश्न० १४ ।
चिलाया–म्लेच्छविशेषाः । प्रज्ञा० ५५ ।
चिलिचिल्ल–चिलीचिविलः(ल्लः) चिलीनः । प्रश्न० ४६ ।
चिलिणे–चिलीनं–अशुचिकम् । ओघ० ८१ ।
चिलिमिणिपणगं–पोते वाले रज्जु कडग डंडमती । नि० चू० प्र० १८० आ ।
चिलिमिणी–यवनिका । ओघ० ४३, ८२ ।
चिलिमिलि–चिलिमिलिः । आव० ७५६ । जवनिका सा दवरकमयी इतरा वा द्रष्टव्या । व्य० द्वि० २६६ अ ।
चिलिमिलिणी–जवनिका । ओघ० ७५ ।
चिलिमिली–चिलिमिलिः । ओघ० १६ । यमनिका । आचा० ३७० ।
चिलिमिलीए–यवनिकाव्यवधानं कृत्वा । ओघ० ४३ ।
चिलिमिलीपणगं–वालवल्ककटसूत्रदण्डमय्यः चिलिमिल्यः पञ्चः । बृ० द्वि० २५३ अ ।
चिलीए–चिलिमिलिका । बृ० द्वि० १८१ अ ।
चिलीपामल–अशुच्यादि । उप० मा० गा० ३२६ ।
चिल्लग–शिशुः । आव० ६७० । लीनं दीप्यमानं वा । प्रश्न० ७१ ।
चिल्लणा–श्रेणिकनृपस्य पट्टराणी । बृ० प्र० ३१ अ ।
चिल्लल–आरण्यकः पशुविशेषः । जीवा० २८२ । चित्तलः–नाखरविशेषः । चित्रलः–हरिणाकृतिर्द्विखुरविशेषः । प्रश्न० ७० । चिल्ललं–चिक्खिल्लमिश्रः । ज्ञाता० ६७ । चिक्खलमिश्रोदको जलस्थानविशेषः । भग० २३८ । म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
चिल्ललए–चिल्ललकः । आरण्यपशुविशेषः । प्रज्ञा० २५४ ।
चिल्लालएसु–छिल्लराणि–अखाताः स्तोकजलाश्रयभूता भूप्रदेशा गिरिप्रदेशा वा । प्रज्ञा० ७२ ।
चिल्ललग–देदीप्यमान् । राज० ४६ । प्रज्ञा० ६६ । दीप्यमानम् । ज्ञाता० २१६ । सनखपदश्चतुष्पदविशेषाः । प्रज्ञा० ४५ । आरण्यजीवविशेषः । ज्ञाता० ७० ।
चिल्लिआ–दिव्यमानाः (देशी) जं० प्र० १०२ ।
चिल्लिका–लीनाः–दीप्यमाना वा । प्रश्न० ७७ ।
चिल्लिय–दीप्यमानम् । भग० ५४० । सूर्य० २९३ । लीनं दीप्तं वा । औप० ५१ ।
चिल्लिया–दीप्यमानाः । जीवा० २६७ । दीप्यमाना लीना वा । भग० ४७८ । औप० ६८ । भग० ८०२ ।
चिल्ली–हरितभेदः । आचा० ५७ ।
चिल्लोद्रं–हट्टद्रव्यम् । नि० चू० प्र० ११६ आ ।
चिवड–चिपटा–निम्ना । ज्ञाता० १३८ ।
चिहुर–केशः । व्य० द्वि० १२५ आ ।
चीडं–जूवयं । नि० चू० तृ० १६ अ ।
चीडा–कुन्दुरुक्कः । सम० १३८ । प्रज्ञा० ८७ ।
चीणंसुए–कोशीरः चीनविषये वा यद् भवति । ठाणा० ३३८ ।
चीणंसुय–सुहुमतरं चीणंसुयं भण्णति, चीणविसए वा जं तं चीणंसुयं । नि० चू० प्र० २५५ अ । चीनांशुकम् । भग० ४६० ।
चीणंसुयाणि–चीनांशुकादीनि । आचा० ३९३ ।
चीण–चीनः–चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४। चीनः–ह्रस्वः । ज्ञाता० १३८ ।
चीणअंसुअ–वल्कस्य यान्यभ्यन्तरहीरिभिर्निष्पाद्यन्ते सूक्ष्मान्तराणि भवन्ति तानि चीनांशुकानि । जं० प्र० १०७ ।
चीणपिट्ठ–सिन्दूरम् । दश० ४७ । चीनपिष्टं–सिन्दूरम् । जं० प्र० ३४ ।
चीणापिट्ठ–चीनपिष्टम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
चीत्कारः–घोषः–ध्वनिविशेषः । जं० प्र० २१२ ।
चीनपट्टः–चीनांशुकम् । नंदी० १०२ ।
चीनपिष्टराशिः– । जीवा० १९१ ।
चीनांशुकः–वस्त्रनामविशेषः । प्रज्ञा० ३०७ । चीनदेशोद्भवं अंकुशम् । दश० ९१ । चीनदेशोत्पन्नपतङ्गकीटजम् । अनु० ३५ । दुकूलविशेषरूपम् । जीवा० २६९ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चीनांशुकादि-विकलेन्द्रियनिष्पन्नम् । आचा० ३९२ ।
चीनांसुए-कोशिकारः तद्वस्त्रं चीनदेशोद्भवं वा जाङ्गमिकम् । बृ० द्वि० २०१ आ ।
चीयइ-चीयते-चयमुपगच्छति । जीवा० ३०६, ३२२, ४०० ।
चीरं-वस्त्रम् । ओघ० ५३ । चीरमास्तीर्य । ओघ० ५३ । घणं । नि० चू० प्र० २२७ आ ।
चीराजिण-चीराणि च-चीवराणि अजिनं च-मृगादिचर्म चीराजिनम् । उत्त० २५० ।
चीरिए-चीरिकः-रथ्यापतितचीवरपरिधानः चीरोपकरण इति । ज्ञाता० १९५ ।
चीरिका-स्फोटकः । आव० ६८० ।
चीरिग-रथ्यापतितचीरपरिधानाश्चीरिकाः, येषां चीरमयमेव सर्वमुपकरणं ते चीरिकाः । अनु० २५ ।
चीरिय-चीरिकः-मतविशेषः । आव० ८५६ ।
चीवराणि-सङ्घाट्यादिवस्त्राणि । उत्त० ४९३ ।
चुंबण-चुम्बनं-चुम्बनविकल्पः, सम्प्राप्तकामस्य अष्टमो भेदः । दश० १९४ ।
चुंबनं-मुखेन चुम्बनम् । नि० चू० प्र० २५६ आ ।
चुआचुअसेणियापरिकम्मे-च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्म्म । सम० १२८ ।
चुए-च्यवेत्-भ्रश्येत् । त्यजेत् । सूत्र० ३४ । च्युतः-निर्गतः । जं० प्र० १५५ । च्युतं-विनष्टः । आचा० १६ ।
चुओ-च्युतः-आयातः । ओघ० ५० ।
चुक्क-विस्मृतम् । बृ० तृ० १०२ आ । व्य० प्र० ५२ अ । मर० । भ्रष्टः । आव० ३५१ । उप० मा० गा० ४९२ । विस्मृतः । नि० चू० प्र० २९६ अ ।
चुक्कइ-भ्रश्यति । आव० ३३०, ८३४ । नाशयति । विशे० १०६७ ।
चुक्कखलिता-अच्चत्थं खरंटेति चुक्कखलिता ण वा अवराहपदछिद्दाणि गेण्हति सेय गुरूणं कहेति पच्छते गुरवो मे खरिंटेति, अहवा अणाभोगं चुक्कखलिता भण्णंति । नि० चू० तृ० ९३ अ ।
चुक्किहिसि-भ्रश्यसि (देशी०) । आव० २६२, ५०९ ।
चुचूयआमेलगा-चुचुकामेलकौ-स्तनमुखशेखरौ । प्रश्न० ८४ ।
चुचूया-चुचुकाः-स्तनाग्रभागाः । राज० ९५ ।
चुच्चुआ-चुञ्चुकाः-स्तनाग्रभागाः । जं० प्र० ८१ ।
चुच्चुओ-चुञ्चुकः-स्तनाग्रभागः । जीवा० २३४ ।
चुञ्चुय-चुञ्चुकः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।
चुडण-जीर्यन्ते । ओघ० १३१ । वाससां वर्षाकालादर्वागप्यधावने वर्षासु जीर्णता भवति शाटो भवतीत्यर्थः । पिण्ड० १२ ।
चुडलि-प्रदीप्ततृणपूलिका । भग० ४९६ ।
चुडली-भूरेखा । नि० चू० तृ० ४० अ । उल्का-अग्रभागे ज्वलत्काष्ठम् । बृ० तृ० १३ आ । अलातम् । तं० ।
चुडलीए-चुडिलिका-संस्तारकभूमिः । बृ० द्वि० १३० अ ।
चुडुलि-चुडली-ज्वलत्पूलिका । उत्त० ३३० । कृतिकर्मणि द्वात्रिंशत्तमो दोषः । आव० ५४४ ।
चुडुली-उल्का । जीवा० २९ ।
चुड्डलि-उल्कामिव पर्यन्ते गृहीत्वा रजोहरणं भ्रमयन् वन्दते, कृतिकर्मणि द्वात्रिंशत्तमो दोषः । आव० ५४४ ।
चुडुली-उल्का । आव० ५६६ ।
चुडुल्ली-उल्का । प्रज्ञा० २९ ।
चुण्ढो-अखाताल्पोदकविदरिका । ज्ञाता० ३६ ।
चुण्ण-चौर्णं-अत्थबहुलं महत्थं हेउनिवाओवसग्गभीरं । बहुपायमवोच्छिन्नं गमणयसुद्धं च चुण्णपयं । दश० ८७ । मोदकादिखाद्यकचूरिः । बृ० द्वि० १२९ अ । चूर्णम् । प्रश्न० ५९ । चूर्णः-गन्धद्रव्यसम्बन्धी । भग० २०० । चूर्णं-रजः । आचा० ५९ । चूर्णपिण्डः-वशीकरणाद्यर्थं द्रव्यचूर्णादिवासः । उत्पादनायाः चतुर्दशो भेदः । आचा० ३५१ । चूर्णो यवादीनाम् । आचा० ३९३ ।
चुण्णघणो-तंदुलादी चुण्णो घणीक्कतो लोलीकृत इत्यर्थः । नि० चू० द्वि० १४१ अ ।
चुण्णचंगेरी-चूर्णचङ्गेरी । जीवा० २३४ ।
चुण्णजोए-द्रव्यचूर्णानां योगः स्तम्भनादिकर्म्मकारी । ज्ञाता० १८८ ।
चुण्णपडलयं-चूर्णपटलकम् । जीवा० २३४ ।
चुण्णा-वसीकरणादिया चुण्णा । नि० चू० द्वि० १०२

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ ।

चुण्णिओ-चूर्णितः-श्लक्ष्णीकृतः । उत्त० ४६१ ।

चुण्णियभेदे-चूर्णिकाभेदः-क्षिप्तपिष्टादिकः । प० २६७ ।

चुण्णियभेय-चूर्णिकाभेदः-तिलादिचूर्णवत् यो भेदः । भग० २२४ ।

चुण्णियाभाग-चूर्णिकाभागः-भागभागः । जं० प्र० ४४२ । सूर्य० ५६, ११५ ।

चुण्णो-बदिरादियाण चुण्णो । नि० चू० तृ० २३ अ । चूर्णः-पटवासादिकः । सूर्य० २९३ ।

चुन्नं-चूर्णं-रजः । प्रज्ञा० ३६ । सौभाग्यादिजनको द्रव्यक्षोदः । पिण्ड० १२१ ।

चुन्नग-चूर्णः-ताम्बूलचूर्णो गन्धद्रव्यचूर्णो वा । भग० ५४८ ।

चुन्नजुत्ति- । ज्ञाता० ३८ ।

चुन्नयं-सन्त्रस्तम् । विपा० ४७ ।

चुन्नवासा-चूर्णवर्षः-गन्धद्रव्यचूर्णवर्षणम् । भग० २०० ।

चुन्नवुट्ठी-चूर्णवृष्टिः-गन्धद्रव्यवृष्टिः । भग० १९९ ।

चुन्निय-चूर्णितं-चणक इव पिष्टम् । प्रश्न० १३४ ।

चुन्निया-चूर्णयित्वा । भग० ६५४ ।

चुन्नो-गन्धद्रव्यक्षोदः चूर्णः । प्रश्न० १३७ ।

चुय-च्युतः-जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्टः । प्रश्न०१५५ । च्युतः जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्टः । मृतः स्वतः परतो वा । प्रश्न० १०८ । च्युतः-मृतः । भग० २९३ । कुतोऽप्यनाचारात् स्वपदात् पतितः । ज्ञाता० ११८ ।

चुलकप्पसुयं-एकमल्पग्रन्थमल्पार्थं च । नंदी० २०४ ।

चुलणिसुए-चुलनीसुतः-ब्रह्मदत्तः कौरव्यगोत्रः । जीवा० १२१ ।

चुलणीपिया-उपासकदशानां तृतीयमध्यमनम् । उपा० १ । वाणारसीनगर्यां गृहपतिनाम । उपा० ३१ ।

चुलनी-द्रुपदराजपत्नी, द्रौपदीमाता । प्रश्न० ८७ । ज्ञाता० २०७ । ब्रह्मराजस्य पट्टराज्ञी । उत्त० ३७६ ।

चुलसीइ-चतुरशीतं-चतुरशीत्यधिकम् । सूर्य० ८ ।

चुलसीयं-चतुरशीतम् । सूर्य० ११ ।

चुलुकं- । भग० ६६८ ।

चुल्ल-क्षुल्लः, क्षुद्रः, लघुः । जं० प्र० २८१ । महदपेक्षया लघुः । ठाणा० ७० । चुल्लशब्दो देश्यः क्षुल्लपर्यायस्तेन क्षुल्लो-महाहिमवदपेक्षाया लघुः । जं० प्र० ६६ ।

चुल्लकंवस्तु-वस्तुग्रन्थविच्छेदविशेषः तदेव लघुतरं चुल्लकंवस्तु । नंदी० २४१ ।

चुल्लणि- । सम० १५२ ।

चुल्लपिउ-चुल्लपिता-चुल्लबप्पः, पितृव्यः । दश० २१६ ।

चुल्लपिउए-लघुपिता-पितुर्लघुभ्रातेति । विपा० ५७ ।

चुल्लपिता-पित्तियओ । दश० चू० १०९ ।

चुल्लवप्प-पितृव्यः । दश० २१६ ।

चुल्लमाउगा-लघुमाता । आव० ६७५ ।

चुल्लमाउया-लघुमाता-पितृलघुभ्रातृजाया, मातुर्लघुसपत्नी वा । विपा० ५७ । क्षुल्लमातृका-कोणिकराजपत्नी । अन्त० २५ । लघुमाता । ज्ञाता० ३० । अन्त० २५ । चुल्लजननी-लघुमाता । निरय० ४ ।

चुल्लसयए-उपासकदशानां पञ्चममध्ययम् । उपा० १ । आलभियानगर्यां गृहपतिनाम । उपा० ३९ । महाशतकापेक्षया लघुः शतकः-चुल्लशतकः । ठाणां० ५०९ ।

चुल्लहिमवंतकूडे-क्षुल्लहिमवद्गिरिकुमारदेवकूटम् । जं० प्र० २९६ ।

चुल्लहिमवंत-क्षुल्लकहिमवान् । आव० १२३ । क्षुल्लहिमवान् । आव० २९५ । चुल्लो-महदपेक्षया लघुर्हिमवान् क्षुल्लहिमवान् । ठाणा० ७० ।

चुल्लु-चुल्ली । पिण्ड० ८४ ।

चुल्ल्यादीनि-मानुषरन्धनानि । आचा० ४११ ।

चूअवण-चूतवनम् । आव० १८६ । आम्रवनं वनखण्डनाम । जं० प्र० ३२० ।

चूए-चूतः-आम्रवृक्षः । जीवा० २२ ।

चूचुय-चूचुकः । जीवा० २७५ ।

चूचुसाए-चूचुशाकः । उपा० ५ ।

चूडा-उक्तानुक्तार्थसङ्ग्राहिका । आचा० ३१८ । उद्योतसाधनम् । आचा० ६१ । सम० १३१ ।

चूडामणि-चूडामणिः । जं० प्र० २१३ । परममङ्गलभूत आभरणविशेषः । राज० १०४ । चूडामणिः-शिरोऽलङ्कारर त्नम् । उत्त० ४९० । मुकुटरत्नम् । प्रज्ञा० ८७ । मुकुटे रत्नविशेषः । जीवा० १६१ । भूषणविधिविशेषः ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवा० २६६ । चूडामणिर्नाम सकलपार्थिवरत्नसर्वसारो देवेन्द्रमनुष्येन्द्रमूर्द्धकृतनिवासो निःशेषापमङ्गलाशान्तिरोगप्रमुखदोषापहारकारी प्रवरलक्षणोपेतः परममङ्गलभूत आभरणविशेषः । जीवा० २५३ ।

चूडोवनयणं—चूडोपनयनं—शिरोमुण्डनम् । जीवा० २८१ ।

चूण्णं—वशीकारकद्रव्यसंयोगः । बृ० द्वि० १० आ ।

चूत—वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३० ।

चूतलता—लताविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

चूतवणं—चूतवनं—आम्रवनम् । भग० ३६ । ठाणां० २३० ।

चूय—चूतः—सहकारतरुः, आम्रवृक्षः । भग० ३०६ । अम्रवृक्षः । उत्त० ६६२ ।

चूयणा— । भग० ८०२ ।

चूयफलं—चूतफलं—फलविशेषः । सूर्य० १७३ ।

चूयवडिंसए— । भग० १६४ ।

चूर्णभेदः—चूर्णनम् । ठाणां० ४७५ ।

चूर्णि—अर्थस्य पञ्चमो भेदः । सम० १११ । भग० २ ।

चूलणी—चुलनी—ब्रह्मदत्तमाता । आव० १६१ ।

चूलणीपिय—चुलनीपितृनाम्ना गृहपतिः । ठाणां० ५०९ ।

चूला—सिहा । नि० चू० प्र० २२ आ । इह चूला शिखरमुच्यते, चूला इव चूला दृष्टिवादे परिकर्मसूत्रपूर्वानुयोगेऽनुक्तार्थसङ्ग्रहपरा ग्रन्थपद्धतयः, श्रुतपर्व्वते चूला इव राजन्ते इति चूला इत्युक्ताः । नंदी० २४६ । उक्तशेषानुवादीनी चूडा । आचा० ६ ।

चूलामणि—चूडामणिर्नाम सकलनृपरत्नसारो नरामरेन्द्रमौलिस्थायी अमङ्गलामयप्रमुखदोषहृत् परममङ्गलभूत आभरणविशेषः । जं० प्र० १०६ ।

चूलिअंगे—चूलिकाङ्गं—चतुरशीत्यालक्षैः प्रयुतैः । अनु० १०० ।

चूलिआ—चूलिका—चतुरशीत्या लक्षैश्चूलिकाङ्गैः । अनु० १०० । चूडा । दश० २६६ ।

चूलिआवत्थू—चूलावस्तुनि त्वचाराग्रवदिति । ठाणा० ४३४ ।

चूलिए—चूलिकाः । सूर्य० ६१ । भग० ८८८ ।

चूलिका—द्वादशाङ्गस्य पञ्चमो भेदः । सम० ४१ । उक्तानुक्तार्थसङ्ग्रहात्मिका ग्रन्थपद्धतिः । नंदी० २०६ ।

चूलितंगाति— । ठाणा० ८६ ।

चूलिताति— । ठाणा० ८६ ।

चूलियंग—चतुरशितिर्नयुतशतसहस्राणि एकं चूलिकाङ्गम् । जीवा० ३४५ । चूलिकाङ्गः । सूर्य० ६१ । भग० ८८८ ।

चूलिय—चूलिकः—चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

चूलिया—चूलिका—सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधानम् । सम० ७३ । दृष्टिवादस्य पञ्चमो भेदः । सम० १२८ । चूलिका । भग० २७५ । कालमानविशेषः । भग० २१० । चतुरशीतिश्चूलिकाङ्गशतसहस्राणि एका चूलिका । जीवा० ३४५ ।

चूलियागिहं—चूलिकागृहं—समुद्गकः । जं० प्र० ४८ ।

चेइअ—चैत्यं—व्यन्तरायतनम् । सम० ११७ । चैत्याः—चित्ताल्हादकाः । जं० प्र० १६३ । चैत्यः—सन्निवेशविशेषः । आव० १७१ ।

चेइअकडं—वृक्षस्याधो व्यन्तरादिस्थलकम् । आचा० ३८२ ।

चेइअथूभे—चैत्याः—चित्ताल्हादकाः स्तूपाश्चैत्यस्तूपाः । जं० प्र० १६३ ।

चेइए—चितेः—लेप्यादिचयनस्य भावः कर्म वा चैत्यं, तच्च संज्ञाशब्दत्वाद्देवताप्रतिबिम्बे प्रसिद्धं, ततस्तदाश्रयभूतं यद्देवताया गृहं तदप्युपचाराच्चैत्यमुच्यते । जं० प्र० १४ । चयनं चितिः—इह प्रस्तावात् पत्रपुष्पाद्युपचयः, तत्र साधुरित्यन्ततः प्रज्ञादेराकृतिगणत्वात् स्वार्थिकेऽणि चैत्यं उद्यानम् । उत्त० ३०९ । उद्यानम् । उत्त० ४७२ ।

चेइज्ज—चेतयेत्—कुर्यात् । आचा० ३६१ ।

चेइदुमं—चैत्यद्रुमं—अशोकवृक्षम् । ।

चेइय—चैत्यं—इष्टदेवताप्रतिमा । सूर्य० २६७ । देवतायतनम् । औप० २ । व्यन्तरायतनम् । विपा० ३३ । ज्ञाता० ३ । औप० ५ । इष्टदेवप्रतिमा । औप० ५८ । चैत्यम् । आव० २८७ । ज्ञातम् । दश० ९८ । चैत्यवृक्षः । प्रश्न० ९५ । जिनबिम्बानि । बृ० प्र० २६६ अ । प्रतिमालक्षणम् । आव० ७८७ । चितेर्लेप्यादि चयनस्य भावः । कर्म्म वेति चैत्यं—सञ्ज्ञाशब्दत्वाद् देवबिम्बं, देवबिम्बाश्रयत्वात्तद्गृहमपि च । भग० ६ । इष्टदेवप्रतिमा । भग० ११५ । चितिः—इष्टकादिचयस्तत्र साधुः—योग्यः चित्यः, स एव चैत्यः—अधोबद्धपीठिके उपरिचोच्छ्रित-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पताकः । उत्त० ३०९ । ढौकितम् । बृ० द्वि० २०० आ । चैत्यं इष्टदेवतायतनम् । जं० प्र० १२३ । चैत्यं-जिनायतनम् । व्य० प्र० २०३ आ । चैत्यं-प्रतिमा । राज० १२१ ।

चेइयक्खंभ-चैत्यस्तम्भः । सम० ६४ । चैत्यवत् पूज्यः स्तम्भः चैत्यस्तम्भः । जं० प्र० ५३३ ।

चेइयघरं-चैत्यगृहम् । औघ० ३९ ।

चेइयथंभो- । जीवा० २३१ ।

चेइयथूभो-चैत्यस्तूपः । जीवा० २२८ ।

चेइयभत्ति-चैत्येषु भक्तिः चैत्यभक्तिः । आव० ५३५ ।

चेइयमहेसु- आचा० ३२८ ।

चेइयमहो-चैत्यमहः-चैत्यसत्क उत्सवः । जीवा० २८१ ।

चेइयरुक्खा-चैत्यवृक्षाः-व्यन्तरदेवानां चैत्यवृक्षाः तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया छत्रचामरध्वजादिभिरलङ्कृता भवन्ति । सम० १४ । चैत्यवृक्षाः-सुधर्मादिसभानां प्रतिद्वारं पुरतो मुखमण्डप-प्रेक्षामण्डपचैत्यस्तूपचैत्यवृक्षमहाध्वजादिक्रमतः श्रूयन्ते । ठाणां० ११७ । चैत्यवृक्षा-मणिपीठिकानामुपरिवर्त्तिनः सर्वरत्नमया उपरिच्छत्रध्वजादिभिरलङ्कृताः सुधर्मादिसभानामग्रतो ये श्रूयन्ते त एत इति । ठाणां० ४४३ । बद्धपीठवृक्षा येषामधः केवलान्युत्पन्नानीति । सम० १५६ । चैत्यवृक्षः । जीवा० २२८ ।

चेइयवंदगो-चैत्यवन्दकः । आव० ४२१ ।

चेइयाइं-चैत्यानि-भगवद्बिम्बानि । बृ० द्वि० १५५ आ । महान्ति कृतानि । आचा० ३६६ । भगवद्बिम्बानि जिन-भवनानि वा । बृ० द्वि० ४ अ ।

चेइयाणि-चैत्यानि-अर्हत्प्रतिमालक्षणानि । उपा० १३ ।

चेइस्सामो-चेतयिष्यामः-संकल्पयिष्यामः,निर्वर्तयिष्यामः। आचा० ३५०, ३६५ ।

चेए-चेतयते-जानाति, चेष्टते, करोति, अभिलषयतीति । ओघ० ११४ ।

चेएइ-चेतयते-अनुभवरूपतया विजानाति-वेदयति करोति वा । आव० २६६ । चेतयति-करोति । ज्ञाता० २०६ । ददाति । आचा० ३२५ । साधवे ददाति । आचा० ३६१ ।

चेओ-चेतः-चेतना, चैतन्यं-विज्ञानम् । विशे० ८११ ।

चेच्चं-व्यूतं विशिष्टं वानमित्यर्थः । जं० प्र० ५५ ।

चेच्चा-त्यक्त्वा । उत्त० ४४८ ।

चेटक-मन्त्रसाधनोपाय शास्त्राणि । सम० ४९ । राज० १२१ ।

चेटककथा- । बृ० द्वि० ५१ आ ।

चेटिका-मन्त्राधिष्ठितदेवविशेषः । प्रश्न० १०९ ।

चेट्ठा-चेष्टा । आव० ७७१ ।

चेट्ठियं-चेष्टितं-सकाममङ्गप्रत्यङ्गावयवप्रदर्शनपुरस्सरं प्रियस्य पुरतोऽवस्थानम् । सूर्य० २९४ । चेष्टनं-सकाममङ्ग-प्रत्यङ्गोपदर्शनादि । जीवा० २७६ । हस्तन्यासादि । प्रश्न० १३९ ।

चेड-चेटाः-पादमूलिकाः । राज० १४० । दारिकः । आव० २१२ । चेटकः-बालकः । आव० ९३ । चेटाः-पाद-मूलिकाः । भग० ३१८, ४६४ ।

चेडओ-चेटकः-शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसंम्भूतो वैशा-लिकः । आव० ६७६ ।

चेडग-चेटकः-वैशाल्यां राजा । भग० ३१६ । वैशालि-राजः । भग० ५५६ । बालकः । नंदी० १५७ । वैशालि-नगरे राजा । व्य० द्वि० ४२६ अ । वैशालानगर्याः राजा । निरय० ८ ।

चेडगधूया-चेटकदुहिता । आव० २२३ ।

चेडयकारिणो-वत्थसोहगा । नि० द्वि० ४३ चू० आ ।

चेडरूवं-चेटकरूपः । दश० ९७ । ओघ० १६३ । आव० २०५ । पुत्रः । आव० ३५४ ।

चेडा-चेटाः-पादमूलिकाः, दासा वा । जं० प्र० १९० । चेटाः-पादमूलिकाः । औप० १४ ।

चेडि-चेटी । आव० ३५७ ।

चेडी-चेटी-राजकन्या । आव० १७४ । दासी, प्रत्याख्यान-विधौ उदाहरणः । आव० ९६ । ओघ० १६३ ।

चेडो-चेटः । आव० ६५ । पुत्रः । आव० ८२४ ।

चेतः- । भग० ७०१ ।

चेतना-चेतः-चैतन्यं, विज्ञानम् । विशे० ८११ ।

चेतितं-चैत्यं जिनादिप्रतिमेव चैत्यं, श्रमणम् । ठाणा० १११ । देवकुलम् । नि० चू० प्र० २६९ अ ।

चेतितथूभा-चैत्यस्य-सिद्धायतनस्य प्रत्यासन्नाः स्तूपाः-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतीताश्चैत्यस्तूपाश्चित्ताल्हादकत्वाद्वा चैत्याः स्तूपाः चैत्य-स्तूपाः । ठाणा० २३० ।
चेतियं–चैत्यं–प्रतिमा । प्रश्न० ८,१६१ । सामान्येन प्रतिमा । ज्ञाता० ४६ ।
चेतियघरं–चैत्यगृहम् । आव० ३५५ ।
चेतेमाणे–चेतयन्तः–कुर्वन्तः । ठाणा० ३१४ ।
चेत्तो–वंसभेओ । नि० चू० प्र० २२८ आ ।
चेदी–जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
चेयकड–चेतः-चैतन्यं जीवस्वरूपभूता चेतनेत्यर्थः ते कृतानि-बद्धानि चेतःकृतानि । भग० ७०१ ।
चेयण–चेतनं चेतना–प्रत्यक्षवर्तमानार्थग्राहिणी चेतना । दश० १२५ ।
चेरं–चरणं । नि० चू० प्र० १ अ ।
चेरो–पव्वावितो । नि० चू० द्वि० २८ अ ।
चेल–वस्त्रम् । प्रज्ञा० ३५६ । चेलं–वस्त्रम् । दश० १५४ । वस्त्राणि । सम० ४१ । वासांसि । ठाणा० ३४३ ।
चेलकण्ण–चेलकर्णः–वस्त्रैकदेशः । दश० १५४ । द्रव्यशस्त्र-विशेषः । आचा० ७५ ।
चेलगोलं–वस्त्रात्मकं कन्दुकम् । सूत्र० ११८ ।
चेलणा–श्रेणिकराज्ञी । ज्ञाता० २४७ ।
चेलपेडा–वस्त्रमञ्जूषा । ज्ञाता० १४ । भग० ६६४ ।
चेलमयं– । नि० चू० द्वि० १ आ ।
चेलवासिणो–वल्कलवाससः । भग० ५१६ । औप० ६१ ।
चेला–चेटिका । औप० ७७ ।
चेलुक्खेवो–चेलोत्क्षेपकः–ध्वजोच्छ्रायः । जं० प्र० ४१६ ।
चेलेण– । आचा० ३७६ ।
चेल्लए–कलभः । आव० ६८२ । शिष्यः । दश० ३७ ।
चेल्लओ–क्षुल्लकः । आव० ३६७, ४१६ । दश० ८६ । क्षुल्लकः–शिष्यः । आव० ४१२, ४३७, ४८४ ।
चेल्लग–चेल्लकः । ओघ० ६४ । नि० चू० प्र० १५ अ । क्षुल्लकः । उत्त० १०० ।
चेल्लणा–चेल्लना–श्रेणिकराजपत्नी । आव० ६५ । शिक्षा-योगदृष्टान्ते हैहयकुलसंभूतवैशालिकचेटकसप्तमी पुत्री । आव० ६७६ । विशे० ६११ ।
कूणिकजननी । निरय० ४ ।

चेल्ललकं–देदीप्यमानम् । जीवा० १७३ ।
चेव–यथार्थः । प्रश्न० १३४ । चैवेत्यखण्डमव्ययं समुच्चयार्थं, अपिचेत्यादिवत् । जं० प्र० ७० ।
चेष्टा–ईहा । दश० १२५ ।
चैतन्यं–चेतः–चेतना, विज्ञानम् । विशे० ८११ ।
चैत्यवन्दनं–प्रतिमावन्दनम् । नंदी० १५७ ।
चैत्यविनाशो–लोकत्तमभवनप्रतिमाविनाशः । बृ० ६० आ ।
चौवालय–मालः । दश० ६८ ।
चोअं–गन्धद्रव्यम् । जं० प्र० ३५, १०० । त्वग्नामकं गन्धद्रव्यम् । जं० प्र० ६० ।
चोअअ–चौयआ–फलविशेषः । अनु० १५४ ।
चोइअ–चोदित–विद्धः । दश० २५० ।
चोइओ–चोदितः–स्खलनायाम् । आव० ७६३ ।
चोओ–गन्धद्रव्यम् । प्रज्ञा० ३६५ ।
चोक्ख–चोक्षं–स्वच्छम् । आव० ६३१ चोक्षः–लेपसिक्था-द्यपनयनेनात एव परमशुचिभूतः । भग० १६४ अहिं-सायाः चतुष्पञ्चाशत्तमं नाम । प्रश्न० ६६ ।
चोक्खा– । प्रश्न० ६६ ।
चोक्षाः–पिशाचभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।
चोज्जपसंगी–चौर्यप्रसक्तः–आश्चर्येषु कुहेटकेषु प्रसक्त इत्यर्थः । ज्ञाता० २३८ ।
चोज्जाभिसंकी– । ज्ञाता० २३६ ।
चोदना–प्रोत्साहकरणम् । व्य० प्र० २० आ ।
चोद्दधिज्जाइय– । बृ० प्र० २४८ अ ।
चोद्दहजण–तरुणलोकः । ज्ञाता० २१६ ।
चोप्पडं–स्नेहः । ओघ० १४५ ।
चोप्पालगो–चोप्पालको नाम प्रहरणकोशः । जीवा० २५७ ।
चोप्पाले–प्रहरणकोशः । भग० १७२ । प्रहरणकोशः–प्रहरणस्थानम् । राज० ६३ ।
चोप्फाल–चोप्फालं नाम मत्तपारणम् । जं० प्र० १२१ ।
चोयं–ण्हारुणिभागाणे जे केसरा तं चोयं भणणति । नि० चू० द्वि० १२४ आ । भिन्नं चउभागादी तया चोयं भणणति, नक्खादिभिः अक्खुं अंबसालमित्यर्थः । नि० चू० द्वि० १२४ आ । वंसहीरसंठितो चोयं भणणति । नि०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चू० तृ० २३ अ। त्वक्। बृ० द्वि० १२६ अ। गन्धद्रव्यम्। जीवा० २६५, ३५१। त्वक्। प्रश्न० १६२। भग० ७१३।

चोयगं–गन्धद्रव्यम्। जीवा० १६१।

चोयगसमुग्गयं–चोयकसमुद्गकम्। जीवा० २३४।

चोयगो–पीलितेक्षुच्छोदिका। आचा० ३५४।

चोयना–स्खलितस्य पुनः शिक्षणं चोदना। व्य० द्वि० ७२ आ।

चोयपुड–त्वक्पुटं पत्रादिमयं तद्भाजनम्। ज्ञाता २३२।

चोयासव–चोयो–गन्धद्रव्यं तत्सारः आसवश्चोयासवः। जीवा० ३५१। चोओ–गन्धद्रव्यं तन्निष्पाद्य आसवः चोयासवः। प्रज्ञा० ३६४।

चोरकहा–चोरकथा–गृहीतोऽद्य चौरं इत्थं च कदर्थितः इत्यादिका। दश० ११४।

चोरग– । भग० ८०२।

चोरग्गाहो–चोरग्राहः–आरक्षकः। आव० ४३५। दश० ५२। उत्त० २१८।

चोरदन्तः– । प्रज्ञा० ४७३।

चोरपलिकोट्टं–कोलिन्दकोट्टं। नि० चू० द्वि० १२८ अ।

चोरपल्लि–चौरपल्ली। आव० ३७०।

चोरपल्ली– । आव० ६६।

चोरवंदपागड्डिको–चौरवृन्दप्रकर्षकः–तत्प्रवर्त्तकः। प्रश्न० ५०।

चोरसाहिए– । ज्ञाता० ४६।

चोरा– । भग० ८०२।

चोराय–चोराकं नाम सन्निवेशः। आव० २०६। चौरा। आव० २०२।

चोरिक्कं–चोरणं चोरिका सैव चौरिक्यं, अधर्मद्वारस्य प्रथमं नाम। प्रश्न० ४३।

चोरियं–चौर्यम्। आव० ३५४।

चोरी–चौरी। दश० ४१।

चोरोद्धरणिक–देसारक्खिओ। नि० चू० प्र० १६५ आ।

चोल–चोलपट्टकः। ओघ० १११।

चोलक–बालचूडाकर्म, शिखाधारणमिति। प्रश्न० १४०।

चोलकः– । विशे० ३५३।

चोलकादीनि संघातिमानि। आचा० ४१४।

चोलगं–चूडापनयनं–बालकप्रथममुण्डनम्। प्रश्न० ३६।

चोलपट्टको–चोलपट्टकः–परिधानवस्त्रः। प्रश्न० १५६।

चोलपट्टागारो–चोलपट्टाकारः। आव० ८५४।

चोला–चूडा–बालानां चूडाकर्म। आव० १२६।

चोलोयणगं–चूडाधरणम्। भग० ५४४।

चोलोवणयं–चूडापनयनं–मुण्डनम्। ज्ञाता० ४१।

चोल्लए–भोजनम्। उत्त० १४५।

चोल्लक–मनुष्यभवदृष्टान्ते ब्राह्मणविशेषः। आ० ३४१।

चोल्लकादि– । आचा० ३२५।

चोल्लगं–परिपाटीभोजनम्। उत्त० १४५।

चोल्लग–चोल्लकं–भोजनम्। पिण्ड० ११३। नि० चू० प्र० २६६ अ। भोजनम्। आ० ३४१।

चौद्दसम–चतुर्दशं–उपवासषट्कम्। जं० प्र० १५८।

चौपग–चरः। नि० चू० प्र० ३२६ अ।

चौर्ण–बाहुलकविधिबहुलं, गमपाठबहुलं, निपातबहुलं, निपाताव्ययबहुलं ब्रह्मचर्याध्ययनवत्। जं० प्र० २५६।

च्युताच्युतश्रेणिकः– । नंदी० २३६।

छ

छंटेउं–छण्टयति। आव० ८००।

छंद–छन्द–गुर्वभिप्रायः। आव० १००। अभिप्रायः। दश० १७१। स्वाभिप्रायः। आचा० ७८। अभिप्रायोबोधः। भग० ५०२। अभिप्पाओ। नि० चू० प्र० २१७ आ। आयारो। नि० चू० प्र० ३४ अ। गम्यागम्यविभागः। गणां० २१०। देशछन्दः–देशेष्टं, गम्यागम्यादिविचारः, देशकथायाः प्रथमभेदः। आव० ५८१। प्रार्थनाऽभिलाषः, इन्द्रियाणां स्वविषयाभिलाषो वा। सूत्र० १६१। तत्तद्वस्तुविषयाभिलाषात्मिका इच्छा वा। उत्त० २२३। पद्यवचनलक्षणशास्त्रम्। ओप० ६३। छन्दः–पद्यवचनलक्षणनिरूपकः। ज्ञाता० ११०। पद्यलक्षणशास्त्रम्। भग० ११२। छन्दनं छन्दः–परानुवृत्त्याभोगाभिप्रायः। आचा० १२७। छन्दात्–स्वकीयादभिप्रायविशेषात्। ठाणा ४७४।

छंदए–छन्दयति–निमन्त्रयति। बृ० द्वि० २२८ आ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंदणा–छन्दना प्राग्गृहीतेनाशनादिना कार्या । ठाणा० ४६६ । आव० २५६ । पूर्वगृहीतेनाशमादिना गुर्वाज्ञया यथार्हाणां निमन्त्रणं एषा ज्ञेया विशेषविषयेति छन्दना । ठाणां० ४६६ । छन्दना पूर्वगृहीतेन भक्तादिना । भग० ६२० । पूर्वानीताशनादिपरिभोगविषये साधूनामुत्साहना छन्दना । अनु० १०३ ।

छंदणिरोहे–छन्दो-वशस्तस्य निरोधः छन्दोनिरोधः–स्वच्छन्दतानिषेधः । उत्त० २२२ । छन्दसा वा–गुर्वभिप्रायेण निरोधः–आहारादिपरिहाररूपः छन्दोनिरोधः । उत्त० २२३ ।

छंदतो–परिया । नि० चू० प्र० १२५ आ ।

छंदयति–आमन्त्रयति । ओघ० १४३ ।

छंदा– । ठाणा० ४७३ ।

छंदाणुवत्तणं–छंदोऽनुवर्त्तनं–अभिप्रायानुवृत्तिः । सम० ६५ । ज्ञाता० ६२ ।

छंदिअ–छन्दित्वा–निमन्त्र्य । दश० २६६ ।

छंदिओ–णिमंतितो । नि० चू० द्वि० ३२ अ । छन्दितः–अनुज्ञातः । ओघ० १३६ ।

छंदिता–णिमंतिता । नि० चू० प्र० १५६ अ ।

छंदिया–निमंतेऊण जति पडिग्गाहिता । दश० १४६ ।

छंदेणं–स्वाभिप्रायेण यथेष्टमित्यर्थः । भग० ६८४ । छंदसा । बृ० प्र० ७७ आ । छन्देन–द्वादशावर्त्तवन्दने गुरुवाक्यमेतत् । ओघ० १३६ ।

छंदोगारण्णगादि– नि० चू० प्र० २४ आ ।

छंनंति–छिप्पंति–क्षिप्यन्ते, हिंस्यन्ते । दश० २०४ ।

छउमं–छादयतीति छद्म–पिधानम्, ज्ञानादीनां गुणानामावारकत्वात्–ज्ञानावरणादिलक्षणं घातिकर्म । आव० ५८३ । छद्म–कर्म । आव० १३४ । शठत्वं, आवरणं वा । भग० ७ । छादयतीति छद्म–ज्ञानावरणादिकर्म । उत्त० १२६ । छादयतीति आवरयतीति छद्म–घातिकर्मचतुष्टयम् । जीवा० २५६ । छाद्यते येन तच्छद्म–ज्ञानावरणादिघातिकर्मचतुष्टयम् । ठाणा० ३०५ । छादयत्यात्मस्वरूपं यत्तच्छद्म । ठाणा० ५३ । छद्म–शठत्वमावरणं वा । सम० ४ । छद्म–ज्ञानदर्शनावरणीयमोहनीयान्तरात्मकम् । आचा० ३१५ । छादयन्तीति छद्म–घातिकर्मचतुष्टयम् । राज० ११० ।

छउमत्थ–छद्मस्थः–अवधिज्ञानरहितः । भग० ६६ । छद्मस्थो–निरतिशयज्ञानयुक्तः । ओघ० १०६ । विशिष्टावधिज्ञानविकलः । प्रज्ञा० ३०३ । छद्मस्थः–छद्मनि स्थितः छद्मस्थः–अनतिशयी । नि० चू० प्र० १५२ अ । छादयतीति छद्म–ज्ञानावरणादि तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः । ठाणा० १७१ । अकेवली । ठाणा० ५३ । ज्ञानावरणादिघातिकर्म्मचतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः सकषाय इत्यर्थः । ठाणा० ३०५ । ज्ञानावरणादिघातिकर्म्मचतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः–अनुत्पन्नकेवलज्ञानदर्शनः । ठाणा० ४०४ । छद्मस्थ–इह निरतिशय एव द्रष्टव्यः । ठाणा० ५०६ ।

छउमत्थमरणं–छद्मस्थमरणं–मरणस्यैकादशो भेदः । उत्त० २३० । अकेवलिमरणम् । मरणस्यैकादशो भेदः । सम० ३३ ।

छए–क्षतः–परवशीकृतः । सूत्र० ७२ ।

छकोडीए–षट्कोटीकः । जीवा० २३१

छक्कट्ठक–षट्काष्ठकं–गृहस्थबाह्यालन्दकं षट्दारुकं, द्वारम् ज्ञाता० १४१ ।

छक्कमरयं–षट् कर्माणि यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहात्मकानि तेषु रतौ–आसक्तौ षट्कर्मरतौ । उत्त० ५२१ ।

छक्कायविउरमणं–षट्कायानां विराधनम् । ओघ० १२७।

छक्कायविओरमणं–षट्कायव्युपरमणम् । ओघ० १२७ ।

छक्कोहिसमज्जिया–एकत्रसमये येषां बहुनि षट्कानि उत्पन्नानि ते षट्कैः समर्जिताः । भग० ७६७ ।

छक्कोडि–षट्कोटि शुद्धं नाम यत् स्वभावतः षट्स्वपि दिक्षु शुद्धम् । बृ० प्र० ५८ अ ।

छगं–पुरीषम् । ओघ० ४१ ।

छगणधम्मिय–छगणधार्मिकः–गोमयोपलक्षितो धार्मिको दृष्टान्तः । पिण्ड० ८२ ।

छगणियछारो–गोमयछारेण तत्पात्रकं गुण्डयते । ओघ० १४४ ।

छगडिया–गोमयप्रतरः । अनुत्त० ५ ।

छगमुत्ते–छगणमूत्रे–पुरीषप्रश्रवणे । बृ० द्वि० २१४ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छगलगगलवलया–छगलकस्य पशोर्गलं–ग्रीवां वलयन्ति–मोटयन्ति ये ते छगलकगलवलकाः । पिण्ड० ६८ ।

छगलपुरं–सिंहगिरिराजधानी । विपा० ६५ ।

छगलयं–छगलकम् । आव० २१२ ।

छगलीए– । विपा० ६५ ।

छज्जइ–राजते । जं० प्र० २०२ ।

छज्जीवकायसंजमु–षण्णां जीविनिकायानां पृथिव्यादिलक्षणानां संयमः–सङ्घट्टनादिपरित्यागः षड्जीवकायसंयमः। आव० ४६२ ।

छज्जीवणियज्झयणं–षड्जीवनिकाध्ययनं, दशवैकालिके चतुर्थमध्ययनम् । दश० १२० ।

छट्टं–षष्ठं–उपवासद्वयरूपम् । जं० प्र० १४५ ।

छट्टण्णकालिओ–षष्ठान्नकालिकाः । आव० ३५२ ।

छट्टभत्तं–षष्ठभक्तम् । आव० ३५२ ।

छट्टाण–पासत्थो उसण्णो कुसीलो ससत्तो अहाछंदोणिति तो य । नि० चू० प्र० २६१ अ ।

छट्टोपक्खेणं– । आचा० ४२१ ।

छडछड– । विपा० ७२ ।

छडालं–व्याप्तम् । पउ० २८–११६ ।

छड्डणं–छर्दनं वाताहिद्रव्यप्रयोगकृतम् । विपा० ८१ । परित्यागः । ओघ० ४६ । छर्दनम् । ओघ० १५२ । छर्दनं–वमनम् ऊद्ध्र्वादिदोषः । ओघ० १३६ । वमनम् । ओघ० १६४ । उज्झनं–क्षालनजलत्यागः । दश० २०३ । परित्यागः । ओघ० ४६ ।

छड्डणाइं–छर्दादयः । ओघ० ४६ ।

छड्डणिका–छर्दने–परिष्ठापने । बृ० प्र० ८६ आ ।

छड्डन–प्रोज्झनम् । ओघ० १६२ ।

छड्डावण–छड्डावेति–त्याजयति । ओघ० १४६ ।

छड्डाविओ–त्याजितः । आव० २१२ ।

छड्डिअ–छर्दितं–गृहस्थैर्दत्तम् । अनु० २१६ ।

छड्डिय–परिशाटवत् । दशम एषणादोषः । आचा० ३४५ । छर्दितं भूमावावेडितं, दशम एषणादोषः । पिण्ड० १४७ ।

छड्डी–छर्दी–व्याधिविशेषः । आचा० ३६२ ।

छड्डे–त्यजति । आव० ६४६ ।

छड्डेऊण–त्यक्त्वा । आव० २२६ ।

छड्डेज्ज–छर्दि विद्ध्यात् । आचा० ३३० ।

छड्डेति–त्यजेत् । आव० ३६५ ।

छड्डेत्ता–त्यक्त्वा । आव० ३२४ ।

छण–जत्थ विसिट्ठं भत्तपाणं उवसाहिज्जति । नि० चू० तृ० १४ आ । इन्द्रोत्सवादिलक्षणः । भग० ४७३ । ऊसवो । नि० चू० द्वि० २०० आ । जत्थ एकंतविसेसे कज्जति सो छणो । नि० चू० द्वि० १६२ अ । क्षणं–इन्द्रमहादि । व्य० द्वि० ३४२ आ । ज्ञाता० ५६ । क्षणः उत्सवः । ओघ० ४६ । ज्ञाता० ६६ । क्षणनं क्षणः–हिंसनम् । आचा० १४८ । अवसरः । आचा० १४८ । क्षणः । आव० २२०, २७३, ६६२ । क्षणः–बहुलोकभोजनदानादिरूपः । ज्ञाता० ८१ ।

छणदिवस–क्षणदिवसः–क्षणमात्रदिवसः । आव० ६६२ ।

छणपए–क्षणपदः–हिंसास्पदेन प्राण्युपमर्दजनितः । आचा० १४७ ।

छणिए–छगलीविशेषः । विपा० ६५ ।

छणूसवे–क्षणः–प्रतिनियतः कौमुदीशक्रमहादिकः, उत्सवः–पुनरनियतो नामकरणचूडाकरणपाणिग्रहणादिकः, अथवा यत्र पक्वान्नविशेषः क्रियते स क्षणः, यत्र तु पक्वान्नं विनाऽपरो भक्तविशेषः स उत्सवः । प्र० बृ० १०४ अ ।

छणुसवियं–छणो ऊसवो छणूसवो तम्मि जं परिहिज्जति तं छणूसवियं । नि० चू० द्वि० १६२ अ ।

छण्णं–अभ्यन्तरम् । ओघ० ६१ । प्रछन्नम् । ठाणा० ४८४ ।

छण्णकडए–छिन्नकटके । आव० ३५० ।

छण्णमंडवं–जस्स गामस्स णगरस्स वा उग्गहे सव्वासु दिसासु अण्णो गामो नत्थि गोकुलं वा तं छण्णमंडवं । नि० चू० प्र० ३४१ आ ।

छण्णालए–षण्नालकानि त्रिकाष्ठिकाः । औप० ६५ । छण्णालकः–त्रिकाष्ठिका । ज्ञाता० १०५ ।

छतिपुत्तो–छातीसुतः–दाढादालः । जीवा० १२१ ।

छत्तंतिय–छत्रवती । बृ० प्र० ५६ आ ।

छत्तंतिया–छत्रान्तिका । बृ० प्र० ६० आ ।

छत्त–छत्रं–आचार्यः । बृ० द्वि० १८४ आ । छादयतीति छत्रं–वर्षाकल्पादि । आचा० ४०३ । छत्रं–आतपत्रम् ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशा० ११७ । छत्रं-छत्राकारो योगः । सूर्य० २३३ । कउगो । नि० चू० प्र० २८४ अ । ज्ञाता० ३८ ।

छत्तइल्लो-छत्रवान् । उत्त० ६७ ।

छत्तकारे-छत्रकारः-शिल्पभेदः । अनु० १४६ ।

छत्तग्गा-छत्राग्रा-जितशत्रुराजधानी । आव० १७७ ।

छत्तछाया-छत्रच्छाया । आव० ३४१ । प्रज्ञा० ३३७ ।

छत्तज्झया-छत्रध्वजाः-छत्रचिह्नोपेता ध्वजाः । जीवा० २१५ ।

छत्तधारो-छत्रधरः । आव० २०४ ।

छत्तपलासए-छत्रपलाशं-स्कन्दकचरिते 'कयंगला'नगर्यां चैत्यम् । भग० ११२, १२३ ।

छत्तयं-छत्रकम् । आव० ३०५ । आतपत्रम् । भग० ११३ ।

छत्तरयणे-चक्रवर्त्तिन एकेन्द्रियं द्वितीयं रत्नम् । ठाणां० ३९८ ।

छत्तसंठिआ-छत्रसंस्थिताः । जीवा० २७६ ।

छत्तसंठिया-छत्रं-आतपत्रं तत्संस्थितमिव संस्थितं संस्थानमस्या इति छत्रसंस्थिताः । उत्त० ६८५ ।

छत्ताइछत्ता-छत्रातिच्छत्राणि-उपर्युपरिस्थितातपत्राणि । सूर्य० २६३ । छत्राल्लोकप्रसिद्धादेकसंख्याकाद् अतिशायीनि द्विसङ्ख्यानि त्रिसङ्ख्यानि वा छत्राणि छत्रातिच्छत्राणि । जं० प्र० ४४ । छत्रादुपर्यन्यान्यच्छत्रभावतोऽतिशायि छत्रं छत्रातिछत्रं तदाकारो योगः । सूर्य०२३३ ।

छत्तागारसंठिता-छत्राकारसंस्थिताः । सूर्य० ३६ ।

छत्तारा-छत्रकाराः, शिल्पार्यभेदः । प्रज्ञा० ५६ ।

छत्तावं- । भग० ८०४ ।

छत्ताहे- । सम० १५२ ।

छत्ति-दोषाच्छादनम् । आव० ७८२ ।

छत्तीसमट्टिया-षट्त्रिंशच्छोधकाः । मर० ।

छत्तोए-कुहुणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

छत्तोववणे- । भग० ३६ ।

छत्तोह-छत्रोपगः, वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । भग० ८०३ ।

छत्रकं-वंशमयमातपत्रम् । बृ० द्वि० २५३ अ ।

छदिसाअरो-षड्दिशाचरः । आव० २१४ ।

छद्दि-छर्दिः-दोषविशेषः । आव० ८६० ।

छद्दोसो-षड् दोषाः । ठाणा० ३६४ ।

छद्मस्थवीतरागः-जिनः । आव० ५०१ ।

छन्नं-माया । सूत्र० ६६ । स्वदोषाणां परगुणानां वाऽऽवरणम् । प्रश्न० २७ । प्रतिच्छन्नं प्रच्छन्नं-अतिलज्जालुतयाऽव्यक्तवचनम् । भग० ६१६ । दर्भादिभिरुछादितः । आचा० ३६१ । छन्नः-व्याप्तः । जीवा० १८८ ।

छन्नपदं-छद्मपदं-कपटजालम् । सूत्र० १०५ । गुप्ताभिधानं वा । सूत्र० १०५ ।

छन्नपदोपजीवी-मातृस्थानोपजीवी । सूत्र० ३६८ ।

छन्नपरिछन्ना-अत्यन्तमाच्छादिताः । जं० प्र० ३० ।

छन्ना-व्याप्ताः । जं० प्र० ३० ।

छन्नामं-भग० ७२२ ।

छन्नालयं-षड्नालकम् त्रिकाष्ठिका । भग० ११३ ।

छपत्रिक-आभरणविशेषः । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

छप्पइ-षट्पदिका-यूका । आव० ५७४ ।

छप्पओ-षट्पदः-भ्रमरः । जीवा० १६८ ।

छप्पगा- । नि० चू० तृ० १२ अ ।

छप्पतिगिल्ले-यस्याः षट्पदिकाः प्राचुर्येण सम्मूर्च्छन्ति स षट्पदिकावान् । बृ० द्वि० २२२ अ ।

छप्पय-षट्पदः-भ्रमरः । जीवा० १२३ ।

छप्पया-षट्पदिका-यूका । आव० २१३ ।

छप्पाए-पुच्छेन । ओघ० १८० ।

छप्पुरिमं-पुव्वं दायव्वं । नि० चू० प्र० १८२ अ ।

छप्पुरिमा-तत्र वस्त्रे प्रसारिते सति चक्षुषा निरूप्य तदर्वाग्भागं तत्परावर्त्य निरूप्य च त्रयः पुरिमाः कर्त्तव्याः, प्रस्फोटका इत्यर्थः । ठाणां० ३६१ ।

छब्ब-छब्बकम् । पिण्ड० १५५ ।

छब्बए-वंशपिटकं शकुनिगृहकं वा । ओघ० १८४ ।

छब्बगं-छब्बकं-पटलिकादिरूपम् । पिण्ड० ६० ।

छब्बगवारगमाई-छब्बकवारकादिकमनेकविधं भाजनं परस्थानम्, छब्बकं पटलिकादिरूपं वारकः-लघुर्घटः ।

छब्भागे-षड्भागः-षष्ठोभागः । जं० प्र० ४५६ ।

छब्भामरी-वीणाविशेषः । ज्ञाता० २२६ ।

छम-क्ष्मा-भूमिः । दश० २७५ ।

छमासिआ-षण्मासिकी, षष्ठिभि, क्षुप्रतिमा । ज्ञाता० ७२ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम० २१ ।
छम्मं–छद्म । आ० १७३ ।
छम्मा–भूमि । दश० चू० १५७ ।
छम्माणि–षण्माणी ग्रामविशेषः । आव० २२६ ।
छम्मासिएसु– । आचा० ३२७ ।
छाया–जलादौ प्रतिबिम्बलक्षणा शोभा वा । ज्ञाता० १७०।
छरु–त्सरुः खड्गादिमुष्टिः । प्रश्न० ८० । जीवा० २७० ।
छरुप्पगयं–त्सरुप्रगतं क्षुरिकादिमुष्टिग्रहणोपायजातम् । प्र० ९७ ।
छरुप्पवायं–त्सरुः खड्गमुष्टिस्तदवयवयोगात् त्सरुशब्देनात्र खड्गा उच्यते, अवयेव समुदायोपचारः, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत्त्सरुप्रवादं, खड्गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थः । जं० प्र० १३९ । ज्ञाता० ३८ ।
छरुहा–थासकाः–आदर्शगण्डप्रतिबद्धप्रदेशाः । आदर्शगण्डानां मुष्टिग्रहणयोग्याः प्रदेशाः । जं० प्र० ५७ । छरुको-मुष्टिग्रहणस्थानम् । ज्ञाता० २१९ ।
छर्दितं–उज्झितं, त्यक्तम् । पिण्ड० १६९ ।
छलं–छलं-वचनविघातोऽर्थविकल्पोपपत्त्या,सूत्रदोषविशेषः । आव० ३७५, ५५७ । अनिष्टस्यार्थान्तिरस्य सम्भवतो विवक्षितार्थोपघातः कर्तुं शक्यते तत् । अनु० २६१ ।
छलओ–छलितो–व्यंसितोऽनर्थं प्राप्तः । ज्ञाता० १६९ ।
छलणं–छलनं प्रक्षेपणम् । आचा० ३७५ ।
छलणा–छलना । आव० ८५५ । अशुद्धभक्तादिग्रहणरूपा । पिण्ड० ७० ।
छलदोस–दोषषट्कम् । मर० ।
छलायतणं–छलं–नवकम्बलो देवदत्त इत्यादिकं छलायतनम्, षडायतनं वा–उपादानकारणानि आश्रवद्वाराणि श्रोत्रेन्द्रियादीनि यस्य कर्मणस्तत् छलायतनम् । सूत्र० २१६ ।
छलिअकहा–षट्प्रज्ञकगाथाः । ओघ० ५५ ।
छलिए–स्खलितम् । ओघ० २२५ ।
छलिकमार्ग–गीतकलायाः द्वितीयो भेदः । सम० ८४ ।
छलिय–छलितानि शृङ्गारकथाकाव्यानि । बृ० द्वि० ५१ आ ।
छलियादिकव्वकहा– । नि० चू० द्वि० ३५ आ ।
छलुए–द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायलक्षणषट्पदार्थप्ररूपकत्वाद् गोत्रेण च कौशिकत्वाद् षडुलुकः । ठाणा० ४१३ । षडुलूकः । दश० ५८ ।
छलुग–षट्पदार्थप्रणयनाद् उलूकगोत्रत्वाच्च षडुलूकः । उत्त० १५३ । नि० चू० तृ० ९८ आ । षडुलूकः–यस्मात्त्रैराशिका उत्पन्ना स आचार्यः । आव० ३२१ ।
छलुगा–षडुलूकात् त्रिराशिकानामुत्पत्तिस्थानम् । आव० ३१२ । त्रैराशिकानामुत्पत्तौ स्थानम् । विशे० ९३४ ।
छलेज्जा–छलेत् । आव० ६३३ ।
छल्लि–अभ्यन्तरं वल्कम् । ठाणा० १८६ ।
छल्ली–बाह्या त्वक् । बृ० प्र० १६२ अ । छल्लिः–रोहिणीप्रभृतिः । विपा० ४१ । ज्ञाता० १८३ । छल्ली–वल्कलरूपा । प्रज्ञा० ३६ ।
छल्लेउं–निस्त्वचीकृत्य । उत्त० २१९ ।
छल्लयः–त्वचः । प्रज्ञा० ३१ ।
छवडिया–चर्म । ओघ० २१७ ।
छवि–अलङ्कारविशेषः । अनु० २६२ । शरीरम् । आव० ८१९ । त्वक् । उत्त० २५१ । त्वक् छाया वा । जीवा० ११४ । शरीरम् । ठाणां० ३३७ । छविः–शरीरम् । भग० २१८ । शरीरत्वग् । भग० ३०८ । छविदोषः–छविः–अलङ्कारविशेषस्तेन शून्यं, सूत्रस्य त्रयविंशतितमो दोषः । आव० ३७४ । छवी–शरीरत्वक् । प्रश्न० ६० । त्वक्तद्योगादौदारिकशरीरं तद्वती नारी तिरश्ची वा तद्वान्नरस्तिर्यग्वा छविरिति उच्यते । ठाणा० १९३ । क्षयिः–व्यवस्थाविशेषः । ठाणा० ४०९ । क्षपिः–स्वपरयोरायासः । भग० ९२५ ।
छविअट्ट–यत् स्निग्धत्वग्द्रव्यं मुक्ताफलरक्ताशोकादिकं तत् । सूत्र० ३८६ ।
छविग्गहिते–षड्विग्रहिकः । जीवा० २३१ ।
छविच्छदो–हस्तपादनासिकादिच्छेदः । ठाणा० ३९९ ।
छविच्छेए–छविच्छेदः–शरीरपाटनम् । आव० ८१८ ।
छविच्छेओ–छविच्छेदः–शरीरच्छेदनम्, प्राणवधस्यैकविंशतितमः पर्यायः । प्रश्न० ६ ।
छविच्छेद–शरीरच्छेदः । भग० २१८ ।
छवित्ताणं–छविः–त्वक् त्रायते–शीतादिभ्यो रक्ष्यतेऽनेनेति छवित्राणं वस्त्रकम्बलादि । उत्त० ८८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छविदोसो–छविः–अलङ्कारविशेषस्तेन शून्यं छविदोषः, सूत्रस्य त्रयविंशतितमो दोषः । अनु० २६२ ।
छविपत्ता–छविः प्राप्ता जातेत्यर्थः । ठाणा० ६७ ।
छविपव्वा–छवि–मतुब्लोपाच्छविमन्ति–त्वग्वन्ति पर्वाणि सन्धिबन्धनानि छविपर्वाणि । ठाणा० ६७ ।
छविमत्य:–औषधिविशेषाः । आचा० ३६१ ।
छवियत्ता–छवियोगाच्छविः स एव छविकः, स चासौ 'अत्त'त्ति आत्मा–शरीरं छविकात्मा । ठाणा० ६७ ।
छवी–छविमान्, उदात्तवर्णया सुकुमारया च त्वचा युक्तः । जीवा० ७७ । कमलादिसेंगा । नि० चू० प्र० २७३ आ ।
छव्विया–छविकाः–कटादिकाराः । प्रज्ञा० ५६ ।
छाउद्देसे–छायोद्देशः । सूर्य० ६६ ।
छाए–सदृशः । भग० ७५४ ।
छाएउ–छदित्वा; ढंकिउं । आव० ६६१ ।
छाएल्लय–छायार्थी । उत्त० ११६ ।
छाओ–बुभुक्षितः । ओघ० १८६ । छातः–बुभुक्षितः । पिण्ड० १७६ ।
छागलिकः– । ठाणा० ५०८ ।
छागले– । विपा० ६६ ।
छाण–छादनं–दर्भादिमयं पटलमिति । भग० ३७६ । छाणं–आच्छादनम् । जीवा० १८० । नि० चू० प्र० ७ अ ।
छाणपिंडो–छगण(गोमय)पिण्डः । आव० ४२२ ।
छाणविच्छुय–छगणवृश्चिकः, चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।
छाणविच्छुया–चतुरिन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।
छाणा– । दश० चू० ४४, ५५ ।
छाणिय–क्षालितो–गालितः । बृ०प्र० ८१ अ ।
छातो–क्षुधितः । नि० चू० प्र० ३५४ अ ।
छादयति–आवरयति । जीवा० २५६ ।
छायंति–प्राकृतत्वात् छायावन्तः शोभमानशरीराः । सम० १५६ ।
छाय–क्षुधितः । नि० चू० प्र० २८६ अ ।
छायणं–छादनं–स्थगनम् । आव० २६४ । दर्भादिपटलकरणम् । प्रश्न० १२७ । छज्जकरणं छायणं । नि० चू० प्र० २३० आ ।
छायणओ–छादनतः–अनुष्ठानभेदः । आचा० ३६८ ।
छाया–शङ्कुछाया । बृ० प्र० ४२ अ । शङ्क्वादिप्रतिच्छायारूपा छाया । विशे० ४३६ । प्रभया आतपाभावलक्षणया युक्ता । सम० १५५ । आकारः । राजा० ७४ । प्रतिबिम्बम् । उपा० २६ । उन्नतिः । उप० मा० गा० ३२७ । छारा(ताः) कसघातव्रणाङ्कितशरीराः । दश० २४८ । दीप्तिः । जीवा० १६१ । प्रभा । बृ० प्र० १५४ आ । सन्निभा । उत्त० ६५२ । समुदायशोभा । प्रज्ञा० ८८ । आकारः–छायाशब्दआतपप्रतिपक्षवस्तुवाची । जीवा० १८७ । जं० प्र० २८ । कीर्त्तिः । नि० चू० द्वि० १३४ आ । दीप्तिः । औप० १६ । शोभा । भग० १३२ । औप० ५० । छयति छिनत्ति वाऽऽतपमिति छाया । उत्त० ३८ । आतपवारणलक्षणा । प्रश्न० ७६ । औप० ६७ । दीप्तिः । सम० १४० । शरीरप्रभा । जीवा० २७७ । प्रकृतिः । भग० ६८३ । शैत्यगुणा । उत्त० ५६१ । कान्तिः । जं० प्र० ५७ ।
छायागती–छायामनुसृत्य तदुपष्टम्भेन वा समाश्रयितुं गतिः छायागतिः–विहायोगतेर्नवमो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।
छायाणुमाणप्पमाणं–छायानुमानप्रमाणम् । सूर्य० ६८ ।
छायाणुवातगती–छायायाः स्वनिमित्तपुरुषादेरनुपातेन–अनुसरणेन गतिः छायानुपातगतिः, विहायोगतेर्दशमो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।
छायाणुवादिणो–छायानुवादिनी । सूर्य० ६५ ।
छायालीसं–षट्चत्वारिंशत् । पिण्ड० १७६ ।
छारं–क्षारं–रक्षा । ओघ० १४२ । आव० ३०८, ६२१ । भस्म । आव० २१८ । क्षारम् । आव० ३०८ । भूतिः । ओघ० १४३ । क्षारः–भूतिः । ओघ० १४० । क्षारः भस्म । बृ० प्र० ८० अ ।
छारकयार–भस्मकचवरः । आव० २१८ ।
छारा–भोया । नि० चू० द्वि० १०४ अ । क्षाराः–क्षारावगुण्ठितवपुषः । पिण्ड० ६८ ।
छारिए–क्षारकं–भस्म । भग० २१३ ।
छारिय–क्षारराशिः । दश० १६४ ।
छारियब्भूय– । भग० १६६ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छारुज्झियं–क्षारोज्झिकां–भस्मपरिष्ठापिकाम् । ज्ञाता० ११७।
छारो–अभिणवडड्ढं अपुंजकयं छारो । नि० चू० प्र० १९२ अ ।
छावट्ठे–षट्षष्टिः । सूर्य० ११ ।
छावण–छादनं–दर्भादिभिराच्छादनम् । बृ० प्र० ९२ अ ।
छाहि–छाया । आव० ७०६ ।
छाही–छाया । आव० ४१५, ६२४ ।
छिंडिका–गृहद्वायान्तरस्थः प्रलम्बगमनमार्गः । पिण्ड० १०५ ।
छिंडिया–छिण्डिका । आव० ३४९ । छिण्डिका–वृत्तिच्छिद्ररूपा । ज्ञाता० ७७ ।
छिंदंति–व्यवस्थां स्थापयन्ति । बृ० प्र० ११० अ ।
छिंद–छिन्द–द्विधाकुरु । ज्ञाता० २३८ ।
छिंदइ–छेदं करोति । भग० १७५ ।
छिंदति–छिनत्ति–करोति । अन्त० १६ ।
छिंदावेमि–छेदयामि । आव० २२४ ।
छिंदिज्ज–छिन्द्यात्–मार्जारीमूषकादिभिर्वा पुरतो यायात् । आव० ७८४ ।
छिंपकः–कारुकजातिविशेषः । प्रश्न० ३० ।
छिंपाय–कारुकजातिविशेषः । जं० प्र० १९४ ।
छिइए–क्षुतम् । आव० ७७९ ।
छिक्क–स्पृष्टः । आव० ४१८ । पिण्ड० ७० । स्पृष्टवान् । बृ० द्वि० ६२ आ । नि० चू० प्र० ३४५ अ । हतः । आव० ४१७ ।
छिक्का–स्पृष्टा । आव० २०२ ।
छिक्कोवणा–शीघ्रकोपनः । बृ० तृ० २२५ अ ।
छिज्जमाणे छिन्ने–कुठारादिना लतादिविषयच्छेदः । भग० १९ ।
छिज्जेज्ज–संछिद्येत–द्विधा क्रियते । अनु० १९१ ।
छिड्ड–छिद्रं महत्तरं रन्ध्रम् । भग० ८३ । अल्पपरिवारत्वम् । विपा० ७३ । छिद्रः–छेदनस्यास्तित्वच्छिद्रम् । भग० ७७६ ।
छिड्डकुडे–छिद्रकुटः । आव० १०१ ।
छिड्डविच्छिड्ड–बृहल्लघुच्छिद्रांकितम् । (तं०)
छिड्डाइं–छिद्राणि । आव० ६६ ।
छिड्डाणि–छिद्राणि–अल्पपरिवारादीनि । निरय० १२ ।
छिण्ण–स्त्यान–कठिन मदीयात्यन्तानुकूलचरितात्द्रवीकृतहृदयत्वात् । ज्ञाता० १६७ ।
छिण्णकंटे– । नि० चू० तृ० १७ अ ।
छिण्णछेदयणवत्तव्वया–छिन्नच्छेदकवक्तव्यता । आव० ३१६ ।
छिण्णछेयणयं–छिन्नच्छेदनकं–अनुप्रवादपूर्वे वक्तव्यताविशेषः । उत्त० १९३ ।
छिण्णद्धाण–छिन्नाध्वा । आव० २०८ ।
छिण्णब्भं–एगं अब्भयं । नि० चू० द्वि० १४६ आ ।
छिण्णसम्मं–तथाऽधिकमांसादिच्छेदाच्छिन्नसम्यक् । आचा० १७६ ।
छिण्णसोए–छिन्नश्रोताः–छिन्नसंसारप्रवाहः, छिन्नशोको वा । जं० प्र० १४६ ।
छिण्णसोय–छिन्नशोकः, छिन्नश्रोता वा । प्रश्न० १५७ ।
छिण्णा–छिन्ना । आव० ३५८ ।
छिण्णो–तंदुलघयादि जत्थ परिमाणपरिच्छिण्णा दिज्जंति सो छिण्णो भण्णति । नि० चू० द्वि० १०६ आ ।
छिण्णोवसंपय–या आवलिका सा छिन्ना यतस्तस्यां यो लाभ आदित आरभ्य परम्परया छिद्यमानोऽन्तिमेऽभिधार्येऽन्यमनभिधारयति विश्राम्यति सा छिन्नोपसम्पत् । व्य० द्वि० ३७७ अ ।
छित्त–स्पृष्टः । आव० २७४ ।
छित्तरा–छित्वराणि वंशादिमयानि छादनाधारभूतानिकिलिञ्जानि । भग० ३७६ ।
छित्ता–छित्वा–विभज्य । सूर्य० २२, २३३ ।
छित्तिकाऊण–थूत्कृत्य । उत्त० ३५६ ।
छित्ते–क्षेत्रे । बृ० तृ० ९८ आ ।
छिद्द–छिद्रं–अवसरः । आव० ६८२ । प्रश्न० ५३ । राजपरिवारविरलत्वम् । विपा० ५३ । प्रदेशद्वारम् । प्रश्न० ४२ । जं पुण आभोगओ असामायारिं करेइ तं छिद्दं भण्णति । नि चू० तृ० ९३ अ । छिद्रः–प्रविरलपरिवारत्वादिः, चौरप्रवेशावकाशः । ज्ञाता० ८१ ।
छिद्दगुडो– । नि० चू० प्र० १९९ आ ।
छिन्न–उद्धंम् । उत्त० ४६० । छेदनं छिन्नं वसनदशनदा-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वादीनां, तद्विषयशुभाशुभनिरुपिका विद्याऽपि छिन्नम् । उत्त० ४१६ । छेदनं-कर्मणो दीर्घकालानां स्थितीनां ह्रस्वताकरणम् । भग० १६ । निर्द्वारितः । बृ० प्र० १०२ अ । छिन्नः-खण्डितः । उत्त० ४६० । छिन्दनम् । ओघ० २०४ । छिन्नं-नियमितम् । पिण्ड० ७६ । निपुष्पकम् । पिण्ड० १०१ । परिश्वादिभिर्वृक्षात् पृथक्स्थापितम् । दश० १५५, १७६ । विभक्तः । ज्ञाता० २३८ ।

छिन्नकडए-छिन्नकटकम् । उत्त० ४६६ । दश० ६६ ।

छिन्नकहंकहे-छिन्ना अपनीता कथं-कथमपि या कथा-रागकथादिका विकथारूपा येन स छिन्नकथंकथः, यदिवा कथमहमिङ्गितमरणप्रतिज्ञां निर्विहिष्ये इत्येवंरूपा या कथा सा छिन्ना येन स छिन्नकथंकथः । आचा० २८६ ।

छिन्नगंथे-मिथ्यात्वादिभावग्रन्थिच्छेदः । ज्ञाता० १०४ ।

छिन्नच्छेयणइयाई-इह यो नयः सूत्रं छिन्नं छेदेनेच्छति स छिन्नछेदनयः । सम० ४१ ।

छिन्नमूलो-छिन्नमूलः । उत्त० २७६ ।

छिन्नरुहा-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

छिन्नसोआ-छिन्नशोकाः छिन्नश्रोतसो वा, छिन्नसंसारप्रवाहाः । औप० ३५ ।

छिन्नसोय-छिन्नशोकः-छिन्नानि वा श्रोतांसीव श्रोतांसि-मिथ्यादर्शनादीनि येनासौ छिन्नश्रोताः । उत्त० ४८७ ।

छिन्ना-कन्दलीकृताः । आचा० ३२३ । छिन्ना हस्तादिषु । ज्ञाता० २३६ ।

छिन्नाले-तथाविधदुष्टजातिः । उत्त० ५५१ ।

छिन्नावाए-छिन्नः-अपगतः आपातः-अन्यतोऽन्यत आगमनात्मकः अर्थाज्जनस्य येषु ते छिन्नापाताः । उत्त० ८६ ।

छिन्नावाय-छिन्ना आपाताः सार्थगोकुलादीनां यस्यां सा । ठाणा० ३१४ ।

छिपाः-नन्तिक्ताः । व्य० द्वि० ४१६ आ ।

छिप्पंतीणं- । राज० ५२ ।

छिप्पतूरं-द्रुततूर्यम् । विपा० ५६ । क्षिप्ततूर्यं । ज्ञाता० २३६ ।

छिया-छिव श्लक्ष्णलोहकुशा । जं० प्र० १४७ ।

छिरा-शिरा-धमन्यः । सम० १५० । शिराः-धमनिनाडयः । जीवा० ३४ ।

छिराहहिरं-शिरारुधिरं-नाडीरुधिरम् । आव० ४०२ ।

छिरिया-अनन्तकायभेदः । भग० ३०० ।

छिल्लर-पल्वलम् । दश० १६ ।

छिवा-श्लक्ष्णकषः । प्रश्न० ५७ । श्लक्ष्णः-कषः । ज्ञाता० ८७ ।

छिवाडि-वल्लादिफलिका । प्रज्ञा० ३६३ । मुद्गादेः फलिः । आचा० ३२३ । मुद्गादिफलिः । दश० १८५ ।

छिवाडिआइ-छेवाडीनाम वल्लादिफलिका सा च क्वचिद्देशविशेषे शुष्का सती अतीव शुक्ला भवति । जं० प्र० ३५ ।

छिवाडी-तनुपत्र उच्छ्रितरूपः, अथवा अल्पबाहल्यः प्रथुलः पुस्तकः । बृ० द्वि० २१६ आ । सृपाटिका यत्तनुपत्रोच्छ्रितरूपम् । आव० ६५२ । छेवाडी-वल्लादिफलिका । जीवा० १६१ ।

छिवाडोय-सृपाटिका-तनुपत्रोच्छ्रितरूपा । ठाणा० २३३ ।

छिहलि-शिखा । आव० ६४७ ।

छिहली-शिखा । आव० ६२६ । बृ० तृ० १०१ आ । सिहं । नि० चू० द्वि० ३५ आ । छीए-क्षुतम् । आव० ७७६ ।

छीअ-क्षवणं-क्षुतम् । आव० २५ ।

छीत्कृतं-क्षुतिः । भग० ६६४ ।

छीय-क्षवणं क्षुतम् । विशे० २७४ ।

छीर-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

छीरल-क्षीरलः भुजपरिसर्पविशेषः । प्रश्न० ८ ।

छीरालि-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

छीरिविरालिया-अनन्तकायभेदः । भग० ३०० । भुजपरिसर्पविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

छुक्कारेति-छूत्कारं करोति । जीवा० २४७ ।

छुज्जइ-कुट्यते । उप० मा० गा० ३१३ ।

छुट्टकच्छो- । आव० ७१ ।

छुट्टा-छुटिताः । आव० २२४ ।

छुडु-सुष्ठु । उत्त० २४५ ।

छुड्डिया-क्षुद्रिका-आभरणविशेषः । प्रश्न० १५६ ।

छुन्नमुहो-छुन्नमुखः-क्लीबमुखः । पिण्ड० १२५ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छुन्ना–छिन्नाः। (सं०)
छुवंतु–स्पृशन्तु भवन्त्वित्यर्थः। भग० १२२।
छुपेज्ज–क्षिपतु। आव० ८२५।
छुब्भइ–प्रक्षिप्यते–प्रवेश्यते। बृ० द्वि० १७५ अ। क्षुभ्यते–जातमहाऽद्भुतशक्तिकः सन् ऊर्द्धमितस्ततो विप्रसरति। जीवा० ३०७।
छुभंति–प्रक्षिपन्ति। आव० १२८।
छुरं–क्षुरप्रम्। आव० ६२७।
छुरघरगसंठिते–क्षुरगृहकसंस्थितम्। सूर्य० १३०।
छुरमुंडो–क्षुरमुण्डः। आव० ६४७।
छुरय–तृणविशेषः। प्रज्ञा० ३३।
छुरिय–क्षुरिका। आव० ५७८। शस्त्रविशेषः। नि० चू० प्र० १०५ अ।
छुरिया–क्षुरिका। उ० ७११।
छुहति–क्षिपति। आव० २२६।
छुहा– । नि० चू० प्र० २६५ अ। नि० चू० द्वि० ६९ आ।
छुहाइएहिं–क्षुधार्त्तयोः। आव० ३६६।
छुहाकुड्डं–सुधाकुड्यं सुधामाष्टयं कुड्यम्। ओघ० १२७।
छुहातिया–क्षुधार्दिता। आव० ३२३।
छुहापरद्धो–क्षुधापरिगतः। आव० ८१४।
छुहालुया–क्षुधालुकाः। दश० ४२।
छुहिय–बुभुक्षितः। ज्ञाता० १९२।
छूढाणि–क्षिप्तानि। आव० ६३।
छूढो–क्षिप्तः। प्रश्न० ६०।
छूहालू–क्षुधार्त्तः। आव० ३६६।
छेअ–छेकं, निपुणं, हितं, कालोचितम्। दश० १५७।
छेइत्ता–छित्वा–परित्यज्य। भग० १२८।
छेए–छेकः–अवसरज्ञः, द्विसप्ततिकलापण्डित इति। औप० ६५। कलापण्डितः। जं० प्र० ३८८। छेकः–प्रयोगज्ञः। अनु० १७७। भग० ६३१।
छेओ–छेकः असांव्यवहारिकः। आव० ५२७।
छेओवट्ठावणं–तत्र च्छेदश्चोपस्थापना च यस्मिंश्चारित्रे तत् छेदोपस्थापनं पूर्वपर्यायस्य च्छेदः महाव्रतेषूपस्थापनं चात्मनो यत्र तत्। विशे० ५५४। छेदोपस्थापनं–छेदश्चोपस्थापनं च यस्मिस्तत्, पूर्वपर्यायस्य छेदो महाव्रतेषु चोपस्थापनमात्मनो यत्र तत्। आव० १९।
छेओवट्ठावणिय–छेदे–प्राक्तनसंयमस्य व्यवच्छेदे सति यदुपस्थापनीयं–साधावारोपणीयं तच्छेदोपस्थापनीयं, पूर्वपर्यायच्छेदेन महाव्रतानामारोपणमित्यर्थः। भग० ३५०।
छेओवट्ठावणीयं–छेदोपस्थापनीयम्। उत्त० २५८।
छेगे–छेकः–द्वासप्ततिकलापण्डितः। जीवा० १२२।
छेज्जं–छेद्यम्। सूर्य० ११३। छेद्यं पत्रछेद्यादि। दश० ८७। छेदनकर्म्म–द्विधा करणम्। दश० २७०।
छेज्जाछेयाणि–गच्छचिंतायां प्रमाणभूतानि स्थेयानि–अनेकशः प्रीतिकराणि। व्य० प्र० २४१।
छेत्तं–क्षेत्रं स्थानम्। औप० ४। ज्ञाता० ३। क्षेत्रम्। ओघ० १६३।
छेत्तुंडोअ–दव्वी। नि० चू० प्र० १२८ आ।
छेत्तूण–छित्वा–द्विधा विधाय। उत्त० २७३।
छेद–करपत्रादिभिः पाटनम्। आव० ८१९। प्रव्रज्यापर्यायह्रस्वीकरणम्। भग० ९२०। छेदः–तपसा दुर्दमस्य श्रमणपर्यायच्छेदनम्। आव० ७६४। जीवादिद्रव्यस्य विभागः। ठाणा० ३४६। व्य० द्वि० ३४१ आ।
छेदन–क्षपणम्। उत्त० ५९३।
छेदनकः–उदकाश्रितजीवः। आचा० ४६।
छेदारिहं–छेदार्हं दिनपञ्चकादिना क्रमेण पर्यायच्छेदनम्। औप० ४२। प्रव्रज्यापर्यायह्रस्वीकरणार्हम्। भग० ९२०।
छेदेत्ता–छित्वा–व्यवच्छेद्य। ज्ञाता० ७७।
छेदोदइए–छेदश्च व्यय औदयिकश्च लाभः छेदौदयिकम्। बृ० द्वि० २३ आ।
छेदोवट्ठावण–छेदः–पूर्वपर्यायस्य उपस्थापना च महाव्रतेषु यस्मिन् चारित्रे तच्छेदोपस्थापनम्। प्रज्ञा० ६४।
छेदोवट्ठावणिय–छेदश्च पूर्वपर्यायस्योपस्थानं च व्रतेषु यत्र तत्छेदोपस्थानं तदेव छेदोपस्थापनिकं, ते वा विद्येते यत्र तच्छेदोपस्थापनिकमथवा पूर्वपर्यायच्छेदेनोपस्थाप्यते, आरोप्यते यन्महाव्रतलक्षणं चारित्रं तच्छेदोपस्थापनीयम्। ठाणा० ३२३। पूर्वपर्यायच्छेदोपस्थापनीयं–आरोपणीयं छेदोपस्थापनीयं, व्यक्तितो महाव्रतारोपणम्। ठाणा० १६८।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठितो–पूर्वपर्यायच्छेदोपस्थापनीयं आरोपणीयं व्यक्तितः महाव्रतारोपणं तत्स्थितिश्चोक्तलक्षणेष्वेव दशसु स्थानकेष्ववश्यं पालनलक्षणा । ठाणा० १६८ ।

छेप्पं–पुच्छम् । विपा० ४६ ।

छेय–छेकः । औप० ४ । छेदः–पुष्पफलादेः खण्डनम् । पिण्ड० १६१ । छेकः–दक्षः । आव० ७० । ज्ञाता० ५८ । अपच्छेदः । ओघ० ७२ । छेकः–निपुणः । ज्ञाता० २२१ । ठाणां० २०० ।

छेयकरे छेदनकरम् । आचा० ४२५ ।

छेयगं–छेदकम् । सूर्य० ११३ ।

छेयण–छेदनं–कर्मणः स्थितिघातः । ठाणां० २१ । विभजनम् । ठाणां ३४६ । विरहः । ठाणां० ३४६ । छेदनं–उत्तरोत्तरशुभाध्यवसायारोहणात्स्थितिह्रासजननम् । आचा० २९८ ।

छेयणग–छेदनकं–राशेरर्द्धीकरणम् । अनु० २०७ ।

छेयणयं–छेदनकम् । प्रज्ञा० २८१ ।

छेयसारहि–छेकसारथिः दक्षप्राजिता । भग० ३२२ ।

छेयसुय–छेदश्रुतानि–प्रकल्पव्यवहारादीनि । व्य० प्र० ११५ अ । नि० चू० प्र० २८१ अ ।

छेया–छेदाः–अर्थच्छेदाः । व्य० प्र० ९० आ । छेकाः–प्रस्तावज्ञाः । उपा० ४६ । छेका–निपुणा । भग० १६७, ५२७ । ज्ञाता० ३६ ।

छेयारियकणगखइयंतकम्मं– । आचा० ४२३ ।

छेरित्ता–हदित्वा । उत्त० १६६ । आव० ३१९ ।

छेला–छगलकः । उत्त० १३८ ।

छेलावणय–छेलापनकं–उत्कृष्टबालक्रीडापनं, सेण्टितााद्यर्थवाचकम् । आव० १२९ ।

छेलिअ–सेंटितं हर्षोत्कर्षेण सीत्कारकरणम् । जं० प्र० २०६ ।

छेलिय–सेंटितं–सीत्कारकरणम् । प्रश्न० ४६ । मुखवादित्रम् । बृ० तृ० २४७ आ । सेण्टनं–सेण्टितम् । विशे० २७४ ।

छेव–छेवकं–अशिवम् । बृ० तृ० १५९ अ ।

छेवइओ–अशिवगृहीतः । बृ० तृ० १५० आ ।

छेवग–असिवं । नि० चू० प्र० ७५ आ । मारि । व्य० द्वि० १२६ अ ।

छेवट्ठिया–छेवट्टिका, संहननविशेषः । ओघ० २२७ ।

छेवट्ठं–यत्रास्थीनि परस्परं छेदेन वर्त्तन्ते न किलिकामात्रेणापि बन्धस्तत् छेदवर्ति । जीवा० १५, ४२ ।

छेवतितो–असंविग्गहितो । नि० चू० प्र० २९३ आ ।

छेवाडिया–छेवाडिनाम वल्लादिफलिका । राज० ३३ ।

छेवाडी–दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पबाहल्लो छेवाडी, अहवा तनुपत्तेहिं उस्सीओ छेवाडी । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

छोए– । सूत्र० २७७ ।

छोटियं–छोटितं–स्फोटितम् । औप० १७ ।

छोडिओ–छोटितः । आव० ३९९ ।

छोडिज्जति–छणिज्जति । नि० चू० प्र० १९२ अ ।

छोडियं–छोटितं–घट्टितम् । प्रश्न० ८२ ।

छोडियपडियं–छोटितपतितम् । आव० २१८ ।

छोढुं–छोटयित्वा । नि० चू० तृ० ३७ अ । निक्षिप्य । आव० २९५ । स्थापयित्वा । आव० १९६ ।

छोता–विदारणं । नि० चू० प्र० ५६ आ ।

छोभ–अभ्याख्यानम् । बृ० द्वि० १६४ आ । बृ० द्वि० ३१ अ ।

छोभगं–कलङ्कम् । नि० चू० प्र० २५२ अ । अब्भक्खाणं । नि० चू० द्वि० ९४ आ । अभ्याख्यानम् । व्य० प्र० २०४ अ ।

छोभगदिन्नो–अभ्याख्यानं दत्तं यस्मिन् स छोभगदत्तः । व्य० प्र० २०६ आ ।

छोभयं–अपमानम् । दश० ४७ ।

छोभवंदणं–आरभटया छोभवन्दनं क्रियते । आव० ५२४ ।

छोभिय–क्षोभितः–कदर्थीकृतः । दश० ५८ ।

छोभो–निस्सहायः क्षोभणीयो वा । प्रश्न० ६४ ।

छोय–छोकः लघुः । भग० ३१८ ।

छोल्लेति–निस्तुषीकरोति । ज्ञाता० ११६ ।

ज

जं-यत् उद्देशवचनम् । आव० ४३८ । यदा । आव० ३५८ ।

जंकयसुकया–यदेव कृतं शोभनमशोभनं वा तदेव सुष्ठु-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृतमित्यभिमन्यते पितृपौरादिभिर्यस्याः सा यत्कृतसुकृता। अन्त० १६ ।

जंकिचिमिच्छं–खेलसिंघानाविधिनिसर्गाभोगानाभोगसह–साकाराद्यसंयमस्वरूपं यत्किञ्चिन्मिथ्या–असम्यक् तद्विषयं मिथ्येदमित्येव प्रतिपूर्वकं मिथ्यादुष्कृतकरणं यत्किञ्चिन्मिथ्या प्रतिक्रमणमिति । ठाणा० ३८० ।

जंकिंचिमिच्छा–यत्किञ्चिन्मिथ्या–यत्किञ्चिदाश्रित्य मिथ्या । आव० ५४८ ।

जंकिचिमिच्छामि–यत्किञ्चनानुचितं तन्मिथ्या–विपरीतं दुष्ठु मे–मम इत्येवं वासनागर्भवचनरूपा एकाऽन्या गर्हा । ठाणा० २१५ ।

जंगंधं–यद्गन्धं–यादृशगन्धवत् । ओघ० २२३ ।

जंगल–निर्जलः । बृ० प्र० १७५ आ ।

जंगला–जङ्गलाः–जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

जंगिते–जङ्गमाः–त्रसास्तदवयवनिष्पन्नं जाङ्गमिकं–कम्बलादि । ठाणा० ३३८ । जंगमजमौर्णिकादि । ठाणा० १३८ ।

जंगियं–जङ्गमोष्ट्राद्यूर्णानिष्पन्नम् । आचा० ३६३ । त्रसावयवनिष्पन्नं वस्त्रम् । बृ० द्वि० २०१ अ ।

जंगोलं–विषघातक्रियाऽभिधायकं जङ्गोलं–अगदं तत्तन्त्रं तद्धि सर्प्पकीटलूतादष्टविनाशार्थं विविधविषसंयोगोपशमनार्थं चेति आयुर्वेदपञ्चमाङ्गम् । विपा० ७५ ।

जंगोली–विषविघाततन्त्रमगदतन्त्रमित्यर्थः। ठाणा०४२७ ।

जंघा–अङ्गविशेषः । आचा० ३८ । संपूर्णजंघाच्छादकं चर्म । बृ० द्वि० २२२ आ । जान्वधोवर्ती खुरावधिरवयवः । जं० प्र० २३४ ।

जंघाचारण–लूतातन्तुनिर्वर्तितपुटकतन्तून् रविकरान् वा निश्रां कृत्वा जङ्घाभ्यामाकाशेन चरतीति जङ्घाचारणः । विशे० ३८० ।

जंघाचारणा–अतिशयचरणाच्चारणाच्चारणाः–विशिष्टाकाशगमनलब्धियुक्ताः ते च जङ्घाचारणाः । प्रश्न० १०६ । ये चारित्रतपोविशेषप्रभावतः समुद्भूतगमनविषयलब्धिविशेषास्ते जङ्घाचारणाः । प्रज्ञा० ४२५ । शक्तितः किल रुचकवरद्वीपगमनशक्तिमान् । आव० ४७ । जङ्घाव्यापारकृतोपकाराश्चारणा जङ्घाचारणाः । भग० ७९३ ।

जंघापरिजिय–मूलद्वारविवरणे साधुः । जंघापरिजितनामा साधुः । पिण्ड० १४४ ।

जंघाबलपरिहीणो–परिक्षीणजङ्घाबलः । आव० ५३६ ।

जंजुका–तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३० ।

जंत–यन्त्रम् । उत्त० ११६ । प्रपञ्चः । जीवा० १६६ । ३५६ । उच्चाटनाद्यर्थाक्षरलेखनप्रकारः, जलसङ्ग्रामादियन्त्रं वा । प्रश्न० ३८ । यन्त्रं–अरघट्टादि । प्रश्न० ८ । नानाप्रकारम् । जीवा० १६० । अरकोपरिफलकचक्रवालम् । जीवा० १६२ । पाषाणक्षेपयन्त्रादि । औप० १२ । यन्त्रशाला गुडादिपाकार्था । यन्त्रशालासु गुडादिनामुत्सेचनार्थमलाबूनि धार्यन्ते । बृ० द्वि० २४६ अ । यन्त्रं–सञ्चरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्वयरूपम् । जं० प्र० २६२ । चारकोपरि फलकचक्रवालः । जं०प्र० ३७ । यन्त्रं–कोल्हकादिघाणकविषयम् । पिण्ड० ११३ । यन्त्रिकाः । ओघ० ७५ । यन्त्रं–व्रीह्यादिदलनोपकरणम् । पिण्ड० १०६ । गच्छन् । आव० ४२० ।

जंतकम्म–यन्त्रकर्म्म–बन्धनक्रिया । भग० ३२२ ।

जंतग–मट्टियादी । दश० चू० ७६ । यातः–यायी । आव० ४३१ ।

जंतणा–यन्त्रणा–पीडा । आव० २३४ ।

जंतपत्थर–यन्त्रप्रस्तरः–घरट्टादिपाषाणः, यन्त्रमुक्तपाषाणो वा । प्रश्न० २० । गोफणादिपाषाणः । प्रश्न० ४८ ।

जंतपासय–यन्त्रपाशकः । आव० ३४२ ।

जंतपीलग–श्रेणिविशेषः । जं० प्र० १६४ ।

जंतपीलणकम्म–यन्त्रपीडनकर्म । आव० ८२६ ।

जंतलट्ठी–यन्त्रयष्टिः–कृषिकर्मोपयुक्ता । दश० २१८ ।

जंतवाडचुल्ली–इक्षुयन्त्रपाटचुल्ली । ठाणा० ४१६ । यन्त्रपाटचुल्ली–इक्षुपीडनयन्त्रं तत्प्रधानः पाटकस्तस्मिन् चुल्ली । जीवा० १२४ ।

जंताणि–पाषाणक्षेपणयन्त्राणि । सम० १३८ ।

जंतिओ–यन्त्रितः । आव० २०७ ।

जंतुगं–जन्तुकं- जलाशयजं तृणविशेषं पर्णमित्यर्थः । प्रश्न० १२८ ।

जंतुगा–वनस्पतिविशेषः । सूत्र० ३०७ ।

जंतुयं–जन्तुकं–तृणविशेषोत्पन्नम् । आचा० ३७२ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंदिट्ठं–यदाचार्यादिना दृष्टमपराधजातं तदेवालोचयति । भग० ९१९ । ठाणा० ४८४ ।

जंनतो–यज्ञयाजिनः । निरय० २५ ।

जंपानं–युगम् । अनु० १५९ ।

जंपियं–जल्पितं–मन्मनोल्लापादि । उत्त० ६२६ ।

जंबवइ–जाम्बवती, अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य षष्ठमध्ययनम् । अन्त० १५ ।

जंबवई–जम्बूमती । अन्त० १८ ।

जंबवती–जाम्बूमती, कृष्णवासुदेवराज्ञी । अन्त० १८ ।

जंबालः–कर्द्दमः । ठाणा० १४५ ।

जंबुडालं–जम्बूशाखा । आव० ३१८ ।

जंबुद्दीवे–नवमशतके जम्बूद्वीपवक्तव्यताविषयः प्रथमोद्देशकः । भग० ४२५ । जम्ब्वुपलक्षितस्तत्प्रधानो वा द्वीपो जम्बूद्वीपः । आव० ७८८ ।

जंबुफलकालिया–जम्बूफलवत् कालेव कालिका जम्बूफलकालिका । प्रज्ञा० ३६४ ।

जंबुवत्–सुग्रीवराजस्य मन्त्री । प्रश्न० ८९ ।

जंबुवती–नारायणराज्ञी । बृ० प्र० ३० आ ।

जंबू–वृक्षविशेषस्तदाकारा सर्वरत्नमयी या सा जम्बूः । ठाणा० ४३७ । सुधर्मस्वामिनः शिष्यः । सूत्र० ७२ । प्रज्ञा० २२ । जम्बूः–अपरनामसुदर्शना, वृक्षविशेषः । उत्त० ३५२ । जम्बूः–उत्तमतरुविशेषः । प्रश्न० १३६ । स्थविरः । बृ० प्र० १६६ अ । सत्पुरुषत्वे दृष्टान्तः । बृ० प्र० २३० अ । सुहम्मस्स सिस्सो । नि० चू० प्र० २४३ अ । जम्बुणामेण पितापव्वावितो । नि० चू० द्वि० २९ आ । एकास्थिवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ । भग० ८०३ । ज्ञाता० १ ।

जंबूणय–जाम्बूनदं–रक्तसुवर्णम् । जं० प्र० ३७४ । सुवर्णम् । जं० प्र० ५९ ।

जंबूणया–जम्बूनदं–ईषद्रक्तस्वर्णम्, सिरिनिलयम् । जं० प्र० २८४ ।

जंबूणयामय–जाम्बूनदमयौ–सुवर्णनिर्वृत्तौ । भग० ४५९ ।

जंबूदीवंतो–जम्बूद्वीपान्तः–जम्बूद्वीपदिक् । जीवा० ३१५ ।

जंबूद्दीवे–जम्बूवृक्षोपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीपः । अनु० ९० । जम्ब्वा वृक्षविशेषेणोपलक्षितो द्वीपः जम्बूद्वीपः । ठाणा० ३५ । सर्वद्वीपसमुद्राणामभ्यन्तरवर्ती द्वीपः । प्रज्ञा० ३०७ । जम्ब्वा–सुदर्शनापरनाम्न्याऽनाहृतदेवावासभूतयोपलक्षितो द्वीपः जम्बूद्वीपः । जं० प्र० प्रस्ता० ४ ।

जंबूद्दीपप्रज्ञप्ति–जम्ब्वा–सुदर्शनापरनाम्न्याऽनाहृतदेवावासभूतयोपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीपस्तस्य प्रकर्षेण–निःशेषकुतीर्थिकसार्थागम्य यथावस्थितस्वरूपनिरुपणलक्षणेन ज्ञप्तिः–ज्ञापनं यस्यां ग्रन्थपद्धतौ ज्ञप्तिर्ज्ञानं वा यस्याः सकाशात् सा, अथवा जम्बूद्वीप प्रान्ति पूरयन्ति स्वस्थित्येति जम्बूद्वीपप्राः जगतीवर्षवर्षधराद्यास्तेषां ज्ञप्तिर्यस्याः सकाशात् सा । जं० प्र० ४ ।

जंबूपेढे–जम्बूपीठम् । जं० प्र० ३३० ।

जंबूफलं–जम्बूफलं फलविशेषः । प्रज्ञा० ३६० ।

जंबूफलकलिका–रिष्ठाभा या मदिरा सा । जं० प्र० १०० ।

जंबूफलकालिवरप्रसन्ना–सुराविशेषः । जीवा० ३५१ ।

जंबूवई–जम्बूवती । आव० ९५ ।

जंबूवणं–जम्बूवनं–जम्बूवृक्षा एव समूहभावेन यत्र स्थितास्तत् । जं० प्र० ५४० ।

जंबूसंडं–जम्बूखण्डं–ग्रामविशेषः । आव० २०७ ।

जंभका–जृम्भकाः तिर्यग्लोकवासिनो देवविशेषः । प्रश्न० ११६ ।

जंभगो–जृम्भकः–व्यन्तरः । आव० १८० ।

जंभया–जृम्भन्ते विजृम्भन्ते स्वच्छन्दचारितया चेष्टन्ते ये ते जम्भकाः–तिर्यग्लोकवासिनो व्यन्तरदेवाः । भग० ६५४ ।

जंभा–जृम्भा मत्स्यबन्धविशेषः । विपा० ८१ ।

जंभाइए–जृम्भितं–विवृतवदनस्य प्रबलपवननिर्गमः । आव० ७७९ ।

जंभायंतं–विजृम्भमाणं-शरीरचेष्टाविशेषं विदधानम् । ज्ञाता० १९ ।

जंभियगामं–जृम्भिकाग्रामम् । आव० २२६, २२७ ।

जंपिय–यापितः–कालान्तरप्रापितः । ज्ञाता० २३१ ।

जंपियतिलकीडगा–यापिताः कालान्तरप्रापिता ये तिलाः–धान्यविशेषास्तेषां ये कीटकाः–जीवविशेषस्तद्वद् ये वर्णसाधर्म्यात् ते तथा तांश्च यापिततिलकीटकाः । ज्ञाता० २३० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं समयं–यस्मिन् समये । जीवा० १४३ ।
जइ–यतिः उत्तमाश्रमी प्रयत्नवान् वा । दश० २६२ ।
जइच्छा–यदृच्छा–अनभिसन्धिपूर्विकाऽर्थप्राप्तिः । प्रश्न० ३५।
जइण–जयिनी जयित्री । भग० १६७ । गमनान्तरजयवती–जविनी वा वेगवती । औप० ७० । जविनं-शीघ्रम् । भग० ६३१ । अनु० १७७ । जयिनः–शीघ्रो वेगवतां मध्येऽतिशीघ्रः । औप० ६८ । जविनी–वेगवती । ज्ञाता० २३२ ।
जइणतरो–जवनतरः–शीघ्रतरः । आव० ६०२ ।
जइणवेगं–जयी–शेषवेगवद्वेगजयी वेगो यस्य तत् । भग० १७५ ।
जइणवायाम–जविनव्यायामः–शीघ्रव्यापारः । उपा०४७ ।
जइत–जयिकः–राजादीनां विजयकारिः शकुनः । ज्ञाता० १२५ ।
जइत्तो–जित्वा, याजयित्वा । उत्त० ३१४।
जइत्थ–जितवान् । भग० ३१७ ।
जइयव्वं–प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्नः कार्यः । भग० ४८४।
जइया यदा च दुर्भिक्षादौ । आव० ५३९ ।
जउ–जतु–लाक्षादारुमृत्तिके प्रसिद्धे इति । ठाणा० २७२।
जउण–यमुनः योगसंग्रहे आपत्सु दृढधर्मत्वदृष्टान्ते द्रव्यापद्वान् मथुरायां राजा । आव० ६६७ ।
जउणराया–मथुराए राया । नि० चू० द्वि० ४१ अ ।
जउणा–नदीविशेषः । ठाणा० ४७७ ।
जउणावंकं–यमुनावक्रं मथुरायामुद्यानविशेषः । आव० ६६७ ।
जए–जयः–विमलजिनप्रथमभिक्षादाता । आव० १४७ । जयः–सामान्यो विघ्नादिविषयः । औप० २३ । परैरनभिभूयमानता प्रतापवृद्धिश्च । राज०२३ । जीवा०२४३ । जयः–परानभिभवनीयत्वरूपः । जं० प्र० १८७ । जगत् जीवसमूहः जङ्गमाभिधानः । भग० ५७५ ।
जओ–यतः यत्नवान् । उत्त० ५५ । जयः । विशे०४८६ ।
जकारचकारादिभिः–अपरैः प्रकारैः प्रकथ्य निन्दां विधत्ते। आचा० २४२ ।
जकारमकारं– । उत्त० ५७ ।
जकारमकारादि–असभ्यम् । आव० ५८८ ।
जक्ख–श्वानः । नि० चू० द्वि० ९९ अ ।
जक्खकद्दमो–यक्षकर्दमो नाम कुङ्कुमागुरुकर्पूरकस्तूरिका-चन्दनमेलापकः । जीवा० ३१४ ।
जक्खगाह–यक्षग्रहः–उन्मत्तताहेतुः । भग० १९८ । जीवा० २८४ ।
जक्खघरमंडविया–यक्षगृहमण्डपिका । आव० १९५ ।
जक्खदिन्ना–यक्षदत्ता–कल्पकवंशप्रसूतशकटालस्य द्वितीया पुत्री । आव० ६९३ ।
जक्खदीत्तगं–यक्षदीप्तकं–नभसि दृश्यमानाग्निसहितः पिशाचः । जीवा० २८३ ।
जक्खभद्दो–यक्षभद्रः–यक्षे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।
जक्खभूय–यक्षो भूतश्च व्यन्तरविशेषौ । ज्ञाता० ४६ ।
जक्खमह–यक्षमह–व्यन्तरविशेषस्य प्रतिनियत दिवसभावी उत्सवः । जीवा० २८१ । आचा० ३२८ ।
जक्खमहाभद्दो–यक्षमहाभद्रः–यक्षे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३७० ।
जक्खमहावरो–यक्षमहावरः–यक्षे । समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।
जक्खरूवं–यक्षरूपं–श्वाकृतिः । पिण्ड० १३१ ।
जक्खवरो–यक्षवरः–यक्षे समुद्रे पूर्वार्द्धादिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।
जक्खसिरि–चंपायां सोमभूतीमाता ब्राह्मणस्य भार्या । ज्ञाता० १९६ ।
जक्खहरिलो–यक्षहरिलः–ब्रह्मदत्तपत्नीनां नागदत्ताऽऽदिकानां पिता । उत्त० ३७९ ।
जक्खा–व्यन्तरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६९ । यक्षा–कल्पकेवंशप्रसूतशकटालस्याद्या पुत्री । आव० ६९३ ।
जक्खादित्तं–यक्षोद्दीप्तमाकाशे भवति । आव० ७३५ ।
जक्खालित्तं–यक्षाद्दीप्तमाकाशे भवति एतेषु स्वाध्यायं कुर्वतां क्षुद्रदेवता छलनां करोति । ठाणा० ४७६ ।
जक्खालित्तया–यक्षोदीप्तानि आकाशे व्यन्तरकृतज्वलनानि । भग० १९६ ।
जक्खिणी–यक्षिणी । अन्त० १७ । सम० १५२ ।
जक्खीए–यक्ष्या–अशुच्या (शुल्या) । बृ० तृ० २४० अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जक्खो–यक्षः–द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३२१, ३७० । यक्षः । दश० ९८ । इज्यते पूज्यत इति, याति वा तथाविधर्द्धिसमुदयेऽपि क्षयमिति यक्षः । उत्त० १८७ ।

जग–यकम् । बृ० द्वि० १४६ अ । जगत्–औदारिकजन्तुग्रामः । सूत्र० ५१ । यकृत्–दक्षिणकुक्षौ मांसग्रन्थिः । प्रश्न० ८ । जगन्ति–प्राणिनः । दश० १७६ । जगः–जन्तुः । सूत्र० १६२ । जगच्छब्देन सकलचराचरपरिग्रहः, सकलचराचररूपः, सकलप्राणीगणपरिग्रहः । नंदी० १३ । जगच्छब्देन सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियपरिग्रहः । नंदी०१२ । लोकालोकात्मकम् । नंदी० २३ । जगद्–धर्म्माधर्म्माकाशपुद्गलास्तिकायरूपम् । नंदी० २३ ।

जगइ–जगती–जम्बूद्वीपकोट्टम् । जं० प्र० ३०३ ।

जगई–जगती–प्राकारकल्पा । जं० प्र० २८४ ।

जगईपव्वया–पर्वतविशेषाः । जं० प्र० ४४ ।

जगच्चन्द्राः–आचार्यविशेषः । जं० प्र० ५४३ ।

जगट्ठभासी–जगदर्थभाषी–जगत्यर्था–जगदर्था ये यस्य व्यवस्थिताः पदार्थास्तानाभाषितुं शीलमस्येति । कुष्ठिनं कुष्ठीत्यादि यो यस्य दोषस्तं तेन खरपरुषं ब्रूयात् यः सो वा । जयार्थभाषी यथैवाऽऽत्मनो जयो भवति तथैवाविद्यमानमप्यर्थं भाषते तच्छीलश्च–येन केनचित्प्रकारेणासदर्थभाषणेनाप्यात्मनो जयमिच्छतीति । सूत्र० २३४ ।

जगडिज्जंता–कदर्थ्यमाना । ग० ।

जगडितो–प्रेरितो । नि० चू० प्र० ७७ अ ।

जगती–जम्बूद्वीपस्य प्राकारकल्पा पालीति । सम० १४ । वेदिकाधारभूता पाली । ठाणां० ४३९ ।

जगतीपव्वयं–जगतीपर्वतकः-पर्वतविशेषः। जीवा० २०० ।

जगतीसमिया–जगत्याः समा-समाना सैव जगतीसमिका । जीवा० १८० ।

जगत्स्वभावः–द्रव्याणामनादिमत्परिणामयुक्तता प्रादुर्भावतिरोभावस्थित्यन्यतानुगुणविनाशाः । तत्त्वा० ७-७ ।

जगनिस्सिए–जगन्निश्रितः–चराचरसंरक्षणप्रतिबद्धः । दश० २३१ ।

जगय–यकृतः–दक्षिणकुक्षिगतोदरावयवविशेषः । भग० ५०० ।

जगारमगारं–जन्ममर्मकर्म । ग० ।

जगारि– । बृ० प्र० २५७ अ ।

जग्गण–जागरणं–रात्रौ प्रहरकप्रदानम् । बृ०प्र०२९० अ ।

जग्गहो–यद्ग्रहः । आव० २२३ ।

जग्गावइ–जागरयति–कुशलानुष्ठाने प्रवर्त्तयति । आचा० ३०७ ।

जघन्यं–अधमम् । आव० ५८५ ।

जघन्यः–नैश्चयिकः । आव० ११ ।

जघन्यस्थितिकाः–जघन्या–जघन्यसङ्ख्या समयापेक्षया स्थितिर्येषां ते–एकसमयस्थितिकाः । ठाणा० ३५ ।

जच्च–जात्यः–प्रधानः । ज्ञाता० २६ । जीवा० २७१ । जात्यः उत्कृष्टः । आव० १८३ । जात्यः–काम्बोजादिदेशोद्भवः । ज्ञाता० ५८ ।

जच्चकणगं–जात्यकनकं–षोडशवर्णककाञ्चनम् । जं० प्र० १४८ ।

जजुव्वेद–यजुर्वेदः–चतुर्णां वेदानां द्वितीयः । भग०११२ ।

जज्जरिते–झर्झरितो जर्जरितो वा सतन्त्रीककरटिकादि वाद्यशब्दवत् । ठाणां० ४७१ ।

जज्जियं–यावज्जीवम् । व्य० प्र० २५१ ।

जज्जीवं–यावज्जीवं–जीवितपर्यन्तम् । पिण्ड० १४५ । यावज्जीवम् । व्य० द्वि० २८ आ ।

जट्टि–प्रहारविशेषः । नि० चू० प्र० ३२ अ ।

जडालो–जटालः–अष्टाशीतौ महाग्रहे त्रयपञ्चाशत्तमः । जं० प्र० ५३५ ।

जडिज्जइ–बध्यते । आव० ६२१ ।

जडियाइल्लए–अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चपञ्चाशत्तमः । ठाणा० ७९ ।

जडिल–जटावती–वलितोद्वलिता । भग० ७०५ ।

जडिलए–जटिलकः–पञ्चदशभेदेषु कृष्णपुद्गलेषु द्वितीयभेदः । सूर्य० २८७ । राहुदेवस्य द्वितीयनाम । सूर्य० २८७ ।

जडी–जटित्वम् । उत्त० २५० ।

जड्डु–स्वहितपरिज्ञानशून्यत्वात् जड्डुः । आव० ७९७ । हस्ती । बृ० प्र० २४७ आ । बृ० द्वि० १०६ अ । बृ० तृ० २३९ आ । पिण्ड० ११५ । हत्थी । नि० चू० प्र० ४७ आ । नि० चू० प्र० २०० आ । नि० चू० द्वि० १०६ आ । ओघ० ९७ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जड्डुतरो–बहुलतरी । नि० चू० द्वि० १४१ अ ।
जड्डो–शून्यः । महाप० ।
जढं–रहितम् । व्य० प्र० २४९ आ । परित्यक्तः । ओघ० ८४ । बृ० प्र० १८४ आ ।
जढा–त्यक्ताः । ओघ० ४९, १७८ । परित्यक्ताः । दश० २०५ । बृ० द्वि० २१३ अ ।
जण–जनः–सामान्यो जनः । दश० ८३ । लोकः । उत्त० १९३ । जायत इति जनः–लोकः । उत्त० २४४ । नगरीवास्तव्यलोकः । ज्ञात०१ । औप०२ । जायत इति जनः । आव० ४६ । नंदी० १११ । जनः–नगरीवास्तव्यो लोकः । सूर्य० २ । परिजनः । दश० ८६ । प्राणी । दश० ६४ । नगरवास्तव्यलोकः । भग० ७ । जनः–नगरीवास्तव्यलोकः । जं० प्र० ७५ ।
जणक्खया–लोकमरणानि । भग० १९७ ।
जणग–जनकः–मिथिलायामधिपतिः । आव० २२१ । मिथिलानगर्यां राजा । प्रश्न० ८६ । जायते इति जनः लोकः स एव जनकः । सूत्र० १७७ ।
जणगा–जनकाः–मातापित्रादयो जना वा । आचा० २३९ ।
जणजंपणयं–जनहेला । ग० ।
जणणी–जनयति–प्रादुर्भावयत्यपत्यमिति जननी । उत्त० ३८ ।
जणत्ता–जनता । आव० ५५९ ।
जणवूहे–जनव्यूहः–चक्राद्याकारो जनसमुदायः । भग० ११३, ४६३ ।
जणमणणयणाणंदो–जनमनोनयनानन्दः । आव० ३५८ ।
जणमारि–जनमारि । आव० ६३ ।
जणवओ–जनपदः–विशिष्टलोकसमुदायो वा ग्रामादिवास्तव्यजनसमुदायः । बृ० प्र० १९९ आ ।
जणवतो–जनपदः–जनवृन्दम् । उत्त० ११३ । देशः । आव० ३१७ ।
जणवय–जनपदः–देशः । ठाणा० ४८९ । जनपदे भवाः जानपदाः–कालप्रष्टादयो राजादयो वा मगधादिजनपदा वा । आचा० १६३ ।
जणवयकहा–रम्यो मध्यदेश इत्यादिरूपा जनपदकथा । दश० ११४ ।
जणवयकुलं–जनपदकुलं–लोकगृहम् । प्रश्न० ५२ ।
जणवयवग्ग–जनपदवर्गः–देशसमूहः । भग० १९३ ।
जणवयसच्च–जनपदसत्यं नानादेशभाषारूपमप्यविप्रतिपत्त्या यदेकार्थप्रत्यायनव्यवहारसमर्थम् । दश० २०८ ।
जणवयसच्चा–जनपदसत्या–पर्याप्तिकसत्याभाषायाः प्रथमो भेदः । तं तं जनपदमधिकृत्येष्टार्थप्रतिपत्तिजनकतया व्यवहारहेतुत्वात् सत्या जनपदसत्या । प्रज्ञा० २५६ ।
जणवह–जनवधः जनव्यथा वा । भग० ३२२ ।
जणवाए–जनवादः–जनानां परस्परेण वस्तुविचारणम् । औप० ५७ ।
जणवायं–जनवादं–द्यूतविशेषम् । जं० प्र० १३७ ।
जणवूहं–जनव्यूहः–चक्राद्याकारः समूहस्तस्य शब्दस्तद्भेदाज्जनव्यूहः । विपा० ३६ ।
जणसंनिवाए–जनसन्निपातः–अपरापरस्थानेभ्यो जनानां मीलनम् । भग० ११५ ।
जणसंमद्दे–जनसम्मर्दः उरो निष्पेषः । भग० ११३ ।
जणहियाकारणए–जनहितस्याकर्त्तेत्यर्थः । ज्ञाता० ८१ ।
जणीओ–स्त्रियः । पउ०५१-१२ । नार्यः । पउ०७२-५-१० ।
जणोणं–नारीणाम् । पउ० ७५-५-१० ।
जण्ण–यज्ञः–प्रतिदिवसं स्वस्वेष्टदेवतापूजा । जं० प्र० १२३ ।
जण्णजत्ता–यज्ञयात्रा । आव० ५७८ ।
जण्णजसो–यज्ञयशाः सत्यो(शौचो)दाहरणे समुद्रविजयराज्ये उच्छवृत्तिस्तापसः । आव० ७०५ ।
जण्णदत्तो–यज्ञदत्तः । उत्त० १११ ।
जण्णवाडं–यज्ञवाटः, यज्ञपाटः वा । उत्त० ३५८ ।
जण्णिए–यज्ञेन यजति लोकानिति याज्ञिकः । आव०२४० ।
जण्णुयं–जानु । आव० ६७० ।
जण्णू–यज्ञः–नागादिपूजारूपः । आव० १२९ ।
जतणं–यजनं–अभयस्य दानं यतनं वा–प्राणिरक्षणं प्रयत्नः । अहिंसाया अष्टचत्वारिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ९९ ।
जति–यतिः–प्रव्रजितः । ओघ० ११६ । यतिदोषः–अस्थानविच्छेदः, तदकरणं वा, सूत्रदोषविशेषः । आव० ३७४ । यतन्ते उत्तरगुणेषु विशेषत इति यतयो–विचित्रद्रव्याद्य-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिग्रहाद्युपेताः साधवः । राज० ४६ ।

जतिणं-जयनीत्वं शेषकूर्म्मगतिजेतृत्वात् । ज्ञाता० ९९ ।

जतिणा-जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन । ज्ञाता० ३६ ।

जतुगृहं-लाक्षागृहम् । उत्त० ३७८ ।

जतो-जयः-अपगमः । व्य० प्र० २२ आ ।

जत्त-यात्रा-सङ्ग्रामयात्रा । निरय० १७ । यतः । आचा० ५३ । यात्रा । आव० १७३ । वन्दनके चतुर्थस्थानम् । आव० ५४८ । यत् । उत्त० ५५ ।

जत्ता-यात्रा-तपोनियमादिलक्षणा, क्षायिकमिश्रोपशमिकभावलक्षणा वा । आव० ५४७ । यात्रा-विग्रहार्थं गमनम् । ज्ञाता० १४९ । यात्रा । आव० २१९, २२५ । संयमयात्रा । उत्त० ५५ ।

जत्ताभयगो-दसजोयणाणि मम सहाएण एगागिणा वा गंतव्वं एत्तिएण धणेण, ततो परं ते इच्छा, अन्ने उभयं भणंति-गंतव्वं कम्मं च से कायव्वंति । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।

जत्तासिद्धो-यो द्वादश वाराः समुद्रमवगाह्य कृतकार्य आगच्छति सो । यात्रासिद्धः । आव० ४१४ ।

जत्थऽत्थमिए-यो यत्रैवास्तमुपैति सविता तत्रैव कायोत्सर्गादिना तिष्ठतीति यत्रास्तमितः । सूत्र० ६५ ।

जन-अस्यास्मन्मित्रविग्रहस्य परित्राणं मत्तो भविष्यति इत्यादिकरूपम् । ठाणा० १५२ । तिर्यग्नरामरा एव, जायन्त इति जनाः । आचा० २५५ ।

जनपदाः-जनानां-लोकानां पदानि अवस्थानानि येषु ते जनपदाः-अवन्त्यादयः साधुविहरणयोग्याः अर्द्धषड्विंशतिर्देशाः । आचा० २५४ ।

जनाः-जीवाः । नंदी० १११ ।

जनार्दनः-कृष्णः । व्य० प्र० १८८ आ । बृ० तृ० २३० आ ।

जन्न-यज्ञः-पूजा । बृ० द्वि० १९९ आ । यज्ञः-नगादिपूजा । भग० ४७३ । ज्ञाता० ५६ । प्रश्न० १४०, १५५ । भावतो देवपूजा । अहिंसायाः षट्चत्वारिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ९९ । यागः । प्रश्न० ३९ ।

जन्नइ-यज्ञयाजिनः । भग० ५११ ।

जन्नइज्जं-याज्ञीयं-उत्तराध्ययनेषु पञ्चविंशतितममध्ययनम्। उत्त० ९ ।

जन्नई-यज्ञयाजिनः । औप० ९० ।

जन्नतिज्जं-उत्तराध्ययनेषु पञ्चविंशतितममध्ययनम् । सम० ६४ ।

जन्नदत्तो-यज्ञदत्तः-सत्यो(शौचो)दाहरणे यज्ञयशःसौमित्र्योः पुत्रः । आव० ७०५ ।

जन्नवाड-यज्ञपाटः । आव० २२९ । उत्त० ३५८ ।

जन्नवायपडिए- । आचा० ४२४ ।

जन्नोवइए-यज्ञोपवीतम् । आव० ३०५ ।

जन्म-लोकः । प्रश्न० ८६ ।

जप-मन्त्र्याद्याभ्यासः । अनु० २९ ।

जपा-गुच्छविशेषः । आचा० ५७ ।

जपाकुसुमं-पुष्पविशेषः । जीवा० १९१ ।

जप्प-परिगृह्यं सिद्धान्तं प्रमाणं च छलजातिनिग्रहस्थानपरं भाषणं यत्र जल्पः । नि० चू० प्र० २४० अ । वाद एव छलजातिनिग्रहस्थानपरो जल्पः । सम० २४ । सम्यग्हेतुदृष्टान्तैर्यो वादः । सूत्र० ९३ । वाद एव विजिगीषुणा सार्धं छलजातिनिग्रहस्थानसाधनोपालम्भः । सूत्र० २२६ ।

जम-यमो-दक्षिणदिक्पालः । जं० प्र० ७५ । यमाः-प्राणातिपातविरमणादयः । ज्ञाता० ११० ।

जमईए-यमकीयं-यमकनिबद्धसूत्रम् । सम० ३१ ।

जमईयं-यदतीतं-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे पञ्चदशमध्ययनम् । आव० ६५१ ।

जमकाइय-यमकायिकः । भग० १९७ । यमकायिकः-दक्षिणदिक्पालदेवनिकायाश्रितोऽसुरः अम्बादिः । प्रश्न० १९ ।

जमग-यमकः-शकुनिविशेषः । जीवा० २८६ ।

जमगपव्वए-पर्वतविशेषः । भग० ६५४ ।

जमगप्पभं-यमकप्रभं यमकः-शकुनिविशेषस्तत्प्रभं तदाकारम् । जीवा० २८६ ।

जमगवरा-यमकवरौ-नीलवद्वर्षधरप्रत्यासन्नौ शीताभिधानमहानद्युभयतटवर्तिनौ पर्वतौ । प्रश्न० ९६ ।

जमगसंठाणसंठिआ-यमकौ-यमलजातौ भ्रातरौ तयोर्यत्संस्थानं तेन संस्थितौ परस्परं सदृशसंस्थानौ, अथवा

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यमका नाम शकुनिविशेषास्तत्संस्थानसंस्थितौ । जं० प्र० ३१६ ।

जमगसमग–यमकसमकं–युगपत् । विपा० ४० । जं० प्र० १९२ । यमकसमकं एककालम् । राज० २४ । यौगपद्येनेत्यर्थः । उपा० ३५ । युगपत् । ज्ञाता० १४९ ।

जमगा–यमकाः–शकुनिविशेषाः । जं० प्र० ३१९ । यमकौ । जं० प्र० ३१६ । यमकौ–उत्तरकुरौ पर्वतविशेषौ । जं० प्र० ३१६ । पर्वतविशेषौ । जीवा० २८६ ।

जमगाणं–यमकदेवाभिलापेन । जं० प्र० ३१९ ।

जमतीयं–यदतीतं–सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चदशमध्ययनम् । सूत्र० २५३ ।

जमदग्गिओ–जामदग्न्यः–परशुरामः । आव० ३९१ ।

जमदग्गिजडा–जमदग्निजटा–वालकः । उत्त० १४२ ।

जमदग्गिसुओ–जमदग्निसुतः–पर्शुरामः । जीवा० १२१ ।

जमदग्नि–परशुरामपिता स । सूत्र० १७०, १७८ ।

जमदेवकाइय–यमदेवताकायिकः–यमसत्कदेवतानां सम्बन्धिनः । भग० १९७ ।

जमप्पभे– । ठाणा० ४८२ ।

जमलं–सहवर्त्ति । भग० ६७२ । यमलं–समसंस्थितद्वयरूपम् । ज्ञाता० २ । यमलं–समश्रेणिकम् । जीवा० १९९, २०७, ३५९ । यस्मिन् द्वौ द्वौ वर्गौ समुदितौ एकं तत् । प्रज्ञा० २८० ।

जमलजणणीसरिच्छा–यमलजननीसदृशः । ओघ०१८५ ।

जमलजुगलं–यमलयुगलं–समश्रेणिकयुगलरूपौ । जीवा० २७५ ।

जमलजुगलजीहालो–यमं लाति–आदत्त इति यमला, यमला युग्मजिह्वा यस्य सः यमलयुग्मजिह्वः । आव०५६६ ।

जमलजुयल–यमलयुगलं–समश्रेणिकं युगलम् । राज० २२ । जीवा० १२२ । यमलयुगलं–द्वयम् । भग० ३१८ ।

जमलज्जुणा–यमलार्जुनौ–कृष्णपितृवैरिणौ विकुर्वितवृक्षरूपौ विद्याधरौ । प्रश्न० ७५ ।

जमलपयं–समयपरिभाषयाऽष्टानामष्टानामङ्कस्थानानां यमलपदमिति सञ्ज्ञा । प्रज्ञा० २८० । कालतवा । नि० चू० द्वि० ६० आ ।

जमलपया–तपःकालयोः सञ्ज्ञा । बृ० प्र० ९३ आ ।

जमलपाणिणा–मुष्टिना । भग० ७६७ ।

जमला–यमं लाति–आदत्त इति यमला । आव० ५६६ ।

जमलिय–यमलतया समश्रेणितया तत्तरूणां व्यवस्थितत्वात् संजातयमलत्वेन यमलितम् । भग० ३७ । यमलतया समश्रेणितया व्यवस्थिताः । ज्ञाता० ५ ।

जमलियाओ–यमलं नाम समानजातीययोर्लतयोर्युग्मं तत्सञ्जातमास्विति यमलिताः । जं० प्र० २५ ।

जमलोइया–यमलौकिकात्मनः अ(म्बाम्ब)म्बर्ष्यादयः । सूत्र० २२१ ।

जमा– । भग० ४९३ ।

जमालिः–सम्यक्शास्त्रार्थपरिज्ञानविकलः । बृ० प्र० २१६ आ । निह्नवविशेषः । सूत्र० ६८ । आव० ५२३ । उत्त० १८ । नंदी० २४८ । मिथ्यादर्शनशल्ये दृष्टान्तः । आव० ५७९ । प्रथमो निह्नवः । ठाणा० ४१० । भग० ६१९, ६२० । यस्माद्बहुरता उत्पन्नाः स आचार्यविशेषः । आव० ३११ । विशे० ९३४ । प्रथमो निह्नवः । व्य० द्वि० १७९ अ । भग० ५४८ । निर्गमे दृष्टान्तः । ज्ञाता० १५२ ।

जमालिपभवो–जमालिप्रभवः–बहुरतः । आव० ३११ ।

जमाली–राजकुमारनाम । निरय० ४० । अश्रद्धायां दृष्टान्तः । नि० चू० तृ० १२७ आ । भग० ५४८ । जमालिः–भगवद्भागिनेयः । विपा० ९० । बहुरतविषयो निह्नवः, सुदर्शनासुतः । उत्त० १५३ । क्षत्रियकुण्डग्रामे कुमारविशेषः । भग० ४६१ ।

जमिगाओ–यमिके नाम राजधान्यौ । जं० प्र० ३१९ ।

जमुत्तं–यदुक्तं–एतत् तात्पर्यमित्यर्थः । विशे० १२२८ ।

जम–चमरेन्द्रस्य द्वितीयो लोकपालः । ठाणा० १९७ । अहिंसादिर्यमः । प्रश्न० १३२ ।

जम्बूलए–जम्बूलकाः । उपा० ४० ।

जम्बूस्वामी–गुरुपर्यक्रमलक्षणसम्बन्धोपदर्शने सुधर्मस्वामिशिष्यः । भग०६ । अनन्तरागमवान् । आव० ५७ । सुधर्मस्वामिनः शिष्यः । नंदी० ११४ । अनु० २१९ । आचा० २५ ।

जम्मं–जन्म–सम्भूतिलक्षणम् । जीवा० ६० ।

जम्मणमहो–जन्ममहः–जन्मोत्सवः । आव० १२१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जम्मणसंतिभावं-जन्म-उत्पादः सद्भावश्च-विवक्षितक्षेत्रादन्यत्र तत्र वा जातस्य तत्र चरणभावेनास्तित्वम् । भग० ८६५ ।

जम्मन्धो- । नि० चू० द्वि० ४१ अ ।

जम्मपक्कं- । विपा० ८० ।

जम्मा-यमा । ठाणा० १३३ ।

जम्मो-यमः तापसपल्ल्यां तापसविशेषः । आव० ३६१ ।

जयंत-विमानविशेषः । आचा० २१ । जयन्तः-पश्चिमदिग्वर्तिजम्बूद्वीपस्य द्वारः । यतमानः-उद्गमादिदोषपरिहारी । आचा० ३६० । सम० ८८ । जम्बूद्वीपस्यचतुर्द्वारे तृतीयम् । ठाणा० २२५ । भाविप्रथमो विष्णुः । सम० १५४ । जयन्तः-अनुत्तरविमानपञ्चके पश्चिमदिग्वर्ति । ज्ञाता० १२४ ।

जयंतपवर-जयन्तप्रवरं-जयन्ताभिधानं प्रवरमनुत्तरविमानम् । ज्ञाता० १४६ ।

जयंतपुरं-मालापहृतद्वारविवरणे नगरम् । पिण्ड० १०८।

जयंत-जयन्त पश्चिमदिग्वर्ति जम्बूद्वीपस्य द्वारम् जं० प्र० ३०६ ।

जयंता-अनुत्तरोपपातिकभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६६ । जयन्ता-उत्तरदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्यां पुष्करिणी । जीवा० ३६४ ।

जयंति-जयन्ती पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । नवमी रात्रि नाम । जं० प्र० ४६१ । सूर्य० १४७ । वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

जयंती-सयाणीयभगिणी । बृ० द्वि० १६८ अ । जयन्ती राजधानी । जं० प्र० ३५७ । वैजयन्ती राजधानी । जं० प्र० ३५७ । उत्कृष्टमालापहृते सुरदत्तस्य वास्तव्यापुरी । पिण्ड० १०६ । सम० १५१ । ठाणा० २३१, २०४ । महाग्रहस्य तृतीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०५,५५६ । जयन्ती । जं० प्र० ३६१, ५३२ । नन्दनबलदेवमाता । आव० १६२ । उत्पलभगिनी । आव० २०२ । अकम्पितमाता । आव० २५५ ।

जयंतीए- । भग० ५५६ ।

जयंतीओ- । ठाणा० ८० ।

जय-पराभिभवः । ठाणा० २५० । यतः-प्रयत्नवान् । आव० २८६ । यतं-गवाक्षकादीनामवलोकयन् । दश० २३१ । चक्रवर्तिविशेषः । उत्त० ४४८ । यतः-यत्नवान् । ओघ० ३७ । यतं-तदुद्वेगमनुत्पादयन् । दश० १८४ । अत्वरितम् । दश० १७८ । जयनामा एकादशचक्रवर्ती । आव० १५६ ।

जयई-यजन्ताम् । उत्त० ३७१ ।

जयकुञ्जरः-कुञ्जरमुख्यः । भग० १ ।

जयघोस-जयघोषः-ब्रह्मगुणनिरूपेण विप्रः । उत्त० ५२० ।

जयणं-यतनं-प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्न-उद्यमः । प्रश्न० १०६ ।

जयणा-तिपरिखा अ लंभे पच्छा पणगहाणी । बृ० १५६ आ । तिपरियट्टं काऊण अप्पदुप्पणो पच्छा पणगादि पडिसेवणा पडिसेवति एस जयणा । नि० चू० प्र० ३७ आ । नि० चू० प्र० १३६ अ । जहा जीवोवघातो न भवतीत्यर्थः । नि० चू० प्र० १८६ अ । असढभावस्स अववादपत्तस्स जो अकप्पपडिसेवणे जोगो तत्थिमं रागदोसवियुत्तत्तणं सा जयणा । नि० चू० तृ० १४८ आ । यतना-बहुदोषत्यागेनाल्पदोषाश्रयणम् । औप० ४८ । उत्त० ५१५ । प्रयत्नकरणलक्षणा । दश० ७४ । पृथिव्यादिष्वारम्भपरिहारयत्नरूपा । दश० १२० ।

जयणाए-जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन । भग० ५२७ ।

जयति-कर्मक्षपण उद्यतः । ओघ० २२० । इन्द्रियविषयकषायघातिकर्मपरिषहोपसर्गादिशत्रुगणपरिजयात् सर्वानप्यतिशेते तं (प्रति प्रणतोऽस्मि) । नंदी० ३ ।

जयद्दह-हस्तीनागपुरे राजकुमारः । ज्ञाता० २०८ ।

जयनंदा-जगन्नन्द जगत्समृद्धिकर । जं० प्र० १४३ ।

जयनामो- । सम० १५२ ।

जयसंधी-जयसन्धिः-अलोभोदाहरणेऽमात्यः । आव० ७०१।

जयसुन्दरी-गर्भाधानपरिरूपमूलद्वारविवरणे सिन्धुराजपत्नी । पिण्ड० १४५ ।

जयहत्थि-जयहस्ती-पट्टहस्ती । आव० ७१६ ।

जयहत्थी-जयहस्ती । उत्त० ३०० ।

जया-यस्मादर्थे । दश० चू० १५७ । औषधिविशेषः । उत्त० ४६० । जया-वासुपूज्यमाता । आव० १६० । सम० १५१, १५२ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जर–जरा–वयोहानिलक्षणा । प्रज्ञा० ३ ।
जरकुमार–जराकुमारः–कृष्णवधकः । अन्त० १६ । वसुदेवपुत्रः । नि० चू० प्र० १६४ आ ।
जरग्गहिया–ज्वरग्रहिताः–सामायिकलाभे दृष्टान्तः । आव० ७५ ।
जरढं-जरठम् । जीवा० १८८ । पुराणम् । औप० ७ । जरठानि, पुराणत्वात् कर्कशानि । जं० प्र० २६ ।
जरते–जरकः । ठाणा० ३६५ ।
जरला–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषाः । जीवा० ३२ ।
जरा–जरा–वयोहानिलक्षणा । दश० २३३ । वार्द्धक्यम् । भग० १६७ । वयोहानिलक्षणा । आव० १४८ ।
जराउ–जरायुः–गर्भवेष्टनम् । प्रश्न० ६० ।
जराउय–जरायुवेष्टिता जायन्त इति जरायुजाः, गोमहिष्यजाविकमनुष्यादयः । दश० १४१ । मनुष्यादयः । प्रश्न० ६० ।
जराकुणिम–जराकुणपश्च–जीर्णताप्रधानशब्दः । भग० ४६६ ।
जराकुमार–वासुदेवजेट्ठभाऊ । बृ० तृ० ११३ अ ।
जराजुण्णा–जराजीर्णाः । व्य० द्वि० २६६ अ ।
जराघुणियं–जराघूर्णितम् । उत्त० ३२६ ।
जरासन्ध–नृपविशेषः । प्रश्न० ६० । जरासन्धः । आव० ३६५ । राजविशेषः । दश० ३६ । राजगृहनगरनायको नवमः प्रतिवासुदेवः । प्रश्न० ७५ । अप्रमादविषये राजगृहनगरे राजा । आव० ७२१ ।
जरासिधु–जरासिन्धः-राजगृहे नृपति । उत्त० ४६० । ज्ञाता० २०६ । जरासिन्धुः–कृष्णवासुदेवशत्रुः नवमः,प्रतिवासुदेवः । आव० १५६ ।
जरु–जरायुः । आव० ७४२ ।
जरुला–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।
जरो–ज्वरः । प्रश्न० १६ ।
जलंति–ज्वलन्ति–ज्वालारूपा भवन्ति भास्वराग्नितां प्रतिपद्यन्त इत्यर्थः । जं० प्र० ४१६ ।
जलंतो–जलान्तः–जलपर्यन्तः, जलस्योपरि प्रकटः । जीवा० ३१५ ।
जल–सामायिकलाभे दृष्टान्तः । आव०७५ । जलकान्तेन्द्रस्य प्रथमो लोकपालः । ठाण० १६८ ।
जलइ–ज्वलति–ज्वालामालाकुलो भवति । जीवा० २४८ ।
जलइत्तइ-ज्वालयितुं-उत्पादयितुं वृद्धिं वा नेतुम् । दश०२०१ ।
जलकंत–जलकान्तः–पृथिवीभेदः । आचा० २६ । उदधिकुमाराणामधिपतिः । प्रज्ञा० ६४ । जीवा०१७० । ठाणां० ८४, २०५ । जलकान्तेन्द्रस्य लोकपालः । ठाणां० १६८ । मणिभेदः । उत्त० ६८६ । सप्तमो दक्षिणनिकायेन्द्रः । भग० १५७ । जलकान्तः–मणिविशेषः । जीवा० २३ । आव० ३५५ । प्रज्ञा० २७ ।
जलकारी–चतुरिन्द्रियजीवः । उत्त० ६६६ ।
जलकोड–देहशुद्धावपि जलेनाभिरतिः । निरय० २६ ।
जलचर–जलचरः मत्स्यादिः । दश० ५५ ।
जलचारिया–चतुरिन्द्रियविशेषाः । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० ४२ ।
जलज–पद्मम् । जीवा० १३६ । जलजं–पद्मम् । भग० ३०६ ।
जलणं–ज्वलनं शैत्यापनोदाय वैश्वानरस्य ज्वलनं शोषनार्थं वा प्रकाशकरणाय वा दीपप्रबोधनम् । प्रश्न० १२७ । ज्वलयति–दहतीति ज्वलनः–क्रोधः । सूत्र० ५२ ।
जलणप्पवेसे– । ठाणा० ६३ ।
जलणसिहा–ज्वलनशिखा–आचारविषये हुताशनब्राह्मणभार्या । आव० ७०७ ।
जलणाइभयं–ज्वलनादिभयम् । आव० ४०७ ।
जलणो–ज्वलनः–आचारविषये हुताशनब्राह्मणज्येष्ठपुत्रः । आव० ७०७ ।
जलधरा–वृषणौ । बृ० तृ० ६८ आ । नि० चू० द्वि० ३२ अ ।
जलनं–ज्वलनं–दीपनम् । उत्त० ७११ ।
जलपट्टणं–जलेण जस्स भंडं आगच्छति । नि० चू० द्वि० ७० आ । जलपट्टणं पुरिमाती । नि० चू० प्र० २२६ अ । जलपत्तनं–यत्र जलपथेन भाण्डानामागमस्तदाद्यम् । प्रश्न० ३८ ।
जलपत्तनं–जलमध्यवर्ति पत्तनम् । उत्त० ६०५ । आचा० २८५ ।
जलप्पभ–जलप्रभः–उत्तरनिकाये सप्तम इन्द्रः । ठाणा०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४ । जीवा० १७१ । भग० १५७ । उदधिकुमाराणामधिपतिः । प्रज्ञा० ६४ ।

जलप्लवः–उत्पुरः ।

जलबुब्बुयसमाणे–जलबुद्बुदसमानः ।

जलभृङ्गारं– ।

जलमलं–मालिन्यम् । ज्ञाता० ३५ । जलमूगो–जहा जले निब्बुड्डो उल्लावेति 'बुडबुडे'ति वा जलं एव जलमूगो । नि० चू० द्वि ३६ आ ।

जलमूय–जलमूकः–जलप्रविष्टस्येव 'बुडबुड'इत्येवं रूपो ध्वनिर्यस्य सः । प्रश्न० २५ ।

जलमूयओ–जलमूकः–जले बूडित इव भाषमाणः । आव० ६२८ ।

जलयं–जलजं–पद्मादि । जं० प्र० ३६० ।

जलयर–जलचरजं–पुद्गालविशेषः । आव० ८५४ । जले–चरन्ति-पर्यटन्तीति जलचराः । प्रज्ञा० ४३ । जलचरः–तन्दुलमत्स्यप्रभृतिः । जीवा०१२६ । जले चरन्ति गच्छति चरेर्भक्षणमित्यर्थ इति भक्षयन्ति चेति जलचराः । उत्त० ६६८ ।

जलरत–जलप्रभेन्द्रस्य लोकपालः । ठाणा० १६८ ।

जलराक्षसाः–राक्षसभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

जलरुह्–जलरुहः–द्वीपः समुद्रोऽपि च । प्रज्ञा० ३०७ । जले रुहन्तीति जलरुहाः–उदकावकपनकादयः । प्रज्ञा० ३० । जीवा० २६ । जले रुहन्तीति पद्मादयः । उत्त० ६६२ ।

जलवासिणो–जलनिमग्ना । भग० ५१६ । ये जलनिषण्णा एवासते । निरय० २५ ।

जलविच्छुय–जलवृश्चिकः–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

जलवीरिए–जलवीर्यः । ठाणा० ४३० ।

जलाभिसेयं–जलक्षरणम् । भग० ५२० ।

जलाभिसेयकढिणगायभूता–तत्र जलाभिषेककठिनगात्रभूताः प्राप्ता ये ते । ये स्नात्वा न मुञ्जते, स्नात्वा स्नात्वा पाण्डुरीभूतगत्रा इति । निरय० २५ ।

जलुगा–जलौका–जलजन्तुविशेषः । आव० ६२३ ।

जलूगा–जलौका–अनेषणा प्रवृत्तदायकस्य मृदुभावनिवारणार्थसूचकत्वात् साधोरुपमानम् । दश० १८ । जलजन्तुविशेषः । आव० १०२ । जलौकसः–दुष्टरक्ताकर्षिण्यः । उत्त० ६६५ ।

जलोया–द्वीन्द्रियजन्तुविशेषाः । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ । चर्मपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ४१ ।

जलौका–जन्तुविशेषः । दश० १४१ ।

जल्ल–जल्लो-मलः । विशे० ३७६ । शरीरमलः । ज्ञाता० २०३ । जल्लाः–राज्ञः स्तोत्रपाठकाः । राज० २ । कमढीभूतो । नि० चू० प्र० १०८ आ । मलथिग्गलं जल्लो । नि० चू० प्र० ११० आ । मलः । भग० ३६० । उत्त० ८३ । औप० २८ । आव० ४७ । ठाणा० ३४३ । जल्लः–वरत्राखेलकः, राजस्तोत्रपाठको वा । जीवा० २८१ । आव० ६१६ । औप० ३ । वरत्राखेलकः । प्रश्न० १३७, १४१ । अनु० ४६ । दश० ११४ । जं० प्र० १२३ । शुष्कप्रस्वेदः । सूत्र० ८२ । चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ । रजोमात्रम् । औप० ८६ । मलविशेषः । प्रश्न० १३७ । याति च लगति चेति जल्लः–पृषोदरादित्वान्निष्पत्तिः, स्वल्पप्रयत्नापनेयः । जीवा० २७७ । शरीरमलः । प्रश्न० १०५ । जं० प्र० २४८ । जल्लः–रजोमात्रम् । भग० ३७ । देहमलः । सम० ११ ।

जल्लकहा–जल्लकथा–वरत्राखेलकसम्बन्धिनीकथा । दश० ११४ ।

जल्लखउरियं–मलकलुषितम् । पिण्ड० ६३ ।

जल्लगंद्धो–मलगन्धः । आव० ८१५ ।

जल्लगवेल्लु– । नि० चू० प्र० ३५२ अ ।

जल्लपरीसहे–शरीरवस्त्रादिमलस्य परीषहः, अष्टादशः परीषहः । सम० ४० ।

जल्लिय–जल्लो–मलः । उत्त० ५१७ । यल्लितः–यानलगनधर्मापितमलयुक्तः । भग० २५४ ।

जल्लूसत–जलोदरः–व्याधिविशेषः । आव० ६११ ।

जल्लेसाइं–या लेश्या येषां द्रव्याणां तानि यल्लेश्यानि यस्या लेश्यायाः सम्बन्धिनीत्यर्थः । भग० १८८ ।

जव–यवाः–धान्यविशेषः । दश० १६३ । औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । यवो–यवनालकः, स च कन्या चोलकोऽवगन्तव्यः । अयं च मरुमण्डलादिप्रसिद्धश्चरणकरूपेण

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कन्यापरिधानेन सह सीवितो भवति, येन परिधानं न खसति, कन्यानां च मस्तकसत्कपक्षेणाऽयं प्रक्षिप्यते । अयं चोर्ध्वः 'सरकञ्चुक' इति व्यपदिश्यते । विशे० ३५३ । उज्जेणीनयरे राया । बृ० प्र० १६१ अ । यवः । आव० ८५५ । जव:-वेगः । आव० ६१८ । यवराजर्षिः-खंडश्लोकाध्येता । भक्त० ।

जवजव-यवयवः-यवविशेषः । भग० २७४ ।

जवजवा-औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

जवजवाइ-यवविशेषः । जं० प्र० १२४ ।

जवण-जवनं-अतिशीघ्रगतिः । जीवा० १२२ । यवनः चिलातदेशनिवासी म्लेच्छजातिविशेषः । प्रश्न० १४ ।

जवणट्टं-यापनार्थं-शरीरनिर्वाहणार्थम् । उत्त० २६५ ।

जवणट्टया-यापनार्थं-संयमभरोद्वाहिशरीरपालनाय । दश० २५३ ।

जवणा-यापना-वन्दनके पञ्चमं स्थानम् । आव० ५४८ । म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

जवणाणिया-लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

जवणिज्जं-यापनीयम् । आव० २१६ ।

जवणिया-यवनिका-तिरस्करिणी । आव० ३६८ । अन्तः पट्टः । आव० ६७४ । यवनिका-काण्डपटम् । ज्ञाता० २४ ।

जवणोदीवं-यवनद्वीपं, द्वीपविशेषम् । जं० प्र० २२० ।

जवण्णं- । सूर्य० २६३ ।

जवनालउ-जवनालकः-कन्याचोलकः, कुमार्या ऊर्द्धः सरकञ्चुकः । नंदी० ८६ ।

जवनालका-कुमार्या ऊर्द्धः सरकञ्चुकः । नंदी० ८८ । कन्याचोलकम् । प्रज्ञा० ५४२ ।

जवमज्झ-यवस्येव मध्यं मध्यभागो यस्य विपुलत्वसाधर्म्यात्तद् यवमध्यं यवाकारमित्यर्थः । भग० ८६०, २७५ । अष्टौ यूका एकं यवमध्यम् । जं० प्र० ६४ । यवमध्या । व्य० द्वि० ३५६ आ । नि० चू० प्र० ३०६। आ ।

जवमज्झा-यवस्येव मध्यं यस्यां सा यवमध्या । ओप० ३२ ।

जवस-यवसः । आव० ४१६ । यवसः-घ्रास । आव० २६१ ।

जवसए-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

जवसजोगासणं-यवसयोगासनम् । उत्त० २२३ ।

जवासाकुसुमं- । प्रज्ञा० ३६० ।

जवितं-यावकम् । आव० ३०२ ।

जसंसी-यशस्वी-शुद्धपारलौकिकयशोवान् । दश० २०७ । ख्यातिमन्तः । भग० १३६ ।

जसंसे-सिद्धार्थराजस्य तृतीयं नाम । आचा० ४२२ ।

जस-यशः-पराक्रमकृतं गृह्यते, तदुत्थसाधुवाद इत्यर्थः । आव० ४६६ । बहुसमरसंघट्टनिर्वहणशौर्यलक्षणं यशः । सूत्र० १८२ । पराक्रमकृता सर्वदिग्गामिनी वा प्रख्यातिर्यशः । ओप० १०५ । ख्यातिः । ज्ञाता० २४० । जीवा० २१७ । प्रज्ञा० ६०० । श्लाघा । सूर्य० २५८ । यशोहेतुत्वाद्यशः संयमो विनयो वा । उत्त० १८६ । यशः पराक्रमकृतं सर्वदिग्गामिनी प्रसिद्धिर्वा । प्रश्न० १३६ । चतुर्दशजिनस्य प्रथमः शिष्यः । सम० १५२ । यशः सर्वदिग्गामी । प्रश्न० ८६ । सकलभुवनव्यापि । जीवा० २६६ । सर्वदिग्गामिनीप्रसिद्धिः । बृ० तृ० ३६ आ । संजमो । दश० चू० ८८ । समयपरसमयविसारत्तणेण लोगे लोगुत्तरे य जसो । नि० चू० प्र० २६० अ । यशो जीवितम् । आव० ४८० । यशः-संयमः । दश० १८८ । यस्य । उप० मा० गा० ८४ । यशः-सर्वदिग्गामिप्रसिद्धिविशेषः । ज्ञाता० १८ ।

जसकर-यशस्करः-पराक्रमकृतं यशस्तत्करणशीलः । आव० ४६६ ।

जसकारी-यशःकारी । आव० ५३६ ।

जसघाई-यशोघातिनः-यशोऽभिनाशकाः । आव० ५३६ ।

जसधरे-यशोधरः । जं० प्र० ४६० ।

जसभद्द-यशोभद्रः-शय्यम्भवप्रधानशिष्यः । दश० २८४ । यशोभद्रः-चतुर्थदिवसनाम । जं० प्र० ४६० । सूर्य० १४७ । अलोभोदाहरणे युवराजः । आव० ७०१ ।

जसभद्दा-यशोभद्रा-अलोभोदाहरणे कण्डरीकयुवराजपत्नी। आव० ७०१ ।

जसम-यशस्वी नवमः कुलकरनाम । जं० प्र० १३२ । तृतीयः-कुलकरनाम । सम० १५० । आव० १११ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणा० ३६८ ।

जसमती–यशोमती–अमोघरथरथिकभार्या । उत्त० ३१३ ।

जसवइ–यशोमती–यक्षहरिलस्य द्वितीया सुता, ब्रह्मदत्तराज्ञी । उत्त० ३७९ ।

जसवई–यशोमती–तृतीया रात्रितिथिनाम । जं० प्र० ४९१। सगरमाता । आव० १६१ । आचा० ४२२ ।

जसवती–यशोमती–शालमहाशालभगिनी । उत्त० ३२३ । शालमहाशालयो राजयुवराजयोर्भगिनी । आव० २८६ । तृतीया रात्रितिथिनाम । सूर्य० १४८ । सगरचक्रवर्त्तिनो माता । सम० १५२ ।

जससा–यशसा प्रसिद्धया । सम० ४३ ।

जसहर–अचलपुरकुटुंबिगुरुः । मर० । पंचपांडवाः हिमवत्यनशनादराः (?) ।

जसा–यशा–काश्यपभार्या । उत्त० २८६ । वसिष्ठगोत्रभृगुपुरोहितभार्या । उत्त० ३९५ ।

जसोआ–यशोदा–राजकन्यानाम । आव० १८२ ।

जसोकामी–यशस्कामी–यो यशः कामयते अहो अयमिति प्रवादार्थं वा । दश० १८७ ।

जसोधर–यशोधरः–पञ्चमदिवसनाम । सूर्य० १४७ । ठाणा० ३०२, ४५३ ।

जसोधरा–यशोधरा–चतुर्थी रात्रीनाम । सूर्य० १४७ ।

जसोया–वर्द्धमानस्वामिनो भार्या । आचा० ४२२ ।

जसोहरा–यशोधरा–चतुर्थी रात्रिनाम । जं० प्र० ४९१ । दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । दक्षिणरुचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कुमारी महत्तरिका । जं० प्र० ३९१ । यशः–सकलभुवनव्यापि धरतीति यशोधरा, जम्ब्वाः सुदर्शना याश्चतुर्थं नाम । जीवा० २९९ । सकलभुवनव्यापकं यशो धरतीति यशोधरा । जं०प्र० ३३६ ।

जस्स–यस्य–मुमुक्षोः । आचा० १८० ।

जस्समम्हि–यस्य प्रभावेण इहागतोऽस्मि–भवामीतियोगः । भग० १८० ।

जहक्खाय–यथा सर्वस्मिन् लोके ख्यातं–प्रसिद्धं 'अकषायं भवति चारित्रमि'ति तथैव यद् तद् यथाख्यातम् । प्रज्ञा० ६८ ।

जहणवरं–जघनवरं–वरजघनम् । जीवा० २७५ ।

जहण्णकसिणं–जस्स दुारसरूवया मुल्लं तं जहण्णकसिणं । नि० चू० प्र० १३९ आ ।

जहण्णेणं–जघन्यतः । अनु० १६३ ।

जहन्न–हानं–त्यागः । भग० ६०४ । जघन्यं सर्वस्तोकम् । आव० २९ ।

जहन्नए कुंभे–जघन्यकः कुम्भः–आढकषष्टिनिष्पन्नः । अनु० १५१ ।

जहन्नजोगी–जघन्ययोगी–सर्वाल्पवीर्यः । प्रज्ञा० ६०८ ।

जहन्नपएसिया–जघन्याः–सर्वाल्पाः प्रदेशाः परमाणवस्ते सन्ति येषां ते जघन्यप्रदेशिकाः । ठाणा० ३५ ।

जहा–यथा दृष्टान्तार्थोऽयं शब्दः । भग० ८२ ।

जहागयपहिय–यथागतपथिकः । उत्त० ११७ ।

जहाजायं–रजोहरणं चोलपट्टकश्च । ओघ० ७५ ।

जहाजायपसुभूय–यथाजातपशुभूतः–शिक्षारक्षणादिवर्जितपशुसदृशः । प्रश्न० ५५ ।

जहाणुपुव्वी–यथानुपूर्वी–यथाऽनुक्रमम् । भग० २०२ ।

जहातच्चं–यथातथ्यं–यथावस्थितम् । सूत्र० १७७ ।

जहाथामं–यथास्थामं–यथासामर्थ्यम् । दश० १०६ ।

जहानामए–यथानामकः–यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थः अथवा 'यथा' इति–दृष्टान्तार्थः 'नाम' इति–संभावनायां 'ए' इति वाक्यालंकारे । भग० ८२ । यथानामकः–अनिर्दिष्टनामकः कश्चित् । जीवा० १२१ ।

जहाभागं–यथाभागं–यथाविषयम् । दश० १६६ ।

जहाभावो–यथाभावः । आव० ९६ ।

जहाभूतं–यथाभूतं–यथावृत्तं अवितथं नत्वन्यथाभूतम् । ज्ञाता० ३४ ।

जहाभूयं–यथाभूतम् । आव० ४२३ ।

जहारायणियं–यथारात्निकं–यथाज्येष्ठम् । प्रश्न० १११ ।

जहावत्तं–यथावृत्तम् । आव० ३६८ ।

जहावरक्खा– । नि० चू० प्र० १२७ आ ।

जहासमाही–यथासमाधि–यथासामर्थ्यम् । आव० ८४६ ।

जहाहिय–यथाहितं–हितानतिक्रमेण । यथाऽधीता वा गुरुसम्प्रदायागतवमनविरेचकादिरूपा । उत्त० ४७५ ।

जहि–अद्यम् । उत्त० ४०४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहिच्छं-इच्छाया अनतिक्रमेण यथेच्छं यदवभासत इति । उत्त० ५०१ ।

जहिच्छियं-यथेच्छितम् । आव० २१३ ।

जहित्ता-हित्वा । उत्त० ३१५ ।

जहियं-यत्र । आव० ६१८ ।

जाइ-जातिः-प्रसूतिः । आचा० १५९ । जातिः-मालती । जं० प्र० ४५ । जातिः-नारकादिप्रसूतिः । आव० ३२५ । पुष्पविशेषः । उत्त० ६५४ । दश० १७४ । तापस्व्यम्, बुद्धिः । दश० २३३ । जातिर्नरकादिषु यत् प्रसूतिमात्रं तद्रूपा गृह्यते । विशे० १०४३ ।

जाइआसोविस-जात्या-जन्मनाऽऽशीविषा जात्याशीविषा। भग० ३४१ ।

जाइउं-यातुम् । बृ० प्र० २७ आ ।

जाइकहा-ब्राह्मणीप्रभृतीनामन्यतमाया या प्रशंसा निन्दा वा सा जात्या जातेर्वा कथेति जातिकथा । ठाणा० २०९ ।

जाइकुसुम-जातिकुसुमम् । दश० १०० ।

जाइतए-याचितः । आव० ४२६ ।

जाइत्तु-गत्वा । आव० २०९ ।

जाइनामं-एकेन्द्रियादीनामेकेन्द्रियत्वादिरूपसमानपरिणाम-लक्षणमेकेन्द्रियादिशब्दव्यपदेशभाक् यत्सामान्यं सा जाति-स्तज्जनकं नाम जातिनाम । प्रज्ञा० ४६९ ।

जाइनामनिहत्ताउए-जातिः-एकेन्द्रियजात्यादिः पञ्चप्र-कारा सैव नाम नामकर्मण उत्तरप्रकृतिविशेषरूपं जाति-नाम तेन सह निधत्तं-निषिक्तं यदायुस्तज्जातिनामनिध-त्तायुः । प्रज्ञा० २१७ ।

जाइपह-जातिपन्थाः-द्वीन्द्रियादिजातिमार्गः । दश०२४४ ।

जाइफलं-स्वादिमफलविशेषः । नि० चू० द्वि० ६० अ ।

जाइमंता-जातिमन्तः-सुजातयः । आचा० ३९१ ।

जाइमरण-जातिमरणः-संसारः । दश० २५८ ।

जाइमा-लुणणपायोग्गाओ कीरइ । दश० चू० १११ ।

जाई-मत्स्यकच्छपविशेषः । जीवा० ३२१ । गुल्मविशे-षः । प्रज्ञा० ३२ । जातिमदः-यज्जातेर्मानम् । आव० ६४६ । जातिः-क्षत्रियाद्या, जननं वा क्षत्रियादिजन्म । उत्त० १८१ । ब्राह्मणादिका । पिण्ड० १२९ । जाति-भेदः । जीवा० १३६ । मातृसमुत्था । आव० ३४१ । पिण्ड० १२९ । उत्त० १४५ । सूत्र० २३६ । जाति-कुसुमवर्णं मद्यम् । विपा० ४९ । मातृकः पक्षः । प्रश्न० ११७ । ज्ञातिः-लोकैषणाबुद्धिः । आचा० १८० ।

जाईकुलकोडी-जातिप्रधानं कुलं तस्य कोटिः जातिकुल-कोटिः । जीवा० ३७२ ।

जाउ-क्षीरपेया । पिण्ड० १६८ ।

जाउकण्णियसगोत्ते-पूर्वाभाद्रपदगोत्रम् । सूर्य० १५० ।

जाउकण्णे-जातुकर्णं-पूर्वाभाद्रपदगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

जाउगा-यातरः-ज्येष्ठदेवरजायाः । बृ० प्र० २७० अ ।

जाउयाओ-देवराजायाणां भार्या इत्यर्थः । ज्ञाता० १९९ ।

जाउलग-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

जाए-जातं-स्तम्बीभूतम् । दश० १५५ ।

जाएल्लओ-जातोऽभवत् । आव० १८८ ।

जाओ-जातः-प्रकारः उत्पन्नश्च । आव० ५२४ ।

जागरओ-जागरणम् । आव० २०४ ।

जागंतिया- । बृ० प्र० ५७ अ ।

जागरा-जाग्रतीति जागराः-असुप्ता जागरा इव जागराः । ठाणा० ३२० ।

जागरिय-जागृतं षष्ठीरात्रिजागरणप्रधानमुत्सवम् । विपा० ५१ । रात्रिजागरिका । औप० १०२ ।

जागरूका- । आचा० १५२ ।

जागरे-जाग्रत् । प्रज्ञा० ४९१ ।

जाच्चबाहलो-जात्यबाल्हीकः-अश्वजातिविशेषः । आव० २६१ ।

जाण-यानं-गन्त्रीविशेषः । प्रश्न० ९१, १६१ । गन्त्र्यादि । भग० १३५ । जीवा० २८१ । रथादिकम् । प्रश्न० १५२ । शकटादि । औप० ४ । शकटम् । भग० १८७, १८८, २३७ । रथादि । औप० ५४ । यानं हास्यादि । आव० ३४६ । उत्त० १४३ । शिबिकादि । आचा० ६० । युग्यादि । दश० २१८ । यानम् । आव० २३४ ।

जाणअं-यानकम् । आव० २२१ ।

जाणए-ज्ञायकः । आव० ४२८ ।

जाणग-ज्ञापकः-तीर्थकृत् । आचा० २० ।

जाणगसरीरं-ज्ञायकस्तस्य शरीरं ज्ञायकशरीरम् । ज्ञो

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा तस्य शरीरं ज्ञशरीरम् । उत्त० ७२ ।

जाणणा–ज्ञानशुद्धिः, प्रत्याख्यानशुद्धया द्वितीयो भेदः । आव० ८४७ ।

जाणरहो–यानार्थं रथो यानरथः । जीवा० २८१ ।

जाणवए–जानपदः–जनपदभवास्तत्रायाताः सन्तो यत्र तत्। भग० ७ ।

जाणवत्तं–यानपत्रम् । आव० २९७ ।

जाणवया–जनपदभवास्तत्र प्रयोजनवशादायाताः सन्तो यत्र सा जानपदाः । सूर्य० २ । जानपदाः–जनपदभवाः । जं० प्र० ७५ । जानपदाः । औप० २ । जानपदाः–जनपदभवास्तत्रायाताः । ज्ञाता० १ । जानपदाः विषयलोकाः । आव० २२९ । जानपदा जनपदे भवा जानपदाः–अनार्याऽऽचरिणो लोकाः । आचा० ३१० ।

जाणविमाण–यानानि–शकटविशेषाः विमानानि–ज्योतिष्कवैमानिकदेवसम्बन्धिगृहाणि । यानविमानानि-पुष्पकपालकादीनि । प्र० ६५ । यान विमानम् । आव० १२१ ।

जाणविही–गमनविधिः । बृ० प्र० २३३ अ ।

जाणसंठिया–यानसंस्थिता । आव० ३९८ ।

जाणसण्णा–ज्ञानसंज्ञा:–मत्याद्याः । आचा० १२ ।

जाणसाला–यानशाला । आव० ५७८ । रथादिगृहम् । प्रश्न० १२७ ।

जाणसालिओ–यानशालिकः । आव० ८९ ।

जाणा–यानानि–शकटादीनि । ज्ञाता० ४३ ।

जाणाइ–शकटादीनि । भग० ५४७ । यानानि–गन्त्र्यादीनि । जं० प्र० १२३ ।

जाणावणा–रञ्जणा । उप० मा० गा० २० ।

जाणियं–ज्ञातम् । आव० १४६ ।

जाणुओ–ज्ञायकः–केवलशास्त्रकुशलः । विपा० ४० ।

जाणुकोप्परे–जानुकूर्परः । उत्त० ११८ ।

जाणुकोप्परमाता–जानुकूर्पराणामेव माता–जननी जानुकूर्परमाता । निरय० ३० ।

जाणुकोप्परमाया–जानुकूर्पराणामेव माता–जननी जानुकूर्प्परमाता, एतान्येव शरीरांशभूतानि तस्याः स्तनौ स्पृशन्ति नापत्यमित्यर्थः । अथवा जानुकूर्पराण्येव मात्रा–परप्रणोदे साहाय्ये समर्थ उत्सङ्गनिवेशनीयो वा परिकरो यस्या न पुत्रलक्षणः सा जानुकूर्परमात्रा । ज्ञाता० ८० । जानुकूर्परमाता । आव० २१० ।

जाणुयपुत्ता–ज्ञायकपुत्रः–केवलशास्त्रकुशलपुत्रः । विपा० ४० ।

जाणुया–ज्ञायकाः–शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपतः चिकित्सावेदिनः । ज्ञाता० १८० ।

जाणू–जानुनी–अष्ठीवन्तौ । जीवा० २७० । गदिता । ठाणां० १७४ ।

जाणूकं–जानु–बाहुजङ्घासन्धिरूपोऽवयवः। जं० प्र० २३४।

जात–प्रकारवाचकः । नि० चू० प्र० १५१ अ । भेदवाचकः । नि० चू० प्र० ८४ आ । प्रकारवाची । उप्पण्णवाची । नि० चू० द्वि० ९३ अ । उत्पत्तिधर्म्मकं, व्यक्तिवस्तु । ठाणा० १८४ । प्रकारः । आव० २६१ । सणिसेज्जं रयोहरणं मुहपोत्तिया चोलपट्टो य । नि० चू० द्वि० ४६ आ ।

जातकम्मं–जातकर्म्म–प्रसवकर्म्म नालच्छेदननिखननादिकम् । ज्ञाता० ४१ । निरय० ३२ ।

जाततेए–जाततेजाः–वह्निः । प्रश्न० १५८ ।

जातयः–वर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि । सम० ६४ ।

जातरूपं–स्वर्णम् । उत्त० ५२७ । रूप्यम् । उत्त० ६६६ ।

जातरूवे–जातरूपकाण्डं–जातरूपाणां विशिष्टो भूभागः । जीवा० ८९ ।

जातविम्हयं–जातविस्मयः । आव० ३५९ ।

जाति–तिर्यग्जातिः । जीवा० १३४ । आसन्नलब्धप्रतिभो जातिः । दश० ६ । आर्यभेदः । सम० १३५ ।

जातिआसीविसा–जातित आशीविषा जात्याशीविषाः–वृश्चिकादयः । ठाणा० २६५ ।

जातिकथा–जातेः प्रशंसनं द्वेषणं वा । स्त्रीकथायाः प्रथमभेदः । आव० ५८१ ।

जातिकहा–जातिकथा–ब्राह्मणादिजातिसम्बन्धेन कथा । प्रश्न० १३९ ।

जातिकुम्भी–यस्य सागारिकं भ्रातृद्वयं वा वातदोषेण शूनं महाप्रमाणं भवति स जातिकुम्भी । बृ० तृ० १०० अ ।

जातिकुलम्– । जीवा० १३४ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जातितः–तत्र जातितो वृश्चिकमण्डूकसर्पमनुष्यजातयः क्रमेण बहुतर–बहुतमविषाः । विशे० ३८० । जातितो वृश्चिकमण्डूकोरगमनुष्यजातयः । आव० ४८ ।
जातिथेरा–जातिस्थविराः–षष्टिवर्षप्रमाणजन्मपर्यायाः । ठाणा० ५१६ ।
जातिपत्रं–पत्रविशेषः । जीवा० १३६ ।
जातिपुष्पं–पुष्पविशेषः । प्रज्ञा० ३७ ।
जातिफलं–फलविशेषः । जीवा० १३६ ।
जातिवंझा–जातेः–जन्मत आरभ्य वन्ध्या–निर्बिजा जातिवन्ध्या । ठाणा० ३१३ ।
जातिसंपन्ने–उत्तममातृकपक्षयुक्तः । ज्ञाता० ७ ।
जातिस्मरणं–आभिनिबोधिकविशेषः । आचा० २० । मतिविशेः । प्रज्ञा० ५१ ।
जातिहिंगुले–जात्यः–प्रधानो हिङ्गुलकः जात्यहिंगुलकः । प्रज्ञा० ३६१ ।
जाती–याति–प्रवर्त्तते–अवबुध्यते । बृ० द्वि० १९७ अ । गन्धद्रव्यविशेषः । जीवा० १९१ ।
जातीगुम्मा–जातिगुल्माः । जं० प्र० ९८ ।
जातीसरणं–जातिस्मरणं–मतिज्ञानभेदः । आव० ११० ।
जात्यं– । जीवा १३६ ।
जात्यसुवर्णमय–सुवर्णविशेषः । नंदी० १५७ ।
जात्यहिंगुलकः–पुष्पविशेषः । जीवा० १९१ ।
जात्यार्याः–इक्ष्वाकुविदेहहरिज्ञातां बष्ठकुरुबुंबुनावोग्रभोगराजन्यादिकुलाः । तत्त्वा० ३–१५ ।
जात्युत्तरं– । ठाणां० ४९२ ।
जानाति–अवायधारणापेक्षयाऽवबुध्यते । भग० ३५७ ।
जानु–अङ्गविशेषः । आचा० ३८ ।
जामा–याम्या–दक्षिणदिक् । आव० २१५ ।
जामाउगा– । नि० चू० प्र० ३५८ अ ।
जामि–यामि । आव० २९९ ।
जामितिया– । नि० चू० प्र० २३० अ ।
जामेय–यामेव । सूर्य० ३ ।
जाम्बुवती–विष्णुराज्ञी । विशे० ६११ ।
जाय–जीयाणि चेव यवीभूयाणि । दश० चू० ६९ । यागं–पूजाम् । ज्ञाता० ८३ । यागं–पूजा यात्रा वा । विपा० ७७ । यातं–अपगतम् । आव० ८४४ । जातं–प्रकारः । प्रश्न० १२४ । जातः पुत्रः । उत्त० ३९९ । जातः–प्रवृत्तः । सूर्य० ५ । जातं–जातिः प्रकारो वा । ठाणां० ४९२ ।
जायइ–जायते–कल्पते । आचा० १४० ।
जायकुंभी–वायदोषेण जस्स सागारियं वसणं वा सुज्जति सो जायकुंभी रोगीत्यर्थः । नि० चू० द्वि० ३३ अ ।
जायकोउहल्ले–जातं कुतूहलं यस्य स जातकुतूहलः–जातौत्सुक्यः । राज० ५८ । ज्ञाता० १ ।
जायखंधे–जातः–अत्यन्तोपचितीभूतः स्कन्ध एवास्येति जातस्कन्धः । उत्त० ३४९ ।
जायणं–यातनं–कदर्थनम् । प्रश्न० ३७ ।
जायणजीविणो–याचनेन जीवनं–प्राणधारणमस्येति याचनजीवनम् । उत्त० ३६० ।
जायणा–याचनं–मार्गणम्, चतुर्दशः परीषहः । आव० ६५६ ।
जायणावत्थं–जं मग्गिज्जइ कस्सेयंति अपुच्छिय कस्स छट्टा कडंति अगवेसिय । नि० चू० द्वि० १६२ अ ।
जायणि–असत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २१० ।
जायणिया–याचना । आव० ६७७ ।
जायणी–याचनी कस्यापि वस्तुविशेषस्य देहीति मार्गणं, असत्या मृषाभाषायास्तृतीयो भेदः । प्रज्ञा० २५६ ।
जायतेअ–जाततेजः–अग्निः । दश० २०१ ।
जायतेय–वह्निः । भग० १८४ ।
जायथामे–जातस्थामा–अङ्गीकृतमहाव्रतभारोद्वहने जातसामर्थ्यः । प्रश्न० ११८ ।
जायमाण–यान्–गच्छन् । भग० १८६ ।
जायनिदुया–जातानि उत्पन्नान्यपत्यानि निर्दुतानि–निर्यातानि मृतानि यस्याः सा जातनिर्दुता । विपा० ५१ ।
जायभेदे–जातभेदः–उपचितचतुर्थधातुः । उत्त० २७३ ।
जायरूव–जातरूपं–सुवर्णम् । भग० १३५ । जीवा० २०४, २२८ । रूप्यम् । जं० प्र० ३२४ । जातरूपः–सुवर्णविशेषः । जं० प्र० २३ । जातरूपं–सुवर्णम् । ठाणा० ४२२ । जं० प्र० ६२ ।
जायरूववर्डिसए–जातरूपावतंसकः– उत्तरस्यामवतंसकः । जीवा० ३९१ । भग० २०३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जायसड्ढे-जाता-प्रवृत्ता श्रद्धा-इच्छाऽस्येति जातश्रद्धः । ज्ञाता० ९ ।

जायसूयग-जातसूतकं नाम जन्मानन्तरदशाह्नि यावत् । व्य० प्र० ७ आ ।

जाया-हे पुत्र । ज्ञाता० ५० । जाता-अभियोगकृता विषकृता च । व्य० द्वि० ३१५ आ । जाता-मूलगुणैः प्राणातिपातादिभिरशुद्धा । ओघ० १९३ । चमरासुरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत् । जीवा० १६४ । यात्रा-संयमनिर्वहणनिमित्तम् । उत्त० २९४ । जाता-प्रकृतिमहत्त्ववर्जितत्वेनास्थानकोपादीनां जातत्वाज्जाता, चमरस्य तृतीया पर्षत् । भग० २०२ । शक्रदेवेन्द्रस्य बाह्या पर्षद् । जीवा० ३९० । या दोषात्परित्यागार्हाहारविषया सा जाता । आव० ६४१ । यात्रा-संयमयात्रा । भग० १२२ । चमरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत् । ठाणा० १२७ ।

जायाइ-अवश्यं यायजीति यायाजी । उत्त० ५२२ । जाताः । आचा० ३४८ ।

जायामायावित्ती-संयमयात्रामात्रार्थं वृत्तिः-भक्तग्रहणं-यात्रामात्रावृत्तिः । औप० ३७ ।

जायाहि-याचस्व । उत्त० ५३२ ।

जार-जारः-नाट्यविशेषः । जं० प्र० ४१४ । मणिलक्षणविशेषः । जीवा० १८९ । जं० प्र० ३१ । नि० चू० प्र० २९६ अ ।

जारु-अनन्तकायवनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ ।

जारेकण्हा-वाशिष्ठगोत्रस्यावशेषः । ठाणा० ३९० ।

जालं-आनायम् । उत्त० ४०७ । जालं-मत्स्यबन्धनम् । प्रश्न० १३ । मत्स्यबन्धनविशेषः । विपा० ८१ । जालकम् । प्रज्ञा० ९९ । सूर्य० २६४ । जीवा० १७५ ।

जालंधर-गोत्रविशेषः । आचा० ४२१ ।

जाल-जालं-सच्छिद्रो गवाक्षविशेषः । ज्ञाता० १४ । जालः-गवाक्षः । जं० प्र० १८८ । मूलाग्निप्रतिबद्धा ज्वाला । दश० १५४ । जालः-समूहः । उत्त० ४६० ।

जालकडए-जालानि-जालकानि भवनभित्तिषु प्रसिद्धानि तेषां कटकः-समूहः जालकटकः, जालकाकीर्णा रम्यसंस्थानप्रदेशविशेषपङ्क्तिः । जीवा० १७८ ।

जालकडगा-जालकाकीर्णो रम्यसंस्थानो, प्रदेशविशेषो । जं० प्र० ५२ ।

जालकिडुगंतरेण-जालकटकान्तरे । आव० ६३ ।

जालगं-जालकं-चरणाभरणविशेषः । औप० ५५ ।

जालगंठिया-जालं-मत्स्यबन्धनं तस्येव ग्रन्थयो यस्यां सा जालग्रन्थिका-जालिका भग० २१४ । सङ्कलिकामात्रम् । भग० २१५ ।

जालग- । नि० चू० प्र० १२७ अ ।

जालगद्दह- । नि० चू० द्वि० ११२ अ ।

जालगा-द्वीन्द्रियजीवभेदः । उत्त० ६९५ ।

जालघरगं-जालगृहं-जालकान्वितम् । ज्ञाता० ९५ । जालगृहकं-जालकयुक्तं ग्रहम् । जीवा० २०० । दार्वादिमयजालकप्रायकुड्यं यत्र मध्यव्यवस्थितं वस्तु वहिःस्थितैर्दृश्यते । ज्ञाता० १२९ ।

जालघरगा-जालयुक्तानि गृहकाणि । जं० प्र० ४५ ।

जालपंजर-जालपञ्जरं-गवाक्षम् । जीवा० २०५, ३६० । गवाक्षः । जं० प्र० ४९ । गवाक्षापरपर्यायाणि । राज० ६२ ।

जालयं-जालकं-छिद्रान्वितो गृहावयवविशेषः । प्रश्न० ८ ।

जालवंदं-जालवृन्दं-गवाक्षसमूहः । जीवा० २६९ ।

जालविंद-जालवृन्दः-गवाक्षसमूहः । जं० प्र० १०७ ।

जालंतररयणं-जालानि-जालकानि तानि च भवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभानिमित्तं रत्नानि यत्र तत् जालान्तररत्नम् । जीवा० ३७९ ।

जाला-सुभूमचक्रवर्तिनः माता । सम० १५२ । ज्वाला-छिन्नमूलाऽनङ्गारप्रतिबद्धा । आचा० ४९ । महापद्ममाता । आव० १६१ । ज्वाला-अनलसंबद्धा । जीवा० १०७ । अनलसंबद्धा दीपशिखा वा । जीवा० २९ । ज्वाला-जाज्वल्यमानखादिरादिज्वाला अनलसंबद्धा दीपशिखा । प्रज्ञा० २९ । ज्वाला-अग्निशिखा । ठाणा ३३६ । छिन्नमूला-ज्वलनशिखा । उत्त० ६९४ । ज्वाला-इन्धनच्छिन्ना । ज्ञाता० २०४ ।

जालाउया-द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

जालाणि-बन्धनविशेषरूपाण्यात्मनोऽनर्थहेतून् । उत्त० ४०७ ।

जालायुसा-द्वीन्द्रियजीवविशेषः । जीवा० ३१ ।

जालि-वंशसमूहः । नंदी० १५५ । जालिः-अन्तकृद्दशानां

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अन्त० १४ । अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अनुत्त० १ ।

जालिग–जालिकं–देशकथाविशेषः । आव० ५८१ ।

जालिया–जालिका–लोहकञ्चुकः । प्रश्न० ४७ ।

जाली–जाली । आव० ४२१ ।

जालीकुमारो– । अनुत्त० १ ।

जालो–जालः–विच्छत्तिच्छिद्रोपेतगृहावयवविशेषः । औप० ६५ ।

जावं–यावत्–अवधिवाचकः । जं० प्र० ३८६ ।

जावतावति– । ठाणां० ४६७ ।

जावंतिगा– । नि० चू० प्र० १८६ अ ।

जावंतिया–यावन्तो भिक्षाचरा आगमिष्यन्ति तावतां दातव्यं इति अभिप्रायेण यस्यां दीयते सा यावन्तिका । बृ० द्वि० १४० अ । यावद्भिक्षुकाणां दानाय संखडी । बृ० द्वि० १४० अ ।

जावंते–यावान्–भगवत्याः प्रथमशतके षष्ठ उद्देशः । भग० ६ ।

जाव–यावत्–ऐदम्पर्यार्थः । भग० २६६ । यावत्–सम्पूर्णः । जं० प्र० २४३ । यावच्छब्दो न संग्राहकः किन्त्ववधिमात्रसूचकः । जं० प्र० ३३८ । यावच्छब्दो न गर्भगतसंग्रहसूचकः संग्राह्यपदाभावात्, किन्तु सजातीयभवनपतिसूचकः । जं० प्र० १६१ ।

जावई–कन्दविशेषः । उत्त० ६९१ ।

जावऊसासो–यावदुच्छ्वासः–यावदायुः । आव० ८४३ ।

जावए–यापयति–वादिनः कालयापनां करोति । ठाणां० २६१ । जानाति छाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञापकः । सम० ४ ।

जावग–यापकः–विकल्पभेदः । दश० ५७ ।

जावज्जीवाए–यावजीवं–आप्राणोपरमादित्यर्थः । दश० १४३ ।

जावणिज्जं– । नि० चू० प्र० १५० अ ।

जावणिज्जा–यापनीया–यथाशक्तियुक्ता । आव० ५४७ ।

जावताव–यावद्वयम् । भग० ४६८ ।

जावति–वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

जावतियं–आचंडाला । नि० चू० प्र० २३० आ ।

जावदयं–यावदयं–परिमाणे मर्यादायां अवधारणे च । विशे० १३२३ ।

जावसिआ–यावसिका–घासवाहिकाः । ओघ० ९७ ।

जावसिया–यवसः–तत्प्रायोग्यमुद्गमाषादिरूप आहारस्तेन तद्वहनेन चरन्तीति यावसिकाः । बृ० प्र० २४७ आ । जवसं वहंति जे ते जावसिया । नि० चू० प्र० २०० आ ।

जावित–यापयन् । आव० ५३८ ।

जासुमणकुसुमे–जपाकुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

जासुमणा–जासुमणा नाम वृक्षः । भग० ६५६ ।

जासुमि(म)णा–जपा वनस्पति विशेषस्तस्याः सुमनसः पुष्पाणि । अन्त० ६ ।

जासुवण–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

जाहओ–जाहकः–तिर्यग्विशेषः । आव० १०३ ।

जाहग–जाहकः–सेहुलकः । विशे० ६२७ । जाहकः । व्य० द्वि० ३९३ अ । जाहकाः–कण्टकावृतशरीराः । प्रश्न० ८ ।

जा(बा)हाडिता–सगर्भाजाता । बृ० द्वि० २५७ अ ।

जाहिति–भविष्यति । आव० ४२२ ।

जाहो–भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः । जीवा० ४० ।

जिंघणा–जिघ्रणम् । ओघ० १३८ ।

जिअ–जिता–परिचिता । दश० २३५ ।

जिअनिद्दं–जिता निद्रा–आलस्यं येन तत् जितनिद्रं–त्यक्तालस्यम् । जं० प्र० २३७ ।

जिअसत्तु–जितशत्रुः–अजितपिता । आव० १६१ । काकन्दीनगर्यधिपतिः । अनुत्त० २ ।

जिइंदिए–जितेन्द्रियः–संयमी । भग० १२२ ।

जिच्चं–जीयते–हार्यते अतिरौद्रैरिन्द्रियादिभिः आत्मा तदिति जेयम् जीयेत्–हार्येत । जीयते–हार्यते । उत्त० २८२ ।

जिच्चमाणो–जीयमानो–हार्यमाणः । उत्त० २८२ ।

जिच्चा–जित्वा–पुनः पुनरभ्यासेन परिचितान् कृत्वा । उत्त० ८१ ।

जिज्जूहइ–निष्काश्यते । बृ० तृ० ४ ।

जिज्झगारा–तुन्नाकविशेषः, शिल्पार्यभेदः । प्रज्ञा० ५६ ।

जिट्ठयं–ज्येष्ठकं–अतिशयप्रशस्यमतिवृद्धं वा । उत्त० ४९० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिट्ठा–ज्येष्ठा–सुदर्शना, अनवद्याङ्गी । विशे० ६३५ । नि० चू० द्वि० ४६ अ ।

जिट्ठामूले–ज्येष्ठामूलः–ज्येष्ठः । उत्त० ५३७ ।

जिणंतस्स–जयतः–अभिभवतः । दश० १६० ।

जिणंदासे–जिनदासः–विपाकदशानां द्वितीयश्रुतस्कन्धे पञ्चममध्ययनम् । विपा० ८९ ।

जिण–जिनः–रागादिजेता । भग० ६७ । जयति–निराकरोति रागद्वेषादिरूपानरातीनिति जिनः । रागादिजयः । भग० ६ । रागादीनां जेता, यद्वा मनःपर्यवज्ञानी । जं० प्र० १३६ । जिनः–तीर्थङ्करः । आव० ६६२ । हिताप्त्यनिवर्त्तकयोगसिद्धो गणधारी । जीवा० ३ । हिताप्त्यनिवर्त्तकयोगः, हितप्रवृत्तगोत्रविशुद्धोपायाभिमुखापायविमुखादिको वा । गोत्रविशुद्धोपायाभुमुखहितप्रवृत्तादिभेदः । जीवा० ४ । जयति–निराकरोति रागद्वेषादिरूपानरातीनिति जिनः । सम० ४ । सयोगीकेवली । ठाणा० २०२ । विशिष्टश्रुतधरः, श्रुतजिनः अवधिजिनः, मनःपर्यायज्ञानजिनः, छद्मस्थवीतरागश्च । आव० ५०१ ।

जिणइ–जयति । आव० ५०२ ।

जिणकप्पट्ठिति–जिनाः–गच्छनिर्गतसाधुविशेषास्तेषां कल्पस्थितिः जिनकल्पस्थितिः । ठाणा० १६९. ३७४ ।

जिणकप्पिय–जिनकल्पिकः । आव० ३२३ ।

जिणकप्पिया–कल्पिकविशेषः । नि० चू० प्र० ३३८ आ ।

जिणति–जयति । आव० ३४२ ।

जिणदत्त–जिनदत्तः–चम्पायां सुश्रावकः । दश० ४७ । लोभोदाहरणे पाटलीपुत्रे श्रावकः । आव० ३९७ । परलोकनमस्कारफलविषये मथुरायां श्रावकः । आव०४५४ । इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते श्रेष्ठी सुभद्रापिता । आव० ७९९ । चम्पायां सार्थवाहः । ज्ञाता० २०० ।

जिणदत्तपुत्त–चम्पायां सार्थवाहपुत्रः । ज्ञाता० ९१ ।

जिणदासो–जिनदासः–मनोगुप्तिदृष्टान्ते श्रेष्ठीसुतः श्रावकः । आव० ५७८ । महेश्वरविशेषः । आव० ३९६ । मथुरायां श्राद्धविशेषः । आव० १९७ । परलोकफलविषये कुलपुत्रमित्रम् । आव० ८६३ । रायपुरे श्रावकविशेषः । महाचन्द्राभिधकुमारस्य सुतः । विपा० ९५ ।

जिणदेवो–जिनदेवः–भावप्रणिधिविषये भृगुकच्छे आचार्यः । आव० ७१२ । आत्मदोषोपहारविषयेऽर्हन्मित्रश्रेष्ठिपुत्रः । आव० ७१४ । मूलगुणप्रत्याख्याने कोटीवर्षे श्रावकः । आव० ७१५ । सङ्गपरिहरणविषये चम्पायां सार्थवाहः श्रावकः । आव० ७२३ ।

जिणधम्म–कांचनपुरश्रेष्ठी यत्पृष्ठि स्थालीदग्धा द्विमासपर्यायः । मर० ।

जिणपडिमा–जिनप्रतिमा । जीवा० २२८ ।

जिणपसत्थं–जिनप्रशस्तं–जिनप्रशासितम् । प्रश्न० १४७ ।

जिणपालिए–चंपायां माकन्दीभद्रायाः पुत्रः । ज्ञाता० १५६ ।

जिणमय–जिनाः–तीर्थंकरास्तेषां आगमरूप प्रवचनम् । आव० ५८८ । आगमः । दश० २५५ ।

जिणरक्खिरा–चंपायां माकन्दीभद्रायाः पुत्रः । ज्ञाता० १५६ ।

जिणलिंगं–अचेलकत्वम् । बृ० तृ० ५५ आ ।

जिणवयणं–जिनवचनं–वाच्यवाचकयोरभेदोपचाराज्जिनवचनाभिहितमनुष्ठानम् । उत्त० ७०८ ।

जिणवयणबाहिरो–जिनवचनबाह्यः–यथावस्थितागमपरिज्ञानरहितः । आव० ५३३ ।

जिणसकहा–जिनसकथा–जिनसक्थीनि । जं० प्र० ५३३ ।

जिणसकहाओ–जिनसक्थीनि–जिनास्थिनि । भग० ५०५ । जिनसक्थीनि–तीर्थंकराणां मनुजलोकनिर्वृतानां सक्थीनि अस्थीनि । सम० ६४ ।

जिणसासण–जिनशासनं- जिनागमम् । उत्त० ८८ । जिनशासनं । क्रोधविपाकप्रतिपादकं वीतरागवचनम् । दश० २३२ ।

जिणा–रागद्वेषमोहान् जयन्तीति जिनाः–सर्वज्ञाः । ठाणा० १७४ । ये जिनकल्पं प्रतिपत्स्यन्ते ते जिनाः । बृ० प्र० २२९ आ । जिनकल्पिकाः । ओघ० २०८ । गच्छनिर्गताः साधुविशेषाः । बृ० तृ० २५१ अ ।

जिणित्ता–जित्वा । उत्त० ३१३ ।

जिणियव्वं–जेतव्ययम् । आव० ३४२ ।

जिणियाइओ–जितवान् । आव० ५०२ ।

जिणुस्सेहो–जिनोत्सेधः–जिनानां उत्कर्षतः पञ्चधनुः शतानि जघन्यतः सप्तहस्ताः । जीवा० २२८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिण्णकूवो–जीर्णकूपः । आव० १५२ ।
जिण्णुज्जाणे–जीर्णोद्यानम् । ज्ञाता० ७८ ।
जितं–परावर्त्तनं कुर्व्वतः परेण वा क्वचित् पृष्टस्य यच्छीघ्रमागच्छति तज्जितम् । अनु० १५ ।
जितशत्रुः–छत्रानगर्यां नृपः । आव० १७७ । मिथिलानगर्यां राजा । सूर्य० २ । सहसम्मत्यादिदृष्टान्ते वसन्तपुरे राजा । आचा० २१ ।
जितसत्तू–जितशत्रुः–पञ्चालजनपदे राजा काम्पिल्यनगरनायक इति । ठाणा० ४०१ । जितशत्रुः–भद्दिलपुराधिपतिः । अन्त० ४ । बृ० तृ० २३१ अ । जितशत्रुः–कौशाम्बीनृपतिः । उत्त० २८७ । चम्पायां नरपतिः । ज्ञाता० १७३ ।
जितारो–आनन्दपुरनगरे राजा । बृ० तृ० १०७ आ ।
जितारीराया–आनंदपुरे राया । नि० चू० द्वि० ४२ अ ।
जिनकल्प–साधुभेदविशेषः । विशे० १० ।
जिनकल्पिकः–साधुभेदविशेषः । भग० ४ ।
जिनकल्पिकादिसमाचारः–कल्पः । भग० ६१ ।
जिनदत्तः–आधासम्भवदृष्टान्ते सङ्कुलग्रामे श्रावकः । पिण्ड० ६३ ।
जिनदासः–आच्छेद्यद्वारविवरणे वसन्तपुरे श्रावकः । पिण्ड० १११ ।
जिनप्रभसूरिः–आचार्यविशेषः । जं० प्र० ५४३ ।
जिनभद्र– । विशे० १ ।
जिनमतिः–आधासम्भवदृष्टान्ते सङ्कुलग्रामे जिनदत्तभार्या । पिण्ड० ६३ ।
जिनमुद्राः–मुद्राभेदः । भग० १७४ ।
जिनाः–जिनकल्पिकादयः । ओघ० १६७ । गच्छनिर्गतसाधुविशेषाः । ठाणा० १६६ ।
जिनेश्वरः–अभयदेवसूरीणां गुरुः । औप० ११६ । ज्ञाता० २५४ ।
जिब्भाडं–अतीवगिद्धो । नि० चू० द्वि० १३५ आ ।
जिब्भिदिए–जिव्हेन्द्रियम् । प्रज्ञा० २६३ ।
जिब्भिआ–जिह्विका, प्रणाला । जं० प्र० २६१ ।
जिमित–जिमत् । आव० ३५३ ।
जिम्मइ–जिम्यते । आव० १५० ।
जिम्ह–माया । व्य० प्र० २४६ आ ।
जिम्ह–लज्जनीयं । नि० चू० प्र० २६६ अ । बृ० द्वि० ७३ आ । परवञ्चनाभिप्रायेण । भग० ५७३ । जिह्माः । ठाणा० २७० । जैम्हम् । सम० ७१ ।
जिम्हजढ–मायारहितः । व्य० प्र० २४६ आ ।
जियंतए–हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
जिय–जीतव्यवहारः । उत्त० ६४ । जितं–परिचितम् । विशे० ६३५ । जितं–द्रुतमागच्छति । विशे० ४०५ ।
जियकप्प–जीतकल्पः–जिनप्रतिबोधनलक्षणः आचरितकल्पः ठाणा० ४६३ । नि० चू० तृ० १०२ अ ।
जियपडिमं– । नि० चू० प्र० २४३ आ ।
जियपडिमा–जीवप्रतिमा । आव० ६६८ ।
जियसत्तु–द्वितीयतीर्थङ्करस्य पितृनाम । सम० १५० । जितशत्रुः–राजा । आव० ३७२ । मिथिलायां नृपतिः । जं० प्र० ६ । शिक्षायोगदृष्टान्ते प्रत्यन्तनगराधिपतिः । आव० ६७८ । इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते वसन्तपुरेऽधिपतिः । आव० ७६६ । क्षितिप्रतिष्ठितनगरस्य राजा । पिण्ड० ३० । जितशत्रुर्नाम नरपतिः । व्य० प्र० १८८ आ । श्रावस्त्यां नगर्यां राजा राज० ११६ । वाणिजग्रामनगरे राजा । उपा० १ । खितिपतिट्ठियनयरे राया । नि० चू० तृ० ६८ आ । नि० चू० प्र० ३५६ आ । सावत्थिनयरे राया । बृ० द्वि० १५२ आ । वणवासीनगरीए राया । बृ० तृ० ११३ आ । जितशत्रुः चम्पानगर्यामधिपतिः । उत्त० ६२ । ज्ञाता० १६३ । अचलपुरेनृपतिः । उत्त० १०० । श्रावस्तिनगर्यां राजा । उत्त० ११४ । मथुरायां नृपतिः । आव० ३६८ । उत्त० १२० । उत्त० १४८ । उज्जयिन्यां नृपतिः । उत्त० १६२, २१३ । सर्वतोभद्रनगराधिपतिः । विपा० ६८ । नृपतिः । विपा० ६५ । वसन्तपुरे नृपतिः । आव० ३७२, ३७८, ३६३ । ओघ० १५८ । जितशत्रुः–लोहार्गलराजधान्या राजा । आव० २१० । तुरुमिणीनगर्यां राजा । आव० ३६६ । मृगकोष्ठकनगरे राजा । आव० ३६१ । पाटलीपुत्रे राजा । आव० ३६७ । स्पर्शेन्द्रियदृष्टान्ते वसन्तपुरे राजा । आव० ४०२ । शिल्पसिद्धदृष्टान्ते पाटलिपुत्रे राजा । आव० ४०६ । परलोके नम-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्कारफलविषये वसन्तपुरनगरे राजा। आव० ४५३। योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते क्षितिप्रतिष्ठितनगरे राजा। आव० ६७०। तितिक्षोदाहरणे मथुरायामधिपतिः। आव० ७०२। आत्मसंयमविराधनादृष्टान्ते क्षितिप्रतिष्ठितनगरेऽधिपतिः। आव० ७३२। राजाभियोगविषये हस्तिनागपुरनृपतिः। आव० ८११। गुणोदाहरणे पाटलिपुत्रे राजा। आव० ८१६। द्रव्यातङ्कोदाहरणे राजगृहे राजा। आचा० ७५। पश्चालाधिपती। ज्ञाता० १२४। आम्लकल्पायां नरपतिः। ज्ञाता० २४८।

जियसत्तूराया- । नि० चू० प्र० २१८ आ।

जिया-जिता-अभ्यस्ता उचिता वा अनुष्ठीयमाना। आव० ५६४।

जियारी-सम्भवजिनपिता। सम० १५०। जितारिः-सम्भवपिता। आव० १६१।

जिवंतगाणं- । भग० ८०२।

जिवसंथव-जिनसंस्तवः 'लोगस्सुज्जोअगरे' इत्यादिरूपः। दश० १८०।

जिव्हा-रसना। आचा० ३८।

जीअं-जीतं-कल्पः, आचारः। जं० प्र० १५६। कल्पः। जं० प्र० २५२।

जीअलोगं-जीवलोकं-वर्तमानभवादन्यं भवं पृथिवीकायिकादिकं, अपमृत्युं प्राप्नुतेत्यर्थः। जं० प्र० २४६।

जीए-प्रभूतानेकगीतार्थकृता मर्यादा तत्प्रतिपादको ग्रन्थोऽप्युचारात् जीतम्। व्य० प्र० ५ अ। जीतः-व्यवहारः। व्य० द्वि० ३६३।

जीतं-स्थितिः कल्पो मर्यादा (सूत्र) व्यवस्था च। नंदी० ४६। भग० ३८४। द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषप्रतिषेवानुवृत्त्या संहननधृत्यादिपरिहाणिमवेक्ष्य यत्प्रायश्चित्तदानं यो वा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्तः कारणतः प्रायश्चित्तव्यवहारः प्रवर्त्तितो बहुभिरन्यैश्चानुवर्त्तितस्तज्जीतमिति। ठाणा० ३१८।

जीभुमणा-गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

जीमूत-जीमूतः-बलाहकः। जीवा० १८६। ठाणा० २७०। जीमूतः-प्रावट्प्रारम्भसमयभावीजलभृतः, बलाहकः। प्रज्ञा० ३६०।

जीयंति-जीयन्ते-हार्यन्ते। उत्त० २७८।

जीय-जीवितं-श्रुतं, मर्यादा, सवानुचीर्णम्। विशे० ५०७। जीतं-दुष्टनिग्रहविषयमाचरितम्। प्रश्न० ५८। जीतं-जीवितं, अवश्यं, अव्यवच्छित्तिनयाभिप्रायतः सूत्रमेव वा। आव० ६८। जीवः-जीवितं, जीतं-कल्पतः। प्रश्न० १३।

जीयदंडो-जीतदण्डः-रूढदण्डः, जीवदण्डो वा-जीवितनिग्रहलक्षणः। प्रश्न० ५८।

जीया-जीवा-प्रत्यञ्चा। ज्ञाता० २२२।

जीरंतो-जीर्यन्। आव० ५६६।

जीरकं-रसविशेषः। सूर्य० २९३। हरितकविशेषः। २९३।

जीरा- । भग० ८०२।

जीरु-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।

जीर्णः-हानिगतदेहः। भग० ७०५।

जीर्णकर्पटः-कुचेलः। औप० ७४।

जीवंजीवगसउणे- । भग० ६२७।

जीवंजीवा-चर्मपक्षिविशेषः। प्रज्ञा० ४९।

जीवजीवेण-जीवजीवेन-जीवबलेन गच्छति न शरीरबलेनेत्यर्थः। भग० २१६। ज्ञाता० ७६। जीववीर्येण न तु शरीरवीर्येणेत्यर्थः। अनुत्त० ७।

जीवंजीवेन-जीवबलेन न शरीरबलेनेत्यर्थः। अन्त० २७।

जीवंजीवो-चर्मपक्षिविशेषः। जीवा० ४१।

जीवंतिया-अजीविष्यत्। आव० ३६८।

जीव-उपयोगः। विशे० ८८७। आयुःप्राणादिमान्। अनु० २४२। जीवितवान् जीवति जीविष्यति चेति जीवः-प्राणधारणधर्मा आत्मा। ठाणा १६। जीवसामान्यम्। जीवनिति प्राणान् धारयनित्यर्थः। जीवनपर्यायविशिष्टः। जीवा० १४०। प्राणो भूतः सत्त्वो विज्ञो वेदयिता। भग० १९२। जीवा-प्रत्यञ्चा। जं० प्र० २०१। प्राणधारणम्। ठाणा० ११६। जीतम्। व्य० द्वि० ३६३ आ। जीवः। भग० २२९। ज्ञानाद्युपयोगः। भग० ३२५। जीवाः-गर्भव्युत्क्रान्तिकसम्मूर्च्छनजौपपातिकपंचेन्द्रियाः। आचा० ७१।

जीवअजीवमीसग-जीवाजीवमिश्रा-सत्यामृषाभाषाभेदः।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दश० २०६ ।

जीवअपच्चक्खाणकिरिया-जीवविषये प्रत्याख्यानाभावेन यो बन्धादिर्व्यापारः सा जीवाप्रत्याख्यानक्रिया ।ठाणा०४१।

जीवआरंभिया-यज्जीवानारभमाणस्य-उपमृग्दतः कर्मबन्धनं सा जीवारम्भिकी । ठाणा ४१ ।

जीवइ-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

जीवकप्पो-बहुशोऽनेकवारं प्रवृत्तः महाजनेन वानुवर्त्तित एष पञ्चमको जीतकल्पः । व्य० द्वि० ४४१ अ ।

जीवकिरिया-जीवस्य क्रिया-व्यापारो जीवक्रिया । ठाणा० ४० ।

जीवगाहो-जीवग्राहम् । उत्त० ५१ ।

जीवग्गाहो गिण्हंति-जीवतीति जीवस्तं जीवन्तं गृह्णन्ति । ज्ञाता० ८७ ।

जीवघणो-जीवघनः-निचितीभूतजीवप्रदेशरूपः । प्रज्ञा० ६१० ।

जीवजढं-आहाकम्म । बृ० द्वि० १०६ अ ।

जीवजीवक-जीवजीवकः-पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

जीवणं-जीवनं-तथैवाजन्मापि प्रवृत्तिः । प्रश्न० १०६ ।

जीवदय-जीवनं जीवो भावप्राणधारणममरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं दयत इति जीवदयो, जीवेषु वा दयः यस्य स जीवदयः । सम० ४ ।

जीवदिट्ठिया-अश्वादिदर्शनार्थं गच्छतः या सा जीवदृष्टिका । ठाणा० ४२ ।

जीवनं-स्थितिः-आयुः कर्मानुभूतिरिति । प्रज० १६६ ।

जीवनिव्वत्ती-निर्वर्त्तनं निर्वृत्तिर्निष्पत्तिर्जीवस्यैकेन्द्रियादि तया निर्वृत्तिः जीवनिर्वृत्तिः । भग० ७७२ ।

जीवनेसत्थिया-राजादिसमादेशाद्यदुदकस्य यन्त्रादिभिर्निसर्जनं सा जीवनैसृष्टिकी । ठाणा० ४३ ।

जीवपएसा-जीवः प्रदेशा एव येषां ते जीवप्रदेशाः । ठाणां ४१० । जीवः-प्रदेश एवैको येषां मतेन ते जीवप्रदेशाः । औप० १०६ ।

जीवपतेसिता-जीवः प्रदेश एव येषां ते जीवप्रदेशास्त एव जीवप्रादेशिकाः, अथवा जीवप्रदेशो जीवाभ्युपगतो विद्यते येषां ते, चरमप्रदेशजीवप्ररूपिणः । ठाणा ४१० ।

जीवपरिणामे-जीवस्य-परिणामो जीवपरिणामः । प्रज्ञा० २८४ ।

जीवपाउसिया-जीवे प्रद्वेषाज्जीवप्राद्वेषिकी । ठाणा०४१ ।

जीवपाओगिअं-जीवप्रायोगिकं जीवप्रयोगेन निर्वृत्तं प्रायोगिकप्रथमभेदः । आव० ४५७ ।

जीवपाओसिया-जीवस्य-आत्मपरतदुभयरूपस्योपरि प्रद्वेषाद् या क्रिया प्रद्वेषकरणमेव वा जीवप्रद्वेषिका । भग० १८२ ।

जीवपारिग्गहिया-जीवान् परिगृह्णाति जीवपारिग्रहिकी, पारिग्रहिकी क्रियायाः प्रथमो भेदः । आव० ६१२ ।

जीवप्रदेशाः-निह्नवाश्चरमप्रदेशजीवपरूपिण इति हृदयम् । विशे० ६३३ ।

जीवफुडा-जीवेन स्पृष्टानि-व्याप्तानि जीवस्पृष्टानि । ठाणा० २५२ ।

जीवभावं-जीवभावः-जीवत्वं, चैतन्यम् । भग० १४६ ।

जीवमीसए-जीवविषयं मिश्रं सत्यासत्यं जीवमिश्रम् । ठाणा० ४६० ।

जीवमीसग-जीवमिश्रा सत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २०६ ।

जीवमीस्सिया-प्रभूतानां जीवतां स्तोकानां च मृतानां शङ्खशङ्खनकादीनामेकत्र राशौ दृष्टे यदा कश्चिदेवं वदति अहो ! महान् जीवराशिरयमिति तदा सा जीवमिश्रिता । प्रज्ञा० २५६ ।

जीवलोग-जीवलोकं-ब्रह्माण्डम् । जं० प्र० २०६ । जीवलोकः-जीवाधारः-क्षेत्रम् । प्रश्न० ११५ ।

जीवविप्पजढं-आत्मना विप्रमुक्तम् । ज्ञाता० ८५, १६८ ।

जीववेयारणिया-जीवं विदारयति-स्फोटयतीति, अथवा जीवं-पुरुषं वितारयति-प्रतारयति वञ्चयतीत्यर्थः । ठाणा० ४३ ।

जीवसामंतोवणिवाइया-जीवसामन्तोपनिपातिकी- समन्तादनुपततीति सामन्तोपनिपातिकीक्रिया, तस्याः प्रथमो भेदः । आव० ६१३ ।

जीवसाहत्थिया-यत् स्वहस्तगृहीतेन जीवेन जीवं मारयति सा जीवस्वाहस्तिकी । ठाणा० ४२ ।

जीवा-जीविता इत्यर्थः । व्य० द्वि० १६२ अ । प्राणधारणम् । उपा० ४ । जीवाः-जीवन्ति जीविष्यन्ति जीवितवन्त इति । अनु० ७४ । पञ्चेन्द्रियाः । ज्ञाता० ६१ ।

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

प्रज्ञा० १०७। ठाणा० १३६। जं० प्र० ५३९। जीवन्ति जीविष्यन्ति अजीविषुरिति जीवाः-नारकतिर्यग्नरामरा लक्षणाश्चतुर्गतिकाः। आचा० १७६। प्रत्यञ्चा-दवरिकेत्यर्थः। सूर्य० २१, २३३। उत्त० ३११। जीवा-ऋज्वी सर्वान्तिमप्रदेशपङ्क्तिः। जं० प्र० ६८।

जीवाओ-जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य वर्षाणां वर्षधाराणां ऋज्वीसीमा जीवोच्यते। सम० ४३।

जीवाजीवमिस्सिया-मृतजीवत्तिजीवराशौ एतावन्तोऽत्र जीवन्त एतावन्तोऽत्र मृता इति नियमेनावधारयतो विसंवादे जीवाजीवमिश्रिता। प्रज्ञा० २५६।

जीवाजीवमीसए-जीवाजीवविषयं मिश्रकं जीवाजीवमिश्रकम्। ठाणा० ४९०।

जीवाजीवविभत्ति-जीवाजीवविभक्तिः-उत्तराध्ययनेषु षट्त्रिंशत्तममध्ययनम्। उत्त० ९।

जीवाजीवविभत्ती-उत्तराध्ययनेषु षट्त्रिंशत्तममध्ययनम्। सम० ६४।

जीवानां-संयमजीवितेन जीवतां जिजीविषूणां च। आचा० २५६।

जीवाभिगमे-जीवानां ज्ञेयानां अवध्यादिनैवाभिगमो जीवाभिगमः। ठाणा० १३३।

जीविआरिहं-जीविताहँ-आजीविकायोग्यम्। जं०प्र० १८८।

जीविऊसविए-जीवितमुत्सूते-प्रसूति इति जीवितोत्सवः स एव जीवितोत्सविकः। जीवितविषये वा उत्सवो-महः स इव यः स जीवितोत्सविकः। भग० ४६८।

जीविए-असंयमजीवितः। उत्त० २९६। आचा० १०७, १२३। यद्यस्य स्वकार्य साधनं प्रति समर्थ रूपं तत्तस्य जीवितमिति रूढम्। उत्त० २२९।

जीवियंतकरणो-जीवितान्तकरणः प्राणवधस्य द्वाविंशतितमः पर्यायः। प्रश्न० ६।

जीविय-असंयमाख्यः। आचा० २५१। जीवितम्-कर्मणो दीर्घा स्थितिः। भग० २८९। जीविकायै। उत्त० ४७८।

जीवियकारणं-जीवितकारणं-असंयमजीवितहेतुः। दश० ९६।

जीवियकिच्छ-कृच्छ्रजीविता। बृ० तृ० २४२ अ।

जीवियरसहे-साधारण बादर वनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।

जीवियववरोवणं-जीवितव्यपरोपणम्। ओघ० १५६।

जीवाया-जीवस्य-देहस्य सम्बन्धी अधिष्ठातृत्वादात्मा जीवात्मा पुरुषः, जीवात्मा तु सर्वभेदानुगामि जीवद्रव्यं, जीवस्यैव स्वरूपम्। भग० ७२४।

जीवियाइओ-जीवितवान्। बृ० २८ अ।

जीवियारिहं-आजन्मनिर्वाह्योग्यम्। ज्ञाता० २४।

जीवियासंसप्पओगे-जीवितं-प्राणधारणं तत्राभिलाषप्रयोगः-यदि बहुकालं जीवेयमिति जीविताशंसाप्रयोगः। आव० ८३९।

जीवे-जीवेत्-अविकृत आस्ते। सूत्र० २७८। जीविते। ठाणां ५२०।

जीवेजीवे-जीवेजीवे-इह एकेन जीव शब्देन जीव एव गृह्यते द्वितीयेन च चैतन्यम्। भग० २८५।

जीवो-जीवनं जीवः-भावप्राणधारणं, अमरणधर्मत्वमित्यर्थः। औप० १५।

जीहा-जिह्वा-रसना। जीवा० २७३।

जुंगमच्छा-मत्स्यविशेषः। प्रज्ञा० ४४।

जुंगिओ-जात्यङ्गहीनः। ठाणा० १६५।

जुंगियंग-जुङ्गिताङ्गं-कर्त्तितहस्तपादाद्यवयवः। पिण्ड० १३१। व्यङ्गितः। ठाणा० ३४२।

जुंजकं-तृणविशेषः। जीवा० २६।

जुंजणाकरणं-योजनाकरणं मनःप्रभृतीनां व्यापारकृतिः। आव० ४६६।

जुंजुंति-युञ्जन्ति-परिसमापयन्ति। सूर्य० १७२।

जुंजुकं-तृणविशेषः। उत्त० ६९२।

जुंजे-युज्यात्-सङ्घट्टयेत्। उत्त० ५४।

जुअ- । नि० चू० प्र० १४८ अ।

जुअणद्धे-युगनद्धः-युगमिव नद्धो-योगः, यथा युगं वृषभस्कन्धयोरारोपितं वर्तते तद्वत् योगोऽपि यः प्रतिभाति स युगनद्ध इत्युच्यते। सूर्य० २३३।

जुअल-युगलं-सजातीयविजातिययोर्लतयोर्द्वन्द्वम्। जं०प्र० २५।

जुआणा-जुवाणा। नि० चू० प्र० २५८ अ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुइ-युतिः, मेलः । जं० प्र० १९२ ।
जुई-युक्तिः इष्टपरिवारादियोगः । उपा० २६ । शरीरगता आभरणगता च । जीवा० २१७ । युतिः-इष्टार्थसंयोगः । भग० १३२ । शरीराभरणाश्रिता । सूर्य० २५८ । विवक्षितार्थयोगः । औप० ५० । शरीराभरणविषया । सूर्य० २८६ । प्रज्ञा० ६०० । द्युतिः-आन्तरं तेजः । ज्ञाता० १४० ।
जुइए-आभरणादिसम्बन्धिन्या युक्त्या वा उचितेषु वस्तुघटना लक्षणया । विपा० ८६ । द्युतिः-शरीरगता आभरणगता च । जं० प्र० ६२ । द्युतिः-दीप्तिः शरीराभरणादिसम्पत् तस्याः-युतिर्वा इष्टपरिवारादिसंयोगलक्षणा तस्याः । जं० प्र० २०२ ।
जुउ-पृथक् । नि० चू० प्र० २४३ अ ।
जुए-युगं-पञ्चसंवत्सरमानम् । भग० २११ ।
जुगंतरं-यूपप्रमाणभूभागः युगान्तरं । प्रश्न० ११० ।
जुगं-बदिल्लाणखंधे आरोविज्जति । नि० चू० प्र० ११७ आ । युगं-यूपः । भग० १४० । प्रश्न० ८१ । विपा० ३७ । सुषमदुष्षमादिकालः । जीवा० १२१ । युगम् । आव० ३४५ । चन्द्रादिसंवत्सरपञ्चात्मकम् । सूर्य० ९१ । युगः-कालः । व्य० प्र० २५६ आ । शरीरम् । दश० चू० ७४ । चतुर्हस्तम् । अनु० १५४ । पञ्चसंवत्सरिकम् । जं० प्र० ९१, ४९५ । पञ्चसंवत्सरम् । जीवा० ३४४ । सम० ९८ । भग० ८८८ । यूपः । ठाणा० ४५० । युगानि पञ्चवर्षमानानि कालविशेषाः । लोकप्रसिद्धानि वा कृतयुगादीनि । पट्टपद्धतिपुरुषाः । जं० प्र० १५५ ।
जुगपहाण- । नि० चू० प्र० ९ आ ।
जुगप्पहाण-युगप्रधानः । आव० ३०२ । नि० चू० प्र० ३४० अ ।
जुगबाहु-सुविधिनाथस्य पूर्वभवनाम । सम० १५१ ।
जुगबाहू-युगबाहुः-महाविदेहे तीर्थकरः । विपा० ९४ । सत्यो(। शौचो ।)दाहरणे वासुदेवः । आव० ७०६ ।
जुगमच्छो-युगमत्स्यः, मत्स्यविशेषः । जीवा० ३६ ।
जुगमाया-युगमात्रा दृष्टिः । भग० ७५४ ।
जुगयं-पृथक् । दश० ४७ ।
जुगलं-युगलं-द्वन्द्वम् । जीवा० १९९ । सजातीयविजातीययोर्लतयोर्द्वन्द्वम् । जीवा० १८२ ।
जुगलजीहो-युग्मजिह्वः-आत्मोत्कर्षपराभिभवजिह्वाद्वययुक्तः । आव० ५६६ ।
जुगवं-युगं-कालविशेषः तत्प्रशस्तमस्यास्तीति युगवान् । उपा० ४६ । युगं-सुषमादुष्षमादिकालः स स्वेन रूपेण यस्यास्ति न दोषदुष्टः स युगवान् । राज० २२ । युगं-सुषमदुष्षमादिकालः सोऽदुष्टो निरुपद्रवो विशिष्टबलहेतुर्यस्यास्त्यसौ युगवान् । अनु० १७५ ।
जुगसंवच्छरे-पञ्चसंवत्सरात्मकं युगं तदेकभूदेशभूतो वक्ष्यमाणलक्षणश्चन्द्रादिर्युगसंवत्सरः । ठाणा० ३४४ । युगं-पञ्चवर्षात्मकं तत्पूरकः संवत्सरो युगसंवत्सरः । सूर्य० १५३ ।
जुगसन्निभ-युगसन्निभः-वृत्ततया आयततया च यूपतुल्यः । जीवा० २७१ ।
जुगाति-युगानि-पञ्चसंवत्सराणि । ठाणा ८६ ।
जुगुछितो-कोलिगजातिभेदो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।
जुगुप्सना-परिस्थापना । उत्त० ४७८ ।
जुगुप्समानः-निन्दन्परिहरन् । आचा० ११४ ।
जुगुप्से-निन्दामि । आव० ४५६ ।
जुगुप्सितानि-चर्मकारकुलादीनि । आचा० ३२७ ।
जुगेइ-षण्णवतिरङ्गुलानि युगम् । जं० प्र० ९४ ।
जुग्ग-युग्यं-गोल्लविषयप्रसिद्धं द्विहस्तप्रमाणं वेदिकोपशोभितं जम्पानम् । औप० ४ । जीवा १८९ । गोल्लविषयप्रसिद्धं द्विहस्तप्रमाणं चतुरस्रवेदिकोपशोभितं जम्पानम् । जीवा० २८१ । अनु० १५१ । पुरुषोत्क्षिप्तमाकाशयानम् । सूत्र० ३३० । वाहनं, गोल्लदेशप्रसिद्धजम्पानविशेषः । प्रश्न० ९१ । वाहनमात्रं, गोल्लकदेशप्रसिद्धो वा जम्पानविशेषः । प्रश्न० १५२ । वाहनं-गोल्लदेशप्रसिद्धं वा जम्पानम् । भग० ५४७ । प्रश्न० १६१ । योग्यं-सर्वोपाधिशुद्धम् । अनुरूपम् । आव० ४७० । समनुरूपम् । आव० ५२४ । युग्यं-गोल्लविषय प्रसिद्धं जम्पानं द्विहस्तप्रमाणं वेदिकोपशोभितम् । भग० १८७ । गन्त्रिकादि । आचा० ६० । युग्यं पुरुषोत्क्षिप्तमाकाशयानं जम्पानमित्यर्थः । जं० प्र० १२३ । युग्यानि-

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोल्लविषयप्रसिद्धानि द्विहस्तप्रमाणानि चतुरस्रवेदिकायुतानि जम्पानानि । जं० प्र० ३० ।

जुग्गछिड्डं–युगछिद्रम् । आव० ३४५ ।

जुग्गायरिय–युग्यस्य चर्या वहनं गमनमित्यर्थः । युग्याचार्यः । ठाणा० २४० ।

जुज्जसि–युज्यसे–अर्हसि । ज्ञाता० १६७ ।

जुण्णंतेपुरं–ण्हसिय जोव्वणाओ अपरिभुज्जमाणीओ अच्छंति एयं जुण्णंतेपुरं । नि० चू० प्र० २७१ आ ।

जुण्णकुमारी–शरीरजरणाद् वृद्धा सैव जीर्णत्वापरिणत्वाभ्यां जीर्णकुमारी । ज्ञाता० २५० ।

जुण्णथेरी–जीर्णस्थविरा । आव० ३४२ ।

जुण्णा–जीर्णा–चिरकालप्रव्रजिता । व्य० प्र० २४८ । जूर्णाः–जीर्णाः । ओघ० ७१ । स्थविरा । बृ० द्वि० २५४ आ । जीर्णा–शरीरजरणाद्वृद्धेत्यर्थः । ज्ञाता० २५० ।

जुण्णो–जीर्णः । आव० १०१ ।

जुत्त–धर्माविरुद्धम् । नि० चू० प्र० ३२७ अ । युक्तम् । भग० ३२२ । ओघ० १४१ । परस्परसम्बन्धः । भग० १६४ । थोवं । नि० चू० प्र० २२० अ । युक्तः–युक्त्युपपन्नः । सूत्र० ७ । देशकालोपपन्नः । सूर्य० २६४ । सेवकगुणोपेततयोचितः । परस्परं बद्धो न तु बृहदन्तरालः । जीवा० २६० । ज्ञाता० १८५ ।

जुत्तगती–मिदुगती न शीघ्रं गच्छतीति । नि० चू० तृ० ३८ अ ।

जुत्तपालिया–युक्तपालिकाः–निरन्तरमण्डलीकाः । भग० १६४ । युक्ताः–सेवकगुणोपेततयोचिताः, परस्परं बद्धा न तु बृहदन्तराला पालिर्येषां ते युक्तपालिकाः । जीवा० २६० ।

जुत्तफुसिएणं–उचितबिन्दुपातेन । सम० ६१ ।

जुत्ति–युक्तिः–मीलनम् । जं० प्र० १०० ।

जुत्तिलेवो–युक्तिलेपः । बृ० प्र० ८२ अ ।

जुत्तिसेणं–एरवते अष्टमः तीर्थंकरनाम । सम० १५३ ।

जुत्ती–युक्तिः–मीलनम् । युक्तिसुवर्णम् । दश० २६३ । जीवा० २६५ । योजनं–समविषमविभागनीतिर्वा । उत्त० ३० । चतुर्थवर्गस्य षष्ठमध्ययनम् । निरय० ३९ ।

जुत्तीया–युक्त्या आकाशसंयोगेन । ज्ञाता० २७० ।

जुद्धंगं–युद्धाङ्गम् । उत्त० १४३ । यानावरणप्रहरणयुद्धकुशलत्व नीतिदक्षत्वव्यवसायशरीरारोग्यरूपम् । उत्त० १४३ ।

जुद्ध–युद्धं–बाहुयुद्धादिकं लावकादीनां वा तत् । आव० १२९ । अड्डियपच्छड्डियादिकरणेहिं जुद्धं । नि० चू० द्वि० ७१ अ । युद्धं कुर्कुटानामिव । जं० प्र० १३९ । युद्धं–आयुधयुद्धम् । ज्ञाता० २२० ।

जुद्धणिजुद्धं–पुव्वं जुद्धेण जुद्धिउं पच्छा संधी विक्खोहिज्जति जत्थ तं जुद्धणिजुद्धं । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।

जुद्धमहे– । नि० चू० प्र० ३४४ आ ।

जुद्धसज्जा–युद्धसज्जाः युद्धप्रागुणाः । ज्ञाता० ५९ ।

जुद्धातिजुद्धं–युद्धातियुद्धं–खड्गादिप्रक्षेपपूर्वकं महायुद्धं यत्र प्रतिद्वन्द्विहतानां पुरुषाणां पातः स्यात् । जं० प्र० १३९ ।

जुद्धिक्कओ–युद्धीयः । आव० ७१९ ।

जुन्नइत्तो–जीर्णवान् । आव० ४१८ ।

जुन्ना–जीर्णा इव जीर्णाः । ज्ञाता० १७२ । जूर्णानि पुराणानि । ओघ० १३८ ।

जुमलपदानि– । बृ० प्र० ६६ ।

जुम्मपएसिए–समसङ्ख्यप्रदेशनिष्पन्नम् । भग० ८६१ ।

जुम्मपएसे–समसङ्ख्यप्रदेशः । भग० ८६० ।

जुम्मा–सञ्ज्ञाशब्दत्वाद्राशिविशेषाः । भग० ८७३ । गणितपरिभाषया समो–राशियुग्मम् । भग० ७४४ ।

जुम्मो–युग्मः–समः । सूर्य० १५६ ।

जुयंतकरभूमी–इह युगानि–कालमानविशेषास्तानि च क्रमवर्त्तीनि तत्साधर्म्याद्ये क्रमवर्त्तिनो गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषास्तेऽपि युगानि तैः प्रमिताऽन्तकरभूमिः युगान्तकरभूमिः । ज्ञाता० १५४ ।

जुय–यूपः–युगम् । प्रश्न० ८ ।

जुयगं–पृथक् । आव० ७६९, ८१३ ।

जुयगो–सन्ध्याप्रभाचन्द्रप्रभयोर्मिश्रत्वमिति भावः । ठाणा० ४७९ ।

जुययं–घरं कथां सा सूणंत्ति । दश० चू० २३ ।

जुयलं–युगलं–बालवृद्धरूपम् । बृ० द्वि० १०० अ । युगलं । आव० ३०५ । युगलं–द्वयम् । ज्ञाता० २२१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुवरज्जं–जुवरायाणां णाभिसिंचति ताव तं । नि० चू० द्वि० ११ अ ।
जुवराइ–युवराजः । आव० ७०२ ।
जुवराए–अनभिषिक्तयुवराजपदं राज्यम् । नाभिषिक्तो राजा । बृ० द्वि० ८२ अ ।
जुवराय–युवराजः–राज्यचिन्ताकारी राजप्रतिशरीरम् । प्रज्ञा० ३२७ । उत्थिताशनः । जीवा० २८० ।
जुवराया–आस्थानिकामध्यगतः सन् कार्याणि प्रेक्षते चिन्तयति स युवराजः । व्य० प्र० १६६ आ ।
जुवलं–बालवुड्ढा । नि० चू० प्र० १०१ आ ।
जुवलगं–युग्मम् । आव० ४२३ ।
जुवलय–युगलम् । आव० ३४१ । युगलतया तत्तरूणां संजातत्वेन युगलितम् । भग० ३७ । युगलितया स्थितः । औप० ७ ।
जुवाणो–युवा–यौवनस्थः प्राप्तवया एष इत्येवं अणति–व्यपदिशति लोको यमसौ निरुक्तिवशात् युवानः । अनु० १७७ ।
जुसिए–प्रीते । ठाणां० ३४२ ।
जुसिय–जूषितः–क्षपितः । भग० १२७ ।
जुहि–युधि । आव० ४०७ ।
जुहिगपुप्फा–पुष्पविशेषः । नि० चू० द्वि० १४१ आ ।
जुहिट्ठिलो–युधिष्ठिरः । आव० ३६५ ।
जुहिट्ठिल्ल–युधिष्ठिरः । ज्ञाता० २०८ ।
जुहुणामि–जुहोमि–अन्येभ्यो ददामि । ठाणा० ३८१ ।
जुहोमि–आसेवाम्यनुतिष्ठामि । ठाणा० ३८२ ।
जूइगारो–द्युतकारः । उत्त० २१८ ।
जूईकरा–द्यूतकराः । प्रश्न० ४६ ।
जूए–यूपः–द्विपृष्ठवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३ । भग० २७५ ।
जूतं–द्यूतम् । आव० ३४२ ।
जूतिकरो–द्यूतकारः । आव० ४२१ ।
जूय–द्यूतम् । आव० ५०२ । द्यूतम् । उत्त० १४७ । यूपः–यज्ञस्तम्भः । जं० प्र० १८३ । यूपः–युगम् । प्रश्न० ५६ ।
जूयए–सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च यद्युगपद् भवतस्तत् । ठाणा० ७६ ।
जूयक–पातालकलशविशेषः । ठाणा० ४८० ।
जूयखलयं– । विपा० ५२ ।
जूयखलयाणि–द्यूतखलकानि–द्यूतस्थण्डिलानि । ज्ञाता० ८१ ।
जूयगो–यूपकः । जीवा० २८३ ।
जूयपसंगी–द्यूतप्रसङ्गी–द्यूतासक्तः । ज्ञाता० ८१ ।
जूयस्सवि– । सम० ८७ ।
जूया–पासंतादी । नि० चू० द्वि० ७१ अ । त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । यूका–अष्टलिक्षाप्रमाणा । भग० २७५ ।
जूयारो–द्यूतकारः । आव० ४१७ ।
जूरणं–वयोहानिरूपम् । सूत्र० ३६८ ।
जूरति–जूरयति–गर्हति । सूत्र० ३२५ ।
जूरह–कदर्थयथ । सूत्र० ९७ ।
जूरावणा–शोकातिरेकाच्छरीरजीर्णता प्रापणा । भग० १८४ ।
जूवए–पातालकलशविशेषः । ठाणा० २२६ ।
जूवगो–यूपकः–सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च येन युगपद्भवतः, अमोघो वा । आव० ७३५ । संज्झप्पभा चंदप्पभा य जेण जुगवं भवंति तेण जुवगो । नि० चू० तृ० ७० अ ।
जूवय–जुवयं णाम चीडं, पाणियपरिक्खित्तं । नि० चू० तृ० १९ अ । शुक्लपक्षे प्रतिपदादिदिनत्रयं यावद्यैः सन्ध्याछेदा आव्रीयन्ते ते यूपकाः । भग० १९६ ।
जूस–जूषो–मुद्गतन्दुलजीरककटुभाण्डादिरसः । ठाणा० ११८ प्रश्न० १६३ । जूषः । ओघ० ६७ । यूषः–मुद्गतण्डुल जीरककटुभाण्डादिरसः । सूर्य० २९३ ।
जूसणा–जोषणा–सेवा तल्लक्षणधर्म इत्यर्थः । ठाणा० ५७ । जोषणा सेवानालक्षणो यो धर्मः । ठाणा० २३७ । सेवा । भग० १२७ । क्षपणा–सेवना । सूत्र० ४२१ ।
जूसिते–जुष्टः–सेवितः, क्षपितः । ठाणा० २३७ ।
जूसिया–सेविताः–तद्युक्ताः । ठाणा० ५७ ।
जूह–युथः–वानरादिसम्बन्धिः । ज्ञाता० ३६ ।
जूहवई–युथपतिः तत्स्वामी । ज्ञाता० ६७ ।
जूहवतित्तं–यूथपतित्वम् । आव० ३४८ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जूहाहिवती-यूथस्य-गवां समूहस्याधिपतिः-स्वामी यूथाधिपतिः । उत्त० ३४६ । यूथस्य-साध्वादिसमूहस्याधिपतिः-आचार्यपदवीं गतः यूथाधिपतिः । उत्त० ३४६ ।

जूहिआगुम्मा-यूथिकागुल्माः । जं० प्र० ६८ ।

जूहिया-गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

जूहियापुडा- । ज्ञाता० २३२ ।

जे-इति निपातोऽलङ्कारार्थः । विशे० २५१ । वाक्यालङ्कारार्थः । विशे० १२१० । निपातः । प्रश्न० १२४, १२८, १४१ । पादपूर्तों । आव० ६१७ । निपातः सर्वत्र पूरणे । उत्त० ४५७ ।

जेट्ठ-ज्येष्ठ इति प्रथमः । सूर्य० ४ । परियायजाइसुण घेत्तव्वो, सुणेत्ताण जो गहणधारणाजुत्तो समत्ते वक्खाणे जो भासती, पडिभणतीत्यर्थः सो जेट्ठो । नि० चू० तृ० ८१ अ ।

जेट्ठमहाजण-जेष्ठार्यसमुदायः । बृ० प्र० २३८ आ ।

जेट्ठा-षोडशो नक्षत्रः । ठाणा० ७७ । ज्येष्ठा-स्वामिदुहिता । आव० २५५, ३१२ । शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसम्भूतवैशालिकचेटकपञ्चमी पुत्री । आव०६७६ ।

जेट्ठानक्खत्ते-ज्येष्ठानक्षत्रम् । सूर्य० १३० ।

जेट्ठामूल-जेष्ठा मूलं वा नक्षत्रं पौर्णमास्यां यत्र स्यात् स जेष्ठामूलः जेष्ठ इति । औप० ६५ । जेष्ठः । ज्ञाता० ६७ ।

जेट्ठामोली-ज्येष्ठामोली । सूर्य० ११६ ।

जेट्ठोग्गहो-ठवणा । वासावासासु चत्तारि मासा तम्हा उदुबद्धियाओ वासे उग्गहो जेट्ठो भवति । नि० चू० प्र० ३३६ आ ।

जेण-यया । उत्त० १३४ ।

जेणेव-येनेति यस्मिन्नित्यर्थे । सूर्य० ६ ।

जेमण-जेमनम् । ओघ० १६३ । जेमनानि वटकपूरणादीनि । उपा० ५ ।

जेमणिगा-भोजनम् । नि० चू० द्वि० १०७ अ ।

जेमामणं- । भग० ५४४ ।

जेमेंतो-जेमन् । आव० ३०३ ।

जेमेइ-समारचयति । उप० मा० गा ३५८ ।

जेया-जितः । आव० १५७ ।

ज्येष्ठानुज्येष्ठः- । विशे० ४४३ ।

जोइ-ज्योतिः-शरावाद्याधारो ज्वलन्नग्निः । नंदी० ८४ । ज्योतिः-अग्निः । सम० १८ । भग० ३१३ । दश० ११७ । वन्हिः । भग० ३०७ । देवविशेषाणामालयः । आव० १८४ ।

जोइक्कं-ज्योतिष्कं-ज्योतिश्चक्रम् । जीवा० १७५ । ज्योतिष्कदेवविमानरूपम् । सूर्य० २७४ ।

जोइक्खं-ज्योतिः । आव० ६२१ । ज्योतिष्कम् । आव० ८४५ । ज्योतिष्कस्पर्शः । ओघ० २०४ ।

जोइक्खे-दीपः । छाइह्लयं दीवं मुणेज्जाहि । व्य० द्वि० २५४ अ ।

जोइजसा-ज्योतिर्यशा-आर्जवोदाहरणे वत्सपालिका । आव० ७०४ ।

जोइयं-दृष्टम् । आव० ५६१ । अवलोकितम् । दश० ६६ ।

जोइरसा-ज्योतिरसं नाम रत्नम् । जं० प्र० २३ । ज्ञाता० ३४ ।

जोइस-ज्योतिषं-ज्योतिश्चक्रम् । सम० २१ । प्रश्न० ६५ । जीवा० ३७७ । नक्षत्रचन्द्रयोगादिज्ञानोपायशास्त्रम् । प्रश्न० १०६ । ज्योतिषदेवविमानरूपम् । जीवा० ३३६ । ज्योत्स्नः-शुक्लः । जीवा० ३३६ । ज्योतिः-चन्द्रः । उत्त० १५० । ज्योतिष्कशब्देन तारकाः । प्रश्न० १६ । नवमशतके ज्योतिष्कविषयो द्वितीय उद्देशः । भग० ४२५ । ज्योतिः-अग्निः । जं० प्र० ७४ । द्योतयन्तीति ज्योतींषि विमानानि । उत्त० ७०१ ।

जोइसामयणं-ज्योतिषामयनं-ज्योतिःशास्त्रम् । औप० ६३ ।

जोइसि-ज्योतींषि-विमानानि । देवाः सूर्यादयः । प्रज्ञा० ७० । ज्योतींषि ज्योतिष्का देवास्त एव ज्योतिषिकाः । जं० प्र० १०३ ।

जोइसिअ-ज्योतिषिकः-सूर्यः । जं० प्र० १०३ ।

जोइसिआ-ज्योतिष्काः-द्योतयन्ति-प्रकाशयन्ति जगदिति ज्योतींषि विमानानि, तेषु भवा ज्योतिष्काः । यद्वा द्योतयन्ति-शिरोमुकुटोपगूहिभिः प्रभामण्डलकल्पैः सूर्यादिमण्डलैः प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो-देवाः सूर्यादयः । प्रज्ञा० ६६ । ज्योतिषिका नाम द्रुमगणाः । जं० प्र० १०३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोइसियउद्देसए- । भग० ५०५ ।

जोइसिया–ज्योतिषिकः–द्रुमविशेषः । जीवा० २६७ ।

जोई–योगः–धर्मशुक्लध्यानलक्षणः स येषां विद्यत इति योगिनः साधवः । आव० ५८२ । योगिनः–अध्यात्मशास्त्रानुष्ठायिनः । औप० ६१ ।

जोईरसं–ज्योतीरसं–रत्नविशेषः । जीवा० १८० ।

जोईसर–योगेश्वरः–युञ्जयन्त इति योगाः–मनोवाक्काय व्यापारलक्षणास्तैरीश्वरः–प्रधानः । आव० ५८२ । योगीश्वरः–युज्यते वाऽनेन केवलज्ञानादिना आत्मेति योगः–धर्मशुक्लध्यानलक्षणः स येषां विद्यत इति योगिनः–साधवस्तैरीश्वरः । आव० ५८२ । योगिस्मर्यः–योगिचिन्त्यः योगिध्येयो वा । आव० ५८२ ।

जोएइ–(देशी०) निरूपयति । व्य० प्र० २० आ ।

जोएति–पश्यति । नि० चू० प्र० २०५ आ ।

जोएमि–गवेषयामि । नि० चू० प्र० १७८ अ ।

जोएह–पश्यत । आव० ६८ । पश्य । ओघ० १६१ ।

जोक्कारो–जोत्कारः । आव० ६० ।

जोगंधरायणो–योगन्धरायणः, शिक्षायोगदृष्टान्ते प्रद्योतराज्ञो मन्त्री । आव० ६७४ ।

जोग–योगः–सम्बन्धः । उपायोपेयभावलक्षणः । अवसरलक्षणः । योग्यः । ठाणा० १ । योगो–लब्धस्य परिपालनम् । ज्ञाता० १०३ । सम्बन्धः–अवसरः । जं० प्र० ३ । योगोऽत्र शरीरजीवव्यापारः । विशे० २१० । योगः–सामर्थ्यम् । दश० २३१ । वशीकरणादि । दश० २३६ । सम्बन्धः । प्रज्ञा० २५८ । ठाणा० ४८६ । व्यापारः । नि०चू० प्र० ६१ अ । जोगः–आकाशगमनादिफलो द्रव्यसङ्घातः । पिण्ड० २१ । योगः–अन्तःकरणादिः । दश० १७ । बीजाधानोद्भेदपोषणकरणम् । जीवा० २५५ । क्षीराश्रवादीलब्धिकलापसम्बन्धः । सूत्र० ७ । दिग्योगः । जं० प्र० ४६६ । मिथ्यात्वादिः । आव० ४७८ । द्रव्योपचारः । आव० ५६६ । मनोवाक्कायव्यापारलक्षणः धर्मशुक्लध्यानलक्षणो वा । आव० ५८२ । औदारिकादिशरीरसंयोगसमुत्थ आत्मपरिणामविशेषव्यापारः । आव० ५८३ । ज्ञानादिभावनाव्यापारः, सत्त्वसूत्रतपःप्रभृतिर्वा । आव० ५९३ । मनःप्रभृति । आव० ६०७ । प्रत्युपेक्षणादिरूपसंयमयोगः । पिण्ड० १६७ । भावाध्ययनचिन्तनादिशुभव्यापारः । उत्त० ८ । मनोवाक्कायव्यापारः । प्रज्ञा० ३८२ । योजनं योगः–आत्मकर्मसम्बन्धः, आत्मनश्चलनस्पन्दनादिक्रियया सम्यगाधानं योजनं योगः सकर्मक आत्मव्यापारः । विशे० १३१८ । किरिया । नि० चू० प्र० ७६ आ । दो घयपला मधुपलं दहियस्स य आढयं मिरियवासा खंडगुलदभागासडसालूनि च, विद्देसणवसीकरणाणि वा । दश० चू० १२६ । श्रुताध्ययननिबन्धनतपोविशेषः । बृ० प्र० ११८ अ ।

जोगच्छेयपलिभागा–योगः–मनोवाक्कायविषयं वीर्यं तस्य केवलिप्रज्ञाच्छेदेन प्रतिविशिष्टा निर्विभागा भागाः योगच्छेदप्रतिभागाः । अनु० २४० ।

जोगजुंजणा–योगयोजनाः–वशीकरणादि योगाः । प्रज्ञा० ६५ ।

जोगजुत्तया–योगयुक्तता–संयमयोगयुक्तता । पंचविंशतितमोऽनगारगुणः । आव० ६६० ।

जोगधूवधूविओ–योगधूपधूपितः । आव० ११६ ।

जोगपरिवुड्ढी–योगपरिवृद्धिः–अभिगृहीतेतरतपसोर्वद्धिः । बृ० तृ० १५० अ ।

जोगपरिव्वाइया–योगपरिव्राजिका–समाधिप्रधानव्रतिनीविशेषः । ज्ञाता० १५८ ।

जोगभूमी–विरायणजोगभूमीए वि जे केति दिवसा सेसा जोगभूमयन्तो भण्णति । नि० चू० प्र० १६७ आ ।

जोगवड्ढी–जाव दिणे दिणे आहारेओ जोगवड्ढीए इमा जोगवड्ढी । नि० चू० प्र० ३४२ अ ।

जोगवहणं–योगवहनम् । दश० १०८ ।

जोगवाही–योगवाही । आव० ८५४ ।

जोगविही–योगविधिः । ओघ० १७८ ।

जोगसंगहा–युज्यन्त इति योगाः–मनोवाक्कायव्यापाराः, ते चाशुभप्रतिक्रमणात्प्रशस्ता एव गृह्यन्ते, तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिना प्रकारेण सङ्ग्रहणानि योगसङ्ग्रहाः । आव० ६६३ । योगानां प्रशस्तव्यापाराणां सङ्ग्रहाः योगसङ्ग्रहाः । प्रश्न० १४६ । योगसङ्ग्रहः । दश० १०७ । योगसङ्ग्रहः–मनोवाक्कायव्यापारसङ्ग्रहः । आव० ६६३ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोगसंलीणया–योगसंलीनता–अपसत्थाण निरोहो जोगाणमुदीरणं च कुसलाणं । कज्जंमि य विहिगमणं जोए संलीणया भणिआ ॥१॥ दश० २९ । मनोयोगादीनामकुशलानां निरोधः–कुशलानामुदीरणमित्येवंभूता योगसंलीनता । दश० २९ ।

जोगसच्च–योगसत्यं नाम छत्रयोगाच्छत्री दण्डयोगाद्दण्डीत्येवमादि । दश० २०९ ।

जोगसच्चा–पर्याप्तिकसत्यभाषाया नवमो भेदः । योगः सम्बन्धः तस्मात् सत्या योगसत्या । प्रज्ञा० २५६ ।

जोगहाणी–योगहानिः–प्रत्युपेक्षणादिरूपसंयमयोगभ्रंशः । पिण्ड० १६७ ।

जोगहीणं–योगहीनं–योगरहितं–सम्यगकृतयोगोपचारम् । आव० ७३१ ।

जोगा–योगाः–आवश्यकव्यापाराः । बृ० तृ० १४६ आ । दुगमादिदव्वनियरा विद्देसणवसीकरणउच्छादण रोगावणयणकरा व जोगा । नि० चू० द्वि० ४४ अ । योगाः–वशीकरणादिप्रयोजनाः । प्रश्न० ११६ ।

जोगाणुजोगे–वशीकरणादियोगाभिधायकानि हरमेखलादिशास्त्राणि । सम० ४९ ।

जोगाणुभावजणियं–योगानुभावजनितं–मनोयोगादिगुणप्रभवम् । आव० ५९८ ।

जोगियं–यौगिकं–यदेतेषामेव द्वयादिसंयोगवत् । प्रश्न० ११७ ।

जोगी–वेज्जो । नि० चू० द्वि० १३९ अ ।

जोग्गं–युग्यं–गोल्लदेशप्रसिद्धो द्विहस्तप्रमाणो वेदिकोपशोभितो जम्पानविशेषः । प्रश्न० ८ ।

जोग्गा–योग्या-मण्डलीकरणाभ्यासः । जं० प्र० २३५ । योग्या । पिण्ड० ३३ । गुणनिका । औप० ६५ ।

जोणए–जोनकः–म्लेच्छविशेषः । जं० प्र० २२० ।

जोणगं–योनकम् । आव० १४७ ।

जोणगा– । आव० १४८ ।

जोणि–योनिः–गर्भनिर्गमनद्वारम् । भग० २९८, ४९६ ।

जोणिप्पमुहं–योनिप्रमुखं–योनिप्रवाहम् । जीवा० ३७२ ।

जोणिब्भूए–योनिभूतं– अविध्वस्तयोनि, प्ररोहसमर्थम् । दश० १४० ।

जोणिविहाण–योनिविधानं–योनिप्राभृतम् । विशे० ७५० ।

जोणिसूल–योनिशूलम् । भग० १९७ ।

जोणी–योनिः–प्रज्ञापनाया नवमं पदम् । प्रज्ञा० ६ । युवन्ति तैजसकार्मणशरीरवन्तः सन्त औदारिकादिशरीरप्रायोग्यपुद्गलस्कन्धसमुदायेन मिश्रीभवन्त्यस्यामिति योनिः–उत्पत्तिस्थानम् । प्रज्ञा० २२५ । उप्फत्तिट्ठाणं । नि० चू० प्र० ५६ आ । योनिः–यौति- मिश्रीभवति कार्मणशरीरिण औदारिकादि शरीरैरस्यां, जन्तवो जुषन्ते सेवन्त इति वा । उत्त० १८३ ।

जोणीओ–यौति- मिश्रीभवत्यौदारिकादिशरीरवर्गणापुद्गलैरसुमान् यस्यां ता योनयः–प्राणिनामुत्परिस्थानानि । आचा० २४ ।

जोणीपमुहं–योनिप्रमुखं–योनिप्रवाहम् । जीवा० १३४ ।

जोणीपयं–योनिपदं–प्रज्ञापनायां नवमं पदम् । भग० ४९६ ।

जोणीपोसगो–योनिपोषकः । आव० ८३० ।

जोणीसंगहे–योनिः–उत्पत्तिहेतुर्जीवस्य तया सङ्ग्रह–अनेकेषामेकशब्दाभिलाप्यत्वं योनिसङ्ग्रहः । भग० ३०३ । योन्या सङ्ग्रहणं योनिसङ्ग्रहो योन्युपलक्षितं ग्रहणम् । जीवा० १३३ ।

जोण्हा–ज्योत्स्ना–चन्द्रिका । ज्ञाता० १६१ ।

जोण्हिया–चिलातदेशोत्पन्नम्लेच्छविशेषः । भग० ४६० ।

जोण्हे–ज्योत्स्नः–शुक्लपक्षः । सूर्य० १४९ । शुक्लः । सूर्य० १७९ ।

जोति–ज्योतिः–अग्निः । सौम्यप्रकाशः । ठाणा० ५१७ ।

जोतिरसे–ज्योतिरसकाण्डं–ज्योतरसाणां विशिष्टो भूभागः । जीवा० ८९ ।

जोतिष्मती–तैलविधानोपयोगे वनस्पतिविशेषः । आव० ६१ ।

जोतिसामयणे–ज्योतिषामयनं- ज्योतिःशास्त्रम् । भग० ११२ ।

जोती–उद्दित्तं । नि० चू० प्र० ४८ अ ।

जोत्तं–योत्रम् । सूत्र० ३१२ । योक्त्रं–यूपे वृषभसंयमनम् । प्रश्न० १६४ । योक्त्रं–कण्ठबन्धनरज्जू । उपा० ४४ ।

जोत्तयं–योक्त्रकम् । जं० प्र० ५२७ ।

जोनकनामकदेशजाः–जोनिवयः । जं० प्र० १९१ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोनिक्यः–जोनकनामकदेशजः । जं० प्र० १६१ ।

जोयइ–योजयति । आव० ६५४ ।

जोयण–चत्वारि गव्यूतानि योजनम् । अनु० १५६ । जीवा० ४० । भग० २७५ । प्रज्ञा० ४८ ।

जोयणणीहारि–योजननिर्हारि–योजनव्यापि । आव० २३४, २३७ ।

जोयणनीहारिणा सरेण–योजनातिक्रामिणा शब्देन ।उपा० २८ ।

जोयणनीहारी–योजनातिक्रमी स्वर इति । सम० ६२ ।

जोयसा–सतिसामत्थो, जं पमाणं भणितं तो पमाण उणहाणमहि वा । दश० चू० १२१ ।

जोयाविया–दर्शिताः । बृ० प्र० ५७ अ ।

जोवणं–शकटे गवादेर्योजनम् । बृ० द्वि० ५० अ । धान्यप्रकारः । ओघ० ७५ ।

जोव्वण–यौवनम् । आव० ५६६ । **यौवनं**–तारुण्यम् । ज्ञाता० २२० । परमस्तरुणिमा । प्रज्ञा० ५५१ ।

जोसेमाणे–जुषन्–आचरन् । आचा० २६५ ।

जोह–योधः–अतिशयशौर्यवान् । भग० ११५ ।

जोहा–योधाः–भटेभ्यो विशिष्टतराः सहस्रयोधादयः । औप० २७ ।

जोहारो–जुहारः–जयोत्कारः । आव० १०१ ।

जोहिट्ठिल्लो–युधिष्ठिरः–पाण्डवपञ्चकानां मध्ये ज्येष्ठः । अन्त० १५ ।

ज्झ–ध्याननिर्देशे । आव० ४४९ ।

ज्झवणा–क्षपणा । विशे० ४५० ।

ज्झामि–ध्यामं–ध्यामलीकृतं–आपादितपर्यायान्तरमित्यर्थः। भग० २१३ ।

ज्झामिय–ध्यानमितं–श्यामीकृतम् । भग० २१३ ।

ज्झुक्खुरं–शाखा । आव० ५१३ ।

ज्झूसिय–सेवितं–शोषितम् । भग० ११३ ।

ज्ञप्तिः–ज्ञापनं–ज्ञानम् । जं० प्र० ४ ।

ज्ञा–संवित्तिः । आव० २८२ ।

ज्ञातं–उदाहरणम् । नंदी० २३० । अध्ययनम् । प्रश्न० २ ।

ज्ञातपुत्रीयम्–महावीरसम्बन्धि । आचा० ४६ ।

ज्ञाताः–महावीरशान्तिजिनपूर्वजाः । ठाणा० ३५८ ।

ज्ञातिः–लोकैषणाबुद्धिः । आचा० १८० ।

ज्ञान–चेतना । आव० २४ । सम० १३५ ।

ज्ञाननयः– । दश० ८० ।

ज्ञानपिण्डो–ज्ञानं स्फातिं नीयते येन । ओघ० १४७ ।

ज्ञानविसंवादयोगः–अकालस्वाध्यायादिना । आव० ५८० ।

ज्ञानशुद्धं–यस्मिन् काले यत्प्रत्याख्यानं मूलगुणेषूत्तरगुणेषु वा कर्तव्यं भवति तत् जानाति तज्ज्ञानशुद्धम् । ठाणा० ३५० ।

ज्ञानसंज्ञा–संज्ञाभेदः । जीवा० १५ ।

ज्ञानोपसम्पत्–सूत्रार्थयोः पूर्वगृहीतयोः स्थिरीकरणार्थं तथा विस्रुटितसन्धानार्थं तथा प्रथमतो ग्रहणार्थमुपसम्पद्यते । ठाणा० ५०१ । आव० २७० ।

ज्ञापकम–अनुमानम् । नंदी० १६५ ।

ज्येष्ठामूले–ज्येष्ठमास इत्यर्थः । ओघ० १५६ ।

ज्येष्ठो– । विशे० ४४३ ।

ज्योतिः–नक्षत्रः । ठाणा० ६६ । उद्योतः । ओघ० २०१ ।

ज्वलनप्रभनागाधिप– । जं० प्र० २२३ ।

झ

झंख–झषः–वारंवारं जल्प । पिण्ड० ६२ ।

झंझकरे–येन येन गणस्य भेदो भवति तत्तत्करो, येन वा गणस्य मनोदुःखं समुत्पद्यते तद्भाषी, अष्टादशमसमाधिस्थानम् । सम० ३७ । झञ्झाकरः–येन येन गणस्य भेदो भवति तत्तत्करी, येन च गणस्य मनोदुःखमुत्पद्यते तद्भाषी । प्रश्न० १२५ ।

झंझकारी–झञ्झकारी–यो येन येन गणस्य भेदो भवति सर्वो वा गणो झञ्झितो वर्त्तते तादृशं भाषते करोति वा । अष्टादशमसमाधिस्थानम् । आव० ६५५ ।

झंझडिया–झंझडिया–रिणे अदिज्जंते वणिएहिं अणेगप्पकारेंहि दुव्वयणेहिं झडिया । नि० चू० द्वि० ४३ अ । झंझडिया–लतकसादिएहिं वा झडिता । नि० चू० द्वि० ४३ अ ।

झंझविओ–झञ्झितः–उद्विग्नः । आव० ६५५ ।

झंझा–झञ्झा–कलहः । आव० ६६२ । तृष्णा । सूत्र० ३२६ । क्रोधो माया वा । सूत्र० २३५ । माया लोभेच्छा वा । आचा० २१० । कलहः । बृ० द्वि० १६ अ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विप्रकीर्णा कोपविशेषाद्वचनपद्धतिः, अणत्थयबहुप्पलावित्तं। भग० ६२४ ।

झंझाए-व्याकुलितमतिर्भवेत्, व्याकुलतां परित्यजेत् । आचा० १७० ।

झंझाकारित्वम्-गणस्य चित्तभेदकारित्वं मनोदुःखकारिवचनभाषित्वं वा । अष्टादशमसमाधिस्थानम् । पञ्चमाधर्मद्वारेऽष्टादशमसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।

झंझावाए-झञ्झावातः-यः सवृष्टिको वातः, अशुभनिष्ठुरो वा । जीवा० २९ । झञ्झावातः-सवृष्टिरशुभनिष्ठुरः । प्रज्ञा० ३० ।

झंझावाया-झञ्झावाताः-अशुभनिष्ठुरा वाताः । भग० १९६ ।

झंपित्ता-झंपयित्वा-अनिष्टवचनावकाशं कृत्वा। सम०५३।

झगिति-झटिति कृत्वा । भग० १७५ ।

झडिज्झति-क्लिश्यति । आव० २९२ ।

झडित्ति-झटिति । आव० ६९० ।

झडियंगा-क्षपिताङ्गः । मर० ।

झडुरविडुरं-कण्डलविण्टलादि । व्य० प्र० २४६ ।

झत्ति-झटितीकृत्वा । भग० १७५ । झटिति । उत्त० २२३ ।

झय-ध्वजाः-सिंहगरुडादिरूपकोपलक्षिता बृहत्पट्टरूपा । जं० प्र० १८८ । ज्ञाता० २० ।

झयसंठिओ-ध्वजसंस्थितः । जीवा० २७९ ।

झया-ध्वजा-गरुडादिध्वजा । प्रश्न० ४८ । विपा० ४६ ।

झरंति-स्वाध्यायं कुर्वन्ति । बृ० द्वि० १७६ अ ।

झरए-झरति-परावर्तयति । व्य० द्वि० १०८ आ ।

झरओ-स्मारकः । आव० ३०७ ।

झरित-क्षरितः-पतितः । ओघ० २२२ ।

झरिय-स्थितसारः । व्य० प्र० २५७ । ज्ञातं निश्चितम् । मर० ।

झलज्झला-उदकशब्दविशेषः । ओघ० १६७ ।

झल्लरि-झल्लरी-चर्मावनद्धा विस्तीर्णा वलयाकारा । राज० २५, ४९ । झल्लरिः-वलयाकारो वाद्यविशेषः । भग० २१७ । झल्लरी-चतुरङ्गुलनालिः करटीसदृशी वलयाकारा । जं० प्र० १९२ । अल्पोच्छ्रया महामुखा चर्म्मावनद्धा । भग० ४७६ ।

झल्लरी-वलयाकारा । ओप० ७३ । चर्मावनद्धविस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यविशेषरूपा । प्रज्ञा० ५४२ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा । जीवा० १०५ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णा वलयरूपा । जीवा० २४५ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यविशेषरूपा । नंदी० ८८ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यविशेषः । आव० ४१ । उभयतो विस्तीर्णचर्मावनद्धमुखो मध्ये संकीर्णो ढक्कालक्षणाऽऽतोद्यविशेषो झल्लरी । विशे० ३५३ ।

झल्लरीसंठिय-झल्लरीसंस्थितः-आवलिकाबाह्यस्य विंशतितमं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

झवंति-विध्यापयन्ति । बृ० द्वि० १२ अ ।

झविया-क्षपिता-निर्मूलिताः । उत्त० ४३८ ।

झस-झषः-मत्स्यः । ज्ञाता० १९८ । अरुणशिखेनाहतोऽनशनी मत्स्यः । मर० । झषः-मत्स्यविशेषः । प्रश्न० ७ । जीवा० २७० ।

झसोदरो-झषो-मत्स्यस्तदुदरमिव तदाकारतयोदरं यस्या सौ झषोदरः । उत्त० ४९० ।

झाइ-ध्यायति-प्रज्वलयति । बृ० तृ० २०१ अ ।

झाएज्ज-प्रज्वलेत् । बृ० द्वि० ११३ आ ।

झाटनं-इह तीर्थे षण्मासान्तमेव तपस्ततः षण्णां मासानुपरियानू मासानापन्नोऽपराधी तेषां क्षपणं-अनोरोपणं, प्रस्थे चतुःसेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव । ठाणा० ३२६ ।

झाटयन्-प्रस्फोटनं कारयनू । ठाणा० ३२९ ।

झाणं-अभ्यन्तरतपभेदः । भग० ९२२ । ध्यानं-एकाग्रतया करणम् । बृ० द्वि० १४७ आ । ध्यानं-दृढमध्यवसानं, एकाग्रस्य चिन्तानिरोधश्च । दश० चू० १४ । ध्यातिर्ध्यानमिति भावसाधनः । आव० ५८१ । चित्तनिरोधलक्षणं धर्मध्यानाधिकम् । सूत्र० १७५ । चित्तनिरोधरूपम् । प्रश्न० १०७ । चित्तनिरोधः । प्रश्न० १२८ । एकाग्रतालक्षणम् । आर्त्तरौद्रधर्म्मशुक्लाभिधानकम् । प्रश्न० १४३ ।

झाणंतरिआ-अन्तरस्य-विच्छेदस्य करणमन्तरिका, अथवा अन्तरमेवान्तर्यं, ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका-आरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणम् । जं० प्र० १५० ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झाणंतरिया–ध्यानान्तरिका । आव० २२७ । आरब्ध-ध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणम् । जं० प्र० १५१ । अन्तरस्य, विच्छेदस्य करणमन्तरिका ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका–आरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भण-मित्यर्थः । भग० २२१ ।

झाणकोट्ठोवगय– । आचा० ४२४ ।

झाणणिग्गहो–ध्याननिग्रहः । उत्त० ३३२ ।

झाणसंताणो–ध्यानसन्तानः–ध्यानप्रवाहः । आव० ५८४ ।

झाणसंवरजोगे–ध्यानमेव संवरयोगः ध्यानसंवरयोगः । द्वात्रिंशद्योगसङ्ग्रहेऽष्टाविंशतितमो योगः । आव० ६६४ ।

झात्कारं–झल्लरीशब्दः । नंदी० १७१ ।

झायं–ध्यायं–स्वाध्यायम् । बृ० द्वि० १४५ । आ ।

झाम–ध्यामं–दग्धच्छायम् । जीवा० ११४ । दग्धम् । आचा० ३२२ । ध्यामः–अनुज्ज्वलच्छायः । प्रश्न० ४१ ।

झामलं–ध्यामलम् । आव० १४६ ।

झामवन्ना–ध्यामवर्णाः–अनुज्ज्वलवर्णाः । भग० ३०८ ।

झामिअं–ध्मातम् । आव० ६१ ।

झामिता–दग्धा । आव० ३४५ ।

झामिया–दड्ढा । नि० चू० द्वि० ११० अ । ध्माता–दग्धा । उत्त० १५० ।

झामेह–ध्मापयत–स्ववर्णत्याजनेन वर्णान्तरमापादयत । अग्निसंस्कृतानि कुरुत । जं० प्र० १६२ ।

झावण–ध्मापनं–दाहः–भस्मसात्करणमिन्धनैः । आचा० ६१ ।

झावणया–प्रदीपनकम् । ओघ० ११२ ।

झावणा–ध्मापना–अग्निसंस्कारः । आव० १२६ ।

झिखिता–झिखित्वा–प्रभाष्य । आव० ५५ ।

झिंगिरा–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

झिंगिरिडा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

झिंझिए–बुभुक्षार्त्तः । बृ० तृ० १५६ आ ।

झिज्जिए–क्षितः क्षीणशरीरः । जीवा० १२२ ।

झिज्झिरिपलंबं– । आचा० ३४८ ।

झिज्झिरी–वल्लीपलाशः । आचा० ३४८ ।

झिमियं–जाड्यता सर्वशरीरावयवानामवशित्वमिति । आचा० २३५ ।

झियाइ–ध्यायति–चिन्तयति । भग० १७५ ।

झियायंति–ध्यायन्ति इन्धनैर्दीप्यन्त इति । ठाणा० ४२० ।

झियायमाण–ध्यायमानः, ध्मायन् वा दह्यमान इत्यर्थः । भग० १२२ ।

झिल्लिया–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

झिल्लिरी–मत्स्यबन्धनविशेषः । विपा० ८१ ।

झिल्ली–झिल्लिका–वनस्पतिविशेषरूपा । प्रज्ञा० ३७ ।

झुंझिय–बुभुक्षितः । प्रश्न० ५२ ।

झुषिर– । आचा० ३०७ ।

झुसिर–झुषेः शोषस्य दानात् शुषिरम् । भग० ७७६ । शुषिरम् । आव० ६२५ । शुषिरं–शुषिरशतकलितम् । जीवा० ११४ । वादित्रविशेषः । जं० प्र० ४१२ । शुषिरं–अन्तःसाररहितम् । दश० १७५ । पलालादिच्छन्नम् । ओघ० १२३ । शुषिरं वंशादिकम् । भग० २१७ । शुषिरः–असारकायः । प्रश्न० ४१ । शुषिरं-वंशादिकम् । जं० प्र० १०२ । शुषिरः । ग० ।

झूसणं–जोषणं–सेवनम् । आव० ८४० ।

झूसणा–जोषणा–सेवणा । उपा० १२ ।

झूसिए–जुष्टः–सेवितः । झूषितः–क्षपितः । जं० प्र० २८० ।

झूसिया–झूषिताः–क्षीणा वा । जुष्टाः सेविताः । औप० ६६ ।

झोडा–झोडः–पत्रादिशाटनं, तद्योगात्तेऽपि झोडाः । ज्ञाता० १७३ ।

झोषः–इह तीर्थे षण्मासान्तमेव तपस्ततः षण्णां मासाना-मुपरि यान् मासानापन्नोऽपराधी तेषां क्षपणं अनारोपणं, प्रस्थे चतुःसेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव झाटनमित्यर्थः । ठाणा० ३२५ ।

झोसित्ता–क्षपयित्वा । ज्ञाता० ७७ । झोषिताः–क्षपिताः क्षपितदेहाः । ठाणा० ५७ ।

झोसइ–झोषयति–शोषयति, क्षयं नयति । आचा० १६२ ।

झोसणं–जोषणाः–सेवनाः कारणानि । सम० १२० ।

झोसमाणे–झोषयन्–क्षपयन् । आचा० २०४ ।

झोसिए–झोषितः–क्षपितः । आचा० २०६ ।

झोसिओ–सेवितः । आचा० २०६ । क्षपितः । आचा० २२४ ।

झोसेथ–गवेषयत(देशी०) । बृ० द्वि० १६२ आ ।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगमवाचनादातृ-बहुश्रुत-युगप्रधानसदृशदेवसूरतपागच्छसमाचारीसंरक्षण-
कटिबद्ध-श्रेष्ठिदेवचन्द्रलालभाईजैनपुस्तकोद्धारश्रीजैनानन्दपुस्तका-
लयाद्यनेकसंस्थासंस्थापक-अनेकग्रन्थप्रणेतृश्रीवर्धमानजैनागम-
मंदिर(सिद्धक्षेत्र)श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रा-
गममंदिर(सूर्यपुर)संस्थापक-आग-
मोद्धारक-ध्यानस्थ-
स्वर्गत-

आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः—

श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

(कतो झपर्यन्तो द्वितीयो विभागः)

श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः ११५ ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

શેઠ દેવચંદ લાલભાઇ જૈન પુસ્તકોદ્ધાર ફંડ

ગ્રથાંક　　**હાલમાં મળતા ગ્રન્થો**　　રૂ. આ.

૮૬ લોકપ્રકાશ મૂળ ચોથો વિભાગ (પ્રત) ૧–૦
૮૭ ભરતેશ્વરબાહુબલિવૃત્તિ દ્વિતીય વિભાગ સંપૂર્ણ ૨–૦
૮૮ પ્રશમરતિપ્રકરણ–બૃહદ્‌ગચ્છીય શ્રીહરિભદ્રસૂરિકૃત વિવરણ સમેત ૧–૪
૮૯ અધ્યાત્મકલ્પદ્રુમ, રત્નચંદ્રગણિ–વર્ધનવિજયગણિકૃત ટીકાયુક્ત, ... ૩–૦
૯૦ ગૌતમીયકાવ્ય, રૂપચંદ્રગણિકૃતમ્ ૧–૮
૯૧ સટીક વૈરાગ્યશતકાદિ ગ્રંથપંચકમ્ ૧–૦
૯૨ અભિધાનચિન્તામણિકોશ ૪–૦
૯૩ જૈનકુમારસંભવ ૨–૮
૯૪ સિદ્ધહેમશબ્દાનુશાસન બૃહદ્‌વૃત્ત્યવચૂર્ણિનવપાદ, અવચૂર્ણિકાર શ્રીમદ્‌અમરચંદ્ર ... ૫–૦
૯૫ વીતરાગસ્તોત્ર અવચૂર્ણિ વિવરણ અને ભાષાંતર સમેત ૧–૮
૯૯ શ્રમણસૂત્રાદિ અવચૂરિ ૧–૦
૧૦૦ વંદનપ્રતિક્રમણ અવચૂરિ ૧–૮
ભક્તામરસ્તોત્ર પાદપૂર્તિરૂપ કાવ્ય, પ્રથમ વિભાગ ટીકા ભાષાંતર ... ૩–૦
" " કાવ્ય, બીજો વિભાગ ટીકા ભાષાંતર ... ૩–૮
જીવસમાસપ્રકરણ સટિક ૧–૮
સ્તુતિચતુર્વિંશતિકા સચિત્રા શ્રીશોભનમુનિકૃતા સંસ્કૃતા ૮–૦
સ્તુતિચતુર્વિંશતિકા સચિત્રા શ્રીબપ્પભટ્ટીસૂરિકૃતા ભાષાંતરયુક્તા ૬–૦
સ્તુતિચતુર્વિંશતિકા સચિત્રા કવિ ધન[illegible]કૃતા વ. ઐંદ્રસ્તુતિ ૬–૦
ચતુર્વિંશતિકા જિનાનંદસ્તુતિ સચિત્રા મેરુવિજયકૃતા ભાષાંતર સમેતા ... ૬–૦
નંદ્યાદિગાથાદ્યકારાદિયુતો (સપ્તસૂત્ર) વિષયાનુક્રમ ૨–૦
આવશ્યકસૂત્ર મલયગિરિકૃત ટીકાયુક્ત પૂર્વ ભાગ ૪–૦
" બીજો ભાગ ૨–૮
" ત્રીજો ભાગ (દે. લા. અંક ૮૫) ૨–૮
લોકપ્રકાશ પ્રથમ વિભાગ, દ્રવ્યલોક, સર્ગ ૧ થી ૧૧ ભાષાંતર ૩–૮
" દ્વિતીય વિભાગ, ક્ષેત્રલોક, સર્ગ ૧૨ થી ૨૦ ભાષાંતર ૩–૮

• વેચાણમાં નવીન પુસ્તકો •

૧૦૨ શ્રાવકધર્મપંચાશિકા ... ૨–૦
૧૦૩ દશવૈકાલિક અવચૂરિ: ... ૩–૦
૧૦૫ પિંડનિર્યુક્તિ અવચૂરિ ... ૩–૦
૧૦૯ સૂત્રકૃતાંગદીપીકા ... ૩–૦
૧૦૪ ઉત્તરાધ્યયન અવચૂરી ભાગ ૧ ૪–૦
૧૦૬ શ્રાદ્ધવિધિ કૌમુદી ... ૪–૦
શ્રાદ્ધવિધિ મરાઠી સારાંશ ... ૧–૦
૧૦૭ નંદીસૂત્ર અવચૂરી ભાગ ૧ ... પ્રેસમાં
૧૦૮ આવશ્યક અવચૂરી ભાગ ૧ ... "

૧૧૦ સૂત્રકૃતાંગ દીપિકા ભાગ ૨ ... પ્રેસમાં
૧૧૧ જમ્બૂદ્વિપપ્રજ્ઞપ્તિ ચૂર્ણિ ... "
૧૧૨ આવશ્યક અવચૂરી ભાગ ૨ ... "
૧૧૩ નંદીસૂત્ર અવચૂરી ભાગ ૨ ... "
૧૧૪ ઉત્તરાધ્યયન અવચૂરી ભાગ ૨ ... "
૧૧૫ અલ્પપરિચિતસૈદ્ધાન્તિક શબ્દકોષ ૨ "
૧૧૯ જિન ભક્તિ વિધિ વેચાય છે
૧૨૦ આત્મબોધ સજ્ઝાયસંગ્રહ "

આર્ટપ્લેટ તથા પૂંઠું • [illegible] • અમદાવાદ

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org